3/6/23

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Acc 6523

# विश्रामसागर

S.P.S. MUSEUM SRINAGAR

## जिसमें

षट शास्त्र अठारहों पुराण का मत और श्री त्रिभुवनपति कृष्ण चन्द्रावतार के चरित्र जन्म से निज लोक गमन पर्य्यन्त और श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म रामावतार की कथा बहुत से ग्रन्थों के मत से उत्तम २ छन्दों में वर्णित है

## उसको

श्रीमन्महा महोपाध्याय गुणि गण मण्डली मण्डन श्री परब्रह्म रामचन्द्र जी के पादारविन्दानुरागी परम वैष्णव महन्थ श्री रघुनाथ दास राम सनेहीजी ने महात्माओं और हरि भक्तों और विद्या रसामृत स्पर्शियों के निमित्त अतीव परिश्रम करके सम्पूर्ण ग्रन्थों के आशय लेकर भाषा उल्था किया

दूसरी बार
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापागया
अक्टूबर सन् १८८० ई०
श्री सम्वत् १९३७ ई०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

# विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात अकूबर सन १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेच के लिये तैय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यौपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यौपार की इच्छा हो वह छाप खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें।

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| भाषा पुराण इतिहास | दोहावली रामायण | शुक बहत्तरी |
| काव्य कोष | विनय पत्रिका | बकावली सुमन- |
| महाभारत भाषा छन्द | सुख सागर टैप | चहार दरवेश |
| प्रबन्ध | तथा उत्तम पत्थर के छा- | क़िस्सा हातम ताई |
| विजय मुक्तावली महा- | पे की | अपूर्व्व कथा |
| भारत का संक्षेप | सती विलास | क़िस्सा गुल सनोबर |
| रामायण तुलसी कृत मू- | प्रेमसागर | इन्द्र सभा |
| तथा सटीक मानस दीपि- | ब्रजविलास | सहस्र रजनी चरित्र |
| का कोष इत्यादि सहित | भक्तमाल | दास्तान अमीर हमज़ा |
| तथा मोटे अक्षरों की मये | बिक्रम बिलास | मनोहर कहानी |
| तसवीर | श्री राम व्याहोत्सव | अवतार कथा ऽ मृत |
| रामायण कवितावली | बैताल पचीसी | कमीशन बड़ोदा |
| तथा गीतावली | सिंहासन बत्तीसी | सूरसागर |
| रामायण राम बिलास | पद्मावती खण्ड | कृष्ण सागर |
| कृष्णप्रिया | दान लीला नाग लीला | देवी भागवत |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

6523. Price R. /8/

SRI RANBIR LIBRARY JAMMOO No.____

# सूची पत्र

## विश्राम सागर की कथा का॥


| अध्याय | विषय | पृष्ठ से | पृष्ठ तक | अध्याय | विषय | पृष्ठ से | पृष्ठ तक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | मंगल चरण | १ | ६ | | वर्णन | ६६ | ७२ |
| २ | कथा प्रसंग वर्णन | ६ | १२ | २४ | गौतमी सुव्रता धर्म | | |
| ३ | गुरु माहात्म्य और नारद | | | | प्रसंग वर्णन | ७२ | ७६ |
| | कथा | १२ | १६ | २५ | मुदगल प्रसंग वर्णन | ७६ | ८१ |
| ४-५ | गुरु माहात्म्य और कृष्णा | | | २६ | वीरभद्र प्रसंग वर्णन | ८१ | ८६ |
| | दत्त कथा | १७ | २७ | २७ | हरिश्चन्द्र सुधन्वा कथा | | |
| ६ | नाम माहात्म्य | २७ | ३४ | | वर्णन | ८६ | ९५ |
| ७ | बालमीकि-गज-गणिका | | | २८ | राजा सिदिघा देवदत्त प- | | |
| | यमन उद्धारण | ३४ | ३८ | | संग वर्णन | ९३ | ९९ |
| ८ | अजामिल कथा वर्णन | ३८ | ४३ | १९ | सुदर्शन कथा वर्णन | ९९ | १०३ |
| ९ | यमदूत कथा वर्णन | ४३ | ४६ | २० | बकुला गऊ की कथा | | |
| १० | गृहधर्म अधिक कपोत | | | | वर्णन | १०३ | १०८ |
| | संवाद | ४६ | ५१ | २१ | मोरध्वज कथा वर्णन | १०८ | ११३ |
| ११ | यमपुरी वर्णन | ५१ | ६० | २२ | मोरध्वज आख्यान व- | | |
| १२ | गृह धर्म कर्म विपाक | | | | र्णन | ११३ | ११७ |
| | वर्णन | ६० | ६६ | २३ | ध्रुव चरित्र वर्णन | ११७ | १२३ |
| १३ | सुव्रता यम राज प्रसंग | | | २४ | ध्रुव मधुबन आगमन | १२३ | १३० |


CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| अध्याय | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक | अध्याय | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २५ | प्रह्लाद कथा वर्णन | २३० | १३६ | ३९ | सत्संग माहात्म्य वर्णन | २२३ | २२७ |
| २६ | श्री नृसिंह अवतार व- | | | ४० | अम्बरीष कथा वर्णन | २२७ | २३१ |
| | र्णन | १३६ | १४४ | ४१ | चन्द्रहास आख्यान | | |
| २७ | ब्रह्मा की उत्पत्ति अयो- | | | | वर्णन | २३१ | २३६ |
| | ध्या की उत्पत्ति स्वाम्भू म- | | | ४२ | नृग प्रसंग संत लक्षण | | |
| | नु कथा वर्णन | १४४ | १५० | | वर्णन | २३६ | २४७ |
| २८ | सातों द्वीप नव खण्ड प्र- | | | ४३ | राजा व्यास आख्यान | | |
| | मान श्री सरयू की उत्पत्ति | | | | वर्णन | २४७ | २५२ |
| | वर्णन | १५१ | १५८ | ४४ | राजा व्यास नारद संवाद | | |
| २९ | श्री गंगा की उत्पत्ति वर्णन | १५८ | १६४ | | वर्णन | २५३ | २५७ |
| ३० | एकादशी उत्पत्ति वर्णन | १६४ | १६९ | ४५ | व्यास पित्र उद्धार वर्णन | २५७ | २६३ |
| ३१ | | | | ४६ | नवधा भक्ति वर्णन | २६३ | २७२ |
| ३२ | एकादशी माहात्म्य वर्णन | १६९ | १८२ | ४७ | छओं शास्त्र की जुदी | | |
| ३३ | श्री तुलसी माहात्म्य वर्णन | १८२ | १८९ | | जुदी वाक्य | २७२ | २८२ |
| ३४ | युधिष्ठिर यक्ष वर्णाश्रम | | | १ | कृष्णायन प्रसंग वर्णन | | |
| | धर्म हरि भक्ति साधन वर्णन | १८९ | १९७ | २ | कृष्ण जन्म उत्साह पूत- | २८२ | २९१ |
| ३५ | जाजुल्य ऋषि तुलाधार | | | | ना काग असुर तृणावर्त | | |
| | प्रसंग वर्णन | १९७ | २०३ | | बध वर्णन | २९१ | २९९ |
| ३६ | भक्ती दत्तात्रेय संवाद चौ- | | | ३ | कृष्ण दधि चोरी बाक्य | | |
| | बिस गुरु कथा वर्णन | २०३ | २१० | | बिलास वर्णन | २९९ | ३०७ |
| ३७ | पिता पुत्र संवाद अलरक | | | ४ | कृष्ण ऊखल बन्धन | | |
| | प्रसंग | २१० | २१५ | | यमलार्जुन उद्धार राधि- | | |
| ३८ | लखन जीत प्रसंग वर्णन | २१५ | २२३ | | का विवाह ब्रह्मा बच्छ- | | |


CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| अध्याय | विषय | पृष्ठ से | पृष्ठ तक | अध्याय | विषय | पृष्ठ से | पृष्ठ तक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | हरण धेनुक बध वर्णन | ३०७ | ३१५ | ४ | श्रीराम चन्द्र बाल ली- | | |
| ५ | कृष्ण चतुर्मासा चीर ह- | | | | ला वर्णन | ३९५ | ४०३ |
| | रण दान लीला गोवर्द्ध- | | | ५ | राम चरित्र वर्णन | ४०३ | ४१५ |
| | न लीला वर्णन | ३१५ | ३२३ | ६ | विश्वामित्र मख रक्षण | | |
| ६ | कृष्ण रास लीला वर्णन | ३२३ | ३२७ | | वर्णन | ४१५ | ४२४ |
| ७ | कृष्ण मथुरा आगमन | | | ७ | श्रीरामचन्द्र रंगभूमि | | |
| | वर्णन | ३२७ | ३३५ | | आगमन | ४२४ | ४३६ |
| ८ | कृष्ण कुबरी गृह आग- | | | ८ | श्री परस राम बनयात्रा | | |
| | मन वर्णन | ३३५ | ३४० | | वर्णन | ४३६ | ४४२ |
| ९ | उद्धव ब्रज आगमन | ३४० | ३४३ | ९ | श्रीरामचन्द्र विवाह | | |
| १० | कृष्ण जरासंध समर | | | | वर्णन | ४४२ | ४५३ |
| | वर्णन | ३४३ | ३४८ | १० | श्रीराम कलेवा वर्णन | ४५३ | ४५५ |
| ११ | कृष्ण रुक्मिणी हरण | | | ११ | श्रीरामचन्द्र श्री अयो- | | |
| | वर्णन | ३४८ | ३६४ | | ध्या आगमन | ४५५ | ४६३ |
| १२ | रुक्मिणी मंगल प्रद्यु- | | | २२ | श्री राम बन यात्रा नृप | | |
| | म्न उत्पत्ति अरु रति | | | | विषाद वर्णन | ४६३ | ४७३ |
| | संग विवाह वर्णन | ३६४ | ३६९ | १३ | श्री राम चित्रकूट आगमन | | |
| १ | रामायण प्रसंग रावण | | | | वर्णन | ४७३ | ४८० |
| | उत्पत्ति अरु युद्ध विषय | | | १४ | श्री भरत चित्रकूट गम- | | |
| | जय पराजय वर्णन | ३७० | ३७८ | | न वर्णन | ४८० | ४८८ |
| २ | मेघनाद आदि रावण | | | २५ | श्री भरत चित्रकूट आ- | | |
| | विजय वर्णन | ३७८ | ३८४ | | गमन वर्णन | ४८८ | ४९६ |
| ३ | राम जन्म उत्सव वर्णन | ३८४ | ३९४ | २६ | श्री भरत पादुका प्र- | | |


CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| अध्याय | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक | अध्याय | विषय | पृष्ठसे | पृष्ठतक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | भिषेक वर्णन | ४९६ | ५०५ | | न वर्णन | ५५९ | ५६२ |
| १७ | श्रीराम दंड कवन आगमन वर्णन | ५०५ | ५२३ | २५ | अंगद रावण सम्बाद वर्णन | ५६३ | ५६६ |
| १८ | श्रीराम सेवरी गृह आगमन वर्णन | ५२३ | ५२४ | २६ | लक्ष्मण छिन राम बिरह वर्णन | ५६६ | ५७६ |
| १९ | श्रीराम सुग्रीव मित्रता वर्णन | ५२५ | ५३१ | २७ | मेघनाद बध और सुलोचना सती वर्णन | ५७६ | ५८३ |
| २० | बालि बध सैन आगमन वर्णन | ५३१ | ५३५ | २८ | कुम्भकरण बध राम रावण समर वर्णन | ५८३ | ५९० |
| २१ | मारुत नन्दन श्री सीता प्रति श्रीराम संदेशा वर्णन | ५३६ | ५४२ | २९ | श्रीराम करके रावण बध श्री अयोध्या आगमन वर्णन | ५९० | ५९४ |
| २२ | हनुमान लंका पुरी विध्वंस वर्णन | ५४२ | ५४९ | ३० | श्रीराम भरत मिलाप श्रीराम राज्य अभिषेक वर्णन | ५९३ | ६०६ |
| २३ | श्रीराम सिंधु तट आगमन वर्णन | ५४९ | ५५८ | | इति | | |
| २४ | श्रीराम सुबेल आगम | | | | | | |


CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

تصویر رگھناتھ داس رام سنیہی

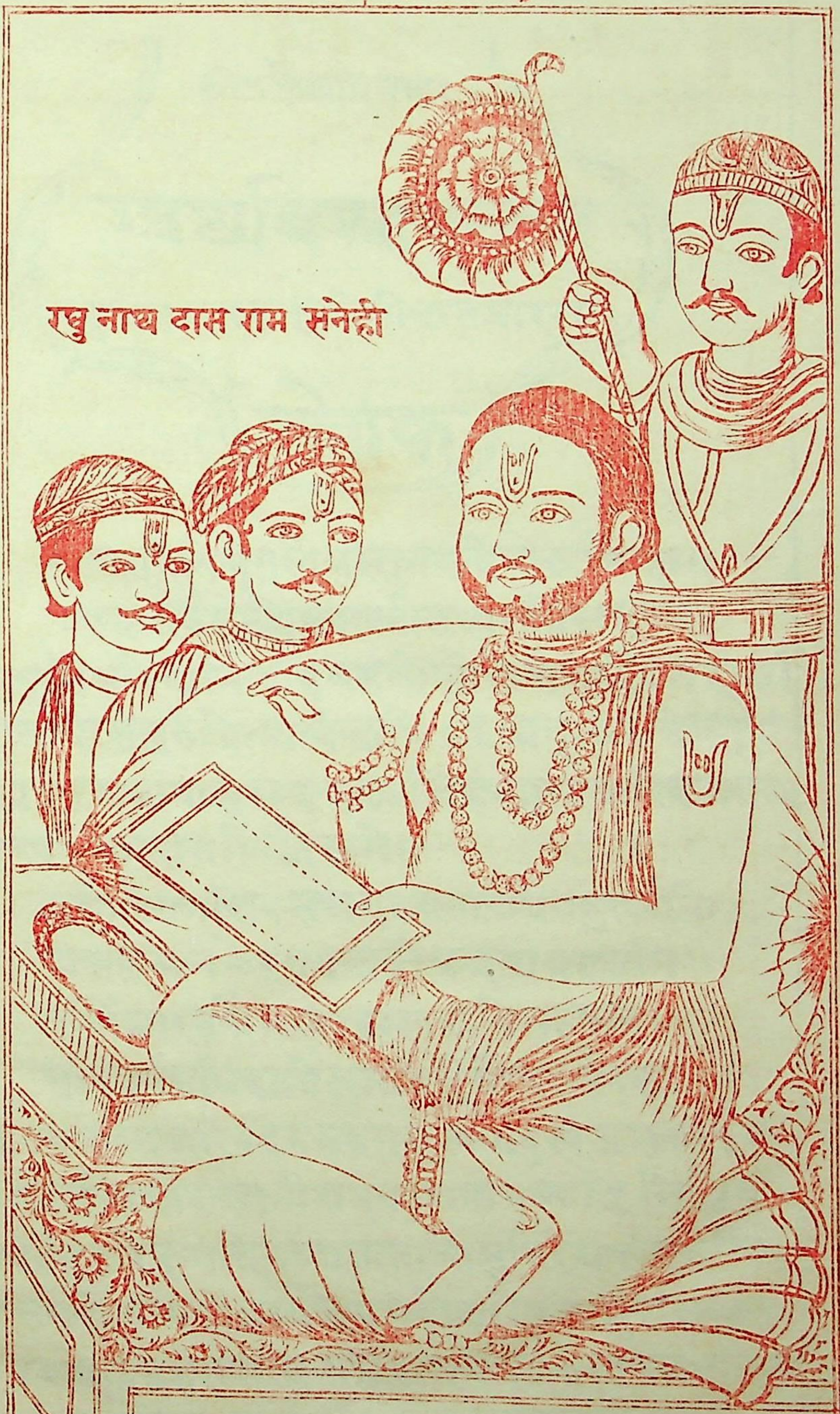


CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः

# अथबिश्रामसागर

## रघुनाथदासरामसनेहीकृतप्रारम्भः

## श्लोक

सीतारामेति युगुलं वस्तुतस्त्वेकरूपिणं॥
परमानन्दसन्दोहं सर्व्वाराध्यं नतोस्म्यहम्॥

तत्प्राप्त्यै परिमार्गिताहि बहुधा लोके जनानैव तद्दातारं हरिभक्तदासगुरुतोन्यान्यं क्वचिद्दृष्टवान्। तेषामेवतुपाद पद्म सुभवायासु स्व चक्षा जिहं रघुनाथाखिलग्रन्थसारसुखदं बिश्राम सिन्धौ कृते॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि।
नाना ग्रन्थन केर मत कहौं बन्दना बखानि॥
बन्दौं शारद के चरण हरण अविद्या मूल॥
बुधि सुधि विद्या देसुमति है मो पर अनुकूल॥

छप्पै एकरदन करिवदन सदन सुख के दुखनाशक। ईश तनय गण ईश शीश रजनीश प्रकाशक॥ ऋद्धि सिद्धि बुधि लेत देत हरि कुमति नजा गत॥ जो सुमिरै मन लाय विघ्न गत जन के भागत॥ जय जय गणेश गिरजा सुवन भुवन विदित यश अघ हरण। रघुनाथ दास बन्दन करत बार बार पाद

तिचरगा॥ जै अनङ्ग अरिसङ्ग उमा अर्धङ्ग बिराजत। मुराड
माल मृगछाल कराह बिषब्याल जो छाजत॥ शीस गङ्ग सार-
ङ्ग भस्म सर्वाङ्ग लगावत। तीन नयन मृदु बैन अमन सुख दुः
ख नशावत॥ दीनदयाल कृपाल हर कर त्रिशूल वर गौर तन।
रघुनाथदास बन्दन करत करौ कृपा मोहिं जानि जन॥ बन्दौं
द्विज पद कमल अमल सुन्दर सबलायक। बन्दौं रघुपति सचि-
व सखा सेवक सुखदायक॥ बन्दौं गङ्ग तरङ्ग मेदिनी कुमुद
बिभाकर। बन्दौं सुर मुनि मनुज दनुज बिधि जीव चराचर॥ ब-
न्दौं कवि कोबिद बिमल जिन बरगो सिय राम यश। सब मोपर
किरपा करहु कहौं कथा बल पाय तस॥
चौ॰ राम चरित्र बिचित्र अपारा॥ गावत निगम न पावत पारा॥
निज मति सरिस तदपि मुनि गावैं॥ मन चञ्चल तेहि तहां रमावैं॥
श्रवण कीर्तन सुमिरण सेवा॥ भक्ति अङ्ग भाषत महिदेवा॥
करण पवित्र गिरा अघहारी॥ सब प्रकार मुद मङ्गलकारी॥
अस बिचारि बरणत रघुनाथा॥ भाषा करि हरि प्रेरित गाथा॥
कबित दोष गुण ग्रंथ मझारा॥ कहे नागपति यहि परकारा॥
दो॰ छं॰ मगण नगण अरु भगण यगण शुभ चारि कहा-
वैं। जगण रगण पुनि सगण तगण कवि अशुभ बतावैं॥
मगण तीन गुण आदि देव महि सब सुखकारी। नगण
तीन लघु देव नाग दायक बुधि भारी॥ भगण आदि
गुरु देव चंद्र मंगलदा होई। यगण आदि लघु देव नी-
र आनन्द प्रद सोई॥ जगण मध्य गुरु देव सर सुख सक-
ल बिनाशै। रगण मध्य लघु देव अग्नि दाहक तनु नाशै॥
सगण अन्त गुरु देव काल निज देत उदासी। तगण अ-
न्त लघु देव ब्योम निरफल फल नासी॥ मनुज कबित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

के आदि महं लीजे इन्हें विचारि सुख। कहै रघुनाथ श्री राम गुण वरणत अशुभौ होत शुभ ॥

दो० तहां मित्र कोउ दास हैं उदासीन रिपु कोउ।
अक्षर शुद्ध अशुद्ध कोउ सुनो कहौं मैं सोउ।
खग कच घन इ जड़ परत छुतडुलि सुरवअद अड्डु।
शेष परें जो कवित्त तो करे रावते रङ्कु ॥

चौ० यहि विधि पिङ्गल कहत बखानी। सो है मम विशेष नहिं जानी ॥
तेहि ते सबै कहौं कर जोरी। जो कछु चूक परै लखि मोरी ॥
सुजन सुधारि लहेउ तुम ताही। लघु गुरु वरण जहां जस चाही ॥
मोहिं न ज्ञान बुधि बल चतुराई। कीन्ह चहौं हरि कथा सोहाई ॥
अति अति क्षीन पीन रुचि मोरी। चाहत नभै छुवन कर जोरी ॥
यह ढीठता समुझि वर ज्ञानी। क्षमिहैं निज शिशु सेवक जानी ॥
सुनिहैं मुदित सबहि सराही। राम सिया पद रत मति जाही ॥
जिमि बालक बोलत तुतराई। सुनत मात पितु अति हरषाई ॥
निंदिहैं कपटी खल अभिमानी। जे हरि विमुख भक्ति नहिं जानी ॥
तासु वचन सुनि सुजन सुछन्दा। तजहिं न उड़प दाख शिव निन्दा ॥
रविहि उलूक कहै भल नाहीं। साखी किमि धारें मन माहीं ॥
निंदा फल नहिं कह्यो बखानी। पैहैं जब तब जैहैं जानी ॥ ॥

दो० राम कथा सब का सुखद उत्तर तुव पी की नाई ॥
अर्क जवासा दुष्ट जन ते आपुइ जरि जाइं ॥

चौ० यदपि रहै मम भनित भदेशी। परिहरि जन गुण नाम तेलेशी ॥
तातें भई अनूपम नीकी ॥ जिमि मनि मंदिर चौलनी फीकी ॥
हरि जन बिन जो कवि बलाई। सुभग प्रान बिन जिमि वपु भाई ॥
खल बायस कर तीरथ सोई। सुजन हंस तहं रमैं न कोई ॥ ॥
कलुष प्रबंधन हरि गुण गावै। संजीवनि सोइ काव्य कहावै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहैं सुनैं मिलि सज्जन ताही॥ करौं प्रणाम प्रीतिगुण ग्राही।
यथा बक्र गति सरित निहारी॥ तासु साथ पावन सुखकारी।
मज्जहिं ताहि महा मुनि देवा॥ ऽपर न का को बरणों भेवा॥

दो० श्रीपति धीपति यज्ञ पति ऽखिल लोक पति जोपि।
ऽराधैं भूपति प्रजा पति करौ कृपा प्रभु सोपि॥
बन्दौं हरिजन पद कमल ऽमल लल्व प्रद रेनु॥
जिनके संग प्रभु फिरत इमि जिमि बच्छा संग धेनु।
यद्यपि कामी कुटिल खल सम लौ जन रघुनाथ।
तद्यपि ऽहैं तुम्हारो इ समुझि न छांड़ो हाथ॥
बड़ कुल ऽंगी कार जेहि प्रति पालत सजि ताहि।
ऽहि महि हर बिष दीध ऽग्नि नितजत न दुखप्रद ऽाहि।
बन्दौं खल मल रहित जे राम भक्ति गुण खानि॥
परदुख सोई सुख जिन्हें पर सुख मोटी हानि॥
हरिजन मणि की कोठरी ऽाशु सुता री ऽाहि॥
सुयहु न त्यागत टेक निज तेहि ते छांड़ेउ नाहिं॥
सन्त सुभाव प्रभाव लखि समुझि खलन के रीति॥
तब मैं कीन्हौं ग्रंथ यह हृदय न ऽान्यौ भीति॥
करि ऽरि केरे कुंवर को कहा सके करि स्वान॥
भक्त मार जाइ हैं यम के भवन निदान॥

सो० बन्दौं सन्त समाज शीस नाइ कर जोरि कहि॥
जहं हरिनाम जहाज ऽमित पतित चढ़ि भव तरहिं।

चौ० बन्दौं गुरु पद बारहिं बारा॥ जासु कृपा छूटत संसारा॥
होत बिमल मति मान बड़ाई॥ मिटत बिभेद कपट कुटिलाई।
सोहिं समय तित न यहि जग कोऊ॥ लघु मति ऽगुण ऽब गुण ल्लघु सोऊ।
सतगुरु गुरु मोका गुरु कीन्हा॥ यथा दंड कर बावन लीन्हा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करहु तासु केहि भांति प्रशंसा॥ जो कुल काग हि पिक बक हंसा
मलिन भक्ष तजि कपट कुसंगा॥ लागेउ नाम चुनन सत संगा।
दो० काशीवास निवास सुरसरि पद याथ सरूप।
गुरु मरति पशु पनि प्रकट तारक मंत्र अनूप।
चौ० बन्दौं अवध अवध पुर वासी॥ जे अनन्य सिय राम उपासी
बन्दौं सरयू विमल तरंगा॥ पाव न करणि करणि अघ भंगा॥
करहिं पान जल सुमिरें नामा। बसे अवध में जे बसु जामा॥
तेन पुनर्जन्म फिर जग नहिं आवें। अस प्रभाव निगमागम गावें
बन्दौं नृप दसरथ सब रानी॥ दुलराय जिन सारंग पानी॥॥
बन्दौं श्री मिथिलेश सुनयना। अवलोके रघुपति निज अयना
बन्दौं भरथ लषन रिपु आरी। रामानुज सब विधि सुख कारी
छप्पै जयति ब्रात संजात जय निरखि मंडल ग्रासक। जय-
ति सन्त सुर सुखद जयति निश्चर कुल नाशक॥ जयति
बिजय मद हरण जयति सिय शोच निवारण। जयति ज्ञान
गुण उदधि जयति सब संकट टारण॥ जयति जासु उर बस
त नित रघुकुल मणि सर चापधर। सोइ प्रभु सेवक जानि
के करौ कृपा रघुनाथ पर॥
दो० बन्दौं श्री जानुकी पद पदुम जोरि युग पानि॥
विधि हरि हर चिंतत जिन्हैं शक्ति सहित सुख खानि
छप्पै सारंग से द्रग लाल माल सारंग की सोहत। सारंग ज्यों
तन श्याम ब दन लखि सारंग मोहत॥ सारंग सम कटि हा-
थ माथ बिच सारंग राजत। सारंग लाये अंग देखि छबि सा-
रंग लाजत॥ सारंग भूप गायीत पद सारंग पद सारंगधर
रघुनाथ दास बन्दन करत सीतापति रघुवंश वर॥
दो० गुणागार गुण रहित हरि गुण निधान गुण [illegible]

गुण नायक गुण निधन कर गुण दायक गुण जाल
मातृपितृगोमित्र द्विज गुरु हा दुर्वृत कोउ ॥
जासु नाम कीर्तन किये शुद्ध होत जग सोउ ॥
अंधबिलोचन पंगु पग लहैं मूक बच नासु ॥
जासु कृपा ते तिमिमहू कहिहों गुण गण तासु ।

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उक्त गद श्री रघुना-
थदास रामसनेही कृत वन्दना वरणो नो नाम
प्रथमो ऽध्याय ॥ १

दो० बन्दौं वेद पुराण जे करहिं राम गुण गान ॥
जो सुनि प्राणी पावहीं भोग भक्ति निर्वान ॥

चौ० बन्दौं राम नाम अघ नाशी ॥ अचल अखंड सदा घट वासी
सब सुख करण हरण दुख भारी ॥ जपैं जाहि शिव शैल कुमारी
भव निधान कलिमल मथ नारी ॥ पावन हू को पावन कारी ॥
मुक्ति पंथ बिश्राम स्थाना ॥ कबि सुसंत के जीवन प्राना ॥
धर्म बिटप वर बीज प्रकाशक ॥ मंगल करण शोक सब नाशक
मानस रोग अनेक प्रकारा ॥ भेषज नाम बिना मन हारा ॥
बिपति गहन घन वाण कुठारा ॥ करि अज्ञान मृगेश निहारा ।
मंत्रराज षट वरण समेता ॥ कहत सकल निगमागम वेता ।
परम सरल सुमिरत सुखदाई ॥ लोकानंद परलोक भलाई ।
जन मन सारंग सारंग हरि से ॥ जगदधि कूल कलपदल सरिसे
मुक्ति वाम श्रुति सुमन विहंगा ॥ मुनि मन पक्ष उड़न जिन संगा
कलिमल तम विधु वल्लभ गंजन ॥ अज्ञ नयन भ्रम धूम प्रभंजन
करम कोट करि दशन करालादु खीमना उडुप कस ताला ॥
जनेम सेरता विदि क्षुधा पियासा ॥ नाम पियूष प्रसन वर वास
ज्ञान विराग अथवा जल जाना ॥ कहें रघुनाथ मोर पितु माता ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ राम नाम बसै जासु उर अखिल मंत्र को बीज।
प्रलय अनल विष मृत्यु ते सो न रहेइ उतीर्ज।
सो॰ छं॰ सोइ नाम सुमिरि सुभाय कहौं ग्रंथ एक बनाय॥
विश्राम सागर नाम सुनि लहैं नर आराम॥
दो॰ संवत् मुनि वसु निगम शत रुद्र अधिक मधुमास।
शुक्ल पक्ष कवि नौमि दिन कीन्हो कथा प्रकास।
अवधपुरी परसिद्ध जग सकल सुरनि सिर नाम।
रामघाट के बाट मे राम निवास सुधाम॥
तहाँ कीन आरम्भ मैं रघुपति आयसु पाय॥
श्री गुरु देवा दास के पद निज हृदय बसाय।
सत गुण रज गुण तमो गुण त्रैविधि के सुनि वाच।
मोक्षप्रद स्वर्गद तम देहैं धरिहौं सुखप्रद साँच।
उभा शम्भु सीता रमण जो मो पर अनकूल।
तौ वर्णौं मैं होइ फुर अन्त मध्य अरु मूल।
चौ॰ पर उपदेश न लेश बड़ाई। कहौं कथा निज मति हितगाई।
जग वन मन करि दुख दव दहई। हरि गुण सरि परि तब सुख लहई।
श्रुति पुराण बहु विधि सुर बानी। लघु मति मोरि परत नहिं जानी।
भाषा बन्ध काव्य मैं ताते॥ समुझि परै अस्माकस जाते॥
बचन बिभेद अरथ नहिं दूजा॥ यथा मिंदु शशि अर्चन पूजा
पुनि बहु मत बहु ग्रंथन माहीं॥ सब संग्रह बिन जानि न जाहीं
तेहि ते मैं एक ग्रंथ सम्हारा॥ धरब बरण कम अर्थ अपारा॥
बाल स्वर बर स्तुति हासा॥ भक्ति बिबेक सहित नहिं हासा।
सुनि सन्देह करै जनि कोई॥ देखै बेद पुराण बिलोई॥
सब का सार अंश मत लीन्हा॥ मैं बिश्राम सुसागर कीन्हा।
आदि अन्त दोउ जानि किनारा॥ राम सुयश पय पावन भारा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० अद्भुत हास सिंगार भय बीर बिभत्स विषाद।
रुद्र सुरुचि सम शान्त ये यामें नवरस स्वाद।

चौ० संशै भंवर करत मन संगा। अरथ गहिर अध आवर्त रंगा।
कमल कवित्त सोरठा दोहा। भक्ति सुबास संत अलि सोहा।
छन्दै विविधि भाँति की मीना। सीप सकल चौपाई लीना।
रामनाम मुक्ता हल भाई। जासु प्रभाव भुवन महं छाई।
सुजन मराल चुगन हर्षाहीं। दुष्ट काग बग की गति नाहीं।
नाना बिधि इतिहास पुरानी। सोइ यहि थल रतनन की खानी।
मन गिरि बासुकि सुरति लगावै। यहि बिधि मथे सोइ जन पावै।
क्षमा शील संतोष बिचारा। मोह सयन भक्षक धरि आरा।

दो० उक्ति युक्ति औ रव धुनि अरथ भावना केर।
चोज भास अन्वै जमक जलचर अपर घनेर।

चौ० बसत तहाँ श्री युत भगवाना। यामें राम सिया कर थाना।
जो चाहै प्रभु दरशन भाई। तासु युक्ति इमि आगम गाई।
प्रथमैं श्रद्धा सम्बल बाँधै। दूसर साधु संग शुभ साधै।
तीसर भजन क्रिया सोइ चलई। तुर्य अनर्थ बिरति बन लहई।
पंचम निष्ठा रुचि उपजावै। षष्ठ सुज्ञान ध्यान चित लावै।
सप्तम नामाशिक ह्वै जावै। जपत जीव त्रैताप नशावै।
अष्टम भाव हरै दुख नाना। नवम प्रेम पै करि अस्नाना।
दशम दरस रघुपति के पावै। जीव व्याधि सब तुरत नशावै।
निज सरूप सुख लहै हजूरी। यहि उपाय बिन दरशन दूरी।
राम कृपा बिन श्रम उपाई। पावै जिमि द्विज सुत समुदाई।
ग्रंथ अनेक नदी नद नारा। बहि आये शुचि जासु मझारा।

गी० छं० षट शास्त्र वेद पुराण मत बिश्राम याहीमें लह्यो।
यहि अर्थ ते बिश्राम सागर नाम मैं याको कह्यो। जन मुन-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हिं समुझहिं प्रीति करि हरि चरणमें चित लाइहैं। रघुनाथते गोपद सरिस संसार यह तरि जाइहैं॥

दो० कल्पद्रुम सम ग्रंथ यह सर्ब सुफलदातार॥
धर्म मोक्ष का मार्थ हरिभक्ति विराग विचार।
बुद्धि न ज्ञान विवेक कछु बढ़ै न हरिपद प्रीति।
तिन्हैं न प्रीलम लाग यह विश्रामो दधि रीति।
बिबिधि ग्रंथ देखे सुने जिनके कपट न शोक
ते प्रमुदित ह्वै बरणिहैं पद अप्रति अश्लोक।

चौ० येहैं सुख संपति यश पावन। ह्वैहैं हरिजन मन भावन।
कलपित ग्रंथ कहै जो कोऊ। याचौं ताहि जोरि कर दोऊ॥
यह मम कृत तुम बारक बारा॥ देखिजाउ सुचि सहित विचारा
जो मम मति कलपित कछु होई॥ तौ मिलि दोष देहु सब कोई
आगे मुनिन कथन जो कीन्हा॥ सोई मैं भाषा करि दीन्हा॥
बहु ग्रंथन माहैं जो बाता॥ सो एकै माधुरी सोहाता॥॥
तहं कोइ कहै कहा है भाखा। तेहिते मैं बुधीत बिन माखा।
सुरनर पशु पक्षी जो होई॥ निज बानी समुझत सब कोई।
रहैं विबिहु कोविद गिरि राया॥ गरुड़ै बायस पास पठाया॥
आपु धरयो पुनि हंस शरीरा॥ जब गुगा सुने भुशुंडी तीरा।
अजहं जे सुर बानी कहई॥ प्राकृत करि समुझावत अहई
तब सब हरषे प्रीति बढ़ावें। नाहित कोइ निकट नहिं आवें
तेहिते जोनि जहाँ की बानी॥ सोई ताहितहाँ सुखदानी॥
लेन देन बिधि जो कछु करई॥ देशवाक्यते कारज सरई॥

दो० जेहिते निज कारज सरै ताको नींद नीच॥
यथा कोलपथ पान करि पुनि करि डारत कीच।
जो भाषा मानन नहीं तो भाषा मति गाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो बोलेले तो स्वान सम उगिलि असन फिरि खाय॥
अब गुरु पद रज अंजि दृग राम चरण सिर नाय॥
चली कथा जेहि भाँति जहं सो सब कहौं बुझाय॥

चौ० षट ऋतु माहिं सिसिर ऋतु जानो। फाल्गुन शुक्ल पक्ष पहिचानो॥
नैमिष क्षेत्र अटन तब होई॥ पक्ष एक निवसे सब कोई॥
प्रथम चक्र तीरथ जल पावै॥ पुनि सब पंच प्राग चलि जावै॥
यहि विधि ब्रह्मसर दिन होई॥ धेनुमति हि आवे ऋषि सोई॥
तेहि तट व्यास देव कर थाना॥ ऋषि सौनक तहं रहें सुजाना॥
बहुरि सूत आये तेहि ठामा॥ लखि सौनक कियो दंड प्रणामा॥
चरण धोइ आसन बैठारी॥ धूप दीप आरती उतारी॥
बोले बचन सुचित करि गाढ़े॥ हाथ जोरि सन मुख भे ठाढ़े॥
नाथ बात कछु पूछा चहऊं॥ आयसु होय बचन तब कहऊं॥

दो० अतिशै प्रीति विलोकि तब कहा सूत हरषाय॥
मुनि मन जनि शंका करो पूछो जो जिय आय॥

चौ० बोले रिषि सुनिय महि देवा॥ तुम जानत तिहुं काल क भेवा॥
वेद रु शास्त्र सकल तव देखा॥ नित्या नित्य क कीन्हो लेखा॥
तुम दयाल दीनन सुखदाई॥ तुम तजि कहां पूछिये जाई॥
प्रथम कहो गुरु महिमा गाई॥ नाम महातम बहुरि सुनाई॥
कर्मा कर्म धर्म आधर्म्मा॥ ज्ञान विराग भक्ति को मर्मा॥
दुख सुख स्वर्ग नर्क सब भांती॥ कौन कर्म करि केहि मा जाती॥
माया ब्रह्म जीव जग जाना॥ हरि हरि जन गुन करो बखाना॥
ब्रह्म अनादि धरयो बपु आई॥ कीन्ह चरित कस कहो बुझाई॥
चारि खानि जग जीव अपारा॥ उत्पति पालन अरु संहारा॥

दो० योग यज्ञ ब्रत दान तप वर्णाश्रम कर भेउ॥
भिन्न भिन्न भाखो सकल हे रुहाय तेउ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शास्त्र बिना नहिं ज्ञान भव ज्ञान बिना नहिं भक्ति
भक्ति बिना नहिं सत्य सुख ताते सुनिय सुशक्ति

कुं० शीश भार श्रुति सर्प बिल ग्रह मल मग सम लयन।
कर सनकार पग ऽफल तरु मोर पक्ष शशि नयन॥ मोर प-
क्ष शशि नयन ध्यान बिन विग्रह ऽसहई। नवैन गुरु जन चरण
राम गुन सुनै न कहई॥ करैन जो हरि कर्म हित ऽटन तीर्थ मु-
नीश॥ दारु जो बिवता सरिस मो धावत नावत शीश॥

दो० हरि विषयक जो होइ जन ताहि उचित है देह
महा मनोहर हरि चरित सुनै सदा करि नेह॥

चौ० सुनि मुनि बचन सूत सुख पावा॥ वेद व्यास पद शीश नवावा॥
छिन एक हरि कर ध्यान लगाई॥ पुनि मृदु बचन कहे हरषाई।
भेद तुम्हार हौं सब जाना॥ पूंछेउ जिमि मूरख ऽज्ञाना॥
सो मैं ऽब तुम्हार मत जाना॥ कीन्ह चहत सब कर कल्याना।
धन्य २ तुम मुनि बड़ भागी॥ पूंछ्यो राम कथा ऽनुरागी।
राम कथा शुभ चिंता मणि सी॥ दायक सकल पदारथ जनसी
मोह महा तम ग्रसि कर गासी॥ ऽहंकार करि हरि घरणीसी
ऽभिमत फल प्रद देव धेनु सी॥ स्वच्छ करण गुरु चरण रेणु सी
कलि मल भेक विपुल सर्पीसी॥ क्रोध महिष दुर्गा दर्पीसी।
सुजन समाज उडुप रजनी सी॥ साधु पोत पालन जननी सी
ब्रह्म लखन हित दृग धुतरीसी॥ मन मृग बन्धन हित सुतरीसी
लालच लोभ लवा बहरी सी॥ सद्गुण सकल कनक डहरीसी
दुर्बासना समूह सलभ सी॥ दीप सिखा सम दहन कलभ सी
हरि में हरिणा विभाव सुता सी॥ दुख द ऽविद्या तूल हुतासी।
धर्म कर्म वर बीज रसासी॥ सुमति बढ़ावन सुख सुद सासी।
ज्ञान भान भव सुरा बतीसी कवि कोविद हित ऽमज युवतीसी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कामभुवंगबिछैलहरीसी॥ मनिमयूरपालन गहरीसी॥ ॥
भर्मबलाहक जगतप्रानसी॥ ज्ञानखड्ग खरधरन सानसी
भवसरस्वान कमलबहनीसी॥ बिरतिबिचार कहनिरदनीसी
दालिद दुरव मृषकमिनकीसी॥ रघुपतिध्यानकरनपिनकीसी
सर्वभूतपादपमधुऋतुसी॥ कलिमलभञ्जन हेतमिरतुसी
बिरति निवेक नृपति मोहनीसी॥ सद संतोष क्षीरदोहनी सी।
शोक शुक्र भवभीम युसासी॥ पितर तरणा हरिभक्ति सुधासी।
प्रभुपद प्रीतिवढा वनिऐसी॥ अनुदिनलाभलोभकहँ जैसी।
रामहिप्रिय जिमिकाककजासी॥ भक्तिमुक्ति प्रदमंगल रासी

दो० मङ्गलबक्ताके भवन मङ्गलश्रोताधाम॥
मङ्गललेखक के करनि मंगल होतेहिं राम॥

इतिश्री बिश्रामसागरसबमतआगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदा-
सराम सनेही कृत वन्दनावर्णनो नाम द्वितीयोऽध्याय २

दो० भगवतचरित पिऊषवर नित सेवै जो कोइ॥
अन्तकालके समै में तेहि उदवेग न होइ॥

चौ० असिहरि कथा कहौं सुखदाता॥ सुनौप्रथम गुरु महिमाताता।
गुरु ब्रह्मा गुरु बिष्णु पुरारी॥ गुरु परब्रह्म दीनदुरव हारी॥ ॥
गुरुशरणागत जो कोइ आवै॥ बहुरिन सो चौरासी जावै॥
गुरु कृपाल अगनितगत दाता॥ गुरु कृपा छूटै यमनाता॥
महा अधम पापीनर होई॥ गुरुशरणागत आवै सोई॥
फिरिते नर्क परै नहिं प्रानी॥ जो गुरु बचन लेइ फुरमानी।
कहौं एक इतिहास पुरानी॥ मनुलगाय सुनु मुनिवर ज्ञानी

सो० रहा बधिक एकनीच कौरे ठगाही बन विषे॥
नाम तासु मारीच अति निर्दै कपटी कुटिल॥

चौ० तेहिं एक दिन मन कीन्ह विचारा॥ मो सम पतित न कोउ संसार।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जबते धरयों देह जग आई। पाप करत सब उमिरि बिताई।
इन अपराध कौनि गति होई। यहि विधि विपिनि शोच कर सोई।
तेहि अवसर गौतम ऋषि आये। जात रहैं कछु सहज सुभाये।
मुनिहिं बिलोकि तुरत उठि धावा। चरण नाय सिर वचन सुनावा।
मैं पापी ठग कुटिल चवाई। तुम दयाल पतित तन गति दाई।
तेहि ते प्रभु कृपा अब कीजै। मोहि आपनो शिष्य करि लीजै।
कह मुनि तोहि शिष्य जो करहूं। अर्द्ध पाप अपने सिर धरहूं।
दो० सुनु ठग पदुम पुराण में देखी सब निरताय।
पाप पुण्य जेहि विधि बँटे सो तोहि कहौं बुझाय॥

चौ० एक तपसी विषयी एक होऊ। भोजन करें एक महं दोऊ।
भली बुरी सङ्गति होइ जाई। पाप पुण्य आधा बटि जाई।
कुवें सरोवर औ बन लावैं। दशवां अंश भले हो बटि जावै।
दरशन ध्यान वचन सुनु जाका। सतवौं अंश पाप पुनि ताका।
जप तप दान धर्म एक करई। एक सेवा वाकी अनुसरई।
दशौं अंश फल सोऊ पावै। पाप पुण्य जोई होइ आवै।
करज काढ़ि पुनि पाप जो करई। तीन भाग फल धन दहि परई।
चोरी करि धर्म करै जो कोई। पाप पुण्य तेहि कछु न होई।
जो कोउ काहू पेरि करावै। पुण्य पाप षट अंश सो पावै।
प्रजा जो धर्मी धर्म कमाई। षटा अंश राजा ढिग जाई।
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना। जाप करत वा पूजा ठाना।
बात करै अथवा कुछ लेई। षटा अंश निज पुण्यहि देई।
आन के कर निज धर्म करावै। षटा अंश फल सोऊ पावै।
दो० पिता पुत्र नारि पुरुष गुरु शिष्य यहि भाय।
पाप पुण्य जो कछु करै अर्द्ध अर्द्ध बटि जाय॥
चौ० अस बिचारि शिष्य करों तोही। याते मोकु जानदे मोहीं।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोला बधिक ज्ञान नहिं देहौं। जबलगि गुरु न तुम्हैं करि लेहौं
सुनि मुनि हृदय बिचारहि आना। यह है खल नहिं देहै ज्ञाना॥
सह सनेह चह निज भल भाई। धरी पर पथ देहु बनाई॥ ॥
कह ऋषि गुरुदक्षिणा दे मोहीं। तब तो शिष्य करौं मैं तोहीं।
बोला का दीजै सो कहहू। समरथ होइ लेव जो चहहू॥
अब जनि पाप किहेउ कछु भाई। रामनाम सो सुमिरहु जाई
परम जाप तारक ब्रह्म सही। ब्रह्महत्यादि पाप हरै जही॥
अस कहि ऋषि चलि भे जिउ पाई। बधिक नाम में प्रीति लगाई
यहि भाँतिन कछु काल बितावा। मरण काल का दिनु जब आवा
ताहि लेन यम दूत सिधाये। पाछेते हरिगण चलि आये॥
शीश मुकुट मणि कुण्डल काना। पीत बसन तन भूषण नाना।
भुज बिशाल अनुपम कर लाजै। हरि दर चक्र कौमुदी राजै।
गणन देखि यम दूत डराने। बोले बचन कपट छल साने॥
बड़ी भाग्य हम दरशन पाये। आजु कहाँ यहि ठौर सिधाये

दो० कहा गणन दूतौ सुनौ बधिक भक्त यहि ग्राम।
तेहि आने आयन इहाँ लै जैबे हरि धाम॥

चौ० सुनत बचन किंकर यम केरे। बोले निज नैनन भरे रे॥ ॥
बधिक नीच पापी अन्याई। जीव हतेसि नहिं जाय गनाई॥
बन के बन यहि कीन्हेसि नासा। तेहि तुम कहत राम कर दासा
कह गण जबते गुरु यहि कीन्हा। रामनाम में मन चित दीन्हा
किहिसि न तबते कछु अपराधू। यहि सम और कौन है साधू
अस कहि लीन बिमान चढ़ाई। हरिपुर का चलि भे हरषाई॥

गी० छं० चलि भे बिमान चढ़ाइ हरिपुर ताहि राख्यो जायकै।
अति देखि गुरु परताप यम के दूत गय खिसियायकै॥ अस
समुझि नर गुरु शरण है हरि भजन जिन नाहीं कियो॥ तिन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पाय नरतन आइ जग करि हानि नर्कहि चलि दियो ॥

दो॰ गुरु शरणागत आइ कै जो सुमिरै सियराम ॥
इहां रहै आनन्द में अन्त बसै हरि धाम ॥ ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश ते जो अघ की ह्वै जाय ॥
गुरु बिन भव निधि नाँ तरै कहत निगम अस गाय ।

चौ॰ यामें कछु सन्देह न पेली ॥ आदिहि ते सब गुरु करि लेली ।
ब्रह्म के शिष्य प्रकृति ही जानो ॥ प्रकृति शिष्य महंतत्व पिछानो ।
महातत्व शिष प्रणौ जो कहिये ॥ ओंकार ते बिष्णुहि लहिये ॥
बिष्णुहि शिष्य लक्ष्मी भयऊ ॥ तिनके बिधि बिधि के शिव कहेऊ
रामचन्द्र अवतार जो लीन्हा ॥ बिश्वामित्र गुरु तिन कीन्हा ॥
व्यास पुत्र शुक देव सुभाये । जन्म लेत ही बिपिनि सिधाये ॥
तिन्ह गुरु कीन्हों जनकै जाई ॥ तब हिरदे महं निष्ठा आई ॥
ब्रह्म पुत्र नारद मुनि जेऊ ॥ मनु भगवान केर मुनि लेऊ ॥
दिक्षा हीन जाइं हरि तीरा ॥ दरशन हेत सदा मुनि धीरा ॥
कछुक काल रहि जब फिरि आवैं । जब बैठैं सो ठांउ धोवावैं ।
एक बार नारद लखि लयऊ ॥ रमा नाथ ते पूंछत भयऊ ॥ ॥

दो॰ बोले हरि नारद सुनौ तुम गुरु अबै न कीन ॥
सो बिचार सती जगह नित्त पाक करि लीन ॥

चौ॰ दिक्षा हीन जहां चलि जावै । सो जागा अशुद्ध ह्वै जावै ॥ ॥
गुरुमुख चरण पै जब आई । तब सोइ धरा शुद्ध ह्वै जाई ।
कह नारद मुनिये सुर राया । प्रथमें तुम मोहि कत न बताया
कह प्रभु तुम अतिशै प्रिय मोरे । कहेउं न मुनि होइ दुख तोरे
तहिते अब गुरु कीजे जाई । काहि करौं प्रभु देहु बताई ॥
जो प्रथमैं मिलि जाय सकारे ॥ ताहि गुरु तुम कीन्ह्यो प्यारे ।
भोर भये निकसे मुनि जबहीं ॥ धीमर देह धरी हरि तबहीं ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुनि आगे होइ निकसे आई। नारद देखि धरे पग धाई॥ ॥
तेहि गुरु करि हरि के ढिग आये॥ देखत प्रभु निज हृदय लगाये

दो॰ कह गुरु कीन्हो कौन पै सुनि बोले हरिराउ॥
गुरु में पै जो तुम कही चौरासी कहं जाउ॥

चौ॰ सुनि नारद निज गुरु पहं आये॥ समाचार सब कहि समुझाये
गुरु दयाल बोले तुम जाओ॥ हरि लै चौरासी लिखि लाओ॥
लिखि जब होहिं लौटि तब जायो॥ हाथ जोरि युग वचन सुनायो
सुनि नारद आये प्रभु पाहीं॥ चौरासी जानत मैं नाहीं॥ ॥
सो लिखि मोहिं देहु समुझाई॥ ताहि देखि भुगतौं मैं जाई॥
कह हरि नौ लख जलचर जाती॥ सब योनिन भर मैं बहु भांती।
दस लख पक्षी को बिस्तारा॥ उड़त रहैं भय को उर धारा॥
ग्यारह लाख जाति कृमि कीटा॥ बीस लाख थन विटप जो दीठा
तीस लाख पशु योनिहि जानो॥ चारि लाख मानुष्य पिछानो।
यह चौरासी योनि कहावै॥ सब भुगतै बिन अंत न पावै॥

ह छं॰ सुनि गये नारद लौटि तासें देखि प्रभु बोलत भयो॥
केहि दीन मत यह तुम्हैं कह ऋषि आजु गुरु मो को दयो॥
तेहि कहत पै जिन एक छिन में मेटि चौरासी दई। अस और नाहिं कृपाल दीन दयाल गुरु सम जग हई॥ ॥

दो॰ गुरु गोविन्द ते अधिक हैं यह प्रतीत मन लाइ।
गोविन्द डारें नर्क जो तो गुरु लेइ बचाइ॥ ॥
तम गुकार रू तासु हर गुरु सोइ करै प्रकाश।
बरणी धर्म अरु शास्त्र की यह मैं बर इतिहास।

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत मारीच नारद कथा बरणनो नाम

॥ तृतीयो ऽध्याय॥ ३

दो॰ बन्दि राम सिय सन्त गुरु भरतापगिरा सुखखानि।
बरणौ धर्म अरु शास्त्र को पुनि इतिहास बखानि॥

चौ॰ कही सत गुरु महिमा गाई॥ सुनि सौनक बोले हरषाई॥
नाथ मोहि निज किंकर जानो॥ गुरु प्रभाव कछु और बखानो॥
कहा सत गुरु बिन कछु करई॥ ताको काज एक नहिं सरई॥
गुरु बिनु मुक्ति पंथ नहि पावै॥ गुरु बिन नर चौरासी आवै॥
गुरु बिनु ज्ञान भक्ति नहिं जानै॥ गुरु बिन आतम नहिं पहिचानै

दो॰ बिन गुरु दिक्षा अफल सब जप तप होम क्रियादि
ज्यों पाहन में बीज बय उपजै नाफल बादि॥

चौ॰ तेहि पर एक इतिहास बखानो॥ सुन्दरता हि पुरातन जानो॥
अवध उत्तरे योजन चारी॥ रहे नगर एक अति सुखकारी
तामें कृष्ण दत्त द्विज रहई॥ सुंदरि नाम तासु त्रिय अहई॥
करें दान दिन प्रति अधिकाई॥ द्वारे अतिथ बिमुख नहिं जाई
हीरा हेम पदारथ नाना॥ देहिं विप्र कहँ वेद बिधाना॥ ॥
अस न बसन गजि बाजि मिठाई॥ शय्या दान करै मन लाई॥

दो॰ एक दिवस द्विज वर सोइ गयौ रहे कहुँ ग्राम।
नाम सुन्दरी तासु त्रिया रहे आपने धाम॥॥

चौ॰ तेहि दिन तेहि पुर नारद आये॥ कर बीना सिर तिलक लगाये
राम चरित गावन हरषाई॥ तेहि द्वारे है निकसे जाई॥ ॥
ऋषि हि देखि सुन्दरी उठि धाई॥ करि बहु बिनय भवन लै आई
उच्चासन नारद बैठारे॥ प्रेम धार लै चरण पखारे॥ ॥
कछु चरणोदक कीन्हो पाना॥ कछु छिरक्यौ सगरे अस्थाना
धूप दीप आरती उतारी॥ बड़ी भाग्य भै आजु हमारी॥
सुनि प्रसाद लै पाक बनाई॥ कहेउ स्वामि करिय भोग लगाई
तब नारद उठि भोजन कीन्हा॥ पुनि बहुरि आसन का दीन्हा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुन्दरि बात करन तब लागी ॥ लखि नारद बोले अनुरागी
धन्य तुम्हार मात पितु चीन्हा ॥ जिनकी कोखि जन्म तुम लीन्हा
नारन पाय सफल तब भयऊ ॥ जो मन जन सेवा महँ दयऊ
धन्य तुम्हार गुरु सुखदाई ॥ साधु सेव जिन तुम्हैं दिढ़ाई
सो॰ मुनि बोली द्विज नारि मेरे तौ गुरु है नहीं ॥
अपने हृदय बिचारि देहु असन लखि क्षुधित कहँ ॥
चौ॰ सुनि अस बचन देव ऋषिनासू। डारे असन बान्त करि आसू
लखि सुन्दरि डरि बोलि लीन्हा ॥ केहि अपराध बमन प्रभु कीन्हा
कह मुनि होइ बैष्णव जो जन ॥ करै अबैष्णव के गृह भोजन
खावै तहाँ जलहु बिन जानै ॥ ताको यह प्राश्चित्त बखानै
चंद्रायन ब्रत ठानै सोई ॥ तेहि अघ ते तब पावन होई ॥
इष्टापूर्ति पुराय सब वाके ॥ किये अमिथ्या निष्फल ताके
तेहि ते अधिक पाप तेहि परई ॥ निगुरा क्षुधा जो भोजन करई
यहि ते नष्ट कर्म नहिं आना ॥ भ्रष्ट बुद्धि करि देत अयाना
दो॰ ताते सुन्दरि तब क्षुधा भोजन कीन अजान ॥
कियो बान्त या कारणो नष्ट भयो मम ज्ञान ॥
चौ॰ सुनि सुन्दरि मन कीन बिचारा ॥ कत मैं कीन्ह धर्म अधिकारा
कत मैं बिबिध दान ब्रत किहऊँ ॥ कत मैं तीर्थाटन मन देहऊँ ।
कत मैं सुरसरी सीं गमढ़ाई ॥ दई गऊ बिप्रा समुदाई ॥
गुरु बिन धर्म करै जो कोई ॥ मैं नहिं जान्यो निरफल होई
तेहि ते मुनि अब दाया कीजै ॥ राम मंत्र मो को प्रभु दीजै ॥
अब जनि देर लगावहु स्वामी ॥ देखि प्रीति बोले ऋषि नामी
प्रथम जाहु कीजै असनाना ॥ सुन्दरि कहा बचन परमाना
जब हरि शरणा जीव यह जाई ॥ यम सरण ग्रसैं कुटुम्ब आई
सुत पितु मातु कहैं अस बैना ॥ भक्ति न कीजै हमरे ऐना ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोऊ कहै ऐसे उजागत सुख कीजै। यहु संयम परहरि भजि लीजै
सुनि मति भ्रम जे रहे सुखाई। तीन सौं काल अचानक खाई
मृतक जानि सुत पुनी नारी। रोवहि स्वारथ हेतु पुकारी॥
तासु सोच कोउ नेक न करही। हरिहि बिमुख यों कस दुख परही
तेहि लै मैं नहिं जाव नहाई। सुनि नर नारि देहैं सर माई॥
राम चरण पंकज चित दीन्हा॥ जेहि ते होत पाप सब छीन्हा
सुनत बचन मुनि अति सुख पावा॥ तुलसी माल कंठ पहिरावा

दो० बिप्र बयस न्रप सुन्दरी होइ अधीन पति भाम।
हरि भल चाहै उचित तेहि है तुलसी को दाम।
बिधि हरि हर कह साखि करि राम मंत्र तब दीन्ह
बैस्नव धर्म सिखाइ कै पावन पिता पुर कीन्ह

चौ० तेहि छिन निज लै तासु पति आवा। लखि बस क्रोध अस बचन सुनावा
केहि के कहे लीन्हे ते माला॥ जानि परा पहुंचा तब काला॥
अब ते तो कहं बहसि जो आना॥ ना हित कटिहौं शीश कृपाना।
सुनि सुन्दरि बोली कर जोरी॥ सुनहु प्रान पति टेक जो मोरी।
चहु तन टूक टूक करि डारो॥ भावै अनल माहिं धरि जारो॥
चाही खोरि तो पिय अक देहू॥ तजौं न रामहिं धरा मम येहू॥
तिन प्रभु सैं करि पाके काढ़ा॥ तिन्हे जानि स स्वांगी भाड़ा

दो० अस अबला के बचन सुनि गुरि गा द्विज रह्यो चुपाय
काढ़ि देउं तौं जग हंसे मारे हत्या अप्राय॥

चौ० तेहि दिन ते अस नेम सो धरई॥ पति का छुवा न भोजन करई
सहित प्रीति ते असन बनावै॥ परसि दूरि ते ताहि पवावै॥
यहि बिधि दिन प्रति पावै खाना॥ देखि बिप्र मन भई गिलाना
जो हम मारि जूठनि नित खाई। सो अब दूरि ते देत बहाई॥
अब की जरषि आवैं मम धामा॥ तो हुं गुरु करि सुमिरौं रामा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहि विधि द्विज मन करत विचारा। कृपा कीन्ह नारद पगु धारा॥
गुरुहिं हेरि सुंदरि हरषानी॥ शीस नाय बोली मृदु बानी॥
सुफल जन्म भा आजु हमारा॥ जोनि केतनौं रे पगु धारा॥
सुन्दर आसन पर बैठावा॥ चरण धोइ चरणोदक पावा॥
बहुरि पांच पैकरमा कीन्हा॥ दर्बि भेट ले आगे दीन्हा॥

दो० गुरु वैद्य अरु ज्योतषी देव मित्र बड़ राज॥
इन्है भेंट बिन जो मिलै होइ न पूरण काज॥

चौ० आज्ञा माँगि कीन्ह जिवनारा॥ षट रस व्यंजन विविध प्रकारा॥
सुवरण थार परसि धरि दीन्हा॥ हरिहिं अर्पि मुनि भोजन कीन्हा॥
अचमन करि आसन जब आये॥ द्विज सुन्दरि ने वचन सुनाये॥
गुरु दिक्षा मोहिं देहु देवाई॥ जाते तब संगति होइ भाई॥
सुंदरि आइ कह्यो गुरु पासा॥ इनहुन का कीजै हरि दासा॥
विप्रहु तब बोला कर जोरी॥ पुरवौ प्रभु अभिलाषा मोरी॥
दिक्षा लिहे सरी मम काजू॥ ताते विनै कीन्ह मैं आजू॥
कह नारद द्विज आउ नहाई॥ तब तुम का हरिनाम सुनाई॥
सुनि मुनि वचन विप्र हरषाना॥ तुरत सरित तहं चल्यो नहाना॥
मग एक पंडित तें भै भेंटा॥ आदर कीन्ह तेहि गहि कर फेंटा॥
पूंछा कृष्णदत्त तुम आजू॥ हरबर चलत कौन यह काजू॥
कृष्णदत्त पंडित तें भाषा॥ गुरु दिक्षा की है अभिलाषा॥

दो० तब पंडित बोले वचन कृष्णदत्त सुनि लेहु।
यह मृत्यु पक्ष कुँवार है गुरु दिक्षा जनि लेहु।

चौ० यामें पिण्ड दान भल कीन्हा॥ दिक्षा मंत्र न चाहिय लीन्हा॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ मासा॥ तब तुम होवहु हरि के दासा॥
सुनत वचन द्विज मन भ्रम छावा॥ तुरत फिरि नारद पहं आवा॥
कह प्रभु यार जान अब दीजै॥ कार्तिक शुक्ल पक्ष सिष कीजै॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यह सुनि नारद गे बिधि धामा॥ बिप्र रहे कातिक की आसा॥
ताकी अवधि न पहुंचन पाई॥ बीचहि दुहुन काल लियो खाई॥

दो० पल पहार की खबरि नहिं धौं घरी में का होय॥
आगे की आसा करत काल हंसै मुख गोय॥
अस बिचारि जे चतुर नर करत न लावैं बार॥
नहिं जानी केहि घरी में काल करै संहार॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मल आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ-
दास रामसनेही कृत कृपा दत्त कथा बरनानो नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४

चौ० कह सौनक मुनि कहौ बखानी॥ तनु तजि कहां गये दोउ प्रानी॥
कहा सूत सुन्दरि द्विज नारी॥ चढ़ि बिमान हरि लोक पधारी॥
बिप्र गयो यम के दरबारा॥ पाप पुण्य का भयो बिचारा॥
यम ते चित्र गुप्त बखाना॥ इन बहु कीन्ह पुण्य अरु दाना॥
जबते जाय देह इन धारी॥ उभै पाप कीन्हे अति भारी॥
कह यम कौन पाप सो कहिये॥ तेहि अनुसार दण्ड यहि चहिये॥
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा॥ सब बिप्रन कहं न्योता दीन्हा॥
तहां एक हरिजन चलि आवा॥ क्षुधा दीन ते बचन सुनावा॥
हम हैं क्षुधा अनल द्विज राई॥ कछु भोजन माहिं देहु मंगाई॥
अस सुनि बिप्र क्रोध कियो भारी॥ अनुचित बचन कहे दुइ चारी॥
सुनि कटु बचन गयो उठि साधू॥ तेहि ते यहि पर भा अपराधू॥
हरिजन जासु यज्ञ महं आवैं॥ मिलै न असन क्षुधित फिरि जावैं॥
ताको पुण्य सकल घटि जाई॥ बहुरि पाप होवै अधिकाई॥
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा॥ तेहि लखि इन अपतिष्ठा कीन्हा॥
तातें पुण्य छिन्न भे याकी॥ थोरी एक रही है बाकी॥

सो० सुनि बोले यमराय याहि देहु गज देह अब॥
निज फल भोगी जाय आप कहूं नृप के भवन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० अस कहि धर्म विपिन जन भावा॥ कथा रत्नगज कौ लघु पावा॥
कछुक दिवस वन माहिं बितायो॥ पुनि न्रप चंद्र सेन गृह आयो॥
चंद्रसेन कुरु क्षत्र के राजा॥ जिनके सदा धर्म कर साजा॥
यह सब चरित देखि द्विज नारी॥ मन आश्चर्य करै अति भारी॥
मम पति सो वारण तनु पावा॥ मोहि बिसम मन खेद बढ़ावा॥
वह ले पुनि मृत लोक हि ऐली॥ जहं आसा तहं वास पैली॥
जाके घर गज ता न्रप केरी॥ भई सुता अति रूप घनेरी॥ ॥

दो० दान दिहिसि अरु किहिसि गुरु भै कन्या न्रप केरि
राजा को करि दिज भयो दूनो जाति सुमेरि॥

चौ० कन्या जब कछु भई सयानी॥ गई द्विरद पहं निज पति जानी॥
इन देखा यह है मम नारी॥ भई महीपति केरि कुमारी॥
अस बिचारि दोउ प्रीति बढ़ाई॥ दिन २ होत जात अधिकाई॥
एक दिवस न्रप हृदय बिचारी॥ ब्याह योग्य भई सुता हमारी॥
विप्र बोलि शुभ घरी सोधाई॥ यत्न सोयम्बर केरि बनाई॥
सुनि सो दूरि निरासन त्याग्यो॥ करि बिचारि मन सोचन लाग्यो॥
लखि राजा बर वैद्य बोलावा॥ तब हु न कुम्भी दाना खावा॥
यहि बिधि बीत बार बहु गयऊ॥ तब लो न्रप के अति दुख भयऊ॥
कह कन्या पितु ते अस जाई॥ गजहिं असन मैं देहुं कराई॥
बोलि भूप जाहु किन अबहीं॥ मरि जाई नहिं जैहो कबहीं॥
पिता बचन सुनि गे पति पासा॥ बोली तुम कत रहन उदासा॥
बहु दिन ते भोजन नहिं खायो॥ सो कारण मोहिं नाहिं बतायो॥

दो० कह गयन्द चाहत करन न्रपति तुह्मार बिवाह॥
सो बिचारि अब होत है हृदय हमारे दाह॥

चौ० जब ते यहां जन्म तव भयऊ॥ कबहु न संग बिछुरि मम गयऊ॥
अस बिचारि दुख होत है मोहीं॥ ब्याहि आन पुरुष अब तोहीं॥

6523.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ताते मैं नहिं दाना खाहूं ॥ बारहिं बार मनहिं पछिताहूं ॥
सुनि कन्या बोली मृदु बानी ॥ सोच किहे दुख होइ रु हानी ॥
हम जो कहा नरतन के माहीं ॥ भजहु राम फिरि औसर नाहीं ॥
तब कार्तिक की आस लगायो ॥ अबचारहा की देही पायो ॥

दो० तब कार्तिक की आस करि बिसर्यो सिरजनहार ॥
अब चौरासी योनि में आय पर्यो भर तार ॥
तातें पुनि मैं कहत हौं दुख तजि भोजन खाहु ॥
तुम्हैं छाड़ि हौं ना कबहु आन पुरुष सँग ब्याहु ॥

सो० सुनि गज भोजन कीन लखि इच्छ्य बोल्यो कुवँरि ते ॥
कौन मंत्र तुम दीन जो सुनि खायो तुरत हीं ॥

छं० कह कन्या वोहि जन्म के गज पूँछहु मोर चरित्र मैं हौं या-
की नारि विप्र घर जन्म रहे सति ॥ हौं गुरु करि हरि भज्यों भइ-
उँ लेहि सुता आइ तब ॥ इन दीन्हों बहु दान भक्ति बिन बारा
बपु भव ॥ सज्यो स्वयम्बर साज मुनि करि भोजन तज दीन
लेहि ॥ बचन दीन मैं आइ जब तब फिरि भोजन कीन्ह यहि ॥

चौ० सुनि अस बचन भूप हर षाना ॥ कन्या बचन सँच नहिं माना ॥
लागे करन स्वयम्बर साजा ॥ आये देश देश के राजा ॥
रानी तब कन्येः पन्ह वाया ॥ कीन्ह्यों तन शृंगार सोहावा ॥
सहित सनेह गोद बैठाई ॥ बोली मधुर बचन सुखदाई ॥
रंगभूमि आये बहु भूपा ॥ देश देश के सुभग स्वरूपा ॥
जो तब मन भावै महिपाला ॥ मेल्यो तासु गरे जयमाला ॥
अस कहि हार दीन्ह तहि हाथा ॥ पठई एक सहेली साथा ॥
भूपन दिसि नहिं दृष्टि उठाई ॥ चली कुवँरि कुंजर पहँ आई ॥
पद्मी उर मेल्यो जे माला ॥ चकृत भये सब देखि भुवाला ॥
सब कहिन कही बयस लघु जानी ॥ चौंधि गई कन्या फिरि ठानी

सखीसदनलाईजहंरानी॥मातुताहिलखिबहुतरिसानी
दईसबैमतिहरीतुम्हारी॥नृपतजिमालब्यालउरडारी॥
दीनचहैबिधिदुखजबजेही॥ताकीमतिपहिलेहरिलेही॥
असकहिपुनिदीन्हेंउकरमालहि॥अबतेपहिरावहुनरपालहि
गईकुंअरिपुनिकरिउरडारी॥देखिभूपसबचलेसिधारी।
तबराजाअतिशैदुखपावा॥असिलैकन्यैमारनधावा॥
श्रुतिधारीजेबिप्रप्रबीना॥छीनिकृपाननृपतितेलीन्हा॥
अल्पवयसयहअहैकुमारी।हैअज्ञाननचाहियमारी॥

सो० गौहरहंदद्विजचौरसुतानारिअभिचारनी॥
पतीभूपजनऔरतदपिनइनकोमारिये॥

प०छं०दशगोमारेपापसहस्रएकद्विजसंहारे।दशद्विजबधजोपापएकस्त्रीकेमारे॥दशस्त्रीबधपापएककन्याबधहोई।दसकन्याबधपापपतीएकमारेसोई॥दशदंडीमारेजोपातकसिरआय।तेहिसमएकहरिजनबधेकहतनिगमअसगाय॥

दो० तातेहाजनलीजियेकीजेएकउपाय॥
बरखोजायटीकाकरोबहुरिदेहुमौंरिचाय॥

चौ०सुनिनृपनाऊबिप्रबोलावा॥बरढूंढनहितुरतपठावा॥
पुरअरुग्रामअनेकनदेशा॥देखेजहंतहंसकलनरेशा॥
लूल्हपंगुअन्धाबरकाना॥सिरीबरीकोढ़ीजाना॥ ॥
असबरुमिलैजहांचलिजाहीं॥कन्यासरिसमिलैकहुनाहीं
तबद्विजनाऊदोउफिरिआये॥राजातेसबखबरिसुनाये॥
सुनिनृपकर्मविपाकमंगाई॥बिप्रनतेताकोबचवाई॥
कहद्विजकन्याकहांजोरहई॥महाराजसोइसांचीअहई
जहांतहांफैलीयहबाता॥हाथीराजाकरयामाता॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनि ऽपकीरति नृप दुख पावा॥ ऽगिनि कुण्ड गुरु तै खनवावा
दो॰ गोमल घृत भरि दारु नृप जरै लाग तेहि माह।
तेहि क्षण ऽाये देव ऋषि खैंचि लीन्ह गहि बाहें॥
चौ॰ कह नारद क्यों जरै भुवाला॥ सो सब बरणौ मोसे हाला।
बोल्यो नृप राज ऽपमान जो कीन्हा॥ कन्या ताहि खवावै लीन्हा
मैं पूछा कस दिहे खवाई॥ कन्या कहा मोर पति ऽाई॥
तासु गिरा हम सत्य न जानी॥ सत स्वयम्बर की सब ठानी॥
कन्या हारु राजहि पहि रावा। तेहि पाछे मैं वर खोज धावा॥
जसि कन्या वरु मिला न तैसा॥ मिला सो ऽांधर पंगु ऽपनैसा
तब मैं कर्यो बिवाह बंधाई॥ कन्या कहा सो सांची पाई॥
ताहू परजे पुरुष ऽरु नारी॥ घर घर निंदा करैं हमारी॥
सो ऽपकीरति सुनी न जाई॥ ताते जरि मरिहौं ऋषिराई
दो॰ कह नारद जनि जरहु ऽब हैं कछु एक उपाय।
राम नाम राज सुनै तो ऽबहीं नर होइ जाय।
चौ॰ सुनि मुनि बचन भूप सुख पावा॥ बार ऽबार चरणन सिर नावा
महाराज ऽब देर न कीजै॥ बेगि राजै गुरु दिक्षा दीजै॥
जेहि ऽपकीरति मिटै हमारी॥ वरी जाइ तेहि साथ कुमारी
मुनि नारद हरि मंत्र सुनावा॥ राज पातक सब दूरि बहावा॥
सुखते भा बालक सुरूप ऽपाई॥ तेहि शोभा कछु बरणि न जाई
बैस किशोर गोर तन जासू॥ दृग बिशाल शशि सम मुख हासू
बाल बिलोकि भूप ऽरु रानी॥ टूक टक रहे निमेष न ऽानी
देखि सखी सब कुंवरि सराहें॥ धन्य भाग बड़ तुमरे ऽाहें॥
प्रथमैं तन दुख सह्यो ऽपारा॥ ताते पायो सुभग कुमारा॥
हमैं न बिधि ऽस दीन्हो नाहा॥ सखी सराहि कहैं मन माहा।
तब कुमार शिशु बन्दन कीन्हा॥ शीश नाइ चरणन धरि दीन्हा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जय जय जय ऋषिराज तुम्हारी। मोहि पापी की बिपति निवारी।
गज तनु लहि मैं अति दुख पावा। ता दुख ते तुम आजु बचावा।
दो० जान्यो मैं तव कृपा ते अब सतसंग प्रभाव ॥
दासौं जा तन वादि हित करत जहाँ चलि जाव
चौ० तब मुनिवर वर शिक्षा दीन्ही। सुनि तेहि सहित हिये धरि लीन्ही
नृपरानी कन्या सोइ जानो। भे नारद के शिष्य बखानो ॥
तेहि पाछे पंडित बोलवावा। ब्याह हेत शुभ दिवस सोधावा।
पत्रा खोलि लिखि बिप्र अस बोला। आजु लगन नृप अहै अमोला।
सुनि नरेश मन भै परतीती। कीन्ह ब्याह गंधर्व की रीती ॥
बहु बिधि दायजु दीन्ह भुवाला। बड़ आनन्द भयो तेहि काला।
गी० छं० नृप कीन्ह सुता बिवाह अति उतसाह नहिं पर गात
बनै। दियो दान बहु महिसुरन कहं गज बाजि पुर रथ को ग-
नै। दिन दिन अधिक अधिकात सुख सुरपुर सरिस बहु
भाँति हो। गुरु शरणा के परताप तेहि सकल संपै जानि हो ॥
दो० गुरु समान तिहुं लोक में और न दूसर देव ॥
तासे सौनक कीजिये गुरु चरणन की सेव ॥
दीप उडुप मनि चंद्र रबि पंच प्रकृति गुरु आनि।
वैष्णव दिक्षा सर्व पर मुनिवर कहत बखानि ॥
वैष्णव धर्म ते परे जो धर्म निरूपै कोइ ॥ ।
सो सहस्र मागमन ते सुजनन पाद्दै सोइ ॥
कुं० अन्य गुरा जो होइ तो राम मंत्र फिरि देय। राम मंत्र गुरु जो
न तेहि अपर न देय न लेय। अपर न देय न लेय सोई धप पाप बला-
वै। तत गुरु मानहिं ताहि ज्ञान जो जाने पावै। कहत दास
रघुनाथ ये गुरु शिष्य दोउ धन्य। परै नर्क महँ जाय जो धर्म सिखावे अन्य।
इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रामसनेहीकृतगुरुमहात्म्यकृश्नादत्तकथावर्णोनानामपंचमोःध्यायः५

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख खानि॥
बरणौं नाम प्रभाव बहु ग्रंथन कर मत आनि॥
चौ० पुनि सौनक बोले कर जोरी॥ ऋषि सुमंत्र पद प्रीति न थोरी
नाथ मोहिं निज सेवक जानी॥ नाम महातम कहौ बखानी।
सुनि मुनि बचन सूत हरषाने॥ बोले बिमल बचन सुखसाने।
सुनौ कहौं मैं नाम प्रभावा॥ जो गिरिजा प्रति शंकर गावा॥
एक बार शिव सहित भवानी॥ बैठे निज आश्रम सुखदानी॥
पतिहि प्रसन्न देखि अधिकाई॥ बोली शिवा सनेह बढ़ाई
दो० गुरु गुरु तुम कहत हौ राम नाम सुखदानि।
तासु अर्थ करि कृपा प्रभु मोसे कहौ बखानि।
धन्य प्रिया तुम जगत में कह्यो ईश हरषाइ।
रामनाम के अर्थ ही जो पूछ्यो मन लाइ॥
चारि बेद अरु षट सहस सब पुराण मुनि देव॥
नाम प्रभाव सो उग्र अति ते नहिं जानत भेव।
रामनाम को अर्थ जो सो सब जान्यो राम॥
तासु अनुग्रह ते कछुक मैं पायो सुखधाम॥
चौ० निजमति सरिस सुनहु मन लाई॥ नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई
कोटि काम सम जातन शोभा॥ अस को जो न देखि तेहिं लोभा
जनकनगर जे नर अरु नारी॥ रूप देखि तन सुरति बिसारी
सप्त दीप के नृप जे आये॥ सहित बिदेह सो देखि लोभाये
परसराम बिन कारण कोही॥ राम रूप देखत भे मोही॥
बन बिहरत खग मृग नर नारी॥ कोल किरात भल्ल कुमडारी॥
ऐसे सकल मिलि सेवा ठानी॥ रमकोड़ा तेहि कहत भवानी॥
धोबि निशाचरि लखि कोब रामा॥ धनि इक्ला कीन्हो सबसकाम

चौदह सहस असुर खर दूषण॥ मोहे देखि राम बिन भूषण॥
दो॰ दंडक बन मुनि सर्ब जे ज्ञान योग तप धाम॥
राम रूप छबि देखि कै भे पूरुष तें बाम॥ ॥
चौ॰ सेहु बालि देखत रघुराया॥ अजरा मर नहिं लीन्ही काया
रावण समर निशाचर जेते॥ देखि राम छबि मोहे तेते॥
अवध नगर नर नारि चराचर॥ रच्यो राम तन देखि दिवाकर
राम क्रीड़ा नाते तुम जानो॥ अब सो सुनो जो और बखानो
जल तरंग जिमि रवि अरु घामा॥ कनक सक भूषण बहु नामा
गिरा अर्थ जिमि अग्नि उष्णाता॥ कहत भिन्न नहिं भिन्न सो अनता
तैस नाम रूप है भावा॥ यदपि नाम कर अधिक प्रभावा
दो॰ रूप मिलत नहिं नाम बिन नाम रूप बिन वादि।
तातें दोऊ नित्य हैं अमल अनूप अनादि।
राम बदन राजा नियें अतेहि उर पहिचानि।
मा मकार दोउ चरण भे रेफ तेज चेतानि॥
सो॰ कोटि भानु तें भूरि। है प्रकाश जामे बिमल।
रह्यो चराचर पूरि। पर ब्रह्म ताको कहत।
कोटि विष्णु अज ईश कोटि शारदा शेष शशि।
सुरपति कोटि फणीश सम प्रभाव जामें बिशद।
तीरथ कोटि अनन्त नाम अधिक पावन करन
हरण पाप श्रुति सन्त। कहत तदपि उपमा नहीं
चौ॰ कहं रवि कहं खद्योत प्रकाशा॥ समकि लहै सुरवफूक बताशा
उपमा नाम की नाम न आना॥ गुह्य भेद सुनु कहं बखाना
राम नाम अंश शत जानो॥ तीन सिद्धि मे प्रगट बखानो॥
सोह बीज और ॐ कारा॥ अर्द्ध शतेकरव विचारा॥ ॥
अर्द्ध आकार ते ऊ पहिचानो॥ रेफ सो अक्षर भूत पिछानो॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हल मकार ऊपर अनुसारा ।। ताते सिद्धि भई ओंकारा ।।
यहि विधि सोहं बीज भवानी ।। नाम लेत प्रकट मुक्ति को दानी
दो० रामनाम ते प्रकट भै षट बस्तुइ जे और ।।
तिन के नाम बखान हूँ सुनु मन करि इक ठौर
परब्रह्म अरु जीव जो महा नाद स्वर चारि ।।
पंचम बिंदु षष्ठ रू अक्षर माया दिव्य निहारि ।।
चौ० परब्रह्म सो रेफ ते भयऊ ।। जीव रकार आदि ते कहेऊ
मध्याकार नाद सो कहिये ।। रा दीरघ ते स्वर को लहिये ।।
हल मकार ते मा अनुस्वारा ।। अनुस्वार ते अरोगो बिचारा
अरोगो ते भये तीन गुण जानो ।। सत रज तामस आदि बिखानो
त्रैगुण ते त्रै देव उपाये ।। ब्रह्मा बिष्णु महेश कहाये ।।
तिन ते भयो सकल संसारा ।। रमक्रीड़ा तेहि करत उचारा
दो० नारायण को रूप करि जो है प्रथम रकार ।
महा बिष्णु आकार ते महा शंभु माकार ।
रामनाम के भीतरे ब्रह्म जीव त्रै लोक ।।
ज्यों क्षिति बीज नक्षत्र नभ नग माहिं ग्रह थोक ।
रामनाम के ध्यान में सर्व सिधि ध्यान होइ जात ।
जिमि सींचे एक मूल के डार पात हरियात ।
राम नाम को छाँड़ि के करत जो अपर उपाइ
मुख तजि भोजन भजे जिमि सपनेहुं क्षुधा न जाइ
चौ० रमक्रीड़ा याते बुध कहई ।। अपर हेतु सुनिये जो अहई
परम जाग शुभ रेफ कहावे ।। परम बिराग रकार बतावे ।।
सो पावक के बीजहि लहिये ।। बड़वानल आदिक जो कहिये
अस बिचारि जो नाम उचारें ।। कर्म शुभाशुभ सो सब जारें ।।
परम ज्ञान बिज्ञान जो कहई ।। ताको मूल अकार सो अहई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो सूरज का बीज यही है ॥ सुमिरत काल प्रकाश सही है ॥
भक्ति सरूप मकार सुहावनि ॥ चंद्र बीज त्रैतापनशावनि ॥
तीनि कांड रवि शशि सब जाते ॥ रस क्रीड़ा कबिवर गावत ताते ॥
सत रकार चित जानु अकारा ॥ आनंद रूप मकार बिचारा ॥
सत कहिये जो बिनसै नाहीं ॥ चित चैतन्य सकल घट माहीं ॥
आनन्द जो नित रहै अनन्दा ॥ ताते नाम सच्चिदानन्दा ॥ ॥

दो० तत पद ब्रह्म सो रेफ कहि त्वं पद जीव अकार ।
हल मकार माया असी तत्त्वमसी श्रुति सार ॥
हल मकार कहु माया अक्षर ब्रह्म अकार ॥ ॥
रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि सब ब्यापक निरकार ॥
हल मा इच्छा अकली ते सकल शक्ति संजाय ।
रस क्रीड़ा तेहि कहत अब मुख्य नाम कहौं गाय ।

कुं० कं० विष्णु नरायण कृष्ण जो बासुदेव हरि ब्रह्म ॥ परमेश्वर परमा-
त्मा । विश्वम्भर निष्कर्म विश्वम्भर निष्कर्म कमलानिधि कलुषह-
नन्ता । केशौ कमलाकान्त विश्ववपु भव भगवन्ता ॥ ऐसे ना-
म अनेक जो दैत्यारि मुकुन्द सेषु । सुखद सकल पावन महा
पहुँचावत पुर बिष्णु ॥ सब नामन में रामनाम परकाशक जि-
य जानु । जिमि नक्षत्र महँ चंद्रमा अरु ग्रहगन में भानु ॥ अ-
रु ग्रहगन में भानु कविन में यथा अनन्ता ॥ निर्जर में जिमि श-
क्र भक्त में जिमि हनुमन्ता ॥ लोकन में गोलोक सरिन में सरयू
धारा । नरन माहिं जिमि भूप धनुषधारिन में मारा ॥ भगवन्त-
न में राम यथा शक्तिन में सीता ॥ अद्रिन में जिमि मेरु पुराण
पाठन में गीता ॥ कामधेनु गो माहि अहिंसा धर्मन मा जिमि ।
रु सन में सुरुच खगन में बचन तेहु तिमि ॥ छिमन माहि-
जिमि छिमा सलिल में जिमि सर स्वाना ॥ कर्मन में हरि कर्म ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

में ब्रह्म ज्ञाना पुरिन माहिं जिमि अवध मंत्र में जिमि ॐकारा। रु छन्न में मैं यथा स्वरन में जिमि आकारा। पुष्कर तीरथ माहिं मणिन में कौस्तुभ जैसे। सब नामन में रामनाम तुम जानो तैसे॥ सुनि बोली गिरजा बहुरि अरथौ तिनके अर्थ सब। कहि शिव सो ऊ सुनु प्रिया बन्दौं नाम संक्षेप सब॥

चौ० नर जीवन की संज्ञा मानौ॥ नर सब जाके आश्रित जानो॥
ताते नाम नरायण कहिये॥ नर हिय अयन जासु को लहिये॥
हरि दुख हरत भक्त के पापा॥ ताते हरि अस नाम सुथापा॥॥
वासुदेव सब मावश जोई॥ सब जहँ बसै वासुदेव सोई॥॥
केशौ सो जेहि तेहु सुर सेवैं॥ कला अंश अवतार जो लेवैं॥
पोषत भरत सकल संसारा॥ तासु बिश्वम्भर नाम उचारा॥
भ्रमा जिमि सब जगत प्रकाशा॥ सर्व भिन्न निरगुण परकाशा॥
ताते ब्रह्म कहावत सोई॥ अनन्त अनन्त रूप जेहि होई॥॥

दो० कृषि भूवाचक शब्द जो ताहि ण रत हैं कृष्ण॥
सब में व्यापक रहत नित बिषरा व्यापसो बिष्णु॥
सब ऐश्वर्य सुधर्म यश श्री बिराग बिज्ञान॥॥
षट भग जामें होइ ये सोहि कहिये भगवान॥
रामनाम ते होत जो सो काहू ते नाहिं॥॥
यह निश्चै करि देखिये सकल पुराणन माहिं॥
रामनाम निर्बर्ण है सब बरणन को ईश॥॥
मुकुट छत्र ये जानिये रेफ बिन्दु सब शीश॥
रामनाम मय सर्व है नाम प्रकृति अरु वर्ण॥
रम क्रीड़ा ताते कहत सुनहु अपर थरि कर्ण॥
कोटि तीर्थ व्रत दान तप कोटि योग जप ध्यान॥
कोटि ज्ञान बिज्ञान मख तुलै न नाम समान॥

सप्तकोटि जो मंत्र हैं चित भ्रमावन काज॥
परे मंत्र हैं राम नाम सकल मंत्र को राज॥।॥

चौ॰ रामनाम जे जपैं सदाहीं॥ मुक्ति भुक्ति तेहि संशै नाहीं॥
मूर्द्ध गगन तहं बसत रकारा॥ त्रकुटी बास अकार बिचारा॥
जिह्वा बास मकार हि जोई॥ निज निज थल उच्चार सो होई॥
योगी अर्धरकारहि ध्यावैं॥ अरु अकार ज्ञानिन मन भावैं॥
पूरा नाम जपै हरिदासा॥ मुक्ति भुक्ति की छाड़े आशा॥।॥
जैजै मंत्र प्रयोग कहावै॥ तैसतैस साधे फल पावै॥ ॥
ते सब सिद्ध छिप्र होइ जाई॥ रामनाम सुमिरै मन लाई॥
जपै कौन बिधि युक्ति बताओ॥ निजगन जानि न नाथ दुराओ॥
कह शिव सुनो प्रिया करि प्रीती॥ नाम जपन की बरणौं रीती॥
सतगुरु ते जब पावै नामैं॥ करि बिश्वास रटै तजि कामैं॥।॥

गी॰ छं॰ तजि काम क्रोध बिमत्सरालस लोभ मोह निवारि के॥ छल मल कुसंगति त्यागि सद्गुरु आसनासन मारि के॥
शुचि अंग गो मन जीति नासा निरत नित नामै रटै। है जाय सो नर राम ही को रूप भवबंधन कटै॥।॥

चौ॰ प्रीति अप्रीति रीति बिन जाने॥ कहत नाम सुख लहत सयाने॥
अमिय गरल गद जल मल आगी॥ पारस सम गुण कहत बिरागी॥
अंतर नाम जपत जो कोई॥ मुक्ति होत परि भक्त न सोई॥।॥
रामरूप दरशन नहिं पावैं॥ तातें जन रसना मन लावैं॥ ॥
रसना नाम रटत जो कोई॥ पराभक्त हरि दरशन होई॥।॥
रसना नाम रट्यो जिन जानों॥ तिन सबहिन के नाम बखानों॥

दो॰ लोमस नारद ब्यास शुक भृगु अगस्ति अरु त्यार॥
गणिका यमन गयंद द्विज नामक जान्यो स्वार॥

चौ॰ कागभुशुण्ड नाम गति जोई॥ कल्प अन्त जेहि नाश न होई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बालमीक ध्रुव सुमिरयो नामा॥ पावन भयी लह्यो विश्रामा।
नाम प्रसाद शेष महि लीन्हें॥ भुवन चारि दश रज सम कीन्हें
नामहि बल मैं विष कियो पाना॥ वेद पुराण विदित जग जाना
सनकादिक गण मुनि हरि जाता॥ जीवन मुक्ति पूज्य सुखदाता
औरौ प्रमित भये हरि दासा॥ नाम सुमिरि गे प्रभु के पासा।
सो॰ योगी ज्ञानी भक्त जे सुकर्म करता सकल॥
रामनाम अनुरक्त रसकी द्वा ताते कहस॥
चौ॰ सतयुग सत्य न झूठ बखानी॥ करि हरि ध्यान तरै भव प्रानी
त्रेता लग मख संयम करहीं॥ सुख लहि देइ जीव जग तरहीं॥
द्वापर व्रत पूजा आचारा॥ करि करि जीव होइ भव पारा।
कलि नहिं तप व्रत संयम योगा॥ साधन कठिन देह बस रोगा॥
ताते निगम सुगम मग गावा॥ कलि भव सिन्धु नाम दृढ़ नावा
नाम प्रताप सकल युग जानू॥ कलि विशेष जिमि ग्रीषम भानू
अस बिचारि जे नर अस ज्ञानी॥ जपहिं नाम ऋतु अन ऋतु मानी
अन्न असन तजि बन फल खाना॥ गज रथ बाजि देइ गो दाना
गी॰ छं॰ गो देइ कोटिन दान गिरि चढ़ि झौंप ले तन जारहीं। स-
ब करहिं तीरथ अटन ज्ञान पुराण वेद विचारहीं॥ मख कोटि सुर
तैंतीस राधै योग अष्टांग हि करै। एक राम नाम जहा-
ज बिन संसार सागर ना तरै॥
दो॰ अँवै अनल शशि व्योम फल तम रवि देइ मिटाय।
बिन हरि भजन न भव तरै करै जो कोटि उपाय॥
गरुडै खाइ भुजङ्ग वरु घृत निकसै जल नीक॥
भजन बिना सुख नाल है यह पाथर की लीक॥
अस बिचारि रघुनाथ भजु राम नाम मन मोर।
जब होई तब होइहै येही ते भल तोर॥ ॥

सो० ज्ञानी ध्यानी गुणी दाता सूर सुजान॥
अतिपवित्र रघुनाथ सो जो सुमिरै भगवान॥
राम नाम का अर्थ कछु कहौं बुद्धि अनुसार॥
नाम प्रभाव अपार अति को अस पावै पार॥
पाठ अशिष्य विष पाठ की तिन्है न यह मत देइ॥
रामउपासक ते कही जो सुनि उर धरि लेइ॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास-
रामसनेही कृत नाममहात्म्य बरनी नो नाम षष्ठो अध्यायः ६॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गणप गिरा सुखखानि॥
कूरम कोल पुराण की कहौं इतिहास बखानि॥
कह सौनक हरिनाम कहि पतित तरे जग कौन॥
यह अभिलाषा सुनन की कहौ नाथ तुम तौन॥
बंदे उ सूत हरि नाम कहि तरिगे पतित अनेक॥
पार न पावैं जो गनैं सहस शारदा शेष॥
जो कछु मम जाने सुने पुराण पुराणन माहिं॥
सो तव हित बरणन करौं जो पूछो मोहि पाहिं॥

चौ० बालमीक गरिमा का गज जानो॥ यमन केर इतिहास बखानो॥
कीरति मुख इक मुनिवर रहई॥ विपिन मध्य तनय गन चहई॥
इक दिन स्वपने शुक्र बिनासा॥ बांधी धरि जरीचि चले उदासा॥
तेहि ते बालमीक मुनि भयऊ॥ ठगन केरि संगति होइ गयऊ॥
तिनके साथ विपिन नित जाई॥ मारि जीव धन लेइ छिनाई॥
सब बिधि सो जब भयो सयाना॥ तब बन लाग अकेलेहि जाना॥
ब्राह्मण वयस शूद्र जेहि पावै॥ प्रथम मारि तेहि वस्तु छिनावै॥
जो कोइ आपुइ ने धन देई॥ बिन बध किहे कबहुं नहिं लेई॥

दो० एक दिवस बड़ि देर भइ मिलान कोऊ ताहि॥

तेहि मानि के सप्तऋषि के हुते नाम जो आहि॥
कश्यप अत्रै यमदग्नि विश्वामित्र वसिष्ठ॥
भरद्वाज गौतम कहे नाम सप्त ऋषि शिष्ट॥

चौ॰ इन्हें देखि धावा हरखाई। बोला बचन मुनिन से जाई॥
पोथी पत्रा देहु उतारी॥ नाहि त सबन डारि हौं मारी॥ ॥
जानि दुष्ट बोले मुनि तानी॥ सुनु ठग हम पूछत इक बानी॥
जो तुम पाप करत अति भारी। तिन मा कोइ औरौ सझियारी॥
यह घर जाइ पूछि ये बाता॥ आइ हमैं फिरि कीजे घाता॥
कही बिहँसि मैं अन न जावों। तुम भजि जाउ कहां पुनि पावों
तब मुनि सोह राम की खाई। सुनि आवा घर देर न लाई॥ ॥
तात मात सुत बनिता भाई॥ पूछेसि सब का निकट बोलाई
मैं जो लूटि मारि धन लावों॥ खात सकल मिलि भोग भोगावों
जीव बधे कर पाप जो होई। तेहि मा सझियारी है कोई॥ ॥
सबहिन कहा पाप जो आहीं। ता के हम साथी हैं नाहीं॥

दो॰ अस सुनि सोउ पतभयो गयो सप्त ऋषि पास॥
हाथ जोरि चरणन पर्यो कह्यो बचन परकास॥

चौ॰ महाराज हैं सरण तुम्हारी॥ पतित जानि मोहि लेहु उबारी
सुत पितु मातु बन्धु त्रिय नारी॥ हैं सब स्वारथ के संघाती॥॥
संकट परे काम नहिं आवैं॥ सबके सब जहं तहं भजि जावैं॥
अब लगि मैं सब का निज जानी॥ करत रह्यों पातक सुख मानी॥
सो अघ समुझि लगत डर भारी॥ पाहि पाहि मैं सरण तुम्हारी॥
दीन जानि बोले सुखदाई॥ मरा मरा कहि सुमिरहु जाई॥॥
सुनि मुनि बचन हृदय धरि लीन्हा॥ मरा २ सोइ सुमिरन कीन्हा
तिसरे शब्द राम होय गयऊ॥ बालमीक कर कारज भयऊ
जाप करत भे पातक नाशा॥ निर्मल हृदय भयो परकाशा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० तबभविष्यसियराम यश कह्यौ कोटि सतगाइ
सौनकनाम प्रभाव अस मराके हेगतिपाइ ॥

चौ० और सुनो गणिका इक रहई। ताके पाप पार को लहई॥
अन्त समय लीन्हों यम घेरी। लगे देन तेहि त्रास घनेरी॥
तेहि समय एक हरिजन आये। देखि त्रास का बिनय सुनाये॥
तुम हौ दीनबंधु सुखदाई। मोहिं सङ्कटते लेहु छुड़ाई॥
सुनि साधू मन बिसमय कीन्हा। मंत्र याहि नहिं चाहिय दीन्हा॥
जो याकर कल्याण न होई। तौ प्रण जाइ हमारो खोई॥
बिना नाम भल होत न जानौं। यहि कौन बिधि नाम बखानौं॥

दो० अस बिचारि साधू कह्यो जग जो हिन्दू लोग।
कीरपदा बत कहो सोइ तब तब नाशे सोग॥

चौ० सुनि गणिका कह राम सो आही। असकहतै तन छूटा ताही॥
सुनतहि हरिगण आये धाई। यम फांसी से लेल छुड़ाई॥
हितसे सुभग बिमान चढ़ावा। राम धाम तहं जाइ बसावा॥
अस है राम नाम सुखदाई। अधम जाति गणिकै गति पाई॥
सुनहु एक गज अति बलवाना। करन गयो सागर जल पाना॥
ग्राह गह्यो ताकर पग धाई। लैगा जल महिं घसि लाई॥
फिरि गज खैंचि किनारे लावा। यहि बिधि सो बहु काल बितावा॥
गज के तात भ्रात सुत भामा। कछु दिन भोजन दीन्हों तामा॥
पाछे सबन त्याग तेहि दीन्हा। क्षुधा क्षीण भा बल तें हीना॥
कोउ सहाय क जब नहिं देखा। जान्यो गाअब प्रान बिशेखा॥
तब तेहि अर्द्धनाम गोहरायो। गरुड़ छांड़ि हरि तुरतहि धायो॥
ग्राहे हति गज लीन बचाई। सुनु मुनि अस दयाल रघुराई॥
तिन्हें छांड़ि जे आनै धावैं। तजि सुरसरि जल कूप खनावैं॥
और सुनो मैं कहौं बखानी। हो म्लेच्छ एक अघ खानी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एकदिवसगुनींकहंगयऊ॥ बाहरग्रामसोबैठतभयऊ॥
पाछेतेसूकरसुतआवा॥ बिटऊपरमुखमारिगिरावा॥
कहाअमनमारयौहारामा॥ असमांगतछूट्योताजामा॥
यमकेदूतगहिलेतेहिधाई॥ आइगराानतबलीनछिड़ाई॥
कहागरानलीन्होंयहिनामा॥ अबनहिंजायतुम्हारेधामा॥
कहयमदूतहरामजोकीन्हा॥ सोयहिनामसुवरकालीन्हा॥
हरिगणकंहसंकटकेमारे॥ हाइरामअसकहिसिबिचारे॥
दूतकहाचलिन्यावचुकाई॥ जाहिमिलेसोईलैजाई॥
यहिबिधिझगरतगेविधिपासा॥ बोलेब्रह्मजाहुकैलासा॥
तबचलिउमानाथपंहगयऊ॥ दोउमिलिहालगुजारतभयऊ॥

दो॰ सुनतकहाशिवनामकरन्यावनमोसोंहोइ॥
चलिबैकुण्ठचुकाइयेश्रीपतितेकहिसोइ॥

चौ॰ असबिचारिबैकुण्ठहिआये॥ समाचारसबहरिहिसुनाये॥
कहयमदूतचरणशिरनाई॥ इहुहैअतिपापीअन्याई॥
मरतहरामकहेसिमुखयेहीं॥ तातेगणलैजाननदेहीं॥
सोनियावतुमतेंप्रभुहोई॥ जोतुमकहौंकरैंहमसोई॥
सुनतविष्णुमनकीन्हबिचारा॥ नामप्रभावअनन्तअपारा॥
बोलेयमदूतोसुनिलीजे॥ याकोदूहैंरहनअबदीजे॥
सुनियमगणचलिभेखिसियाई॥ हर्षेशिवबिरंचिमुनिराई॥

छं॰ हर्षेबिरंचिमहेशशेषगणेशनारदआदिकैं। जेहिहेतुमुनिजपकरतयोगीयोगआसनसाधिकैं॥ नहिंमिलतसोपदयमनकहिहारामबिनश्रमपायहू। असजानिजामेंनाजपैंतिनवादिजन्मगंवायहू॥

दो॰ असहैनामप्रभावजेहिकहिनसकैंहरआपु।
तातेसन्तनकीजियेरामनामकोजापु॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इति श्रीबिश्रामसागर सुष मतःआगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृतबाल्मीकि गज गनिका उद्धारबर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥
कहौं कथा भागवत की अब इतिहास बखानि॥

चौ॰ बोले मुनि कछु नाम प्रभावा॥ कहौ सुनौ अब अपर सोहावा॥
कनउज तीर ग्राम इक अहई॥ अजामील द्विज तामें रहई॥
मात पिता नाम यश धारा॥ सो सब सांच कीन्ह करतारा॥ ॥
पूर्व कर्म बस तजि निज नारी॥ बेश्या सकाल हिंसि बैठारी॥
सुरापान ताके संग कीन्हा॥ शौच सयान दूरि धरि दीन्हा॥ ॥
अजामील लै नीच न देई॥ चर्म न का पर अपना लेई॥ ॥
अस पातक निशिवासर करई॥ हृदय नेकु दाया नहिं धरई॥

प॰ छं॰ एक दिवस इक साधु तासु नगरी महं आयो। पूछ्यो हरिजन धाम सुनत दुष्टन बहं कायो॥ आजामील घर जाहु चहो जो शुभ विश्रामा हरिजन जान्यौ सांच गयो चलि ताके धाम। गणिका लखि घूमें तुरत अजामील सुनि पाइ। विनती करि फिरि लै गयो आसन दीन बनाइ॥

दो॰ यद्यपि मैं यहि जन्म मंह दुर्भग अघ युत दीन॥
तदपि पाछिले जन्म महं पुण्य घनो कछु कीन॥

सो॰ पुण्य पुंज बिन नाथ। मोको तव दर्शन कहां॥
औपि मिलत कहु साथ तो नहिं होतो भाउ उर॥

चौ॰ अस कहि सीधा विटते लायो॥ बिबिध भांति भोजन करवायो॥
है प्रसन्न बोल्यो हरिदासा॥ तब बनिता उर पुत्र निवासा॥॥
अब की बेर जन्म लेइ जबयाही॥ धरेहो नाम नारायण ता ही॥
नारायण जो धरिहौ नामा॥ तौ नहिं जैहौ यम के धामा॥॥

प॰ छं॰ अस कहि हरिजन गयो भयो जब बालक जानी॥

धर्यो नरायण नाम वचन वैशो को मानी ॥ तासो राखै नेह नेकु नहिं न्यारा करई । मोह वश्य भा अंध मृत्यु से नाहीं डरई ॥ यहि भाँतिन केछु काल गे अन्त समै का वार । लेन चले यम दूत बहु आये तासु अगार ॥

चौ० महा भयानक रूप निहारी ॥ अजामील डर्यो अति भारी
लागदर मारि डारि गर फाँसा ॥ काढ़त जीव चले उर्द्ध स्वासा ॥
निकसत प्राण भई अति पीरा ॥ रही न तन कौ सुद्धि शरीरा ॥
रूराइ धेरि मम गण इक लयऊ ॥ मुख से बचन बोलि नहिं गयऊ

दो० तब सोइ सुत की आदि करि कह्यो बचन हरु वाइ ।
कहाँ नरायण पुत्र मम तेहि मोहिं देउ देखाइ ॥

चौ० नाम लेत हरि हृदय विचारा ॥ दुखकी वस कहु मोहिं पुकारा
मोर नाम जे जग मे लेहीं ॥ तेहि कि कष्ट यमकिं का देहीं ॥ ॥

सवैया तुरते हरि बोलि कह्यो गण ते केहु नाम लियो तेहि वेगि बचावो ॥ फाँस छोड़ाइ चढ़ाइ बिमान बजाइ निशान मेरे ढिंग लावो ॥ आयसु पाइ गये द्विज धाम बिलोकि के दूत सबै दुख पावो । बोलि उठे तब ही गण ते केहि कारण भौन घुसे तुम आवो ॥

चौ० इतना सुनि उत्तर गण दीन्हा । इहाँ रहत हरिजन हम चीन्हा
तासु फाँस काटन के हेता ॥ ताते पठ इनि कृपानि केता ॥
सुनि यम दूतन कहा रिसाई ॥ तुम लोगनों बड़े अन्याई ॥
याकी सम नहिं दूसर पापी ॥ ता को तुम हरिजन करि थापी ॥
खायसि माँस कि हिंसि मद पाना ॥ अस नाहिं लै चल्यो बिमाना
सुनहु गनौ जे आमिष खाहीं ॥ तेहि सम और पाप नहिं आही
याकर दोष जौन कछु होई ॥ कथा कह्या पारय भसोई ॥
पशु तन हते जो रोम शरीरा ॥ तिल ने वर्ष नर्क सह पीरा ॥ ॥

आठ जु हिंसा के गृह जानो ॥ सो भारत में साखि बखानो ॥
जीव बधन इक अज्ञा देई ॥ दूजो मारै त्रै गहि लेई ॥ ॥
चौथो सुनो सवारनहारा ॥ पंच वांचैं चनहार निहारा ॥ ॥
छठें रसोई जोन चढ़ावै ॥ सतवों सो जो परसि जिमावै ॥
अठवां खानहार जो होई ॥ धरै नर्क महं आठो सोई ॥ ॥

दो० मोल मंगावै घर हते ताहि दर्वि दे कोउ ॥ ॥
सुख सम्पति सब नाश ही मोक्ष लहै नहिं सोउ ॥

चौ० द्विज ह्वै के मदिरा जो खाई ॥ देव गुरु का कर पूजै जाई ॥
बार गुरवी जो गरे लगावै ॥ कुल का धर्म सकल घटि जावै ॥
तेहि द्विज की पूजा जो करई ॥ पुण्य जाइ घटि अघ सिर परई ॥
यामें नहिं हम झूठ बखाना ॥ धर्म शास्त्र में यह परमाना ॥ ॥
तेहि ते अब ऐसी जनि कीजै ॥ याहि नर्क लै जाने दीजै ॥ ॥
अस पापी जो हरिपुर जाई ॥ नर्क काहि हम डारब भाई ॥

सवैया बोलि तबै गण दूतन ते तुम नाम प्रभाव न जानत भाई । गो द्विज पाप करै नर जो अपने करते मधु ले इछोड़ाई । चोरि करै बटपारि करै गुरु तल्प धरै पग आमिष खाई । और हु पाप करै बहु जो हरि नाम लिहे सबही जरि जाई ॥

दो० गणिका यमन गयन्द से बाल मीक अघ खानि ॥
नाम कहत सब तरि गये कहं लगु कहौं बखानि ॥

चौ० कोटि गऊ जो देवै दाना ॥ ग्रहण करै काशी अस्नाना ॥
मकर प्रयाग बसै जो जोई ॥ यज्ञ करै दश सहस सोहाई ॥ ॥
गिरि सम हेम दान कर कोई ॥ राम नाम सम तुलै न सोई ॥ ॥
यथा ढेबुक मुद्रा जग माहीं ॥ हैं सब एक यदि इक सम नाहीं ॥
बस्तु अमोल यथा मति कहहीं ॥ जिन जाना जस तस फल लहहीं ॥
संकेत परिहास जो करई ॥ राम नाम सुमिरत अघ हरई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अस हरि नाम प्रकट जग आही। शेष महेश रटत हैं जाही॥
सोई नाम याते कहि आवा। याकी सम को भक्त कहावा॥
कह यमदूत सुनहु गण जेता। कब यहि कीन राम सों हेता॥ ॥
यहि तो पुत्र नाम कहि टेरा। तातें हम दियो दुःख घनेरा॥
जो यह लेत राम कर नामा। तौ हम तें याको का कामा॥ ॥
कह गण हरिजन जो कहि गयऊ। ताके वचन मानि यहि लयऊ॥
करि उपदेश सन्त दिय नामा। तातें भक्त भयो यह रामा॥ ॥
चारौ युग श्री शारँग धानी। साँचो करि आये जन बानी॥ ॥
यहि विधि दूतन कह समुझाई। लीन्हो ताहि विमान चढ़ाई॥
राम धाम लै गे यहि भाँती। यम किंकर चलि भे खिसियाती॥
हरि गी० छं० खिसियाहि चलि भे दूत यम के देखि महिमा नाम की। अस अधम पापी खल सुरापी निर्दयी हरि वाम की॥ सो अन्त समै पुकारि सुत को नाम हरि उर का गयो। अस राम नाम प्रभाव सुनि अति हर्ष शौनक के भयो॥

दो० नारायण इति नाम कहि अजामील भो पार॥
तातें सन्तन कीजियो राम नाम उच्चार॥ ॥
सुत बनिता धन धाम जो सब इहनै रहि जाइ॥
नर्क स्वर्ग यम लोक में नामैं होत सहाइ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत अजामील प्रसंग वर्णनो नाम अष्टमो ऽध्यायः ८

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
धर्म दूत सम्वाद अब कहौं अस्त कंद बखानि॥
सो० कह सौनक हरषाइ। अजामील जब नामि ल्यो॥
दूत धर्म ढिग जाइ। कहा कहिन सो बरणिये॥
चौ० कहा सत्य यम दूत रिसाई। धर्मराज पहँ पहुँचे जाई॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दंड फांससबदीन्हेंहारी ॥ देखौरबिसुनदशा हमारी ॥ ॥
जाहिअधमपापीहमचीन्हा ॥ तेहिसबढिगलावनमनकीन्हा
अन्तसमैसुतनामपुकारा ॥ तुरतेहरिगणताहि उबारा ॥
लीन्हे निषहरिबिमानचढ़ाई ॥ रामधामतहँ राखेनिजाई
असअनरीतिनहमैंसोहाई ॥ तासेतबढिगआयन साँई ॥
दो० दंड फांसलीजैअपनिकह्योसबनशिरनाइ ॥
दूतकर्मनहिंकरबअबअसकहिचलेरिसाइ ॥
चौ० रिसहजानियमराजबोलाये ॥ करिसनमाननिकटबैठाये
कहाधर्मदूतसुनौममबाता ॥ हैहरिनामसकलसुखदाता
संसकारजोअघकरआही ॥ सूक्षमरूपकहतमुनिताही
सोनहिंनशैतपादिककीन्हे ॥ यतनअनेकदानबिधिदीन्हे
सोवह सूक्षमअघकोमूला ॥ सुकृतनामनाशतसबशूला
तातेताकेअघसबनाशै ॥ जिमितमसहजैभानुप्रकाशै ॥
जोजनलेइरामकरनामा ॥ तेहितेतुमतेहँकाकामा ॥ ॥
तिनकेनिकटनजायोभाई ॥ देखिदूरिसेदिह्योबराई ॥ ॥
सुनतदूतकहजगकेमाहीं ॥ नामसकोबरजेनकोनाहीं ॥
जोउनकेढिगजाननपाई ॥ तौमृत्युलोककरबकाजाई
कहरबिसुतदूतोसुनिलेहू ॥ मैंजोकहूंताभेमनदेहू ॥ ॥
रामकहतजोनरजगमाहीं ॥ सोअधिकारनेहँकछुनाहीं ॥
गुरुतेरामनामजिनपावा ॥ करिबिश्वाससोहृदयबसावा
जोकोइकोटिनकरैउपाई ॥ मारेत्रासलोभदिखाई ॥ ॥
तदपिरामतजिअन्तनधावै ॥ सोहमरेलोकेनहिंआवै
असहरिभक्तबिलोकौजबही ॥ करयोप्रणामदूरितेतबहीं
साकटकहंतुमधरिलैआवो ॥ नर्कडारिसबकर्मभोगावो ॥
बोलेदूतजोरियुगपानी ॥ इकसंशैहमरेउतपानी ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पाँचतत्वकीसबकीदेही ॥ किमिजानवयेरामसनेही ॥ ॥
भक्तनकेरचिन्ह कहौं गाई ॥ जातेहमउनढिगनहिंजाई ॥
बहुरिकहौंसाकटकरभेदा ॥ जिन्हैंलायदेइबहुखेदा ॥ ॥
कहरवितनयसुनोरेभाई ॥ भक्तचिन्हमैंकहौंबुझाई ॥ ॥
कण्ठबिषेतुलसीकीमाला ॥ मस्तकमेंदियेतिलकबिशाला ॥
शङ्खचक्रभुजमूलसोहाये ॥ भुवनपवित्रकरनभुवआये
हरिकीकथासुनैंहरषाई ॥ रामनामसुमिरैंमनलाई ॥ ॥
जीवबधनहितअस्त्रनधरहीं ॥ देखतदीनदयाअतिकरहीं
क्षमाशीलसन्तोषेरहहीं ॥ बालवृद्धसबकेप्रिय रहहीं ॥
मनक्रमकाहुदुःखनदेवैं ॥ अतिउदारसन्तनकहसेवैं ॥
असहरिभक्तहरीसमजान्यौं ॥ यामेंरञ्चकभेदनआन्यौं

दो० जोकदापिभक्तनविषेकछुकदोषदरशाइ ॥
तथादेहकृतमानियेभक्तनपरसैनाइ ॥
भक्तदोषप्राकृतनहींतिन्हैंनबाधकहोय ॥
औरनकोपावनकरनसदसमर्थहैसोय ॥

चौ० ताकोयहदृष्टान्तबिचारौ ॥ सोसुनिकेसंदेह निवारौ ॥
जोगङ्गामेंफेनदिखावै ॥ तौकागङ्गप्रभावमिटावै ॥ ॥
ब्रह्मद्रवजगभगतजहाहीं ॥ हरतब्रह्महत्याछिनमाहीं
तैसेसन्तगोबिन्दपियारे ॥ सबदोषनकोभञ्जनहारे ॥ ॥
तातेतुम्हैंकहौंसमुझाई ॥ भक्तनढिगजनिजायोभाई

दो० भक्तनकेलक्षणकहेकछुसंक्षेपबखानि ॥
अबसाकटबरननकरौंसोउलेहुतुमजानि ॥

चौ० साकटजेहिहरिभक्तिनभावै ॥ साधनलखिमनक्रोधबढ़ावै
साकटजेपरनिंद्याकरई ॥ परसुखदेखिबिनानलजरई
साकटसोहिन्सारतरहई ॥ तजैसुपन्थकुपंथेगहई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

साकट जो परद्रव्य चोरावै ॥ पर अपकार सदा मन भावै ॥
साकट सो भोगै परदारा ॥ करै अकारन क्रोध अपारा ॥ ॥
जिव बदले जो जीव मरावै ॥ साकट मास बिराना खावै ॥
गुरु पितु मात बचन नहिं मानै ॥ साकट औरन का दुख ठानै
इमि नर बिमुख राम ते आहीं ॥ डारहु आनि नर्क के माहीं ॥

दो० कौन करम करि लहत नर नर्क स्वर्ग में बास ॥
सो हम ते बर्णन करौ जानि आपने दास ॥

चौ० कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा ॥ परत नर्क महं कहौं सो मर्मा
हिन्सा करै बचन कटु भाखै ॥ सुनै बेद परतीति न राखै ॥ ॥
दै बिश्वास घात जो करई ॥ प्रानी सोई नर्क महं परई ॥ ॥
देव बिप्र संतन दुखदाई ॥ पर निंदा करै अपन बड़ाई ॥
बिना समै भोगै जो नारी ॥ परत नर्क मह मांस अहारी ॥ ॥
रजस्वला त्रिय गर्भ युत होई ॥ तासों रमन करै जो कोई ॥ ॥
बिप्रै नेउति बहुरि नहिं देवै ॥ सो प्रानी नर्क बासा लेवै ॥ ॥
शूद्र भील सुपचाधम कोई ॥ भगवनि भक्ति परायण होई
तिन्हैं जानि कै करै जो तर्का ॥ मन्द बुद्धि सो भोगै नर्का ॥ ॥
जे निज देह माँभ अभिमानी ॥ आतम बुद्धि लखैं अज्ञानी ॥
हरि कलत्र अपनी करि मानैं ॥ प्रतिमा मात्र देव करि जानैं ॥
सलिल मात्र तीरथ जिन जाना ॥ संतन में कुभावन आना
ते खर सम जानौ प्रानी ॥ परत नर्क महं बाचक ज्ञानी ॥
अर्चे बिष्णु शिला करि मानैं ॥ श्री गुरु देवै नर करि जानैं ॥
बैष्णो की जो जाति बिचारैं ॥ अन्य देव सम बिष्णुहि धारैं
हरि हरि जन चरणोदक होई ॥ तीर्थ बुद्धि करि मानै सोई ॥
राम नाम मंत्रन सम धरई ॥ सो नर घोर नर्क महं परई ॥
गोशाला अरु ग्राम जरावै ॥ घोर बैर पर त्रिय मन भावै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखिबिना दोष दे सीसा ॥ नर्क परै सो बिस्वे बीसा ॥ ॥
तीरथ देव गऊ अस्थाना ॥ मध्य गली धर्मशाला जाना
जाय मैल बिष्टा जो करई ॥ जीव बधै सो तम में परई ॥ ॥
पूजै नाहिं सन्त घर आई ॥ और देखि मन क्रोध बढ़ाई ॥
हेम गऊ ते बाल चोरावैं ॥ हरियश तजि नर कीरति गावैं ॥
भक्तन को यश कबहूं न कहई ॥ रामभक्ति ते बिमुख हि रहई ॥
पर श्री गुप्त जो करैं उघारा ॥ ते शत भुगतैं नर्क अपारा ॥
नारि जो निज पति छिद्र कावै ॥ आन पुरुष का गेर लगावै
पति से बोलै बचन कठोरा ॥ राम ते बिमुख धर्म सुख भोरा
असतिय परै नर्क के माहीं ॥ यामें कछु संशै है नाहीं ॥ ॥
पाप कर्म सब तेतम होई ॥ ऊंच नीच चाहै करै कोई ॥ ॥

दो० नर्क परत जेहि कर्म करि सो मैं कह्यौं बखानि ॥
स्वर्ग मिलै सो कहत अब दृत लिह्यौ तुम जानि ॥

चौ० श्रद्धा सहित करैं जे दाना ॥ पूजैं उत्तम बिप्र सुजाना ॥ ॥
होम यज्ञ तीरथ ब्रत करहीं ॥ जप तप गायत्री मन धरहीं ॥
पर उपकार सदा मन भावै ॥ द्वारे अतिथ बिमुख नहिं जावै
बोलैं बचन सबन सुखदाई ॥ ते नर बसैं स्वर्ग महं जाई ॥
काहू केर बुरा नहिं चहहीं ॥ रक्षा करत जीव की रहहीं ॥ ॥
मान पराबो गिरन न देहीं ॥ सत्य बचन दृढ़ी गहि लेहीं ॥
बेश्या देखि करैं परनामा ॥ रजकन जितने लागैं जामा ॥
तितने शत मन्वन्तर माहीं ॥ बसैं स्वर्ग कहि आगम जाहीं
नारि पति ब्रता जो होई ॥ धर्मवान कोमल चित सोई ॥
पति कुष्ठी दारिद्री जानौ ॥ रोगी कुपिरा अन्ध यहि चानौ
कामी क्रोधी कैसो होई ॥ नारि ईश सम मानै सोई ॥ ॥
पति के संग सती होइ जावै ॥ सो तिय सत्य स्वर्ग सुख पावै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो॰ आश्रम धर्म दृढ़ होइ बिहँग कपोता की सरिस॥
बसै स्वर्ग महँ सोइ। बहुत काल लगि जानिये॥

इति श्री बिश्राम सागर सब सत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुवरदास रामसनेही कृत यम दूत सम्बाद बर्णनो नाम नव मोऽध्यायः ९॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुखदानि॥
कहौं इतिहास समुच्च की अब इतिहास बखानि॥

चौ॰ सुनत दूत अस पूँछे लीन्हा॥ बिहँग कपोत धर्म का कीन्हा
सोउ नाथ अब कहौ बखानी॥ जाइ गृह आश्रम जेहि जानी
कहु धर्म सुनहु दूत मन लाई॥ बन्दौं कथा सुँदर सुखदाई॥
बधिक एक अति निरदै रहई॥ बिपिन जाइ जीवन कहँ गहई
निसदिन नीच जीव संहारै॥ पाप दोष नहिं हृदय बिचारै॥
एक दिवस एक बनहिं सिधावा॥ तामें जीवन एकहु पावा॥
उत्तर दिशि ते आँधी आई॥ भयो अंधेर न सूझै राई॥ ॥
गर्ज्यो मेघ प्रलय की नाई॥ भाग्यो सुनत पंथ नहिं पाई॥
वृष्टि होन पुनि अति ही लागी॥ पाथर परत सबै सुधि भागी
जहाँ तहाँ जल बहै घनेरा॥ पावन अंडै बिपति ने घेरा॥
माघ मास काँपै सब देहा॥ सहै त्रास करि करम सनेहा॥
क्षुधा सतावै ज्यों ज्यों तन को॥ हो वै धीर अधिक ही मन को
पवन जोर तें पक्षी जानौ॥ गिरि गिरि परे वृक्ष तर मानौ
दामिन च मकक पोती देखी॥ धाइ बधिक तेहि गह्यो बिसेखी

दो॰ आयु काल के गाल में सो न बिचार्यो अंध॥
॥ वाहि पींजरा माँहि करि चलत भयो मति मंद॥

चौ॰ शोचत सुमन कपोती सोई॥ मम पति आजु अकेलो होई
मंदिर तिनकर जहाँ रहावा॥ तेहि द्रुम तरे बधिक सोइ आवा
कापोता की सघन निहारी॥ बैठा सो मदि सुपास बिचारी॥

शीतक्षुधाबसबोलिनजावै ॥ काठसरिसतनुभादुखपावै
ताहीसमैकपोतसोआयो ॥ प्यारीबामधामनहिंपायो ॥
दो० मोलेपहिलेआवतीनित्तबधूगृहमाहिं ॥
आजुरहीकहँप्राणप्रिय कछुकुशलहैनाहिं ॥
चौ० असबिचारिमनशोचनलाग्यो मोहप्रबलहिरदेमहँजाग्यो
मैंसुअकेलरह्यौंघरमाहीं ॥ बिनबनिताजीवनकछुनाहीं
नारिपुरुषमेंअंतरधरई ॥ धृगतेहिंनरहिजोगृहमनधरई
आश्रमकीशोभात्रियजानौं ॥ बनिताबिनावृथासुखमानौं
जिततितदृष्टिकपोतहिंफेरी ॥ देखीबधूपींजरेगेरी ॥ ॥
बिस्मैकीन्हकपोताजबहीं ॥ बोल्यौबचनबिकलहैतबहीं
अहोप्रियाअबमैंकाकरिहौं ॥ तुमबिनप्राणत्यागिकेमरिहौं
पतिकोबिकलकपोतीजानी ॥ बोलीबचनधर्मसैंसानी ॥
हेपतित्यागौशोचसनेहा ॥ दुःखमूलजानौजगगेहा ॥ ॥
मिलनबियोगदुःखसुखसाथा ॥ तातेंशोचकरियजनिनाथा
देखौतुमबिचारिमनमाहीं ॥ जगमेंकोउकाहूकरनाहीं
धामधानतनधनसुतभाई ॥ एकदिवससबहीछुटिजाई
जोकछुधर्मअधर्मकमावै ॥ अंतसमैसोसंगसिधावै ॥ ॥
अधरमकरैभरैयमत्रासा ॥ धर्मतेंलहैअमरपुरबासा
तातेंधर्मकरौमनलाई ॥ यातेंलोकपरलोकभलाई ॥
ब्याधिकआश्रमतुम्हरेआयो ॥ याकोपूजिकरौमनभायो
पतिप्रतिबैरीयाकोजानौ ॥ बैठोशरणतुम्हारीमानौ ॥ ॥
बिपतिपरेजोकरैसहाहीं ॥ होइतासुयशत्रिभुवनमाहीं
घरआयेसत्कारनकरई ॥ नाशैपुण्यपापसिरधरई ॥
धनिवहगेहकुटुम्बपरिवारा ॥ जातेंहोवैपरउपकारा ॥
तातेंयाकीसेवाकरहू ॥ गृहस्थधर्मसोहिरदेधरहू ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करौ धर्म जनि देर लगावो ॥ फिरि ऐसो औसर नहिं पावो ॥

दो॰ सुनत कपोती के बचन कीन कपोत बिचार ॥
मैं पक्षी मानुष्य यह किमि पोषों यहि वार ॥
अस कहि उतरयो वृक्ष ते गयो बधिक के पास ॥
सनमुख है श्रद्धा सहित कीन्हों बचन प्रकास ॥
मो को आज्ञा देहु कछु सोइ करौं यहि वार ॥
धन्य भाग मेरे अहैं जो तुम आये द्वार ॥ ॥

चौ॰ सुनि किरात बोला असि बानी ॥ अहो कपोत सुनहु सुखदानी
मो कों शीत सतावै भारी ॥ सो काहू बिधि देहु निवारी ॥ ॥
तब कपोत चढ़ि चहुँ दिशि देखी ॥ बरत बूहद इक पुर में पेखी
बिहँग चाव करि पहुँचो जाई ॥ जरत समाधि गहि लायो धाई
झांझ उजारि भूमि में डारी ॥ तामें अगिनि दई पर जारी ॥ ॥
औरो पात सूखत रुके रे ॥ चुनि चुनि लाइ अगिन महँ गेरे ॥
ताप्यो बधिक शीत भयो नाशा ॥ चेत नु है पुनि बचन प्रकाशा

दो॰ पर उपकारी बिहँग तैं शीत निवारे मोर ॥
अब कछु भोजन दीजिये क्षुधा सतावै घोर ॥

चौ॰ सुनि कपोत मन कीन बिचारा ॥ हम हैं पशु पक्षी अवतारा
चरि चुनिकै निज पेट हि भरहीं ॥ पर उपकार कौन बिधि करहीं
धनि वै मनुष्य बहुत सुख डारैं ॥ हम अपन औद्र पसारैं
भयो कपोत खेद उर भारी ॥ बिन बित गृह को बसव उजारी
भवन कूप रुम कुटुम्ब बिलासा ॥ होइ पाप जन जाइ निरासा
रुदन कपोत कियो बहुतेरो ॥ केहि बिधि हरौं दुःख याकेरो ॥
शोचत ही मन कीन बिचारा ॥ येहि बिधि ते चहि पर उपकारा
धर्म सधै तो करौं उपाई ॥ हर्षि बधिक ते बोल्यो जाई ॥ ॥
धीरज धरौ अतिथि मन माहीं ॥ देत अहार देर अब नाहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० करि परिकर्मा अग्निनिकों कूदि पर्यो ताबीच॥
यह सब कौतुक देखि के बाधिक कियो शिरनीच॥
सो० पूरब पुराय प्रताप उदे भयो बैराग तेहि॥
लाग्यो करन कलाप मोसम मन्द न बुद्धि कोउ॥
चौ० धन्य धन्य पक्षी तन तेरो॥ धृग्ग जन्म मम मानुष केरो॥
नरतन लहि का कीन्ह कमाई॥ पाप करत सब बयस गंवाई॥
कबहूं कछु सुकृत नहिं कीन्हों॥ नहिं काहू कर दुख हरि लीन्हों॥
धृग धृग मोकों बारहिं बारा॥ धनि विहङ्ग जेहि धर्म बिचारा॥
मैं जो किये प्रतिपालक भारी॥ अबलत पकरि सदैहों जारी॥
अस कहि डार्यो जारहि फारी॥ सुरत बिहङ्गिनि दीन निकारी॥
दो० छुटिक पोती फन्द सों ऐसे करत बिचार॥
पति बिन जीवन नारि को जग में वृथा निहार॥
चौ० यों कहि गिरि अग्नि महं सोई॥ भई सती साँची यह जोई॥
मध्य अग्नि महं दीख बिमाना॥ पति ता बीच बैठि जिमि आना॥
बिहँगिनि को तनु पलटि जो गयऊ॥ ताहू केर दिव्य बपु भयऊ॥
पति लखि भेट्यो गरे लगाई॥ गयो दुःख सन्ताप नसाई॥
रञ्चक दुख कीन्हों धर्म हेता॥ सुख जो भयो गने को तेता॥
ताते धर्म कीजिये भाई॥ यामें जनि रहिये कदराई॥
नारि पुरुष दोउ चढ़े बिमाना॥ गगन उड़े मगन मन जाना॥
जय जय देव किहिन हर षाई॥ सत्य लोक तहँ गे खेनि आई॥
दो० अबरा अबरी की कथा भई कही में सोय॥
बाधिक हाल बरनौं बहुरि सुनि राखो हिय जोय॥
चौ० बाधिक बिपिन तप कीन्हो भारी॥ मगन ध्यान तन सुरति बिसारी॥
इक दिन अग्नि लगी चहुं पासा॥ बधिक देह जरि बरि भइ नासा॥
अघ जो रहे जरे तन सङ्गा॥ बाधिक सो राच्यो हरि के रङ्गा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिव्यबिमानपारष दलायो॥ तापरचढ़िकरस्वर्गसिधायो
कपटी कुटिलकीरअघधामा॥सज्जनसङ्ग लहोबिश्रामा
गृस्तधर्मजस तसयहगावा॥सुनि दूतन अतिसेसुख पावा
कहयमचरणचारसिरनाई॥ अबहममृत्युलोककहँजाई
कौनठौरजाइहमरहिये॥ कहाँनजायकृपाकरिकहिये॥
बोलेयमजोपूँछेउआई॥तुमहिदेहुँअस्थानबताई॥ ॥
जेनरहरिपूजनमनधरहीं॥ लैचरणोदकभोजनकरहीं॥
कथासुनैंहरिकीरतिगावैं॥ ठाकुरद्वारेमेंनितजावैं॥ ॥
कुटुम्बसहितगुरुसाधुनसेवैं॥ क्षुधितदेखितेहिभोजनदेवैं

दो० हरिगुरुदासननतेरहेंसाँचोनिहछलजौन॥
तिनकेढिगजनिजायहूदितौत्यागियेभौन॥

चौ० पिताअवज्ञापुत्रनकरहीं॥ द्वारेअतिथिबिमुखनहिंफिरहीं
यज्ञहोमकरिबिप्रजिमावैं॥ सन्तनकीसंगतिचलिजावैं॥
बेदबचनराखेंबिश्वासा॥ इतनेठौरतुम्हारनबासा॥ ॥
अस असधामत्यागितुमदेहू॥ बसौजहाँसोऊसुनिलेहू
जहाँनकथारामकीहोई॥ हरिकीभक्तिनजानैकोई॥ ॥
पुत्रनमानैपितुकीसीखा॥ जेहिघरलहेनभिक्षुकभीखा
कण्टकवृक्षहोइजेहिधामा॥ तहाँजाइतुमकरौसुकामा
जिवहिंसाजाकेघरहोई॥ मदिरामाँसमीनभखकोई॥
हरितजिपूजैभूतपिशाचा॥ बेश्यारतकहसत्यनबाचा॥
असनरजहँतहँबसियेजाई॥ मरेनर्कमहँडारयौलाई॥ ॥
सूनेभवनदीपनहिंबरई॥ गर्भिकाआयमृत्युजहँकरई॥
गृहजूठनिजाराल्पटाना॥ पर्बपरेनहिंदेवैंदाना॥ ॥
सुताघराईघरमाआवै॥ रहेनिरादरदुखजहँपावै॥ ॥
परबपरेभोगैजोनारी॥ बसहुजाइअसभवनबिचारी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बासी अन्न जो दिन प्रति खावैं ॥ जेहि गृह सन्त न आदर पावैं
कलह होइ जहं साँझ सकारे ॥ साधु विप्र जे करैं दुखारे ॥ ॥
बिना दीप निशि भोजन खाहीं ॥ बसहु दूत तिन के घर माहीं
दो॰ मात पिता कहं देहिं दुख करैं कहैं जो वाम ॥
तहाँ बसौ तुम जाइ कै जे न भजहिं सियराम ॥
चौ॰ अपुभक्त घर साकठ नारी ॥ सुत कलत्र सब मांस अहारी
तिनका छुवा जो भोजन खाई ॥ भक्ति धर्म सब ही घटि जाई
अवसि बसौ तिनके गृह सोधी ॥ जे सतगुरु ते भये बिरोधी ॥
छोड़ि के रहैं जो नारी ॥ बहू सासु से लड़ै प्रचारी ॥ ॥
मरघट चारि पन्थ जो होई ॥ अजया पुत्र रहैं जहं सोई ॥
ये अस्थान कहे मैं बरनी ॥ औरौ लेहु जानि लखि करनी ॥
धर्मराज के बचन सोहाये ॥ सुनि यम दूतन के मन भाये ॥
गी॰ छं॰ भये सुनत यम दूत परस्बि पूत जो बरणन कियो ।
उठि नाइ सिर मन मुदित ह्वै सब फांस मुगदर करि लियो ॥
यह दूत यम सम्वाद बरनी सुनैं जे अरु गाइ हैं ॥ तेहि भूत अपर पिशाच यम के दूत नाहिं सताइ हैं ॥
दो॰ लक्षण धर्मी धर्म के ऊंच नीच जे आहिं ॥
जन रघुनाथ बिचारि कछु लिखे ग्रन्थ के माहिं ॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत गृह धर्म यम दूत कथा बर्णनो नाम दशमोऽध्याय १०
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
नासकेत भारत्थ की कहौं इतिहास बखानि ॥
धर्मराज निज गणन ते बोले निकट बोलाइ ॥
गंग यमुन के बीच इक द्विज तेहि लावहु जाइ ॥
चौ॰ जासु गिरि ढिग बस्ती आही ॥ तामें बिप्र रहत है वाही ॥ ॥

नामशालमलितताकोजानौ॥ गोत्रअगस्त्यकेरयहिंचानौ॥
पूरीआयुभईसबताकी॥ लावहुवेगिनहींअबबाकी॥
सुनियमदूतसकलहरषाने॥ निजनिजवाहनसबनपलाने॥
कोइशूकरभूकरपरकोई॥ करमेंगर्जभयानकसोई॥
कोईचलेमहिषचढ़िवीरा॥ बड़ेबड़ेदसनलिहेधनुतीरा॥
कोइखरपरआरूढ़पिछाना॥ कारीदेहसुमेरसमाना॥
कोइसुरहापरकिहेसवारी॥ ठांढ़ेकेआगदाकरधारी॥
कोईसिंहचित्ताचढ़िधाये॥ लोहितलोचनभौंहचढ़ाये॥
कोइबरहापरआसनकीन्हे॥ फाँसीअरुमुद्गरकरलीन्हे॥
यहिभांतिनयमदूतसिधाये॥ वसतविप्रजहंतेहिपुरआये॥

सो० सोइगोत्रसोइनामदूसरद्विजतामेंरहत॥
यसघुसिगेतेहिधामडारिफांसआसनलगे॥

दो० उभैघरीकेबीचमहँमारिलिहिनिद्विजसोइ॥
मुश्कबाँधिलैचलतभेरहेकुटुम्बीरोइ॥
तातमातसुतभ्राततनग्रामधामधनजोइ॥
सबजहकेतहंईरहेसंगचल्योनहिंकोइ॥

चौ० भूसुरकहआगेकरिलीन्हा॥ यमपुरओरपयानाकीन्हा॥
मृत्युलोकतेयमपुरजानो॥ सहसछियासीयोजनमानो॥
आठठौरतेहिमारगमाहीं॥ अतिशैकष्टहोतसुखनाहीं॥
प्रथमेतुइसहसमगजोई॥ तामेंदुखसुखकछुनहिंहोई॥
एकसहसयोजनतेहिंआगे॥ सिंहबहुतलखिअतिभैलागे॥
जेबैठेसाधनकेमाहीं॥ तिन्हेंदुःखलहंव्यापैनाहीं॥
योजनपांचसहसअसहोई॥ कांटेपरललोहसमसोई॥
पायनमेंसोचुभिचुभिजावें॥ तामेंप्राणीबहुदुखपावें॥
गजरथबाजपालकीदीन्हा॥ तेनरतेहिचढ़िजातेचीन्हा॥

उभै सहस योजन यहि भाँती॥ वारू तपत रहत अति ताती॥
सो पर दान दिहिनि जिन लोगा॥ तिन का तहाँ न ब्यापै सोगा॥
योजन द्वादश सहस अगारा॥ परत विषम खाँड़े की धारा॥
एक करदान काम तहँ आवै॥ नाहि तनर अति ही दुख पावै॥
आगे योजन आठ हजारा॥ मिलत तहाँ जल गहिर अपारा॥
मही दान दीन्हे सुख पावै॥ उतरत पावन में छुइ जावै॥
योजन तीस अगारू जाई॥ अंधकार तहँ अति दुख दाई॥
दीप दान तहँ कामें आवै॥ ठाकुर द्वारे जौन बरावै॥
की ब्राह्मण घर की सग माहीं॥ साधभवन की तुलसी पाहीं॥
तीरथ माहिं कथा के नेरे॥ बारि दीप ते जाहिं उजेरे॥

सो० आगे योजन आठ महाभयानक मग मिलत॥
चढ़ा उतर के घाट होत तहाँ प्राणी बिकल॥

दो० तेहि के आगे मिलत है योजन सहस अठार॥
तपत भानु सम शीस पर तहँ अति तुदन अपार॥

चौ० तेहि मारग में सो सुख पावै॥ कुआँ बावली ताल खोदावै॥
की पौसरा दीन बैठाई॥ की ठाकुर द्वारे पहुँचाई॥
एक मारग में वृक्ष लगावै॥ ऐसा दान काम तहँ आवै॥
सहस छियासी योजन येही॥ पृथक २ देख्यो द्विज तेही॥
आगे जाय यमपुरी तीरा॥ देखो तहँ एक नदी गँभीरा॥
नाम तासु बैतरनी आही॥ मज्जा रुधिर भरा तेहिं माहीं॥
गोजर बीछि सर्प अरु कीरा॥ उतरत पापी पावहिं पीरा॥
सौ योजन की चाकल सोई॥ देखत प्राणी बिकल तहँ होई॥
जो अपने स्वामी को मारै॥ कन्या कामिनि द्विज संहारै॥
जीव बधै अरु सबै सतावै॥ पुर जंगल महँ आगि लगावै॥
तिन्ह प्यास लहँ लागे भाई॥ रक्त पीब सोइ पीवैं जाई॥

दो० अग्नि पअ्रहारी मदपिया ज्वारी चोरकसाय॥
बटपारी जो पातकी दुखपावत अधिकाय॥
कोउ उष्ण तबड़ मकोऊ लहरिसंगबहिजान॥
काहू बीछी सर्पबहु कीड़ा नोचे खात॥ ॥
सो० जोकोउ पापी होयताहि रुधिरकी लखिपरै॥
पुण्यवान कह सोइ देखिपरै घृत छीरकी॥
छं० होमयज्ञव्रतकीन दीनजिन अन्न के दानहिं। पूजे
द्विजचपुराण किये तीरथ अस्नानहिं॥ पुरटदानपट दान
तुला गज बाजि जो दीन्हों॥ अ ज्य मिठाई क्षीरदही घी थी
दत कीन्हों॥ सन्त चरण में प्रीति जिन गुरु दिक्षा लियजा-
निसुख। ते वैतरणि शैल चढ़ि उतरि जात नहिं होत दुख॥
चौ० जिन गोदान दीन्ह संसारा॥ पकरि पूछ सो होवैं पारा॥
यहि बिधि नदी उतरि द्विज पाई॥ पुरहू यमपुरी देख्यौ जाई
जोजन सहस तासु बिस्तारा॥ तामें द्वारे चारि निहारा॥ ॥
पूरब उत्तर पश्चिम जानो॥ चौथा दक्षिण द्वार पिछानो॥
धर्मवान जो प्राणी भयऊ॥ सो तौ तीनि द्वार है गयऊ॥
दक्षिण द्वारे मे सो जाई॥ जो नर पाप कीन्ह अधिकाई॥
विप्रसाधु सुर भिन दुख दीन्हा॥ अरु विश्वास घात जिन कीन्हा
दुष्ट बड़े तन मन दुखदाई॥ सबजीवन की तकें बुराई॥
चोरी करैं चौपया मारैं॥ पक्षी पकरि फन्द में डारैं॥ ॥
कन्या बेंचि द्रव्य जो लेहीं॥ छलकरि कै काहू विष देहीं॥
हरि ते विमुख सदा जे रहईं॥ काम क्रोध लस्सा बस वहईं
वेद पुराण शास्त्र नहिं मानै॥ गुरु ते कपट सयान पठानैं॥
दुखी दीन कहं आपु सतावैं॥ झूठी साखि भरन जे जावैं॥
साधू ब्राह्मण सेइन नाहीं॥ किहिनि दान पर्व के माहीं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अस प्राणी दक्षिण दिशि जावैं॥ यमकिंकर तेहि बहुत सतावैं
दक्षिण द्वार गयो द्विज सोई॥ जायसाल बलि हेरयो जोई॥
दो० तहां सिंह बहु स्वान वृक सर्प्प गीध अरु भाल॥
अन्धकार नहिं जान कोउ राति दिवस को हाल॥
नर्क हजारन हैं जहां परे पतित रहु रोई॥
त्यों त्यों मारें दूत शिर रक्षक तहां न कोइ॥
तिनमें बड़े जे मुख्य हैं नर्क अठारह जानि॥
भिन्न २ कर नाम अब सबके कहौं बखानि॥
पद्धटिका छं० प्रथम में इक कुम्भी पाक जानि। अति
शै दुखदाई ताहि मानि॥ जो विप्र गऊ पशु पक्षि मारि। ब्रह्म
चारी को तप देहिं टारि॥ अरु दान देत हट कै जो नीच। सो प
रत नर्क कुम्भी के बीच॥ है कुम्भ सरिस मुख छोट जासु॥
षोड़श योजन बिस्तार तासु॥ तामें मल मज्जा अति निहा-
रि। दुख पावत पापी नर रु नारि॥
कलहंस छं० दूसर नर्क अवीचि नाम। तामें पल नाहीं
है अराम॥ गुरु अरु कन्या बधै कोइ। भक्ष्य अभक्ष्य जो
खात होइ॥ जो पाहुन आये निकेत तेहि न करैं सनमान हेत॥
नर्क अवीची परत सोइ। नर नारी चाहै सो होइ॥
हरिगीतिका छं० अब नर्क तीसर नाम रौरव है भयानक
साम हां। तेहि देखि डरपत जीव बारू तपत रहती है त-
हां॥ पग जरत प्राणी करत रोदन दौरि चहुं दिशि जाव-
हीं। अति होत व्याकुल सकल छण विश्राम नाहिन पावहीं॥
तोटक छं० जिन राज बिषे नहिं न्याव कियो। बिन औगु-
न भजेहि दंड दियो॥ जिन ब्राह्मण वेद पढ़े जु भले। तेहि
मारग आपु सो नाहिं चले॥ केहु आरत आइ के प्रश्न करी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गृह हेंद बताइ मुक्तिहरी। धरि पाखण्ड रूप फिरै जग में। हरिविमुख सो बूड़ि रहे अघ में॥ जप संयम पूजन नाहिं करैं। तप तीरथ यज्ञ न ध्यान धरैं। व्रतदान कभू जे ना करते। तनरोरव माहिं परैं नरसे॥

चौ० चौथ नर्क गुरु जिमि है नामा॥ गुरु रत अप्रम औरत है तामा
सो काहू की आँजी मारे॥ अरु काहू का पुरा बिचारे॥ ॥
परगुरु लौ राजो लोह चारावे॥ गुरु जिम नर्क सोई दुख पावे
पंच हीं कूप नर्क तहँ अहई॥ तामें प्रानी अति दुख लहई॥
कूपसमान बननि नेहि केरी॥ पीव रक्त कृमि ता में हेरी॥
तासुनि फद बैठे बहु कागा॥ बीद्दि २ चोंच भयानक नागा॥
परे जीव जब हीं उतराहीं॥ मारें चोंच रसातल जाहीं॥ ॥

दो० राम भक्ति जिन नहिं करी गुरु दिक्षा नहिं लीन॥
राम नाम सुनि स्यो नहीं साधु सङ्ग नहिं कीन॥

सो० मानुष देही पाइ। कह्यौ सुन्यौ नहिं राम यश॥
दासी संग कराइ। कूप नर्क मह सोइ परत॥

चौ० छठवां कीट नर्क है जानो॥ तामें कीड़ा भेद बखानो॥ ॥
पापिन के तन चोटे सोई॥ ता में त्रास अधिक ही होई॥ ॥
मारि मारि मक्खी जिन खाई॥ है कृमि रहैं निरें महँ जाई॥
भलो वस्तु जो छिपि के खावें॥ अरु काहू को अन्न चोरावें
दुखी दीन लखि द्यान करहीं॥ कीट नर्क महँ सो नर परहीं
सतवाँ असी पत्रवन नामा॥ ताके पत्र दुधारे स्यामा॥
पापिन को ता मैं घसिलावें॥ कटि २ जाय बहु रिजुरि आवें
त्राहि २ तहँ जीव पुकारें॥ त्यों त्यों दूत परिघ सिर मारें॥
जिन कोउ अपने मित्रहि मारा॥ कादिन हरि अरु वहगवाँरा
कामी कुटिल अकारन क्रोधी॥ परनिन्दक गुरु संत विरोधी

सखाबरतभङ्ग जेकरहीं॥ असीपत्र महँ सोदुखभरहीं॥

दो॰ अठवाँ दारुण नर्क हैं जेहि देखत भय होय॥
जे कामी हैं नारि नर तहँ पावैं दुखसोय॥
बहुत खम्भ नर रूप तहँ हैं बहु हैं नारि प्रकार॥
बरत रहत एकरस सदा दोउ दिश काष्ठ अपार॥

चौ॰ जो नर परत्रिय गरे लगावैं॥ पकरि खम्भ महँ ताहि भेटावैं
कहै कि चीन्हि लेहु सोइ नारी॥ जेहि के सङ्ग किये सुख भारी
जे त्रिय आन पुरुष सङ्ग करहीं॥ तहाँ जाय तेऊ दुख भरहीं
परबी परे बरत वा होई॥ तेहि दिन मैथुन करै जो कोई॥
सो उ खम्भ महँ जात भेटावा॥ यम के दूत अधिक तेहिं तावा
कहै कि तुम मानुष तन पायो॥ करि २ मैथुन ताहि गवाँयो॥
तुम ते खर थकर भल जानी॥ बरष २ सन्तोषै प्रानी॥ ॥
हरि की भक्ति किये सो नाहीं॥ सहो कष्ट अब दारुण माहीं
नवम नर्क निरस्वास कहावै॥ तामें स्वास न घटी जावै॥

सो॰ ब्राह्मण बिधवा नारि। सुरु गुरु अरु शचेरावहीं॥
कहैं न वचन बिचारि। परै सोइ निरस्वास महँ॥

चौ॰ दशवाँ कुलशंकुल है भारी॥ तामें सो अति दुख अधिकारी
अग्नि समान जरत द्रुम रहहीं॥ दश योजन के चाकल अहहीं
योजन पाँच घेर बिस्तारा॥ एक एक का न्यारा न्यारा॥
बंधे जँजीरन में तहँ पापी॥ हाय हाय बोलैं सन्तापी॥
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र रु बैसा॥ भारी पाप कीन जिन जैसा॥
मारै जीव मास ले खावैं॥ ते नर यही नर्क दुख पावैं॥॥
ग्यरहों नर्क सोई मुख नामा॥ सूची छेद परै जिव तामा॥
जिन सतगुरु की निंद्या कीन्हा॥ संतन दोष लगावत हीना
तीरथ बहि मुरख बेद पुराना॥ सबहिन की निंद्या जिन ठाना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नारि बधै अरु बिप्र सतावै ॥ सो सूची मुख नर्कहि जावै ॥
बरहों घोर नर्क अस नाऊं ॥ सो विकराल भयानक ठाऊं ॥
तामें सिंह स्यार अहि शूकर ॥ भाल भेड़िया काग कूकर ॥
जिन रसना हरि नाम न लीन्हा ॥ कटुक बाद साधन ते कीन्हा ॥
कबहुं न कोमल बचन उचारे ॥ तेहि मुख नाग लगावत कारे ॥
सन्त दरश जिन कीन्हों नाहीं ॥ निरखि धर्‍यो नहिं पग भू माहीं ॥
परत्रिय देखि कुदृष्टिहि झाँकै ॥ तिन की काग निकारत आँखें ॥
जो कोउ पुर में आगि लगावै ॥ तिनका माँस भेड़िया खावै ॥
जो कोउ बन पशु पक्षी मारे ॥ ताका पेट सिंह धरि फारे ॥
जो कोउ काहुइ मारै भाई ॥ शूकर ताके हाथ चबाई ॥
जिन हरि चरित सुने नहिं जाना ॥ सीस औटि डारें तेहि काना ॥
जिन नर अमिष अहारै कीन्हा ॥ गोला लाल पियावै लीन्हा ॥
पीवत गोला करें पुकारा ॥ त्रास देइ यम दूत अपारा ॥
तब तो भख्यो पराया माँसू ॥ अब कत रोवत बड़े बड़े आँसू ॥
काँट चुभत अपने दुख मान्यों ॥ पर को संकट देत न जान्यों ॥

दो० बिनदावा नित्त रहत जे फूल पात चुनि लेत ॥
तिन्हें मारि भक्षण किह्यो केवल रसना हेत ॥

चौ० कर्म किह्यो जस भोगै सोई ॥ नर्क अघोर माहिं अस होई ॥
तेरहों शूली नर्क कहावै ॥ शूली सम दुख तामें पावै ॥
जो नर पाप करै अधिकाई ॥ करि शिकार मृग मारै जाई ॥
नाहक नर सूली धरि दीन्हें ॥ जिन बन माहिं ठगाही कीन्हें ॥
काहू को शस्त्रन ते मारे ॥ तेहि यम शूली नर्क में डारें ॥
नर्क चौदहों है दुखखानी ॥ अग्निकुंड तेहि नाम बखानी ॥
तामें अग्नि बरै अति भारी ॥ जाहि देखि डरपै नर नारी ॥
जैसें जीव बहुत ताके माहीं ॥ हाय हाय बोलें घिघियाहीं ॥

कोउ कहैं मैं बहुत पियासा॥ जल पियाइ फिरि दीजै त्रासा
दूत कहैं सुनु रे मतिहीना॥ तूं तौ दया धर्म नहिं कीन्हा॥
प्यासे को जल नाहिं पियायो॥ भूखे को नहिं कबहुं खवायो
साधु ब्राह्मण अरु गुरुभाई॥ पूज्यो नहीं कबहुं घर लाई
ग्रहन परे नहिं दीन्हें दाना॥ पेट भयो नित बैल समाना॥
धृग धृग रे मूरख नर लोई॥ अपना किया भुगत अब सोई
पानी मांगत को न ज्ञाना॥ प्रथमै अग्नि कुंड नहिं जाना
दो० नर्क यन्त्र हो है जहाँ तेल जंत्र ता नाम॥
कोल्हू की सम सो बना डरत देखि नर बाम॥
चौ० जो चोराइ परखेत हि काटै॥ निस दिन मात पिता कहं डाटै
भूमि पराई लेइ छिनाई॥ पर पत्नी बरबस लै जाई॥
तुला चढ़ाय घाटि जो देवे॥ तेलयंत्र सो बासा लेवे॥ ॥
सोरहों नर्क नाम दुख दाई॥ तामें तो है दुख अधिकाई॥
जो मद पीवे आमिष खावै॥ झूठे काहू दोष लगावै॥ ॥
पर अंगुरा जो करै उघारा॥ दुखी दीन कहं नाहक मारा
भक्ति छोड़ावे निगुरा करई॥ कहे कहाय जो पर हरई॥ ॥
दुखद नर्क में सो दुख पावे॥ जो नर कीन्ही कृत बिसरावे
सो० नर्क सत्रहों जानि। अन्धकार जेहि नाम है॥
महाभयानक मानि॥ तामें कछु सूझै नहीं॥
चौ० जे राकस अति निरदै कोही॥ तन अभिमानी हरिजन द्रोही
गरे बिराने करद चलावै॥ अन्धकार दुख सोई पावै॥
नर्क अठरहों है दुख धामा॥ हवै बिलोचन ताकर नामा
तामें नर अन्धा है जावे॥ भर्मत फिरै कष्ट बहु पावै॥
जो मग चलत जीव नहिं परखै॥ क्रोध दृष्टि है साधुहि देखै
अरु पर नारि कुदृष्टि निहारै॥ कराटक तोरि बाट में डारै॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिधवा नारि नयन जो आंजै ॥ खाइ पान परयति के काजै ॥
जो ठाकुर द्वारे नहिं जावै ॥ साधु गुरू लखि शीश न नावै ॥
अन्धे को देवै बहँकाई ॥ परै विलोचन में सोइ आई ॥
दो॰ नर्क अठारौं साल मल देखि डर्यो मन माहिं ॥
तन काँपत सब कछु बचन मुख ते आवत नाहिं ॥
इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत यमपुरी बर्णनो नाम एकादशोऽध्याय: ११ ॥
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं कर्म विपाक कछु सोइ इतिहास बखानि ॥
चौ॰ फिरि दूतन आगे करि लीन्हा ॥ यम की सभा ठाढ़ तहँ कीन्हा
बिप्र बिलोकेउ धर्मक रूपा ॥ मारकंडे सम तेज अनूपा ॥
रतन जटित शिर मुकुट बिराजै ॥ श्रुति कुण्डल गल माल सुछाजै
चारि वेद के पढ़ने वारे ॥ और मिमांसा जानन हारे ॥ ॥
बहुत शास्त्र रचि आपु बनाये ॥ धर्म हेत जग माहिं चलाये
बैठे सिंहासन हरषाहीं ॥ शोभा कान्ति अधिक तिन माहीं
और ऋषीश्वर बहु सतिबादी ॥ धर्मराज दिग तिन को गादी
जीवहिं जब यमगण लै जावैं ॥ ठाढ़ करैं रवि सुत के ठावैं ॥
कहैं महि शेष वहाँ लै जावो ॥ चित्रगोपित्रै याहि दिखावो
दो॰ गुप्त प्रकट पुनि पाप जो करत जीव जग माहिं ॥
सो सब लिखि २ धरत हैं तन को चूकत नाहिं ॥
चौ॰ पाप पुण्य ते सब कहि देहीं ॥ रविसुत निज कानन सुनि लेहीं
धर्म सहित तब न्याउ चुकावै ॥ जो जस करै सो तस फल पावै
पापिन को लै नर्क में डारैं ॥ यम किंकर शिर मुद्गर मारैं ॥
धर्मवान ते स्वर्ग सिधावैं ॥ आगे बाजन बाजत जावैं ॥ ॥
पहुँचैं स्वर्ग निकट जब जाई ॥ आगे मिलैं अपसरा आई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नृत्य करत भीतर लै जावैं॥ सिंहासन ऊपर बैठावैं॥ ॥
कहैं कि हम हैं तुम्हरी दासी॥ रहिये एक कल्प बरवासी॥
देव देव ह्वै करै निवासा॥ हे माले सुख भोग बिलासा॥
अब सो पुण्य कहौं समुझाई। जासे बस नर स्वर्ग महँ जाई॥
जिन नर दान द्विजन कहँ दीन्हा॥ काहू कर अपमान न कीन्हा॥
सब जीवन की दया बिचारें॥ काहू दुख देवैं नहिं मारैं॥
वेद पुराण सुनै सुख पावैं॥ कथा कीरतन में मन लावैं॥
योग तपस्या तीरथ करहीं॥ संयम सहित बरत अनुसरहीं॥
मांडे बस्तर घोड़ हाथी॥ गौवें दई बाछुरा साथी॥ ॥
कन्द मूल फल अन्न जो दीन्हा॥ विप्र साधु कर आदर कीन्हा॥
मग में वृक्ष विपुल लगवाये॥ कूप बावली ताल खनाये॥
कार्तिक माह वैशाख नहाये॥ नांगे पग सो पर दाहि राये॥
और्‍रौ धर्म विविधि विधि कीन्हा॥ स्वर्ग माहिं तिन बासा लीन्हा॥

दो॰ जो कोइ करै सो आपु को पर को करै न कोइ॥
अपना कीन्हा पाइहैं ऊंच नीच किन होइ॥

चौ॰ जिन को उगुरु ते दिक्षा लीन्हा॥ मन लगाइ हरि सुमिरन कीन्हा॥
साधन की सेवा नित करहीं॥ मुख ते बचन मीठ उच्चरहीं॥
दान करै सो हरि का अरपै॥ बोलै सत्य झूठ नहिं जल्पै॥
करै भजन सत सङ्गति जावैं॥ अस नर लै बैकुण्ठ सिधावैं॥
तिन को धर्म तीर नहिं न्याऊ॥ जे हरि भक्ति करैं सति भाऊ॥
या बिधि धर्मराज के पासा॥ जाइ न एको हरि का दासा॥
पापिन को यम यहि बिधि करहीं॥ प्रथमै नर्क माहिं लै डरहीं॥
बहुत काल लगि नर्क भोगाई॥ फिरि जग में जन्मावत भाई॥
पूरब जिन जस कीन्हें कर्मा॥ तैसा पाइ लेत जग जन्मा॥
जो नर ब्राह्मण हत्या कीन्हा॥ जन्म निपुत्री तेहि यम दीन्हा॥

गऊ पापते होइ मलेछा॥ जो नाहिं करै जीव की रक्षा॥ ॥
जो काहू का सोन चोरावै॥ जन्म पाय कुष्टी ह्वै जावै॥ ॥
मदिरा पीन्हे मेढुक होई॥ मारे पंथ रोग युत सोई॥ ॥
द्विज पुस्तक पढ़ि नाहिं बिचारा॥ बहुत रहै विषया की धारा॥
हरि की भक्ति करी सो नाहीं॥ लेई होत सर्प जग माहीं॥ ॥
जिन गनिका की संगति ठानी॥ रासभ होत आइ सोइ प्रानी॥
जो द्विज मास अहारी होई॥ ताको दान देइ जो कोई॥ ॥
दोनो गीदर का तनु धावैं॥ पर की निंद्या मुख करि गावैं॥ ॥
जिन पल दान दीन अधिकारा॥ पावैं बाघ सिंह अवतारा॥
जो कोइ कन्या होती मारे॥ सो गिरगिट की देही धारे॥ ॥
झूठावाद बिवाद बढ़ावै॥ सो कच्छप की देहीं पावै॥ ॥
देवै योग्य दान नहिं करहीं॥ सो सठ बगुला का वपु धरहीं॥
दान देत जो धर्जै कोई॥ सो तौ लदुवा घोड़ा होई॥ ॥
करज खाइ कोई मरि जाई॥ ह्वै के वृषभ भरै सो आई॥
जो साधुन की निंद्या कीन्हा॥ शूकर केर जन्म तिन लीन्हा॥
जो कोइ धरी धरोहरि नाटै॥ अरु पक्षिन के पर जो काटै॥
साधहिं दोष लगावै जोई॥ सोइ बिष्टा कर कीरा होई॥
जो काहू का लोह चोरावै॥ होइ नहारू बहु दुख पावै॥
जो काहू को अन्न चोरावै॥ होवै बहिरा सुना न जावै॥

दो० ब्राह्मण अरु हरि भक्त कहँ लातन मारै जोइ॥
जन्म पाइ जग के विषै सोई पंगुल होइ॥ ॥

चौ० आपु होत गुरु गुरुन कीन्हा॥ सोइ बिलार होत हम चीन्हा॥
जो नित क्रोधी हर्षै नाहीं॥ सोई होत नकुल जग माहीं॥
दै बिश्वास कौर छुड़ाई॥ सो ह्वै कुरंग बस बन जाई॥ ॥
दान देइ पाछे पछितावै॥ सो नर जन्म में ... कर पावै॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन कर पूरक पास चोराई। सो शुवा होवे सति भाई॥
वै ले बधिया करै कराबै॥ सोइ नियुंसक क्रीवा है जावे॥ ॥
जो अन होती करै लड़ाई॥ सो बन की मारवी है जाई॥ ॥
गुरु ब्राह्मण का अंश चोरावै। सो मरु देश भुवंग तनु पावै॥
नर तन पाइ करै पर पीरा॥ सो होवै मोह री का कीरा॥ ॥
मान पाइ गुरु ते फिरि जावै। सो शरीर कोढ़ी का पावै॥
जो संतन की हाँसी करई। जन्म पाय सिरी है मर ई॥ ॥
भीतर कपट उपर ते प्रीता॥ सो पापी धारे तन चीता॥ ॥
पर प्रमदन ते जो रति करहीं॥ सो जग माहिं स्वान वपु धरहीं
देखि देव जो आमिष खावै। सो नर गीध केर तनु पावै॥ ॥
पाप सहित जिन दीन्हा दाना॥ सोई होत छिद्र जग जाना
हरि जन माहिं छूति जिन मानी॥ होत छछूंदरि सो मल खानी

सो० बिना लगाये भोग। जे नर भोजन करत नित॥
होत तासु तन रोग। जन्म मिलत तेहि काग कर॥

दो० जहँ लगि खोटे कर्म हैं सो सब दुख की खानि॥
सोई करि नर परत हैं चौरासी में जानि॥ ॥

चौ० स्वर्गी पुराय क्षीण है जावे॥ पुनि सो मृत्यु लोक को आवे
नर तन मिलै तिन्है अति पावन॥ सुत वनिता धन धाम सोहावन
फिरि धर्म करैं स्वर्ग सुख पावै। अधरम करै तो नर्क सिधावै
हरि की भक्ति करै नहिं जब लौं॥ आवागवन मिटै नहिं तब लौं
यहि भांति न यम लेखा लीन्हा॥ जेहि जस चही ताहि तस दीन्हा
पाछे यम गरता द्विजे दिखावा॥ लखि हरि तिन ते वचन सुनावा
रे दूतो मति मन्द अनारी॥ आनु कसूर कि ह्यो तुम भारी॥
अस्य नाम द्विज और रहायो॥ ताको तजि या को ले आयो॥
सुनि यम दूतन वचन बखाना॥ धोके नाय इन्हे हम आना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब धर्मराज द्विजै मन मान्यो॥ मनमें निज अपराध पिछान्यो॥
कैसा पापी होवै कोई॥ बिना अवादं आवन सोई॥ ॥
यहु द्विज बिना अवादे आयो॥ अस बिचारि यमबचन सुनायो॥
दो० हे द्विज तोको देखिके लागि दया अति मोहिं॥
जो भावै सो मांगु बर आजु देहुं मैं तोहिं॥
चौ० कह द्विज जो प्रभु किरपा कीजै॥ तौ मृत्यु लोक जान मोहि दीजै
जेतनी मोरि आयु है बाकी॥ तेतने दिवस वहां मोहि राखी॥
अब लगि मैं कछु धर्म न किहेऊं॥ कृत जगत माहि मन दिहेऊं
जब ते देख्यों पुरी तुम्हारी॥ नरक निरखि लाग्यो डर भारी॥
ताते अस मत मेरे कहिये॥ जातें फिरि तव धाम न ऐये॥
कह यम पापी पुण्यी दोऊ॥ मोरे पुर आवत हैं सोऊ॥
रामभक्ति जग करै जो कोई॥ तिन पर मेरा दंड न होई॥ ॥
चक्र एक दिशि रक्षा करई॥ एक दिशि गरुड़ न कबहूं टरई
एक ओर सब पार्षद दौरें॥ हरि रक्षा तिन पर सब ठौरें॥
तिन्हें बिरोधि कहौं कित रहऊं॥ मन क्रम बचन सत्य मैं कहऊं
ताते द्विज अब जग में जाई॥ सुखप्रद भक्ति करौ हरषाई
बिन हरि भक्ति इन्द्र सुख पावै॥ पुण्य क्षीण मृत्युलोकहि आवै
रामभक्त को नाश न होई॥ भक्तिबीज अज रामर सोई॥
सुनि द्विज धर्म हि शीस नवायो॥ तुरत पलटि मृत लोकहि आयो
मृतक शरीर माहिं पुनि जाग्यो॥ लखि गृह बासिन को दुख भाग्यो
पर्यो कुलाहल नगर मंझारी॥ सुनत चले देखन नर नारी॥
भई भीर बहु बिप्र निकेता॥ आये चलि पुरवासी जेता॥
पूछन लगे कहां तुम गयऊ॥ केहि भांति न फिरि आवत भयऊ
कहा काल मल यम गण आये॥ महा भयानक रूप बनाये॥
मारि मोहिं यम लोक सिधाये॥ आठ ठौर मग दुख अति पाये

दीखि एक वैतरणी धारा ॥ तामें पीब रक्त कृमि छारा ॥ ॥
गयन यमपुरी दक्षिण द्वारे ॥ तहाँ हजारन नर्क निहारे ॥
तिनमें जीव परे कुल सारा ॥ देखत धीरज भाग्यो मोरा ॥ ॥
दूत हमें लैगे यमधामा ॥ तिन मोहिं देखत वचन प्रकाशा ॥
याके नाम और द्विज भाई ॥ तिहि तजि यहि दीन्हों दुख आई ॥
मोसे कहिन माँगि वरु लीजे ॥ मैं कह इक हरिज्ञान मोहिं दीजे
और बात इक देहु बताई ॥ जातें फिरि तव लोक न आई
तिन कह रामभक्ति करु जाई ॥ कबहुं न नर्क परहु पुनि भाई
जेहि विधि गयन जवन विधि आयन ॥ सो हम तुमते वरनि सुनायन
जे नर चतुर सुजान सुकर्मी ॥ लागे करन भक्ति मिलि मर्मी ॥
आपुसाल मल गुरुहि बोलाई ॥ राममन्त्र लीन्हो हरषाई ॥ ॥

**हरिगीतिका छं०** लीन्हों हरषि द्विज मंत्र तारक बहुत विधि उत्सौ कियो ॥ पितु मातु सुत तिय बन्धु कोउ घर रहन साकत नहिं दियो ॥ करि नेम सुमिरै नाम पूजन ध्यान नित हरि को करै ॥ सत सङ्ग साधन सब हरि यश कहै सुनि मन में धरै ॥

**दो०** यहि विधि रघुपति भक्ति द्विज कीन्हीं अति अभिराम ॥
अन्त समय सब कुटुम्ब लै बस्यो राम के धाम ॥
जन रघुनाथ बखानि कै कहि सिख करौं सप्रीति भाय ॥
नातरु पुनि पछिताहुगे नर तन बीतो जाइ ॥
बहुत जन्म सुकृत किये पायो ताके फल नर देह ॥
कहैं रघुनाथ सो पाइ कै जन्म सुफल करि लेह ॥
चौरासी लख कोठरी में एक दरवाजा छोट ॥
ताही पाइ जो ना कढ़े तो फिर भरमै कोट ॥
काल सिपाही सिर खड़ो ताहि डरै नहिं नेक ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फूलो फिरै समुद्र में करत कुकर्म अनेक॥
आखिर को फिरना रहै मरना तोहि विशेष॥
तातें हरि भजि लीजिये यही लाभ मन पेखि

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत गृह धर्म कर्म विपाक वर्णनो नाम द्वादशो ध्यायः १२

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों महाभारथ की पुनि इतिहास बखानि॥
कह्यो सौनक यह जगत में कोउ धनी कोउ रंक॥
कोइ नीरोगी रोगी कोऊ भूपति भिक्षुक संक॥
कोउ निसदिन दुखही सहत कोउ जन मत्त परिजात॥
कोउ जियत बहुकाल तक कोउ बिन पुत्र लखात॥
काहू के जननी जनक मरत बालपन माहिं॥
सो यह कारण कौन है कहो नाथ मोहिं पाहिं॥

चौ० सुनि नृप सूत वचन अस भाखा॥ लखि अधिकारी गुप्त न राखा॥
सौनक जो तुम पूछेउ आई॥ सो सब कर्म प्रभाव लखाई॥
कर्म ते दुख सुख रोग अरोगी॥ कर्म ते भिक्षुक भूपति भोगी॥
कर्म ते मरै बाल पितु माता॥ और बात कछु नाहिं न ताता॥
एक इतिहास कहौं अब गाई॥ जाहि सुनत बहु व्याधि नसाई
एक द्विज गुणनिधि नाम सुजाना॥ सर्व शास्त्रन को जेहि ज्ञाना
तेहि के एक कन्या भै आई॥ नाम सुवर्ता छबि अधिकाई॥
चारि बरस की भई कुमारी॥ तबहीं तासु मरी महतारी॥
तब गुणनिधि निज मनहिं बिचारा॥ बिन त्रिय भवन बसब धिक्कारा
कन्या पुत सो बनहिं सिधायो॥ तामें मुनि आश्रम बहु पायो॥
तिनके ढिग एक कुटी बनाई॥ रहन लग्यो द्विज अति हर्षाई
करन लागि कन्याहि प्रतिपाला॥ बिप्र जानि ये बड़े दयाला

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिबिधि भाँति के चित्र बनावै। लाय खिलौना ताहि खेलावै
राखैं ताहि प्रसन्न सदा हीं ॥ होइ उदास कभूं सो नाहीं ॥ ॥
मातुहीन अरु बालकुमारी। तेहि हित द्विज संन्यासन धारी
भई सु बरी जबै सयानी ॥ तब द्विज ब्याह करन मन आनी
इतने माहिं काल धरि खायो ॥ मन इच्छा सो करन न पायो
मृतक पितहिं लखि कन्या रोवै। ब्याकुल अधिक धीर नहिं होवै
कहै सुबती बहु बिधि बानी ॥ पिता पिता कहि रोदन ठानी ॥
दो० मोको तजि कित को गयो अहो पिता परबीन॥
दया बन्त सब भाँति तुम मैं कन्या अति दीन॥
चौ० अब इत रक्षक कौन हमारा ॥ मात पिता भ्राता नहिं प्यारा
हाय हाय मैं का कर्म कीन्हा ॥ ऐसा दुःख दयी मोहिं दीन्हा ॥
जरौं अग्नि की जल में बहिहौं ॥ की चढ़ि गिरि सहि मरि जैहौं
पटकैं दोउ कर सिर भू माहीं ॥ बिन पितु मा मम जीवन नाहीं ॥
सुनि कन्या का रोदन भारी ॥ उठि दौरैं ऋषि संयुत नारी ॥ ॥
सो० आये सब तेहि तीर। समझावैं बहु भांति करि॥
धरै न मन में धीर। तात मात कहि सिर धुनै॥
चौ० ऋषि पत्नी बहु करैं प्रबोधा ॥ नहिं उपजै ताके उर बोधा
लखि यम के मन करुणा आई ॥ तत क्षण द्विज का रूप बनाई
पहुंचे आइ सुबरता तीरा ॥ कह्यो बचन मृदु सुखद गंभीरा
दो० हे कन्या मति रुदन करु धरु धीरज मन माहिं ॥
अपने कर्मन केर फल जाय कहूं सो नाहिं ॥
चौ० आगे करै सो अब भुगतावै ॥ अब जो करै सो आगे पावै
कल्प कोटि तक घटै न सोई ॥ अवशि मेव भोगब कहं होई
कर्म बीज होनी फल अन्ता ॥ तेहि निरधंस होत कोइ सन्ता
तातें कुंवरि न रोदन कीजै ॥ पाछिल कर्म कि ह्यो लस लीजै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह कन्या भाषो प्रभु तोना॥ पूरब कर्म कीन्ह हम कौना॥
विप्र कहा सुनु सुता सयानी॥ प्रथम जन्म तव कहौं बखानी॥
पूर्वजन्म गणिका लै प्रहई। उज्जयन नगर माहिं घर रहई॥
सुन्दर रूप नयन चपलाई॥ जेहि चितवै तेहि लेइ लोभाई॥
पुर के लोग बहुल बस तेरे॥ जो तुम कहौ करें यहि बेरे॥ ॥
तेहि पुर विप्र रहै इक जानो॥ पुत्र तासु विद्वान पिछानो॥ ॥
पूजा करै धर्म शुभ साधे॥ पाप कर्म नहिं कछु अवराधे॥
एक दिवस सो सहज सुभाई॥ तव द्वारे है निकसो आई॥
देखत तुम्है भूल्यो बुधि ज्ञाना॥ रह्यो ठाढ़ लहं मनो दिवाना॥
तब तू जानि ताहि बाल धावा॥ आदर करि निज ढिग बैठावा॥
वाकी प्रीति तुम्ही से लागी॥ मात पिता वनिता निज त्यागी॥
तेरे विषै बसे दिन राती॥ चलल फिरत हिय तोहिं सोहाती॥
इक दिन तेरे भवन मँझारा॥ दूसर कामी आइ पधारा॥ ॥
विप्र शूद्र तें भई जो रारी॥ शूद्र द्विजै लहँ डाल्यो मारी॥

दो० यमकिंकर तेहि लै गये डारे निनके अघोर॥
शूद्र सुरनै भाग तब भई नगर महँ शोर॥

चौ० काहू द्विज गृह आइ पुकारा॥ तव सुत गणिका घर मारा॥
सुनि पितु मातु नारि दुख पाई॥ रोदन करत धाम तव आई॥
पुत्र बिलोकि अधिक दुख पागे॥ ताको शाप देन तब लागे॥
तासु मातु बोलो असि बानी॥ पुत्र वियोग न धीरज आनी॥
हे वेश्या तैं सुत बस कीन्हा॥ यंत्र मंत्र करि धन हरि लीन्हा॥
फिर ताको डार मरवाई॥ हम कहँ दुख दारुण दिलवाई॥
पुत्र विछोह कराये मोहीं॥ मातु हीन होई दुख तोहीं॥ ॥

दो० पिता तासु ऐसो कह्यो बाल अवस्था माहिं॥
पिता तोर मरि जाइहै जहाँ हित कोउ नाहिं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह्यो भार्य्या पति बिना मोहि कियते जैस॥
रह्यौ कुंवारो नाह बिन सह्यो कष्ट तुम तैस॥
ऐसे सो को शापजो दई तिहूं मिलि जानि॥
ताते दुख यहि उमिरि में भयो कर्मगति आनि॥
सो० भले बुरे जो कर्म। बिन भोगे छूटत नहीं॥
धरे जो कोटिन जन्म संग न छाड़त एक छिन॥
चौ० सुनत सुवर्ना बोली बानी॥ द्विज तुम कहा सत्य मैं जानी
जन्म पाछिलो तुम कहि गावा॥ जेहि कर्म ते मैं अस दुख पावा
इक सन्देह होत मन मोरे॥ सो अब पूछत हों कर जोरे॥ ॥
मैं हरिक अति अधम अपावनि॥ बहु नाहन ते नेह लगावनि
विषै मनोरथ नित प्रतिपाले॥ बहु मनुष्य के घर में घाले॥
जननि जनक कुल धर्म सो त्यागे॥ जे मेरे संग ने कहु पागे॥
कहौं कथा सब पापै कीन्हा॥ भलो कर्म स्वपने नहिं चीन्हा
द्विज कुल जन्म कवनि विधि पायौं॥ सब दिन खोटे कर्म कमायौं
अरु तुम दरश दियो किमि आई॥ सुनि भूसुर बोला सुख पाई
दो० जौन कर्म ते विप्र की सुता भई तू आनु॥
दीन दशा में पुराय जेहि सुनु सोक हो बुझाय॥
चौ० एक विप्र हरि भक्त सुजाना॥ समदरशी गुण ज्ञान निधाना
गो गज स्वान विप्र चंडाला॥ सब में इक दीखै नन्द लाला॥
जप तप आदि धर्म जो ठानै॥ तेहि कर फल अरपै भगवानै
इंद्री जीत धीर मन राखै॥ झूठ बचन मुख ते नहिं भाखै॥
काम क्रोध मोह मद त्यागी॥ रहित लोभ हरि पद अनुरागी
मैं अरु मोर ते तिनहिं जानै॥ दुख सुख को सामान्य पिछानै
नहिं कछु आश्रम बंधन ताके॥ कुल कुटुम्ब कर मोह न जाके
जित चाहे तित रहै बसि रहई॥ हर्ष शोक नहिं विसमय गहई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एकदिवस पुरवासा लेवै॥ दूजेदिन नहँते चलि देवै॥ ॥
विचरत सहज सुभाय सोहायो॥ एक दिन नगर तुम्हारे आयो॥
देखिस्वेत तव द्वारे माहीं॥ बस्यो सन्त निधि खोरधन नाहीं
मैलेबसन शरीर कृसाना॥ त्यागि दिये भोग जो नाना॥ ॥
आधी रात भई निशि नासा॥ बैठ भजन करैं हरि दासा॥ ॥
दो॰ तेही समय कुलवाल की फेरी पहुँचो आइ॥
कह्यो सन्त सो कौन तू सोतो मौन रहाइ॥
चौ॰ तिन्हे उत्तर कुछ दियो न जबहीं॥ चोर एक कह्यो तबहीं॥
द्विज कछु सौंच वचन समुझायो॥ दुर्जन मन विश्वास न आयो॥
खैंचि चले लै अपने साथा॥ नहिं कछु दुख मान्यो द्विज नाथा
तैं जागे अपने घर माहीं॥ सोर सुनत आइ तिन पाहीं॥ ॥
दीख मँगाइ द्विजै दिखरायो॥ तब तुम तिन ते वचन सुनायो
जो यह चोर होइ सुनि लीजे॥ सो चाहो सो हम को कीजे॥
सुनि तव वचन दिहिन छुटकाई॥ करगहि तू निज मंदिर लाई
चरणा पखारि पलंग बैठावा॥ धूप दीप करि पद सिर नावा॥
कह्यो कछुक दिन मम गृह रहऊ॥ पहिरो बसन जौन विधि चहऊ
षटरस भोजन करो बनाई॥ जाते देह पुष्ट ह्वै जाई॥ ॥
सुनत सन्त बोल्यो शुभ बानी॥ ज्ञान विराग भक्ति रस सानी
दो॰ धन्य मात तव भाव को मोहिं चही कछु नाहिं॥ ॥
बृथा सकल सुख जगत के बिनसि जात क्षण माहिं
क्षुधा तृषा सुख भोग को कछु इच्छा नहिं मोहिं॥
सहज आइ निकस्यो इहाँ सत्य सुनायो तोहिं॥
चौ॰ तुम समान मैं और न चीन्हा॥ पर उपकार आजु तैं कीन्हा
परे उपकारी धनि नर नारी॥ भवसागर सो होवै पारी॥ ॥
तुम पर तुष्ट होइ भगवाना॥ मैं दे जग कर आवन जाना॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो को कछु यहि मे नहिं माई।। करहु सैन निज सेजहि जाई
यहि विधि संत कह्यौ समुझाई। तब ते पुनि बोली सिर नाई
महाराज मैं धन्य हौं आजू।। दरशन पाइ सरे सब काजू ।।
पाप चारि री मैं अति भारी। जेहि भव तरै सो कहौ विचारी
कह्यौ सन्त भव तरो जो चाहै। तौ हरि शरण आइ के गाहै।।
काम क्रोध मद मोह निवारै।। निरअभिमान दंभ परहारै ।।
तृष्णा लोभ मछर ना दहई।। इन्द्रिन के मारग नहिं वहई।
थिर सुभाव एकान्त निवासी।। दुख सुख सम चित धर्म प्रकाशी
उपज्यो न ताहि भूतक यहि थाने।। मिलन हर्ष शोक भय आने
नास वन्त सब जग का देखै।। आतम अचल शुद्ध पंडित पेखै
सम दम शील दया उर राखै।। गुरु ते गर्व स बचन न भाषै ।।
पर दुख देखि तासु दुख हरई।। हरि जन की सेवा करई।।
राम नाम सुमिरै मन लाई।। राम छांडि चित अन्त न आई।।
उठत बैठत भोजन पावत।। स्वास स्वांस प्रति नामै ध्यावत
आन उपाय सकल परिहरई।। केवल राम नाम रत करई।।
सो संसार तरै सति मानो।। यामे कछु संदेह न आनो ।। ।।
मुक्त होइ भव बंधन छूटै।। फिर तेहिं यम किंकर नहिं कूटै।।
ताते तुमहूं येही कीजै।। नर तन पाइ सुफल करि लीजै।।
भय निद्रा मैथुन आहारा।। सब योनिन मे मिलत निहारा।।
हरि सुमिरण याहीं ते होई।। सब योनिन सम ताहि न खोई
दो० ऐसे तोहिं उपदेश हीं करत भयो भिनसार।।
साधु उठि रमतो भयो धरि हरि पद उर सार।।
चौ० तब तोहिं उर प्रेम पाबे रागा।। विषै विलास वमन सम त्यागा
धर्म सु निहि हिरदे महं धार्यो।। कंचन मृत्तिका सरिस निहार्यो
तजि घर वन मे वासा कीन्हो।। राम चरण पंकज चित दीन्हो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

द्विजरक्षा करि हरि को ध्यायो ॥ जन्म विप्रकुल तेहि पुनि पायो
प्रथमै द्विजन श्राप जो दयऊ ॥ तेहि तें तोहिं दुःख यह भयऊ
संत कृपा यम जालन परेऊ ॥ संत कृपा सब पाप नके जरेऊ ॥
संत कृपा तें नर्क न लहेऊ ॥ चौरासी बिच नाहिन बहेऊ ॥ ॥
संत कृपा में दरशन दीन्हो ॥ पूर्ब कर्म सब बरणन कीन्हो ॥
यह मैं भेद सकल कहि गावा ॥ जो तुम पूरब कर्म कमावा
इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत सुबती कथा बर्णनो नाम त्रिदशो ऽध्याय १३॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं मिमांसा शास्त्र मत सोइ इतिहास बखानि॥

चौ० सुनत सुबती बचन उचारा ॥ नाथ शोक तुम मोर निवारा
तदपि सुरति करि दुख हिय आवत ॥ मोह बिबस मन बोध न पावत
ताते बात कहौं अब सोई ॥ जाते फिरि मोहिं दुःख न होई ॥
कह द्विज सुनु कन्या मन लाई ॥ तहं दुख जहं सनेह सरसाई
बिन सनेह दुख होय न कैसे । शुक मूषक सुत संद जज जैसे ॥
सब जीवन में समता आने ॥ शत्रु मित्र मध्यस्त न माने ॥
बपु धरि हानि लाभ जो होई ॥ कर्मन के सिर राखै सोई ॥
जैसे नारि गौतमी कीन्हा ॥ पुत्र शोक तेहि भयो न चीन्हा ॥
कह कन्या सुनिये द्विजराई ॥ कथा गौतमी की जो चलाई
मैं अज्ञान न ऐसे जानो ॥ तासे कर बिस्तार बखानो ॥ ॥
बोला बिप्र कुंवरि सुनि लेहू ॥ कहौं कथा तामें मन देहू ॥

दो० ज्ञानवन्त धीरज बड़ी दया हृदय बैराग ।
नारि गौतमी जानिये हरि पद में अनुराग ॥

चौ० करै तपस्या बन के माहीं ॥ परम कठिन कहि जात सो नाहीं
ताके रहै पुत्र एक जानो ॥ खेलै तहं निर्भै पहिचानो ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक दिन एक नरु त· शिशु गयऊ। काट्यो सर्प तुरत मरि गयऊ॥
तहँ इक बधिक दीख यह हाला। डारि फांस पकर्यो सो व्याला॥
लायो जहां गौतमी रहई। तासों बधिक वचन अस कहई॥
अहै भुजंगी कह बालक तिहारो। सर्प ने संहारो॥ यहि हू जान्यो। पकरि ताहि आन्यो॥ तजौं नाहिं याको। वल ले खवाको वही जाहि धोखी। भयो ब्रह्म दोषी॥
चौ० ऐसे बचन सुने भै कारी। बोलत भई गौतमी नारी॥
अहो बधिक मैं कहौं सो कीजे। अबहीं छांडि सर्प को दीजे॥
याहि हते सुत जीवे नाहीं। वृथा धरे क्यों अघ शिर माहीं॥
कह्यो कीर हिंसक ठग कोई। ताहि बधे कछु पाप न होई॥
बालक दोषी सर्प अनारी। मैं तौ याहि डारिहौं मारी॥
सुनि गौतमी कही अस बाता। मुयेक कहा करै तू घाता॥
कामी क्रोधी हिंसक रोगी। अयशी कृपण दरिद्री सोगी॥
सूम दूत स्त्री के जारे। राज अग्नि जल सिंह बिदारे॥
राम बिमुख निन्दक अभिमानी। पापी कोल कालबस जानी॥
बेद बिदूषक हरिजन द्रोही। भुजंग भूत तन पोषक होई॥
ये सब जीव मृतक सम जानो। मुर्दे कहा मारने ठानो॥
अपने कर्म ते मर्यो कुमारा। अपने कर्म तुम जाय निहारा॥
अपने कर्म सर्प बँधि आवा। जस कीन्हे तिन तैसा फल पावा॥
परको दुख देवै जो कोई। सोई दुख ताहू कह होई॥ ॥
बोलै गिरा कूप को जैसी। वाही समय मिलै सोइ तैसी॥
जो दरपन को आय उठावे। तैसी आपु ताहि बनि आवे॥
सोइ लेन मन कर्म किये जैसे। भोग देह धारि के तैसे॥
बालक नहीं सर्प ने मार्यो। याके कर्म वाहि संहार्यो॥ ॥
तेहि ते बधिक छांड़ि देयहू। दोष भुजंग हि नाहक देहू॥

सुनि गौतमी केर अस बैना। बोला उरग पाय उर चैना॥ ॥
यामें है कछु दोष न मेरा। मैं तो फिरों मृत्यु का प्रेरा॥ ॥
बालक मोते कहूँ ये बारा। भई भेट इहि बिपिनि मँझारा॥ ॥
डस्यौं न मैं तेहि सहज सुभाये। बिना मृत्यु की आज्ञा पाये
अस सुनि मृत्यु तहाँ चलि आई। बोली बचन सत्य सुखदाई

सो० हौं नहिं खायो बाल। नहीं बध्यो यहि सर्प ने।
दई जो आज्ञा काल। सोइ करौं मैं आइ के॥

चौ० मैं हौं कालराय की चेरी। आज्ञा होइ ग्रसौं वा बेरी॥ ॥
काल कहे ताको मैं खाहूँ। बिना निदेश निकट नहिं जाऊँ

भुजंगप्रयातछं० सुनै बैन ऐसे जबै काल गाया। धरी देह छिप्र उसी ठौर आया॥ कह्यो सर्प नाहीं नहीं मृत्यु मास्यो॥ नहीं रोग कोई जु मैं नाश धास्यो॥ करै कर्म जो जैस तैसा हि पावै। बिना भेद जाने हमें दोष लावै॥ मरै औ जियै रुद्र बालक जवाना। सो तो कर्म ही तें सही और आना। कोई कर्म के के बहूत काल राहै। कोई कर्म कैके अगिनि में नदा है॥ कोई कर्म कीन्हो हमें जीति लीन्हो। बस्यो विष्णु के धाम विश्राम चीन्हो

दो० कोइ कर्म करि नीच ते भये ऊँच कोइ गत्त॥
कोइ बोरत तारत कोई सिरजत पालत हत्त॥
कोइ जल डूबै तरु गिरै अगिनि जरै बिष खाय॥
कोई सहस्रन रोग कोउ सर्प डसे मरि जाय॥

चौ० काहु सिंह भेड़िया खावै। कर्म किहि नितसि मृत्युहि पावै
चित्रकेतु सुत गज वै जनमा। रानी सकल गिंजाई बनमा॥
पगातर पीसि गई मरि जोई॥ बिषदै बदला लीन्हि निसोई
कीर बिछोह जानु की कीन्हों। हे सोइ झलक निंदिवन दीन्हों
दशरथ दुख अंधन का दयऊ॥ पुत्र शोक तनु त्यागत भयऊ

चतुरानन कन्या को धायो॥ तेहि कर्म ते शिव शीश गिरायो॥
बालिहि राम बान ते मार्‍यो॥ द्वापर में सोइ बदल बिचार्‍यो॥
कीर भयो द्वापर महँ सोई॥ कृष्ण चरण मार्‍यो सर जोई॥
गांधारी सुत शत ये मारे॥ कमठ अंड रुज हेत बिदारे॥
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई॥ कर्म ते नृप चर भयो जटाई॥ ॥
कर्म ते भे नृप नहुष भुजंगू॥ कर्म ते रवि शशि राहु ग्रसंतू॥ ॥
हरि बिन्ध्या ते जो छल कीन्हा॥ तेहि क्रम आय जन्म जग लीन्हा॥
नारद आप विष्णु कहँ दयऊ॥ कर्म ते शंभु लिङ्ग गिरि गयऊ॥
कहँ लग कहौं कर्म जस कीन्हा॥ तस सबहिन मिलि भोगै लीन्हा॥
तेहि ते कर्म प्रधान जग अहई॥ दुख सुख जीव कर्म करि लहई॥

सो० सम्पति बिपति कलेश। उतपति पालन यश अयश॥
होत कर्म ते तैस। यामें दोष न मोर कछु॥
सुनत काल के बैन। बुद्धि फिरी तब बधिक की॥
भा बिराग उर ऐन छाँड़ि दीन्हि सि तेहि सर्प कहँ॥
सर्प मृत्यु अरु काल। जित ते आये तित गये॥
भयो बधिक उर साल। कर्म याकि लेसुरति करि॥

दो० बधिक गौतमी के चरण पुनि २ शीस नवाय॥
लग्यो योग जप तप करन कुल की रीति गँवाय॥
बधिक गौतमी की कथा भई जौन बिधि जानि॥
सो कन्या तो सों कही मैं संक्षेप बखानि॥
अस ब्राह्मण के बचन सुनि मन में कीन्ह बिचार॥
पुनि कन्या बोलत भई बचन महा सुख सार॥
मेरे मन को दुख हर्‍यो कर्‍यो बोध बहु भाँति॥
गयो मोह अज्ञान अब हृदय में आई शांति॥

सो० योगी ज्ञान न भेव अगिले पीछले जन्म कर॥

सोमैं सो कहि देव। हैं स्वामी तुम कौन हौ॥
चौ० कह्यौ बिप्र सुनकन्या बाता॥ मैं हौं यम पापिन दुख दाता॥
मो को दीन दुखी अतिदेखा॥ कीन्हौं बोध आय द्विज भेषा॥
मांगो बर भावै जो तोहीं॥ अतिप्रसन्न जिय जानहु मोहीं॥
कह कन्या पितु मात हमारा॥ सुहृद बंधु सगरो परिवारा॥
बसैं स्वर्ग जब लगि शशि भानू॥ यही मोहिं दीजै बर दानू॥
सवमस्तु कहि यम चलि भयऊ॥ तुरत सुवर्ता यह इति लयऊ॥
जप तप लागी करन उदारा॥ कन्द मूल भखि भोग बिसारा॥
गीतिका छं० बिसराय तन सुख भोग जग के तुच्छ मन में जानिके। लागी करण हरि भक्ति सुमिरण ध्यान ज्ञान पिछानिके॥ सब कर्म बन्धन काटि कै श्री राम के धामै गई। सुर सिद्धि मुनि गत जौन दुर्लभ भजन करि पावत भई॥
दो० आठ पहर चौंसठ घरी तिन में भजिये राम॥
जन रघुनाथ न भूलिये यही सयाना काम॥
यह इतिहास पुनीत मैं बरणों मति अनुसार॥
कहैं रघुनाथ जो उर धरै भवसागर है पार॥
इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत गोलमी सुवर्ता धर्म प्रसङ्ग बर्णनो नाम चतुर्दशो-

ध्याय:१४॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणराज गिरा सुखदानि॥
कहौं माघ की कथा कछु अघ बिलास बखानि॥
सो० मुनि सौनक मुनि पाहिं। पूछ्यौ दोउ कर जोरि कै॥
दान तपस्या माहिं। अधिक कहा सो बरनिये॥
चौ० सुनत सूत बोले हरषाई। सुनि सौनक मैं कहौं बुझाई॥
तप ते दान अधिक है जानी॥ श्रद्धा सहित करै जो प्रानी॥

बहुत कष्ट करि द्रव्य कमावै ॥ सो हरि पथ मारग माहिं लगावै ॥
ताको यश त्रिभुवन महँ होई ॥ बसै स्वर्ग महँ निश्चय सोई ॥ ॥
जो सु धर्म करि फल नहिं चहई ॥ सो हरि भक्ति परम पद लहई ॥
तापर एक इतिहास बखानो ॥ सुन्दर महा पुरातन जानो ॥ ॥
मुद्गल विप्र एक सुनु नारी ॥ बसत रहे कुरु क्षेत्र मँझारी ॥
शिल बीनि विरति अस गहई ॥ पाख एक अन्न को तर रहई ॥
डेढ़ सेर जब इकठे होई ॥ पीसि बनावै भोजन सोई ॥ ॥
साधु विप्र प्रथमे भुगतावै ॥ पाछे अपना सब मिलि पावै ॥
यहि भाँति न बीते बहु काला ॥ छिन निज धर्म करै प्रतिपाला ॥
अमृतगीतिका एक दिवस ऋषि दुर्वासा ॥ सुनि विमल
बड़ाई तासा ॥ ते लैन परीक्षा आये ॥ हरि जन को भेष बनाये
मधुभार छं॰ अरु देह छीन ॥ तन बसन हीन ॥ द्विज द्वार
आय ॥ तप को छिपाय ॥ लखि विप्र सोय ॥ अति मगन होय
दण्डवत कीन ॥ पद धोय लीन ॥ आसन पधारि ॥ आरति उ-
तारि ॥ दोउ पाणि जोरि ॥ बोल्यो निहोरि ॥
चौ॰ महाराज धनि भाग हमारे ॥ जो निकेत तुम आइ पधारे ॥
जेहि गृह सन्त चरण नहिं आवै ॥ अन्न सान सहै भूत रहावै ॥
तव दरशन निर्मल मन भयऊ ॥ संचित कर्म सकल औ गयऊ ॥
भोजन रहै सो आगे राख्यौ ॥ दीन वचन बहु सुख से भाख्यौ ॥
सुनि द्विज वचन गूढ़ सुखदाई ॥ पावन लग्यो संग हरषाई ॥
जेंइ चुक्यो कछु जूठ न रहेऊ ॥ सो ऋषि बाँधि बगल में गहेऊ ॥
एको ग्रासन तिन को बाँचो ॥ विप्र प्रसन्न भयो मन साँचो ॥
दुर्वासा चलि भे निज गैला ॥ मुद्गल मन नहिं आयो मैला ॥
षट पख बारे ऐसेहि करेऊ ॥ खाइ जाइ द्विज दोष न धरेऊ ॥
और भाव दिन दिन अधिकाई ॥ नेक कृपणता मन नहिं आई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखि दु बेसो द्विगुन भावा॥ भीतर बाहर एक सम पावा॥ ॥
बोलत भये विप्र ते बानी॥ हर्ष सहित निर्मल सुख दानी॥
तोमर छं० धन्य तुम जग माहिं। अस दानि दूसर नाहिं॥ निज असन हम को दीन। बड़ दान तुम ने कीन॥ तिहुं लोक में यश तोर। होई वचन फुर मोर॥ अरु विष्णु के पुर जाइ। बसिहो तहां सुख पाइ॥ जो मुनिन दुर्लभ भक्ति। मिलिहैं तुम्हैं सो शक्ति॥ अस वचन सुनि द्विजराय। बोल्यो वचन शिर नाय॥
सो० अहो सन्त सुख भौन। तुम किरपा जापर करो॥
मोक्ष आदि सुख जौन। मिलत सहज में ताहि तेहि॥
बरवै छं० यहि विधि करत बतकही विप्र सुजान। स्वर्ग लोक ते लाये दूत विमान॥ सुर विमान की उपमा कही न जाय। सात स्वर्ग को विभव जु माहिं लखाय॥ रतन जड़ित अति उज्ज्वल शोभावान। उतर्यो नभ ते मानों चन्द समान॥
सुप्रिया छं० सुर दूत मुनि वन्दन कही। इन्द्रादि देवन की सही तब हेत जिय आयो भलो। चढ़ि स्वर्ग को अबही चलो॥ अस बैन दूतन के सुने। मन माहिं द्विज मुद गल गुने॥ बोल्यो बहुरि हरषाइ के। दूतो सुनो मन लाइ के॥
सो० सुरपुर दुख सुख कौन। गुण अवगुण तामें कहा॥
कहो कृपा करि तौन। हौं प्रभु जाते जानिये॥
चौ० कह्यो गणन हे सन्त कृपाला॥ तुम को सब मालुम है हाला॥
दीन जानि प्रभु दाया करेऊ॥ हम ते प्रश्न ऐसि उच्चरेऊ॥
सुनो स्वर्ग सुख बरनौ सोई॥ जन्म मरण की व्याधि न होई॥
मैन कलेश लेन नहिं देना॥ क्षुधा तृषा नहिं व्यापत मैना॥
कल्प विटप मनसा का पूरा॥ छांह बसे होवे दुख दूरा॥ ॥
रतन जड़ित हेमालय बनेऊ॥ सुभग सेज पट भूषण घनेऊ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दिव्यरूप ह्वै धामसा पावै ॥ सेवा करन अप्सरा आवै ॥
स्वर्ग माहिं अस सुख है भाई ॥ सो हम तुम को दीन बताई ॥
दुख अब ताके सुनो नरधीशा ॥ कहौं सोइ जो आँखिन दीशा ॥
इक तौ कछु करतव्य न होवै ॥ जाते पुण्य बढ़ै अघ खोवै ॥
करी कमाई जो फल खावै ॥ खात खात कम तौ ह्वै जावै ॥
पर को पुण्य अधिक लखि सोई ॥ तबै ईर्षा मन में होई ॥
पुण्य क नाश सबै ह्वै जावै ॥ फिरि सो मृत्युलोक को आवै ॥
जपतप यज्ञन ते सुरलोका ॥ मिलत तदपि ताहू में शोका ॥
देवदूत की ऐसी बानी ॥ सुनि मुद्गल बोल्यो सुख मानी ॥
काम क्रोध मद मत्सर आदी ॥ जहँ अति लहैं के सुख सब बादी ॥
स्वर्ग माहिं है दुःख अपारा ॥ तेहि मन चाहत नाहिं हमारा ॥
निश्चल धाम होइ जो कोई ॥ हमते बरणि सुनावौ सोई ॥

दो॰ कहु गन स्वर्ग पताल में सब नाशक गे जानि ॥
सुरलोक विधिलोक लौं सब की होवै हानि ॥
विष्णुलोक नित थिर रहै उभय तिय से नाहिं
सुख ललित बहु प्रकार के बसत सन्त तेहिं माहिं ॥
जन्म मरण तामें नहीं अरु कम ईर्ष न व्याधि ॥
आनन्दै आनन्द है राम धाम अनादि ॥

तोमर छं॰ तहँ रहत हैं हरिराय ॥ ऐश्वर्य कछु कहौं गाय ॥
जेहि राज सब ब्रह्मण्ड ॥ चौदा भुवन नव खण्ड ॥ बैकुण्ठ गढ़ आ-
ओ ता ॥ चाकर सकल सुर भीत ॥ विरंचि जासु दिवान ॥ है कोत-
वार ईशान ॥ मातङ्ग बसुदिग पाल ॥ पानी भरे घन माल ॥
कोतवाल हैं यमराज ॥ नासत्र मान हु बाज ॥ मुसतौ की चित्र
गोपित्र लम्बोदर मुंशी लिख ॥ गुरदेव कानी गोइ ॥ औ जी-
र अष्टकिल सोइ ॥

सरूपिका छं० अरु सबा शेष बिचारी ॥ कुबेर जासु भंडारी
बहु खानि लाख चौरासी ॥ तेहिं सब करि खन बासी ॥ करैं परा-
रब्ध कर भोगा। रहैं सब पर कर्म दरोगा ॥ अह दी ग्रह रोग अनन्ता
जागीरत गीर करन्ता ॥ यम दूत पियादा फिरहीं जे राम विमुख
ते धरहीं ॥ महि षेश लोक बंदि खाना बहु नर्क भाय सी जाना।
हरि धर्म पोत बिन दीन्हे। तहँ धरत आइ सठ चीन्हे। बिन बेद
पत्ति ग्रह धारी। ते जानहुं सबै बेगारी ॥ पृथ्वी पञ्च ग्रह जानो।
तहसील दार यह मानो। जप तप व्रत दान हि करहीं। तेन खज-
नु पोत हि भरहीं मद काम क्रोध अहंकारा। डकइत लूटत सं-
सारा ॥ सत संगन कीव नसारा। सो करत फिरत दुख धारा ॥
है अन्न धरणी मोदी ॥ दे सबै अहारे सोदी ॥ बौर्बाल बीर हनु
माना। जय विजय रहत दर बाना ॥ शुचि सेवक भक्त पियारे
जिनके हित नर तन धारे ॥ सुर लोक सकल जागीरा। सब सह
ना जासु समीरा ॥ अरु धर्म नवीन करारा। है भक्ति बड़ी सर-
कारा ॥ नौबति है अनहद तासा। चौपुर बर धरहु मासा ॥ भूलोक
जासु बाजारा। तहं होत कर्म बेपारा। सै रह दीप अरु खरादा।
धनु काल मृत्यु कर चराडा ॥ बन बाग अरी घागा। हैं सातो सं-
भ तडागा ॥ परबत सब बर्ली जाना। तेहू नभ दीरघ ताना ॥ ब-
न्दी गण बेद कहावैं। जे नेति नेति यश गावैं। जिनकी प्रिय ल-
क्ष्मी रानी। सो हेली गिरा भवानी। दे भक्ति मुक्ति दो दाना ते हि
धेमक संत सुजाना। हैं ऋद्धि सिद्धि जेहि दासी। सो निस
दिन करैं खवासी ॥

दो० कोटि २ ब्रह्माण्ड हैं रोम रोम प्रति जासु ॥ ॥
कहै रघुनाथ बखानि को उपार कि पावै तासु ॥
मुनि प्रभाव अस विष्णु को मन हर्ष्यो महिदेव ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहुंच्यो हरि पुर किमि मिले ताको कहिये भेव॥
मिले जो यह पद भक्ति ते जोग ज्ञान मन लाय॥
जेहि उपाय करें विते विष्णु लोक महिं जाय॥
सो० देवदूत के बैन। सुनि बोल्यो मुद्गल बहुरि॥
जाहु आपने ऐन। कहौं वन्दना मुनन ते॥
दो० देवदूत भजे स्वरग आपु भक्ति मनु लाय॥
करणी बल निजु कुटुम्ब युत बस्यो विष्णु पुर जाय॥
सो० तप ते अधिकी दान सह यज्ञा के जो करे॥
होय भुवन विख्यात। भक्ति मिले पुनि द्विज सरिस॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत मुद्गल प्रसंग वर्णनो नाम पंचदशोऽध्याय॥१५॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
हरि धर्म्मोत्तर ग्रंथ की कहौं इतिहास बखानि॥
सो० सुनि सौनक सुख पाइ। नाइ शीस बोल्यो बहुरि॥
नाथ कहौ समुझाइ। पुण्य बढ़त केहि दर्वि ते॥
चौ० कहा सूत सुनि कहौं बुझाई। जेहि धन धर्म बढ़ै अधिकाई॥
सुकृत करि जो दर्वि कमावे॥ तेहि परमारथ माहिं लगावे॥
बाढ़े पुण्य पाप है नासा॥ सो नर लहै स्वर्ग में बासा॥ ॥
अधरम करि जो दर्वि कमावे॥ धर्म माहिं पुनि ताहि लगावे॥
ताकी पुण्य वृथा ही जानो॥ सुनो एक इतिहास बखानो॥
न्रप एक बीर भद्र प्रसनामा॥ सोरठ नग्र माहिं तेहि धामा॥
करै पुण्य बहु भाँतिन राजा॥ गज रथ भूमि पालकी बाजा
सो० सुबरण सींग मढाय। मुक्ता पूछें रजत खुर॥
पीताम्बर पोढ़ाय। देइ धनु इमि द्विजन कहँ॥
चौ० शय्या दान करै पट दाना॥ यज्ञ महोत्सव बहु विधि ठाना॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेहि पर एक बार बिधि योगा ॥ न्रप एक चढ़ौ संग ले लोगा
निशा अवानक नगर लुटायो ॥ कैद कीन जेहि पकरि पायो ॥
रानी न्रपति अतिथ के भेषा ॥ भागि बचे काहू नहिं पेखा ॥ ॥
आये एक नगर के माहीं ॥ देखु कामात्र रहैं ढिग नाहीं ॥ ॥
कर मुद्रिका एक न्रप दीन्हा ॥ तेहि कछुक दिन भोजन कीन्हा
नातेदार रहैं पितु मामा ॥ रानी सहित गयो तेहि धामा ॥ ॥
तहाँ नहीं कछु आदर पायो ॥ बहुरि भूप भगनी घर आयो ॥
जानि अभाव जनक लघु भाई ॥ तिन के निकट गयो चलि राई

सो० रहे तहाँ कछु काल । पुनि लागे अन खान सब ॥
चलि भे तुरत भुवाल । ससुझि कर्म गति मन विधे ॥

दो० जाके भवनै जाइ चलि बात न पूछे कोइ ॥
बिपति परे हरि बिन कोई काहू को नहिं होइ ॥

कुण्डलिया कमल केर पितु सरित पति गरल सुधा शशि भाय । मित्र भानु अह्मा तनै बिश्वभरा जेहि माय ॥ बिश्वभ-रा जेहि माइ श्री रम्भा दोउ भगनी । बह नोई हरि इंद्र नाति शिव सुन्दर भगनी ॥ अस परिवार तुसार जड़ जारि दियो निशि जाम । बिपति परे रघुनाथ बिन कोइ न आयो काम ॥

चौ० भूपण भरण लगे न्रप रानी ॥ भिक्षा केरि युक्ति तब ठानी
घर घर भिक्षा करैं भुवारा ॥ तन पर बसन न जुरै अहारा ॥
कछुक काल या बिधि चलि गयऊ ॥ न्रप रानी सें बोलत भयऊ
संभरि गढ़ इक साहु सुजाना ॥ मानिक नाम बिदित धनवाना
बेचन पुण्य जात जो कोई ॥ मानिक साहु लेत है सोई ॥ ॥
कागद पर लिखि तुला चढ़ावै ॥ ताहि बराबर सोन देवावै ॥ ॥
रानी कहा सुनो न्रप राई ॥ तुमहूँ कीन्ह पुण्य अधिकाई ॥
तामें कछुक बेंचि लै आवो ॥ पहिरो बसन पेट भरि खावो ॥

जोजगमें तनु रही हमारा ॥ करब दान पुनि बहु परकारा ॥
कह राजा रानी सुनि लेहू ॥ मारग को खरचा कछु देहू ॥
सुनि रानी तुरतै उठि धाई ॥ गृह २ ते भिक्षा करि लाई ॥
नृप के बसन बाँधि सोइ दीन्हा ॥ गणाधिप सुमिरि पयाना कीन्हा
तेहि बासर निशि भै तरु पाई ॥ रह्यो सुनिय बिन भोजन राई ॥
दूसरे दिन चलि सर इक पायो ॥ करि मज्जन नृप भौरी लायो
सेंकि तुर्त हरि भोग लगावा ॥ तेहि क्षण इक अभ्यागत आवा
क्षुधावंत बोला हर आई ॥ सुनि नृप के मन करुणा आई ॥
दो० होय धनी कंगाल जो तद्यपि रहै उदार ॥
जन्म दरिद्री धन लहै करि न सकै उपकार ॥
द्वै भौरी अभ्यागत हि दीन्ही करि सनमान ॥
दुइ पुनि अपना खाय कै कीन्हो बहुरि पयान ॥
चौ० तिसरे दिवस साहु घर आयो ॥ आदर करि राजा बैठायो ॥
पूछ्यो बनिक कहाँ ते आये ॥ को हौ कौने काज सिधाये ॥
सुनि नरेश अस बचन प्रकाशा ॥ सावल ते आयन तव पासा
बेचन पुण्य हेतु यह ताता ॥ तुमहूँ लेत सुनी हम बाता ॥ ॥
अस सुनि साहु उतरु तब दीन्हा ॥ बेचहु पुण्य जवन कछु कीन्हा
लिखि कागद पर तुला चढावो ॥ सो ची लिखो दर्बि जेहि पावो ॥
दश सहस्र मख की न्हो राई ॥ सो लिखि मानिक तुला उठाई ॥
पलरा दोऊ रहे समाना ॥ रती न चढा महीप खजाना ॥ ॥
बोला साहु और लिखि धरहू ॥ साँची लिखो झूठ परिहरहू ॥
सो० हेम गऊ गज बाजि । दीन्हो कन्या दान जो ॥
तुला चढायो राज । सोऊ सब बिरथा भयो ॥
चौ० जहँ लगि लोग रहे तेहि ठामा ॥ हिलू गुमास्ता चार गुलामा
सबन कही झूठे तुम अहहू ॥ राही करि सुख सम्पति चहहू

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो तुम करते दान रु धर्मा॥ कंचन चढ़त न कौने मर्मा॥ ॥
लखि रुख बोला साहु सुजाना॥ कौन समर्थ कीन्ह तुम दाना॥
वीरभद्र कह सुनिये साहू॥ जब हम थे सोरठ के नाहू॥ ॥
गज रथ तुरंग पालकी जाना॥ भृत्य मता वहु चमू रव जाना॥
तब यह दान दीन्ह हम भाई॥ तुम ते सांची कहा बुझाई॥ ॥
बोला वैटका चढ़े भुवाला॥ यह अधर्म कर धर्म तुह्मारा॥
लूटि बाँधि पर जै दुख दिहेऊ॥ बनितन कह बिन वस्तर किहेऊ॥
बछरा गाऊ वेद़िले आयो॥ हरि यर वृक्ष अनेक कटायो॥
आवा कोउ फिरियादी दीन्हों॥ लै धन सों वन्याव नहिं कीन्हों॥
सो धन आनि धर्म तुम दाना॥ ताते कौन पुराय पर माना॥
जब ते रङ्क भयो तुम राई॥ तब ते पुराय किहेउ कछु भाई॥

दो० कह्यो मही पति वचन अरु सुनिये साहु सुजान॥
भिक्षा करि भोजन मिलै का हम कीजै दान॥

कुराडलिया कीन्ह पयाना यहाँ को सुमिरि हृदय गरणराय। तेहि मग इक सर के निकट भौंरी चारि लगाय॥ भौंरी चारि लगाय अर्पि हरि ग्रास उठावा॥ तेहि समय मम निकट एक अभ्या गत आवा॥ क्षुधित देखि मै तासु काउ भै मधुकरी दीन्ह। रङ्क भयन तब ते सुनहु यही पुराय जग कीन्ह॥

चौ० सुनि मानिक लिखि तुला चढ़ायो॥ डाँड़ी गहि हि धरि हेम उठायो॥
तबहीं पला गरु है गयऊ॥ पुनि लै पुरट चढ़ावत भयऊ॥
ज्यों ज्यों कंचन आनि चढ़ावै॥ त्यों त्यों पला अधिक गरु वावै॥
जहँ लगि सुवरण साहु निकेता॥ द्वै भौंरी सम भया न तेता॥
बोला मानिक सुनहु नरेशा॥ अब नहिं हेम हमारे लेशा॥
तेहि ते जो कछु है सो इ लीजे॥ अपने नगर पयाना कीजे॥
सुनि नृप महिषा ऊंट मगायो॥ सकल कनक तिन माहि लदायो

लीन्हे सङ्ग सिपाही नाना ॥ जिन सोरठ कहँ कीन्ह पयाना ॥
पहुँचे दिन तिसरे घर आई ॥ लखि रानिहि भा सुख अधिकाई ॥
बहुरि सेन नृप साजि अनेका ॥ चतुरङ्गिनी एकते एका ॥

दो० दै डंका अरि भूप पर चढ़ा चमू लै जाय ॥
राम कृपा तेहि जीति कै लीन्हो राज छिनाय ॥

चौ० आइ निकेत महोत्सव कीन्हा ॥ विप्रन दान विविध विधि दीन्हा ॥
करन लाग पुनि राज भुवारा ॥ पालै प्रजा अनेक प्रकारा ॥ ॥
अधरम इमि होन नहिं पावै ॥ करै ताहि नृप दण्ड दिवावै ॥
लागेहु करन भक्ति युत रानी ॥ छाँड़ि अनीति कर्म मन बानी ॥
आवै साधु नगर मा कोई ॥ मिलै पुरः चलि भूपति सोई ॥
करि प्रनाम मन्दिर लै आवै ॥ पद पखारि निज सीस चढ़ावै ॥
षोड़श भाँति पूजि सनमानी ॥ मन जोगवत रहै भूपति रानी ॥
सुनै कथा हरि कीरति गावै ॥ तजि सत संग अनत नहिं जावै ॥
सेवक सचिव करैं पुर काजा ॥ विष्णु चरण सेवै नित राजा ॥
भवन बनाय सुवस्तु भराई ॥ मुदित देइ महि देवन राई ॥ ॥
सुमन बाटिका बाग लगाये ॥ वापी कूप तड़ाग खनाये ॥ ॥
करै जो धर्म कर्म सुभ जानी ॥ बासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी ॥
सहित नेम सुमिरै हरि नामा ॥ क्रोध न लोभ मोह मद कामा ॥
युक्ति सहित करि भोग बिलासा ॥ समय पाय तनु तजि अनयासा ॥

हरिगीतिका—अनयास निज बपु त्यागि सो हरि रूप कर-
आयुध धरे भुज चारि उर पट मुकुट कुण्डल तिलक शिर
माला गरे ॥ आरूढ़ सुभग बिवान लखि सुर सुमन बहु बर-
षायहू ॥ जप योग तप ते अगम सो पद भक्ति करि नृप पायहू ॥

दो० कह रघुनाथ अधर्म करि पुनि हरि सुमिरन कीन्ह ॥
करम बन्ध ते छोटि कै मोक्ष स्वरूपी लीन्ह ॥ + ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तजिकुकर्मसुभकेर्मकरिहौवैकमाय औकोय
ताहि लगावै धर्मसैं तपतें अधिकी होय॥

इतिश्रीविश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत वीरभद्र प्रसंग बर्णनोनाम षोडशोऽध्यायः१६॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥
महाभाग्यप्रद ग्रन्थको कहौं इतिहास बखानि॥

सो० सौनक सहित हुलास। पूछ्यो भेद धर्म के॥
कित उतपति कित नाश। कित स्थिति विस्तार कित॥

कुण्डलिया कह्यो संत सुनि धर्म के चारि चरण पहिचान। प्रथम सत्य पुनि दया है और तपस्या दान॥ और तपस्या दान सत्य ते उतपति सोई। दया तहां विस्तार क्षमा ते स्थिर होई॥ नाश होत है लोभ करि क्रोध ते हरी रह्यो कृतयुग चहूं पुनि तीनि फिरि दुइ कलि इक वेदन कह्यो॥

दो० सुनु सौनक जेहि भांति जिन धर्म किहि निज चारि।
लिखे पुराणन में कहौं तिन सें लेहु विचारि॥
भूप वंस करतु भुजबली महिमण्डल रिपु जीति॥
दीन्हों सुख गो द्विज प्रजन महित वेद की रीति॥

चौ० चन्द्रप्रभा रहै तिनकी बाला॥ जिन जाये हरिचन्द नृपाला॥ बरवा अति हरिचन्द किशानी॥ जासु सुयश त्रिभुवन में जानी॥ तासु तनय रोहिताश्व कुमारा॥ इन्द्रावती बधू सुकुमारा॥ करै राज्य हरिचन्द नरेसू॥ धन अधर्म कालेश न लेसू॥ तासु राज्य कोउ दुखीन रहई॥ चारोंबर्ण धर्म निज गहई॥ सब सुन्दर सब विरुज शरीरा॥ सब गुणज्ञ सब पण्डित धीरा॥ तेहि पुर राम भक्त नर नारी॥ संत सदा गम रुचि अधिकारी॥ निशदिन नृप प्रीति हरि चरणा॥ सुमिरन पूजन बन्दन करना॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो० बापी कूप तड़ाग। खनि बांधे मारग बिषे॥
लगवाये दह बान। धन बांधे हरि हर भवन॥

दो० बिटप फूल फल सहित गिरि प्रकट भई गलियान॥॥
कामधेनु भै भूमि जल कहे देहि घन आनि॥
धर्म बचन मन जो करै सो अरपै भगवान॥
भक्तिवंत भूपाल वर हरि तजि जानि नहिं आन॥

चौ० प्रति संब्बत सब माल खजाना॥ देइ लुटाइ न राखै दाना॥
नृप कीरति सब जग मा छाई॥ जहं तहं मुनि करैं बड़ाई॥
कहैं कि नृप हरिचन्द समाना॥ हैन अवर धरमज्ञ जहाना॥
सुनि कौशिक मुनि कहा रिसाई॥ अबहीं नृप सत देहुं डिगाई॥
तुरतै अवधपुरी चलि आयौ॥ कोलक कुनप बिशाल कमायौ॥
प्रबिसि बाटिका चौंड़न लागे॥ घुरघुरात खखार भागे॥
ते भूपति पहं जाय पुकारे॥ सुवर देत इक बाग उजारे॥
मुनि नरेश पठये भट भूरी॥ आये सब जहं कोल गरूरी॥

दो० करि उपाय हारे सकल कोल सो निकस्यो नाहिं॥
सुनि हरिचन्द तुरंग चढ़ि पहुं चे तेहि के पाहिं॥

चौ० भाग बराह टाप सुनि पावा॥ देखत ताहि भूपति रपटावा॥
कहुं लखि परत कबहुं दुरि जाई॥ सघन बिपिन इमि गयउ लेवाई॥
आगे बढ़ि मुनि युक्ति उपायो॥ एक पुत्री एक पुत्र बनायो॥
आपु भये पंडित तेहि बेरा॥ लागे करन ब्याह तिन केरा॥
अग्र बराह दीख नहिं जबहीं॥ आये नृप तिन के ढिग तबहीं॥
लखि क्षितिपति बोला द्विज सोई॥ यहि कन्या के है नहिं कोई॥
पायं पूजि या के नृप देहू॥ तुम धरमज्ञ जगत यश लेहू॥
कह हरिचन्द बिपिन के माहीं॥ है कछु प्रभु मेरे ढिग नाहीं॥
नगर माहिं जो चलते देवा॥ सब बिधि तेहि कर तिउं सेवा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बिप्र कहा कछु सगुन करीजै॥ गृह लेपाइ पुनि चहौ सो दीजै॥
है लगाम कुंजी तब तीरा॥ तेहि ते पद पूजो रण धीरा॥ ॥
तुरतै नृप पद पूजै लीन्हा॥ बिश्वामित्र स्वाल पुनि कीन्हा॥
मैं तुम्हार पंडित हौं राजा॥ मोको कछु दीजै महराजा॥ ॥
भूपति कहा माँगि द्विज लेहू॥ कनक तीनि मन राजन देहू॥
कह हरिचन्द दीन द्विजराई॥ चलहु भवन मन लेहु भराई॥
कन्या कुँवर सुत हे गयऊ॥ मुनि नृप संग अवध चलि भयऊ॥
राजा बाजि चढन तब लागा॥ छीनि लीन मुनि गहि कर बागा॥

दो॰ कह न्योंवे कन्या हि देइ कै पुनि नृप फेरे लेत॥
अस अधर्म नहिं चाहिये तन क बस्तु के हेत॥

चौ॰ अस कहि आपु भये असवारा॥ पौंइ पियादे चले भुवारा॥
पहुँचे नहीं अश्व के साथा॥ आगे बढि टेरै ऋषि नाथा॥ ॥
नृप सुकुमार बहुत श्रम पायौ॥ कछु दिन रहे अवधपुर आयौ॥
लखि नृप खुशी भये नर नारी॥ गये भूप निज भवन मँझारी॥
सुभग गलीचा एक बिछायौ॥ करि सनमान मुनिहिं बैठायौ॥
चरण पखारि बारि सुखदाई॥ भोजन कहँ पूछा मुनिराई॥
सुनि मुनि कहा हेम मम दीजै॥ पीछे अपर बात कछु कीजै॥
तब नृप कनक भराइ मँगावा॥ कहेउ लेहु मुनि बचन सुनावा॥
कुञ्जी दान दियौ मोहि राई॥ दर्बि सकल मोहि भीतर आई॥
जहँ लगि टाप घोड़ की बाजी॥ तहँ लगु भई हमारी राजी॥
मोरि दर्बि मोसे कहे लेहू॥ और कनक आनि के देहू॥ ॥
नाहिं त कहौ दीन नहिं राई॥ हम अपने आश्रम का जाई॥
कह नृप शिर काटै जो कोई॥ ऐसि बात हम ते नहिं होई॥

दो॰ सुनि सुत रानी भूप तिहुँ कह्यो शीश धरि साथ॥
मनु मनु सोन पर हमै बेचि लीजिये नाथ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० अस सुनि तिन्हैं लीन अगुवाई॥ बेचन हेत चले ऋषिराई
अबकानि प्रजा लै हम सिधाये॥ राजै मोल लेन बहु आये॥ ॥
बिश्वामित्र कह्यो तिन हेरी॥ प्रजा कि दर्बि है वै नृप केरी॥ ॥
आन देश नहँ बिकहु नरेशू॥ चले बनारस सहत कलेशू॥
आगे मुनि पाछे नृप रानी॥ नहि पाछे सुत रोहित जानी॥
मुनि दूसर द्विज देह बनाई॥ बैठ्यो पुरह कूप पर जाई॥ ॥
रानिहि देखि समीप बोलायो॥ पूछ्यो हाल सही पबतायो
बोल्यो बिप्र भूप मुनि लीजै॥ गाधि द्विज दूरि पान जल कीजै॥
कह नृप द्विजहि दिये बिन भाई॥ पियब न पाय प्राण बरु जाई

दो० अस कहि अब नृप चलि दियो रानी पहुँची आइ॥
कह्यो बिप्र जल पीजिये पेइ गये हैं राइ॥

चौ० रानिहु वैसे बचन सुनायो॥ पाछे पुत्र रोहित आयो॥
ब्राह्मण कहा पियउ सुत पानी॥ आगे पाइ गये नृप रानी॥
कुँवर कह्यो वे रहु बिचारे॥ कौड़िनि धर्म प्यास के मारे॥
हम तो द्विजहि दिहे बिन हेमा॥ घूँट वनहीं लार यह नेमा॥
अति धर्म भक्त हियेहम जाने॥ गाधि सुवन मन माहि लजाने
चलत कासी महँ आये॥ मुनि लै बीच हाट बैठाये॥ ॥
बिप्र एक रानिहि लै गयऊ॥ मनु भरि हेम देइ सो दयऊ॥
मालाकार कुँवर कह लीन्हा॥ फुलवारी मह डेरा दीन्हा॥
रानिहि लिहिसि डोम एक आई॥ पाइ पुरट चलि भे ऋषिराई
नृपतें कही सुपच असि बानी॥ भरा करो नादन महँ पानी॥
मुनि नृप नीर भरन तब लागे॥ कह मुनि भूप सत्य नहिं त्यागौ॥
जो जल भरे चले मुनि आवै॥ फोरे नाद पाप वहि जावै॥ ॥
देखि सुपच तिय तिन तेलरई॥ बैठ रहत कछु काम न करई॥
मुनि कह डोम भूप सुनु बाता॥ हम तुम बीच दईश जगत्राता॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बांधा बन्धन नृपति तो कियेऊ ॥ सरघट निकट बास तब दिहेऊ ॥
लैसव यहां जो आवे कोई ॥ दाण्ड लिहे बिन दाह न होई ॥ ॥
निशा आइ हमका धन देऊ ॥ भोजन मात्र तात तुम लेऊ ॥ ॥
दो॰ यहि विधि बसत मसान नृप बहुत दीन धन आइ ॥
सुखी डोम नायक परम हितकारी जन पाइ ॥
चौ॰ कछुक काल यहि विधि चलि गयऊ ॥ तब मुनि रूप सर्प को लयऊ ॥
हरिश्चन्द्र सुत हि डस्यो सो जाई ॥ दीन्हो ताहि रविहिं सों पाई ॥
रानी जबै खबर यह पाई ॥ रोदन करत कुँवर पहँ आई ॥ ॥ ॥
लै लहास गंगा के तीरा ॥ गै जेहि घाट रहत नृप धीरा ॥ ॥
नारि विलाप करत विधि नाना ॥ सुत सब देखि भूप दुख माना ॥
पुनि धरि धीर मही पति कहई ॥ ईश रजाय शीश पर अहई ॥
दुख सुख देह पाइ संग लागे ॥ मिलन बिछोह स्वप्न जिमि जागे ॥
जल अकाश क्षिति पावक बाता ॥ मिलै कौन पर पंच विधाता ॥
नश्वर रूप मोह बस शोचा ॥ परधन गठे करें दुख पोचा ॥ ॥
दो॰ प्रकट भयो तनु जानिये सो सोवत नव तीर ॥
जीवन नाशत नित्य है अस विचारि धरु धीर ॥
चौ॰ नट मर्कट गति देखि निहारी ॥ हरि आधीन सकल तनु धारी ॥
चाक कुलाल फिरत है तैसे ॥ अधः आधार लकरिया जैसे ॥
सब संसार काल कर भोगा ॥ आपुन देखत आनहि सोगा ॥
अस्थि मांस विष्टा तन छयऊ ॥ चमल पेटि स हायन भयऊ ॥
तेहि पर कहत न मोहिं सम आना ॥ कछु दिन गये रही नहिं मान्ना ॥
अल्प आयु वह कुरन उपाई ॥ मृत्यु सिर खड़ी न ताहि डराई ॥
बलि पसु पाइ घास जिमि चरई ॥ बूड़त आपु आन को धरई ॥
दो॰ जगत बिकट बन कुरंग मन माया जाल पसारि ॥
काल सिकारी छिन खबरि लीन अवानक मारि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ॰ दारुनारितन ममताडोरी॥ कर्मनचावत हैं चहुँ वोरी॥
दश इन्द्री सुर विज २ बोरा॥ खैंचत जहाँ तहाँ बरजोरा॥
मूसत पांच चोर करि दंगा॥ रहत हित्त हैं निशदिन संगा॥
जीव कुमाल कैसे कहि जाई॥ जिमि खेती हरवा है खाई॥
शोक समाज देखि सब परई॥ सुखी सो जो हरि पद मनु धरई॥
दुख कर मूल मोह हैं रानी॥ सो तजि सपदि मानु मम बानी॥
दंड घाट कर हम कहँ दीजै॥ पाछे पुत्र दाह निज कीजै॥
रानी कहा सुनौ नर पाला॥ तुम ते कछु छिपा नहिं हाला॥
कहो दर्वि कहँ बामि पाई॥ जो ले तुम्हें दीजिये आई॥
दो॰ कहनृप कर लीन्हें बिना हों नहिं दाहन देहुँ॥
स्वामी केर नि देश तजि नाहक अघ मम लेहु॥
सो॰ तेहि ते मैं अब जाय। पूँछो प्रभु ते हाल यह॥
जो षै देहि बताय सोइ करब पुनि आय कै॥
चौ॰ अस कहि हरिचन्द नगर सिधाये॥ गाधि सुवन मख जहँ आये॥
रानी ते अस बचन उचारा॥ बैठि लिहे कल मृतक कुमारा॥
रानी सकल हाल कहि दयेऊ॥ पुनि मुनि ऐसे बोलत भयऊ॥
जो दुर्वृत्त नहिं करी दिनेशा॥ तो तोहिं दहन न देइ नरेशा॥
तेहि ते मैं तोहिं देउँ बताई॥ भस्म सकल तन लेहु लगाई॥
बालक एक आकर्षि जो लीन्हा॥ सो रानी कहँ मुनिवर दीन्हा॥
कह्यो कि ले मठ बैठो जाई॥ मैं तुम्हार सुत देउँ जराई॥
सुनि रानी गै मंडप जबहीं॥ कौशिक मुनि पुर आये तबहीं॥
जहँ तहँ अस दीन्हों गोहराई॥ नगर तुम्हारे डाइनि आई॥
पूछि निकहाँ ह्वै मठ माहीं॥ यामें झूठ कहत हम नाहीं॥
गई अवधपुर तै सह मोदा॥ लीन्हे एक बालक सब गोदा॥
चौबंसा छं॰ सुनि सब धाये। तेहि दिग आये रूप निहारी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अति भै कारी। बालक चीन्हा॥ गहि कर लीन्हा॥ नृप पहँ ल्यायो॥
कहि समुझायो॥ भूप रिसाई। दीन्हि सिखाई। कहेउ कि धावो।
सुपचहि लावो। गरदन मारो। करो न बारो॥ हिंसक ल्यायो भल नहिं आयो॥

दो० गारुड़ धावन डोम गृह कह्यो हाल समुझाइ॥
तेहि पठवा हरिचन्द कहँ चलि आये तहँ राइ॥

चौ० राजा निज रानी पहँ आयो॥ तन को मोहन मन में आन्यो॥
कत्ता तुरत उठायो राई॥ मारों शीश बिलम्ब है जाई॥ ॥
आइ तबै हरि कर गहि लीन्हा॥ जयति शब्द देवन कीन्हा
धनि रानी धनि नृपति महाना॥ तज्यो न धर्म सह्यो दुख नाना
सुदिन सकल धरमज्ञ कहावें॥ कुदिन कसौटी परखि लिजावें
घन प्रहार बिन सोंचै हीरा॥ औरे किस कै काँच कर खीरा॥
अस्त्र शस्त्र जिमि सब कोइ बाँधै॥ सूर सोइ जो समर न काँधै
मुनि तें कह्यौ रिसाइ खरारी॥ तुमरे मद मत्सरता अति भारी
जपतप संयम करते भयऊ॥ आदि सुभाव नशायन नहिं गयऊ
अस धरमज्ञ नृपहि दुख दीन्ह्यो॥ याते कैसे लाभ का चीन्ह्यो
धर्म छोड़ावन इन कर आयो॥ कुकुन बहुत सुमेरु उडायो
तप कर तुम्हें बहुत अभिमानू॥ सो नहिं रही सत्य यह जानू
सुनि मुनि चरणा परे है दीना॥ प्रभु अपराध बहुत मैं कीन्हा
करहु मोहि सम जानि अज्ञानी॥ नृप पद परेहु कह्यो प्रभु बानी
सुनि मुनि गहे चरण तजि माना॥ लखि बिन नृप कौन सकुचि मन माना
तुरतै पुत्र दीन मँगवाई॥ जो अपने रबि कौ सौ पाई॥ ॥

दो० नृप हरिचंदहि जानि कै पुरवासी सब लोग॥
भूप सहित बिनती करी भये दरश बिधि योग॥

सो० बोले बिष्णु बिहारि। जो भावै सो माँगिये॥
कहे नृप दोउ कर जोरि। मोको कछु न चाहिये॥

चौ० रानी ते बूझउ सुरराई ॥ मांगौ जो कछु ताको भाई ॥
रमानाथ रानी ते भाषा ॥ मांगहु वर जो मन अभिलाषा ॥
रानी कहा नाथ सुनि लीजै ॥ प्रथमै भक्ति आपनी दीजै ॥ ॥
जहँ जहँ जन्म धरब हम जाई ॥ तहँ तहँ हरिचन्दै पति पाई ॥
पुनि मिलै रोहित सि समाना ॥ राजकाज धन धाम खजाना ॥
यहि बिधि मुनि सेयौ तहँ आई ॥ जाते नाथ दरश तव पाई ॥
यह वरदान देहु मोहिं स्वामी ॥ और न चहिये अन्तरयामी ॥
सुनि हरि सजल नयन होइ आयो ॥ प्रेम सहित निज हृदय लगायो
तुम समान त्रिय जासु अगारा ॥ कस न होइ तहँ धर्म अपारा ॥
चलहु अवध निज राज करीजै ॥ प्रजा अनाथ तिन्हें सुख दीजै
सुनि हरिचन्द अवध चलि आये ॥ पुरबासी लखि बहुत लुदाये
सिंहासन भूपति बैठारे ॥ जग निवास बैकुण्ठ पधारे ॥ ॥
बहुरि सकल संशै करि दूरी ॥ रानी सहित किहिनि सुख भूरी ॥
गीतिका छं० सुख भूरि करि नृप रानि पर जन बिबिध बिधि
पालन भये । तजि अन्त समय शरीर बिन पै सर्म हरि पुर का
गये ॥ यह कथा नृप हरिचन्द की तुम ते कही समुझाइ कै ।
अब और एक इतिहास भाखौं सुनहु मुनि मन लाइ कै ॥
सो० हंसध्वज नृप तासु । तनै सुधन्वा हरि भगत ॥
निज बपु दीन्ह्यो आसु संखलिखित खल द्विजन हित ॥
रन्तदेव नृप आन । बहु दिन मैं भोजन लहे ॥
बिप्र शूद्र शठ स्वान ॥ सन माने तब मिले हरि ॥
इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास
रामसनेही कृत हरिचन्द सुधन्वा रन्तदेव प्रसंग बर्णनो नाम सप्तदशो ध्याय १७ ॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौ भारत की कथा कछु दालभ्य बखानि ॥

सो॰ शौनक मन में गुण्य। पूछ्यो पद शिर नाइ कै ॥
जिव रक्षा कृत पुण्य। होत कहा सो बरनिये ॥ ॥

चौ॰ सुनि मुनि बचन बोले हर षाता ॥ नीक प्रश्न कीन्हेउ तुम ताता ॥
धर्म मूल जिव रक्षा जानौ ॥ सुनो तासु कृत पुण्य बखानौ ॥
जहँ लक सब तीरथ करि आवै ॥ गया माहिं तिल पिण्ड पराबै
गोग जहय पट मारिग कहेमा ॥ देहि विप्र कहँ करि निन नेमा ॥
यज्ञ सु सकल करै ब्रत दाना ॥ संयम नेम तपस्या ठाना ॥ ॥
ऐसे सब पुण्य जो तुला चढ़ावै ॥ जिव रक्षा सम सोउ न पावै ॥ ॥
राजा सिबि की कथा बखानौ ॥ जिव रक्षा तिन कीन्हो जानो ।
भूपति यज्ञ करत इक बारा ॥ रहैं तहाँ महि देव अपारा ॥ ॥
इंद्र अग्नि सिबि यज्ञ सुनि धाये ॥ लैन परीक्षा दोऊ सिधाये ॥
अग्नि कपोत वपुष तब कीन्हा ॥ बाज रूप बासव धरि लीन्हा ॥
भाज कपोत बाज रपटाया ॥ नृप जहँ यज्ञ करत तहँ आवा ॥

दो॰ बैठे सिबि लखि गोद में दुख्यो कपोत डेराय ॥
हेरि बाज बोलत भयो नृप ते बचन बनाय ॥
अहो भूपधर मज्ञ तुम महँ सुनी यह बात ॥
मोह कृपरा ता हे नहीं तन को तुम्हरे गात ॥

चौ॰ तै सब को पाले महि पाला ॥ सन्त असन्त कहा नर बाला ॥
जो गुरु देखि छिपावै जानी ॥ गुरु को सदा धरत उर आनी ॥
द्वार अतिथि जो कोई आवै ॥ तुम ते बिमुख जान नाहिं पावै ॥
अब जनि धर्म छाँड़ियो राई ॥ यथा नेर है अथगत जग छाई ॥
भोजन मोर कपोत रहायो ॥ ताको त्यों क्यों गोद छिपायो ॥
भूखो हौं बहु दिन को राई ॥ याको माहिं देहु पकराई ॥ ॥
राजा कहा सेन सुनि लीजै ॥ याकी आश छाँड़ि अब दीजै ॥
पक्षी डरपि मरन भय लीन्हा ॥ तजौं न याहि शरणागत कीन्हा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शरणागत आये जो त्यागै ॥ ब्रह्म हत्या ताके शिर लागै ॥

दो० लोभक्रोधवश परिहरै करै न रक्षा जासु ॥
सो नर पापी नीच खल मुख नहिं देखिय तासु ॥

चौ० मुख देखे सुकृत घटि जाई ॥ धर्मवान लखि सुख अधिकाई
तेहि ते यहि तजिहौं नहिं भाई ॥ शीसहु जो कोउ काटै आई ॥
बोला सेन सुनत असि वाता ॥ मैं तोहिं सुना रहै बड़ दाता ॥ ॥
धर्म टेक सो छांड़ि भुवाला ॥ लै अब अपश जीहौ कै काला ॥ ॥
दियै अहार होइ जिव रक्षा ॥ तजि हठ लेहु मानि सो शिक्षा ॥
किये अहार भरा धिर रहई ॥ नाहित मनु तजि मारग गहई ॥
मोरे मुये बहुत कर नाशा ॥ जननि जनक सुत नारि विनाशा ॥
एक जीव कीर रक्षा करहू ॥ बहुतेन को शिर हत्या धरहू ॥ ॥
बिन विवेक धरमहु करकोई ॥ पाछे तेहि पछितावक होई ॥
क सेन की गति भाखी साई ॥ धुराय कारन पातक है जाई ॥ ॥
तेहि ते नृपति मानि अब लीजै ॥ मोर अहार होइ मोहिं दीजै ॥

सो० कहसि विसुनहु सिचान ॥ शरणागत रक्षा करै ॥
यहि सम धर्म न आन ॥ सो मैं निज हिरदै धरयौ ॥

दो० सोइ पण्डित धर्मज्ञ सोइ सति बादी मतिधीर ॥
शीलवन्त ज्ञानीश जो हरै पराई पीर ॥ ॥

चौ० मोहिं इच्छा कछु स्वर्ग कि नाहीं ॥ नहिं बैकुण्ठ जान के माहीं
मुक्ति भुक्ति की चाह न कर हूं ॥ नर्क परन को मैं नहिं डर हूं ॥ ॥
इक अभिलाष यहै मनमाहीं ॥ आवै शरण जो तेहि नाहीं
जो मोपर प्रसन्न भगवाना ॥ देहि टेक हिय अहीन आना ॥
तन धन धाम वाम सुत जावै ॥ तजौं न ताहि शरण जो आवै ॥
मोहि कपोत परम प्रिय भाई ॥ ताको कहौं न त्याकिमि जाई ॥
और चहौ सो लीजै मांगी ॥ सुनि सचान बोला भै त्यागी ॥

भूमि धाम धन अन्न अपारा ॥ लिहे सरी नहिं काज हमारा ॥
मम भक्षण पक्षी है येह ॥ सो नहिं देउ तो अब सुनि लेहू ॥
आपन मांस खवावो मोहीं ॥ दयावन्त तब जानौं तोहीं ॥
तुला चढ़ाइ कपोत नहि दीजै ॥ तेहि सम धरहु देर मन कीजै ॥
कुण्डलिया सुनि सिवि मन हरषत भयो कह्यो धन्य मम भाग। असद अस्वच्छ शरीर यह पर स्वारथ में लाग ॥
पर स्वारथ में लाग धन्य जननी जिन जायो। दीन्ह्यौं जो नर जाय कहौ केहि कामैं आयो ॥ हरि सुमिरण अरु कर्म शुभ सधै पाइ नर देह पुनि। जीवन ताही को सफल बोल्यो बहुरि सुजान सुनि ॥
चौ॰ तथा करै कत बात भुवारा ॥ सुधिल जान है प्रान हमारा ॥
राजा तुरत तुला मँगवायो ॥ पलरा पर कपोत बैठायो ॥ ॥
दूजे पला मांस निज धरऊ ॥ आपन गरु कपोतै करऊ ॥ ॥
तब राजा फिरि काटि चढ़ावा ॥ विहँग पला नहिं सम सरि आवा
काटि २ कै थोर डाल्यौ ॥ उठ्यो न भूल नेकु निहाल्यौ ॥ ॥
चढ़ि बैठ्यो नृप तब हर षाई ॥ देखि अग्नि हरि रहे लजाई ॥
सुर देखें नभ चढ़े बिमाना ॥ कहैं कि अस अरण कहुँ न ठाना ॥
जय जय धन्य २ नृप करहीं ॥ सुमन बरषि निज २ पुर फिरहीं

दो॰ अग्नि पुरन्दर प्रगट नजि प्रकट्यो आपन रूप ॥
है प्रसन्न बोलत [illegible] धन्य धन्य तुम भूप ॥
विश्व माहिं तुम सम नृपति है नहिं कोइ और ॥
प्रण कीन्हो भल होइ है लेखे यश सब ठौर ॥
मेघ नदी जल भूमि द्रुम सन्त जन्म जो लेत ॥
केवल विधि परगट कियें पर [illegible]रथ के हेत ॥

चौ॰ तुम समान राजा जे आहीं ॥ [illegible] जग [illegible] माहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इत नैनकी जो निंदा करहीं ॥ रौरौ नर्क माहिं सो परहीं ॥ ॥
तेरे तन की जाय बुढ़ाई ॥ होइ नवीन सुभग सुखदाई ॥ ॥
हम शठ हठ बस कुकरम कीन्हा ॥ नाहक आय तुम्हें दुख दीन्हा
सो अपराध क्षमा करि दाया ॥ अस कहि सुरपति स्वर्ग सिधाया
यक्ष जबै सुरधाम्हि गयऊ ॥ तब भूपति मन हरषत भयऊ ॥ ॥
गयो बिमान लायि हरषाई ॥ बिष्णु लोक तहं राखिन जाई ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै ॥ यम किंकर तेहि नाहिं सतावै ॥
सिबि की कथा कही जो जानी ॥ और सुनौ एक कहौं बखानी
केकी नगर रहै एक साहू ॥ बुद्धिवान घर द्रबि अथाहू ॥ ॥
देवदत्त अस ताकर नामा ॥ सुजसा नाम जासु की बामा ॥
एक बार पति पद शिर नाई ॥ बोली मधुर बचन सुखदाई ॥
सुनहुं नाथ निगमागम गावै ॥ नर तन बड़ भाग ते पावै ॥ ॥
तेहि लहि जो हरि भजन न करहीं ॥ जगत भार शिर ऊपर धरहीं
सो याके पछितात अभागी ॥ जिमि नग बाल अमोलिक त्यागी
तातें पति हरि भक्तिहि कीजे ॥ नर तन पाइ सफल करि लीजे
धन ते धर्म करहु मन लाई ॥ आखिर अन्त सङ्ग नहिं जाई
ऐसे बचन नारि जब कहेऊ ॥ सुनि सुचि साहु परम सुख लहेऊ

दो॰ धर्म करन लागे ललकि तन मन धन ते दोउ ॥
जो मांगे तेहि देइ सोइ बिमुख न जावै कोउ ॥

चौ॰ नौधा भक्ति करै नित नेमा ॥ विप्र बैष्णो पद अति प्रेमा ॥
यहि भांतिन बहु दिवस बिताये ॥ लेन परीक्षा धर्म सिधाये ॥
रूप अघोरी का धरि लीन्हा ॥ साहु द्वार ख्याल आ कीन्हा ॥
देखि बयस भीतर लै गयऊ ॥ मुदित मनोरथ पूरण भयऊ
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी ॥ मोको आजु क्षुधा बहु लागी
पुत्र तुम्हार वर्ष पट केरा ॥ तेहि आमिष मन चाहत मेरा ॥

दोउप्रानी मिलि सुतबधकीजै॥ छोभनतनकौ मनमें लीजै॥
निज निजकरमें हि देउ रववाई॥ नाहिं सकै सो अन्ते जाई॥॥
सुनतसाह साहुनि अस बैना॥ खेलत सुतबोलायो ऐना॥
मारन लगे दोऊ मिलि जबहीं॥ बालक बचन कहत भा तबहीं
मारु न मातु घैर महँ रैहों॥ अब हौं दूरि न खेलन जैहों॥॥
सो० अहो सुवन तव कर्म। होत जो खेलन को लिखा॥
तौ कत लेत्यो जन्म। आइ हमारे जठर महँ॥
चौ० अस कहि घात कीन हरषाई॥ बेटी रबिलग बनाई॥॥
कह्यो अघेरी सौं प्रभु लीजै॥ देर भई यहि भोजन कीजै॥॥
सुनि तेहि कहा कि मैं नहिं खैहौं॥ इतने में तन को न अघैहौं॥
निज आमिष दीजे थोरा॥ जेहि ते जाइ उदर भरि मोरा॥
खपल जबै काटन कहँ कीन्हा॥ तुरते धर्म हाथ गहि लीन्हा
खुशहै आपन वपु प्रगटायो॥ देवदत्त सो बचन सुनायो॥
अहो साह सुतु मैं हौं धर्मा॥ आयों लेन तुमारो परमा॥॥
धन्य २ तुम धनि हौ ताता॥ धर्म हेत सुत कीन्हों घाता॥॥
तुम्हरी पुराय घटी नहिं भाई॥ दिन २ अधिक २ अधिकाई॥
बिशुलोक बसिहौ तिहुं प्रानी॥ जन्म मरन की होई हानी
पुत्र तुम्हार बालकन माहीं॥ खेलत है वै अमिथ्या नाहीं॥॥
सुनि एक सेवक साह पठायो॥ तेहिं के संग कुँवर चलि आयो
देखि मातु पितु हरषित भयऊ। हृदय लगाय माइ भरि लयऊ
दो० भये बिदा तब धर्म करि देवदत्त सनमान॥
हरि पुर ते आवत भयो ताही समय बिमान॥
गीतिका छं० आयो बिमान निकेत निर्मल रतन सागर म-
रा मयो। लयो धाय गरान चढाय तिनको बिशुपुर बासा द-
यो॥ लखि देव जय २ जय लि कहि कहि सुमन बहु बरषायहू।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रघुनाथ गुरु पद माथ धरि यह कथा सक्षम गायहू ॥

दो॰ धन्य पुत्र हरि भक्त जो धन्य पतिव्रत नारि ॥
जासों घर मारग बसै धन्य सो देखि निहारि ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत सिविवादेव दत्त प्रसङ्ग बरनानो नाम अष्टादशो ऽध्याय: १८ ॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणों भारथ ग्रन्थ की पुनि इतिहास बखानि ॥
अग्नि देव कर पुत्र एक तासु सुदर्शन नाम ॥
धर्मवान गोजीत वर क्षमा शील तप धाम ॥
ओघवान नृप निज सुता दीन्ही द्विजै बिवाहि ॥
दोउ प्राणी मिलि बसे कुरुक्षेत्र महँ जाहि ॥

चौ॰ निश दिन धर्म सुदर्शन भावै ॥ अतिथ द्वार ते विमुख न जावै ॥
मन क्रम करै साधु की सेवा । सन्तै स्वामी सन्तै देवा ॥ ॥
यहि बिधि कछुक काल चलि गयऊ ॥ इक दिन द्विज मन शोचत भयऊ ॥
साधुन में नाहिं प्रिय को भावा ॥ अरध अंग तेहि वेद बतावा ॥
मैं न होउँ गृह हरिजन आवै । बनिता ते सनमान न पावै ॥ ॥
तो मम धर्म होइ सब नासा ॥ जो आदर नहिं पावहि दासा ॥
नारि पुरुष दोउ एक मत होई ॥ तेहि कर धर्म डिगै नहिं कोई ॥

दो॰ अस बिचारि निज बधू ते बोल्यो विप्र सुजान ॥
सन्त सेव हिरदे धरो जाते होय कल्यान ॥ ॥
सन्त सेव हरि सेव से शत गुण अधिक की जानि ॥
निज मुख प्रभु बरणन कियो धर्मोत्तर में मानि ॥
पुरह धरत नैवेद्य तेहि शुद्ध करौं मैं देखि ॥ ।
स्वाद लेत मुख दास के कहहु हरि बिसिलेषि ॥
सर्वाराधन में परे हरि अवराधन आहि ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जनसेवा तेहिते अधिक कह शिव आगम माहिं॥
गोबिन्द पद पूजन करैं सन्तहि सेवै नाहिं ॥
ते नहिं प्रीतम विष्णु कहं दंभिक भाजन आहिं॥
आवैं बैरागी जासु घर पावैं नहिं सनमान ॥
नशै पुण्य सो जन्म को कहैं अस स्कंध पुराण॥
यमन क्षेत्र निश्चै तहां जहां न संत स्थान ॥ ॥
बसैं जहां हरि क्षेत्र सो बद बाराह पुरान ॥ ॥
साधु भजे भजि जात हरि जिमि शिशु गर्भ मँझार॥
बिन जननी तोषै नहीं इमि कह ग्रन्थन सार॥
श्रद्धायुत हरिभक्त कहँ अन्न खवावै कोइ॥
सोई सोम परवल सरिस दिन दिन अधकी होइ॥
साधु सेव कीन्हीं नहीं जिन नर तन को पाय ॥
ते नर पशु ते अधिक हैं पेट भरन को चाय ॥
पचि २ मरयौ कुटुम्ब हित परमारथ नहिं कीन॥
धृग २ ताकी बुद्धि को तजि अमृत विष पीन॥
चौ०- तातें सुनु रिषिमानु मम बाला॥ जातें मारि तारि कुल लाला
तन मन धन संतन कह दीजै॥ है आधीन चरणोदक लीजै॥
गृहस्थाश्रम को धर्म है याही॥ हरिजन आइ बिमुख नहिं जाही
जो कछु संत कहैं सो कीजै॥ सुखप्रद बचन मानि मन लीजै॥
जो त्रिय कहा करै पति केरा॥ सो पावै सति लोक बसेरा॥ ॥
सुनि पति बचन नारि सुख पाई॥ बोली बचन कपट नहिं राई
अहो नाथ मोहिं धर्म दिढ़ायो॥ सुनि तव बचन मोहिं अति भायो
तन मन धन करि संतहि पोषिहौं॥ हे पति परण तुम्हारो रखिहौं
पतनी सो जो आनी सम्हारै॥ बिमुख करै सो शठ नि[illegible]रै॥ ॥
पतिनी सो जो त्रिय की पति राखै॥ निज पति बिन तेहिं को पति भावै

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे वचन कहे जब नारी॥ सुनत विप्र उरभा सुख भारी॥ ॥

दो० दोउ धर्म लागे करन तन धन सो तजि नेह॥
विविधि भाँति सेवा करैं सन्त जो आवैं गेह॥
यहि भाँतिन बहु काल गे रह्यौ सुयश जग छाय॥
मृत्यु हु वारे आइ कै मुह मुहर फिरि जाय॥ ॥

चौ० कबहुँ धर्म घटती नहिं होई॥ ताते मारि सके नहिं सोई॥
एक दिन सुनो सुदर्शन कानन॥ गये रहैं तहँ समधी आनन॥
धर्म परीक्षा लेन सिधाये॥ भेषवेषी को रब नाये॥ ॥ ॥
जहँ द्विज भवन तहाँ चलि गयऊ॥ बोधवती ते बोलत भयऊ
हे धरमज्ञ सुना मैं तोही॥ मनमथ आजु सतावत मोहीं॥
तेहि ते अपने तन का दीजे॥ जेहि ते अङ्ग सङ्ग करि लीजे॥
सुनि कर जोरि कह्यौ दिज बामा॥ लीजे असन बसन बहु दामा
ऐसी बात न कह्यौ गोसाईं॥ बोले धर्म और कछु नाहीं॥ ॥
केवल चही शरीर तुम्हारा॥ जासों लागो चित्त हमारा॥ ॥
जो न देहु तो मारग लीजे॥ द्वैमा एक बात कहि दीजे॥ ॥
सुनि अस बचन नारि शिर नाई॥ मन में शोच कीन अधिकाई
नाटो तो प्रण कीन सो जाई॥ सङ्ग करों पतिव्रत नसाई॥ ॥

दो० शोचत ही श्रुति के बचन हृै आये तब आदि॥
पति आज्ञा त्रिय करै तो पतिव्रत जाइ न वादि॥

चौ० तब हरिजन ते बोली नारी॥ किरपा हम पर कीनि मुरारी॥
यह तन धन सब तुम्हरे स्वामी॥ हम सेवक सब विधि अनुगामी
सुनि हरि कुटी कपाट लगायो॥ ताही समय सुदर्शन आयौ॥
साङ्ग सुनत त्रिय सकुचि न बोली॥ दीन्हो भेद प्रति यत तब खोली
मोर मनोरथ पुरवत नारी॥ खड़े रहो तले द्वार मँझारी॥ ॥
सुनत सुदर्शन अति सुख पावा॥ धन्य रबदि बचन सुनावा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

धन्य पिया तव पितु अरु माई ॥ पूज्यौ सन्त हि हेत बड़ाई ॥
आखिर तनु नहिं रहत तुम्हारा ॥ है जातो कृमि विष्ठा क्षारा ॥
सो वपु वैष्णो हेत लगायो ॥ राख्यौ धर्म मोहिं अति भायो ॥
अहो सन्त मन निहचल होई ॥ मति शङ्का मान्यो तुम कोई ॥
धाम वाम तन धन जो हेरो ॥ सो सब जानो साधुन केरो ॥ ॥
मैं सब विधि सन्तन को दासा ॥ और न मेरे आन उपासा ॥ ॥
पुण्य हमारि उदै भै आजू ॥ जो घर सरयो तुम्हारो काजू ॥
वचन सुदर्शन के सुनि प्यारे ॥ धर्म निकरि आये तव द्वारे ॥
धन्य तुम धनि तव वाला ॥ प्रण आपन कीन्हो प्रतिपाला ॥

दो॰ अहो सन्त मैं धर्म हौं यह पतिव्रता नारि ॥
लेन परीक्षा आयऊँ नहिं कछु दोष विचारि ॥
तुम सम पुण्य सलोक नहिं तीनि लोक महँ कोइ ॥
जस कीन्ह्यौ तस जगत में काहू तें नहिं होइ ॥
देव दनुज नर नाग मुनि गणिका तजि जग माहिं ॥
नारि दोष को देखि के रोष करै को नाहिं ॥

चौ॰ तुम्हरे क्रोध भयो नहिं राई ॥ ऊपर तें बहु कियो बड़ाई ॥
नहिं कुपणता मान न मोहा ॥ सम चित इन्द्री जीतन कोहा ॥
विष्णुलोक तहँ वसिहो जाई ॥ आजु इ लेन विमान जो आई ॥
अर्द्ध क्षीतव आधे अङ्गा ॥ सदा रही सो तुम्हरे सङ्गा ॥ ॥
अर्द्ध अङ्ग तें सरिता होई ॥ बोधवती कहवाई सोई ॥ ॥
जो कोइ मज्जौ याहि मँझारा ॥ तासु पाप सब ह्वैहै छारा ॥
अस कहि धर्म भे अन्तरध्याना ॥ गण ले आये सुभग विमाना ॥
घोड़ा सहस लगे तेहि माहीं ॥ पवन समान उड़त जे जाहीं ॥
पति पत्नी तेहि माहिं चढ़ायो ॥ लखि सुर हर्षि सुमन बरसायो ॥
अपने पुण्य प्रताप ते दोऊ ॥ गे हरिपुर जानै सब कोऊ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० द्वारे मृत्यु बैठी रहै मत्त देखन के काज ॥
प्राण छूटे तो मार हूं ज्यों तीतर को बाज ॥
सो० प्राण जब छूट्यो नाहिं। चली तुरत खिसियाइके ॥
जाति तिन मृत्यु घर माहिं। हे मुनि पुराय प्रताप ने ॥
पढ़ै सुनै नर कोइ यह इतिहास जो नित्त प्रति ॥
मृत्यु अकाल न होइ। भाषत भीषम पर्व हुमि ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत सुदर्शन कथा वर्णनो नाम उनविंशो ऽध्यायः १९ ॥ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं भारथ ग्रंथ की पुनि इतिहास बखानि ॥
चौ० अब मुनीमें करौं प्रकाशा ॥ बहुलागऊ कर इतिहासा ॥ ॥
चंद्रावती पुरी एक अहई ॥ चन्द्रसेन राजा तहँ रहई ॥ ॥
द्विज हरि भक्त बसै तेहि ग्रामा ॥ बहुलागऊ तासु के धामा ॥ ॥
उज्ज्वल अङ्ग हंस की नाहीं ॥ विचरै सदा अभै बन माहीं ॥ ॥
रोहत गिरि यमुना तट एका ॥ गुफन माहिं रहै जीव अनेका ॥
वृक्ष सघन बेली उरझानी ॥ चारों तरफ भरा तेहि पानी ॥ ॥
एक दिन बहुला सङ्ग विहाई ॥ चरत चरत परवत पर आई ॥
सिंह एक निकसा अति भारी ॥ बड़े रदन बदन भयकारी ॥
बहुले देखि सामने धावा ॥ निकट जाइ अस बचन सुनावा
जीवन कठिन जानु निज गाई ॥ लेहौं तोहिं आजु मैं खाई ॥
जो आवै इहि बन के माहीं ॥ मोसे सो उबरत है नाहीं ॥ ॥
सुनि हरि बचन गऊ बिलखानी ॥ बछरा छोट आपनो जानी ॥
केहरि कह रोवै केहि काजू ॥ बचिहौ नहिं हमते तुम आजू ॥
कह बहुला सुनु केहरि भाई ॥ आपन शोच मोहिं नहिं राई ॥ ॥
जो उपजै सो निश्चय नाशै ॥ जो नाशै सो पुनः प्रकाशै ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रीति पुत्रकी हृदयमें गाढ़ी ॥ तेहिते मोह अग्नि मोहिं वाढ़ी
प्रथम पुत्र जावा मैं याही ॥ पियत अमै पयतृण नहिं खाही
सो० बच्छे क्षीर पियाइ । फिरि मैं दुहने आइहौं ॥
तबतुम लीन्हौं खाइ । सुनि बोल्यो मृगराज हँसि ॥
दो० जो कोउ सूली चढ़त पर लगन लिखावै धाय ॥
तैसे तैं मृत्यु भूलिकै बछरा के ढिग जाय ॥
चौ० मेरे फन्द आइ जो परेऊ ॥ सो जानौ जग जन्म न धरेऊ ॥
तैं वाहँ निजपुर को जाना ॥ मोहि बनाये निपट दिवाना ॥ ॥
घर मैं जाय पुत्र को थैहौं ॥ प्राण देन फिरि काहे कऐहौं ॥ ॥
तातें हौं नहिं देहौं जाई ॥ सुनि बहुला बोली अकुलाई ॥
विप्र गऊ पितु मातै मारै ॥ बनिता बालक गुरु संहारै ॥ ॥
कन्या व्याहि और को देवै ॥ दोउ जनन ते पैसा लेवै ॥ ॥
साधुन की निन्दा मुख गावै ॥ हरि हर तजि जो आनहिं ध्यावै
इनकर मनका पाप जो जागे ॥ नहिं आवौं तो मम शिर लागे
झूठी साखि सभा महँ बोलै ॥ अतिथ निराश वास ते डोलै ॥
तुला चढ़ाइ घाटि फिरि देवै ॥ मापिन मैं पुनि पौन हि लेवै ॥
कथा होत जो दुन्दि मचावै ॥ विघ्न करै होन नहिं पावै ॥ ॥
चोरी ज्वारी रत परनारी ॥ हरि हिंसक मद मास अहारी ॥ ॥
येनेकर्म किहे जो पापू ॥ नहिं आवौं तो मम शिर थापू ॥ ॥
दो० हरि बिमुखन ते मित्रता रामजनन ते रोष ॥
जो नहिं आवौं तौ पंरै मेरे शिर यह दोष ॥
चौ० मात पिते जे सेवै नाहीं ॥ भली वस्तु मैं छिपिकै खाहीं ॥
दे विश्वास दगा करि जावैं ॥ साधु गुरू में दोष लगावैं ॥ ॥
हरि हरिजन गुण कहै न सुनई ॥ पर अपकार लागि शिर धुनई
औरौ पापकर्म जो होहीं ॥ नहिं आवौं तौ लागै मोहीं ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनत सिंह बोला हे माई ॥ सपथ तोर मोरे मन भाई ॥ ॥
हमरे मन विश्वास तिहारा ॥ जिन चाहो तित वेगि सिधारा
आवो आतुर छीर पियाई ॥ अस जनि जानो हमरो बनाई
दो० अहो सिंह लघ ठगन की समरथ काको आहि ॥
ठग चहे जो और को सोई सठ ठगि जाहि ॥ ॥
चौ० अस कहि आसु हरि को पाई ॥ हुँकरत बहुला तुरत सिधाई
पहुँची जब बछरा के तीरा ॥ बाल विलोकि गई सब पीरा ॥ ॥
अंगज जननि देखि ढिग आवा ॥ चूमि चाटि मा दूध पियावा
चित उदास अम्बा करि जानी ॥ बोला बरख अस गहे बानी ॥
मातु बिकल देखों मैं तोही ॥ कारण कौन बताओ मोही ॥ ॥
बहुला कहा पियहु सुत छीरा ॥ जेहि कारण आऊं लघ तीरा
आजु निहारि लेहु मोहिं बेटा ॥ काल्हि ते नहिं होइ पुनि भेटा
बन में हरि बसै कहि खैहौं ॥ सोहि दे आइउं फिरि जैहौं ॥
बोला बरख जाउं मैं माई ॥ तेरे बदले मोहिं हरि खाई ॥ ॥
धर्मवान माता तें आही ॥ तव सेवा मोहिं करनो चाही ॥ ॥
जाते मम होवै उद्धारा ॥ सुनि बहुला अस बचन उचारा ॥
दो० हे सुत आई मृत्यु मम तेरी आई नाहिं ॥
मेरी बदि तू कौन विधि जैहे हरि मुख माहिं ॥
सो० सुनु सुत मम उपदेश । नदी जानि लघ पर रहु धरु ॥
सरि सुशस्य अकुलेश । हूनबिरदा सन कीजियो ॥
चौ० अस कहि चलि गो वन ढिग आई ॥ देखि मिली सुरभी सब धाई
पूछन लगी कुशल कित रहेऊ ॥ गिरि पर गइ तु सिंह तहं गहेऊ
खाये लेत रहे मृग राजा ॥ सोंह देइ आइ तु सुत काजा ॥ ॥
सब सों विनय करों कर जोरे ॥ क्षमा कीजिये औगुन मोरे ॥
हौं अब जात सिंह के पासा ॥ सुनत सखी सब भई उदासा ॥

बोलीबिलरव भारूय अस कहई ॥ भूठे कहि यश्राशा जो गहई ॥
तेहिंन बहुला लनु समतिजानो ॥ घर बैठो निज प्राण बचावो ॥
बहुला कहा सखी सुनि लेहू ॥ अस उपदेश हमें मति देहू ॥
आपन प्राण बचन के हेता ॥ भूठ कहै तेहि जानो प्रेता ॥ ॥
परके प्राण भूठ कहि बांचे ॥ भूठ नहीं सो जानहु सांचे ॥ ॥
जाकी मृत्यु मरै नर सोई ॥ आपु अकेलो संग न कोई ॥ ॥
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं ॥ पाप न भूठ सरिस जग माहीं ॥
शिव ते भूठ कह्यो चतुरानन ॥ जग महं पूज्य नहीं तेहि कारन
सियते भूठ नदी गो कहेऊ ॥ भक्ष्य अभक्ष्य गुप्त है वहेऊ ॥
हरि स्तुति निन्दा भूठ बखानी ॥ भये वाधे तेइ पातक जानी
उमा शंभु ते भूठ उचारा ॥ तेहि कारण दुख लह्यो अपारा ॥
नरवा कुञ्जर धर्म बखाना ॥ तेहि अघ भये अंगुष्ठ परवाना
तेहिं से सत्य तजब हम नाहीं ॥ अस कहि चली केशरी पाहीं ॥
नमस्कार सब गोवन कीन्हा ॥ सत्य हेत जीवत तनु दीन्हा ॥
चलत बहुला तहं आई ॥ बैठो रहे जहां मृगराई ॥ ॥
बोलत भई सिंह मोहिं खावो ॥ हौं आई निज क्षुधा मिटावो
देखि व्याघ्र कह बैठो माई ॥ अब न खाब तोहिं चहैं मरि जाई
सतिबादी कहुं दुख को पावै ॥ तिमिर कतहुं दिन मणिहि मिटावै
कीन्हो सत्य जौन कछु कहेऊ ॥ तव आवन मोहिं अचरज भयऊ

दो० सत्य माहिं सब लोक है सत्य माहिं सब धर्म
ज्ञान मुक्ति है सत्य मैं सत्य माहिं शुभ कर्म ॥
धन्य धाम तव धन्य पुर धन्य बसत तृण जौन ॥
धन्य धरणि जहँ पग धरो धनि किसान है तौन ॥

चौ० धनि तव क्षीर धन्य जिन पीन्हा ॥ धन्य तुम्हार दरस जेहि कीन्हा
मैं निज भाग धन्य करि चीन्हों ॥ जब तेंदरस आपु मोंहि कीन्हों

अब बहुला सो दीजे मानू ॥ जेहि ते होय मोर कल्यानू ॥
बहुला कहा सिंह सुनि लेहू ॥ हिंसा करन छाड़ि अब देहू ॥
हरि सुमिरण में तन मन दीजे ॥ यह उपदेश मानि मम लीजे
को तुम हो सो कहहु बखानी ॥ सुनि कराठीरव बोला बानी ॥
हे स्वामिनि मैं हौं गंधर्वा ॥ विद्यारूप केर उरगर्वा ॥ ॥
देन आप दापी तनु पायौं ॥ यहि तन ते बहु पाप कमायौं ॥
तुमरे दरश भये अघ नाशा ॥ छूटो आप हृदय पर काशा ॥
मैं प्रसन्न हौं तुम घर जाई ॥ मम अपराध छिमियो धेनु माई ॥
अस कहि हरि सुमिरन में लागेयो ॥ भोजन नीर देह सुख त्यागेयो
कछु दिन में तनु छूटत भयऊ ॥ चढ़ि विमान सुर पुर कहँ गयऊ
बहुला जब आई निज धामा ॥ पुत्र सहित तब पायो बिश्रामा ॥
सत्य वृत्ति सब हित उर धारी ॥ बत्स सहित भये धेनु सुखारी
हरि प्रीति को सुख सायर हि कछु काल चलत विमान लेन
जो आयहू । नृप सहित पुर नरि नारि द्रुम पशु आदि सब नि
चढ़ा यहू ॥ लै उड़े गगन लखि देव बरषे सुमन घन जय जय
कियो । गयो लांघि सातों स्वर्ग पर गोलोक में बासा लियो ॥

दो० बहुला हरि सम्वाद नित कहै सुनै जो कोइ ॥
रहै सदा आनन्द में मृत्यु अकाल न होइ ॥

छप्पै धाम माहिं जो पढ़ै सुःख बालक को होई । गऊ सरि
क जो पढ़ै वृद्धि गोवन की सोई ॥ दुखी होइ सो पढ़ै नहीं तौ
श्रवण करई । होइ सकल दुख नाश और तन रोगे हरई ॥
बहु तमहातम भाघ में कहौं कछुक में गाय के । मुक्ति चहै
रघुनाथ भजु राम नाम मनु लाइ के ॥

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुना
थ दास राम सनेही कृत सुदर्शन बहुला कथा वर्णनो नाम

विंशोऽध्यायः २०॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं जो निन की कथा कछु अस कंद बखानि॥

सो० मोरध्वज नृप एक। धर्म धुरंधर नीतिरत॥
रामभक्ति को टेक बधु पिङ्गला पतिब्रता॥

चौ० तासु राज कोइ दुखी न रहई॥ धन अरु धर्म करत भूपन लहई॥
बाल बृद्ध यौवन नर नारी॥ बसैं जौन तेहि नगर मंझारी॥ ॥
सब मिलि करैं भक्ति हरि केरी॥ नृपरानी उर प्रीति घनेरी॥ ॥
माला तिलक सहित जो आवै॥ सुनतै नृप आगे उठि धावै॥
भवन लायके चरण पखारै॥ चरणोदक सोइ मुखमें डारै॥

दो० गंग न्हाइ सहस्र अठ तीरथ बलि भत जान॥ ॥
सन्त चरण जल जो पियै तुलैन तेहि सम आन॥

सो० सिंहासन बैठाय। षोडश विधि पूजन करै॥ ॥
नित नव नेह बढ़ाय। सेवै नृप सुत नारि युत॥

चौ० जेहि दिन सन्तन कोई आवै॥ तेहि दिन प्राशुन भोजन पावै॥
चोर सात मिलि कीन्ह बिचारा॥ हरि जन के आधीन भुवारा॥
साधुन केर भेष धरि लेहू॥ सब चलि है मोरध्वज गेहू॥ ॥
नृपते प्रथमै सेवक राई॥ घात पाय मूसब धन भाई॥ ॥
अस कहि सुन्दर भेष बनायो॥ सानौं हरि राजा गृह आयो॥
देखि दण्डवत कीन्ह महीपा॥ मानौ लह्यो स्वाति जल सीपा॥
पद पखारि आसन बैठार्‌यो॥ धूप दीप आरती उतार्‌यो॥
अंतह पुर में आसन दीन्हो॥ सुत बनिता सब सेवा कीन्हो॥
एक दिवस राजा मन आई॥ बन की शोभा देखिय जाई॥

छप्पै अस बिचारि करवाइ अश्व चढ़ि चले भूप जब॥
चमू चार असवार अनुग पाछे लागे सब॥ सघन विपिन में

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गये फिरैं जहँ म्रग करि हरि सँग । बोलत बिबिध बिहंग फू-
ल फूले नाना रंग ॥ बिहरत बीते दिवस निशि पाय कीन्ह बि-
श्राम तहँ । शुभ सड़ाग पुर इन कमल करत भँवर गुञ्जार जहँ ॥
इहाँ देखि धरसन चोर मूसन मन लायो । हीरा हेम निकारि भ-
वन बाहर धरि आयो ॥ ढाबल बीती रैनि लोभ बस कछु न जा-
न्यो । रानि हिं डारयो मारि बाँधि असुबेगि धरान्यो ॥ इतने सा-
धौ जान हरि उतते आवत राज । देखि हिये संशय करयो प-
रयो चरण तजि बाज ॥ बोल्यौ दोउ कर जोरि क्षमौ प्रभु गुनह
हमारी रानी नारि सुभाव अवज्ञा कीन्हि तुम्हारी । चलिये ब-
हुरि निकेत चेत हमरे नव होई । सुनि ठग गये सुखाइ राय ते
बोले सोई साध नहीं हम चोर हैं धन मूसा सो लेहु । हे दयाल
हम सबन पर जीव दान अब देहु ॥ कह्यौ भूप धन धाम बाम
सुत देह हमारी हवै सकल तव नाथ वृथा करत होत दुखारी ॥
ऐसे बचन जानि कह्यौ लोग सुनि कतिहैं सोरा । कहिहैं पर गढ़
गुप्त सबै हरिजन हैं चोरा ॥ गहि कर लाये भवन को सिंहासन
बैठाइ । रानिहिं मृतक निहारि कै सोचन मन में आय ॥
**कुण्डलिया** लाग्यो मुनि सेवा करन नृप संतन की आइ
कनक थार सात इन के धोये चरण बनाइ ॥ धोये चरण बना-
इ मृतक रानी तहँ लायो । चरणहि मुरड मिलाइ राम कर
ध्यान लगायो ॥ सींच्यो चरण मृत हि प्राण घट माहीं जागयो ।
उठी तुरत हरषाइ भूप लखि भावन लाग्यो ॥

दो० आजु तुम्हैं निद्रा बहुत कहाँ की घेरी आइ ॥
मन्त चले जब रूठि कै राख्यौ क्यौं न मनाइ ॥
हाथ जोरि रानी कह्यौ सुनौ प्राण पति बात ॥
सोइ गई मैं आजु अति इन्हैं न जान्यौं जात ॥

कहनृपपद अबतेगहौगहे गनिसुख फेरि ॥
मनमैभयौनमैलकछु लागेसेवन फेरि ॥ ॥
प्रतिमातीरथमंत्रगुरु भेखजवेशाव कोइ ॥
जाकीजैसीभावना ताहि तैस फल होइ ॥ ॥
चौ० तबहरिपुनि आयसुमाँगा ॥ बोले भूपसहित अनुरागा ॥
जोधनचहौसोहमतेलीजे ॥ चोरीकर्म छोड़ि प्रभु दीजे ॥ ॥
जन्मभरेकहेंसम्पति दीन्हें ॥ हरषसमेत बिदातब कीन्हें ॥
ऐसीभक्ति देखि भगवाना ॥ मनबचक्रमते निज जन जाना ॥
मोरध्वजपर दायाकीन्हौं ॥ चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्हौं ॥ ॥
ईतिभीतिदुखदालिद आवै ॥ नृपके नगर न पैठन पावै ॥ ॥
एकदिवसयमदूतजो आये ॥ चक्रसुदर्शन लखि रपटाये ॥
भागतयमपहें पहुँचेजाई ॥ दण्डफांससब दिहिनि चलाई
लखिहरिकहाहवैकाभाई ॥ सुनिगणबोलेबचनरिसाई ॥ ॥
दण्डहमारतिहूंपुरमाहीं ॥ ऊचनीचकोउ छांड़तनाहीं ॥ ॥
मोरध्वजपुरजानन पायनु ॥ देखेहु चक्र इहांभगि आयनु ॥
यह अनुचित देखीमहराजा ॥ हमतेयहसपरीनहि काजा ॥ ॥
सुनिरविसुत मनक्रोधबढ़ायो ॥ दूतनसहितबिष्णुपहँ आयो
शीशनाइकह अरजहमारी ॥ सुनहुं नाथत्रिभुवनसुखकारी ॥
तव आज्ञातेजगतमझारा ॥ सबपररहत्तहै दण्ड हमारा ॥ ॥
मोरध्वजपुरदूतहमारे ॥ गेतहे खेद्यो चक्र तुम्हारे ॥ ॥
दो० दूतनकर अपमानभा दीन्हिनि फांसचलाय ॥
सोइहकारणकौनहै नाथ कहौ समुझाय ॥
हँसिबोलेहरिसुनहुयमनृपसमभक्तनकोइ ॥
तेहितेदीन्हौं चक्रनिज रखवारी कहँ सोइ ॥
केहिबिधिजावैं दूततव मोरजनके पास ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनत पित्र पति जोरि कर कीन्हो बचन प्रकास॥

छप्पै भूप कैरे केहि भांति यज्ञ सो कहिये मोहीं। कह प्रभु कहेन वनी चलो दिखरावों तोहीं॥ यमहि सिंह करि आपु साधु कररूपबनायो। आये नृप दरबार देखि उठि पद शिर नायो॥ सिंहासन पधराय के षोड़स विधि पूजन करी। भोजन को पूछत भयो तब नृप ते बोले हरी॥ सिंह एक मम साथ प्रथम भोजन तेहि दीजे। कह्यो भूप का चहीत वनितत्तवी रहि कीजे॥ सुत को मांस जु देहु आन सो उजन हिं खाई॥ कितो भक्ति प्रणा नजहु कितो शिशु लेहु बोलाई॥ भक्ति तुम्हारी नात जो कोटि विघन किन होइ। सुत बनिता धन धाम तन सङ्ग जाय नहिं कोइ॥

चौ० हरष सहित इक दास बोलाई। कह्यो कि आनहु सुतहि लेवाई॥
आज्ञा मानि कुंवर ढिग गयऊ। खेलत बोलि लयावत भयऊ॥
पुत्रहि लखि नृप बचन प्रकासा। हमरे इक आये हरि दासा॥
तिनके सङ्ग इक नाहर आहई। तुम्हरे मांस खान सो कहई॥
सो कस आज्ञा अहै तुम्हारी। मेटहु संशय आजु हमारी॥
सुनि ताम्रध्वज कह शिर नाई। धन्य सो तन पर स्वारथ आई॥
धन्य धाम जहं अतिथि कि सेवा। धन्य शिष्य जाने गुरु देवा॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरई। धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई॥
धन्य ग्राम जो सुरसर तीरा। धन्य तपी तामस बिन धीरा॥
धन्य सो नगर जहां रजधानी। राजा धन्य धर्म मति सानी॥
धन्य दास जो आय सुमानै। धनि स्वामी सेवा पहिचानै॥
धन्य ज्ञान जो इन्द्री जीतै। धन्य सो प्रीति न यों चै मीतै॥
धन्य सभा जहं पण्डित होई। पण्डित धन्य क्रियायुत सोई॥
धनि धन पाइ जो त्यागन करई। धन्य दरिद्री पाप न चरई॥
धन्य सुखी जो विषय निवारै। धन्य साधु जो मानस मारै॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

धन्य सो सभा समर महं आने ॥ धनि दाता नाहिं दान बखाने ॥
धन्य सो द्रव्य दान महं लागे ॥ धनि प्रभुता मद मान न जागे ॥
धन्य कर्म जो भगवत हेता ॥ धन्य ज्ञान वैराग्य समेता ॥ ॥
धन्य बिरति जो रति भगवाने ॥ धन्य सो कवि हरि चरित बखाने
धनि नर पर औगुनै छिपावैं ॥ धनि विद्या विकार मिटि जावैं ॥

दो० दयावान सो देश धनि कहत वेद बुध लोइ ॥
रामभक्त जहं ऊपजै धन्य जाति कुल सोइ ॥
धन्य शरीर रघुनाथ तब जब होवै सत संग ॥ ॥
जन्म तासु को सफल जो रंगे राम के संग ॥ ॥

चौ० अहो पिता मोहिं भा सुख भारी ॥ जो हरि माँगी देह हमारी ॥
अब यह पर स्वारथ में आयो ॥ धनि जननी ऐसो तन जायो ॥ ॥
रोग दोष बस छूटै काया ॥ स्वारथ शास्त्र रजाइ कदाया ॥ ॥
बिष्ठा कर्म खाक होइ जाई ॥ कहौ कौन स्वारथ फिरि आई ॥ ॥
माता मार मुई दश मासा ॥ सही अनेक भाँति तेहि त्रासा ॥ ॥
सो तन लग्यो न परहित माहीं ॥ जीवन जन्म धृग गहे ताहीं ॥ ॥

दो० भजन धर्म परमार्थ शुभ सधै पाय नर देह ॥
जीवन ताको सफल है अरु सब के मुख खेह ॥
अस कहि पितै नवाय शिर चलि भे कुंवर प्रवीन ॥
आये के हरि संत जहं कहे बचन ह्वै दीन ॥ ॥

चौ० अब भोजन हम का करि लीजै ॥ अहो सिंह तुम देर न कीजै ॥
बारबार ऐसे जब कहेऊ ॥ सुनि यम निज तन प्रगटत भयऊ ॥
रूप चतुर्भुज हरि करि लीन्हा ॥ प्रगट नृपति कहं दर्शन दीन्हा ॥
धन्य तुम धन्य भुवारा ॥ आपु सराहत सिर्जन हारा ॥ ॥
कह रवि तनय धन्य हौ राई ॥ सुत तुम्हार तुम ते अधिकाई ॥
जसि श्रीपति तब कीन बड़ाई ॥ सो निज नैनन देख्यौ आई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोले प्रभु वरु मांगु नरेशा॥ प्रगट पाल मेरो यह वेशा॥ ॥
मोरध्वज कह सब सुख दाइनि॥ आपनि भक्ति देहु अनपाइनि
एवमस्तु कहि कृपानिधाना॥ बोले पुनि सुनु भूप सुजाना॥
करौ भक्ति जब लगु यह देही॥ अन्त समय मम धाम सनेही॥
अस कहि हरि यम तुरत सिधाये॥ अपने मन्दिर आये॥ ॥
धर्म गणन ते कथा बखानी॥ भई प्रीति मन मिटी गलानी॥ ॥
जो जन चरित सुनै नित येहा॥ होइ सन्त पद पावन नेहा॥ ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसने-
हीकृत मोरध्वज वर्णनो नाम एकविंशोऽध्यायः २१॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरनौ हरि अस्मर्ति मन कहु सोइ कथा बखानि॥
रानिहि मार्यो हरि न लखि तदपि न भयो अभाव॥
पुंचे दीन्हौं द्वापि जन हित मोरध्वज राव॥ ॥

चौ॰ यहि विधि भक्ति करै नरनाहा॥ दिन प्रति बाढ़ै अधिक उछाहा
भूप धर्म जो वेदन गाये॥ सो सकलौ क्षितिपति कर वाये॥ ॥
सुर भूसुर सुरभिन अति मानै॥ वैष्णो को विष्णुहि सम जानै॥ ॥
श्रीपति चरण लीन मन जासू॥ लुब्ध मधुप जिमि तजै न पासू॥
बहुत काल यहि विधि चलि गयऊ॥ और सुनौ जो कसनी लयऊ॥
कीन धर्मसुत यज्ञ कसाजा॥ पत्र बाँधि छाड़्यो वर बाजा॥ ॥

दो॰ कृष्णा बिजै बभ्रूवहन नीलध्वज नृप केतु॥
हंसध्वज औरो सुभट संग रक्षा के हेतु॥ ॥
चलत बाजि आयो सोइ मोरध्वज के ग्राम॥
ताम्रध्वज गहि बाँधि पट बाँध्यो लै निज धाम॥

चौ॰ चढ़ि रथ आगे आप सिधायो॥ पाछे इत अरजुन दल आयो
होन लागि अति मारु गंभीरा॥ सूर मगन कदरन मन पीरा॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सातदिवस भरि भई लराई ।। मोरध्वज सुत जीति न जाई ।। ।।
अर्जुन आदि बीर जे रहेऊ । दिये बिडारि बिकल सब भयऊ
लखि अचेत निज मन्दिर आयो ।। बड़ पराध भा भूप सुनायो ।।
भक्ति करत जाकी नित रहिये ।। तिनते युद्ध करन को चहिये ।।
महि दुखहरन सुरन सुखकारी ।। धरयो आय बपु कृष्ण मुरारी ।।
सुनि ताम्रध्वज कही जु बाता ।। अन जाने अनीत भै ताता ।। ।।
यहां कृष्ण पारथ ते कहेऊ ।। सात दिवस दुहने है गयऊ ।। ।।
मोरध्वज है भक्त हमारा ।। तेहि ते लरे न पैहो पारा ।। ।। ।।
सुनि कपिध्वज के भा अभिमाना ।। हमते बड़ा भक्त को आना ।।
जिनके बस नित रहत गोपाले ।। धनुर्वेद करि विद्या उर आले ।।
यह अभिमान कृष्ण प्रभु जाना ।। लगे बिचारन इमि भगवाना ।।
अष्टपदी छं० जाय हेत ते ज्ञान जाय कुल द्विज सताये ।।
जाय नीच संग सुमति जाय सुध भोजन खाये ।। जाय क्रोध ते ध-
र्म जाय आदर नित मांगे । जाय नीति बिन राज जाय शूरापन भा-
गे ।। जाय ज्ञान ते मोह जाय अघ हरि गुण गाये ।। जाय तिमिर
रवि उदे जाय विद्या लस आये । जाय यती बस काम जाय यश
लोभ बढ़ाये ।। जाय गृही बिन नारि जाय सुख सबहि सताये ।।
जाय कुमति ते दर्बि जाय संतोष ते ममता । जाय कपट ते प्रीति
जाय रिस कीन्हे समता ।। जाय सखा ते शोच जाय पातक ते शो-
भा । जाय सुपथ ते रोग जाय बैराग ते लोभा ।। जाय जन्म अरु मर-
ण राम के सुमिरन कीन्हे ।। जाय गुरू ते भर्म कर्म निज रूप हि ची-
न्हे ।। शान्ति जाय परवर्ति ते दोष जाय दिहे दान । कहे रघुनाथ
यों जात है भक्तिहि के अभिमान ।।
चौ० तातें अबही देहु मिटाई ।। नातरु बढ़त बढ़त बढ़ि जाई ।।
कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं ।। आवो भक्त देखावों तोहीं ।। ।।

आपु वृद्ध द्विज वपु धरि लीन्हा ॥ बालक रूप बिजय कहँ कीन्हा ॥
आये चलि मोरध्वज द्वारा ॥ हरि पूजन मा रहे भुवारा ॥
द्वारपाल जा खबर जनाई ॥ बोले नृप बैठारहु जाई ॥
कहत दोऊ जन चले रिसाई ॥ सुनि नृप परे चरण महँ धाई ॥
करि सनमान सु आसन दीन्हा ॥ हाथ जोरि इमि पूछे लीन्हा ॥
कौन हेतु आयो महराजा ॥ आयसु होय करौं सोइ काजा ॥
हम सरिखेन ते बनत न आना ॥ तुम्हरी सेवै नेक सयाना ॥
दो० विप्र कही जो देन की करो प्रतिज्ञा राइ ॥
तो मैं मांगौं जाहि ते बचन कहा नहिं जाइ ॥
चौ० कह नृप कीन्ह प्रतिज्ञा माँग्यो ॥ तब तो विप्र कहन अस लाग्यो ॥
आवत रहेन बन हरि एक मिलेऊ ॥ गहिसि आइ बालक मोहि दिलेऊ ॥
तब मैं कहेउँ छांड़ि यहि दीजै ॥ याके बदले मोकौं लीजै ॥
सिंह कहा मोरध्वज राऊ ॥ तासु अंग दाहिन लै आऊ ॥
तौ मैं बालक देहुँ बचाई ॥ नाहि तौ याहि डारिहौं खाई ॥
हौं तब अंग देन कह राई ॥ छाड़सि नबलहु सोंह कराई ॥
सोइ लेन आयौं तब द्वारा ॥ अपर हेतु नहिं कछू हमारा ॥
सुनि रानी बोली हरषाई ॥ अर्धंगी त्रिय बेदन गाई ॥
ताते मोहिं केहरि को दीजे ॥ पुत्र कह्यो नाहिं मोको लीजै ॥
बहुरि कृषा बोले मुनि लेहू ॥ केहरि बचन कहा यक येहू ॥
स्त्री पुत्र हाथ गहि आरे ॥ चीरैं हर्ष समेत भुआरे ॥
सुनि आरा नृप लीन मँगाई ॥ रानी पुत्र गह्यो तब आई ॥
सिर धरि चीरन लागे कैसे ॥ बढ़ई उभै दारु कहँ जैसे ॥
चीरत आयो नासा तीरा ॥ बायें दृग भरि आयो नीरा ॥
दो० निंदि निंदि कहि नीर लखि चले कथा अनखाइ ॥
दोउ कर टेकि करोत नृप पूछ्यो गहि कराइ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० केहि कारण प्रभु चल्यो रिसाई ॥ तौ निश्चान मोहिं कहौ बुझाई ॥
देत क्षोभ तेरे हे आवा ॥ तेहि ते यक अस्वक अल छावा ॥
कह नृप मोरे क्षोभन राई ॥ बाम अंग रोवत यहि लाई ॥ ॥
मैन लग्यो परमारथ माहीं ॥ मो सम भाग्य हीन कोउ नाहीं ॥
तुम्हरे दहिने तो नहिं आवा ॥ सुनत कृपाल महा सुख पावा ॥
फेर्यो सीस कमल कर जबहीं ॥ भई नवीन देह नृप तबहीं ॥
सजल नयन प्रभु हृदय लगायो ॥ जय कहि देव सुमन बरषायो ॥
कह्यो कि नृप माँगहु बरदाना ॥ जो इच्छा मन होइ सुजाना ॥
कोटि भाँति जो देहुँ भुवारा ॥ तुमते तबहुँ न हौं उद्धारा ॥ ॥
ऐसी भक्ति कीन्हिं तुम मोरी ॥ दृष्टिन सूधि होत दिशि तोरी ॥
दो० भूप कहा जो इयद हू करै तिहारे साथ ॥ ॥
ताको तुम गिरि मेरु सम मानि लेत हौ नाथ ॥
चौ० एक बात माँगत हौं स्वामी ॥ सो मोहिं दीजै अन्तरयामी ॥
आगे जुग लागी कलि काला ॥ कुटिल अपावन रूप कराला ॥
तामे कसनी भक्तन केरी ॥ लेहु न नाथ अरज यह मेरी ॥ ॥
कलि मे भक्त नाम की आशा ॥ कसनी लिहे न होइ प्रकासा ॥
सुनत बचन कह बिहँसि मुरारी ॥ जो माग्यो सो दीन्ह्यो हारी ॥
अपने वास्ते अब कछु कहिये ॥ प्रभु पद प्रीति यही मोहिं चहिये
कह प्रभु धन्य धन्य तुम राजा ॥ धन्य पुत्र तिय सहित समाजा ॥
अस कहि हय लै बिदा जो भयऊ ॥ देखि दर्प पारथ कर गयऊ
गीतिका छं० जब देखि नृप की भक्ति कों अभिमान पारथ को ग-
यो । गिरि चरण श्रीगोपाल के होय दीन अस बोलत भयो ॥ म-
हि मन्द मो सम कोउ तुमते नाथ हैं सिवा लई । धृग तेहु पर अहं-
कार रावत भक्त मो सम ना हई ॥ लोभ बश गुरु मित्र भ्रात पुत्र-
बहु जीव निहंने । समुझि कुल करतूति अपने दोष जायें नहिं ग

ने ॥ पर पिता द्विज कानीन हमरे पिता गोलक गावजू । हम कुंड
क दुः अग्रज सुखारी हद्द हारी नारिजू ॥ अति कष्ट करि ओख्या
हु सो प्रियाधं च भरतारी भई । गुण हीन हरि छल धील यावर नि-
धन निर्बल निर्दई । ऐसहू पर नहिं जानियत धौं काहि तें रीझ्यो
हरी । बन बान विध अटयारि पुनतें सब ठौर तुम रक्षा करी ॥

छप्पै दुर्बल के बल भूप भूप के बल को बल है । तस्कर के
बल पालि धनिहि धन घाते छल है ॥ मूरख के बल मौन मानिनी
के बल रोदन । क्रोध के बल खल बयन मयन के बाम बिनोद-
न ॥ द्विज के श्रुति कवि बल वरण रवरा के परसर कबल हौ ॥
तेहि प्रकार यदुनाथ तुम नाथ हमारे बल अहो ॥

दो० कह रघुनाथ सनेह नर यहि विधि बिनती कीन्ह ॥
मोरध्वज की यह कथा यथा बुद्धि कहि दीन्ह ॥
मोरध्वज की यह कथा पढ़ै सुनै नित नेम ॥
होइ भाव भक्तन विषय बढ़ै राम पद प्रेम ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत अगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम
सनेही कृत मोरध्वज आख्यान बर्णनो नाम द्वाविंशो ऽध्यायः २२ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौ महा पुराण को अब इतिहास बखानि ॥
सुनहु सुनिहु मनु लाइ कै सुंदर कथा अनूप ॥
कही जौन शुकदेव जी सुनी परीक्षित भूप ॥

चौ० सोई कथा मै कहौं बुझाई ॥ राम चरण जेहि रति अधिकाई ॥
सतयुग भे मनु जग यश जासू ॥ नृप उत्तानपाद सुत तासू ॥
सुरुचि सुनीति रहे दोउ रानी ॥ विधुवदनी गुण रूप सयानी ॥
उत्तम नाम सुरुचि सुत जायो ॥ ध्रुव सुनीति के बेदन गायो ॥
सुरुचि महीपै प्रिय अधिकाई ॥ सो सुनीति के महल न जाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्नसेर भरि देइ भुवारा ॥ ताहीते दोउ करैं गुजारा ॥
पाँच वर्ष के ध्रुव जब भयऊ ॥ खेलत नृप जहँ तहँ चलि गयऊ
ठाढ़ भये आगे हरषाई ॥ लखि नृप रुख नृप लियो गोद उठाई
देखि सुरुचि अति उठी रिसाई ॥ दिहिसि उतारि गोद ते धाई ॥

दो० बैठनको नृप गोद जो लिखा होत तव कर्म ॥
तौ सुनीति के जठर में काहे कलेत्यो जन्म ॥
पूल अभागिनि केर है चढ़ौ गोद नृप केर ॥
अन्न मिलत है सेर भरि सो उन भोलिहै फेर ॥

छप्पै तप बिन होइ कि राज भाज बिन होइ कि काज। गुण
कि होइ बिन टहल बिना गुण होइ कि चारज ॥ धन बिन मित्र
कि होइ मित्र बिन होइ कि सद सुख। सिद्धि कि बिन विश्वास
दास बिन मिटै कि भव दुख ॥ अघ बिन होत कि अयश शुभ
यश कि होइ बिन दान के। होत भुक्ति युत मुक्ति कहुँ विना भ-
जे भगवान के ॥

चौ० अस कहि बाँह पकरि ध्रुव केरी। मंदिर बाहर दीन खदेरी।
रोवत ध्रुव माता ढिग आयौ ॥ देखत जननी गोद उठायौ ॥
केहि मास्यो मो कहिये मोसे ॥ का अपराध भयो सुत तोसे ॥
कह ध्रुव पिता गोद माहिं लीन्हा ॥ रानी छीनि डारि मोहि दीन्हा
दूरि कहि घर ते काढ्यो ॥ सुनि दुख बचन महँ दुख बाढ्यो
ऐसो विधि मोको दुख दियऊ ॥ राजा कछू मन्यो नहिं किहेऊ
ताते मैं पूछत हौं तोको ॥ काकी शरण अहै सुख मोको ॥
कह्यौ मातु सुख निधि भगवानू ॥ सोइ पितु मातु बंधु सम जानू
जेहि प्रभु राखि गरभ सें लीन्ह्यो ॥ पानि के बुंद प्रगट बपु कीन्हेंउ
गरभ मा चिपुनि बाहर लायौ ॥ मातु पयोधर छीर पियायौ ॥
यहि विधि पुष्ट कि है सब अंगा ॥ जन मत भरत तजै नहिं संगा ॥

जिय अपराधी ताहि न जानै ॥ संकट परत तबै कछु मानै ॥
तातें सहै विपति बहु भांती ॥ चौरासी लख आवत जाती ॥
अस जिय जानि भजहु भगवानै ॥ सुमिरत जाहि शंभु धरि ध्यानै ॥
सो प्रभु विश्वरूप श्रुति कहई ॥ सुनो तात जेहि शेसे रहई ॥
चरपट छं० पद पताल सिर ब्रह्मधाम । अपर लोक हैं अं-
ग नाम ॥ नयन दिवाकर दिशा कान । अश्विनी कुमार बाजा-
सु घ्रान ॥ घन केश अंशुपति औह जानु ॥ निशि दिन निमेष
आनन कृशानु ॥ दिगपाल बाहु हैं पवन स्वास । रोमावलि
विटप लघु दीर्घ श्वास ॥ नारी सरिता अरु अजा हांस । अधर
लोभ यम दशन तासु ॥ अस्थि अद्रि रस शब्द भोग । जानै बि-
रला कोउ चतुर लोग ॥ शिश्नु प्रजापति वीर्य तोय भृगुटी बि-
लास सोइ काल होय ॥ उदर सिंधु सांचो प्रसंग दुष्पूरित इत-
नाजु अंग ॥
सो० अहंकार त्रिपुरारि । चतुरानन सोइ बुद्धि बर ॥
मन द्विज राज बिचारि । चेतन रूप अनूप हरि ॥
दो० सो प्रभु सचराचर विषे पूरण व्योम समान ॥
भजन बिना नहिं लखि परत ज्यों बिन मंथ कृशान ॥
अस बिचारि सब सोच तजि राम चरण चित देहु ॥
सुर दुर्लभ तनु पाइ कै ताहि सफल करि लेहु ॥
चौ० ऐसे बचन सुने ध्रुव जबहीं ॥ हाथ जोरि बोले इमि तबहीं ॥
तुम कत दुखी सुखी वह रानी ॥ तीन भेद मोहिं कहो बखानी ।
कहरानी प्रथमै तन माहीं ॥ सपन्यो दान दीन कछु नाहीं ॥ ॥
साधु संग हरि भजन न भावा ॥ खर कूकर सम सैंति गवांवा ॥ ॥
जस कछु कर्म याव भल कीन्हा ॥ सोइ जनमन विधि सिर लिखि दीन्हा
नहिं जानी कहि सुकृत तेरे ॥ भये प्राप्त गुण गोविंद केरे ॥ ॥

तेहिते कोइ दुख निकट न आवै ॥ परारब्ध नहि तनु भुगतावै

दो० जो कछु लिखा लिलाट में सो होवै परिनाम ॥
चहै परै घर रंक के चहै मही पति धाम ॥ ॥
तद्यपि हरि के भजन करि होत भुगैते कोट ॥
नरबर खवन लहै गई बिधि बरखै बाढ़ बोट ॥

चौ० ताते सुत तुम ऐसो करहू ॥ राम चरण पंकज चित धरहू ॥
भक्ति मुक्ति हरि दर मन पावो ॥ जो न जि कामना मल लव लावो
यहि बिधि मातु दीन जब ज्ञाना ॥ सुनि ध्रुव के अतिशै सनमाना
पूरब का कछु सुकृत जागा ॥ ध्रुव के भयो बिमल बैरागा ॥ ॥
उठि जननी ते आज्ञा मांगी ॥ करिहौं भजन बिपिन गृह त्यागी
बोली मातु अबै तू बारो ॥ सतत सम्बल जनि बन पगु धारो ॥
क्षुधा तृषा जब आनि सताई ॥ केहि ते भोजन मंगिहो जाई ॥
शीत उष्ण बरषा दुख पैहो ॥ का बन बाढ़िहौ काह दशैहौ ॥
बाघ सिंह बक शूकर आई ॥ औरौ जीव बहुत दुखदाई ॥
बालक देखि देष हैं दुख भारा ॥ का उपाउ तब चली तुम्हारा

दो० सुनि ध्रुव कह माता तुरत गयो ज्ञान का तोर ॥
अब हौं तेहि मन ते कहे हरि रक्षक सब ठौर ॥
गरभ माहिं रक्षा करी जहां हितू नहिं कोइ ॥
अब का पर बिन पालिहै बिपिन गये महं सोइ ॥

चौ० अस कहि ध्रुव चलि भे हरषाई ॥ मंत्रिन भन्यो भूप ते धाई
ध्रुव बालक बन जात तुम्हारा ॥ कानि देश नव है यहि बारा ॥
कहन्नृप सोन सेरजु गदेहू ॥ अबही ध्रुवे फेरि तुम लेहू ॥ ॥
मंत्री सुनि आये ध्रुव पासा ॥ आस्थिर करि अस बचन प्रकासा ॥
सेर भरेर कर दइ सरबाहू ॥ लउटि चलो घर बन नहिं जाहू ॥
जेहि प्रभु कीन सेर ते सूना ॥ तेहि के भवन अवर का सूना ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हरिमारगलेपिरवनमाई ।। करै जो कोई कोटि उपाई ।। ।।
मंत्रिन आइ कहा नृप पाहीं ।। चले जात ध्रुव आवत नाहीं
राजा कह्यो गाँव एक दीजे ।। मानें तबै फेरि ध्रुव लीजे ।। ।।
सचिवन ध्रुव को ग्राम सुनायो ।। तब ध्रुव अधिक सनेह बढ़ायो
मन मैं अभै मनोरथ जागा ।। तुरतै मिलन गाँव इक लागा ।।
नाम जपे ते धौं का होई ।। मोरे मन प्रतीति असि सोई ।। ।।
तातें हम अब लेहब नाहीं ।। मंत्रिन जाइ कही नृप पाहीं
तब राजा आपुइ चलि आयो ।। चौथाई कहि अर्ध सुनायो
बहुरि कह्यो सब राजहिं लीजे ।। नाना भाँति भोग चलि कीजे
सुनि पितु बचन कहत ध्रुव भयऊ ।। अर्ध में सेर अन्न नहिं दयऊ
जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई ।। प्रभु जाके ताके सब कोई ।।
जब मैं राम चरण चित दीन्हा ।। तब तुम नाम राज्य कर लीन्हा
हरि सन मुख ते जो फिरि आवौं ।। सती स्वाँग करि ताहि लजावौं

दो० रानी जब ही गोद ते दीन्हों मोहिं उतारि ।। ।।
तब हीं वंचो न सम्हारऊ मोह करत अवहारि ।।

चौ० जब लगि हरि के दरशन पैहों ।। तब लग जग में मुख न देखैहों
मंत्री नृप सब कहि २ हारे ।। हठ करि के ध्रुव बने सिधारे ।। ।।
मिले ध्रुवै नारद मग माहीं ।। पूछ्यो कित आयो कित जाहीं
जानि निजन को कित तव ग्रामा ।। हे सुत कहो कहा तव नामा
बोले ध्रुव पितु मात मुरारी ।। भ्राता मित्र सोई सुख कारी ।। ।।
सोइ कुल जाति कुटुम्ब परिवारा ।। सब जीवन को सिरजनहारा
जब लग ऐसे पितै न जानै ।। तब तक झूठ साँच करि मानै ।।
जग महँ जेहि बिधि बद सब कोऊ ।। तुम तें कहि समुझावौं सोऊ
नृप उत्तान पाद पितु अहई ।। माता उभै नाम ध्रुव कहई ।।
पिता गोद लखि दइ सरि माता ।। दिहिसि उतारि कहिसि कटु बाता

दो॰ रोवत जननी पहँ गयो तेहि माहिं दीन्हो ज्ञान ॥
हे सुत सुख सपन्यो नहीं बिना भजे भगवान ॥

चौ॰ तब मैं बन को चल्यों सिधाई ॥ सचिवन कहा भूपते जाई ॥
राजा तब बहु लोभ दिखायो ॥ सब तजि हौं हरि शरणा तकायो ॥
तुम को हौ निज नाम बखानो ॥ मैं बालक नहिं ऐसे जानो ॥
कह ऋषि नारद नाम हमारा ॥ गोदोहन बिचरौं संसारा ॥
सुनि ध्रुव गिरे चरण हरषाई ॥ ऋषि उठाइ लिये गोद लगाई ॥
चलु ध्रुव तोहि फेरि लै जावौं ॥ राजा तें सन्मान करावौं ॥
राज करौ चलि ब्याह करीजे ॥ बालक एक होइ सुनि लीजे ॥
सुनै राज दै बनै सिधारो ॥ सब राजन की साखि बिचारो ॥
कानन सिंह बाघ बहु रहई ॥ भालु भेंड़िया देखत गहई ॥
निशिचर बिपुल फिरत दुखदाई ॥ बड़े२ भय मानत भाई ॥
तहँ बालक को कौन उबारा ॥ ताते मानो बचन हमारा ॥
सीत उष्ण बरषा दुख पावे ॥ क्षुधा तृषा जब अधिक सतावे ॥
तब केहि ते दुख कहि हौ रोई ॥ तहँ नहिं मात पिता नुज कोई ॥
करणी कठिन न कीन्ही जावे ॥ बिपिन जाइ कत प्राण गमावे ॥

दो॰ कहे रघुनाथ अनेक बिधि मुनि भय सहे देखाय ॥
ध्रुव के तन कन शंक भय राम कृपा दृढ़ ताय ॥

चौ॰ कह ध्रुव हरि रक्षक सब ठावँ ॥ घर बन फिरत चलत बिचगावँ ॥
जैसी कर्म भावती होई ॥ तैसी मृत्यु पाव सब कोई ॥ ॥
आखिर यह तन एक दिन छीजे ॥ तेहि ते हरि सुमिरण करि लीजे ॥
मात पिता नारि सुत नाती ॥ को का को सब पथिक लखाती ॥
इन सब हित ते सरत जो काजा ॥ ता तजि क्यों बन जात राजा ॥
राज पाइ कै मद होइ आवे ॥ करै अनीत नरक को जावे ॥ ॥
राज नरक दोउ संगी रहई ॥ यहि ते मोहिं नहिं भावत अहई ॥

तातें मोहिं हरिभक्ति दृढ़ावो। कृपा करो गुरु मंत्र सुनावो॥
मैं बड़भागी हौं ऋषिराया। यहि अवसर तव दर्शन पाया॥

दो० लागत लय ज्यों रश्मि भै बूड़त बोहित साथ॥
भरत धनन्तर मिलै तिमि मोहिं मिलो तुम नाथ॥
बन्धु बयर धर नारि संग न्याय सकीजै देर॥
भोजन दान सुधर्म मैं नाहिं लगाई बेर॥

चौ० तातें बेगि सुदीक्षा दीजै। पतितै प्रभु पावन करि लीजै॥
नारद ध्रुव के मन की जानो। भूत भविष्य वर्तमान पिछानो॥
तब ध्रुव को दीन्हों उपदेशा। मूल मंत्र यहि जपत महेशा॥
आसन ध्यान कह्यो जप नेमा। नवधा भक्ति बतायो प्रेमा॥
सम दम सत संतोष विचारू। ज्ञान बिराग दया उर धारू॥
काम क्रोध मद मत्सर लोभा। छांड़ो मान मोह छल क्षोभा॥

सो० विद्या जाति महन्त। यौवन को मद रूप मद॥
तजै यतन कर सन्त। पांच कांटे ये भक्ति के॥

चौ० ऐसो विघन भजन में भाई। रिद्धि सिद्धि सब धौरें आई॥
इंद्र डरपि अप्सरा पठावैं। छल बल करि सो आनि डिगावैं॥
जापर कृपा करै असुरारी। तेहि ते सकल जाइं जिय हारी॥
मुनि शिक्षा दै जबहिं सिधाये। तब ध्रुव चलि मधुवन में आये॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदा-
स राम सनेही कृत ध्रुव मधुबन आगमनो नाम त्रैविंशो ऽध्यायः २३॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
राजनीति संयुत कहौं सो इतिहास बखानि॥
पांच बरष के बयस ध्रुव धर्म करी कछु नाहिं॥
सुनि माते उपदेश लहि आये मधुबन माहिं॥

चौ० एक पांय भे ठाढ़ सुजाना। निश्चल मन करि हरि को ध्याना

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्नत्यागि फल मूल जो खायो ॥ फलहु तजे तब पात चबायो
दलहु छाँड़ि जल कीन अहारा ॥ जल परिहरि भे पवन अधारा
यह चिंतवनि रहत चित छाई ॥ कब देखौं हरिपद सुखदाई ॥

दो० पवन तजत लागो जरन सुर सब शक्र डरान ॥
जैसे केहरि का निरखि अस्त्र लिये मुख स्वान ॥

चौ० माया देवी तुरत बोलाई ॥ कहिनि कि ध्रुव ढिग बहु जाई
मेना और उरबसी सङ्गा ॥ आई जहँ ध्रुव सहित अनङ्गा
ऋतु बसन्त बिरचि सम अमराई ॥ नव पल्लव फल फूल सोहाई
गुञ्जत अलि गण कूज बिहङ्गा ॥ बाजत बाजन उठत तरंगा ॥
नटहिं अपसरा भाव बतावैं ॥ ऊँचे स्वर कल किन्नर गावैं ॥ ॥
यहि विधि किहिनि उपाय घनेरी ॥ छूटी नहिं समाधि ध्रुव केरी
ऐसे ध्रुव ढिग हूँ नहिं जाना ॥ तब देवी माया छल ठाना ॥ ॥
रूप बनाइ सुनीति क लीन्हा ॥ ध्रुव ध्रुव कहि रोदन कीन्हा ॥
अथ मे आंधी आनि चलाइसि ॥ पर उपल जल मल बरसाइसि
भीजे पट कट कट रद होवै ॥ काँपै कुशाप पुत्र कहि रोवै ॥ ॥
घर ते नृप मोहिं दीन निकारी ॥ जा ध्रुव दिग जा की महतारी
कहि की अब मैं घर ने जावौं ॥ बोलो लाल बहुत दुख पावौं ॥
शीस धुनै कर दै दै मारै ॥ हाय हाय बदि वचन उचारै ॥ ॥

दो० शोर सुनत रघुनाथ तब ध्रुव की जगी समाधि ॥
लगे बिचारन मनै मन हरि चरणन चित साधि ॥

चौ० एका एकी कानन माहीं ॥ किमि रानी आवत मोहिं पाहीं
जो अस्नान होत तो औंती ॥ अथ लै कत मोहि बने पठौती ॥
जानि परत यह माया अहई ॥ आइ छलन मोहिं सुत कहई
नारद वचन आदि जब कीन्हा ॥ पुनि ध्रुव राम चरण चित दीन्ह
रघुपति रूप न भूलें सन्ता ॥ जिमि नट लहे जम्बूड़ा अन्ता ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बहु प्रकार सो सचिव पचिहारी ॥ तब लजाइ सुरलोक सिधारी
इंद्र आदि सुर हे हैं दीना ॥ मधुसूदन की बिनती कीन्हा ॥
महाराज ध्रुव तेज अपारा ॥ तेहि ते सुर पुर छूट हमारा ॥ ॥
तिष्ठन कौन ठौर प्रभु धाई ॥ जरत बिबुध जहं २ चलि जाई
ताते हमैं राखिय प्रभु लीजै ॥ ध्रुव को जाय दरश अब दीजै
व्याकुल लखि सुर कृपा निधाना ॥ मन बच कर्म दास निज जाना
आये हैं ध्रुव निकट मुरारी ॥ लगि समाधि तन सुधि बिसारी
कुशल तेहि शङ्ख नाद हरि कीन्हें ॥ खोलि नयन ध्रुव तब ही दीन्हे
आगे खड़े दीख भगवाने ॥ भक्त बसल्य शिव रूप निधाने ॥

दो० तड़ित विनिन्दिक पीत पट नील जलद तन श्याम ॥
इंदु बदन बारिज नयन कर आयुध अभिराम ॥
शीस मुकुट बन माल उर छबि मनोज हरि भास ॥
ध्रुव बिलोकि लागे करन अस्तुति सहित हुलास ॥

अष्टपदी छं० नमो राम सुख धाम नमो जगदीश दयालं ।
नमो अशेष अलेख नमो सुर मुनि प्रति पालं ॥ नमो अनाथ-
निनाथ नमो संतन हितकारी ॥ नमो शंभु अज ईश नमो नि
गुणा गुणाधारी ॥ नमो अपार अगार नमो निरकार निरामय
नमो अभेद अछेद नमो निरखेद निराभय ॥ नमो अजीत अ-
नीत नमो परमात्मानन्दं नमो निकर्म निधर्म नमो निज ब्रह्म
मुकुन्दं ॥ नमो अरूप अनूप नमो सुर भूप उजागर । नमो बी-
र रणधीर नमो तारण भवसागर ॥ नमो शरण दुख हरण कर-
ण तन काल निहालं । नमो तु मेक अनेक नमो काल हु के का
लं ॥ नमो कृष्ण तोहिं कृष्ण तोहि रामं बलरामं । तुहीं दशो
अवतार तुही सारण सब कामं ॥ नमो नमो जय जयति जय
अधम उधारण अघ हरण । रघुनाथदास यहि भांति ध्रुव स्तु-

निकीन्ही महि वरणा ॥

दो० सजलनयन प्रभु अङ्क भरि लीन्ह्यो हृदय लगाय ॥
कह्यो पुत्र वर माँगिये जो तेरे मन भाय ॥

मधुभार छं० सुनि । गुनि ॥ ध्रुव । ध्रुव ॥

चौ० माँगौं कहा जगतपति देवा ॥ सनकादिक बिनवत हीं सेवा
अविरल बिलग दवि जो होई ॥ त्रिभुवन राज पाव जो कोई ॥
जो पै भरता करता सुख कैसो ॥ सपने की सम्पति भ्रम जैसो ॥
तेहि ते नाथ कृपा जो कीजे ॥ प्रेम भक्ति आपनि मोहिं दीजे
जोग यज्ञ जप ध्यान बिरागा ॥ क्रिया काण्ड बहु भाँति बिभागा
भक्ति बिना गुण सोहत कैसे ॥ जीव बिना तन भूषण जैसे ॥
सतसङ्गति भवनिधि जलजाना ॥ देव दया करि सो भगवाना ॥
सुनि ध्रुव वचन सरल छल हीना ॥ बोले प्रभु भंजन दुख दीना
साँची बात कही तुम ऐसी ॥ मेरे भक्त कहत हैं जैसी ॥ ॥
सुर नर नाग लोक बिधिहू को ॥ मो बिन भक्त गनत सब फीको
पर तव मातु बहुत दुख पायो ॥ राज हेत तै बन को आयो ॥
जो निज पुर अबहीं लै जावौं ॥ जग में जाहिर नाहिं करावौं ॥
तौ सब जनिहैं ध्रुव मरि गयऊ ॥ की बन खाद जनावर लयऊ
जो जग में अपकीरति होई ॥ तौ केहि काम धाम मम सोई ॥
तातें प्रथम राज चलि कीजे ॥ छत्तिस सहस बरष लग लीजे ॥
पुनि मम लोकहि आयो ताता ॥ चढि बिमान सङ्ग लीन्हें माता
तब ध्रुव कह्यो जोरि युग पानी ॥ राजते नर्क होत श्रुति बानी ॥
कह भगवान अधर्म जो करई ॥ सो नृप जाय नर्क महँ परई ॥
धर्मवान क्यों नर्के जावै ॥ राजनीति रत दोष न आवै ॥ ॥
बोले ध्रुव मम नीति न जानी ॥ कह हरि सुनु मैं कहौं बखानी
मधु पदी छं० कहै न मिथ्या बचन मृदु मंत्री नहिं राखै ॥

दइकै लेइ न फेरि अजानै अमनन चारैवे॥ मित्रै देइ न दुः
ख असिं त्रै नाघति आवै॥ सब तें राखै हेत विप्रन॥ भूलि स-
तावै॥ दंड न बिरथा करै पुत्र सम परजै पालै॥ ज्वा चोरी मां-
स मद्य हिंसा यह टालै॥ पर त्रिय मातु समान द्रव्य पर बिष-
सम जानै। तजै क्रोह मद मोह द्रोह तन छोह न आनै॥ करै
सदा सतसङ्ग भक्त भगवत सम लेखै। मन राखै हरि चरण
कथा मुनि कथा विशेषै॥ रिपु तें डरै न समर मूढ़ नित भजन-
रखावै। मानै कवि बुध वेद गिरा कटु कभी न बोलै लोभी ल-
म्पट नहिं जन धर्म अधिकारी करही॥ दान देइ लखि पात्र मात
पुजा अनुसरही॥ जप तप संध्या ब्रत करि नेम सदाना खोय॥
कहैं रघुनाथ ऐसे नृपै रतीन लागै दोष॥

दो० कृषी सींचे कांटे नचर सुकेन माहिं दें टैक॥
फूलै फल सोइ लेइ नृप चिरैं जीव मारै एक॥
जौन चलै यहि रीति नृप अवसि नर्क सो जाय॥
अब सुनु परजन को धरम जाते दोष नसाय॥
कृषी बनिज व्यापार में नफा मिलै जो जान॥
दशा अंशद विप्र कहैं दोष न लागै हानि॥
जो द्विज पावै और कहैं चौथाई दै सोइ॥
लेइ देइ विश्वास करि दोष नाश तब होइ॥
सेवा करि धन जो लहै यथा शक्ति दे दान॥
तौ नहिं लागै दोष कछु कुकरम करै न आन॥

चौ० तातें भुव तुम आजिहि करहू॥ जो मैं कह्यौं सो मारग धरहू॥
मम आज्ञा मानै जो कोई॥ ताहि कि कछु दुख सपनेहु होई॥
मोरी सीख करौ तुम राजू॥ भुक्ति मुक्ति दै सारौं काजू॥ ॥
यौं कहि राज काज सब साजे॥ विविध प्रकार बाजने बाजे॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सैनअपार प्रकट प्रभु कीन्हों। तंबू सेज बिछौना दीन्हों॥
गजरथ बाजि पालकी याना॥ चोपदार दरबानी नाना॥ ॥
बढ़ई बजाज सराफ सोनारा॥ हलवाई जौंहरी चमारा॥
जहँ लगु भूपन केर समाजा॥ सो सब प्रकट कीन महराजा॥
भक्तबछल प्रभु किरिपा कीन्हों॥ चक्रवती धुव की करि दीन्हों॥
शङ्खादिक बहु भांति बजाई॥ चलीकटक अति बरनि न जाई॥
दो॰ हरिकी आज्ञा मानि कै धुव चढ़ि चले अपार।
जन राघो हरि कृपा ते मिटिगे सब दुख कन्द॥
चौ॰ देश २ के न्रप सुधि पाई॥ लै लै भेंट मिले ते आई॥ ॥
करि सनमान सुता निजु देहीं॥ दायजु अमित कहां लकलेहीं॥
यहि भांतिन निजुपुर नियरायो॥ नारद तब न्रप के ढिंग आयो॥
कह्यो पुत्र धुव आवत तेरो॥ हरि दीन्हों तेहि राज घनेरो॥ ॥
राजा कहा बिपिनि गा सोई॥ अब धुव कैसे जीवत होई॥
जल बहि गयो कि अगिनि जरायो॥ सिंह सर्प धौ बाघन खायो॥
रुषभ महिष है अजा हेराई॥ सकल काम तजि ढूढ़न जाई॥
मैं अपराधी बालक त्याग्यों॥ चल्यो गहन उठि सङ्ग न लाग्यों॥
नारद कहा शोच जनि करहू॥ बेगिहि आवत धीरज धरहू॥
सुनि सुनीति उरभा सुखभारी॥ मुनि असत्य क्यों कहत बिचारी॥
तेही समय धुव दूत पठायो॥ न्रप उद्यान याद ढिग आयो॥
सब बृतान्त कहा तेहिं गाई॥ सुनतै भूप उछाह रघाई॥ ॥
रानी सहित सचिव पुरवासी॥ धुव ढिग चले बिहाय उदासी॥
धुव के डेरैं न्रप जब आयो॥ पितहि देखि धुव उठि सिरनायो॥
लीन महीपति गोद लगाई॥ गइ मरिा मनहुं नाग फिरिपाई॥
अंक माल भरि भेटी माता॥ प्रेमासुन ते सींच्यो गाता॥ ॥
दो॰ पुरलोगन कहं भेंटि कै पूंछि कुशल बहु भांति॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आसन दीन्हों सबन कहं यथा योग सब जाति ॥

चौ० राजा ध्रुव की करत बड़ाई ॥ धन्य तुम धनि तुव माई ॥
जो हरि भक्ति हृदय महं धार्यो ॥ सो पीढ़ी तक पितर उधार्यो
सुर नर मुनि सब करत बिचारा ॥ पुत्र बिना मिथ्या संसारा ॥
एक पुत्र जन्मै अस आई ॥ शत पीढ़ी दे नर्क पठाई ॥ ॥
एक सुवन सुरपुर पहुंचावै ॥ निरिबास यम फांस छोड़ावै ॥
सो सम भाग सबन्त नहिं आना ॥ पुत्र मिला हरि भक्त सुजाना
सुनि कर जोरि बिनै ध्रुव कीन्हीं ॥ तुम्हरी कृपा भक्ति प्रभु दीन्ही
बिबिधि भांति जेवनार कराई ॥ बासर गये निशा तब आई ॥
हरि बिप्र कर मैं आज्ञा दीन्हीं ॥ कंचन पुरी छिनक महं कीन्ही
मणिमय मन्दिर प्रभु रचि लिहेऊ ॥ तेहि महं ध्रुव कहं बासा दिहेऊ
लागे रहन सकल हरषाई ॥ भाव भक्ति दिन दिन अधिकाई
अरिन जीति बिप्रण सुख दीन्हा ॥ भुजबल सकल बिश्व बस कीन्हा
पुत्र समान प्रजन कहं सेवै ॥ अधरम कर धन कबहुं न लेवै ॥
कथा कीरतन ध्यान कराहीं ॥ सुमिरन करत याम चलि जाहीं
ध्रुव राजा को आज्ञा माने ॥ राजा ध्रुवहि बड़ा करि जाने ॥ ॥
एक दिन करि बिचार बन गयऊ ॥ हरि सुमिरण करि हरि पद लयऊ

दो० ज्यों पङ्कज जल में रहत अरु सनेह पय माहिं ॥
त्यों ध्रुव बर्ते राज सुख लिप्त होइ कहुं नाहिं ॥
यहि बिधि कुलिस सहस वर्ष कीन्ह्यो भोग बिलास ॥
कछु दिन बाकी रहे जब तब मन भयो उदास ॥

कमल छं० साधु बिप्र । भोलि छिप्र ॥ पूछि काम । दीन दाम ॥

गीतिका छं० दियो राज काज सुपुत्र कहं पुनि आपु बनहिं सिधायहू । जहं कीन्ह प्रभु सें आय तहं हरि केर ध्यान लगायहू ॥ कछु काल बीते बिष्णु केर बिमान ढिग आयो भलो । गरा

लिहि निधुंवै चढ़ाइ तापर हर्षि बैकुंठै चलौ। ध्रुव कह्यौ ति-
नते मातु हमरी रहत तेहि लै लीजिये। वह जात चढ़ी विमान
आगे देखि आनन्द भीजिये॥ यहि भाँति पहुँचे जाइ ध्रुव का-
अचल हरि पदवी दई रघुनाथ सकल नक्षत्र अजहूँ करत
परिकर्मा हई ॥

दो० ऐसी हरि की भक्ति है ताहि करत जे नाहिं॥ ॥
तिन्हैं जानिये पशु सम सींग पूंछ बिन आहिं
ध्रुव चरित्र रघुनाथ जन कह्यं संक्षेप बखानि॥
पढ़े सुने करि नेम तेहि होय दैन्य दुख हानि

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास
रामसनेही कृत ध्रुवचरित्र वर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
अब नरसिंह पुराण की कहौं इतिहास बखानि॥
जगत विदित बैकुण्ठ है जहां बसत भगवान॥
द्वारपाल जै विजै दोउ अति भुजबली सुजान॥
एक बार सनकादि तहँ आये जनु चहुँ वेद॥
ब्रह्मानन्द मगन मन बाल सरूप अभेद॥

चौ० रमानाथ के दर्शन हेता॥ लखे जात अरषि हरषि निकेता
जय रु विजय दोउ रोकि बखाना॥ बिन आयसु नहिं पैहो जाना।
सुनि मुनि दीन श्राप करि कोहू॥ तीनि जन्म लक राकस होहू॥
भयो सोर सुनि सब हिन जाना॥ श्री सहित आये भगवाना॥
कहहु निइन बहु कीन्हों पापा॥ सुनि भल कियो दियो जो श्रापा
तब बोले सनकादि विचारी॥ प्रभु अपराध कीन्ह हम भारी॥
इन आपन धर्म पालन कीन्हा॥ बिन अपराध श्राप हम दीन्हा।
कहहु जय विजय सुनो गोसाईं॥ इहाँ तुम्हार दोष कछु नाहीं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निज कृत दुखसुख सब कोइ लहई॥ समुझे बिन सो आनहिं कहई
जो तुम नाथ दंड मोहिं दीन्हा॥ सो हम मानि अनुग्रह लीन्हा॥
सुर हेलन प्रभु आज्ञा हानी॥ उपज्यौ महा पाप दुख दानी॥
सो सब अघ मम कीन्हौं नाशा॥ कृपासिंधु सम हम हरिदासा

दो० अब करि करुणा देहु हम जहँ जनमी जाय॥
तहँ तहँ प्रभु के नाम को सुमिरन बिसरि न जाय॥

चौ० मन्द जोनि कर बासन कोई॥ केहु भाँति हरि सुमिरन होई
सुनि तिन केरि साधुता देखी॥ सहित लाज दुख भयो बिशेषी
कह हरि तुम कल शोच हि करहू॥ मम इच्छा सोइ मन में धरहू॥
अब सब मिलि मो करहु उपकारा॥ जेहि ते होइ इनकर उद्धारा॥

दो० एक जन्म लक्ष्मी कह्यो सनकादिक इक बार
एक जन्म भगवान कह हम करिहैं उद्धार॥
अस कहि सनकादिक सहित हरि गृह चले सिधाय॥
कछु दिन बीते जय विजय भे दिति के सुत आय॥

दीपक छं० कनककसिप हाटक नयन दैत्य बली दोउ भाय दैत्य बली दोउ भाय छीनि इन्द्रासन लीन्हों। निरजर दिये निकारि हुकुम अपनो ही कीन्हों॥ एक बार हरनाक्ष धरा लै गयो पताई। धरि वराह अवतार ताहि हरि मारयो आई॥ हरनाकुस तप को गयो इन्द्र सून सुन पाइ॥ लै लीन्हों पुर आपनो त्रिय दइ कैद कराइ। दुखित जानि नारद तहां आय दियो उपदेश। आय दियो उपदेश शोक तेहि कछुक मिटायो॥ गर्भ रहैं प्रहलाद ज्ञान सब तामें पायो॥ रहे तहां बहु काल मातु के उदर के माहीं॥ करें भजन मन मुदित कष्ट तन व्यापै नाहीं॥ हरनाकुश को सिद्ध भो तप विधि आयो आइ। अहो पुत्र बर मांगिये रिधि सिधि जो मन भाइ॥ जो मोपर परसन्न प्रभु तो रीझि वर देहु तो-

दीजै बर यह हमै जो स्र रितुमारी। मरौं न काहू हाथ बात मोको यह प्यारी॥ राति दिवस नहिं मरौं गगन महि जल ह थि-यारा। दैकै बर विधि गयो भयो तेहि हर्ष अपारा॥ गरजि चल्यो घर आपने सूनो देख्यो आइ। कोपि चक्यो ग्रा फिरि इन्द्र ते सुर पुर लीन छिड़ाइ॥ घर लायो त्रिय आपनी जन्म लीन प्रह लाद ज-न्म लीन प्रह लाद भयो तेहि आनंद भारी। दिये दान गज बाज याचकन किये सुखारी॥ करै राज्य मन मगन विप्र गौवन कह मा-नै। हरि देवन ते द्रोह आपनो बैरी जानै॥ यह भांतिन बीतत भये भो-ग करत कछु काल। बड़े भये प्रहलाद तब खेलें जहँ कहुं बाल॥

मनोहर छं० सुनो एक हाल तेहिं नगर कुम्हार बसै धो खेत ते बिलारी बच्चा आवाँ में लगायो है। पाछे सुधि आई शीस धुनै पछिताई तहां आये प्रहलाद बात कहि समुझायो है॥ जपो रा-म नाम जासे सरै सब काम निशि बीती चारियाम राम राम रटला-यो है। होत ही प्रभात खोल्यो लाग्यो सब रेगन को मिटि गयो शो-क प्रह्लाद मन मायो है॥

चतुष्पदी छं० एक दिवस मुरारी मनहिं बिचारी पढ़न योग प्रहलाद भयो। कवि गुरु के लरका सरडा मरका बोलि तिन्है सुत सौंपि दियो। संग चट सारा तहँ बैठारा बाल अपारा जहां रह्यो पाटी कर लिहुं ओंनम सिद्धं पढ़ो द्विजन यहि भांति कह्यो॥ तेहि अर्थ लगायो पाति बहायो निरख वरवरा मैं राम लिख्यो। लखि विप्र सुजानी कहि मृदु बानी अरे पुत्र यह काहु सिख्यो॥ तब पितु सुनि पैहैं बहुत रिसैहैं मोरिहै धरिहै सिर खारी। ताते य-हि वारी डारु बिगारी मानहुं सुत बानी मोरी॥

पादाकुलक छं० कह प्रहलादा। युत अह लादा॥ विप्र सुनीजे। सत्य भनीजे॥ विद्या नामा। उभै जु तामा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अधिक को आही। पढ़ौं मैं ताही ॥

तोटक छं॰ सुनियं सुत बेद पुराण कहै। बिद्या सम ना धन और अहै ॥ नहिं चोर चोराय सकै न जरै। सुख देश प्रदेशन भूप हरै ॥ गुण रूप पराक्रम बुद्धि धनी। सुत सेवक बंधु अनेक धनी ॥ बिन बिद्या सोन र सोहत यों। बहु हंसन में बक बाम लख्यों ॥ तेहि ते सुत बिद्या नित्य पढ़ो। जेहि पाबहुगे जग यश्च बढ़ो ॥ अस बैन सुने द्विज के जबहीं। प्रह्लाद जु बोलि कह्यो तबहीं ॥

दो॰ बिद्या धन कुल रूप मद प्रभुता यौवन नारि ॥
ये बाधक हरि भक्ति के कहहु बुध बेद बिचारि ॥

बरवै छं॰ तेहि ते मैं यह बिद्या पढ़ब न नाथ। सुनि महि सुर प्रह्लाद के गहि दोउ हाथ ॥ लाये जहं हरनाकुश कहि निविसाइ ॥ पढ़ै न नव सुत राजन हमहि सिखाइ ॥

कडुखा छं॰ बिहंसि प्रह्लाद को गोद बैठारि कै कही मुख चूमि सुत पढ़ो काह्यो ॥ राम ही नाम सब पढ़न में सार है पढ़ा हम सोई सुनि हृदय दाह्यो ॥ कहत बुध बेद यह दुष्ट की रीति है प्रीति आपुही में अधिक लावै ॥ ज्ञान बैराग्य हरि भक्ति भव भय दहन नाम गुण ग्राम जेहि नाहिं भावै ॥ कंहो हंसि देव सठ कूर ऐसो बड़ आइ कोइ बाल भुरकाय दीन्हा ॥ बहुरि प्रहलाद ले कहत सुनि लीजिये शत्रु को नाम नहिं कहो लीन्हा ॥ सकल जग ईश सब जीव को पोषता तासु ते तात का बैर कीजे छांडि मद मान अभ्रम नहिं दै धौं करो हरि भजन जग सुयश लीजे ॥

दो॰ शत्रु न काहू के कहूं हरि मित्र कहूं नाहिं न तात ॥
जैसो देखै मुकुर में तैसो नाहिं लखात ॥
सुने बचन अस असुर पति रिसि बस नैन निकारि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहिसिद्धिजगतेयाहिलैजाइपढावोमारि॥

हाकलिकाछं० मुनिपुनिद्विजलायेचटसारहि। लि-
खिदीन्हिनिसुतपढोपहारहि॥ आसुरायसुरकहैंकछुका-
महिं। पोतिलिख्योप्रह्लादश्रीरामहिं॥

शशिवदनीछं० लखिबालकसब। ढिगआयेतब॥
सखातेजैसे। बोलेऐसे॥

दो० कहाशिसुनप्रह्लादतेहबनुमकरतेकाहि॥
मातपितागुरुजोकहैंप्रभुहितकीजैनाहि॥
मुनिबोलेप्रह्लादतबमातपितागुरुसोइ॥
कैंजोमनमुखरामकेजहँलगनिजबलहोइ॥
अमृतपलटेदेइविषपारसबदलेकांच॥
जानिबूझितेहिलेइकोउकहौसखासबसांच॥
पढनसुननसोइसफलजोरामचरणरतिहोइ॥
नातरुफिरिमूरखभलाबादमठानैकोइ॥

चौ० सुनहुतातयहिजगकेमाहीं॥ दुखनिशिदिनसुखसपनेहुनाहीं
देखहुतुमनिजहृदयविचारी॥ उपजनचारिखानितनुधारी॥
अंडजजोअंडातेहोई॥ पिंडजप्रगटगर्भतेसोई॥ ॥
स्वेदजप्रसवीकरतेमानो॥ उद्भिजसंगवाकरमानो॥ ॥
भ्रमतजीवसबयोनिनमाहीं॥ दुखबहुभांतिवरणिनहिंजाहीं
पापपुण्यजबसमदोउहोई॥ ईशकृपानरतनलहैसोई॥ ॥
प्रथमजीवजलमाहींआवै॥ जलतेंबहुरिअन्नमेंजावै॥ ॥
जाकेभवनजन्मभाचहई॥ सोईअन्नखातवहअहई॥ ॥
अन्नतेरसरसतेसुखकारी॥ रुधिरवीर्यएकसामनिहारी॥
ऋतुवन्तीरतिदानहिंपावै॥ तबसोइजीवगर्भमेंआवै॥ ॥
रजवीरजयकदिनमहँमिलई॥ पंचयेंदिनबुदऽउठिखिलई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सतयें दिन फेना उठत दसयें पिण्ड पल बीस ॥
मास दिवस जब होत तब निकसन लागत शीस ॥

चौ० उभै मास भुज जांघ लखाई ॥ तिसरे पेट बिलगाहै जाई ॥
वेद मास अगुरी कच रोमा ॥ हाड़ मांस सब तुचा गुछोमा ॥ ॥
पूरण गर्भ सातयें मासा ॥ अठयें वाक सहित चल स्वासा ॥
नवयें मास चेत भा भाई ॥ पूर्व जन्म सत की सुधि आई ॥
विष्टा मूत्र उभर है वाहें ॥ चोटत कीट अनल तन दाहें ॥ ॥
पीड़ित सदा अधो मुख रहई ॥ तहं न मात पितु के हि दुख कहई ॥
तब भय बाल केरि सुधि कीन्हा ॥ बोलत भयो वचन है दीना ॥ ॥
दीन दयाल कृपाल मुरारी ॥ अशरण शरण हरण दुख भारी
प्रभु याहि बार माहि निरवारो ॥ कर्म क्षेत्र में लै तनु डारो ॥ ॥
तहं तव चरण कमल चित लावों ॥ जाते गर्भ वास नहिं पावों ॥

दो० चारि ठौर सब नरन के कछु वैराग बढ़न्त ॥
गर्भ माहिं सब के निकट कथा सुनत रति अन्त ॥
बिनय सुनी तब कृपानिधि पवन चलाई एक ॥
योनि छांड़ि बाहर भयो भूल्यौ ज्ञान बिवेक ॥
पिता शुक्र बहु ते कुंवर मा रज अधिक कुमारि
रज बीरज दोउ सम तहां होत नपुंसक धारि ॥
कर्म होत जैसे कछु तैसाही फल होइ ॥ ॥
तैसाई दुख सुःख को भोग करत नर सोइ ॥
कर्म सो त्रैविधि संचित प्रालब्धि क्रियमान ॥
भरे धरे वपु करे जस तस भोगे तन आन ॥

चौ० यहि बिधि लीन जन्म जग आई ॥ छिनयक बचन बोलि नहिं जाई
पुनि माया कछु चेत तब जाग्यो ॥ कहा कहा कहि रोवन लाग्यो
सुत उतपति सुनि पितु महतारी ॥ हर्षित गान करें मिलि नारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

छठीभईपुनिबरहोकीन्हा ॥ नामकरणशिशुमुखमेंदीन्हा
करतमूतबिष्ठाजहँपरिया ॥ स्वछास्वछगनतनहिंकरिया ॥
माताहूकछुभेदनजाने ॥ सुतधौंकेहिहितरोदनठाने ॥ ॥
मनअनरूपितकैरेउपाई ॥ जेहितेंअधिकहोतदुखआई ॥
पाँचबरसबालापनगयऊ ॥ पुनिपवगंडअवस्थाभयऊ ॥
पढ़िसुनिखेलकूदकेमाहीं ॥ नवसंवत्गनचेत्योनाहीं ॥
जननीकहतपुत्रबहुभयऊ ॥ यहनहिंजानतसुतघटिगयऊ
बहुरिकुमारअवस्थाआई ॥ कसबकरनलाग्योहरषाई ॥
भाबिवाहबरभामिनपाई ॥ प्रमुदितषोडसबरषबिताई ॥
तबतहँतरुणअवस्थालागी ॥ कामअगिनिहिदेबिचजागी
बनितनतेअतिहेतुबढ़ायो ॥ आपनसुखतिनमेंलखिपायो

दो॰ यथागृहपसथकाश्वलैचरिचावतसहप्रीति ॥
निजतासुरतमनुजमधिमानततोषअभीति ॥
तनहेरैफेरैनयनबयनबदैमदमाथ ॥ ॥
हिंसारतनिजमतचलैमलैभोछदोउहाथ ॥

चौ॰ चालिसबरषलोगतरुणाई ॥ रहीथहुरिआईथिरथाई ॥
भयेपुत्रउपपुत्रघनेरे ॥ होतदुखीतिनकेदुखसेरे ॥ ॥
निशिदिनचिन्ताकरतअपारा ॥ सबनकेरमोसेप्रतिपारा
कहुअबकुशवारीकेजीवैं ॥ कोतेहिचारादेतसदीवैं ॥ ॥
तिनकेहेतकरैअघनाना ॥ नहिंजानेमरियमपुरजाना ॥
भजेनहरिहरिजनगुणलीला ॥ कहेनसुनेमुदितमनशीला
बालनहींथिरआपनगयऊ ॥ जराअवस्थाआवतभयऊ ॥
तनबलगयोगिरेसबदाता ॥ डगमगचलतसुनतनहिंबाता
दृगजलबहतअकामबिचारी ॥ लीन्होघातदुखोरडारी ॥
परेपचरिबाकछघामनताने ॥ अंगगलकहैकहाँकोउपाने ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तृषा लागि जल देत न कोई ॥ बकत तहां मुख आवत जोई ॥
घर के कहैं मरिउ नहिं जाही ॥ कायम राज बिसरिगे याही ॥
जिनके हित परलोक बिगारा ॥ ते सब जियत ते कि हि नि किनारा ॥
इक दिन यम गणलीन्हिं निमारी ॥ सुतन दीन पुर बाहेर डारी ॥
लै जब गये दूत यम पासा ॥ देखत दीन्हिनि नर्क महं बासा ॥
प्रथमे दुखद नर्क भुगतायो ॥ पुनि चौरासी में जनमायो ॥

दो० जीवत नाना दुख सह्यो ॥ बिना भजे भगवन्त ॥
अब चौरासी के बिषै भोगौ कष्ट अनन्त ॥
धृग धृग ताकी बुद्धि को नर तन बो हित पाइ ॥
तरैन जो जग ः लधि सो आतमहत गति जाइ ॥

चौ० तेहि ते तात तर्क परिहरहू ॥ राम भक्ति हिरदे महं धरहू ॥
यथे अम्बु मुक कुशर सपाई ॥ उवै दिवाकर पश्चिम आई ॥
मृगजल निरखि तृषा बरु जावै ॥ राम बिमुख सुख जीवन पावै ॥
सुनि सब बालक बोले सोई ॥ इक संशै हमरे मन होई ॥ ॥
हम तुम जन्म लीन इक संगा ॥ खेलत रहेनु बिहंग तुरंगा ॥ ॥
तुम हरि भक्ति कहां यह पाई ॥ सुनि दुर्लभ पुराण स्रुति गाई ॥

दोधक छं० सुनि प्रहलाद कह्यो हरनाक्ष जब ॥ मारो गयो पित शासप को तब ॥ इन्द्र सकोपि दैत्य पुर छेकि कै । मातु हमारि सगर्भहि देखि कै ॥

भुजंग प्रयात छं० बिचारयो हिये में नवै पर्वतारी । असुर शुक्र ते गर्भ याके मझारी ॥ धेयाहि नीको न तौ शत्रु होई । करी नारि आगे खलीदुष्ट सोई ॥

दो० तेहि अवसर नारद तहां आइ कही असि बात ॥
यहि के उर हरि भक्त हैं सुर सुखदायक तात ॥
सुनि के नारद के बचन तब चलि भये सुरेश ॥

दुखित देखि मुनि मातु कहँ लगे देन उपदेस॥

**सवैया** तजि शोच हिये हरि नाम धरो जो है सुखदायक दुःख प्रहारी॥ जेहि ध्यावत शेश गणेश दिनेश ऋषी सनकादि उमा त्रिपुरारी॥ सुत बन्धु सखा त्रिय मातु पिता धन धाम सबै रवि को भव धारी। ता बिच धावत है मृग ज्यों न जपै जगपालक सिन्धु सुरारी॥

**दो०** यहि बिधि मुनि मम मातु कहँ उपदेस्यो दिन सात॥
मैं सचेत जननी जठर सुन्यो कहो सोइ तात॥

**चौ०** सुनि प्रहलाद बचन अनुरागे॥ दण्ड प्रणाम करन सब लागे
भल उपदेश हमै तुम दीना॥ मातु पिता स्वारथ रत चीन्हा॥
अस कहि बैठे निज २ ठामा॥ लागे लिखन राम ही रामा॥ ॥
तेहि औसर दोउ महिसुर आये॥ प्रहलादे लखि बचन सुनाये
बिद्या पढ़ो छांड़ि शठ ताई॥ हठ कीन्हे कछु नाहिं भलाई॥
हाठक नयन बहुत हठ ठाना॥ मारे गये हैवें तब जाना॥ ॥
भक्ति पक्ष कर हठ है नीका॥ शठता कर हठ दुख प्रद जीका
सुनि रिस करि द्विज धरि दोउ हाथा॥ लाये तहँ जहँ निशिचर नाथा
महाराज तब सुत यह कैसा॥ कालकूट हरि घट महँ जैसा॥
राम राम जय राम पुकारे॥ पढ़त न विद्या हम पचि हारे॥ ॥
विप्र बचन सुनि गोद उठाई॥ बोला अधिक सनेह बढ़ाई॥
तुम सुत जेठ सब सुखकारी॥ तुमही राज के र अधिकारी॥
ताते विद्या पढ़ो सचेता॥ सुखद सिखावन सुत तब हेता॥

**निशिपालिका छं०** यदपि तुम तात यह बात हित की कही। तदपि मोहिं नीकि नहिं लागि तन को सही॥ लोक में सुखद परलोक में अकाज को ताते हों न पढ़ौं नात करौ नाहिं रज को

**राशिवदनी छं०** सुनि असि बानी॥ अति रिस ठानी॥

अवनि गिरायो। गजहिं मंगायो॥ कह यहि लीजे। पगत्तर दीजे॥ बड़ दुखदाई। बधे भलाई॥

मधुभार छं॰ प्रह्लाद की मात। सुनी यह बात॥ गई पतितीर। कह्यो धरि धीर॥

मालिका छं॰ नाथ बात मानि मोरि। पुत्र बधे बड़ी खोरि॥ दास नीच की समान। परा रहीं दहु जान॥ छोड़ पुत्र आहि लेहु राजकाज ताहि देहु॥ ऐस ज्ञान ना दिदीन। कहे सुने छमा कीन॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत प्रह्लाद चरित्र बर्णनो नाम पंच बिंशो ध्याय: २५॥

दो॰ सुमिरि बिराम सिय सन्त गुरु गरापति गिरा सुखदानि॥
बरणों श्री प्रह्लाद को पुनि इतिहास बखानि॥
तब निज सचिव पठायो आयो जहं प्रह्लाद॥
बोल्यो सुत विद्या पढ़ो तजि हठ बाद विवाद॥

पद चेटक छं॰ अधनिंदे ते तनु राखि सोह। तुम यत्न करो हरि पद सनेह॥ मल मांस मूत्र के कहे प्रधान। ऐसे तन का शोचै प्रधान॥ कोइ अल्प काल कोइ कल्प माहिं। मरना बिशेषि कछु रहन नाहिं॥ अबहीं चाहौं डारे सो मराइ। पर राम नाम नहि तजब भाइ॥

दो॰ अल्प काल जीवन भला राम भक्त जो होइ॥
भक्ति हीन सत कल्प तक जीवै बिरथा सोइ॥
कहै रघुनाथ अनेक विधि सचिव रह्यो समुझाय॥
मान्यो नहिं प्रह्लाद जब तब उठि गयो रिसाइ॥

तारक छं॰ तहि समय पुरलोग जु आये। आरत है अस बैन सुनाये॥ नाथ सुनो बड़ सोच हमारे। बालक सबै प्रह्लाद बिगारे॥

तोटक छं॰ तिनकी दशा नहिं जात कही। कहुं रोवत हांस-

तहालसही॥ कहुं नाचत गावत गोपरहे। पुलकांग विलोचन नीर बहे॥ हरिनाम निशंक रटैं मुखते। किनधेउ पिऊरव कहै हमते॥ धृगजीवन है जगमे तिनको। मन लाग नया समें जिनको।

दो० सुनो नाथ प्रहलाद जो फिरि जैहै चटसार॥
तौ हम बसिबे अनत कहुं त्यागब नगर तुम्हार॥

तारक छं० या विधि के मुनि बैन सुरारी। मुष्टिक एक भवाइ के मारी विप्रन ते पुनि बोल्यो रिसाई। खोय हु बालक भक्ति पढ़ाई

दो० गुरु नन्दन तुम बन्धु दोउ नांत करिय न रोष॥
भयो कालबश बाल यह विप्र तुम्हार न दोष॥

चौ० अस कहि पुनि सुत के दिशि डोला॥ राम नाम सुमिरत लखि बोला
अबलें मानि लेहु मम बानी॥ नाहित होत प्राण की हानी॥ ॥
सुनो तात संतन की टेका॥ छूटन जो दुख परे अनेका॥ ॥
सुनि प्रहलाद बचन करि क्रोधा॥ बांधौ अधम अचारि सियोधा
राजकुवांर सके को बांधी॥ सुभट समूह रहे उपसाधी॥ ॥

चतुष्पदी छं० तब आपुइ धावा बांधि बनावा गिरि ते दीन्हेसि डारी। उपरे हरि लीन्हों भू धरि दीन्हों लागिन नातिवयारी॥ पुनि जकड़ जंजीरन नीर गंभीरन दिहिसि दुष्ट बोरवाई॥ सांकर कह तोरी भक्तहि छोरी किहिं निकिनारे आई॥ तब गजमगवायो नरडुवायो देखत कुंजर भाग्यो। महि खोदि गड़ायो अहिल पठायो तिहि छण विष तिन त्याग्यो। नृप कैं बहु दाग्यो धावन लाग्यो मुनि केस्यो सिर आरा॥ दोउ चरण बंधायो उरधटंगायो तीरन सकि तकि मारा॥ उरछुस्यो न एका ताप अनेका नाम प्रताप न व्यापी। सब करौं विवादू यहि दिग जादू तेहि बल बचन प्रलापी॥ सुनि ताकी भगनी हरवर भगनी नाम ढूंढ़ला आई। उरलै प्रहलादे अति अहलादे बैठि अगिनि लगवाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठ कपाट लै आवैं। डारैं तेहिं माहीं छप्पर ढाहीं चरख फरक जो पावैं॥ बल्लन की माला नर भख वाला गुहि गुहि आइ चलायो। जापिये मनु लाई हे सैं ठगाई बड़ हरि भक्त कहायो॥ भोरहि प्रहलादा सुत अप्रहलादा बैंद धूरि उड़ावैं। जरि गे तम चारि दुष्टनि नारि न अमिजैरगरियावैं॥ भाषत रघुनाथा यह सब बात्ता भइ सत युग के माहीं॥ करि साधु से द्रोहा होहिं बस मोहा प्रबल गुजारी जाहीं॥

दो॰ देखि सखा प्रहलाद के हर्षि मिले सब धाय॥
दनुज राय बोलत भयो सुनि निज दिग बैठाय॥

सुन्दरी छं॰ हौं बहु त्रास दई सुत तोकहं। लद्यपि तू न डरै कछु मोकहं॥ तात सुनो जिनके उर हैं हरि। ते निभैं कोउ काहू सकैं करि। तौ लग संश्रित शोक सतावत। जौं लग राम क नामन ध्यावत॥ हैं सब ताप प्रनाशन को गद। देखु समीप अहं बपु तेहद॥

मधुभार छं॰ सुनि बचन ऐस। सर लाग जैस॥ गहि खम्भ धाइ। बांधिसि रिसाइ॥ तब आग हर्षा। मैं कीन फर्षा॥ कर खङ्ग काढ़ि। जनु तड़ित गाढ़ि॥ बोला कठोर। कहं राम तोर॥ जेहि रहेसु घेर। अब राखि लेइ॥

विजय छं॰ राम हमार हवै सचराचर मैं नहिं मानु तौ यौं लखि लाजे। नाम के अक्षर चौगुण कै पुनि पांच मिलाय कै दूगुन कीजे॥ आठ का भाग दिहे रघुनाथ बचै युग अंक सही मनु दीजे॥ मोहूं में राम है तोहू में राम है खड्ग में राम है खम्भ सुनीजे॥

स्त्री छं॰ खम्भा। माहैं। धाय्यौ। जैसे॥

दराडक छं॰ गगड़ गड़गड़ान्यो खम्भ फाटो चर चर चराइ निकस्यो नर नाहर को रूप अति भयानो है॥ ककटक टकटावै दाढ़ै दसन लपलपावै जीभ अधर फरफरावै मोस

व्योम व्याप्य मानो है ॥ भभरि भरभराने लोग डड़रि डरपराने धाम थथरि परथराने अंग चिते चहन रवाने हैं । कहत रघुनाथ कोपि गर्जे नर सिंह जैवै प्रलै को पयोधि मानो तड़पि तड़ तड़ानो है ॥

गीतिका छं॰ गर्जो महाधुनि घोर शब्दक सोर तिहु पुर भयो । चौंके बिरंचि डेरान बासव ध्यान शंकर तजि दयो ॥ लैलरबरत दिग्गज कोल कूरम कल मल्यो अहि महि हली । नरनाग सुरमे बिकल उछर्यो सिंधु जल मारुत चली ॥

चौ॰ दनुजराज देख्यो नरहारी ॥ बोला बचन सक्रोध पुकारी ॥ रे हरि कुहक तोरि मैं जाना ॥ छल करि बध्यो बंधु बलवाना ॥ तासु बैर लेने हित तोहीं ॥ खोजि फिर्यो कहुं मिल्यो न मोहीं ॥ अब नर हरि तनु धरि मम नेरे ॥ आयो कठिन काल के पेरे ॥ अस कहि कीन्ह सि गदा प्रहारा ॥ गहि नरसिंह धरनि दै मारा ॥ पुनि उठि लरत धरत हरि धाई ॥ बहुत काल इमि भई लराई ॥ बिकल जानि सुरसमा निवासू ॥ ऊरु धरि उदर बिदार्यो तासू ॥ लखि सुर हरषि सुमन बरषायो ॥ जय २ कहि दुंदभी बजायो ॥ आंतै काढ़ि पहिरि उरहारा ॥ तदपि न निघटत क्रोध अपारा ॥ नारदादि सनकादि मुनीशा ॥ सहित शक्र कमला जगदीशा ॥ डरहिं सकल कोइ निकट न जावैं ॥ दूरहि ते सब बिनय सुनावैं ॥ कह बिधि कमला ते तुम जाहू ॥ निकट बासिनी हरि की आहू ॥ सुनि कमलाकर कानन धारा ॥ हम अस रूप न कबहुं निहारा ॥

दो॰ तब सुर सब प्रहलाद की बिनय किहिनि ढिग आय ॥
चतुरानन बहु प्रीति ते बोले हृदय लगाय ॥
निकट जाहु प्रहलाद तुम हम सब देव डरात ॥
सुनत गयेनरसिंह पहं हरष शोक नहिं गात ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० दीनदयाललभक्तिउरलायो ॥ बिछुरेवनबालकजनुपायो ॥
हासुततोहिंनीचदुखदीन्हा ॥ पायसिफलखलआपनकीन्हा ॥
अबमोहिंअतिप्रसन्नजियजानू ॥ मांगुतातअभिमतवरदानू ॥
सुनहुनाथतवभक्तिजेकरहीं ॥ मनमेंकछुकामनाधरहीं ॥
नैवैवनिकनआसिककानी ॥ कृतउद्योगनफलअनुमानी ॥
हमैंनकछुचहियेकिरपाला ॥ सुकृतसुभक्तिहिदेहुदयाला ॥
यहवरदानमिलेप्रभुमोका ॥ बिमुखपितापावैपरलोका ॥
सुनिनरसिंहकह्योहरषाई ॥ सुनहुतातममभक्तिबड़ाई ॥
कुराइलिया जाकेकुलमेंभक्तममनामलिआईहोय, एक
एकशतआपनीपीढ़ीतारतसोय ॥ पीढ़ीतारतआयपिताकी
चौबिसजानौ ॥ माताकीगनिबीससबामकीषोडसमानौ ॥ द्वा
दशपुत्रीऔरएकदशभगनीताके ॥ दशभुवाकीऔर
आठमौसीगेजाके ॥

दो० कुलपवित्रजननीसफलभागवतीमहिवास ॥
स्वर्गस्थितपितरोपिधनुजेषुवंसममदास ॥

चौ० जबजगपतिअसवचनसुनाये ॥ जनप्रहलादहियेअतिभाये ॥
जामेंजासुप्रेमपरतीती ॥ सोतेहिप्रियलागतयहरीती ॥ ॥
पुनिनरसिंहकहीअसिबाता ॥ वचनहमारमानियेताता ॥
यद्यपितुम्हेंइच्छाकछुनाहीं ॥ तदपिमन्वंतरराजिकराहीं ॥
गीतिकाछं० करियेमन्वंतरमेंककीसुखराज्यअबमोरेक
हे । होडरनमायानेतुम्हारीबिनेकरिहरिपदगहे ॥ ममतेरूपा
हिचरित्रनितसहमोदमुनिहैंजेगाइहैं । रघुनाथतेनिहसं
कहीकर्मबंधतेछुटिजाइहैं ॥

दो० यहचरित्रप्रहलादकरबरणौजनरघुनाथ ॥
श्रीगुरुदेवादासकेचरणकमलधरिमाथ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतप्रह्लादचरित्रवर्णनोनामषटविंशोऽध्यायः२६॥

दो॰ सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
मारकण्डेयपुराणकछुमंगलकहौंबखानि॥
रघुपतिइच्छाप्रकृतिसोरचब्रह्माण्डअनेक॥
बिधिहरिहरगुणधायिबहुकबहुकबहुरहेएक॥
पुनिसौनकबोलतभयेनाथकहौयहिबार॥
अवधपुरीभूलोकमहँआईकेहिपरकार॥

चौ॰ कहासूतसुनियेमुनिज्ञानी॥यहीभेदमैंकहौंबखानी॥
एकबारजलबाढ़तभयऊ॥सबब्रह्माण्डबूड़ितहँगयऊ॥
लैजीवनकीतत्वभवानी॥आदिबिष्णुमहँआइसमानी॥
हरितबधीनशयनपरकीन्हौं॥मोहिमायाजगननदीन्हौं॥
बिष्णुस्वासतेभेचहुबेदा॥आदिअन्तजेबरणतभेदा॥
नाभितएककमलतहँनिकस्यो॥सोपंकजजलऊपरबिकस्यो॥
तबतामेब्रह्माभेआई॥चारिभुजामुखचारिलखाई॥
जबबिलोकिबिधिहृदयबिचारा॥कहँमाताकहँपिताहमारा॥
कमलनालगहिलरकागयऊ॥पुनिऊपरकहँआवतभयऊ॥
निःफलबारअधऊरधआयो॥पदुमनाभकरअंतनपायो॥
तबनभतेभैगिरासोहाई॥मिलीनप्रभुबिनतपसबकाई॥
मुनिअजचितधयानमेंदयऊ॥बहुतकालपरदरशनभयऊ॥
सयुताछं॰ तहँबिष्णुकेश्रुतिमैलसं।प्रगटेअसुरयुगसैल मे।लखिकेतिन्हैंब्रह्माडरयौतबदेवकीबिनतीकरयो॥
शशिवदनीछं॰ जयजयमाता।सबसुखदाता॥जग-तकहावै।सबउपजावै॥
सोमराजीछं॰ नाहींआदिमाया।निगमनेतिगाया॥

तो हीं कीन्हि हर्षित तोहीं विश्वभरणी ॥ जलज माहि मोहीं।
प्रगट कीन्ह तोहीं। जगत वसि तुम्हारे। तरुण दृढ़ वारे ॥
पादाकुलक छं० हरि बस तोरे। सोवत भोरे॥ देहु जगाई।
करें लराई। असुर संहारें। हमें उबारें। सुनि तब माया। हरिहि जगाया।
चौ० मधु कैटभ देख्यो हरि जागे। दोउ ब्रह्मा कहं मारन लागे॥
तो हीं विष्णुहि दियो जगाई॥ तब ब्रह्मा अति शरन चाई॥ ॥
कैटभ दीखहु प्रभु कहं आये॥ क्रोधित है असुरन पर धाये ॥
होन लागि जल माहिं लराई॥ जीति न जाइ बली दोउ भाई॥
पांच सहस्र बरष चलि गयऊ॥ मधु कैटभ तब बोलन भयऊ॥
हम प्रसन्न तुम पर भगवाना॥ लखि सूरता अहो बलवाना॥
तातें बर भावे सो लीजे॥ कह हरि शीस आपने दीजे॥ ॥
दो० हँसि बोले दोउ दीन हम जो तुम मांग्यो नाथ॥
पर जल में जनि मारियो बाहर काटो माथ॥
हरि छं० तब हरि उरु धारे॥ जल पर बध कारे॥
लीला छं० मरन लागे जबै। बचन बोले तबै ॥ भूमि तन-
न की सचो। रुधिर ता पै रचो॥
चौ० तब हरि असुर हते निज पानी॥ तासु ज्योति प्रभु माहिं समानी
तब ते मधुसूदन कहवाये॥ कैटभारि गुण आगम गाये॥
भूमि भई तिन तन की जानो॥ नाम मेदिनी ताहि बखानो॥
जल के ऊपर रही सो छाई॥ जिमि नलनी सर पर उतराई॥
जल कर पारावार सो नाहीं॥ कच्छप एक रहत तेहि माहीं॥
मस्तक कुम्भ चरण हग हेरे॥ कैयो कैयो योजन केरे॥ ॥
दो० सप्त सहस शत कोटि यक अर्ब योजन परमान॥
कूरम मुख पूरब दिशा पश्चिम पूछ बखान॥
चौ० तापर शेष नाग इमि रहई॥ जैसे मूल मेरु पर अहई॥

फनहजार तांके श्रुतिगाहा॥ यक फनपर यक रहत वराहा॥
मसक समान जानि नहिं पावा॥ अस तनु शेष सो आगम गावा॥
वसुधा दशन वराह के धारी॥ तिल सम गनै कोल अस भारी॥
कुराडलिया॥ आठो दिशि दिग्गज रहैं महि रक्षा हित दुंद।
ऐरावत पुनि पुंडरीक बामन चौथ मकुंद॥ वामन चौथ मकुंद पराजित यम सारभकुंज॥ हेमदंत परमान अठारह योजन के दुज। दुज है योजन केर सूँड़ि वै योजन पाठा॥ अष्टषट योजन ऊँच बली प्रति दिग्गज आठा॥
दो॰ यहि विधि थिर करि भूमि प्रभु विधि का आज्ञा दीन॥
सृष्टि रचो यहि धरणि पर सुनि विधि सिर धरि लीन॥
चौ॰ ब्रह्मा सृष्टि रचन जब थापी॥ पचास कोटि योजन भू नापी॥
मन ते विधि जग रचने लागे॥ इच्छे तेव हु सुत उपजावे॥
सनकादिक आदिक जे भयऊ॥ माया रहित सकल बन गयऊ॥
तब बांये भुज ते सतरूपा॥ दहिने उपजायं मनु भूपा॥
तिनहूं बन का कीन पयाना॥ लखि ब्रह्मा तब रोदन ठाना॥
ताते रुद्र प्रगट भे गोरा॥ कनरौव तह मरचव घनेरा॥
कोई छीन कोइ पीन विशाला॥ कोइ बिन सिर कोइ विपुल कपाला॥
कोइ बिन कर मुख दृग पग काना॥ कुटिल कराल के हूं के नाना॥
यहि विधि भूत बहुत उपजाये। एक हि एक ते हि मो खाये॥
तब विधि तिने बरजि सो पाये॥ रुद्रन सहित विष्णु पहं आये॥
प्रभु ते सब निज हाल निरूपा॥ मुनि मिलिगे जहं मनु सतरूपा॥
बोले सुवन राज्य चलि करहू॥ बचन हमार हृदय महं धरहू॥
सम संतोष दया सुविचारी॥ जहं तहं अहै सुखद व्योहारी॥
कह मनु हमैं पुरोहित दीजै॥ बोले विधि वशिष्ठ कहं लीजै॥
सुमन वशिष्ठ बचन अस भाषा॥ दस सूकर सम बकी रखा॥

दशचक्रीसम धुज यक होई ॥ दशधुजसरिस नायका सोई ॥
दशगारिका सम न्रप यक गावा ॥ दशन्रप सम उपरहित रहावा ॥
ऐसा मन्द कर्म मोहिं देहू ॥ अहो पिता मैं लेबन एहू ॥ ॥
मुनि बशिष्ठ के बचन पितामा ॥ कह सुत लाभ अग्र तोहि यामा
परमातमा ब्रह्म वर देहा ॥ धरिहैं रवि कुलान के गेहा ॥ ॥
तिन कहं तुम देखिहौं भरि नयना ॥ सुनि हर्षे बशिष्ठ बिधिबयना
पुनि मनु कह्यो थान मोहिं दीजै ॥ बिशद राज्य थानी जहं कीजै ॥

दो० सुनत बिधाता के करद ते दीन अयोध्या आनि ॥
मनुनाथ महि लोक महं श्रीपति को तनु जानि ॥
कठि कांती पग बंति कानाभि द्वारिका सोध ॥
हृद माया कंठ मधु पुरी काशी द्वारा सिर औध ॥
चौरासी योजन बिषे बसी कनक मय भारि ॥
द्वै शत छत्तिस कोस कर घेरा तासु निहारि ॥

चौ० एक इस अर्ब पांच से कोरी ॥ लाख बीन्ह तरि द्विज बर जोरी
चौदा लाख यकोतर धामा ॥ तपसिन के रहैं ऋषि तामा ॥
एक से अर्ब यकासी कोरी ॥ चारि लाख दुइ सत पुनि ओरी ॥
चारि हजार अपर फिरि हेरी ॥ यतनी बखरी क्षत्रिन केरी ॥ ॥
चौदा पदुम एक से अर्बा ॥ एते बेसन के गृह सर्बा ॥ ॥
चारि पदुम गृह शूद्रन केरे ॥ ग्रामन रुद्र कहत इमि टेरे ॥
बाराप्रस्थ और सन्यासी ॥ रहैं असंख्य असंख्य उदासी
यहि बिधि प्रजन सहित मनु राजा ॥ करैं राज सब सुखी समाजा
है सुत द्वै मनु के अभिरामा ॥ प्रियब्रत पद उतान सुनामा ॥

दो० बहुरि तीनि कन्या भईं सकल सुलक्षण खानि ॥
देवहुती अकूती परसूती ये जानि ॥ ॥

चौ० मनु ते भे मनु अ मुनिराया ॥ तेहि ते मानुष्य नाम कहा

राज्यकरतबीतेबहुकाला॥ यकदिनकीनबिचारभुवाला॥
बिषयकरतचारिउपनगयऊ॥ तदपिनइंद्रीतिरिपितभयऊ
भक्तिबिमुखसुखदुःखसमाना॥ असबिचारिबनकीनपयाना
नारिसहितन्रपनैमिखआये॥ हर्षिगोमतीमाहिंनहाये॥
तहांविप्रहरिदेवप्रबीना॥ कनकलतायुतनारिनबीना॥ ॥
करहिंतपस्याभगवतहेता॥ असनबसनतजिअवधनिकेता
लागेकरनतहैंतपआपू॥ द्वादशवर्णीमंत्रकरजापू॥ ॥
गौरश्यामसियरामस्वरूपा॥ धरैंअहनिशध्यानअनूपा॥
कन्दमूलफलकछुदिनखाये। पुनिसबत्यागिनीरपरआये
षटसहस्त्रसम्मतजलपीनो॥ पुनिभरिवबातसोउतजिदीन्हों
वर्षसहसदशभख्योसमीरा॥ पुनिसोउतजिदीन्होंमतिधीरा
मनअभिलाषयहैदिनराती॥ प्रभुकहंदेखिजुड़ाइयछाती
निरगुणनिराकारनिरखेदा॥ नेतिनेतिजेहिगावतबेदा॥ ॥
ब्रह्माविष्णुमहेशसुभेषा॥ जासुअंशतेहोतअलेखा॥ ॥

दो० सोइप्रभुसेवाबसरहतकहतनिगमअसगाय॥
जोयहसत्यतोपूजिहैममअभिलाषाआय॥

तोमर छं० इमिवर्षदशहज्जार। रहेदोउबिनआधार॥
कुशगाततनातनबारि॥ नहिंनेकमानीहारि॥

हंसमाला छं० लखितपअतिभारी। हरिअजत्रिपुरा-
री॥ चलिमनुढिगआये। मृदुबचनसुनाये॥

युक्ता छं० मांगहुबरसुतसोई। जोइच्छामनुहोई॥ मनु
कछुकहतनभयऊ॥ पुनिफिरिफिरिगयऊ॥

चौबसा छं० प्रभुजगस्वामी॥ अन्तरयामी॥ निजजन-
जान्यो। नन्यपिछान्यो॥

चतुष्पदी छं० नवमैनमवानी। सुनुन्रपरानीमांगहुजो

मनभावै। सुनिगिरासोहाई उठे मोटाई जिमि घरतेकोइ-
ञ्रावै॥ बोले हर्षाई प्रेमबढ़ाई सुनु सेवकसुर धेनू। बिधिह-
रि हर नायक सुरनसहायक प्रणतपालसुखदेनू॥ जो शम्भु-
हू भावै मुनिजन ध्यावै कागभसुराडसुखैना। सोइ रामञ्र-
नूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरि नयना॥ ञ्रसबचन विनी-
ता परम पुनीता सुनि प्रगटे भगवाना। शुभ तन घनश्यामं ल-
खि सत कामं लाजत नीरज पाना॥ शशिमुखछबिसींवा चि-
म्बुक ग्रीवा ञ्रधर ञ्ररुण सुक नाशा। नव ञ्रंबुज लोचन रि-
पुमद मोचन रद कपोल हरिहासा॥ भूषण मणिजाला उर
बनमाला भाल तिलक उरभारी। श्रुति कुण्डल लोला मुकुट
ञ्रमोला भृगुटी धनु ञ्रनुहारी॥ कटि कसे निषंगा कर सारं-
गा पीतबसन लपटाये। करि कंध जंनु ऊ कच शुभ तेहू विवि-
धि सुगंध लगाये॥ नख नखत छबीरा नाभ गंभीरा उदर रेख-
त्रै राजे। राजिव दोउ चरणा मुनिमन हरणा जिन ध्यावत ञ्रघ-
भाजे॥ जो सब जग मोहै वायं सोहै ञ्रादि शक्ति सुख खानी। जे-
हि ञ्रंश ते उपजैं ञ्र गणित प्रगटैं उमा रमा ब्रह्मानी॥ दोउ
रूप ञ्रनूपा मनु सतरूपा यकटक रहे निहारी॥ धरणि रहि सुजा-
ना हरणसमाना बपु की दशा बिसारी॥ प्रभु तुरत उठाये हृद-
य लगाये फेर्यो सिर निज हाथा। मांगहु बर सोई जो मन होई-
ई मुनि बोले नरनाथा॥ पद पदुम तुम्हारे देखि हमारे सब पूजे
मनकामा। लालसा जु एका है मंगिबे का कहत लगत भय-
नामा॥ जानत तुम स्वामी ञ्रंतरयामी पुरवहु मन ञ्रभिला-
षा। सब सकुच बिहाई मांगहु राई नहिं ञ्रदेव प्रभु भाषा॥
बोले महिपालक तुम सम बालक इन सम चहों पतो हू॥
विषइ कदू बजानो ईशान मानो देव यहै करि छोहू॥

दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि पुनि बोले सुनु राय॥
आपु सरिस पैहौं कहां महीं होब सुत आय॥

चौ० सतरूपा ते कह्यो बहोरी॥ देबि मांगु बर जो रुचि तोरी॥
जो पति मांगा सोइ प्रिय मोहीं॥ मानो मैं इच्छ्य करतो हीं॥ ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन छल हीना॥ कह प्रभु जो माग्यो सो दीना॥
अब तुम दोउ मम आयसु मानी॥ बसो जाय सुरपति रजधानी
तहें कछु काल रहेउ सुख पाई॥ युग त्रेता जब लगिहै आई॥
तब तुम हहु हो अवधभुवारा॥ तहँहें होब मैं तनै तुह्मारा॥ ॥
इच्छामय नर देह बनाई॥ अवतरिहौं अंशन युत आई॥
करिहौं चरित अनेक प्रकारा॥ जो सुनि नर हूहैं भव पारा॥
अस कहि पुनि प्रभु द्विज पहँ आये॥ सो गुरवर बचन सुनाये॥
नारि समेत विप्र अस भाषा॥ देहु नाथ बर यह अभिलाषा॥

दो० इन समान कंन्या मिलै तुम समान जामात॥
यह बर दीजे कृपा करि और न चाहिय तात॥

चौ० एवमस्तु कहि कृपा निधाना॥ बोलत भे सुनु विप्र सुजाना
त्रेता जनक होब तुम सोई॥ नाम सुनैना तुन कर होई॥ ॥
तब तब तनया शक्ति हमारी॥ हुहै अंशन संयुत्त न्यारी॥ ॥
मैं जामात्र मिलब सहं जाना॥ अस कहि भे प्रभु अंतरध्याना
मनु सतरूपा द्विज द्विज नारी॥ बसे जाय चहुँ स्वर्ग मँझारी॥
जब महि अवतरिहैं बरलागे॥ सो चरित्र बरणब पुनि आगे॥
हरिराय छं० यह इतिहास जो नैमें कही॥ लोमस रामायण मा-
हें सही॥ पदुम पुराण साखि पुनि भारे॥ सुनि कर कोइ संदेह न कारे

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ-
दास राम सनेही कृत ब्रह्मा की उत्पत्ति अयोध्या की उत्पत्ति शंभू
मन कथा बर्णनो नाम सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
बरणोंसुखसंहिताकछुविष्णुपुराणबखानि॥
चौ० कहसौनकशंभूमनुपाछे॥कौनराजकेहिकहियेआछे
बोलेमुनिजबनृपबनगयऊ॥तबउत्तानपाद पतिभयऊ॥
तिनतेध्रुवःतेसुतदूना॥कछुदिनपाछेहेगासूना॥ ॥
लखिबिरंचिप्रियव्रततेलयाये॥कीनिराजिभलिप्रजासिखाये
सातपुत्रातनकेभेचीन्हे॥तातेसातदीपकरिदीन्हे॥ ॥
दो० जंबूग्र्मोरपलाक्षहे सालीमल कुशचारि॥
क्रौंचसकलादीपघटपुष्करिसातबिचारि॥
सागरअंतरजानियेइनदीपनमेंतात॥
क्षारक्षीरदधिमधुमदिरइक्षुजलसागरसात॥
चौ० जंबूदीपतासुबिस्तारा॥योजनलक्षकेरनिरधारा॥ ॥
जांबूफलतहँनदीबहावे॥तातेजंबूदीपकहावे॥ ॥ ॥
मेरुदादिदेगिरिबहुरहई॥गंगादिकसरितासहुबहईं॥
नृपअगनीततहाँभेचंडा॥नवसुतकरिदीन्हेनवखंडा॥ ॥
दो० ईलारमनकहिरणाकुरुहरिरुषकिंपुरुषाल॥
भरथमाहिंउपदीपबहुभद्रासधुजमाल॥ ।
चौ० सौयोजनकादेशबनावा॥सबैदेशकामंडलगावा॥ ॥
त्रैसतमंडलकायकखंडा॥बिष्णुउपासीबसतअखंडा॥
तामेंचहुँबर्णनकेनामा॥द्विजनृपबणिकशूद्रअभिरामा
जंबुदीपकेचहुँदिशहेरा॥क्षारसिंधुलखोजनकेरा॥ ॥
ताकेआगेदीपपलाक्षा॥उभयलाखयोजनकरआक्षा॥
तामेंपाकरिबिटपसोहावे॥तातेदीपपलाक्षकहावे॥ ॥
इदिमवाहुतहँकेनृपहेरे॥भयेसातबालकतिनकेरे॥ ॥
जवेशुभद्रसातशिवरासा॥सेमअभेअमरतहँरासा॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तातेसात खंड करि दीन्हे ॥ सरि बहु गिरि द्रुम मधि धरि दीन्हे

दो० तामें विप्र हंस कहि छत्रिहि कहत पतंग ॥
वैसे बुध शूद्रे वदत त्याग अपर बहु अंग ॥
ताके चारों तरफ हैं सागर दरस केर ॥
द्वै लख योजन में तहाँ तरणि उपासक ढेर ॥

चौ० ताके अग्र सालिमल दीपा ॥ चारि लक्ष योजन कर दीपा ॥
रुद्र सहस्र योजन कर तामें ॥ शाल्मलि तरु खगपति रहे जामें
दीप सालमल तेहि कह गावा ॥ यज्ञबाहु नृप तहाँ रहावा ॥ ॥
सात सुवन तिनके भे दीन्हें ॥ तिन हित सात खंड करि दीन्हें ॥
आप्यायन अविज्ञान सुरोचन ॥ समर सोम परिभद्र हिमोचन ॥

दो० तहँ विप्रे वद सुतधर नृपै वीजधर भाव ॥
वैसे बोलत वसुधर शूद्रहि इखधर गाव ॥
तेहि के चारों तरफ हैं सागर मदिरा केर ॥ ॥
चारि लक्ष योजन तहाँ चन्द्र उपासी ढेर ॥

चौ० तेहि आगे कुश दीप जु अहई ॥ आठ लाख योजन श्रुति कहई
तेहि मधि कुश कर विटप सोहावा ॥ रुद्र सहस्र योजन कर गावा ॥
भूप हिरण रेत कहँ केरे ॥ सात पुत्र भे तिनके हेरे ॥ ॥ ॥
नाभि गुप्त दृढ रुचि वसु माना ॥ वसु विविक्त कस्तुति व्रत जाना ॥
तेहि के सात खंड करि दीन्हें ॥ सरि गिरि मर्यादा के लीन्हें ॥ ॥

दो० तहँ ब्राह्मण को कुशल कहि क्षत्रिहि को विदकाम ॥
वैश्य से अभिजित वदतु हैं शूद्रहि को किल नाम ॥
तेहि के चारों दिशि रह्यो घृत को सागर पूरि ॥
आठ लाख योजन तहाँ अग्नि उपासी भूरि ॥

चौ० क्रौंच दीप तेहि आगे आहैं ॥ सोरह लख योजन तहँ रहैं ॥
क्रौंच विहंग रवि तेज सोहावा ॥ क्रौंच दीप तेहि ते कह गावा ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

घृतकूरट तहँ केनृपजाना ॥ तिनकेभेसुत सातसुजाना ॥ ॥
मेघवृष्ट भाजीष्ठ सुधामा ॥ मधुरुह लोहित वनपति आमा ॥
सातखंड करितेहितेबाँटे ॥ मर्यादा हित गिरितरु पाटे ॥ ॥

दो० तहँ विप्रे पुरुषा कहत क्षत्रिहि ऋतयिबाराय ॥
वैसे भद्राभन तुहैं शूद्रे देवक गाय ॥
ताके चारो तरफ हैं खोड़स योजनकेर ॥
क्षीरसिंधु तहँ के मनुष उदक उपासी हेर ॥

चौ० साकदीप तेहि आगे सोहा ॥ बत्तिस लक्ष योजन कर जोहा ॥
तहँ साकोन केर तरु अहई ॥ साकदीप नेहिते सब कहई ॥ ॥
मोक्षतिथ तहँ के नृपधीरा ॥ सात पुत्र तिनके भयबीरा ॥ ॥
चित्ररेफ पवमान पुरोजय ॥ धम्र विश्वक रूप मनोजय ॥ ॥
तिनहित सातखराड करि दियऊ ॥ सोइ नाम खराडन कर भयऊ ॥

दो० तहँ विप्रे बदवालजी क्षत्रिहि कहत अमीर ॥
वैसे भायन बिरुजकर शूद्रे धावक धीर ॥ ॥
ताके चारो तरफ हैं दीध कर सागर नीक ॥ ॥
बत्तिसलक्ष योजन तहाँ पवन उपासी ठीक ॥

चौ० ताके आगे पुष्करदीपा ॥ चौंसठ योजन केर समीपा ॥ ॥
पुहकर का तरु तहाँ रहावे ॥ ताते पुहकरदीप कहावे ॥ ॥
इन्द्र दवन राजा तहँ केरे ॥ रमन धातुकी सुत युग हेरे ॥ ॥
तिनहिन उभे खराड करि नाखे ॥ गिरितरु मर्यादा हित राखे ॥

दो० तहँ विप्रे पारस कहत क्षत्रिहि भनत भुजङ्ग ॥
वैसे बालत भरपरी शूद्रे भनत कुरङ्ग ॥ ॥
ताके चारो तरफ हैं सिंधु शुद्ध जलकेर ॥ ॥
चौंसठ लखि योजन तहाँ ब्रह्म उपासक हेर ॥

चिंतामणि छं० ताके आगे पैरे भूमि । पनी माटीकेरि भूमि-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पौनेसोरहलाखहेरि। ताके आगे हेम केरि॥
गोपालछं० आठकोरिबंतालिसलाख। योजन जानहु ए-
कपाख॥ लोकालो की आदि अद्र। औरहु बीसन आहिं भद्र
बीरछं० अबतान। सुनुबात॥ नभकेरि। मुखहेरि॥
दो० जाम्बूनद सुमेरुएकलखयोजनपरमान॥
तामधिएकइसलोकहैं सो सब करौं बखान॥
कुण्डलिया बासुकि भूत कयम सुयक्ष किन्नर ब्रह्मराक्षस
राकस काल रुचित गुपित योगिनि गंधर्वदेश॥ योगिनिगंधर्-
बदेश सुअप्सर महत तप सुजन। सत्य सुदिव्य मुनाग देव पि-
प्पल बिसुकर्मन॥ बिसुकर्मा दिक छांड़ि अहें औरो नानापुर
पावक पवन पुरारि ब्रह्म बैकुण्ठ दिवासुर॥ इक लख योजन
भूमिते हैं ऊचार बिलोक। सहसबहत्तर योजन में तेहि बेबान
करवोक॥ तेहि बेबान करवोक उदै कृत इन्द्र पुरी जहं। धर्मपुरी
मघ्यान अस्त भव बरुणापुरी महं॥ अर्धलाख योजन रहै धन-
दपुरी उत्तरेक। एक दस सहस योजन छुसै बसै पलक बिच-
यक॥ यक लख योजन भानु ते है शशि लोक उदार। योजन
अरतालिस सहस में ताको बिस्तार॥ मैं ताको बिस्तार एक ल-
ख पर मंगर पुर। तेतालिस हज्जार माहिं बिस्तार तस्य कुर॥
यहि बिधि इक इक लाख पर बसैं ग्रह नखत अनेक। बरौं ज
न रघुनाथ किमि सबन अहे द्वै एक॥
चौ० यह इतिहास कह्यौं असि जानी॥ अस पूछेउ सो कहौं बखानी
सुनि सौनक बोले हर्षाई॥ हाथ जोरि चरणन शिर नाई॥
दीनदयाल बचन सुनि तोरे॥ अति आनन्द भई उर मोरे॥
तृप्त न होत श्रवण मम स्वामी॥ सरित समूह सिंधु जिमि गामी॥
तेहि ते मोहि निज किंकर जानी॥ अब सरयू की कथा बखानी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रगटी किमि भूलोक मंह आई ॥ को लायो सो कहौ बुझाई ॥
सुने सूत मुनि बचन बिनीता ॥ रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥
धन्य २ कहि बारहिं बारा ॥ वर श्रोता मैं तुम्हें निहारा ॥ ॥
सुनो नाम सरयू जिमि आई ॥ उत्पत्ति भै सो कहौं बुझाई ॥
ब्रह्मा कहं जानत संसारा ॥ जिन शिरज्यो जग कर बिस्तारा ॥
तिनके भवन तीनि रहिं इस्त्री ॥ संध्या स्वस्ति और सावित्री ॥
तिनके तनै मरीची भयऊ ॥ नाम प्रेम जा प्रिय बिधि दयऊ ॥
सुत मरीच के कश्यप जानो ॥ दश त्रिय तिनके नाम बखानो ॥
रोला छं० प्रथमै अदिती अमर कोटि तैंतिस जिन जाये । दिति के दैत्य अपार नाग कद्रुम के गाये ॥ बिनता सुत खग नाथ चंद्र सोमावति केरे । सुरावती के सूर्य्य सहल जग जासु उजेरे ॥ पाद्वती जो सबा बलनसथ बत की माता दमावती सुत अरंघे अमोघा खर संजाला ॥ इरावत तृन वृक्ष जीन लागत पर काजे । नरवरेखा सुत मेघ कोटि छप्पन उपराजे ॥ तिनके अमृत बृष्टि किहि सब जग सुख पावत । कश्यप ते भै सृष्टि सकल श्रुति ऐसे गावत ॥
तोमर छं० श्री कश्यप के सुत भानु ॥ होय नारि तिनके जानु ॥ छाया प्रभा अस नाम । बिसकर्म जा अभिराम ॥ युग पुत्र छाया जाय ॥ यमराज सनि दुखदाय ॥ सनि बहिनि यमुना नाम । यम भय हरणि अद्काम ॥ प्रभा के अस्वनी कुमार । अर्क देह हरण रुज भार ॥ तिनके तनै मनु भूप । सुचि रेखा नारि अनूप तिनके तनै इक्ष्वाकु । जिन कीन प्रजा बिस्वाकु ॥ सरयू नदी तिन आनि । भूपर बहाई जान ॥ केहि भांति लाये नाथ । बिस्तार बरणौ गाथ ॥ कह सूत अवध भुवाल । इक्ष्वाकु भे जेहि काल ॥ बैठे भवन एक बार । नृप कीनि स्वतः बिचार ॥ गुरु पास सरि ताहेतु ।

तौ लहैं सुख सब कोइ

दो० ग्रहस्नान सो प्रथमहैं मध्य कूप कर होइ ॥
उत्तम सरस्वती करै उत्तम उत्तम सोइ ॥ ॥

सो० असनन सभु भिनृपाल । गुरु वशिष्ठ पहँ आयहू ॥
नाइ कमल पद भाल । कहत भये निज कामना ॥

चौ० मुनि वशिष्ठ हिय हर्षत भयऊ ॥ दोउ मिलि गंगा कन्यहि दयऊ
बोलत भये नदी एक चहिये । कहां सो मिलै कृपा करि कहिये ॥
कहत नंदनी सुनहु मुनिज्ञानी ॥ धुनी एक हैं कहौं बखानी ॥
एक समय बैकुण्ठ मझारी । बैठे नारायण युत नारी ॥ ॥ ॥
महादेव हरि दरशन हेता ॥ आये तहँ गिरि सुता समेता ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा ॥ चतुरानन सुमनस सुर ईशा ॥
सबहिन आइ आइ शिर नायो ॥ प्रभु आदर करि बैठायो ॥
सभा देखि शंकर अनुरागे ॥ लागे करन नृत्य हरि आगे ॥
नारद बीना ताहि बजावैं ॥ ब्रह्मादिक सुर संग गवावैं ॥
छैयो राग रागिनी छत्तिस ॥ सप्त सुरा ग्राम सप्त स्वर बत्तिस ॥
ताल मृदङ्ग तंबूर सितारा ॥ बाजत बढ्यो बिनोद अपारा ॥
देखि नृत्य रीझे भगवाना ॥ बोले हरि मांगहु बर दाना ॥ ॥
कह पशुपति जो दाया कीजे ॥ तौ मोहि भक्ति आपनी दीजे ॥
सुनि शंकर के बचन सुरारी ॥ बोले दीनि नयन भरि बारी ॥ ॥
सोइ जल पात भयो मुनिराई ॥ लीन कमंडल महँ बिधि धाई
तीरथ भयो गुप्त सो रहई ॥ लाबहु जाइ ब्रह्म पहँ अहई ॥ ॥

दो० सुनि भागीरथ हरषत भये गये पिता के लोक ॥
सुख शोभा तहँ कर निरखि भे मुनि बिगत बिशोक ॥

चौ० ब्रह्म भवन पुनि देख्यो जाई ॥ कहि न जात कछु तासु निकाई
चतुरानन के दरशन कीन्हे ॥ भाल तिलक कर वेद जु लीन्हे ॥

धरे कमण्डल अग्र सोहाये॥ लखि वशिष्ठ चरणन शिर नाये॥
विधि रहैं ध्यान माहि लवलीना॥ बैठि गये तहँ मुनि परवीना॥
नव सहस्र सम्बत चलि गयऊ॥ तब अज ध्यान ते उन्मत भयऊ॥
सुत बिलोकि हंसि हृदय लगाये॥ कह्यो तात केहि कारण आये॥
तब वशिष्ठ मृदु वचन उचारे॥ नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे॥
तिनके पुर ढिग सरिता नाहीं॥ तेहि ते हौं आयो तुम पाहीं॥
अब महराज मया करि सोई॥ दीजै जेहि मो कायश होई॥
सुनि विधि हरषि कमण्डल नाये॥ चल्यो प्रवाह संग मुनि धाये॥
गगन ते गिरी भई आकाशा॥ गिरि सुमेरु महँ कीन्ह्यो वासा॥
ऐरावत के रद दोउ लागे॥ फाट पहाड़ चली बहि आगे॥
सो जल गिरयो भूमि परजाना॥ तेहि ते सरयू नाम बखाना॥
पुनि जल मान सरोवर आवा॥ गैसमाइ मुनि लखि दुख पावा॥
मान सरोवर विधि मन तेरे॥ अयोधाम हरि का तेहि नेरे॥
जाय वशिष्ठ ठाढ़ भे द्वारे॥ लगो करन तप तन मन वारे॥
विपुल काल लगि तहँ तप कीन्हा॥ तज्यो अहार भयो तन छीना॥
तब हरि द्वारपाल हंकराई॥ कह्यो वशिष्ठे लेहु बोलाई॥
द्वारपाल तहँ बोलि लयाये॥ आइ वशिष्ठ चरण शिर नाये॥
कह भगवान सुनो मुनि प्यारा॥ कवन हेतु तप कियो अपारा॥
कह वशिष्ठ इक्ष्वाकु यजमाना॥ भूप अयोध्या के जग जाना॥
तिन अस कहन दीय कहं होई॥ मै विधि पास गयों सुनि सोई॥
तहां एक सरि ना प्रभु पाई॥ सो सरवर महँ आइ समाई॥
बोले हरि हल को गहु पाया॥ अबहीं निकरि चले तब साथा॥
तब वशिष्ठ जल जाय हलोरा॥ चली निकसि सरयू बरजोरा॥
गिरि पर गाम धाम करि पावन॥ वहीं अवध तर आइ सोहावन॥

दो॰ सुनि रूपपुर वासिन महित आपे अपगा तीर॥

पूजनकीन्हों बिबिधि बिधि दीन दान भय भीर ॥
आय आय सुर बधुन युत कीन्हें नितहों अस्नान ॥
नाम धरे त्रयनयनजा सरयु बसिष्ठी जान ॥
हरस परस मंजन करत हरत पाप श्रुति गाय ॥
अन्तकाल हरि पुर बसै रबिसुत भय मिटिजाय ॥
सरयू की उत्पत्ति इमि मुनिन कही रघुनाथ ॥
केहु पुराण में बदल बुध है रघुपति यह गाथ ॥

कामा छं॰ बोयें। पायें॥ केरो। हेरो॥

तोटक दोउ भांति मंगल मूल। मोहि देहु हे अनकूल॥ सियराम नाम अधीर। सुमिरौं सदा नयतीर॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत साती द्वीप नवखराड प्रमाण श्री सरयू की उत्पत्ति बर्णनो नाम अष्टविंशो ऽध्यायः २८॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
पिक कुल अगिनि पुराण मत कहौं भागवत बखानि॥

चौ॰ सुनि शौनक बोले शिरनाई। गंगा कौन भांति महि आई॥
केहि बिधि उत्पति भै सो गाथा। प्रभु प्रभाव कछु बरणि सुनाथा॥
कह्यो सूत नृप सगर जो भयऊ॥ जिन बहु भांति प्रजहि सुख दयऊ॥
तिनके केशि सुमति है नारी॥ पुत्र बिना नित रहै दुखारी॥ ॥
इक दिन नृप दोउ त्रियन समेता॥ बन तप करन गये सुत हेता॥
कीन कठिन तप तीनिहुँ प्रानी॥ बरंब्रूहि बोले भृगु बानी॥ ॥
केशी कहा पुत्र इक दीजे॥ एवमस्तु अति सुन्दर लीजे॥ ॥
मांगहु कहन सुमति ते लागे॥ साठि सहस्र सुवन तिन मांगे॥
बर दै भृगु आश्रमैं सिधाये। बधुन समेत भवन नृप आये॥ ॥
असमञ्ज सुत केशी जायो॥ सिसुन के मिस सो बिपिनि सिधायो

सुमतिके भे सुत साठि हजारा॥ घृत घटमें कीन्हेंउ प्रतिपारा॥
तेर महारथ धीर सक्रोधी॥ मारे असुर सकल जिन शोधी॥
एकबार नृपमख करसाजा॥ कीन्हों तहँ लिखि छाड़ेउ बाजा

दो॰ इन्द्र ताहि गहि कपिल कपोल बांध्यो जाइ॥
खबरे लहिं दीखि तब कहिन भूपते आइ॥

चौ॰ सुनि सुत सह सुमतिके जेता॥ चले सकल ढूंढनके हेता॥
सात द्वीप नव खण्ड मझायो॥ श्याम कर्णको खोज न पायो
तब लागे महि खोदन सोई॥ तीनि दिशा दिशि डारिनि जोई
पुनि ढूंढत उत्तर दिश आये॥ तहां कपिल मुनि ध्यान लगाये
ताके अग्र बंधा लखि सानी॥ बोले सागर सुवन कटु बानी
पकरि तुरंग आइ में आना॥ हमें बिलोकि धरि सिवक ध्यान
सुनि मुनीश करि क्रोध निहारा॥ सब इक सङ्ग भये जरि छारा
समुझि बूझि विष पान जो करई॥ कहौ तात सो काहे न मरई
इहां शोच मन कीन्ह भुवारा॥ भे बहु दिन नहिं फिरे कुमारा॥

दो॰ तब असमञ्जसके तनय अंशुमान कहँ बोलि॥
कह्यो खबरि लय विपिनकी लाखि हय लावहु खोलि॥

सो॰ सुनत चले हरषाइ। जहँ तहँ खोजत नग रु बन॥
मिले गरुड़ मग आइ। कही कथा सब जिमि जरे॥

कामदा छं॰ अस खबरि पाइ। जलनिधि नहाइ॥ तिलउ-
द कदीन। पुनि गवन कीन॥

संयुता छं॰ खग नाथ युत तहँ आयहू। मुनि चरण शीस
नवायहू॥ करि विनै आशिष पाइ कै। हय लइ चले हरषाइ कै॥
तोमर छं॰ बद बैनते सुनु तात। परमार्थ की इक बात॥ जोग-
ङ्ग आवै भाग। तब होय पित्तर कृतार्थ॥ सुनि अंशुमान नि-
हारि। कह गरुड़ते कर जोरि॥ अब गङ्ग की उत्पत्ति। कहि

येकृपाकरिसत्ति॥आयेमहीपरजासु।तोरिहैंपितरममआ-
सु॥बोलेगरुड़हर्षाइ।उतपतिसुनुकहौंगाइ॥

चौ॰ त्रेतायुगमेंबलिमखठयऊ।इन्द्रलोकलैसोमनुभयऊ
तबहरिहियविचारअसकीन्हा।प्रहलादैमैयहपददीन्हा
सोबलिलेनचहतकरियागा।तेहिहितबावनतनुअनुरागा
बावनआंगुरकेकेहिकारणा।सेप्रभुसोकहियेअहिचारणा
मांगनकेरहेतुहरिजाना॥तेहितेबावनभेभगवाना॥ ॥
मांगनमरणउभयसमअहई॥मानबड़प्पननेहनरहई॥

सो॰ स्वातेलघुतूलाइ।तूलहुतेलघुयाचकह॥
कतनउड़ावतबाइ।मांगनकरभयमानिकर॥

चौ॰ यातेहरिबावनतनुभयऊ॥अदितिकेउदरजन्मआलयऊ
यज्ञोपवीतभयोजबजाना॥भिक्षाहेतचलेभगवाना॥ ॥
बड़दानीसुनिबलिपहँआयो।बहुप्रभुतामुखबरणिसुनायो
बलिबिलोकिइकटकरहिगयऊ॥असवपुकबहुँनदेखतभयऊ
कहँबलिमांगुजोभावैतोहीं॥पयगतीनिभूर्वीदेमोहीं॥ ॥
ममसमानदानीलहितुमते॥मांगतबनानमांगहुअबले॥
बावनकहीसुनहुनरपाला॥द्विजेतोषचाहीसबकाला॥

दो॰ असंतोषद्विजहोयायुतसंतोषीनृपचारि॥
सहलज्जागणिकाअधमनिरलज्जाकुलनारि॥
कहाशुक्रमहिपालसुनुयेहैंश्रीभगवान॥
छलनेहतआयेतुम्हैंदेहुनइनकहँदान॥

दोधककं॰ जोभगवानकहौतुमयेहैं।होनदेहौंबलिके॰
नहिंलेहैं॥तातेयेहहितहितेदीजे।नामचलौधनलेकहकीजै॥

चौ॰ शुक्रकहापुनिसुनहुभुवारा॥अबतेमानहुवचनहमारा॥
दीनहीननरव्याकुलरहई॥सर्वठौरमदादलहई॥+ + ॥+

बिनापराध मित्र जन मारैं ॥ प्रियसनेह करि बचनन भाषै ॥
तेहित धव को रक्षा तनहु ॥ द्वै ते सबै असत मानहु ॥ ॥
दोधक छंद॰ कहवलि देन कहो इनका अब । जो लहिं देहुं तो
धर्म नशै सब ॥ झूठ समान न पातक आनजू । बोलत भे
धनि शुक्र सुजानजू ॥
बीर छंद॰ प्रातु व्यो । पांच थोर ॥ झूठ कही । दोष नही ॥
दो॰ निज प्रिय ते पुनि व्याह में धन हित संकट घोर ॥
गो द्विज हिंसा में कही झूठ न दोष प्रमाण ॥
जिन कर रक्षक लोक सब अमुर हेतेनि न हाथ ॥
तेहि कर मागत भीख अब कि मपिन दीजे नाथ ॥
चौ॰ अवनिरखनिधन तन सग सबही ॥ पुनि असि समो मिली नहि कबहीं
अस कहि करन संकलप लागे ॥ प्रबिसे कबि करवा हम आगे
एक जो नीर हरि डाभ चलायो ॥ फूटि आंखि संकल्प करायो ॥
तब नावन निज देह बढ़ाई ॥ पग भूजंव लोक ध्रुव जाई ॥
स्वर्गभंवे कट शिवपुर पेटू ॥ रबिसुत लोक हृदय जा भेटू ॥
कंठ प्रायतप जो कहि भयऊ ॥ आनन सत्य लोक महं गयऊ
ऐसो दीर्घ रूप हरि कीन्हा ॥ पुनि पृथ्वी नापन मन दीन्हा
दो॰ तल अतल वितल तलातल रसातल पाताल ॥
सप्त पताल न एक पग नेना पेक श्री कृपाल ॥
प्रथमे भू दूसर भुव र तीसर स्वर जन चारि ॥
पंचम सत्य छठा मह तमु निविधि लोक निहारि ॥
चौ॰ सात स्वर्ग ये जो में बरणा ॥ सो सब नापे दहिने चरणा ॥
ब्रह्म लोक जब हरि पद गयऊ ॥ चौन्हि चलांक धोइ सो लयऊ
धर्म लोक मंडल महं चतुरानन ॥ गंगा भई रहत जग जानन ॥
तप जो करहु गंग महि आवें ॥ तव तुम्हार पुरुषा गति पावें ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गंगाकी उतपति इमि जानौं ॥ बावन छन अब सुनतु बखानौं
द्वै पग सकल लोक जब भयऊ ॥ एकै पग बाकी रहि गयऊ ॥
बलि बावन पग पीठि न पाई ॥ रीझि कह्यौ मांगौ बर राई ॥ ॥
जो प्रभु मो पर किरपा कीजे ॥ यही रूप निज दरशन दीजे ॥
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई ॥ राज्य सुतल को दीन्हों जाई
द्वारपाल है श्री भगवाना ॥ रहत सदा तहं सब जग जाना ॥
याहीं ते हरि सन मुख टीका ॥ कृपा कोप छल तिन कर नीका

दो॰ बड़े बड़े न ते छल करहिं जन्म कनौड़ होय ॥
श्रन्दा श्रीपति शिर लसैं गति बावन बलि जोय ॥

चौ॰ यह सब चरित गरुड़ जब गावा ॥ अंशुमान सुनि अति दुख पावा
पुनि खगनाथ गये हरि पासा ॥ आये अंशुमान निज बासा ॥
देखि सगर उर लीन लगाई ॥ खबरि सकल पुत्रन के पाई ॥
यज्ञ कीन्ह भूसुर सनमाने ॥ कछु दिन रहि गृह पुनि अकुलाने
राज्य सु अंशुमान कहं दयऊ ॥ आपु तपन हित सरि बन गयऊ
अंशुमान के भये दलीपा ॥ तिन्हे थापि बन गे नर धीपा ॥ ॥
भागीरथ दलीप के सूवन ॥ जेहि नाम चारि दश भूवन ॥
तिन्हें राज देवन अनुरागे ॥ करि तप कठिन तहैं तनु त्यागे
भागीरथ सुत का कुथ भयऊ ॥ दै तेहि राज आपु बन गयऊ ॥
लागि तप गंगा हित करना ॥ रबि सन्मुख ठाढ़ इक चरणा ॥
सहस बर्ष बीते विधि आये ॥ मांगु तात बर बचन सुनाये ॥
कह नृप जो किरपा प्रभु कीजे ॥ तौ गंगा महि आवन दीजे ॥
बोले अज हम छांड़ब जबहीं ॥ जाई गंग रसातल तबहीं ॥
तेहि ते अब शंभु अवराधी ॥ मांगहु बर तेरि रविहै साधी ॥
सुनि नृप दिव्य बर्ष शिव ध्याये ॥ मांगहु बर हर आइ सुनाये
गंगा रोकि लेहु करि दाया ॥ कीन कबूल गंग सुनि पाया ॥

दो० जाउ रसातल सहित जिमि जरा वढ्यो ईश॥
छुट्यो अज इक वर्ष लौं रही भुलानी शीश॥
धायो नृप गार्यो जल महू धारा तहँ तीन॥
सुरपुर गई पताल इक रही मही पर लीन॥
सुरपुर मंदाकिनि कहत पर भोगवती पताल॥
गंग कहाई अवनि लखि बोले भलिन नृपाल॥
हे सुरसरि हरि भक्त जे रहहिं समस्त बेकार॥
तिन के तन अस्पर्श से नाशी पाप तुम्हार॥

चौ० मुनि समोद नृप संग सिधाई॥ सच्छु करत सुरसागर आई
तेरि पितर भागीरथ केरे॥ अजहुँ उधारत पतित घनेरे॥ ॥
यहि विधि मुनि गंगा महि आई॥ जासु महातम बरणि न जाई
दश सहस्र सम्वत तप करई॥ नरव्रत दान नेम आचरई॥ ॥
सकल पुण्य लै तुला चढ़ावै॥ गंग महातम सम नहिं पावै॥
सुर मुनि मनुज सिद्ध बहु जाना॥ गंगा के व्रत सब हिन ठाना॥
हरिजन आप बहुत बिधि राखै॥ प्रभु का पादोदक श्रुति भाषै
जिमि घन से शत बाँस तम खोवै॥ तिमि गंगा कलि पातक धोवै

दो० दश अघ सत जन्म के पीत्वा अघ सत दोय॥
मज्जन जन्म सहस्र के हत गंग कलि जोय॥

चौ० जो मैं कुंजर सौ जन होई॥ सौ हरि धाम बसै नर सोई॥
बयस केर बालक एक भेरू॥ कपकन कीरज मुख में परेऊ॥
भयो नभूत गयो सुरधामा॥ देखि सिद्धि कीन्हों परिनामा॥
विप्र एक गनिका रत जाना॥ अन्त काल निकसै नहिं प्राणा
बार सुखी मुख धूके आई॥ तजि तनु बस्यो विबुधपुर जाई
पक्षी गिरो मृतक है नीरा॥ मिटि गै ताकु सकल भवभीरा
गंग महातम अहै अपारा॥ [illegible] सुरव शेष हजारा॥

गीतिका छं० कहिं घके शेष सहस्र मुख मैं एक का बखान करी निजबुद्धि मापिक कह्यो कछु तब हेतु हरि पद उर धरी ॥ ते ध न्य सुरसर तीर रहि लहि नाम नित्य नहावहीं । रघुनाथ ते तनु त्यागिकै परधाम निश्चय जावहीं ॥

सोरठा नाथ नाइ रघुनाथ । माँगत दीजै जननि मोहिं ॥
जन्म जन्म तपपाथ । पावों गावों राम गुण ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमतःग्रामत ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत गंगा की उत्पत्ति बरणनो नाम द्वन विंशोऽध्यायः २९ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणों ब्रह्म पुराण को अब इतिहास बखानि ॥
सुरसरि महिमा अगम सुनि बावन कथा रसाल ॥
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ॥

चौ० प्रभु आनन्द भयो अति मोरे ॥ सुनि इतिहास सुधारस बोरे ॥
इक लालसा और उर जागी ॥ सो अब पूरण कीजे स्वामी ॥ ॥
एकादशी की उत्तपति कैसे । भइ जग माहिं बखानो तैसे ॥ ॥
सुनत सूत बोले सुख पाई ॥ भली प्रश्न कीन्हीं ऋषि राई ॥ ॥
सब सुख करणि हरणि अघ भारी । पार होव भव सुनि नर नारी ॥
सोइ इतिहास सुनावौं तोहीं ॥ जस कछु समुझि परी उर मोही ॥
सतयुग माहिं असुर इक भयऊ ॥ मुर अस नाम सबनि दुख दयऊ
शंखासुर सुत पितु बध जान्यो ॥ तब बन जाइ महा तप ठान्यो ॥
पद्मासन किय आइ बखाना ॥ मागु सुवर निज रुचि वरदाना ॥
बोला सुनि सुर मुनि मनुजादा ॥ श्रीधर हर लोकप सह पादा ॥
जहँ लगु सृष्टि रची तुम होऊ ॥ हमते समर न जीतै कोऊ ॥ ॥
एवमस्तु कहि ब्रह्म सिधाये ॥ मुर वर पाइ बेस निज आये ॥
भुजबल जीति सकल महिपाला ॥ पुनि दल साजि सुरन पर चाला

भयायुद्ध अतिखेचरहारे ॥ शक्रसहित भागेभय मारे ॥ ॥
दनुजराज लखि अतिहरषाना ॥ बैठारेतहं आपन थाना ॥
दिगपालन पर बहुरि सिधारा ॥ जहां तहां भयमारु अपारा
वरुण कुबेर काल यम राई ॥ लेलेजियसवगये पराई ॥ ॥
सकललोकतपबलवसकीन्हे ॥ निज सेवकन बास तहंदीन्हे
तबसुरमहित इंद्र शिवपासा ॥ आइनाइ शिर हाल प्रकाशा
नाथ असुरभयदेवदुखारी ॥ कहिउपाइ मिटै दुख भारी ॥
कह हर सेतदीपतुम जावो ॥ कमल नाभकहं विपति सुनावो
शंभुवचनमुनि सुरसुर ईशा ॥ आयेतुरत जहां जगदीशा ॥
सन्मुखह्वैलोचनभरिवारी ॥ हाथजोरि अस्तुति अनुसारी ॥
तोटक छं० जयजयजगदीश अजीशपते । करुणारसमा-
गरशुभ्रमते ॥ जयदीनदयाल कृपालप्रभो ॥ तब धूरिरह्योज
गमाहिं बिभो ॥ जबहीं जबदुखबह्मैजु परयो ॥ तुमहीं तब संकट
नाथहरयो ॥ अबनिश्चर एक भयो गुरहे । सुरदीन निकारिलि
योपुरहे ॥ दिगपाल सबै मिलिदेव हरी भयत्रासित आइपुका-
रकरी ॥ तेहितै अबनाथ कृपाकरिये । दनुजै दलिमोदुख कोह
रिये ॥ सुनिदीन गिराबद विष्णु तबै । करिहौं कछिकौ पननाथ
सबै ॥ कहियाबिधिसाजिचले दलका । दिगपालन देवनकेह
लका ॥ यह सुद्धितमीचर पाइबली । लेसैन सुसन्मुख आइरली
नभधूरिरहीरज रोरकरै । परआपलबाचनभूमि परै ॥
चामर छं० इत्तउनबीर जे तिजे पुकारिधावहीं । चक्रधान त्रि-
त्तिशूल भिंडले दलाघहीं ॥ शीसधारिशि पाय भूमिखराड ख
राडहे गिरैं । उष्ठिउष्ठिरुराढ दौरिमारुमारुकैभिरैं ॥
तोमर छं० पुनिचल्योमरबलवान । करिक्रोधकालसमान ॥
करधनुपसरभारलाय । सबचलेदेवपराय ॥ सुरनाथजू भन

लाग। रणश्रमित इन्द्र भाग॥ हरिकाग्रस्यो सुरभूप। भय विशु
क्रोधसरूप॥ हनि चक्र मार्यो ताहि। नहिं कीन्हिं तन कौं आहि।
तरज्यौ तमीचर धाइ। सठहरिहि मारिसि आइ॥ यहिभाँति यु
द्ध करन्त। भइ सहस बर्ष गन्त॥ मुनि सिद्ध हाहा कीन। तजि-
समर विष्णुहि दीन॥ भागत निशाचरनाथ॥ धावत भयौ हरि-
साथ॥ श्रम विपुल बढ़ी आइ। प्रविसे गुहा महँ धाइ॥ रह सिं-
घवन्त अस नाम। योजन तरणि बड़ ताम॥ यक द्वार ता मधि ता-
त। सुर दीख विष्णुहि जात॥ लय संग निज भटसर्व। प्रबिस्यो
गुहा युत गर्व॥ दानव बधन के लाय। प्रभु कीन एक उपाय॥ भ-
य प्राप्त निद्रा बस्य। कन्या भई उर तस्य॥ बल विपुल तेज अपा
र। हैं जगत जेहि आधार॥ तन दिव्य पट भुज चारि। अलंकार आ-
युध धारि॥ प्रकटी जो माया आदि। जेहि डरत शिव ब्रह्मादि॥
लखि दनुज करि कै क्रुद्ध। लागी करण तहँ युद्ध॥ प्रगटी दशौ
दिशि आगि। कित जाहि दानव भागि। तृणभये सब जरि छार। निक
सी सुगन्ध अपार॥ भाशकुन इन्द्रहि नीक। आये गुहा सामीक॥
कियो कंदरा पर देख। सुर नारदादि गणेश॥ देखो सबै जगमात।
बैठी प्रफुल्लित गात॥ सा सब सहित अनुराग। अस्तुति करन तब लाग॥

**मदन मोदक दंडक** जयति जग जननि अघहरणि मन म
गनि कर अयुध वर चक्र असि शूल धरणी। सर्बगुणभवनि दुख
दवनि दानव सुरभि व्याध जन पद्म हरि विश्व करणी॥ रोग तम-
तरणि भयहरणि कलि कालिका सालिका शत्रु पर चंड रूपी।
भूत ग्रह प्रेत वय साकिनी डाकनी विहंग हितं नासदुर्गे अनूपी॥

दो० याहि विधि अस्तुति इन्द्र करि देवन हने निशान॥
बरषि सुमन जय जय तिहि तब जागे भगवान॥
सुरसुर पति दृग पाल मुनि विनय कीहि निसब भाँति॥

देखि असुरबधाविष्णुतबबोलेमनहरषाति।

भुजंग प्रयात छं॰ किधौंदेविकल्याणदेवन्यकेरी।धरैमोंगिये जोअवैहैचित्ततेरो॥कहाशक्तिअबलीमैंतनतेतुम्हारे।असुरदुष्टआवतलखेसबमारे॥सुनौनाथमोकोंनहींयांचिआवै।कृपाकैसोदीजेतुम्हैंजौनभावै॥वचौविष्णुबलजोकमेरेमेंगांहो।एकादशिसरीरिलुभैनामलाहो॥नवौनिद्संसिद्धफलतुर्तदाता।जुहोवोसदाभयहिरणायाक्षघाता॥रहैबर्तपूजेतुम्हैंनेमधारी।मनोकामनापाइहैनरुनारी॥

दो॰ यहिप्रकारवरदानदैहरिभेअंतरध्यान॥
उतपत्तिएकादशीकीइमिमैंकीनिबखान॥

चौ॰ कहसौनकयहकहौबखानी॥कौनीभांतिरहैब्रतप्राणी॥
सुनिमुनिबचनसूतसुखमाना॥तातसुनौअबब्रतविधाना॥
एकादशीव्रतकीनजोचाहै॥दशमीतेअसनेमनिबाहै॥ ॥
मसुरीमासकांसत्रियसंगा॥कोदवचणाकशयनपरयंगा॥
अल्पअहारबारइककरई॥मधुअरुशाकदधीपरिहरई॥
उठैएकादशिहोतबिहाना॥सुचिकरिमध्यदिवसअसनाना॥
केशवकीपूजापुनिठानै॥षोडशभांतिभजैभगवानै॥ ॥
कामक्रोधमदलोभरुमाया॥तस्करायमदमैथुनजाया॥ ॥
निद्राहास्यमदर्थतबोलै॥तजिरदधावनझूठनबोलै॥ ॥
रातिजागरणकैसुजाना॥सुनैकथाहरिकीरतिगाना॥ ॥
प्रातक्रियाकरिविप्रबोलाई॥यथाशक्तिसनमानैभाई॥ ॥
तैलासिखपरान्नपुनिभोजन॥मैथुनादितजिद्वादशसोजन
यहिप्रकारजोकैरविधाना॥ताकरफलसुनियेदैकाना॥ ॥

दो॰ काशीसेवैअब्दशतअचवैवारिकेदार॥
उभैसहस्रगोदानदैतीरथअटैअपार॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होमयज्ञकरिशतसहसविप्रजेमावैकोय॥
एकादशीव्रतकेरहैसमनहिंकोईहोय॥

सो० जोव्रतसहितविधान।रहैराखिविश्वासउर॥
आवैअंतबेमान।बसैविष्णुपुरजाइसो॥

रोलाछं० निराहारफलपूरिदुग्धतेआधारहई।फलअहारचतुरांशकंदतेअर्द्धलहई॥करैउदरभरिअसनअंशसतकाफलपावै।उभैवारतेसहसअंशफलनिगमबतावै॥एकादशीकेदिवसअन्नखावैजोकोई।अथवादेवैकाहुदोषताकाबहुहोई॥बरतकरतापरिहरैरहैविषयारसलीना।ग्रासग्रासपरपरतब्रह्महत्यातेहिचीन्हा॥

दो० दशमीवेधीनारहीकरीद्वादशीवर्त्त॥
पंचालिसतकचाहियेसदियातेपुनिहर्त्त॥

सो० बरषएककेमाहि।एकादशीचौबिशपरै॥
सुनौसबनकेनांय।फलसमेतवर्णनकरौं॥

चौ० अगहनअसितएकादशिकेरा॥शयनबोधनीनामनिवेरा॥
विप्रकोटिसतन्योतिजेवांवै॥यहिव्रतसमफलसोनहिंपावै॥
मार्गपक्षसितमोक्षदनामा॥जोरहिपुरुषपावहरिधामा॥
तेहिपरएकइतिहासबखानौं॥ब्रह्मपुराणकेरतुमजानौं॥
गोकुलनगरहेएकराजा॥बैखानसअसनामबिराजा॥
नर्कपरापितुस्वप्नेदेखा॥जागतभाउरखेदबिशेषा॥ ॥
राजकाजसुखनीकनलागे॥मनबिचारिकेहिबिधिदुखभागे॥
पुत्रजासुअधोगतहोई॥जीवतवृथापुत्रजगसोई॥ ॥
असकहिमुनिकेआश्रमआयो॥करिप्रणामनिजशोचसुनायो॥
कहिवर्षिततवपितुतेइकबारा॥रितुवतीप्रियभोगबिचारा॥
सुनिरतिदानदीननहिंराई॥तेहिअघपरयोअधोमुखजाई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० मार्गशीर्षसितपक्षकी एकादशीव्रतस्वस्त॥
करिदीजे फलदानतेहि लहै पितातवमोक्ष॥
सो० मुनिनृपमंदिरआइ।करिव्रतदीन्ह्योदानतेहि॥
पुण्यपरमगतिपाइ।जयकहिसुरवर्षेसुमन॥
रहेजोव्रतजसिरीति।पांवेअंतविमोदसुख॥
पढ़ैसुनैकरिप्रीति।बाजपेइफलसोउलहै॥
सत्यझूठकीबात।जानेनिगमकिरामजी॥
मोहिहरिहेतसोहात।अधिकनामकलिकामतरु॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्षसयनबोधनी-
मोक्षदाकथावर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः३०॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरु गणपगिरासुखदानि॥
कहौंबावनपौराणमतब्रह्मवैवर्तबखानि॥
चौ०कहसौनककहियेऋषिराऊ॥पूसअसितव्रतकरप्रभाऊ॥
कहानामकिनपूजरकीन्हा॥सुनिसुमंत्रअसबोलेलीन्हा॥
सुफलानामअहैयहिताता॥जानिअजानिकिहफलदाता॥
करैसहसजोकन्यादाना॥तुलैनइहिव्रतरहैसमाना॥ ॥
यहिपरएकसुनोइतिहासा॥महिष्मनृपचंद्रावलिबासा॥
तासुपुत्रवड़भयोअधर्मी॥लंपटचोरमदपहतकर्मी॥ ॥
सुनिनरेशबनदीननिकारी॥करैनिवाहविहंगमृगमारी॥
पौषकृष्णहरिबासरबारा॥मिलानकछुतेहिदिवसअहारा॥
क्षुधितरह्योचलदलतरसोई॥निद्रालब्धभईनहिंकोई॥
व्रतप्रसादतेभामनपावन॥जान्योआपुहिवंसलजावन॥
आइभवनपितुपदसिरनायो॥समयसनेहराजपदपायो॥
अनजानेव्रतकरफलऐसा॥जानिकिहेनहिंजानौकैसा॥

जोयहकथासुनैयागावै॥ कन्यादानदिहेफलपावै॥ ॥

इतिश्रीपौषकृष्णएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकशिरनाइ। पौषशुक्ककीव्रतकथा॥

अबमोहिंदेउसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० यहिकरनामपुत्रदाकहियै॥ अवशिपुत्रफलधारैलहियै

लक्ष्मीनारायणहितसेवै॥ संयमनियमपूर्वलखिलेवै॥ ॥

यहिपरएककहौंइतिहासा॥ केतुमाननृपभाद्रनिवासा॥

तेहिकेतनैनएकहुभयऊ॥ यकदिनकरिविचारबनगयऊ॥

देखतहंखगमृगतरुनाना॥ मटतमिलेमुनिसोमसुजाना॥

करिबिनतीनिजदुखसबकहेऊ॥ सुनिमुनिसबबीतजसचहेऊ

पौषशुक्कव्रतपुत्रदनामा॥ करहुजाइपूजीमनकामा॥ ॥

भवनआइव्रतकीन्हेउभूपा॥ हरिप्रसादसुतलह्योअनूपा

जोयहकथासुनैअरुगावै॥ सुखसंपतिनानाविधिपावै॥

इतिश्रीपौषशुक्कएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकसिरनाइ। माघकृष्णाहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० यहिकरनामखटतिलाअहई॥ करिव्रतनेमनिकरअघदहई

तिलपिण्डनमेंहरिहिपधारै॥ बिबिधिभांतिपूजाअनुसारै॥

तिलपावैतिलविप्रैदेवै॥ तासुपुण्यसुरपुरसुखलेवै॥ ॥

यहिपरयकइतिहासबखानौं॥ रहैपुरअशिब्राह्मणिजानौ॥

नानानेमधरतसोठानै॥ दानदेनभिक्षानहिंआनै॥ ॥ ॥

करिचिन्ताहरिजाचैआई॥ दीन्हीमृतिकाद्विजैरिसाई॥ ॥

अंतकालतेहिपुण्यप्रतापू॥ लहास्वर्गशुचिमंदिरआपू॥

तहंधनधान्यकछुनहिंदेख्यो॥ आपुहिमहामन्दकरिलेख्यो

हरिमतदेवबधुनतेभागी॥ यकखटतिलापुण्यइरिमांगी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दशमीहि नव्रतकाहू दयऊ। ऋद्धि सिद्धि सब ताके भयऊ॥ ॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। तस्य अघंघ सु राय सर सावै॥
इतिश्रीमाघकृष्णएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिरनाइ। माघशुक्ल हरिव्रतकथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० माघशुक्ल हरिबासर केरा। जयानाम अघ हरत घनेरा॥
यहि पर एक वरौं आख्याना। इंद्र अप्सरा रहे छबि वाना॥
निरखत सो हरि आगे आनी। मालवगंधर्व देखि लोभानी॥
निरखि निलज्ज श्राप तृष दयऊ। होउ पिशाच जाय दोउ भयऊ॥
बनमें रहें सहैं दुखनाना। माघ शुक्ल व्रत किहिनि अजाना॥
हरि प्रसाद गे स्वर्ग यान चढ़ि। इमि भविष्य बोतर भाषत पढ़ि॥
जो यह कथा सुनी वा कही। करी कृपा तेहि पर प्रभु सही॥ ॥
इतिश्रीमाघशुक्लएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कह सौनक शिर नाय। फालगुन कृष्णा हरिव्रत कथा॥
अब मोहि देहु सुनाय। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० विजयानाम याहि श्रुति गावै। याके रहे विजय नर पावै॥ ॥
अवधनगर नृप दशरथ के सुत। पितु वच बन गत बंधु बधू युत॥
तहँ जानकी हरी दशकंधर। मिलि रवि सुतहि चढ़े लै बन्दर॥
उदधि तट आपु अनुज मत ठयऊ। वकदालय ढिग पूछन गयऊ॥
नाथ कहो केहि विधि रिपु जीती। सुनि मुनिबर बोले करप्रीती॥

दो० फालगुण कृष्णा विजया अस नाम एकादशि केर॥
करहु जाय तेहि कृपा ले जितिहो शत्रु घनेर॥

सो० आय कीन व्रत राम। रथ चढ़ि मारयो दशमुखहि॥
सिय सोदर युत धाम। पहुँचत पायो राजपद॥
कल्पभेद यह बात। वद अस कथ पुराण इमि॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पढ़ै सुनै जो तात। सोन सहै यम त्रास पुनि॥

इति श्री फालगुन कृष्ण एकादशी माहात्म्य संपूर्ण

सो० कह सौनक सिर नाय। फाल्गुन सित हरिव्रत कथा॥
अब मोहि देहु सुनाइ। मुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० आमर्दकी नाम यहि जानो॥ गोशत दिये अधिक फल मानो।
धात्री तरु पूजै मनु लाई॥ देइ दान बहु विप्र जेवाई॥ ॥ ॥
हरि सुमिरन जन भजन प्रकाशै॥ आधि व्याधि दुख दारिद नाशै॥
याही व्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा॥ तस्य प्रसाद लह्यो सुख सीवा॥
राजा नल दमयन्ती रानी॥ यहि व्रत करि भइ बिपदा हानी॥
आमर्दकी प्रात दुरबासा॥ नृप पर तम करि भये निरासा॥ ॥
जो यह कथा सुनै या गावै॥ पुष्कर मज्जन कृत फल पावै॥ ॥

इति श्री फालगुन शुक्ल आमर्दकी महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिर नाइ। चैत्र कृष्ण हरिव्रत कथा॥
अब मोहिं देउ सुनाइ मुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० पापमोचनी यहि कर नामा॥ शुभगति लहै किहे बिश्रामा॥
यहि पर एक इतिहास बखानौं॥ भविष्योत्तर पुराण को जानौं॥
च्यवन पुत्र मेधावी नामा॥ करै तपस्या बिपिन अकामा॥
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो॥ हाव भाव करि आइ डिगायो॥ ॥
रमत बरष बीत्यो पच्चासी॥ बोली अहं जाव नभ वासी॥ ॥
कह मुनि एक छपा जनि डोली॥ होत प्रात जायो मुनि बोली॥
कै वर्ष की तब राति प्रमाना॥ मुनिहिं चेत तब भा दुख माना॥
दीन श्राप तेहि है अघ चरणी॥ होहि पिशाची तप क्षय करनी॥
मुनि कम्पित तेहि चरनन नई॥ कीजै कृपा भूल बड़ि भई॥ ॥
कह ऋषि चैत कृष्ण उपवासै॥ करु हरि बासर ते अघ नाशै॥
मुनि अपसरा कीन व्रत भारी॥ है पावन सुरलोक सिधारी॥ ॥

जो यह कथा सुनै वा गावै ॥ चन्द्रायनव्रत कृत फल पावै ॥ ॥

इति श्री चैत्रकृष्ण पापमोचनी महात्म्य सम्पूर्ण ॥

सो० कह सौनक सिर नाइ। चैत्र शुक्ल हरि ब्रत कथा ॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ० कामद नाम एकादशि एहा ॥ करत हरत जेहि कलुष सनेहा
यहि पर एक सुनो इतिहासा ॥ पुराडरीक नृप सुतल निवासा
गंधर्वी ललिता तेहि तीरा ॥ क्रीड़त करी नपति तेहि भीरा ॥ ॥
मदनातुर है गान बिगारा ॥ दीन श्राप निशचर बपु धारा ॥ ॥
पति गति लखि लज्जित बिलखानी ॥ किंकरमि को गच्छ कठानी
एक दिन कानन कीन पयाना ॥ बिद्धा सिखर मिले मुनि नाना ॥
पूंछे तेनिज बिपति सुनाई ॥ तिन कह कामद ब्रत करु जाई
सुनि ब्रत दान ताहि करि दयऊ ॥ राक्षसत्व गत गंधर्व भयऊ ॥
चढ़ि बिमान निज पुर पगु धारा ॥ सुनत कहत अघ दहत अपारा

इति श्री चैत्र शुक्ल कामद महात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौनक सिर नाइ। बैशाख असित हरि बरत ॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ० नाम बरूथिनि यहि मुनि गाइनि ॥ सब सुख राम भक्ति बर दाइनि
बिप्र सुवएक यह ब्रत करेऊ ॥ जात जागरा हरि मग धरेऊ ॥
बोला द्विज लौटन मोहि खाये ॥ सपथ खाइ हरि मंदिर आयो
करि जागरण प्रात तहँ गयऊ ॥ ब्रत प्रसाद मृग पति तजि दयऊ
अन्त समै हरि पुर गा सोई ॥ कहत सुनत गोशत फल होई ॥

इति श्री बैशाख कृष्ण बरूथिनि महात्म्य संपूर्ण

सो० कह सौनक सिर नाइ। बैशाख शुक्ल हरि ब्रत कथा ॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ० मोहनि नाम काम फल दाई ॥ बिष्णु चरण सेवै चितु लाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

षोड़स भांति सहित अभिलाषै ॥ कैरै प्रदक्षिणा जय श्रुति भाषै
विष्णुहि चारि अर्ध हरि काहीं ॥ रविहि सात चंद्रै यक चाहीं ॥
हरि ढिग भूठ विवाद न ठानै ॥ गरमालै पादुका न आनै ॥ ॥
अग्रह्ह है उपदि सिवामा ॥ करै न जप तप होम प्रनामा ॥ ॥
यहि विधि द्वादश दोष बराई ॥ हरिहि भजै सब पाप नसाई ॥
यहि पर यक इतिहास बखानौं ॥ कूर्म पुराण केर तुम जानौं ॥

दो॰ श्रीरघुनाथ वशिष्ठ ते कह्यो स्वप्न के माहिं ॥
देखत हौं मैं दश मुखै भय वश सूतत नाहिं ॥

चौ॰ कहौ सो व्रत जेहि करि अघ जाहीं ॥ मुनि वशिष्ठ बोले प्रभु पाहीं
रामनाम तव धारणा करई ॥ कैसे कलुखी भव निधि तरई ॥ ॥
अस्म लोक हित किहेउ कृपा कर सित वैशाख रहौ हरि बासर ॥
सब दुख दोष देत करि हानी ॥ सुनौ एक इतिहास पुरानी ॥ ॥
सरस्वती तट सोमवती पुर ॥ बसै वैस धनपाल नाम चुर ॥ ॥
तासु तनै बड़ पापी भयऊ ॥ तस कर जानि काढ़ि तेहि दयऊ ॥
धूर्त कर्म करि दिवस बितावै ॥ जच तत्र गहि पीटो जावै ॥ ॥
नृप भय बहुरि बसा बन जाई ॥ खग मृग तहं के बध करि खाई ॥
एक दिन जान्हवी चलि न्हायो ॥ कौंडि न्याश्रम लखि सिर नायो ॥
महापतित मैं किमि अघ नाशौ ॥ कह मुनि करु मोहनी मुपासे
मुनि व्रत रहत दहत अघ भयऊ ॥ दिव्य देह ह्वै हरि पुर गयऊ ॥
जो यह कथा कहै वा गावै ॥ सो व्रत अर्ध केर फल पावै ॥ ॥

इति श्रीवैशाख शुक्ल मोहनी महात्म्य संपूर्ण ॥

सो॰ कह सौनक शिरनाइ । ज्येष्ठ कृष्ण हरि व्रत कथा ॥
अब मोहिं देहु सुनाइ । सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ॰ जेठ असित व्रत अपरा नामा ॥ होय दलनि दायक मन कामा ॥
एक इतिहास सुनौ श्रुति कहई ॥ सत्यवती एक ब्राह्मणी रहई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हरिमिलने हित जेहि ते हिय छै ॥ केहि लोवैं तजि ग्राम दहुँसे
लखि लालसा तासु लालच मुनि । बोले सत्यवती मोनै सुनि ॥
जेष्ठ कृष्ण अपरा व्रत रहऊ । मिली सोइ पति जेहि तुम चहऊ
करणा लागि व्रत सहित विधाना ॥ द्विजनि जेवाइ देइ बहु दाना ।
तनु तजि अन्त काल लहि जोई ॥ भई आइ सति भामा सोई ॥
कृष्ण कंत ने पुराय एक दिन । बूझासि आपनि यही कहीं लिन
अस अपरा व्रत भूषत गावै ॥ पढ़त सुनत गोदान फल पावै ॥

इति श्री ज्येष्ठ कृष्ण अपरा महात्म्य सम्पूर्ण ॥

सो॰ कह सौनक शिर नाइ ॥ ज्येष्ठ शुक्ल हरि व्रत कथा ॥
अब मोहिं देहु सुनाइ । सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ॰ यहि व्रत नाम निर्जला सेवै । हरि पद धेनु विप्र कहं देवै ॥ ॥
दुवादशी दिन पारन करई ॥ सो नर यम जातना न भरई ॥ ॥
बरणेयो व्यास भीम ते याही ॥ अन्न असन नहिं व्रत दिन चाही
यहि तन सो चंडाल समाना ॥ मरे लहै दुरगति दुख नाना ॥
बोले भीम करिय कस ताता ॥ वृषभ बोदर व्रत रहा न जाता ॥
तौ तुम एक निरजला कीजे ॥ बारौ मास केर फल लीजै ॥ ॥
सुनि बिधि करत वृकोदर लागे ॥ जात भये हरिपुर तनु त्यागे
जो यह कथा सुनै वा गावै ॥ गया पिराड दीन्हे फल पावै ॥ ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास रामसनेही कृत चतुर्दश एकादशी माहात्म्य वर्णनो नाम एक विंशो ध्यायः ॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौ बिबिधि पुराण की पुनि इतिहास बखानि ॥

सो॰ कह सौनक शिर नाइ । असित अषाढ़ हरि व्रत कथा ॥
अब मोहिं देहु सुनाइ । सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ॰ महा पुनीत योगिनी नामा ॥ यहि व्रत चरे होइ सिधि कामा ॥

यहि परसक इतिहास बखानो ॥ विधि वैवर्त केर तुम जानो ॥
अलकापुरी यक्ष पति पाली ॥ बटुक हेमरह तिनकर माली ॥
तस्यांगना मृगाक्षी नामा ॥ प्रीत्याशक्त रहे बस कामा ॥ ॥
शिव पूजन कुबेर नित जाहीं ॥ एक दिन सुमन पहुंचायस नाहीं
तब धनपति निज अनुग पठावा ॥ रमत देखि तहँ आय सुनावा
सुनि कुबेर बोले करि रोसा ॥ सुर हेलन कृत देइ भरोसा ॥ ॥
यहि अघ कुष्ठ होइ अष्टादस ॥ कहतै भयो गयो कानन तस ॥
महि कष्ट तब मन पछितायी ॥ मारकण्डेय लखि विपति सुनाई
कह मुनि योगिन्या सुपवासे ॥ करु जेहि पुण्य कुष्ठ तब नासे
सुनि ब्रत करत भयो बपुनीता ॥ कहत सुनत सुख अद सबही का

इति श्री अषाढ कृष्णा योगिनी महात्म्य संपूर्णः ॥

दो० कह सौनक सिरु नाइ । सित अषाढ हरि ब्रत कथा ॥
अब मोहिं देहु सुनाइ । सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ० शुभ शयनी यहि नाम अनूपा ॥ जेहि धरि हृदय तरिय भवकूपा
मिथुन सते अब हरि हि सो वावें ॥ तुला रासि गत बहुरि जगावें
तस्य पुरः चतुरब्द कि मासा ॥ करै नेम रहि बरत उपासा ॥ ॥
मृदु बादी होवे गुड़ त्यागी ॥ पुष्प तेल गंधर्व सो भागी ॥ ॥ ॥
कटुक कषाय तजै कुबिवंता ॥ रबिगत भय हरि सुमिरण संता
रक्त कराठ तांबूल नेवारे ॥ पदाभ्यांग बस वाहन द्वारे ॥ ॥
महिं साथि न्रप होय बिशोका ॥ पय दधि तजै जाय गोलोका
तजे अन्न सो सुरपुर वासे ॥ लोन तजै तन के अघ नासे ॥
हरि मंदिर मार्जनी जो करई ॥ दीपदान लेपन अनुसरई ॥
काम क्रोध मद लोभ गवांवै ॥ सो सायुज्य मुक्ति नर पावे ॥ ॥
जेहि तेहि भांति देइ जो दाना ॥ सो प्राणी होवे धनवाना ॥ ॥
नृत्य गान कथा ले करई ॥ सो नर भक्ति लहै बर बरई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अंबरीषपतनीयह्मावति ॥ पुरहरहीहरिमंदिरगावति ॥
दीनलगायचूननिजपानी ॥ तेहिफलभईअवधकीरानी
करिहरिभक्तिगईप्रभुधामा ॥ बहुपुंसनकरसार्योकामा ॥
कहतसुनततेहिप्रभुनिजजानैं ॥ इमिनारदीपुराणबखानैं ॥

इतिश्रीअषाढशुक्लदेवशयनीमहात्म्यसंपूर्ण ॥

सो० कहसौनकसिरनाइ । श्रावणातमहरिव्रतकथा ॥
अबमोहिदेहुसुनाइ । मुनिसुमंत्रबोलेहरषि ॥

चौ० श्रावणकृष्णकामिकानामा ॥ सेवतदोउलोकबिश्रामा
पूजैविष्णुचरणचितुलाई ॥ तासुपुण्यककुबरणिनजाई ॥
गंगागयागोदावरिपुष्कर ॥ वाराणसीप्रागमज्जैनर ॥ ॥
अन्नपटादिदानदेसोई ॥ यहिव्रतसरिसतदपिनहिंहोई ॥
पुण्यबढावनिस्वर्गनिसेनी ॥ यकइतिहाससुनोसुखदेनी ॥
शुभगसुमनरुकमगरुबागा ॥ आंवेलेनसुरीसहरागा ॥ ॥
यकदिनएकराहिगइभूमा ॥ चूनतोकरत्लाग्यौभूमा ॥ ॥
सुनिनृपमालीतेतहंआवा ॥ देहुपठाइस्वर्गमोहिंभावा ॥
केहिविधितवसुकृतसरसाई ॥ कामदव्रतदीजैयकराई ॥
कहनृपमहानजानैंकोई ॥ कीनअज्ञानलयाधोसोई ॥ ॥
तबनृपनगरपिटाईडौंडी ॥ सुनिआईयकबनिककीलौंडी
दीनदानव्रतलहिसुरनारी ॥ चढ़िबेवाननिजलोकपधारी ॥
देखिप्रभावकरननृपलाग्यौ ॥ सुततियप्रजबसहितअनुराग्यौ
कलिमोहनीकठिनबरुनाचा ॥ तद्यपितज्यौनहरिव्रतसाचा
प्रणविलोकिहरिदरशनदीन्ह्यौं ॥ खलमोहनिहिदुकेलौकीन्ह्यौ
इमिब्रह्माण्डपुराणबखानैं ॥ कहतसुनतअघनासनमानैं ॥

इतिश्रीश्रावणकृष्णकामिकामहात्म्यसंपूर्ण

सो० कहसौनकशिरनाइ । श्रावणसितहरिव्रतकथा ॥

अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ श्रावण शुक्ल पुत्रदा नामा। लहैं पुत्र येहि करि श्रीभगमा॥
यहि पर येक इतिहास मनीता। माहिष्मपुर रह नृपमहिजीता॥
पुत्रहीन कछु रुचै न तेका। द्विजन निदेशि वन गा दिन एका॥
तहां मिले लोमस कालीना। पूछेउ नृप बोला ह्वै दीना॥
तनु लहि कुपथ न पग हम धारे। केहि अघ भयो न पुत्र हमारे॥
कह मुनि पूर्व बनिक तुम रहेऊ। धर्मवान यक दिन जल चहेऊ॥
तृषित सवत्स पैत रहि गाई। पीन नाहि तुम मारि भगाई॥
तेहि अघ अंगज मिल्यो न धीजै। अब पुत्रदा इकादशि कीजै॥
होइ श्रवण सुनत ग्रह आयो। कीन्ह्यो व्रत प्रताप सुत पायो॥
जो यह कथा सुनै या गावै। गंग स्नान किहे फल पावै॥

इति श्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामहात्म्य संपूर्ण॥

सो॰ कह सौनक सिर नाइ। भाद्र असित हरिव्रत कथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ अजिता नाम अस्य अद कर्मा। हृषीकेश पूजे सुत प्रेमा॥
यहि पर सुनु एक कथा पुरानी। नृप हरिचंद्र रहे बड़ दानी॥
विधि बस राज भ्रष्ट भै ताकी। सुत तिय देह गई बिकि जाकी॥
दुर्व्रत जन मृत चैल प्रहारी। बोले लखि गौतम दुख भारी॥
अजिता वरत करो हरिचंदा। मिटै सकल दुख होइ अनन्दा॥
सुनि महिपाल तहँ व्रत कीन्हा। सुत तिय राज्य बहुरि हरि दीन्हा॥
जो यह कथा सुनै वा गावै। भागोदान दिहे फल पावै॥

इति श्रीभाद्रकृष्ण अजितामहात्म्य संपूर्ण॥

सो॰ कह सौनक सिर नाइ। भादव सित हरिव्रत कथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ यहि हरिवासर पद्मा नामा। सब दुख हरणि करणि सुखधामा॥

याहि पर एक कहौं इतिहासा। मान्धाता नृप अवधनेवासा
धर्मवान गोजोत प्रमानी। प्रजा अमंक बसै तहं जानी॥
तीनि वर्ष जल मेघ न दीन्हा। अये लोग सब सुखते हीना॥
नृप हु दुखित है कछ सिधावा। मिलि अंगिरहि सुकष्ट सुनावा
कह मुनि यक नृप बलीन शुकरही। तेहि अब महि जल छीटन पई
करहु तत्ताहि प्राजु जल बर्से। हिंसा कर बन वरु जग करसे
तेहि ते देहु धर्म उपदेसा। तम सिन हरि व्रत करौं नरेसा॥ ॥
भले नाथ कहि कीन्हो आई। प्रजजन हित भै वृष्टि अघाई
सह संचित सुख लह्यो नरेसा। कहत सुनत तोहि मिटत कलेसा
इति श्रीभाद्रपद शुक्ल पद्मा महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक शिर नाइ। आश्विनि कृष्ण हरिव्रत कथा॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० नाम इन्दिरा यहि सुखदेनी। नर्क निवारि स्वर्ग निसेनी॥
तापर एक कहौं इतिहासा। इन्द्रजीत नृप महि पुरवासा॥ ॥
सविता तस्य अधोमुख रहेऊ। नारद आय भूपते कहेऊ॥
कह नृप किमि होवै निस्तारा। वरत इन्दिरा हो सुखारा॥ ॥
देहु ताहि फल करि नृप दयऊ। त्यागि अधोमुख हरिपुर गयऊ
जो यह कथा सुनै वा गावै। नैमिष क्षेत्र अटे फल पावै॥ ॥
इति श्री आश्विन कृष्ण इन्दिरा महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिर नाइ। आश्विनि सित हरिव्रत कथा॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० पापांकुशा नाम यहि जानी। अशुभ कर्म नासनि सुखदानी
सुनि इतिहास कथा जेमि कहेऊ। चेतन नाम विप्र एक रहेऊ
विद्या वित गर्वित नहिं सूझै। आप समान न आनहिं बूझै॥

दो० विद्या बाद प्रमाद धन मानि सपर दुख हेत॥

खलसुसाधुविप्रीतकरि ज्ञानदानसुखदेत॥
विद्याविद्याहरराहितपढ़लहातखलठूंठ॥
चह्यौनिकासनमीनकीछुमिआयोग्रहऊंठ॥

सो० एकदिनसोवतमाहिं।कह्योमनुषएकनगरमें॥
भूपरह्यौहैनाहिं।चलुतहंमिलिहैंराजतोहिं॥
चल्योहर्षिबसमोह।मगनदलखिलाग्योहलन॥
मध्यमगरसहक्रोध।।चाबतजाग्योसहितदुख॥

चौ०करिविचाररकुंभजमहंरायऊ।।तिनउपदेशयथाचितदयऊ
पढ़ैसुनैकाफलसुतयेही।।करिविवेकहरिपदचितदेही॥ ॥

दो० दशसन्दननन्दनचरणकमलअमलअनुराग॥
जोनबढ़्योबादिहिपढ़्योमढ़्योमोहमदराग॥

चौ०अवनदकालमगरतुमदेखा।।मध्यबससमहंरावविशेखा
पापसंकुलाकरिअघजारी।।हरिपदभजिपरलोकसुधारी॥
कीनआइव्रतबुद्धिप्रकासी।।सुमिरणकरिभाहरिपुरबासी
जोयहकथासुनैयागावै।।व्रतफलचतुरअंससोइपावै॥

इतिश्रीआश्विनशुक्लपापांकुशामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकशिरनाइ।कातिककृष्णाहरिव्रतकथा॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ।सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ०रमनीनामरहैजोकोई।।सोनरइन्द्रसमीपीहोई॥ ॥
यहिपरएकसुनैआख्यानै।।नृपमुचुकुन्दभलेव्रतठानै॥ ॥
सुतातस्यशशिभागानामा।।शोभनपतिआवापितुधामा॥
क्षुधितअसननिजनारिसेमांगा।।सुनतकह्योपतिंतशशिभागा
आजुअहैहरिवासरनाथा।।पशुपक्षीकोइलेहैनपाथा॥ ॥
होतहंसगतिकौनअकाजू।।बड़ेभागमृत्युपाईआजू॥ ॥
भावीबसत्यागेतेहिप्राणा।।हरिपुरगाचढ़िशुभगविमाना॥

बहुतक कहाकहियेविस्तारी ॥ व्रतप्रभावसबपुरीउधारी ॥ ॥
जोयहकथासुनैवागावै ॥ अन्नदानदीन्हेफलपावै ॥ ॥
इतिश्रीकार्तिककृष्णएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण ॥
सो० कहशौनकशिरनाइ । कार्तिकासितहरिव्रतकथा ॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ । सुनिसुमंत्रबोलेहरषि ॥
चौ० परबोधनीनामयहनीकी ॥ दायकसकलकामनाजीकी ॥
यहिव्रतसरिसअपरव्रतनाहीं ॥ अघतमाजिमिबिलोकिरविजाहीं
जनकनगरएकनृपरहेऊ ॥ हरिनिशिजागिलिन्नमगचहेऊ ॥
तेहिप्रसादमनभईगिलानी ॥ तजिसिदेहभजिसारंगपानी ॥
तिलदत्वाखिलभयसुखाला ॥ नृत्यगानव्रतकरैरसाला ॥ ॥
सहितसनेहजपैहरिनामा ॥ ब्रह्मचर्यअस्थितहरिकामा ॥
व्रतप्रसादसोइगोपकुमारी ॥ भईअधिकगिरधरैपियारी ॥
वृन्दावनबिहारजगजाना ॥ इथंबदतिस्कन्धपुराना ॥ ॥
कार्तिकमेंसुनिसुमनचढ़ावै ॥ हरिहितासुफलबरणिनआवै
देवोत्थानीहरिव्रतगीता ॥ सुनतकहतफललहतपुनीता ॥
येचौबीसोनामबखाने ॥ एकादशीकेजोममजाने ॥ ॥ ॥
बिधिवतकरिहरिसुमिरणकरई ॥ गोपदइवभवसागरतरई ॥
गीतिकाछं० भवतरैगोपदसरिसजोसुचिनेमकरिव्रतदान-
ई । पावैवरतबटअसफलजेकथासुनैबखानई ॥ कलिकाल
पापपयोधिजपतपयोगमखआश्रितजे । रघुनाथदासप्रनीत
तेसतसंगकरिरामैभजे ॥
दो० रामभजनबिनकर्मजोसोसबतुच्छलखात ॥
यथासुलदशगुल्लबिनअंकगनेनहिंजात ॥
एकादशीवरदानितेमोहिमातुजांचिसबकोइ ॥
लह्योकामफलदेहुमोहिंरामचरणरतिहोइ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतचौवीसोएकादशीमाहात्म्यवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः३२

दो० सुमिरिरामसियसतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कार्तिकमहात्मकीकथाकहौंइतिहासबखानी॥

चौ० पुनिसौनकबोलेमृदुबानी।केहिबिधिभईतुलसिकाज्ञानी
विष्णुशीशधारीकेहिहेता॥यहौकहौप्रभुकृपानिकेता॥।
कह्योसूतसुनियऋषिराई॥विष्णुपुराणकहतइमिगाई॥
तुलसीनामरहेथकनारी॥तेहिहरिहितकीन्हतपभारी॥ ॥
हू प्रसन्नआयेभगवाना।बोलिसुमुखिमांगुवरदाना॥ ॥
देखिरूपबोलीकरजोरे॥पतिहूसदारहौउघमेरे॥ ॥ ॥
सुनिलक्ष्मीतापरकीनकोहू।दीन्हीश्रापबिटपजड़होहू॥
कमलहिश्रापदीनतेहिएहा।बसौजाइतुमनीचनगेहा॥
सुनतविष्णुतुलसीसनकहेऊ॥विटपहोउतुममममप्रियरहेऊ
मैंधरिशालग्रामशरीरा॥रहिहौंसुमुखिसदातवतीरा॥
प्रथमगराडकीकामिनिएकचुरू॥तपुकरिमांगिसिवसौसदाउर
मैंकहसरितहोउयाहिभांते॥शिलारूपबसिहौंडरतोरे॥ ॥
एककल्पइत्यश्रुतिगाई॥दूसरिबिधिअबसुनोसुनाई॥

गीतिकाछं० एकबारशिवमगजातसुमिरतनामतहंबास वस्ह्यो।लखिकहेउयोगीहोहुठाढ़ेचितेभवमारगगह्यो॥ तबइन्द्रदर्पितधाइआइरिसाइअसबोलतभयो।मानिक- हालहिंमारतेंसठहेरिहमतनचलिदयो॥सुनिवक्रबचन- महेशक्रोधितनयनतीसरलेतहो।प्रकटीअग्निकीज्वाल तीक्षणजरनहरिलागेमहा॥होयबिकलबासवगिरयो चरणनत्राहित्राहिपुकारेहू।लखिदीनअलककपालपाव- कतोयनिधिमहंडारेहू।तेहिबूहदतेसतहंमयोबालक

सिंधुसुतकरिपालेऊ॥विधिआइकीन्हेंाकर्मनामहुधरिजलं-
धरचालेऊ॥गलकालककुभालरुरावृन्दानामनारीपायऊ॥
सोकालनेमिकिसुतामनबचकर्मपतिपदध्यायऊ॥ ॥

दो॰ भयोजलंधरप्रबलअतिजीतिजगतबशकीन्ह॥
निशिचरपतिहूँनिशिचरनिबासजहाँतहँदीन्ह॥

चौ॰ एकदिनसभाबैठरहेसोई॥सकलसमाजआपनीजोई॥
राहुकबंधसेरियअसकहई॥शीशमोरकेहिकाटाअहई॥ ॥

रोलाछं॰ सुनोनाथएकसमयदेवदानौसबआये।मथ्योसिं-
धुगिरिडारिरत्नचौदातहँपाये॥कामधेनुगजअश्वकल्पतरु
बिषशशिजानो।धनुकधन्वन्तरिकंबुरमारंभायहिचानो॥कौ-
स्तुभमणिवारुणीसुधायेचौदाकहेऊ।दियेबाँटहरिसुरनअ-
समधुअमरनभयऊ।तेहिहितश्रीभगवानमोहनीरूपबनाये।
निकटआइसुरअसुरउभैपाँतिनबैठाये॥बाटनलागेअमृतसु-
रहित्यनकहँदीन्हों।देवनिपाँयोपिउयतहाँउठिमोहूपीन्हों॥
रविशशिदीन्हिबताइविष्णुकाट्यौसिरमोरा।देवासुरसंग्राम
भयोसागरतटघोरा॥ऐरावतसुरधेनुकल्पतरुरंभाचारी॥लै-
गेवासवस्वर्गसंपदासकलतुम्हारी।सुनिनिश्चरपतिदूतसुत-
दिगतुरतपठायो।जाइकहीचरदेहुवस्तुजोदधिकीलायो॥
दूतबचनसुनिशक्रकह्योजानिजपतितोरा।लेइआइअबब-
स्तुहोतुजोअतिबलबीरा॥करिमहिमण्डलराजजीतिनरभ-
वरबराडा।अबआवैचढ़िसमरकरौंतेहितनसतखण्डा॥दू-
तजलंधरपासआइसबहालसुनावा।जातुधानसुनिकोपि
कटकलैआतुरधावा॥अमरावतीगेरिरिइन्द्रचहुकीन्हिलराई।
मैरनमारेअसुरसुरनयुतगयेपराई॥तबहरिसन्मुखजाइविवि-
धिविधिबिनयसुनाई।दुखितजानिभगवानसत्रुजीतेकीनि-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लड़ाई ॥ बीत्यो तीत कछु काल समर लखि रीझि पुरारी। कह्यो
जलंधर मांगु होइ रुचि जौन तुम्हारी ॥ जो मोपै परसन्न नाथ
दीजै वर येहा कमला के संयुक्त बसौ तुम हमरे गेहा ॥ एवमस्तु
कहि कृपा कीन तेहि गृहा निवासू ॥ शोभा तिहुंपुर केरि आइ
तहँ कीन प्रकासू। तब बासव ह्वै बिकल गये चतुरानन तीरा ।०
कह्यो सकल दुख रोइ सुनत बिधि दीन्ह्यो धीरा ॥ नारद ते तब
कह्यो जलंधर बली अपारा ॥ मरत न तासु शिव हाथ अपर ते-
मरी न मारा ॥ जो शंकर ले बध यह करै तौ सुर सुख लहई। सुनि ना-
रद पितु बचन दनुज गृहं आये तहँई ॥ लखि मुनि दीन्हि अ-
शीश नाइ शिर नृप बैठारा। बोल्यो बीर धरा आजु कित ते पगु धारा।
चौ० मुनि नारद बोले निज काजू। हम कैलास गये रहे आजू ॥
तहां करत त्रिपुरारि बिहारा ॥ शीश जटा उर नर शिर हारा ॥ ॥
नागन अंग भूतन रूप विशेषी ॥ तहां नारि एक सुन्दर देखी ॥
इंदुबदनि मृगनयनि बिराजै ॥ रति शत कोटि देखि छबि लाजै
जेहि के घर ऐसो तिय होई ॥ तेहि समान जग में नहिं कोई ॥ ॥
मुनि नारद के बचन सुरारी ॥ लीन राहु को तुरत हँकारी ॥ ॥
बोला शठ शंकर पहँ जाऊ ॥ कह्यो देहु तिय जो भल चहऊ ॥
शिप्र राहु शंकर पहँ आवा ॥ निज पति कर संदेस सुनावा ॥
सुनि महेश कियो क्रोध कराला ॥ कीरति मुख प्रगट्यो ततकाला
गदा पाणि दृग अति भय कारी ॥ डरपि राहु बहु बिनै उचारी ॥
सुनि पशुपति तब दीन बचाई ॥ आवा जहां निशाचर राई ॥
सब बिरतान्त तहां कर कहेऊ ॥ सुनि सागर सुत उर अति दहेऊ
**गीतिका छं०** अरु कह्यो सुरते सयन संग अपार लै सठ धायहू
बहु होत असगुन गुन न तनहिं सो शम्भु सन्मुख आयहू ॥ रव-
टबदन आदि गणेश शूल पिशाच भिरे प्रचारिकै। द्रुम अ-

स्यशस्त्र चलाइ एक हि एक डारत मारिके। कोउ परे कहरत घाउवस कोउ शीश बिन जहं तहं फिरैं। कोउमारु पुकारको ऊ एक बाण लागत महि गिरैं॥ यहि भांति कीन्हों युद्ध शिवश्रा थि मास तब बहह स्यो हिय है श्रमित गिरिजानाथ हरि को ध्यान समरै में कियो॥

चौ॰ नाथ हरो मम संकट भारी॥ तुरतै प्रगटे तहिं मुरारी॥ ॥
बोले हरि तुम सुनौ पुरारी॥ पतिव्रता है याकी नारी॥ ॥
तेहि प्रभाव खल जीति न जाई॥ कबहु कि काहे न कोटिउ पाई
तातें यहि ग्राड़ो कछु बेरा॥ मैं व्रत भंग करौं तेहि केरा॥ ॥
ग्रस कहि यती स्वरूप बनायो॥ गुहा निकट वृन्दा के ग्रायो॥
उदित भूमि तरु द्वारे पाई। बैठे ग्रासन रुचिर बनाई॥ ॥
तेहि रजनी रज निशिचर नारी। देख्यो स्वप्न भयंकर भारी॥
मनोजलं धर खर ग्रारूढ़ा॥ मुंडित सिर गा दक्षिण मूढ़ा॥
चौंकि परी व्याकुल ग्रति सोचा॥ प्रात भये गृह काज न रोचा
छिन द्वारे छिन भीतर जाई॥ जती बिलोकि विष्णु पहं ग्राई
सीस नाइ निज स्वप्न सुनावा॥ कह हरि सुरहित ग्रवसर पावा
सुनु वृन्दा पुराण ग्रस कहई॥ ग्रस सप्ना दुखदायक ग्रहई॥
तव पति समर शंभु कर ग्राजू॥ मरी ग्रनन्द करी सुरराजू॥
तेहि छिण माया कर धर शीशा॥ गिरा ग्राइ ग्रागे तेहि दीशा॥
विविध विलाप किहिसि पति चीन्हा॥ जा रहौं संग चिता रचि लीन्हा
कह हरि बचन मानु यक मोरा॥ तौ ग्रबहीं पति जीवै तोरा॥
रुंड मुंड धरि बसन बोढ़ाई॥ सुमिरो निज सत धरि ग्रढाई॥
यह उपाय करि सुनि तेहि किहऊ॥ बान ग्रर्धपति छापट दिहेऊ
उठ्यो जलंधर माया केरा॥ वृन्दहि तब सुख भयो घनेरा॥
मायाधीश चरण शिरु नाई॥ गई तुरत निज निलै लवाई॥

काढ़ि असन कछु ताहि खवाई॥ योंदोउ पर यंक बिछाई॥॥
कीन बिहार छूटब्रत तासू॥ भयो तेज हत दनुज उदासू॥ ॥
तब शिव समर जलंधर मास्यो॥ सिर भुज जहँ वृन्दा तहँ डास्यो॥
माया कापति गयो बिलाई॥ मरम जानि तब हरि ढिग आई॥
घरी छं॰ बिष्णुनीत देखि धीर। क्रोध कीन्ह श्राप दीन्ह॥
बरवै छं॰ छल्यो मोहिं तुम धरिकै जती स्वरूप। होउ मनुज अबजाय चराचर भूप॥ तहां मोर पति होई प्रबल सुरारि। यही रूप धरि हरि हैं नारि तुम्हारि॥

दो॰ अस कहि चिता सवाँरि बरबैठि जरी पति संग॥
तासु भस्म ले रमापति लिपटाई निज अंग॥

सो॰ इहां शक्र सुख पाइ। सुरगण मुनि दिगपाल मिलि॥
उमानाथ पहँ आइ। लागे सब अस्तुति करन॥

तोटक छं॰ प्रणमामि भवं भव भय समनं। करुणा मृत सिंधु कलिंदमनं॥ निरगुण गुण श्रम के करणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ अविकल्प कलानिधि वेद विभुं। सरबज्ञ सदा परमीश प्रभुं॥ चिद काशक नित्य निरावरणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ निरव द्य निराश्रम सावधुरं। अचलाखंड यार अजा अदुरं॥ सत शील गुणाकर कंज रणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ अतुलित बल वीर्य विरक्त बरं। गुण ज्ञान बिरागो नीतिपरं॥ मद मोह निशा दरणं तरणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ हरि कुंद कपूर समासु तरणं। सब भस्म विभूषित भूरि गणं॥ छबि कंद्रप कोटि दिवाकरणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ मृदु मौलि जटा मधि गंग बसै। बर बाल छपाकर भाल लसै॥ त्रय अंबक मूल करं धरणं। जय श्री शिव संकट के हरणं॥ उर मुंड अकाम्बर व्याल ब्रमं। श्रुति कुंडल

लोलकपोलश्रमं॥सुकआनशशाननमिंदुश्रंशं।जयश्री शिव
संकटकेहरणं॥डमरू करकंठभुजंगछजे।चरणाम्बुज चिंत-
नदुःखभजे॥भवआरणतारणकेकरणं।जयश्री शिवसंक-
टकेहरणं॥सुरसंतकधधजगोपलनं।भरवभावधनाशहरि
दलनं॥भुजदंडप्रचंडछयंकरणं।जयश्रीशिवसंकटकेह-
रणं॥वृषभध्वरबाहनभूतमिसं।गिरिनन्दिनिराजतवामदि-
सं॥शरणागतपालकघालकदुष्टजनं।जयश्री शिवसंकटकेहरणं॥
नहिं आवतजोवतुमैं जबलौं।दुखपावतजावतहैं तबलौं॥
जग औढरदानिउमारमणं।जय श्री शिव संकटकेहरणं॥
रघुनाथ कहैसुनिकोधगयो।तुरतैगवरीश प्रसन्नभ-
यो॥ मिटरुद्र एकादशजोपिपढ़ै॥दुखदैन्य नशैसु-
खभूरि बढ़ै॥
चौ० यहि विधि विनै कीन्ह असुरारी॥तब तिनने बोले त्रिपुरारी॥
सुनहु सकल सुरवचन हमारा॥विष्णु कृपा में निशिचर मारा॥
चलौ चलौ अब तिनके पासा॥आये चलि जहँ रमा निवासा
अमरन यतीरूप प्रभु देखी॥पृथक २ करि बिनय बिशेषी॥
रहे अधो मुख तब भगवाना॥मनहिं माहिं देवनि सन माना॥
हरिगति देखि सुरन दुख पायो॥तब महेश विधि युक्ति उपायो
बोलि उमा पद्मा ब्रह्मानी॥कह्यो प्रसन्न करहु हरि जानी॥ ॥
सो० प्रभु अनुसासन मानि।गईं तिहूँ भगवान पहँ॥
लै आरति निज पानि।कीन्हों हरि गुणगान कछु॥
चौ० पुनि भारती भस्म जल लयऊ॥धर्यो मही तरु धात्री भयऊ
देखि भवानी वैसे ठाना॥यती बेल, उपजी जग जाना॥ ॥
कीन इंदिरा सोइ उपावा।अज गन्धा तुलसी तरु पावा॥ ॥
सीतल छांह सुगंध लही जब॥है प्रसन्न हरि खोले दृग तब॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वृन्दातनु तुलसी भै आई ॥ हर्षि विष्णु निज शीश चढ़ाई ॥
अधम निशाचरि पतिब्रत कीन्हा ॥ हरि छलि तेहि उत्तम पद दीन्हा
देखि देव कछु बिहँ ने निशाना ॥ तुलसिहि अतुल पूज्य अनुमाना
बिष्णुप्रिया कलि कलुष निकंदनि ॥ जय जय जय तुलसी जगबंदनि
तव प्रभु सब देवन ते कहेऊ ॥ परम प्रीति वृन्दा बस भयऊ ॥ ॥
तेहि तनु पाइ तुलसि कर रूपा ॥ गयो बिरह सुख भयो अनूपा ॥
लक्ष्मी बास हृदय मम अहई ॥ तुलसी सदा शीश पर रहई ॥ ॥
जो मन क्रम यहि सेवन करिहैं ॥ सो कृतांत पुर पाव न धरिहैं ॥ ॥
दल करि प्रीति जो मम शिर राखी ॥ तुलसी मिश्रित भोजन चाखी
दीपदान देई जो कोई ॥ कोटि यज्ञ फल तिन का होई ॥ ॥
कंठ लगन जो तुलसी धारी ॥ सो सब काल शुद्ध बिन बारी ॥
तस्य दरश भे जानहु मेरो ॥ करौ सदा हौं जन उर डेरो ॥ ॥
तुलसी धारि करी शुभ कर्मा ॥ बढ़ी सो अधिक कोटि गुण धर्मा
नर वा नारि जो मम ब्रतधारी ॥ सो तुलसी स्त्रक करि अधिकारी
तुलसीदास नाम मम ध्यावै ॥ तासु पुराय कहि कापै जावै ॥ ॥

**दो०** तुलसी धारक मात्र जो होइ भक्ति बिहीन ॥
सोउ पूज्य है बिप्र कहँ और कहा नरदीन ॥

**कुण्डलिया** तिलक दाम धरि देखि कै करी जो निंदा तासु ।
सो मलेक्ष जाता असक त्यागी संगति तासु ॥ त्यागी संगति ता-
सु दोष नत लागी भारी । ज्यों हर हट के संग जाइ कपिला गो मा-
री ॥ मारी गो जिमि जाल तिमि यम गण दैहैं दुख दिलक । प्रमु-
दित है जो सुनै सोउ जान्यो दुश्मन को तिलक ॥

**दो०** तुलसी अक्ष धारे बिना करी जो भाजन अन्न ॥
परम अघाव निपाय सो लह्यो न जनु नरनन्न ॥
जेहि आदर मैं देउ जग तेहि निंदै अस कौन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भूपबचनपरिहरिप्रजाबसै किसोसुखभोन॥
श्रीमुखबानीशीशधरिगेसबनिजस्थान॥
कार्तिकमहातमकीकथायहमैंकीनिबखान॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृतश्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनोनामत्रयःत्रिंशोऽध्यायः३३॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
बरणौंश्रावणकीकथाकछुकवृतान्तबखानि॥

चौ० सुनिसोनकबोलेमृदुबानी॥राययुधिष्ठिरमखजबठानी
तामेंअचरजभयोजुकोनू॥मोकहनाथसुनावोतोनू॥ ॥

करहंसछं० हंसिकह्योसूत॥जबधर्मपूत॥कृतकरालाग॥दयबलिबिभाग॥

चौ० तबसबमिलिबोलेऋसिबानी॥पूरणमखभयकेहिबिधिजानी
घंटएकतबकृष्णबंधायो॥भोजनकहद्विजबिपुलबोलायो
जोइबिप्रखरिकाजबलयऊ॥घंटबिबेककछुशब्दनभयऊ॥
बोलेकृष्णप्रणतहितकारी॥यज्ञहीनभयभूपतुह्मारी॥ ॥
ताहीसमयनकुलइकआवा॥लौट्योतहजहंदिजनअंचावा-
भयोनसर्बबपुरखहरितासू॥तबतोमनकरिलीनउदासू॥
बहुरिपुकारिसभामहंकहई॥मिथ्यायज्ञभूपतबअहई॥
बिप्रएकसतुवामखकीन्हीं॥तेहिसमअपरयज्ञनहिंचीन्हीं

दो० सुनतसभाकेलोगसबनकुलैनिकटबोलाय॥
पूछ्योद्विजमखकिमिकरीसोअबकहोबुझाय॥

चौ० तनतबअचरजरूपलखाई॥सुनिन्यौरवोलाहरषाई॥
सतुवायज्ञभईजेहिरीती॥कहौंसुनौनृपसुनिकरप्रीती॥
बिप्रएककुरुक्षेत्रमहरहई॥नामशिलोचनतेहिसबकहई॥
सुतपतोहूअपनानारी॥चारिहुनकाहरिभक्तिपियारी॥

शीलाकीवृतिकरितनपोषै। प्रथमैसाधुविप्रकहंलोषै॥
यहिविधिकरतगयेबहुकाला॥ एकबारतहंपर्योदुकाला॥
पशुपक्षीसबभयेदुखारी॥ लंघनकरैंनिकरनरनारी॥ ॥
कठिनविप्रहूकोअतिजोवै॥ विनानजाइअन्ननहिंपावै॥
चुनिचुनिधरतमासयुगगयऊ॥ तीनिपावतबयकठेभयऊ
सोइभुजाइसेतुवाबनवायो॥ तामेंचारिउभागलगायो॥ ॥
धर्मवेषोरूपबनाई॥ आयेतुरतजहांद्विजराई॥ ॥ ॥
देखिविशिलोचनिपरशिरनाया॥ आदरकरिआसनबैठाया॥
चरणधोयसेतुवाधरेआगे॥ हितते धर्मखानतबलागे॥ ॥
आपनभागजेइंजबलीन्हा॥ क्षुधानमिटीद्विजहुंनिजदीन्हा
सोउपायपरत्रपितनभयऊ॥ तबद्विजशीशनाइनिजलयऊ
चतुरनारिपतिकीगतिजानी॥ बोलीबचनधर्मनयसानी॥
हेपतिभागमोरलेदीजै॥ क्षुधितनजाइबातसोकीजै॥

दो० सांचीप्रीतिपिछानिकै सोऊभागद्विजदीन॥
भयोनपूरणासन्तलखिबोलापुत्रप्रवीन॥

रोलाछं० अहोपिताअबभागमोरलैसंतेदेहू॥ करहुपरणायहपूरजाइचहतनधनगेहू॥ सुतयद्यपितुमबड़े तदपिमोहिंपालनयोगू॥ भयोबृद्धमैतुम्हेंअबैकरनासुखभागू॥ तातेयोषहुदेहजियोबहुअर्थलगेजेहि॥ धर्मबिनाजोजियपिताजगमृतकआनितेहि॥ सधैधर्मतनगयेताहिजीवतपहिचानो॥ असकहिदीन्होंभागभक्तखायेनअघानो॥ पुत्रबधूजियजानिदीननिजभागमगनहोय॥ भयोतृप्ततबसंतबचनबोल्योऐसेसोय॥ हेद्विजमैंहोधर्मलेनआयोतबअन्ता॥ देखिगयोहियहारिनहींकोउतुमसमसंता॥ अबतजिकैमृतलोकबसोचलिहरिपुरमाई॥ घटीनतुम्हरीपुण्य-

औरदिनदिनअधिकाई॥ताहीसमयबिवानदेवगणतें-
हलै आये। जयजयकहिसुरसुमनसुमनद्विजपरबरषाये॥
लीन्हौं बहुनचढ़ायजायहरिपुरमहँराख्यौ॥देख्यो धर्मप्र-
ताप किहें ऐसा फल चाख्यौ। जितअन्चयारहे अतिथतहां
में निकस्यों धाई। भयो अर्धतनुस्वर्णसर्वजलरहा नराई॥
गीतिका छं० हमरौडमिरि महँ औरदूसरियज्ञवैसौनाभई।
जहँहौंलह्यौ फलअक्षत आधी देह हरि कीहै गई॥ तबतेंफि-
रेंबहुतीर्थयज्ञनसबकोहू ना किया। इह नोयहीउरधारिलो-
ट्यौ मैंरिनहिं खोटपलदियो॥

दो० सुनिन्यौराकेबचननृपशोचकीन्हमनमाहिं॥
पूछिनिप्रभुतेयज्ञयहपूरणभयकतनाहिं॥

चौ० सुनतकृष्णबोलेहरषाई।यहौभेद मैं कहौंबुझाई॥ ॥
यहिसभा जबैसो नहिं आयो॥ऋषिसमूह मिलिजहंतहंसायो
जोतुमकेह्यौभक्तथेनाहीं॥हैंपरि जातिगर्भइनमाहीं॥ ॥
कुलविद्यामहत्वछबिज्ञानी॥पांचकांटयेभक्तकेजानी॥
इनतेभक्तिननेरेआवत॥अतिसुकुमारिहेरिबिडरावत॥
तेहितेनिरअभिमानजोहोई॥पूरणाचहौजेवावौसोई॥॥
ऐसेभक्तकहांहमपाई॥तबपुरहैतौदेहुबताई॥ ॥ ॥
बालमीकसुपचाबड़साधू॥लाबहुजाइसहितअहलाधू
सुनिप्रभुबचनयुधिष्ठिरधाये॥करिसनमानभवनलैआये
परसेअसनहुर्षदीनाना॥सोसबभक्तएकमहसाना ॥ ॥
पंचालीलखिकृतअनुमाने॥सूपचरसस्वादेकाजानै॥
तेहिंजेवतकरघंटाबाजा॥एकैबारखुसीभाराजा॥ ॥ ॥
वासुदेवमनविस्मैंआवा॥बारकबारशब्दसुनियावा॥ ॥
ग्रासग्रासपरचाहियेबाजा॥असबिचारिबोलेयदुराजा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सभालोगसबसत्यहिभाख्यौ।।यहिअवसरदुरावजनिराख्यौ
छोभकीनकेहिहृदयविशेषी।।बड़िमान्यताभक्तकेदेखी।
निजउरबातदुर्पदीकहेऊ।।सुनिहरिउचहुदोषबड़गेहेऊ
चलदलद्रोनपुरीषतेहोई।।सुरनरमुनिपूजतसबकोई।
तुलसीस्वच्छचहैंतहँजामे।।तिमिममजनपावनसबठामै
बरतबांझहरिबासरअहई।।नदीबांझसुरसरिश्रुतिकहई
देवबांझजिमिरमानिवासा।।धरणाबांझतिमिमेरदासा।।
श्वसुतकुलनिजजन्मनिरिक्षा।।मात्रयोनिअनुलीनपरिक्षा
तातेऐसीकसूनकीजै।।चलौभक्ततेपूछिलीजै।। ।। ।।
सबमिलिआइकहीअसिबानी।।डार्योवेयोएकहिमहसानी
बोलेभक्तभोगभगवाना।।लागिगयौसबभयोसमाना
पावतपरतस्वादअनुमानी।।यहितेमैंसबडारसानी।। ।।
सुनिजनबचनहर्षउरछयऊ।।भक्तजेइजबअचवतभयऊ
नकुलजायपरसादसोपावा।।सकलशरीरस्वर्णकरभावा
सकलसमाजदेखिअसकहई।।अमितप्रभावभक्तिकरअहई
हाटशकोटिरहेद्विजभूरी।।सुपचभक्ततेभैमखपूरी।। ।।
बहुमुनिधौंपंपाशरकक्षा।।सेबरीपदरजतेभाखक्षा।। ।।
कुम्भजव्यासआदिमुनिनाना।।हरिभजिकोनहिंभयौमहाना।
तबसुजातरिपुपूछिलीन्हा।।केहिगुणइनतुमकहबसकीन्हा
सुनहुधर्मनन्दनकरिनेहा।।मोहिंजनसमनहिंप्रियनिजदेहा।
तबपुरमभक्तयहछेमा।।सुनौतासुबरणोंजपनेमा।।।।
गीतिकाछं०जपनेमसंयमकरहिध्यानअमानसदारहा-
वही।समशीलसतसंतोषदयाविचारिक्षमागहावही।।छ-
लहीनइन्द्रीजीतिउरबैरागमदमोहतजै।।गतकामक्रोधरु
लोभभयमोहिंछांड़िआननहिंभजै।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ ममगुणगावतपुलकितनममजनसोंअतिप्रीति।।
नेहितेमैंयहिबसरहतअरुआसुगकीरीति।।
यहिप्रकाररघुनाथहरिभाख्योभक्तिप्रभाव।।
सुनतयुधिष्ठिरकेभयोतबभक्तनमेंभाव।।

सो॰ पुनिबोलेकरजोरि।बरणाश्रमकेधर्मप्रभु।।
सुननेकीरुचिमोरि।भक्तिसहितसोबरणिये।।

वीरछं॰ सुनिप्रश्न।बदकथा।।द्विजधर्म।करमर्म।।

दो॰ संध्यामंजनहोमजपश्रुतिपठनाश्रुनदेव।।
क्षमातोषद्विजधर्मयहअभ्यागतकीसेव।।
क्षमातेजबलअचलकीर्तिअतिउदारद्विजदास।
येगुणक्षत्रीकेरकुरउरमेराविश्वास।। ।। ।।
आस्तिकबुद्धिविनीतव्रतदानेधमआरम्भ।।
मलक्षणावरवैश्यकेविप्रभक्तनिरदम्भ।।
तिहूंवरणकीसेवकरिजोपावेसोलेइ।।
सतसन्तोषीकपटबिनशूद्रधर्महैएइ।।
मिथ्यावादअशौचअरिनास्तिककुटिलकठोर।।
एलक्षणानरनीचकेकामीक्रोधीचोर।। ।।
सत्यक्षमापरस्वार्थरतगतमदमारकुकर्म।।
तृष्णाविनचहुंवरणकेरसाधारणधर्म।।
अपनेअपनेधर्मकरिअन्तअमरपुरजाइ।।
वरणभ्रष्टभोगेनर्कअबसुनुआश्रमराइ।।
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यइनतीनहुंनकीविधिएक।।
गर्भाधानादिकसकलसंस्कारकरनेक।।

कुण्डलिया जनेभयेगुरुपासरहिपढैवेदपदसेइ।द-
ण्डकमण्डलमृगचरममालमेंखलालेइ।।मालमेंखला

लेइ केशन नख बिन्दु न त्यागै। संध्योपासन सौच काल तीनो-
अनुरागै।। रागै नहिं जग माहिं लघु असन करै दृढ़ आसनो।
ब्रह्मचर्य के धर्म ये मम सम समो तेगुरु जनो।। ब्रह्मलोक जो चहै
तौ रहै याही पथ माहिं। कामी कामिनि के संग भूलिहु ठानै-
नाहिं।। भूलिहु ठानै नाहिं चहै जो होन सकामा। तौ श्रुति पढ़ि
घर आइ करै युवती अरु धामा।। धाम माहिं जप दान मख कर
तरहै श्रुति धर्म। यज्ञ करावन दत्त ग्रहण वेद पढावैं ब्रह्म परिये मी
नो आइ भूमि जिमि पावक को नीर। ब्रह्मतेज नहिं रहत है तेहि-
त्यागत मत धीर।। तेहि त्यागत मति धीर सिलो करि तन निरबाहै।
मम सुमिरण मम ध्यान अन्न मे बोपद लोहै। लोहै छत्री यह क-
रै पालन सबको वीरि। रण सन्मुख मरि जाय नहिं घर घर उपरि।।
गृहवासी को धर्म तिन कै पाँच मख भेय। प्रथम पाठ करि ऋषि-
जजन बहुरि होम करि देव।। बहुरि होम करि देव भूत बलि आइ
ते पोतर। अन्न नीर ते अतिथ कहा शत्रु कह मोतर।। मित्र मानि
सब काहु समुझि काहु इन दुख वै। मिथ्या जाने जगत कुटंब
पंथी ठहरावै।। मिलेन मुद गत शोच रहै पाहुन सम तासो। व
कै रै सदा मम भजन तेरै सो बसि गृहवासी।। जब जाको विपदा
परै वैश्य बिरति सो लेइ। जब मिट जावे आपदा तब आपनि ग-
हि लेइ।। तब आपनि गहि लेइ एक सुत भेवन जावै। चहो रहै घ-
र माहिं मुक्ति अस ग्रेही पावै।। पावै सो इतम ह्वार होय जो अग-
आशक्ता। मैं मै करि कुल सेजे भजै नहिं मेरो सक्ता।। भक्ता के गु-
ण नाहि आहि उर खल लक्षण सब। अन्त समय पहिं तात जा-
त फिर नात तीर जब यहि विधि बय पचास रहि तब जावै बन-
माहिं। ऋतु ऋतु को नप करै तहं कचन खन नाखै नाहिं।। कच-
नख न नाखै नाहिं निरसहै भोग बिसारे। कन्द मूल फल खाइ पो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

स प्रणामय धारै ॥ धारै बलकल बसन रसन हित आवै रि-
धि सिधि । क्षुधैन खान प्रस्त केर लक्षण है यहि विधि ॥ बन-
बसि होइ पवित्र मन तब लेवै संन्यास । दण्ड कमण्डल धारि
कै करै एकांत निवास ॥ करै एकांत निवास क्षुधा हित पुर-
में आवै । द्विज घर चुटकी सात मांगि सरि सरतट जावै ॥ जा
हु करै तंह पाक प्रथम कछु भाग निकारै । कीट देव लखि पशुइ
किनौ सोहि जल माडारै ॥ डारै पग मग देखि करै मम सुमिरन
सुचितन । यह लक्षण संन्यास नहीं सो भेष बहुत बन ॥

दो० परम धरम संन्यास करि लहु परम पद हंस ॥
परदश बिधि के बिप्र लखि लेइ लीन करअंस ॥

कुण्डलिया तत्व ज्ञान जब होत तब छूटि जात सब मान । जदपि हृदय अति बुद्धि तदपि बरतै बाल समान ॥ बरतै बाल समान ध्यान मेरो मन माहीं । क्षुधा तृषा तप सीत तिन्हैं कछु ब्यापै नाहीं ॥ नहि मद माया मोह भय रङ्कार दृढ़ मन्त्व । जीवन्मृतक समान यह परम हंस कर तत्व ॥

दो० पर पद दायक धर्म यह परम हंस पद श्रेष्ठ ॥
जो ये लक्षण होइ न तौ भयो जानियै भ्रष्ट ॥
हे नृप जे मम भक्त हैं रहित बासना चित्त ॥
तदपि करैं शुभ कर्म किं जग कल्याण निमित्त ॥
जैसे सबिता के बिषै अंधकार नहिं लेश ॥
तदपि करत प्रकाश जग परसुख हित उपदेश ॥

चौ० कहहु नृप भक्तन के शुभ कर्मा ॥ बदहु देव सबौं परि धर्मा ॥
सुनि गिरिधर बोले लखि प्रीती ॥ सुनहु भूप भक्तन की रीती ॥
मेरी कथा सुनै अरु कहई ॥ सहित सनेह नाम मम गहई ॥ ॥
पूजा में अति निष्ठा धारै ॥ बिबिध भांति अस्तुति बिस्तारै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बंदनकरैप्रदक्षिणादेई॥साष्टांगचरणमूललेई॥ ॥ ॥
सबभूतनमेंमोकोजानै॥ममजनतेहिमेरोतनमानै॥ ॥
मेरेहेतकरैसोकरै॥मोबिनजौननाहिंपरिहरै॥ ॥ ॥
मेरेहेतअरथसबत्यागै॥प्रातहुभोगनतेंबैरागै॥ ॥
योगयज्ञजपतपब्रतदाना॥शयनासनभोजनजलपाना
इत्यादिकसबममहितकरहीं॥जातेअन्तरसोपरिहरहीं॥
सदाआपकोमोहिनिवेदै॥प्रेमशस्त्रतेग्रंथिहिछेदै॥ ॥
मुक्तिभुक्तिकीकरैनआसा॥तिनकेहृदयकरौंमैंबासा॥ ॥
ऐसीजबममभक्तिलहेऊ॥तबअबशेषनकछुरहिगयऊ॥
मेरीभक्तिहृदयजेहिनाहीं॥तेसबधर्मअधर्मकराहीं॥ ॥
भक्तिसुतंत्रचारिफलदाता॥सकलजीवसुखप्रदजिमिभाना
बिरतिविवेकज्ञानविज्ञाना॥होततुरततेहिकरतसुजाना॥ ॥
सोइमुनिसाधुसुघरबरसोई॥यस्यभक्तिममकिंचितहोई॥
जिनममभक्तिहृदयमहंधारी॥सबसुधर्मकेतेअधिकारी॥

दो० बरणाश्रमकरमानधरितबतकश्रुतिकरदास॥
बरणाश्रमतेत्यक्तजेश्रुतिऊपरतेहिबास॥
जेहिकरिहोतप्रसन्नमैंबिनहींश्रमअतिहाल॥
सोभाख्योनिजभक्तिमुनिपुनिबोलेमहिपाल॥
हेप्रभुजोसबधर्ममयहैंतबभक्तअखेद॥
कर्मउपासनज्ञानकतकियेत्रिकांडीबेद॥

चौ० एकैकससिद्धान्तनराखा॥सोऊभेदसुनियप्रभुभाषा
जाकोंयथादेख्योअधिकारी॥तेहिहितंतैसीबातबिचारी॥
जिनजगजालमूढकरिजान्यौ॥ब्रह्मलोकतकदुखअनुमान्यौ॥
बहुरितुताकेउद्यमत्याग्यौ॥बिधिनिषेधबिनमोहिंअनुराग्यौ
तिनकोंज्ञानयोगअधिकारा॥अस्थिरहैममकरैबिचारा॥

अरु जिनके समता दृढ़ नाहीं॥ राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं॥
परम भगुरा सुनि के सुख मानें॥ मेरो भजन सत्य करि जानें॥
तिन कहं भक्ति योग सुखकारी॥ तेरे आपु तौरे संसारी॥ ॥
अरु जे विषयन के आधीना॥ तिनके उर धर्म में लवलीना॥
कथा सुनन को नहिं सवकासा॥ नहिं मम भजन केर अभ्यासा
तिनको कर्म योग सुखदाई॥ गहें न भूलि निषेध भाई॥ ॥
जो शुभ कर्म तजे अस ग्रही॥ सो सम सुपच न कछु इयें तेही॥
तन में जो रन घर में हाला॥ नृप सरिक करि किल है कल्याना॥
जे लत घर तिनहु न मा हेहीं॥ ते श्रुति से उत्तम प्रिय मोहीं॥ ॥
फल इच्छा सो सकल मिटावै॥ अन्त समय मम लोक सिधावै

दो० बहुत जन्म जप योग तप धर्म ज्ञान रत होइ॥
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्ति लहे मम सोइ॥
करे कथा मम सन्त जब तब नहिं दूजे ठौर॥
गुरु सो मेरो रूप है सर्व देव शिरमौर॥ ॥
दश क्रम में ब्रत बंध में तीरथ होम सराध॥
खट स्थान गुरु विप्र है दिक्षा गुरु मम साध॥
मुनि गिरधर के बचन वर हरष्यो भूप सुजान॥
एकादश अस कन्ध मत यह मैं कीन बखानि॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत युधिष्ठिर यज्ञ वर्णाश्रम धर्म हरिभक्ति साधन वर्णनो नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

दो० मुनि विराम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
स्वसन समुच्चय आदि बहु सत मत कहौं बखानि॥
सो० पुनि सौनक शिर नाइ। बोले द्विज पद नाइ सिर॥
नाथ कहो समुझाइ। सत संगति महिमा कछुक॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० सुनतसूतबोलेसुखपाई॥सतसंगतिसमकछुनहिंभाई॥
सौसहस्रसंबततपकरहीं॥अयुतयज्ञनितउठिअनुसरहीं॥
चंद्रायनव्रतआदिअपारा॥करैयोगजपदाननिहारा॥ ॥
जहँलगहैंतीरथफिरिआवै॥छिनसतसंगसरिसनहिंपावै॥
सातस्वर्गसुखमोक्षहुकेरा॥धरैतुलापरएकहिबेरा॥ ॥
सतसंगतिलवभरिकैरकोई॥तेहिसमसुखदूसरनहिंहोई॥
निहसंशयजानहुयहभाई॥सत्यमहातमरामसोहाई॥ ॥
गंगापापतापशशिहरहीं॥दालिदसूरिकल्पतरुकरहीं॥ ॥
साधसंगमाजोमनलावै॥ततकालतिहुंतापनसावै॥ ॥
दोइघरीयकघरीसोहाई॥हरिकेजनतिष्ठजहंआई॥ ॥
तीरथसकलतहांईजानो॥महीतपोबनसोइपिछानो॥ ॥

दो० संतनकीबानीसुनैप्रेमसहितजोकोइ॥
गंगादिकसबतीर्थफलबिनस्नानहिहोइ॥

चौ० अन्तकालहूजाकेपासा॥भक्तअकामीकैरनेवासा॥ ॥
ब्रह्महत्यामयपापीहोई॥भगवतधामपाइहैसोई॥ ॥
सतसंगतिभवनिधिमहनावा॥चढ़ैसोपारहोइमतिभावा॥
साधसंगतेसीतलहोई॥जन्ममरणछिनमेंजाइखोई॥
साधसंगतेपातकजावै॥ज्योंपावकतेसीतनसावै॥ ॥
सतसंगतिगतिपलटैऐसे॥पारसतेलोहाहरिजैसे॥ ॥
अधमहुसाधसंगजोआवै॥पावनहोइवेदअसगावै॥ ॥
ज्योंअपवित्रनीरमधुसंगा॥गंगमिलतपावनहैगंगा॥ ॥
तिलसंगफूलफुलेलकहायो॥साभरिभयोखेतजोआयो
नीरछीरकीसंगतिपाई॥बरनमिल्योसोइमोलबिकाई॥ ॥
रसअनेकभांतिकेकोई॥मलयागिरिसंगचंदनहोई॥
बेनकरीलहोतनहिंजानो॥सारहीनहतभाग्यपिछानो॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे जे नर अघ अभागी ॥ बैठे साधन दिग अनुरागी ॥ ॥
संगति फल लागत नहिं कैसे ॥ लागे बेलि बिच अस जैसे ॥
जिनके भक्ति बीज उर छायो ॥ सत संगति जल लागत हीं पायो ॥
उगल पुरन सुनहु मुनि तासें ॥ अन्धे व्हितै नम नहिं आसें ॥
उदय दिनेश सबहिं लखि परहीं ॥ पै उलूक गीदर निमि चरहीं ॥
नानेतन संगति का करहीं ॥ जो न वचन हृदय नहिं धरहीं ॥
मैं न जिन वचन सन्त करि माना ॥ तिन तिन का होगा कल्याना ॥
सोम अमरनि कौन पै जाहीं ॥ तदपि कछुक बसे तीम थाहीं ॥
अजामेल सठ पालक धामा ॥ साधु संगति मिलि लहेसि अरामा ॥
बालमीक मुनि भे मुनिराई ॥ सप्तऋषिन की संगति पाई ॥ ॥
द्विज इंद्र भौषेन एक भयऊ ॥ लहि गोकरन संग तरि गयऊ ॥
दो० महादेव का संग करि कीर अंड सुनि भेव ॥
चेतन है अनि उड़ि गयो भयो आइ शुकदेव ॥
चौ० व्यास संग नारद का कीन्हा ॥ तप निमि टी भे शीतल चीन्हा ॥
औसर संग चिमन का पायो ॥ भरखन सहित सुरलोक सिधायो ॥
व्यास पुत्र के संग समाजा ॥ भे भव पार परीक्षित राजा ॥ ॥
षा वह जार यज्ञ सुल जबने ॥ नारद संग जाइ बन गवने ॥ ॥
विप्र एक ग्रह दुख बस दीन्हा ॥ भिक्षा हित जात तन छीना ॥
वैश्य एक निकस्यो मद भरेऊ ॥ रथ का धका लाग द्विज गिरेऊ ॥
मारन लाग ताप करि क्रोधा ॥ माल लि देन चले तब बोधा ॥
तुरंत धरे सिपाह अतीरा ॥ आये चलि ब्राह्मण के तीरा ॥ ॥
बोले विप्र शोक परिहरहू ॥ नेक बिचार हृदय महँ करहू ॥ ॥
दुख सुख हानि लाभ संयोगा ॥ कर्म नते याचत सब लोगा ॥
जो जस करै सो तस फल पावे ॥ आन नहिं बिरथा दोष लगावे ॥
यद्यपि हम पशु योनि भारी ॥ ऐसा बोध करहिं नहिं भारी ॥

करणायहींननंशसैठानो॥ जोकछुहोइभावई मानो॥ ॥
यद्यपिहमकछुधर्मनकरहीं॥ तद्यपिब्रह्मघातनहिंचरहीं
जीवबधेबहुघातकजाना॥ तातेविप्रदेहुजनिप्राना॥ ॥
देखोतुमबिचारिमनमाहीं॥ नरतनसमतनदूसरनाहीं॥
जासुविवसमचराचरसोहा॥ नर्कस्वर्गअपवर्गअरोहा॥
तातेहरिसुमिरनकरलेहू॥ कोहकुबुद्धियाहितजिदेहू॥
तनछूटेपरबड़दुखपावै॥ नहिंजानीकेहिजोनिसमावै॥ ॥
ब्राह्मणतनतैंउत्तमपायो॥ जगतसुखनलगिबादिगवांयो
खानपानहितनाहिंजनहिंआयो॥ तपकेकारनदेहधरायो॥ ॥

दो० सुनिजंबुककेबचनद्विजकरनलग्योतपजाइ॥
मिटिगोसबदुखअंतमहंबस्योस्वर्गसुखपाइ॥

चौ० असमतसंगअहैमुनिराई॥ गईतुरतद्विजव्याधिनसाई
अबरसुनहुंविधिसुतएकभयऊ॥ जाजुलऋषितपहितबनगयऊ
कीन्हतपस्यातनसुधिटारी॥ खगनकीनघरजटासंभारी॥
अंडादेइपंक्षिफूटिउड़ाने॥ शिरतेनिकसतजाजुलजाने॥ ॥
तबऋषिकेउपज्योअभिमाना॥ मोहिंसमानतपकियोनआना
तुरितभईनभबानीटेरो॥ तुलाधारसमतपनहिंतेरो॥ ॥
समताभक्तिजासुउरआई॥ रहतबनारसदेखोजाई॥ ॥
सुनिजाजुलऋषितुरतसिधाये॥ तुलाधारबनियाघरआये
देखिकीनसनमानअपारा॥ चरणधोइआसनबैठारा॥ ॥
पूछ्योकेहिहितआयहुआजू॥ अज्ञाहोइकरौंसोइकाजू॥
कहऋषिपथातुम्हारसुनिमोहीं॥ मासुखअबकछुपूछततोहीं
मैंबनतपबहुकालकमावा॥ तुम्हरीसमसरिनासुनिपावा॥
कौनधर्मतुमसाधतअहऊ॥ सोहमतेकिरपाकरिकहऊ॥
तुलाधारकहरामहिंध्यावों॥ रामहिकेगुणमुखतेगावों॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कायबचन मन संतहिं सेवों ॥ विप्रजेवाइ दान बहु देवों ॥ ॥
ताकर फल तन को नहिं चाहों ॥ अरपों हरिहि सुमारग गाहों ॥
चारि खानि अहं लगि तन धारी ॥ सब महं व्यापक एक मुरारी
यह बिचारि सब को सिर नावों ॥ ऊंच नीच नहिं मन में लावों ॥ ॥
दुखी दरिद्री होइ जो कोई ॥ सेवों ताहि नरायन जोई ॥ ॥ ॥
डांड़ी थकरि छांटि नहिं देहूं ॥ झूठ न कहों पराग न लेहूं ॥ ॥
काहु शत्रु मित्र नहिं मानों ॥ मैं मेरी तेरी नहिं आनों ॥ ॥
आये हर्ष न गये बिषादा ॥ दुख सुख सम नहिं करौं बिवादा
मो मन के मारग नहिं बहऊं ॥ पांच हु बिषय प्रहारे अहऊं ॥ ॥
करि हरि मीन कुरंग पतंगा ॥ एक एक बस बिसरत अंगा ॥ ॥
सब को बस सो किमि सुख पावे ॥ तेहि ते मो मन दूर रहावे ॥ ॥
काहु दुख देवों नहिं पावों ॥ राम नाम निशि बासर ध्यावों ॥ ॥
याते शांति बसी उर आई ॥ दुरमति भ्रम सब गयो नसाई ॥ ॥
निज दुख निज गुण कहा न चाही ॥ तुम पूछ्यो मैं बरन्यो ताही
कहहु मुनि शांति कवन बिधि आवे ॥ सुनहु निगम यह भांति बतावे

दो० सात भूमिका ज्ञान की तिन बिन होइ न ज्ञान ॥
ज्ञान बिना नहिं शांति सुख सो अब करौं बखान ॥

कुकुभाछं० प्रथम भूमिका है शुभइच्छा दूसरि ज्ञान बिचा-
रै । नित्य वस्तुहि स्वयं ले राखें और अनित्य निवारै ॥ तीसरि त-
नमानसा कहावै तन मन इन्द्री रोकै ॥ चौथी सत्यापुत सब-
जग में आतम एक बिलोकै ॥ पंचम अंश शक्ति निज रूपै ता-
में निश्चय आने । छठई नाव पदारथ तेरे होत बुद्धि लगु हाने ॥
सतई तुरी भूमिका जानो मैं त्वें जहां न रहई । सप्त भूमिका ये
कहबावैं बिन गुरु ना कोइ लहई ॥

चौ० ये सातौं साधन बनि आवैं ॥ उपजै ज्ञान शांति तब पावै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अबतेशान्तिबसैउरआई ॥ कामक्रोधमदजाहिंनशाई ॥
उरबासनारहै नहिंकोई ॥ भयकलेशसंशयजाइखोई ॥
समचितरंकरावबड़छोटा ॥ समचितघरबनसज्जनखोटा
समचितशीतउष्णबरघाना ॥ कंचनमृतिकानारिपखाना ॥
समचितमातुबंधुसुतदारा ॥ समअरिमित्रहुअपनपरारा ॥
ब्रह्मानन्दमगननितरहई ॥ जीवनमुक्तसोईनरअहई ॥ ॥
परमहंसीयहज्ञानकहावत ॥ रामकृपातेकोइकोइपावत ॥
अतिदुस्तरमारगयहभाई ॥ बरनतसुलभकरतकठिनाई
तातेजेनचतुरनरअहईं ॥ तजिसबरामभक्तिएकगहईं ॥
ज्ञानबिरागआपुहीआवै ॥ गोसङ्गज्योंघृतबत्सहुपावै ॥
तातेसुनितुमहूंअसकरहू ॥ ज्ञानभक्तिहिरदैमहधरहू ॥

**सो०** जोकोइभक्तिबिहाइ । ज्ञानहेतबहुश्रमकरहिं ॥
मानहुंतजिसुरगाइ । आकदुहैपयलागिशठ ॥

## महारामायणेश्लोक

येकेचलाहृतमलानुरक्ताःश्रीराममूर्तिंविमलांविहाय । तेवैम-
हान्धाहृदयेस्वमूर्तिंत्यक्त्वायजन्तिप्रतिबिम्बकुम्भे ॥ १ ॥
येरामभक्तिममलांसुविहायरम्यां । ज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरि-
क्लिष्टमार्गे ॥ आरांमहेन्द्रसुरभीपरिहृत्यमूर्खा । अर्कंभजं-
तिसुभगंसुखदुग्धहेतुम् ॥ २ ॥

**सो०** ज्ञानतेपरपदजाइ । करैनिरादरहरिचरण ॥
गिरैसोपुनितमआइ । प्रभुरक्षितनहिंजनकबहुं ॥

## भगवतेब्रह्मस्तुतिश्लोक ।

येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्ध-
यः । आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततः पतन्त्यधोनादृतयुष्मदंघ्र-
यः १ ॥ तथानतेमाधवतावकाः क्वचित्भ्रस्यंतिमार्गात्त्व-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यिबद्धसौहृदाः॥त्वयाभिगुप्ताविचरंतिनिर्भयाविनायका-
नीकपमूर्द्धसुप्रभो॥ १॥

दो० नसोपुराणनसंहितानसोकाव्यइतिहास॥
नसोशास्त्रतीरथव्रतजहांनहरिहरिदास॥
योगकुयोगमखागिगुराऽवगुणजालाभास॥
विद्याऽविपतिसुखजहंनरामरतिसाल॥
नारदादिसनकादिमुनिऽअजशंकरशुकदेउ॥
लोमसभृगुसबज्ञानविधिभक्तिकरतहैंसेउ॥

चौ० सुनिजाजुलिक्रोधहरषतभयऊ॥ज्ञानभक्तिहिरदैधरिलयऊ॥
तुलाधारकहंगुरुकरिजान्यो॥जैसेगरुड़भुसुंडिहिमान्यो॥
ऐसोशांतिउरमेंलनायो॥तवनभवानीकाशिरनायो॥ ॥
ऋषिसबजगमेंब्रह्मनिहारो॥अससतसंगप्रभावअपारो॥

दो० ब्रह्मजीवजगवृक्षहैसतसंगतिफलसार॥
वरचाऽअमृतरसभराबीजहुतासुमझार॥
बीजहुतासुमझारहेइमिभाषतवेदांत॥
जोचाहैहरिदरससोकैरैसदासतसंग॥
विमुखपलालनपाइएपियूषनचखुसंभार॥
विमुखमिलतसतसंगमेंइमिकहैंअतनसार॥
तातेजनरघुनाथनितकरुसतसंगविचारि॥
प्रभुपदवंदेसनेहजेहिजनममरणजायहारि॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतऽआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा-
मसनेहीकृतजाजुलितुलाधारप्रसंगवर्णनोनामपंचविंशोऽध्यायः२५॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरगणपतिगिरासुखदानि॥
कहौंसमुझैकोकथाकछुकएकादशजानि॥

चौ० बहुरिसूतबोलेहेताता॥जाजुलिकेरिकहौंमैंगाथा॥ १॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपर सुनहुं यक नहुष भुवारा॥ भयो इंद्रपद लेन विचारा॥
सो यज्ञ करि चढ़यो बिमाना॥ इन्द्रलोक सूनो सुनि काना॥
वृत्रासुर मार्यो सुरईशा॥ तेहि हत्या ते डरे न दीसा॥ ॥ ॥
नहुष जाइ सिंहासन बैठो॥ प्रभुता पाइ आइ मद पैठो॥ ॥
सहस वर्ष कीन्ह्यों सुरराई॥ इन्द्राणी दिश कभू न आई॥
तब नृप ता सों बचन सुनावा॥ अब सो हि इंद्र जानु सति भावा
सुनत शची अति से दुख पायो॥ धायो गुरु हि तुरत ढिग आयो
सीस नाइ निज बिपति सुनाई॥ दीन देखि मुनि युक्ति बताई॥
नृपते तुम अस जाइ सुनावो॥ आवाहन चढ़ि मम ढ़िग आवो
शची आइ नृपति से कहेऊ॥ सुनत नहुष अति धाय सुख लहेऊ
घटज आदि द्विज लीन लगाई॥ चढ़ि पालकी चल्यो हरषाई
कामातुर है कहेसि रिसाई॥ सर्प सर्प चलिये अधिकाई॥
मुनि अगस्त्य तब दीन्हो श्रापा॥ होहु सर्प तुम अपने पापा॥

दो॰ तेहि छिन उतरि पर्यो पद कर्यो बचन प्रकास॥
शाप दूरि कब होइ है कहौ जानि निज दास॥

चौ॰ कह अगस्त्य द्वापर के अन्ता॥ प्रगटी धर्म तनय यक संता
सो आइ तुम्हरे ढिग कबहीं॥ चरण छुवत निस्तरिहौ तबहीं
कौन भांति जानब हम ताही॥ कुंभज कह्यो चिन्ह इक आई
पूंछ्यो ज्ञान उत्तर जब पायो॥ जानि तासु पद शीस धरायो
अस कहि मुनि पुनि चले सिधाई॥ भये सर्प नाहुष तब आई
गिरि कंदरा रहे बहु काला॥ हिये उठे अगिनि की ज्वाला॥
बड़े कष्ट करि द्वापर पायो॥ बनोवास पांडव जब आयो॥
द्रुपद स्वयम्बर रच्यो अनूपा॥ जुरे जहां दिशि दिशि के भूपा॥
तब खबर परि तिन कह्यौ गोपाला॥ पंडन कह लावहु तत काला
आज्ञा सिर धरि गरुड़ सिधाये॥ कुंतीसुत पांचो जन लाये॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सोइ गुरुतीर तिन्है बैठाई ॥ कृशापास आये खगराई ॥ ॥
राजै तृषा लागि लहं जानो ॥ भीम तें कह्यो जाइ जल आनो
देखि तड़ाग निकट चलि गयऊ ॥ चौंथ पाइ अहि निकसत भयऊ
योजन एक तुनय विकराला ॥ उरगनहीं जनु मूरति काला ॥
पूंछ्यो पास भीम के आई ॥ कहु जग महं जीवत को भाई ॥
जो कोइ मनुष होइ बलवाना ॥ सुनि अहि लह्यो नपहि उत्ताना
खैंचि स्वांस लीन्ह्यो मुखडारी ॥ यहां युधिष्ठिर जानि अवारी
पठयो नरहि सरहि चलि आये ॥ देखि सर्प अस बचन सुनाये
को जीवत जग मानर सोई ॥ सर विद्या जाके कर होई ॥ ॥
समुझि सुज्ञान हीन धरि खायो ॥ तब नकुलै महिपाल पठायो
समानिका छं० ताल तीर गे जबै । नाग बोलियो तबै । जीव
धन्य कौन है । रूपवान जौन है ॥
वीरछं० सुनि सर्प । करि दर्प ॥ मुख बाइ गयो खाइ ॥
चौ० यहां युधिष्ठिर कह सहदेऊ ॥ लेउ जाइ भाइन कर भेऊ ॥
गयसो निजन एकन आयो ॥ नहिं जानी कौने बिलमायो ॥
तब सहदेव निकट सर गयऊ ॥ अजगर देखि कहत अस भयऊ
जीवत जग मं काहि पिछानी ॥ विद्यावान होइ जो ज्ञानी ॥
भक्ति बिहीन ज्ञान बिन चीन्ह्यो ॥ तुरत निगल सहदेवै लीन्ह्यो
बहुरि युधिष्ठिर आपुइ आये ॥ चक्षु अवाल खिब बचन सुनाये
किं वार्त्ता अचरज का भारी ॥ पंच को निमोदित नर नारी ॥
चहूं प्रश्न का उत्तर दीजे ॥ तेहि पाछे नृप नीरहि पीजे ॥ ॥
धर्मनन्दन बोले हर्षाई ॥ सुनौ यथा मति कहौं बुझाई ॥
दो० महामोह कृपानु रविधवनि स्वास मद दारु ॥
तिथिदिन घन दर्वी वरष क्रम कुट काल लोहारु ॥
चौ० जीव सार सम कूटत जाई ॥ यहै वारता मोमन भाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनिपन्नगप्रसन्नअतिभयऊ ॥ ततक्षण उगिलभीसकहँदयऊ ॥
चारिवानिजहँलगुननुधारी ॥ जलचरथलचरनभचरनारी ॥
मरएकदिनसबकरहोई ॥ शिवरहेंअमरजनहेंसोई ॥ ॥
सुनीभुजंगबातयहजबहीं ॥ उगीलिदिहिसिपारथकातबहीं ॥
धंपसोजाहिमहाजनधावें ॥ नकुलैउगिलिदिहिसितबचावें ॥
दुसरेदिनचहुंभोजनपावे ॥ यहसमहोइनअजरारहावें ॥
भजैरामतजिकामकुकर्मी ॥ सोइनरसुदिननसंयुतभर्मी ॥
कृपावहिर्मुखसबसमप्रानी ॥ होइनकसबिधिसमगुणखानी ॥
असमुनिधुनिमहदेवैदयऊ ॥ बहुरिसवनैबोललभयऊ ॥ ॥
महाराजबचनामृततोरे ॥ सुनिआनंदभयोअतिमोरे ॥ ॥
अबनिजचरणशीशममधरहू ॥ दीनदयालकृतारथकरहू ॥
कारणकोनभालपगराखी ॥ इमतेभेदकहोसोभाखी ॥ ॥
पूरबभेदनहुषसबबरना ॥ विप्रश्रापजेहिविधिनिस्तरना ॥
सुनिनृपअहिशिरचरणछुवावा ॥ भैअघहानिदिव्यवपुपावा ॥
आयोसुरतविमानसमीपा ॥ चढ़िहरिपुरकोगयोमहीपा ॥ ॥
अससतसंगप्रभावघनेरा ॥ जेहिलहिगादुखनाहुषकेरा ॥
औरसुनोयकमक्खीसाहू ॥ रहधनहीनदीनसबकाहू ॥ ॥
धनहितउद्यमकिहिसिअपारा ॥ होइनकानहिंघटानिहारा ॥
करजुकाढ़ियुगवृषभहिलायो ॥ नहिंकेजोतनखेतसिधायो ॥
मगमावृषभकीनिमचलाई ॥ भागतपरेऊंटपरजाई ॥ ॥
माचिबीचगरदनिकेउरझी ॥ उनमदऊंटउझोनहिंसुरझी ॥
दो० चलेघसीटलवृषभदोउमरएमृतकक्षरथिराइ ॥
लखिमक्खीशोचनलायोमहितनशिसनवाइ ॥
चौ० ताहीसमयदत्तात्रयआये ॥ दुखितदेखिअसबचनसुनाये ॥
अहोतातमनधीरजगाहो ॥ वृथाशोचकरिक्योंतनुदाहो ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुखसुखकर्मभावई हाथा।।कैसेमिटैलगीसोमाथा।। ५ ।।
तेहिलेचतुरशोचनहिंकरहीं।।होनहारसोइहिरदैधरहीं।। ।।
बिनसालब्धद्रव्यनहिंपावै।।देशाविदेशचहोफिरिआवै।। ।।
पूरबपुरायनोइजोभाई।।बिनआरंभमिलैधनआई।। ।।
बहुनरउद्यमहीनहपाना।।तेधनवन्तदुखीबुधिवाना।। ।।
गाँहिलधर्मजानियेभ्राता।।श्रीबलासुजोनेसमिबाता।।
आदोहानदिह्योनहिंपैसो।।पुनचाहतधनमिलौनकैसो
तेहितउरसंतोषैधारै।तृष्णाडाइनिदुष्टनिवारै।। ।। ।।
नहिंसुखकछुसंतोषसमाना।।चौबिसगुरुकरिहमयहजाना।
दो० मुनिमक्षीबोलतभयो।।मुनिपदशीसनवाइ।।
कौनकौनगुरुकिहेउप्रभुसोमोहिंदेहुसुनाइ।।
तोमरछं० सुनिदत्त।निजुमत्त।।मृदुबोलि।कहोरखोलि।। ।।
तोटकछं० प्रथमैंगुरुजानहुभूमिकिह्यों।तेहितेजुछमागुरुशान्तिलिह्यों।।जलदूसरसर्बपवित्रकरैं।जिमिसज्जनजीवकेपापहरैं।गुरुतीसरवायुअमेलअहै।ममत्योंगतिसगसमानबहै।।मृगवदिहुगुरुसुनितानपरै।तेहिभांतिविषयसुखचित्तहरै।।शशिपंचमआतपज्यों हरहीं।रविकेजुनशीतलत्योंकरहीं।।छठयेंरविज्योंरससर्बग्रहै।नालिपैपरित्योंजगसंतरहै।।भ्रमकेसमताऽगिनिआज्यपरै।निघटेतिमिकामनभोगकरैनभअष्टमपूरणब्रह्मतथा।नवमानदहाजनवृक्षयथा।।दशमोदधिआपघटैनबढ़े।जनत्योंदुखसुःखसमानबढ़े।।

चौ० भंवरइकादशबिरतिसुपासू।।पुहुपकीलेहिसुवासू।।
नाहिंवृक्षकादोषविचारै।।करहिंसंततेहिंविरतिअहारै।।
कीटहिशब्दसुनावतऐसो।।सोहैजातभृङ्गलैजैसो।। ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

द्वादश अहि नहिं मौन बनावै ॥ तैसहि भक्तिवसहि जहँ पावै ॥
तेरहें गुरु हाथी कहँ कीन्हा ॥ कामविवस परबस भा चीन्हा ॥
तबते कामनेवारत भयऊ ॥ रामचरणपंकज चित दयऊ ॥ ॥
मकर चौदहा रसना स्वादा ॥ आमिष गह्यो सहित अहलादा ॥
सुख नहिं भयो गयो पुनि प्राणा ॥ तज्यो सकल रस दुखद पिछाना ॥
दशम रसलभ दिया की जोती ॥ देखत जरत सती ज्यों होती ॥
तैसे नर त्रिय लखि फँसि जाहीं ॥ सो बिचारि हौं देखत नाहीं ॥
जेहि देखो तेहि आतम जानो ॥ औरन दूसर भेद हि आनो ॥ ॥
षोड़स चील्ह एक लै मासू ॥ उड़त भई सह मोद प्रकासू ॥
बहुत बिहंग ताहि पछु आयो ॥ दीन्ह्यो छाड़ि तबै सुख पायो ॥
तबते चित ग्रहण नहिं करहू ॥ जहाँ तहाँ निरद्वन्द विचरहू ॥ ॥
सप्तदसौ गुरु अजगर भावै ॥ निरालंब आवै सो इ खावै ॥ ॥
अष्टादश गुरु वेश्या एका ॥ बैठी करि सिंगार अनेका ॥ ॥
एक दिवस व्यसनी एक आवा ॥ दइ धरि जगयथ लेन सिधावा ॥
तुरत पिंगला सेज सँवारी ॥ मग देखत निशि रहद वे नारी ॥
युगल याम रजनी चलि गयऊ ॥ वेश्या हृदय बोध तब भयऊ ॥
आसा त्यागि भजि सि भगवाना ॥ वही ज्ञान मैं हिरदय आना ॥

दो० गुरु चौबीस मान कर दीख बनाव तनीर ॥
भूप गयो तेहि अग्रहू सहित शब्द अलिभीर ॥

चौ० बहु धाय पूछा यहि ओरा ॥ नृप गामैन सुनी कछु शोरा ॥
तहँ मैं सिखहु ध्यान का भेदा ॥ रहौं लीन नजि जग के खेदा ॥
विश्राम मिथुन कपोता भयऊ ॥ विपिन कपोती अंडा दयऊ ॥
फोरि सेइ बड़े शिशु भयऊ ॥ इक दिन बधिक देखि गहि लयऊ ॥
आये दोउ लखि हैं सुत चारा ॥ पुत्र बिना घर सून निहारा ॥ ॥
बधिक तीर देखे अकुलाई ॥ गिरी कपोति निजा रहि जाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखिशोच अति कीन बिहंगा॥ फसा आपु हू सब के संगा
अतिबल मोह देखि मैं जाना॥ तबतें तज्यों भज्यों भगवाना
गुरु एके सम मकरी आई॥ पूरत तार निगलि फिरि जाई॥
ऐसेई ईश जगत करि सोई॥ अन्त आपु महँ लेत समोई॥॥
उभय बिंस जानहु मधुमाखी॥ रसरस आनि इकट्ठे राखी॥
खाइ न तिन नहिं निज काजन कीन्हें॥ आइ छोड़ाइ आन ही लीन्हें
तैसहि कृपिण द्रव्य को पाई॥ पुरयन करहि सकहि नहिं खाई
बिबिध भांति राखे महि गोई॥ करहि भोग तेहि आनहिं कोई
तेहि ते संग्रह करौं न दामा॥ नृप भय चोर बधत ठग तामा॥
गुरु तेईशवां कन्या जानहुं॥ तासु चरित अब सुनहु बखानहुं
करन सगाई युगजन आये॥ मात पिता तेहि घर नहिं पाये॥
कन्या तब कीन्हेउ सन्माना॥ आप लगी धुनि कूटन धाना॥
चुरी खटकत भई गिलानी॥ डारेसि फोरि कछुक निज पानी
द्वै लग रही खटक नहिं जाई॥ एक राखि कूटेसि हर षाई॥॥
तबते सोइ सीख धरि चित्ता॥ एकाएक रहौं मैं नित्ता॥ ॥
बहु तन संग कलह है आवे॥ एकाएक परम फल पावे॥ ॥
चौबिसवां गुरु किहेउ शरीरा॥ जेहि लगि सब नर साहत पीरा

दो॰ पालत षट्रस स्वाद दै बिबिध बसन पहिराइ॥
तेल फुलेल लगाइ नित सेवा करी बनाइ॥

सो॰ अन्त समय की बार॥ सङ्ग न चाले एक पग॥
औ रसकल परिवार॥ सो आपन किमि होइहै॥

चौ॰ आपन तन जान्यों नहिं जबते॥ करन लग्यो निज स्वारथ तबते
निज स्वारथ सोई कहवावे॥ जो कछु राम भजन बनि आवे॥
भजन बिना जीवहि सुख नाहीं॥ बिधि हरि हर समीप चहुं जाहीं
चौबिस गुरु करि जो मत पायों॥ सो मैं तुम कह सकल सुनायों॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मुनि मन की उर उपज्यो ज्ञाना ॥ जगत झूठ करि तबहि पिछाना
मुनि पद शीश नाइ बन गयेऊ ॥ जप तप करि तन त्यागत भयेऊ
हरि पुर बसेउ जाइ दुखवीसा ॥ अस सत्संग प्रभाव मुनीशा
कह शौनक इक संशय मेरे ॥ दत्तात्रेय पुत्र किन केरे ॥ ॥ ॥
यहो भेद प्रभु देहु बताई ॥ सुनत सूत बोले हर्षाई ॥ ॥

सो० अत्रि पत्नी ऋषि की नारि । तेहि देवन कर अंशलय ॥
कीन्ह्यो पुत्र विचारि । नाम धस्यो दत्तात्रयी ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत भक्ति दत्तात्रयी सम्वाद चौबिस गुरु वर्णनो नाम षट त्रिंशो ऽध्यायः ३६

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
कहौं समुझि चरित कछुक कछु जे मिन मत ज्ञानि ॥

चौ० बहुरि सूत बोले कहि येहा ॥ धन्य२ शौनक तव नेहा ॥ ॥
जो पूछ्यौ सो बरणि सुनावा ॥ और सुनो सत्संग प्रभावा ॥ ॥
सबते अधिक ज्ञान यह पावन ॥ पुत्र पिता सम्वाद सोहावन ॥
विप्र एक कश्यप अस नामा ॥ मेधावी सुत अति अभिरामा ॥
ज्ञानवन्त ममता उर नाहीं ॥ एक दिन प्रश्न किहिसि पितु पाहीं
पिता कहौ का कर तप करिये ॥ जाते भवसागर को तरिये ॥ ॥
कह कश्यप सुत वेद पढ़ीजे ॥ ब्रह्मचर्य करि ग्रह सुख कीजे ॥
वानप्रस्थ बहुरि संन्यासा ॥ धारण करि कीन्ह्यौ बनवासा ॥ ॥
जप तप योग यज्ञ तहं ठान्यौं ॥ यह कर्तव्य है तुम्हें बखान्यौं ॥
मुनि मेधावी उत्तर दीन्हा ॥ मृत्यु विवश हम सब कहं चीन्हा ॥
जब चाहे तबहीं संहारे ॥ बाल वृद्ध नहि तरुण विचारे ॥ ॥
तो केहि विधि बहु आश्रम करई ॥ अमर होइ सो हिरदे धरई
लोमश आदि मुनि चिर जिव आहीं ॥ टूटत रोम कलप के माहीं ॥
तेऊ डरत मृत्यु ते भाये ॥ लोह ड़ार रहत शीश औंधाये ॥ ॥

और सुनौ पांडव मख साजा॥ कीन्ह्यो जब तब छांड्यो बाजा
अरजुन कृष्ण हन्स सब केतू॥ चले सकल रक्षा के हेतू॥ ॥
ढूंढ़त सिंधु पार जब गयऊ॥ द्वीप एक बन देखत भयऊ॥ ।
तहं बक दाल्भ ध्यान लगाये॥ सब नजाइ मुनि पद सिर नाये॥
चरण छुवत बकदालभ जाना॥ नयन खोलि कीन्हो सनमाना
लागे कहन चरित हरि केरे॥ बहु विधि जो निज नयनन हेरे॥

दो० तीन कोटि चव लाख पुनि उभय सहस अवतार॥
भये दशरथ राम के मेरी दृष्टि अगार॥ ॥

चौ० सुनि अरजुन बोले तिन हीते। तुम्हें इहां कितने दिन बीते॥
कह मुनि सुनहु तात मन लाई॥ आदिहि ते सब कहौं बुझाई॥
निमिष अठारह काष्ठा जानौ॥ तीस काष्ठ की कला पिछानौ॥
तीस कला की होत महूरत्ति॥ तीस महूरति का दिन पूरति॥ ॥
पंद्रह दिवस केर पख वारा॥ उभय पाख का मास विचारा॥ ॥
बारह मास बिगत जब होई। तेहि का बरष कहत सब कोई॥ ॥
सत्रा लाख अट्ठाइस बरषा॥ सतयुग रहत सकल सुर हर्षा॥
बारा लाख छानवे हजारा॥ त्रेता रहत सुखी संसारा॥ ॥ ॥

दो० आठ लाख चौसठ सहस द्वापर रहत समान॥
चारि लाख बत्तिस सहस बर्ष रहत कलि जान॥

चौ० चारि सहस युग बीतत जोई। तब ब्रह्मा का इक दिन होई
राति तेतन हीतब विधि स्वोवे॥ सृष्टि धरे उर कल्प कहावे॥
तीस कल्प बीतत अज मासा॥ बारा मास बरष परकाशा॥
ऐसे बरष एक शत जाई॥ तब लगि ब्रह्मा जीवत भाई॥ ॥
मरे पितहि परले ह्वै आवे॥ ब्रह्म कल्प सोई कहवावे॥ ॥
मोहिं देखत एते दिन भयऊ। ब्रह्मा बीस नाश ह्वै गयऊ॥ ॥
एक बार ब्रह्मा इक आये॥ चारि भुजा मुख चारि सोहाये॥ ॥

करतल चारि वेद तनपीना ॥ राम चरित गावत लवलीना ॥
सो तेकहिं निध्यान तजि दीजै ॥ हमनें कछुक चतुरता कीजै ॥
तेहीसमय बौंडर इक आई ॥ हमें बाहि ले चला उड़ाई ॥ ॥
उलटत पलटत नाघत खंडा ॥ देखा जाइ आन ब्रह्म रांडा ॥
तहं विधि बैठि आठ मुख सोहा ॥ आठ भुजा बसु देवहु जोहा
कोभवानि विधि तेबिधि भाषा ॥ ब्रह्म अहं इत्थं मुनि मारवा ॥
दो० अबतक कह्यो सो कह्यो पर अवन कह्यो अजनाम ॥
ब्रह्मा येमय आठ मुख जेहि का तल सब काम ॥
चौ० इतनी कहत पवन पुनि घुनि घूमी ॥ उमय लयेटि चली नभ भूमी
उहांते उड़न आन महं गयनू ॥ सोरा मुख बिधि देखत भयनू
पुनि बत्तिस चौंसठि छ्ठानाघा ॥ दुगुन २ मुख को विधि पावा
जेहि देखा सोऊ उड़ि जाई ॥ गगन पार सबनि कसे जाई ॥ ॥
दो० तहां पुरुष इक दीरघबर जेहि तन अति बिस्तार ॥ ॥
बदन अनन्त अनन्त भुज वेद अनन्त अपार ॥
चौ० कीन बन्दना तिन सनमाना ॥ सब ब्रह्मा रा का गा अभिमाना
कछुक बार रहि आयसु पाये ॥ फिरि निज निज आश्रम कहं आये ।
सुनि अरजुन असि से सुख पावा ॥ बहुरि जोरि कर बचन सुनावा ।
हे प्रभु कत उजार महं रहहू ॥ सीत उषा बरषा भिर सहहू ॥ ॥
लेत्यो इक मंदिर बनवाई ॥ सुनत बचन बोले ऋषिराई ॥
लघु जीवन जग कौने हेता ॥ धन संचौ अरु करौ निकेता ॥
मृत्यु खड़ी सिर सन्मुख हेरै ॥ जब चाहै तबहीं मुख गेरै ॥ ॥
जो कोइ सुरी चढ़ावा जावै ॥ स्वरा रहि गये कौन सुख पावै ॥
सुनो पिता ऐसे जे अहई ॥ तेऊ डरत मृत्यु ते रहई ॥ ॥ ॥
औरन की अब कौन चलावै ॥ जो नित जनमि २ मरि जावै ॥
तेहि ते तात मोह तजि देहू ॥ करहु राम पद पङ्कज नेहू ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निधिलासरऋतुजेहिबिधिजावै॥त्योंतुम्हरीनितआयुसिरावै
देखतजातसचेतनहोवै॥ढहतेमहलमांहिंकससोवै॥ ॥
प्राणअन्तकछुबनैनभाई॥ढीठाठजिनिबल्लुनयाई॥ ॥

श्लोक यावत्स्वस्थोऽसंदेहंयावन्मृत्युश्चदूरतः॥
तावदात्महितंकुर्य्यात्प्राणान्तेकिङ्करिष्यति॥१॥

गीतिकाछं० मुनिपुत्रकेअसबचनबिमलबिरागकरअवपके
भयो।सोउत्यागितृणासमधामधनसुतबामबनकाननलिदि-
यो॥जपयोगसंयमसहितकरिहरिभक्तितनमनजीतिकै॥
गयअन्तसमयबिमानचढिप्रभुधामबस्योप्रतीतकै॥

सो० ऐसाहैसतसंग।जाकेकरतेअघनशत॥
लागतहरिकारंक।भागतसंशयशोकभ्रम॥

चौ० औरसुनौबिश्वाबसुनागा॥मन्दालसासुतासुठिभागा॥
तालकेतुलयगाहरिताहीं॥ऋतुध्वजगालवसंगवनमाहीं
बधकरितहिसुतासोइलीन्ही॥बिश्वाबसुहिआइपुनिदीन्ही
ब्याहपुनितिननृपतेठानी॥गहिपरबोलीकुंअरिसयानी॥
तीनिबचनमोहिंदेवैनाहू॥ताकेसङ्गकरतहौंब्याहू॥ ॥
इकतौजोममछुरेआवै॥मङ्गनविमुखजाननहिंपावै॥
दूसरमोहिंजीवतनरनाहा॥करैनअपररानिसङ्गब्याहा॥
तीसरजोबालकहोंजावैं॥द्वादशसस्थलमहींखिलावैं॥ ॥
अससप्रणाकठिनसमुझिमनमाहीं॥अबतकमोहिंबरीकहुनाहीं
रतिध्वजबचनदेइतहंपरणी॥धूमसहितलायेघरघरणी॥
कछुककालबीतेसुतभयऊ॥चेरिउकानहिंकबहूंदयऊ॥
आपुखेलावैदिनअरुराती॥देइज्ञानतनुजेयहिभाती॥ ॥

श्लोक शुद्धोसिबुद्धोसिनिरंजनोसिसंसारमायापरिवर्जि-
तोसि।संसारस्वप्नंत्यजमोहनिद्रांमन्दालसावाक्यमुवाचपुत्रम्॥

चौ० बड़े भाग सो नर तन पायो ॥ सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गायो ॥
ताहि पाइ निज राम न ध्यावा ॥ धृग जोवन जग बादि गंवावा ॥
ताते सुत हरि सुमिरण करहू ॥ ज्ञान बैराग हृदय महं धरहू ॥
सुधा तृषा सुख दुख अपहारी ॥ काम क्रोध मद मोह नेवारी ॥
सुत पितु मातु बन्धु अरधङ्गी ॥ ये सब हैं स्वारथ के सङ्गी ॥ ॥
अन्त समय कोउ काम न आवे ॥ बीचहिं मिले बीचहिं जावे ॥
तिन्ह त्यागि बनसाधन हिं कीजै ॥ अह निशि रामरसायन पीजै ॥
छिन छिन तेरी आयु सिरावे ॥ ज्यों कर तल जल निघटत जावे ॥
काल अचानक सब का मारे ॥ बालक बृद्ध नाहिं तरुण बिचारे ॥
ताते बालपन हिं ले नैनो ॥ बेगि लगावो हरि पद हेतो ॥ ॥ ॥

दो० बहु प्रकार मदालसा दीन सुतै उपदेश ॥ ॥
भयो ज्ञान हिरदे बिमल गयो बिषै नमुनि भेष ॥

सो० यहि भांति निषट बाल पठये बन उपदेश करि ॥
सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोले बिलखि ॥

चौ० हे भामिनि सुनिये मम बानी ॥ भय नुवृद्ध हम तुम दोउ रानी ॥
बालक बन पठयो सब आछे ॥ करी राज को हमरे पाछे ॥ ॥ ॥
तेहि ले यहि राखो गृह माहीं ॥ बार बार बिनवों तोहि पाहीं ॥ ॥
मुनिपति बचन पुत्र घर राख्यो ॥ तासो ज्ञान कछू नहिं भाख्यो ॥
पर नित शोच हि करे अपारा ॥ परी न कैय यह पुत्र हमारा ॥ ॥
नबयक जंत्र बांधि भुज दीन्ह्यो ॥ बिपति होइ यामे सोइ कीन्ह्यो ॥
कछु दिन बीते दोऊ मरि गयऊ ॥ पाछे अलरक राजा भयऊ ॥
मुनि बन बंधु गये ते आये ॥ तजहु राज बड़ दोष सुनाये ॥ ॥
सो महीप मानेस नहिं राई ॥ बरबरा भाग न दीन रखराई ॥ ॥

दो० तब तेकाशी राज पहं फिरि आदी भेजाय ॥
निज २ हीशादेन कहि सांपताहि चढाय ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० कछुकदिवसअलरकनृपलेऊ॥भयोग्रसिततबसबपरिहेऊ॥
गयोभागिबनअघपतिविचार्यो॥खोलिमुद्रिकाताहिनिहार्यो॥

दो० जगतजालमेंमतिपरैकेवलदुखयहिमाहिं॥
सत्यकहौंसतिकहौंसुनसुखसपन्योनाहिं॥

सो० रामविमुखनरजौन।कियोनसंगतितासुकी॥
साधुसंगसुखभौन।मिलतज्ञानहरिभक्तिजहं॥

दो० खगमृगकिन्नरनागनरदैत्यासुरसमुदाइ॥ ॥ ॥
युगयुगमेंजेनरतेसकलसाधुसंगपाइ॥ ॥

चौ० असमुद्रिकामांझजबदेख्यो॥खोजनदत्तात्रेकालेख्यो॥
पर्योचरनतिननिजविपतिसुनायो॥सुनिबहुबोधिज्ञानसिखायो॥
गयोमोहसुखभयोअपारा॥करिहरिभक्तिभयोभवपारा॥
अससतसंगअहैअधिकाई॥गइदशामेंभव्योधनसाई॥
तातेंसाधुसंगनितकीजै॥मनक्रमबचनत्यागिकुसंगतिदीजै॥ ॥

कुण्डलिया भक्तिलतासतसंगजलसरधापल्लवपाइ॥ सारज्ञानविरागमुकुलसुसमादिसमुदाइ॥लघुसमादि समुदाइप्रेमसोसुमनसोहावन॥हरिप्रापतिफलमधुरसहादुखदैधनसाधन॥प्रथमअजांत॥लियेबड़ेभयेनहिंश-क्ति॥बंधेरहैंकरइमिकहैंकल्पलताहरिभक्ति॥ ॥

दो० जनमेंकन्याजनकतेरहेजनककेगोद॥
होइपुत्रतबबिबिसुखदइमिकहैभक्तिबिनोद॥
प्रभुपयोधिधनसंतहैंहरिजनपोमान॥
सुसकिनतेरघुनाथइमिकरतसाधुआसान॥

इतिविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतपुत्रपितासंवादेअलरकप्रसंगवर्णनोनामसप्तत्रिंशोध्यायः३७

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सांख्य शास्त्रमत कहोंक छु वेदांत बखानि॥

चौ॰ सुनि सेनक बोले हरषाई॥ सत संगति महिं माध कुमारि॥
और एक बसरौं इतिहासा॥ जोहि ते होइ ज्ञान पर काशा॥ ॥
सयनजीत यक भूपति रहई॥ नीति चाल बरजे पहु चोई॥ ॥
तेहि के पुत्र बरष दश केरा॥ भयो मृतक सोक रमनघेरा॥ ॥
राजा शोच कीन अति भारी॥ प्राण तजन की बात विचारी॥
तेहि अन्तर तामस ऋषि आये॥ नृपहि दुखित लखि बचन सुनाये
हे नृप शोक करै तू काको॥ तेरो सुनत नहिं ते पितु बाको॥ ॥ ॥
पुत्र शरीर परा तव आगे॥ रोवत मृषा जीव के लागे॥ ॥ ॥
जनमै मरै न भयो न होई॥ नित्य स्वरूप अचल है सोई॥ ॥
सस्त्र काटि सकै नहिं ताही॥ पावक जारि सकै नहिं जाही॥ ॥
नीर भिजोय सकै नहिं वाको॥ मारुत सोखि सकै नहिं ताको॥
ऐसा यहि आतम कहं जानो॥ मन महं तासु शोच मति आनो॥
याको मृतक कहै जो कोई॥ महामूढ़ अज्ञानी सोई॥ ॥
नासवन्त है देह पिछानो॥ जीवात्मा अविनासी जानो॥ ॥

दो॰ देह अगन्यारि करो जहं तक होत विनास॥
उतपति मध्य जेहि भांति ते कहत नरक को बास॥

चौ॰ प्रथम ब्रह्म अज अयउ अमाया॥ इच्छा करि पूरुष उपजाया
पुरुष इच्छा ते प्रकृति प्रभेवा॥ प्रकृति ते भयो महानल देवा॥
महातत्व ते भो तिरकारा॥ निरकार ते प्रणाव निहारा॥ ॥
प्रणाव ते भये तीनि गुणा राऊ॥ सत रज तामस प्रगट प्रभाऊ॥
त्रैगुणा की भांरवा औलादी॥ जिन ते भा तनु अनिल उपाधी॥
सत ते बासदेव चित जानो॥ और चौदहो देव पिछानो॥ ॥
रज गुण ते ब्रह्मा बुधि भयऊ॥ दशो बाइ इन्द्री दश जयऊ॥ ॥
तामस ते शिव जानो रई॥ आहं अनंत करन लरबाई॥ ॥

अहंसे भा अकाशलहि पोला॥उपजे श्रवण सुनत जे बोला॥
नभते भई पवन अस्पर्सी॥तासों भुकहै गुणरूपहि हसी॥ ॥
अग्निते जलरसना रस चाहै॥जलते पृथ्वी गंध जो लहै॥
एकते एक प्रकट है आई॥ जबहि मिटै सब जाइ समाई

दो॰ सतरज तम बुधि चित अह शब्द अस्पर्स सरूप॥
रसन गंध मिलि गांठि परि तब उपज्यो मन भूप॥
तीहिते अन्तह करण नृप गने जात हैं चारि॥
मन बुधि चित अहंकार अब बिरती कहों बिचारि॥

चौ॰ ज्ञान बिचार शील बिस्वासा॥धीरज निश्चै मति थिति भासा
सुरति चपलता अगिन उमंगा॥राग आदि चितवृत्ति प्रसंगा॥
मैं तें आन मलिनता रेखा॥अहंकार की बिरति सरेखा॥ ॥ ॥
दुखसुख भय संकल्प बिकल्पा॥लाज उचाटन मनवृत्ति थल्पा
एक बस्तु बहुनाम कहाये॥अन्तहकर्न जासि रोटी गाये॥ ॥
अब इनके इन्द्रिन के देवा॥जेजे हैं बरणों सो भेवा॥ ॥ ॥

कुंकुभा छं॰ मनके देव चन्द्र बुधि ब्रह्मा बासदेव चितकेरे। अहंकार शिव दिसा करण के नयन भानु सुर हेरे।रसना बरु-णातु चाक भा कल नासा अश्वनि जानौ॥मुखके अग्नि इन्द्र-हाथन के देव गुदा यम मानौ॥लिंग देव परजापति सिरजत चरनन बिष्णु बिराजै।चौदह देव रहत यहि तन संग नित नि-रमै है गाजै॥ ॥

दो॰ नारी चौदह सहस हैं यहि शरीर के माहिं॥
तिनमें चौबिस मुख्य हैं सब कोइ जानत नाहिं॥
कमल नाभि ते दश उरध दसैं गईं अधजान॥
युग दक्षिण उत्तर उभय तिनमा दश परधान॥

चौ॰ तिन दशहुन के नाम बखानौ॥जहँ बसैं सोऊ तुम जानौ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बांयेइड़ापिंगलादांयें ॥ मध्यसुखमनातीनिगनायें ॥ ॥
बामचक्षुगंधारीरहई ॥ हस्तीजिह्वादहिनेअहई ॥ ॥
पूषा कर्णदाहिनेअहई ॥ पुनियसाखिनीबांयेंलसई ॥ ॥
नाभिमाहिंआलंबकराजे ॥ कहुलिनासिकामाहिविराजे ॥
मुखअस्थानसंखिनीकेरा ॥ ये नाडिनके नाम निवेरा ॥ ॥
दशपवनौहैं यहितनमाहीं ॥ निजनिजथलमेंसोउरहाहीं
प्राणपवन हिर्देमें बासा ॥ जेहितेनिशदिननिकसतस्वासा
गुदाअपाननाभिसामाना ॥ कंठउदानसर्वतनव्याना ॥ ॥
नागवायुतेउँडकारै ॥ कूरमनयननपलकउघारे ॥ ॥
देवदत्तआवैजमुहाई ॥ किरिकिलछींकलगावैभाई ॥
मुयेधनंजयदेहफुलावैं ॥ येदशपौनशरीररहावैं ॥ ॥

**दो०** इन्द्रियदशतत्वपांचतेप्रकटभईयहजानि ॥
उभैउभैंसोप्रीतिहैसोऊकहौंबखानि ॥

**चौ०** मुखतेश्रवणाकहतयरुसुनई ॥ त्वचापानिअसपरसैगुनई
नयनचरणतेप्रीतिरहावै ॥ नयनकसैथदलयपहुंचावैं ॥ ॥
रसनउपस्थभोगदोउचाहैं ॥ गुदानासिकानेहनिबाहैं ॥ ॥
मनइनइन्द्रिनकेसुखलागो ॥ भूल्योब्रह्मक्रांतिसबभागो ॥
तातेभयोहीनमतिहीना ॥ मनबासाअबकहौंप्रवीना ॥ ॥
हिर्देबीचकमलयककअहई ॥ पखुरीआठकेवलहुरहई ॥
जोहिदलपरमनबैठतधाई ॥ तबलहंतैसीबिरतलखाई ॥
पूरबदलपरजबचलिआवै ॥ दयाधर्मधीरजउपजावै ॥ ॥
दलअगनेयमाहिंपगधरैते ॥ क्षुधातृषानिद्रालसबरैले ॥
दक्षिणमदमत्सरछलछोहा ॥ अहंकारउपजेअरुकोहा ॥
नयऋतदलेमाहहठमाया ॥ आशातृषासकगनाया ॥
पश्चिमदलसमताउपजावै ॥ आनन्दनिरभैचित्तरहावै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बांधबउच्चाटनसंतापा ॥ भयलज्जाबरसैउरपापा ॥ ॥ ॥
उनरदलपरजबमनटिष्टा ॥ हर्षीविनोदकामकीचेष्टा ॥
ईर्षानेसुधिबुधिसंतोषा ॥ क्षमाशीलसतनिरलिंगदोषा ॥
मनश्रौतैपरसुनिलपरधावै ॥ पवनसमानवारनहिंलावै ॥
सोहिमनकारोकनकोइसन्ता ॥ थकेरिलगावतचरणअनन्ता
नातरुजगतसिंधमहंभंगा ॥ बाह्लकर्मबीचिकनसंगा ॥ ॥
कुण्डलिया श्रौरसुनौतत्वपांचतेजोप्रगटेतनमाहि ॥ का
मक्रोधमदमोहभैयबोलननभतेआहि ॥ बोलननभतेआ-
हिवायुतेबाढ़ैकाया ॥ बलकरनासुनिचलनपसरिसंकोचब
ताया ॥ पावकतेआलसक्षुधातृषानींदसगव्यौर ॥ जल
तेमेदरक्तकफबिन्दपसीनाश्रौर ॥

दो० महीतत्वतेजानियेअस्तिमांसअरुचाम ॥
नाड़ीरोमासर्वमिलिभाशरीरवेकाम ॥ ॥
तनझूठाझूठाकरतझूठासबसंसार ॥ ॥
तनसच्चासच्चाजगतसच्चाकर्मविकार ॥

चौ० तनमेंतुर्जदेहहैमूला ॥ व्यापकसूक्ष्मलिंगअस्थूला
तिनकोचारिअवस्थाकुरिया ॥ जागतस्वप्नसुषोपतितुरिअ
बानिहुचारिभांतिकीकरी ॥ परापसन्तीमध्यबैखरी ॥ ॥
दशइन्द्रीअरुपांचौतत्त ॥ तिनतेतनअस्थूलअनित्त
बालयुवावृद्धापनरोगा ॥ सोवनजागतभीततयोगा ॥ ॥
मलडारननवद्वारनिहारा ॥ थूलसंगयेलगेविकारा ॥ ॥
जाग्रततासुअवस्थाजानो ॥ इरवनजोकछुकरतपिछानो

दो० दसौवायुअरुतीनगुणपांचमात्राभास ॥
चौदहस्वरअंतहकरणयामेंकरतविलास ॥
पांचतत्वइन्द्रीदसौश्रौरपांचसंगवाय ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

। सतगुरु हृदय देवत सोइ यह सुख पाय ॥

चौ॰ सोवत स्वप्ने देखत जोई ॥ लिंगदेह तुम जानो सोई ॥
लिंगदेह जैतत्त्वन केरा ॥ सो मैं तुमतें करौं निबेरा ॥ ॥ ॥
प्राण अपान समान उदाना ॥ व्यान वायु सत्रह सम जाना ॥
अन्तह करण चारि सत चारौ ॥ पाँच मात्रा सो उ निहारौ ॥
बीस तत्त्व तत लिंग शरीरा ॥ स्वपन अवस्था ता संग बीरा ॥ ॥
जीव नाम ताहि को पर ही ॥ लिंग मना सोई अब तरही ॥ ॥
कर्म करत सत भोगत भाई ॥ स्वर्ग नर्क महिं मंडल आई ॥ ॥

सो॰ जन्म मरण सुख योग ॥ क्षुधा पिपासा जानिये ॥
षट उरमी रोग ॥ जीव संग लागे रहत ॥ ॥

चौ॰ लिंगशरीर नाम सब पावै ॥ जब नर अजपा मैं मन लावै
अजपा किं जो स्मसउ सासा ॥ सुमिरै नाम सहित बिस्वासा
स्वास लेत रात जल मकारै ॥ जागत सोवत नाहिं बिसारै ॥
होइ बासना सब सब नाशा ॥ मिलै ब्रह्म महं जिमि जल बासा
आनंद प्राण मनोमय कोसा ॥ तिहुन केर तनु सुक्ष्म पोसा
अधिक नीद सोवै जब प्राणी ॥ रहै न ताको कछु पिछानी ॥ ॥
सुषुप्त समाध्र कासित भोपत्ति ॥ नस्य अवस्था आहि सुखोपति
तीनि अवस्था नासत चीन्हा ॥ सब संग तुरिया नितन वीन्हा
ईश्वर जीव भेद मिटि जावै ॥ तुरी अवस्था सोइ कहावै ॥ ॥
कोइ कोइ सन्त लहत हैं याको ॥ लक्षण सुनो बनता सों ताको
प्रेम बिवस तन की सुधि भूली ॥ गद्गद कंठ रोम रहै फूली ॥ ॥
कहुं उठि चलत बैठि कहुं जाई ॥ कहुं नाचत कर ताल बजाई ॥
बोलत बचन और को औरा ॥ समुझि परत मानहु मति बौरा
जदपि बदन तन बदत समासू ॥ नहिं लागत जेहिं क्षुधा पिपासू
बूझि परत नहिं पावत गांऊं ॥ को हम कहां जात केहि ठांऊं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सम चित शत्रु मित्र नर नारी ॥ सम चित पुत्र पिता महतारी ।
होंन्तू बंधु गर्दे सब खोई ॥ त्याग अत्याग तहां नहिं कोई ।
दोष अदोष मिटी भ्रम कांई ॥ निज स्वरूप सुख रहे समाई
मन चित अहंकार नहिं जावे ॥ बुधि पहुंचत पहुंचत नसि जावे
दो० जैसे पुतरी लोन की दधि थाहत गलि जाइ ॥
त्यों आतम के खोज ने सुधि बुधि जात हेराइ ॥
ज्यों सूरज के तेज ने देखि परत रवि जात ॥
त्यों आतम के तेज ते आतम रूप लखात ॥
ऐसो मत जिनको मिल्यो ते नर जीवन मोष ॥
ज्यों चाहे त्यों ही रहे तिन्हे न दोष अदोष ॥
चौ० चारि अवस्था शरीरा सुनाई ॥ जहं जहं बसें कहौं सो गाई
जाग्रत को चक्षुन में बासा ॥ लिंग देह कर कंठ नेवासा ॥
कारण तनु हिरदय महं राजे ॥ तुरी अवस्था गगन विराजे
परमातमा ब्रह्म को जानो ॥ सब ते प्रथक जो आदि पिछानो
दो० पुरुष प्रकृति महतत्तुनि त्रयों गुण अतह अर्भ ॥
इंद्री सुव तत बायु तत इनते परे जो ब्रह्म ॥ ॥
थर कारक चर अचर का परमात्मा सो एक ॥
जैसे बहु जल कुम्भ में रवि लखि परत अनेक ॥
आदि अन्न मधि मीष सोइ पश्यति जे मति धीर ॥
जिमि मृति पात्र अनेक बिधि बसन तंतु गो क्षीर ॥
श्लोक एक स्त्र मृत्पात्र मनेक रूपं क्षीर चमेक बहु वर्ण धेनुः
सुवर्ण में कं बहु भूषणानि परमात्म्ये कं च शरीर भिन्नः ॥
दो० सो शरीर आनित्य है नित्य आतमा ब्रह्म ॥
तू ताही को अंश है भूल्यो है के भर्म ॥
जैसे मंदिर कांच के जात भयो कोइ स्वान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आपनि छाई देखि कै भूकत भाँहै रान ॥
जैसे मूरख सिंह ने आपन रूप निहारि ॥
कूदि पर्यो जल कूप में दूजो भर्म सम्हारि ॥
यथा सिचान उड़ान नभ निकसा जहँ गद कांच ॥
निज तन छाँह विलोकि जड टूट भग्न भय खांच ॥
तेरे ही अज्ञान ते दूजो भासत आइ ॥
ज्यों बिब फूटी आरसी मुख बहु परत लखाइ ॥
अपने ही अज्ञान सों सबसे कीन्हों बैर ॥
तेरो दुख तो को भयो और न दूजो गैर ॥
ताते तोही एक है नित्य अखंड अनूप ॥
जीव ग्रंथि को छाड़ि कै लखो आपना रूप ॥
काम कोह मद मोह भय राग दोष अभिमान ॥
मैं तैं हिंसा सोक भ्रम जीव लक्ष परमान ॥
जब तक इनके बस रहेगा है गो मन नाहिं ॥
तब तक सपने हु ना मिले निज स्वरूप के माहिं ॥
जीव आत मैं कर्म है परमातमा बिसोग ॥
जन राघो यहि भेद को जानत ज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञान मत तीनि बेद के माहि ॥
जो तत पर तिन बिंबि कहियत ज्ञानी ताहि ॥
ज्ञान भानु हरि भक्ति चख कर्म मुकर लै हाथ ॥
देखि परै निज रूप तब कहत दास रघुनाथ ॥
गीतिका छं० शुभ कर्म ज्ञान रु भक्ति तिहु बिन जन्म मरण न छूटई । चहु जाइ सुर पुर नाग पुर महि गिरत यम गण कूटई ॥ मुनि भूप ऋषि के बचन छिप्र पुत्र शोक बिहाइ के । लागे करन जप योग संयम ज्ञान मुक्तिहि पाइ के ॥

दो॰ कह्यो सूत सोनक सुनो ऐसा है सत संग ॥
सयनजीत नृप ब्रह्म में भयो लीन तजि अङ्ग ॥
सत्य दृष्टाँवन मोक्ष प्रद कुमति हरन त्रैशूल ॥
सत सङ्गति अस जानि नर करन करें सुखमूल ॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत सयन जी न प्रसंग वर्णनो नाम अष्टत्रिंशो ऽध्यायः ३८
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥
श्री हरि बंस पुराण की कहों अब कथा बखानि ॥
पुनि सोनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ॥
सत्सङ्गति महिमा कछुक कहिये और कृपाल ॥
चौ॰ कह्यो सूत सत सङ्ग समाना ॥ और न दूसर बस्तु जहाना ।
जो सत सङ्ग करै मनु लाई ॥ उपजै ज्ञान मिटै भ्रम काई ॥
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई ॥ सतसङ्गति करि पावै सोई ।
जप तप योग करै ब्रत दाना ॥ सतसङ्गति बिन लघु फल जाना
सत सङ्गति क्षण मात्रहु होई ॥ तेहिं सम तुलै न तप लख कोई
सुनो एक इतिहास पुरानी ॥ जाते पैरे महातम जानी ॥ ॥
मुनि बसिष्ठ एक बार सुभाये ॥ गाधिसुवन के आश्रम आये
बिश्वा मित्र बहुत सनमाना ॥ रहे तहाँ कछु दिन सुखमाना
चलन लगे जब बिधिसुत त्रेहा ॥ कीन बिचार गाधि सुत येहा
पूजा इन्हें दीजिये काहा ॥ जेहि ते खुसी जाय ऋषि नाहा ।
लाख बरष जो तप मय साधा ॥ तेहिं मा मुनिहिं देव सब साधा
करि संकल्प दीन ऋषिराई ॥ पाइ बसिष्ठ चले हरषाई ॥
दो॰ इक दिन बिश्वामित्र हू गे बसिष्ठ के भौन ॥
तिन दीन्ह्यो सत संग फल उभै घरी कर जोन ॥
चौ॰ गाधि सुवन मुनि कह्यो रिसाई ॥ मैं तोहि तप दीन्ह्यो अधिकाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेहिं सम युगुल घरी किमि कीन्ह्यो॥ न्याव चुकावन दोउ चलि दीन्ह्यों
आये शंभु तीर कैलासा॥ तिन पठयो ब्रह्मा के पासा॥
तब दोउ ऋषि ब्रह्म पहँ गयऊ॥ सब बिर्तान्त सुनावत भयऊ
चतुरानन अस कहा बिचारी॥ जाहु दोऊ हरि पास सिधारी
सुनि विधि बचन दोऊ मुनिनाथा॥ जाइ बिष्णु पद नायो माथा
गाधिसुवन बोले हरषाई॥ नाथ न्याव इक देहु चुकाई॥
हमरे भवन गवन इन कीन्हा॥ जस कछु बना सो आदर दीन्हा
बिदा होत तप सहस पचासा॥ इन्ह दीन्ह्यों मैं सहित हुलासा
हौं चलि आयों इनके धामा॥ कछुक दिवस कीन्ह्यों बिश्रामा

दो० चारिघरी सत सङ्ग इन कीन्ह्यों स्वप्न मझार॥
तेहि माते युग दंड मोहिं दीन्ह्यों चलती बार॥

चौ० दुइ माते काहे अधिकाई॥ यहै न्याव प्रभु देउ चुकाई
सुनि मुनि बचन बिष्णु अनुमाना॥ ऋषि सत सङ्ग प्रभाव न जाना
जो मैं बहु बिधि कहब बुझाई॥ तब हूँ न इनकी संशय जाई।
अस मन समुझि कह्यो श्रीनाहू॥ दुहु मा एक शेष पहँ जाहू।
तिन काला बहु रहो लवाई॥ पुनि प्रभु सहित चले हरषाई।
जाइ शेष पहँ भाख्यो हाला॥ कह अनन्त जो तुम यहि काला
धरहु धरनि दुइ माते कोई॥ देहुँ चुकाइ न्याव मैं सोई॥
कह ऋषि लाख बरष तप कीन्ह्यो॥ तेहि मा अर्द्ध बसिष्ठ दीन्ह्यों
आधा रहा हमारे पाहीं॥ तेहि तप तेज मही रहि जाहीं॥
धार्‍यो शीस शेष सिर टाला॥ सधी न क्षिति ऋषि भये बिहाला
तब बिधि तेहीं कह्यो बुझाई॥ मुनि बसिष्ठ बोले हरषाई।
चारि घरी स्वपने के माहीं॥ साधु सङ्ग कीन्ह्यो बहु नाहीं॥

दो० उभय घरी ऋषि का दिह्यो रह्यो उभय मम पास॥
ताके फल बल भूमि यह घट पर करो प्रकास॥

चौ० सुनिशिरधुनि विलीन अहिराऊ। महिरहि गे सतसङ्ग प्रभाऊ॥
सङ्ग प्रताप देखि अधिकाई। माधि सुवन तबरहे लजाई॥
योगातपस्यात्यागन कीन्हों॥ सतसङ्गति में तन मन दीन्हों॥
अस सतसङ्ग अहे अरविराई। और सुनो अब कहौं बुझाई॥
द्विज इक रहा बड़ा अविचारी॥ तस्कर कर्म करै सहि गारी॥ ॥
सो इक दिवस नर्मदा पासा॥ गयो तहाँ निवसै हरि दासा॥ ॥
तिनकी चोरी करि बेहेला॥ बसत भयो निशि सन्त निकेला॥ ॥
कथा भई कछु वार न ह्याहीं॥ अन मन बैठि रह्या तिन पाहीं॥ ॥
जब रजनी बीती युग जामा॥ तब हरिजन कीन्हेनि बिश्रामा॥
सो अवसर जानि विप्र अकुलाई॥ चोरी करन लाग हरषाई॥ ॥ ॥
लखि यमराज क्रोध अति कीन्हा॥ बोलि दूत अस भाषे लीन्हा
यहि भक्तन की कीन्हिसि चोरी॥ लावहु बेगि नर्क महँ बोरी॥ ॥
वह द्विज है सन्तन के ठाईं॥ ताहि लेन को नीविधि जाई॥ ॥
कह्यो धर्म जौनी विधि पावो॥ तैनी भाँति यहाँ तक लावो॥ ॥
सुनत दूत मन शङ्क भयऊ॥ हरिजन धाम तहाँ चलि गयऊ॥
मन्दिर निकट रहा लगि ठाढ़ा॥ निकसा द्विज चोराय अति काढ़
जलपद जान सन्त सब धाये॥ चरणोदक तुलसी मुख नाये॥
[illegible]राम कहु राम बखाना॥ इतने माहिं मुक्त भै प्राना॥ ॥
मुगदर मारि डारि गर फांसा॥ दूत लिवाये यम के पासा॥ ॥
लखि द्विज धर्म तेल औटायो॥ चरल कराह मांझ डरवायो॥ ॥
भयो सनेह सुरभि सम ताही॥ करै अनन्द परा तेहि माहीं॥ ॥
बहुरि बरत खम्भा भेटवायो॥ सीतल भा गोला औटायो॥ ॥
तेल पीयाभा अमी समाना॥ अमिय मनाग भे [illegible] कलान॥
लोहा कांट सुमन सम भयऊ॥ तब तोड़ारि [illegible] भयऊ॥
विष पीव कीट सब भागा॥ धर्मराज लखि [illegible] जला॥

करतबिचारमनहिंमनलाये।।तेहीसमयऋषिनारदआये
बोलेबैवस्वतकरजोरे॥नाथएकबड़िसंशयमोरे॥ ॥ ॥
यहपापीअतिचोरलबारी॥ताहिदीन हमसांसतिभारी॥ ॥
याकेदुखकछुभयोनराई॥सोकारणमुनिजानिनजाई॥ ॥

दो॰ धर्मराजकेबचनमुनिबोलेऋषिहरषाइ॥
यहिमगायोकहांतेसोमोहिंदेहुबताइ॥

चौ॰ नबरबिसुतसबहालबखाना॥जेहिबिधिसंतनदिगतेआना
मुनियमबचनकहाऋषिराजू॥बड़अपराधकीनतुमआजू॥
सन्तमहातमतुमनहिंजाना॥जिन्हेंबखानतवेदपुराना॥ ॥
जगमहंनहिंकोइसन्तसमाना॥जिनबससदारहतभगवाना
दासीशिशुमेंपाइउछिरा॥बिधिसुतभयोऋषि नमहंसिरा
बूझैयोहीतिसंगप्रभावा॥तिनमोहिंजलचरपासपठावा॥
देखतमरयोधरयोबपुआना॥पुनिशुक्रपहंपठयोभगवाना॥
सोऊनिजशरीरतजिदयऊ॥तवनृपसुतनेबूझनभयऊ॥
देखतआवादिव्यबिमाना॥तेहिचढ़िबोलासुवनसुजाना

दो॰ प्रथममैंजलचररह्योजहांदरशतुमदीन॥
तेहिफलपायोकीरतनुतहांकृपातुमकीन॥
शुकतनुतजिनृपसुतभयोपुनिमैंदरशतुम्हार॥
अबनभजातबिमानचढ़िइतनालखाहमार॥

सो॰ संभाषणाअस्पर्शकोरधरेजेसेवउर॥ ॥
तस्यसुकृतफलसर्स।कहिनसकतश्रुतिसहसमुख॥

चौ॰ सुनिमोरमनआनंदछावा॥संतप्रभावअमितलखिपावा
हिंविप्रयहतिनकेपासा॥तुमअहिबनकनकीन्होग्रासा॥
साधुनसमरामजबेरा॥काहेनछांडिदियोतेहिंवेरा॥ ॥
अबतेकह्यामानिममलीजे॥याकोपठेधामहरिदीजे॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असमौनकसतसंगप्रभावा। बड़पापीपरधामसिधावा॥
वायुपुराणकेरइतिहासा। यहमैंतुमतेकीनप्रकासा॥ ॥
नलिनीदलगत जलनवजैसे। नरजीवनहैचंचलतैसे॥॥
छिनहीसज्जनसंगतिकरई। तेहिनौकाचढ़िभवनिधितरई॥
चहुंयुगचहुंश्रुतिकहैबुधलोई। बिनसतसंगतिनैरनकोई॥

हरिगीतिका छं. सतसंगबिननहिंतरैभवनिधिइानक्र-
मवरुबहुकैरप्रसजानिजेनर चतुरकरिसतसंगहरिनामे-
रैं॥ जगआइनरतनपाइसपनेहुंसाधके ढिगन गयो।
तेहिजानिपपसुसरिसमानुष देहभय नौकाभयो॥

दो॰ साधनकेसतसंगकीमहिमाअगमअपार॥
बरनीजनरघुनाथकछुनिजमत्याअनुसार॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेही
कृतसतसंगमाहात्म्यबर्णनोनाम एकोनचत्वारिंशतमोऽध्यायः३९॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुरवानि॥
कहौंनवमअसकन्धमतकछुब्रह्मांडबखानि॥

चौ॰ बहुरिसूतबोलेमृदुबानी॥ सुनौकथाऋषिकहौंबखानी
एकबारयमराजप्रबीना॥ आपनदूतबोलिसबलीना॥ ॥
कह्योकिमृत्युलोककेमाहीं॥ तुम्हराकोईदुसरिहानाहीं॥
एकबातयहजानेरहियो॥ साधुनकोकरकभूनगहियो॥
वेतोहैंपरमेश्वरप्यारे। रहैंरामकरबानाधारे॥ ॥ ॥
वैशावसदवोपूज्यसदाहीं॥ स्वर्गरसातलभूतलमाहीं॥
स्वर्गदेवअहितलअनुसरहीं॥ मनुजपूज्यमहिंनिजहितकरहीं
तेहितेजोतुमहूंलखिपायो॥ तुरतदूरितेशीशनवायो॥ ॥
जोममआपनिचह्योभलाई॥ तौनसतायोसंतहिंजाई॥ ॥
साधुदुखावैतेफलपावै॥ तनधनकुटुंबनासह्वैजावै॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिनजिनबयरभक्तसोंठाना॥पाइनिदुखबहुसुनोप्रमाना॥

दो० हरनाकुशप्रह्लादतेदुर्योधनपंचालि॥
कंसउग्ररावणअनुजभेसुकंठअरुबालि॥

चौ० दुर्वासाऋषिबहुदुखपायो॥अम्बरीषतेबयरबढ़ायो॥
नृपनृगभेगिरगिटजगजाना॥सुपचभक्तकोमरद्योमाना॥
धृष्टबुद्धिगाआपुइमारा॥चंद्रहासकामरनबिचारा॥ ॥
सुरतिसुधन्वानेगसठानी॥शंखलिखितमुखछबिभेहानी॥
सुनतसूतबोलेकरजोरी॥कहोनाथबिस्तारिबहोरी॥ ॥
केहिबिधिदुर्वासागेओरे॥धृष्टबुद्धिकेहिबिधिमारे॥ ॥
नृगगिरगिटभेकेहिबिधिआई॥प्रथक२सबकहोबुझाई॥ ॥
कहततिनकेकहौंमतियथा॥प्रथमेअम्बरीषकीकथा॥ ॥
राजाअम्बरीषबड़साधू॥तिनकेउरमेंक्षमाअगाधू॥ ॥ ॥
सबमनकृष्णचरणमेंराखें॥मुखतेरामकथानितभाखें॥ ॥
करसोंहरिमंदिरबरझारे॥नयननतेप्रभुरूपनिहारे॥ ॥ ॥
सिरसियश्यामपदकरतप्रनामा॥रसनयप्रियप्रसादप्रभुनामा॥
श्रवननिसुनैचरितहरिकेरे॥अपरकाजकेजातननेरे॥ ॥
कहेंलगिकहौंचरितमैंतिनके॥ब्यंजनहरिरहिडोलायोजिनके
तिनकेभवनगयेदुर्वासा॥तादिनरतनृपरहेउदासा॥
ऋषिहिदेखिभूपतिसुखपायो॥दीननिमंत्रणबैठिकाये
रैनिजागरनकरिउत्साहू॥होतबिहानउठेनरनाहू॥ ॥
स्नानक्रियाकरिआइमहीसा॥जान्योदुवादसीपलतीसा॥
बूझागुरैबोलिकाकीजै॥पारनहमअबकेहिबिधिलीजै॥
मुनिकीपूजाहैयुगजामा॥होतबिरोधकिहेदोउकामा॥ ॥
भृगुमुनिकह्योसलिलहरिधोई॥करहुपानकछुदोषनहोई॥ ॥

दो० गुरुकीआज्ञापाइकैनृपचरणोदकलीन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुर्वासा करि बिआनि तहँ आइ क्रोध अति कीन ॥

चौ० रैन्य पहँ मैं निमंत्रन दीन्हें । तोहीं प्रथम पान जल कीन्हें ॥
क्रोध अगिनि ते सब कुल जेता । करहुं भस्म सत तोहिं समेता ॥
अस कहि पटक्यौ जटा बिसाला । प्रगटी तुरत अगिनि की ज्वाला ॥
सनमुख चली भूप के जबहीं । नरपति रामहिं सुमिरयौ तबहीं ॥
चल्यौ सुदर्शन चक्र कराला । अगिनि खाक करि मुनि तन चाला ॥
भागे ऋषि भै अजमार नाई । तेहि क्षण बृहद ब्रह्मपुर छाई ॥
कीन बिदा ब्रह्मा बरिआई । हरि द्रोही को सकै बचाई ॥ ॥
तब गे ऋषि शंकर के पासा । देखि शंभु अस बचन प्रकासा ॥
पढ़ेउ पुराण सहस सब बेदा । जान्यौ नहिं भक्तन कर भेदा ॥
महाप्रलय महँ बचत न कोई । तबहुं न नाश भक्त कर होई ॥
अचल धाम साकेत बिहारी । निवसत तहाँ दिव्य बपु धारी ॥

श्लोक मार्कंडेय पुराणे महाशिववाक्यं दुर्वासा प्रति । महाप्रलि निल-
ये ब्रह्मन् ब्रह्मांडो जलप्लुतः न तत्र नाशो भक्तानां सर्वेषां त्व विशिष्यते ॥

चौ० ताते जाहु यहाँ ते भागी । नाहित जरी नगर मम आगी ॥
तब बैकुण्ठ गये दुरबासा । ब्याकुल गात बचन परकासा ॥
हे ब्रह्मण्य देव आरतिहर । शरणापाल पूरण करुणाकर ॥
हाइ हाइ प्रभु लेहु बचाई । चक्र सुदर्शन देह जराई ॥ ॥
सुनु द्विज कह्यो रमापति टेरी । मोहिं नहिं शक्ति बचावन केरी ॥
है यहि बिधि अगरीत गुण मेरे । भक्त बसल ताके सब चेरे ॥
यथा समारि तेज के पासा । दीपो गरा नहिं करत प्रकासा ॥
भक्तन पराधीन हो कैसे । पक्षी बंध्यो डोरि महँ जैसे ॥ ॥
साधुन मेरो उर अस गहेऊ । तिन तजि छिन हू जात न रहेऊ ॥
दारा गार पुत्र अपत्ताना । तन धन मोह मानि कल्याना ॥
सकल त्यागि मम शरणो आवे । तेहमते कैसे तजि जावे ॥

प्राणातेअधिकभक्तप्रियमोही ॥ दुरवासासमुझात्यो नोही ॥
तिनतेबैरकीन्हतुमजाई । भागोयहां नरहेभलाई ॥ ॥
होनकसूरमोरकछुभाई । तौममकहेमाफहै जाई ॥ ॥
सदादासममकीरखवारी । फिरहिंचक्रकोसेकेउबारी ॥ ॥
तातेजोनिजचहौउबारा ॥ तोफिरिजाउभूपदरबारा ॥ ॥
बड़ेदयालदीनदुखहारी ॥ देखततुमकहँलेहेंउबारी ॥ ॥ ॥
ऐसेबचनकहेजगदीसा ॥ सुनिऋषिचलेकाटिजनसीसा ॥
अंबरीषदिगपहुंचेजाई ॥ मेसीललखपलीनबचाई ॥ ॥
पदपरवारिभोजनकरवाये ॥ तिनपाछेउठिआपुहुपाये ॥ ॥

दो० लज्जितहैऋषिराजतबकीन्हौंतपबनजाइ ॥
भावैसोबरमांगियेकह्यौरमापतिआइ ॥
दुरवासाबोलेबिहँसियहबरदीजेमोहिं ॥
दशसहस्रअंबरीषहीजन्मधरनकहँहोहिं ॥

सो० सुनिबोले भगवान । अंबरीषममभक्तहै ॥
सोनधरीतनुआन दैनकहौंसोलेहुतुम ॥

चौ० जन्महजारआनकेजोई ॥ ममअवतारएकसमहोई ॥
तातेअंबरीषहितलागे । दशअवतारधरबहमआगे ॥
सहजसुभावभ्रातअनुरागी ॥ नरतनुधरयोदासहितलागी ॥
असप्रभुप्रणतपालकोआही ॥ मजिवियोगभजियजगजाही ॥
अपरदेवआपेवरदेवै ॥ आपेमरणमांगिसुदलेवै ॥ ॥
रामभक्तिबिनकेवलज्ञाना ॥ सोऊनिरसश्रमसाधननाना ॥
जैसेबिनापुरुषकीनारी ॥ केहितेदुखनिजकहेबिचारी ॥
॥ दबेलन्दपेजोपाऊं ॥ तौलोकौपरलोकनशाऊं ॥ ॥
सोभागिनीकैरेकुकरखोटा ॥ तऊनाहिबड़िपतिकीखोटा ॥
गोपीगोपपंडुसुतपांचा ॥ कौनकुकर्मकरततिनबांचा ॥ ॥

कृशाकृ भामवकंजयपाई ।। यज्ञनरसम निजदेह जराई ।।

दो० भगवतगीतामें कह्यो अर्जुनतेंमोह रथ ।। ।। ।।
भक्तियोग छीजैनहीं सबदिनवर्द्धतजाइ ।।
भ्रष्टभयेपंथीसरिसकीनपंथमेंबास ।। ।।
भोरभयेपुनि चलिमिल्यो तिमिमेंमोकोममदास ।।
दैवीमायागुणमयीमहादुरत्ययतात ।। ।। ।।
ममआश्रयहैअसममसो बिनप्रयासतरिजात ।।

इतिश्री बिश्रामसागरसबमलप्रागरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेही कृतअम्बरीषकथावर्णनो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ।।

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ।।
बरणौंजे मिनकी कथा कछुनृपनीतिबखानि ।।

चौ० मुनियमराजकह्योमृदुबानी ।। अम्बरीषकीकथाबखानी ।।
अबसुनुदूसर कथासुनाऊं ।। भूपएककेरलयतिनाऊं ।। ।।
तिनकेतनयभयेचंद्रहासू ।। मूलनक्षत्रजन्मभानासू ।। ।।
कछुदिनबादिबिपतिअसिजागी ।। धाईहोंसेधाईलयभागी ।।
कुन्तलपुरकुंतलयनरेशा ।। जेहिनृपसबकरुदेइहमेसा ।।
तस्यदेवानधृष्टबुधिनामा ।। रहीधाइधाईतेहिधामा ।। ।।
करिकिंकरपालनसुतसोई ।। तिनकरभेदनजानतकोई ।। ।।
यहिबिधिभयेबरषषटकेरे ।। बुद्धिवानअतिरूपघनेरे ।। ।।
तेहियकदिनब्रह्मभोजप्रकाश्यो ।। जुरेनरपयतहंगेप्रशिहासा
बिषयानामसुतानिजलीन्हें ।। बैठदेवानचिन्हहैजबीन्हे ।।
यहिकन्याकायाहीबालक ।। बरीबिशेषिकह्योउहालक ।।
अहंसुतापतियहिबिधिचाहीं ।। दुष्टबोलिबनपठयोताहीं ।।
जाइदुरन्तबोलसोई ।। लेउधाइजोतुमरेहोई ।। ।। ।।
पितामातपायेइनआयो ।। तिनहमकावधहेतपठायो ।।

है एकगोलीसुखदहमारी॥भजिलीजैपुनिडारौमारी॥ ॥
हैंगराड़कीसुतमुखबीचा॥पूज्यौमालसभिरकौरनीचा॥

दो॰ तदाकारहैहतनहितदईनयनकीसैन॥
लखिजल्लादनकेकठिनभईदयाउरऐन॥
हरिप्रेरितरघुनाथथलबोलेआपुसमाहिं॥
ऐसोसुन्दरबालयहबधनयोग्यहैनाहिं॥
छठीअंगुरीकविरहैकाटिलिहिलिसाइचीन्ह॥
शशिहासैबनछाड़िकैजाइदिवानैदीन्ह॥ ॥

सो॰ छांहकिहैखगमाल।चहुंदिसिबैठेघेरिमृग॥
आयोइकमहिपाल।नामकुलिन्दअपुत्रसोइ॥

चौ॰ चन्द्रहासलखिलीनउठाई॥प्रमुदितमनहुंरंकनिधिपाई॥
गौलेभवनकीनउतसाहा॥दिहिसिदानजाकोजसचाहा॥ ॥
निजसुतसमुझिपढ़ावतभयऊ॥पुनिनृपराजतिलकसोदयऊ॥
लागेकरनराजहरषाई॥पालहिंप्रजहिसुखीसबभाई॥ ॥
मनक्रमकैभक्तिहरिकेरी॥सन्तसमागमप्रीतिघनेरी॥ ॥
गृहगृहप्रतिहरिगुणगणगाहोई॥रामनामसुमिरनसबकोई॥
जोकोइभक्तभवनचलिआवै॥करिप्रणामआसनबैठावै॥
षोड़शभांतिपूजिसनमानै॥हरिहरिजनमेंभेदनआनै॥ ॥
एकबारनिजकटकबनाई॥सुदिनसाधिनृपचढ़ाबजाई॥ ॥
जहँतहँपरीमारनृपजीते॥कोइकोइआइमिलेभयभीते॥ ॥
सबसोंरामभक्तिकबुलाई॥करगाकहैतबदेवैजाई॥ ॥ ॥
यहिप्रकारनृपजीतिबसाये॥पुनिनिजपुरचंदनावतिआये॥
पितैपूछिअरुमानिबड़ाई॥नृपकुन्तलपैचौथिपठाई॥ ॥
पहुंचेभृत्यभूपदरबारा॥दीनदिवानखजानेडारा॥ ॥ ॥

सो॰ उतरेताहीधाम।हरिबासरतेहिदिनरहे॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रामराम सियराम । कहि निधि कीन्हीं नास सब ॥

चौ० भोर भये जागे सब भारी ॥ आइदेवान कहीं कटु बानी ॥ ॥
काकुलिंद राजा तव पायो ॥ हाइहाइ करि राति बितायो ॥ ॥
बोलि सेवक राजे कोई ॥ मरा कहै मरिगा सोइ होई ॥ ॥ ॥
हमरे नृप कर सुत अस भयऊ ॥ सब भूपन ते करु निज लयऊ ॥
इन्हें जालि जन चौथि पठाई ॥ सुनि देवान मन संशय आई ॥ ॥
सुत कुलिन्द के रहे न कोई ॥ भयो कवै सुनि बोले सोई ॥ ॥ ॥
भूप शिकार गयो एक बारा ॥ मिल्यो तहां एक सुभग कुमारा ॥
आनि भवन सुत मानि पढ़ायो ॥ दीन राज तिन भक्ति बढ़ायो ॥ ॥
सुनि देवान बिसमय भेजा ॥ सोइ न होइ जेहि मारन भेजा ॥ ॥
तुरतै गयो महीपति पासा ॥ हाथ जोरि अस बचन प्रकासा ॥ ॥
नाथ सुता मम भई सयानी ॥ नृपसुत इक उहरल बर जानी ॥ ॥
जो राउर की आज्ञा पावों ॥ महूं देखि नैननयनन आवों ॥ ॥

सो० सुनि नृप आयसु दीन ॥ तुरत भवन निज आयहू ॥
बोलि मदन सुत लीन ॥ कहिसि नाथ बर खोजहित ॥

चौ० है तयार चंदनावति गयऊ ॥ चन्द्रहास लखि आदर दयऊ
दुष्टबुद्धि सोइ बालक देखा ॥ बहुरि बिचारेउ मरण विशेषा ।
दुखद दुष्ट अहि मंत्र अधीना ॥ खल बस हित विधि कछू न कीन्हा
ऊपर हित अन्तर कुटिलाई ॥ बोला बचन निकट चय गई ॥ ॥
खरचु भूरि तुम्हरेल मुलाभा ॥ बहुरि बहत मुहि देव कामा ॥
जोइ हमंआवे मम बस्ता ॥ लौं करि देहु तुम्हें मैं सस्ता ॥ ॥ ॥
कह चन्द्रहास कौन बिधि आवे ॥ तुम बिन उहां न कोऊ पावे ॥ ॥
ताते तुमहीं जाउ सिधाई ॥ चीन्हत उहां तुम्हें सब भाई ॥ ॥ ॥

चामर छं० औरएक काम धाम लाग बागयो कहीं । जासचं-
द्रहास को पठाइ दीजियो सही । देखिवे कि लालसा देखाइ

देइआइयेकरदहीमदननेजुवेगिमाँगिलाइये॥
**चौ०** अमकहिखलटूकचीठीकीन्हीं॥तामेंयहश्लोकलिखिदीन्हो
**श्लोक** विषमस्मैप्रदातव्यंत्वयामदनशत्रवे।कार्य्याका।
र्य्यनकर्त्तव्यो।कर्त्तव्यंकिलमेप्रियम्॥ १ ॥
**चौ०** लेखतचन्द्रहासचलिभयऊ॥मारतहयकुन्तलपुरगयऊ
भूपबाटिकादेखिसोहाई॥उतरिनहान्योंसरसुखपाई॥ ॥
हरिपूजनकरिबसनबिछावा॥बाँधिअश्वसोयोतेहिठावा॥
ताहीसमयमहीपकुमारी॥सखिनसहितआईफुलवारी॥
चम्पकमालिनिनामसुधन्या॥विषयानामदेवानकीकन्या
चन्द्रहासकोदेखिलोभानी॥पागपत्रखोल्योनिजपानी॥
बाँचिपितहिखीझीमनमाहीं॥मारनयोगकुँवरयेनाहीं॥॥
काजरपोंछिदृगनतेलीन्हों॥विषजहँतहँविषयालिखिदीन्हों
शंभुशिवाबारेनेसेई॥होहुप्रसन्नमिलैंवरयेई॥ ॥ ॥
छविमयमूरतिहृदयबसाई॥नृपजासहितभवननिजआई
चन्द्रहासजागेलखिवारा॥आयेछिप्रदेवानदुवारा॥ ॥ ॥
भेंटिमदनकरिपातीदीन्हीं॥बाँचिबेमिबड़आदरकीन्हीं
तुरतपुरोहितलीन्हबोलाई॥दईब्याहिविषयासुखपाई॥ ॥
हर्षितसुवासिनिमंगलगाये॥विप्रनदानविविधिविधिपाये
बाजेंबाजनरागमिलावें॥नाचैंनटीचटपटीलावें॥ ॥ ॥
दूसरेदिनदेवानसिधावा वेगवन्तनिजपुरकोआवा॥॥
भाटनकीरतिविर्दसुनाऊ॥श्रवणासुनतजनुलागतघाऊ
भवनजाइसुतदूलहदेख्यो॥रागरङ्गबहुभाँतिपरेख्यो॥ ॥
लैकैसङ्गसुतबोल्योरिसाना॥किहैकहायहबातबखाना॥ ॥
बाँचिपत्रशिरपीटनलागा॥लिख्योकहामैंमन्दअभागा॥
पुनिमारनहितरचिमिसपावा॥सुतऊअनाथहैमोहिभावा॥

चन्द्रहासयद्यपियगपरेऊ॥ तद्यपिदुष्टदयानहिंकेरेऊ॥ ॥

दो॰ दुष्टनछाड़ततदुष्टताकैसौंहोइअधीन॥
ज्योंजलकोमलमेंचलैजोंकबक्रगतिलीन॥

चौ॰ पुनिनृपदरबारपठायो॥ असुरमेजल्लादबुलायो॥ ॥
बोलाजाय शक्तिमठदेऊ॥ डारियोमारिजोआवैकोऊ॥ ॥
तबसठचन्द्रहाससेबोला॥ आवहुपूजिदेबिकुलमोला॥
सुनतचलेकरतलधरिथारा॥ तेहीसमयकुन्तलपभुवारा॥
बोलागुरुनेशीशनवाई॥ होइसुगतिजेहिकहोउपाई॥ ॥
कहगालबऋषिसिखसुनिलीजे॥ राजसुताचन्द्रहासेदीजे॥
सबसोंनेहगेहतजिराई॥ सीलाधरिसुमेराबनजाई॥ ॥
सुनिनृपकहाअबैकोउजावै॥ चन्द्रहासैममपासलैआवै॥
मदनबिचारिसुरतउठिधायो॥ सुजलजातपन्थमेंपायो॥ ॥
बोलाचलोभूपबोलवाया॥ देईराजकाजनिजआया॥ ॥

शिख्या छं॰ देवीपूजेहोंजावो॥ राजापैकैसआवो॥ थारीमो
कोलाचोजू॥ राजालीराजावोजू॥

चौ॰ देवीपूजनमदनसिधाये॥ चन्द्रहासराजाढिगआये॥
देसनब्याहिसुतानिजदयऊ॥ राजतिलककरिबनकागयऊ॥
इहाँमदनगेशक्तिनिकेता॥ दुष्टनमारीखड्गसचेता॥ ॥
धरतेमुराइलिंगकेरिदीन्हें॥ असफलखलसङ्गतिकेकीन्हे

दो॰ दुष्टसंगतिजोकरैताहूकोदुखहोइ॥
देहजीवखेरिया घरीसिरसनाभतिजोइ॥
देखिबहालकाहूकही धृष्टबुद्धिसोंजाय॥
आयनिरखसुतासिलासिरपटकिमराकहिहाय॥
जोजनकाअनभलतकेसोइजायसठखीस॥
ज्योंरजतेमारैरबिहिउलटिपरैनिजशीस॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० चन्द्रहाससुनियहसबहाला ॥ निर्बैरीसमसन्तकृपाला
आयोचलिदेवीकेधामा ॥ कीनशक्तिलखिनृत्यप्रणामा ॥
बोलींथरोउशत्रु तुम्हारे ॥ मही क्रोधकरिआजुसंहारे ॥ ॥
मागहुबरजोतुम्हेंसोहाई ॥ देहुमातुफिरिइन्हेंजियाई ॥
छप्पै छं० नसकरकेतुकधर्मदुष्टकेकुलगमखाना ॥ किर-
पिनिकेकुलदानमूढ़केकुलविज्ञाना ॥ कसदीकेकुललाज
शान्तिकुलनरकामिनके ॥ विसनीकेकुलद्रव्यधामकुलस-
लभामिनके ॥ हिंसककेकुलदयादिलकपटीकेकुलमित्रस-
ग ॥ कहेरघुनाथसनाथइमिहरिजनकेकुलशत्रुजग ॥

दो० दुर्जनतजेनदुष्टतासज्जनतजेनहेत ॥
कज्जलतजैनश्यामतामोतीतजैनश्वेत ॥

चौ० सुनिजियायसोदोउदीन्हों ॥ सन्तसतायेकरफलचीन्हों ॥
कीनराजजलपङ्कजनाई ॥ दीनिभक्तिभुवमेंफैलाई ॥ ॥
हयनजैनेवृषदवजलजोरे ॥ यथाभूपतसप्रजाप्रचारे ॥ ॥
जोयहकथासुनैवाकहई ॥ धनवृधहोयहरखमेंरहई ॥ ॥
फलजैमिनमेंबहुविधिराखा ॥ तातेंहोंसंक्षेपेभाखा ॥ ॥ ॥
देखोहरिजनतेकरिद्रोहा ॥ आपुहदुखपायोबसमोहा ॥
असिहरिभक्तिसुखदछलत्यागी ॥ तनुधरिकरैसोईबड़भागी

दो० यस्यनविद्यादानतपजपनशीलगुणधर्म ॥
तेमनुष्यमहिभारहितप्रकटेनाहकब्रह्म ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम-
सनेहीकृतचन्द्रहासआख्यानबर्णनोनामएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ॥
कहौंउत्तराश्वमेधकछुधर्मोत्तरजानि ॥ ॥

चौ० सुनिरविसुत दुर्जनतेकहेऊ ॥ चन्द्रहासगुणसुनिसुमलहेऊ

और सुनौ एक भयो भुवारा ॥ नाम निरग जानत संसारा ॥ ॥
चक्रवर्ती नृप नीति निधाना ॥ दानै धर्म अनेक विधाना ॥ ॥
हरि भूषन खुर रजत मढ़ाई ॥ जल जलूस गुह वसन बोढ़ाई ॥
सुरभी सहस विप्र कहं देवै ॥ तेह पाछे जल अन्न हि सेवै ॥ ॥
तेहि पुर सुपच भक्त एक रहई ॥ देवक नाम नाहि सब कहई ॥
सुत न जान हरि दाया कीन्ही ॥ कामधेनु तेहि को प्रभु दीन्ही ॥
पुरवासी विप्रन लखि पाई ॥ आइ भूप ते बात चलाई ॥ ॥
सुनो भूप यात कहं महाराज है डोम के एक गाई । नहीं दूसरी
तासम भूलखाई । सुनी स्वर्ग के माहि है धेनु ऐसी । न जानी सु-
पच ने लही भांति कैसी ॥ भली भांति ते जोइ से दान देवै । मरै वे-
कोटि हू ते परे पुन्य लेवै ॥ सो ताते गऊ आनि विप्राहि दीजे ।
अमित पुन्य को फल सीघो सलीजे । महीपाल सुन्ते हिये लो-
भ कीन्हों । कह्यो मोल ला वो अभी दाम दीन्हों ॥ गयो विप्र बोल्यो वि-
कत धेनु तेरी । जु वेचौं कहा हों नहीं गाइ मेरी ॥ प्रभू की अहै भोग
पै को लगावौं । बिकै जो निजू ठन्म हू ताहि पावौं ॥ भयो क्रोध विप्रै
गयो भूप पारी ॥ कह्यो नाथ सूपच करै मान भारी ॥ गऊ को दुहै
क्षीर घृत आपु खावै । तुम्हें लेत जानी प्रभू की बतावै ॥ पम्पू भू-
द्र नारी सरं टोल जावत बिना दाड दीन्हे नहीं ठीक आवत ॥

दो० कह महीप विप्रहु सुनौ सूपच बहै हरिदास ॥
ताहि सतावै सोइ जो चहै निरै को वास ॥ ॥

चौ० ताते हौं न सतावब साधू । पुराय करत होइ अपराधू ॥
बोले विप्र बहुरि हरषाता ॥ स्वारथ रत अधर्म की बाता ॥ ॥
सुनहु भूप यह है चण्डाला ॥ कहा भयो पहिरे गर माला ॥ ॥
स्वान स्वाल गंगाजल होई ॥ ताहि पवित्र कहै नहिं कोई ॥ ॥
क्षीर धरे मद भाजन माहीं ॥ होत कबहुं सो पावन नाहीं ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तैसेभक्ति नृगकीराजा॥ ताहिसतायेकछुनअकाजा॥ ॥
मानहुंपितरबिप्रसुरगाई॥ होतमहाफलजिनसेवकाई॥
यहिबिधिद्विजनकहासमुझाई॥ सुनिनृपकेमनहुंसमतिआई
बुद्धिवानजैसेहोइकोई॥ कहेसुनेतेभ्रमसिभ्रमहोई॥ ॥ ॥
तबनृपसेवकनेअसभाषा॥ लावहुकोरिधेनुकरिसाषा॥
आयसुपाइतुरतजनधाये॥ बरबससुरभिएककोल्याये॥
भक्तद्रोहलखिश्रीपतिआपू॥ द्विजमुखनृपैदेवायोश्रापू॥
निजअपराधप्रभुजानतभाई॥ भक्तदोषसोनाहिंसहिजाई॥
सोइसुरभीअरुगऊहजारा॥ दईविप्रकहंएकैबारा॥ ॥
मुदितमहीसुरल्यायोधामा॥ फिरिआईसुरभीतिहिठामा॥
दूजेदिननृपदानजोकीन्हीं॥ सहससंगताहूकोदीन्हीं॥
हांकिविप्रनिजभवनसिधावा॥ हेरतफिरतप्रथमजेहिपावा
बोलाप्रथमसोमोरियहगाई॥ दूसरकहेआजुमैंपाई॥ ॥ ॥
झगरतयेगेदोउनृपपासा॥ क्रोधितहैअसबचनप्रकासा
रेनृपतूअतिहैअन्याई॥ धेनुदेसिफिरिलेसिफिराई॥ ॥
बोलेनृपक्रोधजनिकीजै॥ सहसधेनुयहिबदलेलीजै॥ ॥
बोलाप्रथमविप्रसुनुराई॥ मैंतौलेबयहैनिजुगाई॥ ॥ ॥
अपरदेउतुमकोटिससाजा॥ तदपिहोइनहिंयहिसमराजा
दूसरकह्यौमोहिंकाकहई॥ दैकैदानलीनअबचहई॥ ॥
दुबिधापरिनृपशोचबढ़ावा॥ मूढ़हलावतवचननआवा
शीसतोरगिरिगिटसमकांपा॥ गिरिगिटहोउहमारेशापा॥
कहनृपवचनअमोघतुम्हारा॥ होइकिमिउद्धारहमारा॥
करुरा॥ करिसोदेउबताई॥ सुनिबिनतीबोलेद्विजराई॥
द्वापरयुगयदुबंसमंझारा॥ कृष्णचन्द्रलैहैंअवतारा॥ ॥
सुनुनृपतिनकेचरणसनेहा॥ छूटीतबगिरिगिटकीदेहा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असकहिद्विजनिजमंदिरगयऊ।।कालपाइयमगणगहिलयऊ
लैगेदूतधर्मदरबारा।।पापपुण्यकाकीनविचारा।। ।।
पुण्यतेपापभयोअधिकाई।।प्रथमेंकहाभुगतिहौराई
बोलेनृपबहुपुन्यजोहोई।।प्रथमेंमोहभोगावोसोई।। ।।
इमिनाकहुनलागीबारा।।गिरगिटकातनुधर्योभुवारा।।
द्वारावतीनिकटइककूपा।।लाग्योरहनतहांनरभूपा।। ।।
दिव्यवर्षशतजबचलिगयऊ।।तबअवतारकृष्णकाभयऊ
बालचरितकरकेसेमारी।।बसेआइद्वारकामँझारी।। ।।
तहँइकदिनप्रभुयदुनसमेता।।आयेबनशिकारकेहेता।।
लागिप्यासबभयेदुखारी।।ढूंढहुजलअसकह्योमुरारी
खोजतकरतपावासोइकूपा।।किरकिलदेहधरेजहँभूपा।।
लागेसबकाढ़नयदुवीरा।।तबहुननिकसेअधमशरीरा
विप्रश्रापअरुहरिजनकोपा।।निकसैकिमिपापनतेतोपा
यदुनआइतबहरितेकहेऊ।।सुनिआयेजहँनृपरहेऊ
श्यामचरणअसपरस्योजबहीं।।दिव्यस्वरूपभयोनृपतबहीं
देखिचरितबोलेयदुराई।।कोतुमअहोकहोसोगाई।। ।।
कहनृपमैंहौंनिरगनरेशा।।जाकरदानविदितसबदेशा।।
महिरजजलकननभउडुजाना।।गनिनजातजिमितिमिममदाना
कहहरिकीन्हेंउदानअपारा।।कौनहेतगिरगिटतनुधारा।।
तबनृपसबवृत्तान्तसुनावा।।जेहिकारणगिरगिटतनुपावा

दो० दानविभूषणलोकमेंदानस्वर्गसोपान।।
दानदलैदुखदोषनहिंदानसरिसहितआन।।

चौ० सुनिबोलेगिरिधरकरिछोहा।।अबजनिकरुजोभक्तनद्रोहा
ममजनमोहिप्राणतेप्यारे।।सदारहतजेशरणहमारे।। ।।
करहुंसदामैंतिनकीरक्षा।।संगसंगफिरौंयथागोवक्षा।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ममजनदिशि तिरछे लखेकोऊ। लेहुं निकारि तासु दृग दोऊ
जोममजनहि चलावै हाथा। डारौं काटि तासु कर माथा ॥ ॥
जोममजनतें बैर बढ़ावे। दिहुं मिटाइ रहन नहिं पावै ॥ ॥
पारव मास संवत त्रै पांचा ॥ मद्धि बिनाश वचन ममसांचा॥
तेहि पाछे यम दुख चौरासी ॥ खरकूकर सूकर तनु पासी ॥ ॥
जोममजनकी सेवा करई। मानहुं मम सेवा अनुसरई ॥ ॥
यद्यपि हौं स्वतंत्र सब भांती। तदपि रहत जनबस दिनराती॥
भक्त हमार बांधव प्यारे। हम भक्तनके बंधु पियारे॥ ॥
मेरे भक्त गुरू हैं मेरे ॥ हौं गुरु उनकर वे मम चेरे ॥ ॥
जहँ मम भक्त सकल सुखलहवीं। गंगादिक तीरथ सब जहवां
मेरे भक्त लगत जेहि प्यारे। ते बल्लभ हैं परम हमारे॥ ॥ ॥
विप्र रिउ भक्त होइ जो कोई। अहै पवित्र तबहु जन सोई॥
जिमि माशिशुहि संवारि सभीती। दित दिठोना तिमि ममरीती
भक्तदोष जो मनमें लावै। सो नर नीच निरे दुख पावै॥ ॥
कीट पतंग आदि जो कोई। मुक्ति क्षेत्र सबकी गति होई॥
वैष्णो द्रोही सुगति न पावै॥ आगम शास्त्र वचन असगावै

श्लोक मुक्तिः कीटपतंगानां सर्वेषा मिह देहि नां। मुक्तिक्षेत्रमिदं प्राप्य वैष्णवद्वे षिणां विना ॥ १॥

चौ० भक्तनकी निन्दा जो करई। सो नरश्वान ढकोल लखिपरई
निन्दा विष्टा उदर न भरई। साधुनको पावन सित करई॥ ॥
जो वैष्णवकी करै बड़ाई ॥ निश्चय सो भवनिधि तरिजाई॥
वैष्णव परम धर्म मे जानो॥ परम धर्ममय वैष्णो मानो॥ ॥
वैष्णव परमाराधन हेरे ॥ परमसुकृत वैष्णव सबकेरे॥ ॥
वैष्णव संगति करै जो भोजन। विमल होइ कलिमलतें सोजन
वैष्णव कर चरणामृत पावै। कोटि जन्मकर पापनशावै ॥

सन्तउच्छिष्टसहितजोखाहीं।ब्रह्महत्यादिपापनशिजाहीं
सुपचहोइममभक्तिहिकरई॥सोइउत्तमसोइअवनिधितरई
जाकोदीजैतासोंलीजै॥सोहिसमताकीपूजनकीजै॥ ॥
भक्तिहीनजोहोइकुलीना॥श्वपाडितजपतपज्ञानप्रवीना॥
ताकेसबगुणजानहुऐसे॥मृतकदेहकेमण्डनजैसे॥ ॥

दो० बिचरतसन्तजोअवनिपरतीरथपावनहेत॥
तीरथडरैंअज्ञगनकोतिन्हैंपरससुखदेत॥

सो० संसृतसिन्धुअपार।तामेंबूड़तजीवसब॥
तिन्हैंउधारनहार।बोहितसन्तस्वरूपमम॥

चौ० मेरोसन्तसन्तकोजानो।सन्तसदामेरोकरिमानो॥ ॥
हेतुपमैंअरुवेदैंनाहीं।मैंरहौंसन्तनकेमाहीं॥ ॥ ॥
कबहुँअमनतनुधरिउद्धारों।कबहुँसन्तरूपह्वैतारों॥ ॥
सन्तनकेचरणनकीरेनू।भुक्तिमुक्तिदायकसुरधेनू॥ ॥
भक्तकहैसोइमैंकरहूँ।संतनकेहितनरतनधरहूँ॥ ॥ ॥
भक्तमोहिहैंपरमपियारे।सुनिनरेशनववचनउचारे॥ ॥
प्रभुतुममोहिअपनजनकहऊ।जिनकेबिबसदिवसनिशिरहऊ
तिनकेलक्षणमोहिसुनावो।जिनकीमहिमानिगमसुगावो
हेनृपसन्तबोलेप्रभुलक्षणा।सुनहुभूपसन्तनकेलक्षणा॥
परमकृपालद्रोहनहिंजानै।क्षमावन्तअरुसत्यबखानै॥
निंदारहितद्वन्द्वउरसमता।परउपकारीसुहृदनममता॥ ॥
आपेकामबुद्धिथिररहई।इन्द्रीजीतितिनमनगहई॥ ॥ ॥
अल्पअशनएकान्तनिवासी॥सदाचारसंग्रहनभवासी॥
सीतलचितयुतबिमलबिचारा।धर्मसहितनिजरहितबिकारा
दयावन्तषटउरमीजीता॥मोहमानमदकामअतीता॥ ॥
ज्ञानमानप्रदपरमप्रवीना।परसुखसुखलखिपरदुखदीना

मित्रमित्रहितमित्रहिखोवैं।।तेहिप्रकारनितमोकोध्यावैं।।
चारिप्रकारमुक्तिनहिंलेहीं।।सबतजिममसेवामनदेहीं।।
दृढविश्वासनलोभनरोषा।।यथालाभलाभमेंसंतोषा।।
जोकोउचलिशरणागतआवै।।ज्योंत्योंकरितेहिज्ञानउपावै।।
अनघअजातिअभयअचाही।।आसनवासनसद्गुरुमाहीं
प्रेमनेमदृढशान्तिसरूपा।।समचितसुखदुखनिरधनभूपा
दृष्टिपूतकरिमहियगुधरहीं।।वस्त्रपूतजलपानहिंकरहीं।।
सत्यपूतकरिबचनउचारें।।मनसिपूतकरिकाजसवारें।।
यद्यपिवेदरूपमयगाये।।बरणाश्रमकेधर्मदृढाये।।
सोउशुभाशुभतेसबतजहीं।।कायवचनमनमोकहंभजहीं
ममआधीनसदाहीरहईं।।साधनकोबलभूलिनगहईं।।
मोहींकोकरताकरिमानें।।सपनेहुंउरआपानाहिंआनें।।

दो॰ जहंजहंजबसन्तमिलिसातपांचइकठौर।
तहंममबातचलावहींकरैंनचरचाओर।।

चौ॰ कोउकहदशअवतारमुरारी।।धरेसकलसुन्दरसुखकारी
मीनबराहकमठपहिचानो।।नरहरिबावनभृगुपतिजानो
रामचंद्रनंदनन्दनलीनें।।नवमबौधकलङ्कीहीनें।।
दशनाहिंअवतारविशाला।।मनमोहनरघुपतिनंदलाला।।
इनदुगमकोबड़सुखरासी।।बोलेरघुनाथउपासी।।

दो॰ यनहूमोरेबडेहैंलघुतुम्हारेकान्ह।।
केहिबिधिजानैंजाइनिजप्रभुताकैबिधान।।
प्रथमसोमकुलकृष्णतवरामतेजप्रकाश।।
भानुवंशश्रीरामजीरविसमद्युतिभास।।
जन्मसमयश्रीरामकेभयोमहाआनन्द।।
तबबसुदेवदुराइकैडारिगयेगृहनन्द।।

रामहमारेभूपहैंरैयततुम्हरेलाल ॥ ॥
यशुमतिसुतनायेनृपघरामअस्थिरप्रकृताल ॥
बकीनमोहीहेतविषअसुरनमोह्योकोइ ॥
मातुलमोहीबांधतीमोहीयुवतिनलोइ ॥
सो॰ युवतिनकीयहरीतिपुरुषमनोहरदेखिके ॥
करहिंकामबसप्रीतिबहुरिबजाईबांसुरी ॥
दो॰ मोहनहमरेरामहैंकछूनकरतबकौन ॥ ॥
देवदनुजमुनिनागनरमोहिंबिलोकतलीन ॥
जोकहोकैकेईनबनतासुभेदघटजात ॥
कह्योसंहितामेंसुनोएकसमयसुरबात ॥
बचनबन्धकरिमातुलेकह्योचतुर्दशबर्ष ॥
राजसमयमोहिदिह्योबनसोइकीन्ह्योंतजिहर्ष ॥
कंसहिमार्योकुमततबसोनबधपतिदुखदाय ॥
रावणाबधशठसुनरअसुरताहिनबध्योरघुराय ॥
बेदवतीदशसीसतेकह्योरहैमेंतोहिं ॥ ॥
नवपुरछेकिबिनाशिहौंहेतुगईतेहिसोहिं ॥
कुलछोड़ायेमातुपितुनिजरथासबलोग ॥
रामनेबाजेदेवमुनिमनुजआनतजिभोग ॥
प्रथमखबरिलगवाइकेकूबरदीनसुधारि ॥
रबरापरसिपावनकरीरघुपतिगौतमनारि ॥
जरासिन्धुकेसमरमाभयेभागिगोपाल ॥ ॥
पीठिनदीन्हींरणबिषकाहूसमक्रपाल ॥
चोरीकीन्हीछमनबपरभामिनितेंप्रीति ॥
रामनबोलेझूठकछुभूलिनचलेअनीति ॥
ब्रजपतिबिधिबपभेषकरहर्योमानछलधेय

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विस्कुंभगाभृगुनाथहू कीन्हेंसुबसविशेय॥
कृष्णागोवर्धन करधस्योयहसेवककोकाम॥
सोइकारजसबकपिनतेकरवायोश्रीराम॥
कृष्णापीन्हायानलहिनाथ्यौकालीनाग॥
रामसेतुकरिअरिसमरअमितनिवारेनाग॥
विप्रसुदामामित्रतेतंदुललैधनदीन॥ ॥
रामकपीशविभीषणाहिंदुरदिनमेंनृपकीन॥
सबबसदीन्हेंगोपिकनतदपितज्योयदुराउ॥
ऋणीभयेहनुमानकेअसरघुवीरसुभाउ॥
कृष्णासखाउद्धवभयेपुनिपठयेतपहेत॥
तिन्हेंहमारेरामजीराजपरमपददेत॥ ॥
दशसहस्र दशशैवरषकीनिअवधबसिराज॥
फिरिपाछीवककस्थानदैभेइततोदिसिसमाज॥
अहिमहिअशसुअनुजसियदीन्ह्योजगहितत्यागि॥
आपुसबपुरगेजानघटिकृष्णसकुलसबलागि॥
चौ०असहैंरामहमारेस्वामी॥अखिलरूपकेकारणनामी॥
अपरकहैंसिद्धान्तहमारा॥पूरणाहैंसबकेअवतारा॥ ॥ ॥
समभतमेंसबएकेअहई॥रूपधरेचौबिसश्रुतिकहई॥
हैंसबएककनकजिमियद्यपि॥होतनरामिरतीसम तदपि॥
बोलेअपरसकलश्रुतिसारा॥रामनामहैइष्टहमारा॥ ॥
सुखदायकदुखपातकहरता॥सबइष्टनकोपूराकरता
अस्मवहाबिनरामाहोई॥राबिनरघुपतिकहैनकोई॥ ॥
माबिनमहादेवहाकहिये॥रेफबिन्दुबिनप्रणवतलहिये
कृष्णरहितराकसनकहावे॥महावीरबिनमानरहावे॥
राबिनराधाधारहिजावें॥आबिनसीतासीतकहावें॥

दुर्गारमासारदाभयरौं।।गवौरिगणेशआदिहरिगयरौं॥ ॥
करिविचारदेखैबुधकोई।।सबमंत्रनमहंअक्षरदोई॥ ॥
जीवयथालघुतेहिबलजागे।।देवसरिसफलदेतजोमांगे॥
जेहिजानेबिनकछुनजानै।।पशुसमानतेहिवेदबखानै॥
नामबिवसहैरूपसदाहीं।।रूपनामबिनआवतनाहीं॥ ॥
बिनानामपुरधामनपावै।।जानननामकहतमिलिजावै॥
अगुनसगुनयुगब्रह्मकहावै।।सुखप्रदपरितामेंनहिंपावै॥

दो० ब्रह्मसोव्यापकसकलघटआनन्दअमलअखण्ड॥
तदपिवशितजगजीवसबसहतविविधविधिदण्ड॥
प्रीतिसहितजोनामकहंरटैराखिविश्वास॥
यहांसदासुखमेंरहैअन्तरामपुरवास॥ ॥
निरगुनतेबड़नामयशसोमैंकहौंबुझाइ॥
अबसगुनतेकहतहौंसुनोसुजनमनलाइ॥

चौ० रामरूपधरिअसुरसंहारे।।सुरनरमुनिसबकियसुखारे
नामजपतजनसुखीसदाहीं।।औरनकेदुखदेतिमिटाहीं॥
कृष्णकुनपधरिगिरिकरलीन्हें।।ब्रजबासिनकीरक्षाकीन्हें॥
नामजपतअहिपतिमहिलीन्हे।।भुवनचारिदशरजसमकीन्हे
रामकामअरिकरधनुभंजा।।भृगुपतिसहितनृपनमदगंजा
नामरसिकनृगासमसंसारा।।सोबहिंकलिरिबसिआइबिचारा
कृष्णएकदावानलपीन्हा।।ग्वालबालसबबाहरकीन्हा॥
नामसुमिरिशिवविषकियोपाना।।जड़रुजीवजेहिसबजगजाना
रामगीधसेवरीमुनिनारी।।हैप्रसन्नभवभयतेतारी॥ ॥
नामसुमिरिसठनरअपारा।।अजहूंजपतहोतभवपारा॥

दो० रामसुकंठविभीषनैदीन्हिराजिनिजकाज॥
नामसुमिरिसज्जनतजहिंबातसरिसजगसाज॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रामसिन्धुभासेतुकरिभयपारलैसैन॥ ॥
नामसुमिरिहनुमानगेकूदिपयोधिदचैन॥
रामरावणहिंरणनिधनकीन्हिराजिबसिवास॥
नामजपतसुलमोहदलहोंतबिनयश्रमनास॥
रामकामकरिअनघद्रुक्अवधजानलैधाम॥
नामउधारतनिहुभुवनजोसुमिरैसहसाम॥
॥हनुमत्संहितायांहनुमानवचनश्रीरामप्रतिश्लोक॥
रामत्वत्तोधिकंनामंइतिमेंनिश्चितामतिः॥
त्वमेकंतारलेयोध्यानाम्नाचभुवनत्रयं॥ ॥

चौ॰ असहिइष्टहमारमहाना॥सिरधरिसबहिनकीनप्रमाना
जे॰प्रभुकृतवारबदावैं॥जाननहारमहासुखपावैं॥ ॥ ॥
एककहैंसबहैंअभिरामा॥नामरूपअरुलीलाधामा॥ ॥
यहिप्रकारकीबातेंकरहीं॥मेरहितआपुसमहंलरहीं॥
सोबातेंमाकहंअतिभावैं॥सुनौजायमैंतिनकेठामें॥ ॥
जैसेबिपुलसुतनकीबानी॥सुनिहरषतपितुनिजसबजानी
तैसेमैंसुनिसुनिहरषाऊं॥जाउंजहांजहंतहंचलिजाऊं

दो॰ प्रेमप्रशंसाविनययुतवेगवचनयेआहिं॥
तेहितेहोतअनन्दचुरकुरउरलागतनाहिं॥
भक्तनकेलक्षणासकलसुखदसुनायेतोहिं॥
जिनकरिकेपक्षीसरिसनिजबसकीन्हिनमोहिं॥

चौ॰ सुनिनरेशअतिशैसुखपायो॥संतनपदपुनिशिरनायो
देवदूततेहिअवसरबीरा॥लैबिमानआयेनृपतीरा॥ ॥ ॥
कृपासहिताशिरनाइनरेशा॥चढ़िबिमानगवन्योसुरदेशा॥

गीतिका छं॰ सुरलोकगवन्योभूपउत्तमकूपकेदुखना-
शहू॥लखिदेवबाधिअसुनप्रभुनवयदुनलेपरकाशहू॥

करिदानबस अभिमानके नृपद्रोहहरि जनसेदयो। तेहिपा-
पपायोतापरद्विजकीशापदरशनलेगयो॥ असजानिमनअ-
नुमानिकबहूं संतकोनसताइये। बनिपरैकीजेसेवनाहिंब-
निपरैतौशिरनाइये॥ यहिभाँतिकेसुनिबचनयमके-
गणानअतिसुखपायहू॥ शिरनाइदण्डउठादूतबस-
बभृत्युलोकसिधायहू॥

दो॰ संतनकोउतकर्षजोकहैसुनैनितनेम॥ ॥
बढ़ैभावभक्तनबिषैकहरघुनाथसुप्रेम॥

इतिश्रीविश्रामससागरसवमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा
मसनेहीकृतनगप्रसंगसंतलक्षणबर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः४२

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपतिसुखदानि॥
धर्मशास्त्रमतकहौंकछुमनुअस्मृतिजुबखानि॥

चौ॰ सुनिसंतनकीबिपुलबड़ाई॥ पुनिसौनकबोलेशिरनाई
नाथकहोअसिकौनउपाई॥ जोकरिजीवसुखीहोइजाई॥
कौनदेवकेसुमिरनजूटै॥ जेहितेपितरनर्कतेछूटै॥ ॥ ॥
कौनदेवहैसबफलदानी॥ सुनतसूतबोलेमृदुबानी॥
सौनकसुनौसत्यमोहिंपाहीं॥ रामसमानआनसुरनाहीं
जिनकेसुमिरतसुरसारे॥ बिनप्रयासहीहोतसुखारे॥
जिमितरुमूलनिखेचनमाहीं॥ डारपातफलसबहरिआहीं
असजियजानिसकलबिधिदासा॥ रामहिभजहिंतजहिसबआशा
तीनिप्रकारभजनहरिकेरा॥ व्याससुवनसुखदेवनिबेरा॥
निष्कामीजोरामैध्यावै॥ तासुबिवसप्रभुआपुरहावै॥ ॥
मोक्षकामकरिकोइसेवै॥ ताकोराममोक्षपददेवै॥ ॥ ॥
सर्वकामकरिसेवैदासा॥ ताकीहरिपूजहिंसबआसा॥
ऐसप्रभुकेशरणोआई॥ जासुकृपासनुकूपाभलाई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपर देव सेवै करि दुखा॥ होइ प्रसन्न देहिं जग सुखा॥
औ सेवा बिधि बनै न कोई॥ कोपि बिनाशत तासु करै सोई॥ ॥
ताते नारायण सम देवा॥ नहिं निहु काल सत्य यह भेवा॥

दो० सर्व शास्त्र अवलोकि के पुनि कीन बिचार॥
ध्यान योग मंगल करन है रामे तत सार॥

चौ० जो निज पितर चहैं निस्तारा। तौ हरि भक्ति करै बिस्तारा॥
जैसे क्वास महीपति तारे॥ सुनि सौनक मुनि बचन उचारे॥
हे प्रभु केहि प्रकार नरहारी॥ तारे पितर कहौ बिस्तारी॥ ॥
केहि बिधि भक्ति करी हरि केरी॥ बोले सूत सुनो मनु फेरी॥
श्रवणपुर एक बस्ती कहेऊ॥ क्वास नाम तामें नृप रहेऊ॥ ॥
अन्त समय यमगण चलि आये। मारि बांधि निज लोक सिधाये
देखि भानुसुत लेखा लीन्हा। पुनि दूतन कहँ आयसु दीन्हा
डारो जाय नर्क नृप एहू। चौदह लाख बरस दुख देहू॥ ॥
आयसु पाइ नर्क ढिग लाये॥ पीव रक्त जामें कृमि छाये॥
चाकल पाड़ सयोजन केरा। सौ योजन गहिर निबेरा॥
घेर जीव बूड़ै उतराहीं॥ एकौ पल सुपास जहँ नाहीं॥ ॥
तेरे कीट तन कैं बेहाला॥ जारहिं मध्य अगिन की ज्वाला।
ऊपर यमगण मारहिं नाना॥ देखि त्रास नृप क्वास डेराना॥
ताही नर्क मांझ नृप केरे॥ पुरिखा रहैं एकोत्तरि हेरे॥ ॥ ॥
भूपहि लखि रोदन तिन ठाना॥ सुनि महीप अस बचन बखाना।
को तुम हौ जो हम महिं निहारी॥ लागेहु रोदन करन पुकारी॥
हे नृप हम हैं पितर तुम्हारे॥ तुम हौ पुत्र हमारे प्यारे॥ ॥
बोले भूप बहुरि तिन पाहीं॥ का हित परेउ नर्क के माहीं॥ ॥
की तुम दान कबहु नहिं कीन्हा॥ की तुम बिप्रन कहँ दुख दीन्हा
की सन्तहि बोलेहु कटु बानी॥ बोले बहुरि पितर सुत जानी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दीन्हपुत्रसज्यादिकदाना॥गजरथबाजपालकीनाना॥
पूजेदेवविपुलबहुभांती॥विप्रजेंवायेदिनअरुराती॥ ॥
येसबकीन्हदर्विपरआनी॥तातेभईपुण्यकीहानी॥ ॥
जीवमारिबहुकीन्हअहारा॥तातेपावानर्कअपारा॥ ॥
जीवभक्षकरपातकभारी॥भाषतकविकोविदश्रुतिचारी॥
सुनिगुरुतेहरिमंत्रनलीन्हा॥तातेनर्कबासयमदीन्हा॥
जेहिप्रभुनरवरसरिसदेहसंवारी॥जहँतहँरक्षाकीन्हिहमारी॥
तासुभजनहमकीन्हनभूली॥काहेनदुखअबधोसुखभूली॥
अबलगरहीतुम्हारीआसा॥कबहुँकहेहैंहरिकेदासा॥
तबहुँभारहोईनिस्तारा॥बसबजाइसुरलोकमझारा॥ ॥
सोतुमहूँहरिभक्तिनकीन्ह्यो॥आइनर्कमहँबासालीन्ह्यो॥
कहनृपजोअबछूटनपावहुं॥तौतुमकासुरलोकपठावहुं॥
हेहरिभक्तभजहुंभगवानहिं॥जातेपावहुपदनिर्बानहिं॥
सुनिबोलेयमगणारेअंगा॥अबमैंक्योंनसंगेहुहरिसंगा॥ ॥
अबयमजालपरेहुजबभाई॥तबहरिभजनकेरिसुधिआई
जैसेकोउगृहपावकलागे॥कूपखनावतअतिअनुरागे॥
परतधारजिमिबधुरबवावै॥हेलतयुद्धभटनीवडरावै॥ ॥
नथातुम्हारमनोरथकारन॥जबकहिलगेनरकमहंडारन
तेहिअवसरइकहरिजनआये॥तिन्हैंदेखियमनकेगनधाये
पदशिरनाइकीन्हअतिआदर॥लायेदेवरथनदिगसादर
देखिकृतान्तउठेहरषाई॥करिदंडवतलीन्हउरलाई॥ ॥
कनकसिंहासनआसनदीन्हा॥पदपखारिपादोदकलीन्हा॥
धूपदीपकरिदोउकरजोरी॥लागेअस्तुतिकरनबहोरी॥
देखिप्रभावनृपहुदिगआवा॥रामभक्तसोंबिनतीलावा॥
नमोनमोतुमपतितनतारन॥नमोनमोप्रभुबिपतिनिवारन॥

नमोनमोतुमपरउपकारी॥मोहिंनरकतेलेहुउवारी॥ ॥
सुनिविनतीभैसन्तदयाला॥रविसुततेबोलेततकाला॥
याकोछांड़िफांसतेदीजै॥इननाकहाहमारोकीजै॥ ॥
करहिजाइहरिभक्तिनरेशा॥मिटहिंजाहितेसकलकलेशा
सन्तककहामानियमलीन्हा॥तुरतहिछांड़िनरशहिदीन्हा
ऐसेहैंहरिभक्तकृपाला॥सहजनिकासिनरकरहिंनिहाला
छूटभूपमृतलोकहिआवा॥मृतकदेहनिजआनसमावा
उठतनृपतिभैलोगसुखारे॥सकलकहैंबड़भागहमारे

दो० नबमहीपयमलोककीकथाकहीसबगाइ॥
जेहिबिधिदेखेपितरनिजदीन्होसन्तछोड़ाइ॥

चौ० यमपुरहमनिजनैननदेखा॥बिनहरिभक्तिमहादुखपेखा
तातेभक्तिकरबअबहमहूं॥जातेनर्कनजाईकबहूं॥ ॥
विप्रबोलिशुभघरीसोधाई॥केहिदिनशरणरामकीजाई
पत्रालखिद्विजबचनउचारा॥प्रातहिगुरुमुखहोहुभुवारा
असुनिभूपदानबहुदीन्हा॥करिसनमानबिदातबकीन्हा
जबतेनृपहरिशरणबिचारी॥तबतेभैसबपितरसुखारी॥
बैठनिकरिनरककेपासा॥कहैंकिसुतहोइहरिदासा॥ ॥
कबहमजावअमरपुरआई॥असकहिहुलसहिंसहिंउठाई

दो० तावतभरमतपित्रजगपिराडहेतहरिवार॥
यावतकुलमेंकृशाकरभक्तनहोतकुमार॥

## पद्मपुराणेश्लोक

तावत्भ्रमन्तिसंसारेपितरःपिण्डतत्पराः।
यावत्कुलेसुतःकृष्णभक्तियुक्तोनजायते॥१॥

## स्कंदपुराणे

पंचतिनरकेपितरःनृत्यंतेचमुहुर्मुहु॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मद्दं शे बैशाबो जानां संमत्रानाभविष्यति ॥२॥
चौ० इहांपुरोहितकीन्ह बिचारा ॥ सबविधिगारोजिमारहुमारा
जबराजा हरिकाजनहोई ॥ त्यागतिथमंत्रनमानीकोई ॥
नहिं अबधेनुबेदाईकबहीं ॥ पांचसातकादेईहुमहीं ॥ ॥
सुनीज्ञानजबसन्तनकेरा ॥ भाईनहींवचननबमेरा ॥ ॥
हरिसेवामेंमनचितदेई ॥ आनदेवकोनामनलेई ॥ ॥
तातेसो अबकरौउपाई ॥ जातेहोनबैशावराई ॥ ॥ ॥
सुनिबोलीद्विजभामिनितबहीं ॥ नृपकेभवनजाहुतुमअबहीं
रानीतिअसकहउबुझाई ॥ सज्यानिकटराउनहिंआई ॥
सुनिद्विजलेपंचाङ्गसिधाये ॥ तिसरेपहरभूपगृहआये ॥
रानीलखिउठिमाथनवावा ॥ आशिर्वाददीनबैठावा ॥ ॥
पचारबोलिकहीद्विजबाता ॥ केसेबिधितुम्हारअहिवाता
सबविधिबनारहैतबसाजा ॥ पैअबचाहतहोनअकाजा
कौनअकाजभूपजोकाल्ही ॥ लेईगुरुदिक्षाधनपाल्ही ॥
तबतुह्मारसबभांतिअकाजा ॥ राजपाटसबछोड़ीराजा
भक्तिज्ञानमेंमनचितलाई ॥ घरकोकामसकलबिसराई
तुमरेनिकटनआईकबहीं ॥ चलिहोईतीरथजबतबहीं
तातेकरहुयतनतुमसोई ॥ जातेभूपनबैशावहोई ॥ ॥
कोनियत्नकीजेसोगावहु ॥ रूपमोहनीकेरबनावहु ॥ ॥
करिकटाक्षमोह्योनृपआजू ॥ कामबिबसलखिकीन्ह्योसाजू
बिप्रहिबिदाहरविदेकीन्हा ॥ अपनारूपरचनमनदीन्हा
जहंलगुत्रियनकेरशृङ्गारा ॥ अङ्गअङ्गसकलसंवारा
निशापाइपतितेजसिधाई ॥ हासबिलासकीन्हसुखपाई
जबअनङ्गबसभूपहिजाना ॥ पकरिसूटकरिवचनबखाना
स्वर्गलोकतेतुमफिरिआयहु ॥ हमहिंनकछुदीन्हेउसबपायहु

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोलेनरपतिमांगहुप्यारी॥ जोकछुइच्छाहोइतुह्मारी॥ ॥
विधिहरिहरकोसांचीदीजै॥ तौहमकन्तमंगुबरलीजै॥
तबमहीपयेंत्रैदेवनकेरी॥ रवाईसोंहहरसिबहुतेरी॥ ॥
सुनिबोलीपतियहबरदीजै॥ जहांराजतहंभक्तिनकीजै
भक्तिकिहेबड़ेहोतअकाजा॥ तातेमैंबरजनहींराजा॥ ॥
दानपुण्यमलकरहुभुवाला॥ जाकरफलपावहुतत्काला
सुनिमहीपबोलेअकुलाई॥ बनेहुनमांगलबरदुखदाई
जपतपयज्ञदानबहुकरहीं॥ भक्तिज्ञानबिनजीवनतरहीं
किहिनिदाननिजभक्तिबिहाई॥ तेगिरगिटअहिगजभेआई
तातेअबमोहिंआयसुदेहू॥ कीजेभक्तिपरमफलयेहू॥
रानीसुनिपुनिबचनउचारा॥ अबमैंबंधोंबाचातुमहारा॥
देखहुशिवदधीचकसकीन्हा॥ बाचाबसआपनतनदीन्हा
नृपहरिचन्दबडेरजधानी॥ बाचाभरिनिडोमघरपानी॥ ॥
मधुकैटभजिनकीमहिमाटी॥ बाचाबसदीन्हिनिशिरकाटी
असुरगयासुरदानवअहई॥ बाचाबश्यअधोमुखरहई
दशरथदेनकहेउबरदाना॥ बचननतजेहुतजेहुसुतप्राना
विष्णुबचनचपलासनेहारा॥ तेहितेआपुनदधिसुतमारा
सोतुमछांड़हुनिजमुखभाषी॥ ब्रह्माबिष्णुशिवहिकरिसाखी
परेहुभूपदुविधामहंकैसे॥ गहिमुखसांपछछूंदरिजैसे॥
तजहुंभक्तितौनरकहिजैहौं॥ बाचातजेअधिकदुखपैहौं
यहिबिधिनिजमनटेकजोआनी॥ दीन्हिसिछांड़िभक्तिअज्ञानी

दो० कल्पलतातजिमूढ़जिमिकिंशुकलावैकोइ॥
सोइकीन्हींनृपकामहूसमुझेबहुभलहोइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतराजाकामअख्यानबर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः४२॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगयापमिरासुखखानि॥
बरणौंभारतकीकथाकुचितान्योमतआनि॥

चौ॰नजलहिंभक्तिदूतयमकेरे।।पकराबहुरिनरकमहँगेरे।।
ऊपरसेमोगदरशिरदयऊ।।बिबिसलयोजनभीतरगयऊ।।
जबउछरततबमारतथाई।।कहहिंकिअबकौंउछरतआई
जेहिसुनकौतुमग्रामलगाई।।द्विजरामीतेहिछलाबनाई।।

दो॰ जानिबूझिनृपरामकोदीन्हिसिभक्तिबिहार॥
आसुहिपारिहमन्दमतियहीनरकमेंआइ॥

चौ॰यहसुनिनरकीकरहिंपुकारा।।केहिखलसुयोपुत्रहमारा
द्विजहत्यातकेशिरदीन्हा।।बैशाखहोनमनेजेहिकीन्हा।। ।।
तेहिसमथापीअपरनपावा।।हरयमाहिंजेहिहमेरोवावा।।
ऐसेबचनसकलमिलिबोलहि।।उछरहिंकबहुंशिरखोलहि
तेहिअबसरनहँनारदआये।।नरकिननेअसबचनसुनाये
घेरअधोमुखधमिनअपारा।।तुमकाहेबहुकरतपुकारा।।
हेमुनिहमरेकुलदसपचासा।।होनचहतरहेहरिदासा।। ।।
दीन्होंबरजिनाहिंअबकोई।।तेहिंतेहमेंमहादुखहोई।।
अजहूंजोताकोसमुझावै।।कोटियज्ञकीन्हेफलपावै।।
मुनिनारदकेलागीदाया।।नरकिननेअसबचनसुनाया।।
जोमैंसुतसमुझावोंतोरा।।सत्यबचननहिंमानीमोरा।। ।।
जेजड़जीवहवैंजगमाहीं।।सन्तकहातेमानतनाहीं।। ।। ।।
कहेंकिधनाहितकरहिप्रबोधा।।समुझेनहिंभक्तनकाबोधा
नरकिनकहासुनहुमहराजा।।ऐसेबचननबोलीराजा।। ।। ।।
अधमदेखिबगादशाहमारी।।सुननेअस्तुतिकरीतुम्हारी।। ।।
जोकुजातिनहिंमानहिंबाता।।गगराखोदिदेखापहुसाता।।
गाडेबीचअजिरकेमाहीं।।मोहरभरेनृपजानतनाहीं।। ।।

इतना सुनि मुनि तुरत सिधाये। बेगि भूप के मन्दिर आये॥ ॥
मुनिहि बिलोकि राउ चल केरेऊ। हाथ जोरि अस्तुति अनुसरेऊ॥
धन्य आजु हम धन्य मुनीसा। तुमरो दरश दीन जगदीशा॥ ॥
जो बांह सुलभ बस्तु अनेका। दुरलभ सन्त समागम एका॥
अब भोजन का कहिये भेवा। केहि बिधि बनै सोई देवा॥ ॥
कहुं नारद आदि सिसि केरा। असि बिष्टा सम जल मधु हेरा॥
शास्त्रन का निकेहू कीरखै। पद्म पुराण बचन अस भाखै॥

## गौरीतंत्र श्लोक।

कृतमंत्रविहीनस्य पापिष्ठस्य दुरात्मनः॥
स्वान विष्टा समं चान्नं जलं च मदिरासमं॥ १॥

## पद्मपुराणे

अवैष्णवास्तु ये विप्राश्चाण्डालाख्या मास्मृताः॥
तेषां सम्भाषणास्पर्शसोमपानादि वर्जयेत्॥ २॥

## स्कंदपुराणे

अवैष्णव गृहे भुक्त्वा पीत्वा वाज्ञानतोपि वा॥
शुद्धिश्चान्द्रायणेनोक्ता इष्टापूर्तं वृथा सदा॥ ३॥

चौ० राम मंत्र तुम सुना न काना। आज्ञा मागत कौने ज्ञाना॥
नरतन लहि हरि भक्ति न कीन्ह्यो। झूठे जगत माहिं मन दीन्ह्यो॥
देख्यो तुम न पंथ मधुरसासा। तदपि हृदय नहिं आई हुलासा॥
बड़ भाग ने कूटन पायो। इहां आइ पुनि ज्ञान गंवायो॥ ॥
प्रसव समय जिमि त्रिय पति त्यागै। दुख बीते फिरि तासों पागै॥
तेहि प्रकार तव मति भइ राजा। जानि बूझि निज कि हउ अकाजा॥
पुरिखा रैरिव नरक महं आयहु। भक्ति कौल करि सुधि बिसरायहु॥
बोले भूप सुनहु मुनि ज्ञानी। रूप सँवारि कुला मोहिं रानी॥
मागि सिव कारि कौल कराना। कहि सिकौं जननि मक्ति भुवारा॥

नबमैंनाहिबहुतसमुझावा॥वाकेमनतनकहुनहिंआवा
वाचाकीसुनिकानिबिचारी॥तेहितेहमहरिभक्तिबिसारी॥
कहनारदसुनियेनृपभेदा॥नारिसुभावकहतअसवेदा
रहितअचारबिचारबिहीना॥परमभयाकुलछलबलपीना
चंचलबुद्धिचपलअबगाही॥सदाअकाजलागिमुखचाही
अपरानासिकभेदअभंगा॥बिरतप्रसालमलिनसबअंगा
इतनेअवगुणनारिमझारा॥कसनकैनृपतबअपकारा
दुष्टनारिमनमानैसोई॥तबसमाजनीचेजोहोई॥ ॥
जेजेभेभामिनिबसराजा॥तिनसबहिनकाभयउअकाजा
शशिशरद्गीनृपबिबिधिसुराई॥अपरप्रसंगसुनौमनलाई
कुंडलनामरहैद्विजएका॥उग्रबुद्धिवरदर्पिननेका॥ ॥
निर्धनजानितासुकानारी॥नितउठिदेहिहजारनगारी
इकदिनद्विजनिजपुस्तकलीन्हा॥उठिपरदेशपयानाकीन्हा
ताहिमगइकतड़ागलखिपावा॥कोरिमज्जनथिरतिलकलगावा
पुनिहरिकथाकहनाहुजलागा॥बाबामध्यरहइकनागा॥
तेहिहरिकथासुनीसुखमाना॥लपनिमिटीकछुहृदयज्ञाना
लागेकरनविसर्जनजबहीं॥आवानिकटनिकसिअहिनवहीं
मोहरएकधरिबोलाबानी॥कोतुमअहउकहउसुखदानी
कुंडलकहाबिप्रहमहोई॥बिद्याधरजानतसबकोई॥ ॥
बिधिअनकृपापरसदुखपायउ॥अबधनहितपरदेशसिधायउ
बोलासर्पदूरिजनजावो॥हमकाहरिकीकथासुनावो॥
मोहरएकदैवोनिततोहीं॥काहुईपैनबतायहुमोहीं॥ ॥
यहसुनिद्विजमनहरषनभयऊ॥निकटहिरामलाभकरिदयऊ
लागसुनावनबिबिधिपुराना॥पावहिएकमोहरनितदाना॥
भाधनवानमहलबनवावा॥सुभगवाजिनिजद्वारबंधावा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भूषरगाबसनअनेकप्रकारा॥पहिरैआपुसहितसुतदारा॥
एकदिनभवनपरोसिनिआई॥बोलीकरकललेहक्र्गाई॥
तुमतौरहिउदुखितधनहीना॥किनतुमकायहसम्पतिदीन्हा
बोलीबिप्रबधूसुनुमाई॥कोजानैकहवापतिपाई॥॥
जोतुमनेपतिभेदनपावा॥तौकेहिकामधामधनपावा॥
पुरुषनारिलेअन्तरकरई॥तौसम्पतिपावकमहपरई॥
तेहितेपूछेहुआजुसंभारी॥असकहिचलीगईसोनारी॥
द्विजभामिनितबरहीबिसाई॥दीन्हेसिअभरणसकलचलाई
द्विजपुस्तकपदिघरजबआवा॥दुखितदेखिअसबचनसुनावा
कौनिबिथातोरेमनमाहीं॥सोसबकहउप्रियामोहिंपाहीं॥
कैयोवारबिप्रजबबूझा॥बोलीतबतुमकानहिंसूझा॥
रहेउरंकअबसम्पतिलहेऊ॥किनसोंहमतेभेदनकहेऊ॥
सुनिबोलाद्विजशिरकरधारी॥याहीहितकीन्हेउरिसभारी
भूषणासजहुतजहुमनखेदा॥सुनौकहउंमैंधनकरभेदा॥
पुरदक्षिणाहैएकतड़ागा॥तेहितटरहततहँवैयकनागा॥॥
दिनप्रतिताहिपुराणसुनावों॥मोहरएकतहंवांमैंपावों॥
इतनासुनिउठिभोजनकीन्हा॥पतिसुततिन्हेंजेवांयेलीन्हा
निशापाइद्विजसोवनलागा॥बोलीसुततेकरिअनुरागा॥॥
सरकेनिकटआजुतुमजावो॥सर्पहिमारिद्रव्यखनिलावो
सुनिपोथीकुदारिमांहिलयऊ॥भोरहोतसरकेतटगयऊ॥
तसकदीखबिप्रसुनआवा॥लखिकुदारिमनक्रोधबढ़ावा
कीन्हिबिप्रजबकथाप्रसंगा॥निजबांबीतेसुनहिभुजंगा॥
तबद्विजबिबिधिरागिनीफेरी॥तदपिनलागिघाततेहिकेरी

दो॰ करनबिसरजनलागजबतबनिकसासोव्याल॥
मोहरएकचढ़ाइकैबहुरिफिरावतकाल॥

चौ० भनिरभवनहलमनहिपावा॥अपरदुष्टकुठारिचलावा
कछुकपूंछकाटिगेउअहिकेरी॥काटिसिघुमरिमरातेहिवेरी
इहांविप्रजागेयोपरभाता॥सुतकितगापूछीयहवाता॥ ॥
बोलीत्रियकछुकामछियथऊ॥सुनिउन्हाउरातेविसमयभयऊ
उठातुरतांहिजउअहिदिगआवा॥मृतकतहांनिजबालकपावा
रोदनकीन्हिलीनउरलाई॥कीन्हिक्रियाविधिवलखरआई
कछुदिनबादिसर्पदिगआयो॥धमिधीरजउअसबचनसुनायो
आइपुरारासुनहुजजमाना॥केहिकारनाहमतेदुखमाना॥
बोलाअहिअसमेरसगयऊ॥जबतेतुमवनितहिकहिदयऊ
तुम्हरेसुतकरशोचअपारा॥हमरेलूमकेरदुखभारा॥ ॥ ॥
तेहितजाहुभूमिनिजधामा॥अबहमतेतुमतेनहिंकामा॥
यहसुनिविप्रपलटिगृहआवा॥सुतकरदुखकछुधनदुखपावा
देखहुभूपनारिवसभयऊ॥द्रव्यलाभसुतदूनहुगयऊ॥
जैसेविप्रकीन्हनिजहानी॥तेहिप्रकारतवमतिबौरानी॥

दो० भगवतभजनछोडाइनिजधर्मदिढ़ोविवेकोइ॥
तहित्यागियेशत्रुसमपरमहितूकिनहोइ॥
तज्योपितेप्रह्लादसाभरतविभीषनभाइ॥
गुरुबलिब्रजबनिताबनिभेसबमंगलदाइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतउजागरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामस
नेहीकृतकासनारदसम्बादकुराडलप्रसंगवरानोनामच-
त्वारिंशो ऽध्यायः॥४७॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगराणगिरासुखदानि॥
महभारतसदग्रंथकीकहोंइतिहासबखानि॥

चौ० अबप्रसुनोयरसंगसुनावों॥जनीचरिकारूपलखावों॥ ॥
जबभारतकरभाउआरंमा॥चलेपांडुसुतगाइनखंमा॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ बोलितबसहदेवतेप्रमुदितचारोभाइ ॥
होइजीतजेहिभाँतिसोंसाइतिदेहुबताइ ॥

चौ॰ कहसहदेवसुनहुबलवाना॥प्रथमेउनतेकीन्हबखाना॥
अबतुमकाकेहिभाँतिबताई॥तेहिहितसगुनसुनहुयकभाई
इस्त्रीचेरिपुरुषजोपावो॥ताहिआनिकुरुक्षेत्रगड़ावो॥ ॥
एहेंचलिजंबुकतहँदिनते॥सकलभेदनुमपैहौंतिनते॥ ॥
यहसुनिढूँढ़नभीमसिधाये॥घूमतएकनगरमहँआये॥ ॥
तेहिपुरहतरहेइकतेली॥सुनहुतासुकीरीतिनवेली॥ ॥
बैठीपलंगतासकीबामा॥अपनाकरहिंधामकरकामा॥ ॥
झारिपोतिघरजलभरिलावे॥कूटिपीसिपुनिअसनबनावे
ताहिपवाइखायतबअपना॥बहुरिकैसबटहलअलपना॥
एकदिवसगैआगिबुझाई॥रबिदिनमांगिफिरानहिंपाई
तबबनिताबोलीताकेरी॥हैपगलागमहाउरमेरी॥ ॥ ॥
जोतुमकन्धचढ़ावोंमोही॥आनिदेउमैंपावकतोहीं॥ ॥
सुनतहिलीन्हसिकन्धचढ़ाई॥चलामुदितमनलाजबिहाई
संगेजाइआगिनिजेहिद्वारे॥तालबजावहिंबालकसारे॥
प्रमदासमहँसिहँसिअसबोले॥भलेआगिपैमांगसडोले
कोउनिलज्जकहिदेवेगारी॥कोउकहैनीचढारिहैनारी॥
करहिंकुबुधिनीइहिबिधिबाता॥हैमेनअसबरदीन्हविधाता।
पुरुषदोविपुरुषनतेकहई॥येदोऊनिलज्जबड़अहई॥ ॥
जोइमिहोतीनारिहमारी॥डरतेनुताहिजानतेमारी॥ ॥
एककहैअसदइउनकरई॥दुष्टनारिनरपालेपरई॥ ॥

दो॰ दुष्टभार्य्यामित्रसठउत्तरदायकभृत्यु॥
सर्पसहितगृहबासरिपुसबलसोजीवतमृत्यु॥

चौ॰ यहसबचरितभीमजबदेखा॥जनीचेरिनिश्चयकरिलेखा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नारिउनारिनाहि धविलायो॥कुरुक्षेत्रकेमाहिं गड़ायो॥ ॥
अप्रपुरहेछिपिचढ़ि तरुडारा॥आयेतहंतबबहुतसियारा॥
दो॰ नेहितेलीके अंगमबसूंघेपेकसियार॥
बोलामांस अशुद्ध है हमनहिकरब अहार॥
चौ॰ जोहमयाकोभक्षणकरिवे॥कोटिनवरषनरकमहँपरिवे
तबजंबुकसबपूछनलागे॥ है अशुद्ध केहि कारणपागे॥ ॥
सुनिजबुक तबउत्तरदीन्हा॥यहिकबहूंशुभकरमनकीन्हा
नारिहिकेडरडरतरहावा॥हरिगुरुजनपदशीशननावा॥
नेहितेशिर अशुद्ध है भाई॥जानिबूझि हमकेहि बिधिखाई
श्रुति अशुद्ध गुरुमंत्रनलीन्हेसि॥ह्वगमलीनजनदरशनकीन्हेसि
मुख अशुद्ध हरिनामनटेरेसि॥ गर अशुद्ध तुलसीनहिंगेरेसि
कर अशुद्ध कछु किहिसिनिदाना॥उर अशुद्ध दाडवतनठाना
उदर अशुद्ध प्रसादनखाइसि॥पग अशुद्ध तीरथनसिधाइसि
सुनिसियारसुतबोलताता॥कीन्हीतुम अशुद्ध सबगाता॥
हमैंलागिहै भूष अपारा॥कहौकाहि अबकरी अहारा॥
तबजंबुकसबसिसुनप्रबोधा॥आजुकेदिनसुतकरहुसमोधा
काल्हियुद्धहोई यहठांवै॥खायहुपलजितनामनभावै॥ ॥
चलिहैंअस्त्रसस्त्रबिधिनाना॥जुझिहैबड़ेबड़ेधर्मवाना॥
भक्षणकीन्हेजिनकरमासा॥होईहमहिं देवपुरबासा॥ ॥
सुनिसियारसुतबोलेबाना॥कोजीतीकोहारीताता॥ ॥
जंबुककहाजीतिहैंसोई॥अर्थमें ध्वजारोपिहैं जोई॥ ॥ ॥
लखिवहहसगुनभीमघरआये॥बलकनसहितसियारसिधाये
देखबहुनृपत्रियकेबसभयऊ॥डरिकरिरामभक्तिनजिदयऊ॥
जंबुकहू नहिखाइनिताही॥तैसीगतिनृपतुम्हरी आही॥
अतिअप्रकाजरानीतबकीन्हा॥भक्तिमाहिंबाधाकरिदीन्हा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कैकहाग्रबलाकरसोई॥नोहिसमानपतिनजोहोई॥
यहसुनिराजाबहुतलजाना॥मोथनाइअसबचनबखाना
सांचहुमैंनिजकीन्हअकाजू॥असप्रभुनामसुनावहुआजू
नारदकहातयारीकीजे॥तबतोरामसंत्र हमदीजे॥ ॥ ॥
यहसुनिनृपमंत्रीहकरावा॥भीतरबाहरभवनलिपावा॥
कुम्भपुराणसकलकरिदूरी॥नूतनकलसधरेजलपूरी॥
विप्रवैस्नवनसकलबोलाये॥गुरुमुखहोनजानिसबआये
भईभीरनृपद्वारअपारा॥बाजहिंतालमृदंगसितारा॥ ॥
गंन्धर्वकरहिंरामगुणगाना॥लखिसमाजभूपतिहरषाना
तबबोलेऋषिते करजोरी॥अबकाआयसुहोतबहोरी॥
कहनारदरानीढिगजावो॥ताकूंलेआयसुलेआवो॥ ॥ ॥
जोनमुदितमनआज्ञादेही॥लागेयोमारनतुरतेतेही॥ ॥

दो० भलेनाथकहिभूपतबगेरानीकेपास॥ ॥
बोलेआपसुदेहुअबहोईहरिकेदास॥ ॥

चौ०सुनिरानीअसबचनउचारा॥नृपहरिगाहैज्ञानतुम्हारा
हमतुमकाबहुबिधिसमुझावा॥तदपितुम्हारेमननहिंआवा
इतनासुनिनृपमारनलागा॥बोलीतुरतसहितअनुरागा॥
हेपतिमैंयहिबिधिपरकासा॥हमहूंतुमहोईहरिदासा॥ ॥
वैस्नवकंथअवेस्नवनारी॥ऊंटबेलकरजोतबिचारी॥ ॥
पुरकेलोगसुनतडरपाये॥गुरुदिक्षाहितसबचलिआये॥
तबनारदअतिकरुणाकीन्हा॥बाहुमूलरामायुधदीन्हा॥
ऊर्द्धपुराड्रपुनितिलककलगायो॥द्वादशमंत्रनसहितसोहायो
धर्योबहुरिहरिमिश्रितनामा॥पहिराईतुलसीकीदामा॥
तेहिपाछेकछुआहुतिकीन्हो॥राममंत्रमहिपालहिदीन्हो

दो० राममंत्रगुरुबदनतेजेहिउरकोप्रवेश॥

होत शुद्ध सो तुरत इमि कहत संहिता शेष ॥
सर्व मंत्र ते अधिक हैं वैष्णव मंत्र अशेष ॥
विष्णु मंत्रहू ते अधिक राम मंत्र बद वेद ॥
ब्रह्म हत्या गुरु तल्पगा स्वर्ण चौर मदिराप ॥
सर्वन्येव बिहंसि अथवा राम मंत्र को जाप ॥

चौ० जब हरि मंत्र सुना नृप काना ॥ पुनि आसन चढ़ि गये विमाना ॥
मुनि वाल्मीकि मंत्र सुनावा ॥ तेहि याके आवा सोइ पावा ॥ ॥
तब नृप हरिजन दीक्षा दीन्हा ॥ सब बिधि लोग सबन कर कीन्हा ॥
सो शोभा सुरपुर निज जाई । रही भक्ति सब पुर मा छाई ॥
जहँ तहँ होहिं चरित हरि केरे ॥ जपैं नाम सब साँझ सबेरे ॥ ॥
कहु नारद मैं देखौं जाई ॥ तब पुरि धन केसी गति पाई ॥ ॥
सुनि मुनि बचन नावेदा नृप कीन्हा ॥ तब सालौ गगरा कहि दीन्हा
नवधित रन है मोहि बलाये ॥ अस कहि ऋषि यमलोक हि आये
दूतन ते अस पूछा जाई ॥ नर्क कौ बैकित गये सिधाई ॥ ॥
सुनि दीन्हि निउत्तर यमदूता ॥ रामदास भा उनकर पूता ॥ ॥
तेहि लै बैकुंठ लोक पधारे ॥ छूछे धरे हैं नर्क हमारे ॥ ॥ ॥
सुनि नारद के भा सुख भारी ॥ आये चलि बैकुंठ मझारी ॥ ॥
बैठे रहे तहाँ यमराजा ॥ दूतन सहित आपने काजा ॥ ॥
जब मुनीश हरि पद शिर नावा ॥ तब प्रभु ऋषि ते बचन सुनावा
आये हैं रबिसुत फिरियादी ॥ कहैं कि हम बैठे हनुबादा ॥
नारद भक्ति दिढ़ाइ तुम्हारी ॥ खाली कीन्हि नि पुरी हमारी
जग महँ सब होइहैं तब दासा ॥ को आइहि फिरि हमरे पासा ॥
तेहि ते अब हम जावन लहवौं ॥ पापी सब आवत तेहिं जहवौं
केन लौ मैं इन का समुझावा ॥ तदपि न मानत मोर मनावा ॥
कहु नारद हम कीजै काहा ॥ जेहि हठि मानि जाइ यमनाहा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ऐसे धर्मराज तुम जाहू । जगमें भरमावो सब काहू ॥ ॥ ॥
जेहि ते रामभक्ति नशि सारे । आवहि कर्म सब लोक हमारे
के हुमान हम मन नहिं होई । कोटि उपाइ करहु किन कोई ॥ ॥
तुम चाहौ भरमावो जाई । हरिहू कहा भला है भाई ॥ ॥ ॥
जे होइहैं दृढ़ भक्ति हमारे । ते न हिं लगिहैं कहे तुम्हारे ॥ ॥
लगिहैं भक्ति मोरि नहिं कबहीं । सुनि चलि भे रबि के सुत तबहीं
आये भूप काश के ग्रामा । नाउत रूप बना एक नामा ॥ ॥ ॥
लागह लाखन दोउ कर शीशा । अपर बजावहिं बाजन बीसा ॥
कौतुक देखि लोग जुरि आये । साधनाइ अस बचन सुनाये
किमि होवै हमारि कुशलाला । देहु बताइ कृपा करि दाला ॥
बोला जो चाहौ कल्याना । तौ तुम सेवहु बीर मसाना ॥ ॥
पूजहु शक्ति भक्ति करि भारी । पावहु तुरत पुत्र धन नारी ॥
भैरों मरही का सेवो । अजया पुत्र महिष बलि देवो ॥
तुरत मन बाँछित फल पैहो । जेहि कोपि हैं तेहि तुरत नशैहो
क्षेत्रपालहि पूजहु कोई । तेहि के विघन न कबहूं होई ॥
थानहु पीरन में मन देहू । जिमि ते मन बाँछित फल लेहू ॥
महाबीर है शंकर देवा । मिलहिं न कछु फल इनकी सेवा ॥
इन बरि बड़ है जग माहीं । को आनहि फल मिले कि नाहीं
रामभक्ति जो बेद न गाई । सो तो है अतिशै दुखदाई ॥ ॥
जो नर हरि की भक्ति कमावै । सुत बित नारि तासु की नाशै
रोग शोग बहु भाँति सतावै । जहँ निकसै तहँ हँसी करावै ॥
यहि बिधि कष्ट सहै बहु काला । तब कबहूं हरि होइ दयाला
तेहि पर ताहू कछु नहिं देहीं । मूरख यहि मनकामन देहीं
सुनि सुनि कूसन की अस बानी । हरि से बिमुख भये बहु प्रानी
रामभक्त जे रहे सुजाना । तिन तन को बिश्वास न आना ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जेमतिमन्द विषैरसपागे ॥ तेप्रभुकातजि पूजनलागे ॥ ॥
बनितनकादेन्हेंउ इमि सीखा ॥ गलिन २ मिलि मांगहु भीखा ॥
लूटिबजारभक्तिकह पूजो ॥ मिटहिसकलदुखसुखनितहूजो ॥
काहु इयंत्रमंत्र सिखराये ॥ काहु भूत च ढाइ कुडाये ॥
काहु दिहिनिसुतासुतनाती ॥ काहु दीन्हिनिधनबहुभांती ॥
एकहु बालकबहुंफुरहोई ॥ सकलसत्यकरिमानहिंसोई ॥

दो० यहिबिधिजगभरमाइकैगेयमपुरयमदूत ॥
सोईरीतिसंसारमें ऽप्रजहूंहैकहसूत ॥ ॥

छन्द कहसूतऽप्रजहूं रीतिसोइरहीजगमेंछाइके ॥ सबमा-
निनरसबकारतजेहितपरतऽप्रघमेंऽप्राइके ॥ मतिधीरजेग-
म्भीरजननिभूटमनमेंजानिकै ॥ तजिभर्मनानाधर्महरिकी-
शरनभेसुखमानिकै ॥

दो० रामभक्तिदृढ़करनहितहरनभर्मतमरूप ॥
बरणीजनरघुनाथतेहिइहइतिहासऽप्रनूप ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतऽप्रागरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसने-
हीकृतराजाकामकथावर्णनोनामपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ॥
भक्तिरत्नमतकहौंकछुपालोजलजुबखानि ॥
कहासोनककेबोधाभगतिकहौयोगयुतमोहिं ॥
जोप्रसराधीप्ररषिकासतेसोइसुनावोंतोहिं ॥

चौ० भाजबशिषिनारदकरराजा ॥ बोलातबहितसहितसमाज ॥
नाथभयेसबशरणासुखारी ॥ बिनगुरुहोतनदृढ़ताभारी ॥
जिमिशिशुग्रंथदूधबिनपीहें ॥ मैंरनभैरैछीनतालीन्हें ॥ ॥
कहनारदसुनुशुभप्रसंगा ॥ हैहरिभक्तिकेरनवऽप्रंगा ॥ ॥

दो० प्रावणकीर्तनस्मरणपदसेवनऽप्ररचन्य ॥

बंदनदास्यसख्यात्मनयवेदननवेयगन्य ॥

चौ० दशईप्रेमलक्षणाजानो ॥ पृथक् अप्रसतकलबखानो
जोहरिकथासुनेमनलाई ॥ तासुश्रवण मगाहरिउर आई ॥
बसिपंकज अघनाशैकैसे ॥ सरदकालजलमलहैजैसे ॥
बिरईबिरतबिमुक्तउमाहीं ॥ हरिगुणसुननसवनकहंचाहीं
बीतरागहरिचरितकोभा ॥ हैकरिकोइकिलहैंकहुंशोभा
अजगिरिसयोगेश्वरआदी ॥ अपरभयेजेमुनिश्रुतिबादी ॥
रामचरितसुनिकोउनछकंदा ॥ श्रवनसचैतेहिजानहुमंदा ॥
जोनरहरिगुणसुनेनकाना ॥ सोखरऊंटकोलसमरवाना ॥
भयोनिरादरभाजनभारी ॥ तेहितेस्वानकहोनिरधारी ॥
असदवानबहुविधिकेपरना ॥ चरलऊंटसमतालिबरना ॥
वहेभारग्रहकोदिनराती ॥ तेहितेखरसमकहोंकुजाती
अमितअनन्दकथाकेमाहीं ॥ अघरासमेतसुनेकोनाहीं

दो० प्रवरावत्रिकहंससुकमीनमच्छिकावयल ॥
श्रोताद्वादशभांतिकेमधुवृकतमचुरसयल्ल ॥

चौ० द्वादशमेंषटउत्तमजानो ॥ अपरअधमअवदोषबखानो
अन्यमानदृगलोभअधीरा ॥ पदक्षेदकअसमञ्जशरीरा ॥
बादरसिकनिद्रावससानी ॥ बिनबिस्वासअहितअज्ञानी
रुद्रदोषबिनश्रोताहोई ॥ चरितामृततबपावैसोई ॥ ॥
तातेभूपदोषतजिसारे ॥ सुनोकथाहरिकीनिरधारे ॥ ॥

दो० कथाप्रीतिते सफलहै मोक्षहेतुकोकर्म ॥
कथारहितजोकृतकरैसोकेवलपपसर्म ॥

चौ० अवणपरीक्षितभलकरिजाना ॥ श्रवसुनुकीर्तनभक्तिसुजाना
प्रभुकेजन्मकर्मबहुतेरे ॥ मंगलप्रदजेअहैं घनेरे ॥ ॥ ॥
लज्जारहिततिन्हेंजोगावै ॥ सोनिश्चयअभिमतफलपावै

नारदादिऋषिजहँलगुरहेऊ।।मनुहरिहरिगुणसबहिनकहेऊ
रामचरित्रवरणयोसोइवानी।।शुभगसत्यसुचिमंगलखानी
हरिबिनविषमबादिसबधंधा।।इमिषिप्रोक्तद्वादशस्कंधा
वक्तापांचप्रकृतिकेजाना।।रविशशिउडुमणिदीपसमाना
वक्ताहूमेंदोइकहोहीं।।तजिविषयगसुनावेंनोहीं।। ।। ।।
पक्षपातधनचाहअधीना।।श्रोतानहिंसमुझेपरवीना।।
प्रश्नकरेंतेहिउत्तरनदेवे।।सारवस्तुसुनिसकेनलेवे।। ।।
मूर्तिऔधिकेवचनउचारे।।मूरखसोऐसेउरधारे।। ।। ।।
प्रेमप्रतीतप्रीतिबिनतोषा।।पूछतबारबारअतिरोषा।। ।।
बहुतपापश्रोताजबकरहीं।।तबऐसेवक्ताशिरपरहीं।। ।।

दो० यदिगुणिवेदपुराणहरिभक्तिनकीन्होंसार।।
ज्योंपशुचन्दनभारधरिभरमतजेहिंतेहिंद्वार।।

## श्लोकआदिपुराणे

यथाखरंचन्दनभारवाहीभारस्यवेत्तानतुचन्दनस्य।।
तथाचविप्राःश्रुतिशास्त्रयुक्तामद्भक्तिहीनाःखरवद्वहन्ति

दो० ज्योंविधवाकेशीशमेंसोहेनहिंसेंदूर।। ।।
गुणचतुराईरामबिनत्योंहींजानोकूर।।
गावेंविधवाअपनकहिबनरादुलहिनकेर।।
पतिसुखलहैनस्वप्नहूतिमिहरिजनबिनभेद।।
विद्यागोधनवेदचहुंभक्तिरूपजनभक्ष।।
पावेंकरतावेतनुजलहैकिसनबिनअक्ष।।
तेहितेरसिकअनन्यहैकहैंरामगुणग्राम।।
तबपावेंशोभायथावनितचन्द्रनिशियाम।।

चौ० कीर्तनशुकमुनिभलकरजाना।।ध्रुवसुतसुमिरनभक्तिसुजाना
श्रीपतिकोसुमिरनजोकरई।।गोपदइवसोभवनिधितरई

गणिकाग्रमनगयन्दअजामिल॥कीरआदिकबिकटउधेरेतिल
बिषइनिभँजेबिषयकोपावै॥रामैसुमिरिरामढिगजावै॥ ॥
बिधिहरिहरगणपतिअहिराई॥सुमिरनतेपाईप्रभुताई ॥
हरिसुमिरनसबसुखकोमूला।हरिसुमिरेनाशैसबसूला॥
हरिसुमिरनकीजेजिमिगाई॥चरतफिरतसिसुबिसरिनजाई
हरिसुमिरनकीजेजिमिकामी॥तजिहियहोननारिअनुगामी
हरिसुमिरनकीजेजिमिलोभी॥निसुदिनरहेद्रव्यहितछोभी
हरिसुमिरनकीजेजिमिचातृक॥गनेनहानिलाभनिजपातृक
रामनामजिनसुमिरनकीन्हों॥तिनजनुसकलधर्मकरिलीन्हों
रामनामजिनहिरदेधारा॥तिनकाकहाकरैसंसारा॥ ॥
रामनामकरसुमिरनसाँचा॥जे हियँचेजगहोइअपाँचा॥
बहुतजन्मकीपुण्यबिहीना॥रामनामसुखजातनलीन्हा
हँसीतेजोनाउउचारै॥पावकसमअघतूलहिजारै॥
शत्रुभावकरिजोकोइध्यावै। सोऊहोइमुक्तश्रुतिगावै॥॥

दो॰ भृङ्गीभयतेकीटज्योंहोतभृङ्गतनअंत॥
तैसेअरिअघत्यागिबपुधरतरूपभगवंत॥
रामनामकेबीचमेंमनकाहेइमिलाइ॥ ॥
करिहरिसमरघुनाथसोंसहजमाहिंकुटिजाइ॥
कलिकेकलुषीनरननहिंआनधर्मअधिकार॥
रामनामइतिवर्णयुगजपिहैंहैंभवपार॥
तेबडभागीजीवजेकलियुगमेंहरिनाम॥
सुमिरेंसुमिरावैंसुखदसकलकृतारथधाम॥
पापदहनहरिनामसेंइतनीशक्तीआहि॥
जितनीपापीनरनकोपापकरनकीनाहिं॥
चंडालीजोरामइतिरसनाकैरबखान॥

तासंगयोंदियेबोलियेमोहिंश्रुतिपरिमान॥
यथाराउलरामेंलिवाचंदद्त्तेन॥ ॥ ॥
सहसंवसेतेनसहसंदेतेनसहसंभुंजीयात्॥
दो॰ रामनामकलिकामतरुकहतसकलश्रुतिसाध॥
लहैंकामफलजोधरैउरतजिदशअपराध॥
सो॰ दशअपराधमेंकोन।नाथकृपाकरिबोलिये॥
सुनोकहौंमयलीन।सनकसंहितामाहिंजस॥
कुण्डलिया गुरुअवज्ञाएकहरिजनहरिनिंदापाप।
गनैब्रह्ममेंभेदश्रुतिकैनामबलपाप॥कैनामबलपापन-
मपरतापनजानै।बिनश्रधाउपदेशदेविश्रुतिशास्त्रमा-
नै॥मानैदीनरघुनाथअंजैनिजइन्द्रीकट्टुउर।येदशनजि
अपराधजोपैलखनामकलेंगुर॥
दो॰ तेहितेतुमहूँहोयसजिजपहुनामनिरशंक॥
ब्रह्मलोकसुखनहिंरुचैऔरकहाननृपरंक॥
सहितदोषनिर्दोषहूरामनामजोलेइ॥
तबहूंताकोभाग्यकोकोअसउपमादेइ॥
चौ॰ सुमिरनभलेकीनप्रहलादा॥अबसुनुसेवनभक्तिसवाद
सेवनभक्तिकीनश्रीनीके॥तेहितेलछीविशदउरपीके॥
दो॰ देवयक्षगन्धर्वनरअसुरइतरकोइहोइ॥
जोसेवैहरिपदकमलसदसुखपावैसोइ॥
हरिपदसेवनबिनमनुजजहाँचलिजात॥
तहाँतहाँभयसुनतरहतरजुनछाड़ततात॥
चौ॰ तेहितेरामचरननितसेवो।अर्चनभक्ति कहौंसुनिलेवो
परमानन्ददानिहरिपूजा॥इहितेसुगमउपाइनदूजा॥ ॥
केवलहरिअर्चनकेकीन्हे॥लहततोषसुसकलप्रवीने

जिमि सींचे जर सब तरु तोषै ॥ हरित न होइ पात जो पोषै ॥ ॥
मुखते असन प्रान हीं खावैं ॥ सब इन्द्री तिरिपित ह्वै जावैं
प्रभु आनन्द सिंधु सुख धामा ॥ करुणाकर परि पूरन कामा ॥
सो निज पूजा चहैं न कबहीं ॥ निज कल्याण हेत करै सबहीं
हरिहि पूजि पूजित ह्वै येहू ॥ पावै सुख संपति निज गेहू ॥
ज्यों निज मुख तिलकादि लगावै ॥ सोइ दरपन प्रति बिम्ब सोहावै
श्रीपति मान दिहे बिन धानी ॥ लहे न कतहुं मान अज्ञानी ।
प्रभु कर मान करै नर जबहीं ॥ हरिहु ताहि सन मानत तबहीं ।
प्रभु आदरयो धन्य नर सोई ॥ तेहि सम बड़ भागी नहिं कोई
शङ्कर देव मुनि ताहि सराहैं ॥ चरण रेनु तेहि पावन चाहैं ।
ऐसी है हरि पूजन ताता ॥ पुनि पैसर्ह केरि नहिं बाता ॥ ॥
दंभ सहित मद दुष्ट धनादी ॥ करहिं यतन सो श्रम सब बादी
जल अंकुर दल दूब चढावै ॥ बिन मद सो उत्तम गति पावै

दो० माटि दारु हरि चित्र पवि पुरट मनोमय रत्न ॥
ये प्रभु प्रतिमा आठ विधि पूजे जन करि यत्न ॥

तोटक छं० हरि पूजन षोड़श भांति कही । प्रथमै आवाहन कीन चही ॥ पुनि आसन पाद्य र्घाचमनं । अस नान पटा हुति सूत्र तनं ॥ सुचि चन्दन पुष्प सुधूप दिपं । नैवेद तंबूल बिने प्रधिपं ॥ पर दक्षिण षोड़श भांति इयं । चरणामृत नामत कोटि बियं ॥

दो० जल दल चन्दन चक्र दर बुंद शिला हरि ताव ॥
अष्ट बस्तु मिलि होत हे चरणामृत सुख दाव ॥
फल चरणोदक लिहे कर कहुँ तर्क करौं बखान ॥
भूमि परे पातक तथा अब सुनु दीप विधान ॥
चारि चरन युग देश कटि मुख मंडल इकबार ॥

सप्त चक्र सर बांग पर इमि आरती उतारि ॥
श्री हरि पूजा अमित फल परम पुराण सुखदानि ॥
ताते संतत कीजिये प्रीति सहित हित मानि ॥
अबसुनु दूसरि विधि कहौं जाहि करत सनकादि॥
अग जग रूप अनूप हरि आसन देइ अनादि ॥
पाद पुष्पता अरघ अपि सुचि सनेह अस्नान ॥
बसन विरख मख सूत्र गुण चित चन्दन स्त्रिकज्ञान॥
धूप बासना दीप निज बोध हरै अविवेक ॥
अशुभा शुभ तूलास धृत गोवर्तिका अनेक ॥
बिरति बन्हि करि अर्पिये विविधि भाव नैवेद ॥
प्रेम तांबूल सुगंध पन पाइ मिटत भव भेद ॥
सदन सत्य पर्य्यंक पर रामहिं शयन कराइ ॥
क्षमा दया परचारिका तत्र सुदेइ लगाइ ॥
यहि विधि जो पूजन करे हरै सकल संताप ॥
निर बरती की रीति यह केवल हरि का जाप ॥

चौ॰ पूजन भले कीन्हि पृथुराजा ॥ पूरब पश्चिम सनक समाजा ॥
कहई बंदन शक्ति अनूपा ॥ प्रभु बंदन सबका सुख रूपा ॥ ॥ ॥
बंदन करे जोरि कर जबहीं ॥ मंगल सो नर पावत तबहीं ॥ ॥ ॥
सकल जीव हरि सन्मुख आवे ॥ मन बच क्र म करि शीश नवावें ॥
सो हरि धाम मोक्ष सुख लहई ॥ इमि भागवत माहिं विधि कहई ॥
सुकृत प्रनाम प्रभुइ कर कोई ॥ तेहि सम दश अश्वमेध न होई ॥
दश अश्वमेधी पुनि जग आवे ॥ कृष्ण प्रनामी बहुरि न आवे ॥ ॥
मग खसि गिरे बिथा बश परई ॥ विवश नाम हरि बंदन करई ॥ ॥
तासु महा अघ संचित नाशे ॥ प्रीति सहित फल कौन प्रकाशै ॥
बंदनि कीनि दान पति आछे ॥ [illegible] भये बहु आगे पाछे ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० हरि प्रनाम महिमा अमित को करि सकै बखान ॥
तेहि तें बंदन राम की करहु मानि कल्यान ॥ ॥

चौ० सतयें भक्ति दास्य अस नामा ॥ दास भाव ह्वै सेवै रामा ॥ ॥ ॥
जासु नाम सुमिरत अघ जरई ॥ जासु चरण जल भव रुज हरई ॥
जासु कटाक्ष चहै बिधि ईशा ॥ भजै जाहि सनकादि मुनीशा ॥
तेहि प्रभु केर दास जब भयऊ ॥ कौन कर्म बाकी रहि गयऊ ॥ ॥
तिनका कछु न चाही कबहीं ॥ दास भये पुर स्वारथ सबहीं ॥ ॥
दास भाव बिन जरनि न जाई ॥ इमि दुर्बासा कह्यो बुझाई ॥ ॥ ॥
जो जावत हरि जन नहिं तावत ॥ सुकृत सुधन रागादि चोरावत ॥
दास भये धन हरत जेते ॥ लगहिं भक्ति साधन महँ तेते ॥ ॥ ॥
भगवत होत सकल ब्यौपारा ॥ होत सुखद सुचि मिटत बिकारा ॥
दास सरिस प्रिय प्रभु नुन कोई ॥ रघुपति तिलक साँझ हम जोई ॥
बैठे जहँ सब सब बिधि चीन्हा ॥ तिलक दास हनु माने दीन्हा ॥

दो० काय बचन मन कर्म करि सो अर्पै भगवान ॥
बिधि निषेध नहिं ताय बश दास भाव सो जान ॥
नारायण को दास जो भयो न लहि वर वृत्ति ॥
जियत सो सब सम कहत इमि पाराशर अस स्मृत्ति ॥

चौ० अष्टम भक्ति सखत्व कहावै ॥ रघुपति सखा परम सुख पावै ॥
नंद गोपि का अरु ब्रज बासी ॥ भये मित्रता करि सुख रासी ॥ ॥ ॥
निशिचर पति सुग्रीव निषादा ॥ भये सखा करि सहित बिषादा ॥
अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहे ॥ राम सखा सुखते सुख लाहे ॥ ॥
अपर सखा कोउ जाइ बिदेशा ॥ तेहि बियोग दुख होइ अँदेशा ॥
अंतर यामी राम कृपाला ॥ निकट रहत सन्तत सब काला ॥ ॥
अपर मित्र में अस गुण नाहीं ॥ जस गुण है रघुनन्दन माहीं ॥ ॥
तहि ते सब सुख तुच्छ बिचारी ॥ श्याम सुंदर ते कीजे यारी ॥ १।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन मलीन पूरब कृत दोषा ॥ पुनि तामें डारत करि रोषा ॥ ॥ ॥
ताते मन स्रुति पुनि पुनि लहई ॥ किमि उद्धार होइ स्रुति कहई ॥
जिमि कोइ फेनु पकरि नद बहेऊ ॥ किमि उतरे फिरि फेनुइ गहेऊ ॥
तासु हेत बोहित सुख धामा ॥ सकल बिघ्न दायक बिश्रामा ॥
जब लग तिन में प्रीति न करई ॥ तब लग कर्म सिंधु नहिं तरई ॥

दो० प्रभु पद प्रीति सोहात ही मिटत त्रिविधि दुख दोष ।
सकल सुसाधन केर फल यत्तने करिय न मोष ॥

चौ० नवईं भक्ति सुनो मोहिं पाहीं ॥ आतम अर्पन सम कोइ नाहीं ॥
जो निज देहा दिक प्रभु पासा ॥ करै समर्पन तजि सब आसा ॥ ॥
सो निह चिन्त रहत सब काला ॥ तासु फिकिरि प्रभु करत कृपाला ॥
जिमि कोइ वृषभ अश्व निज बेचै ॥ तासु यत्न हित रहत निशोचै ॥
राम मया भाजन सो अहई ॥ हरि ऐश्वर्य प्रोक्ष ते लहई ॥ ॥ ॥
तर्क शास्त्र अरु नय बिधि चारी ॥ अहे जीव कहं सब सुख कारी ।
ते सब निगम नीति अनु कूला ॥ करैं भली विधि नहिं प्रति कूला ॥
परम पुरुष श्री पति गुण सागर ॥ अन्तर यामी राम उजागर ॥ ॥ ॥
तिन का आतम करे निवेदन ॥ तो सब सोच जानिये खेदन ॥ ॥
तन मन हरि हिहि अर्पन कीना ॥ तो धर्मा दिक फल पर बीना ॥
गुणातीत सोइ अहे विवेकी ॥ नृप बलि केरि टेक निज टेकी ॥

दो० तेहि ते सर्वसु अर्पि के निर्भय हरि गुण गाव ॥
आखिर इक दिन छूटि है अब सुनु शरण प्रभाव ॥
देव पितर ऋषि भूत कर ऋणी अहे सब कोइ ॥
हवन श्राद्ध अध्ययन बलि कर नित तब शुच होय ॥
नाहित सब बिधि कर्म तजि गहै शरण हरि केरि ॥
तब छूटै ऋण पाप कोइ तेहि तन सकै न हेरि ॥
अथवा ऋण दीन्हे बिना रहै ब्योहर आधीन ॥

सो नर इमि दिन भरै जिमि चरणी धनिक बस दीन॥
याते कृष्ण कृपाल के युगपद सब सुख खानि॥
परम कृपा लै जानि के शरण गहो प्रण ठानि॥

चौ० जे नर राम चरण सुख कारी॥ शरणि गहो जब दृढ़ व्रत धारी॥
प्रबल काल तेहि लखि इमि कहई॥ यह अब हमरे बश नहिं अहई॥

दो० देखो सुर नर असुर अहि किन्नर खग गंधर्व॥
काल कलेवा ह्वै रहे ब्रह्मा दिक जग सर्व॥
बचत न कोई काल ते जहँ तक आवत दृष्ट॥
करत ग्रास बड़ वागिन ज्यों यों कह योग बशिष्ठ॥
ऐसो काल कराल सो डरत जासु दिशि देखि॥
जे हरि शरणागत गहे ते शठ सम पशु के लेखि॥
प्रेम लच्छना प्रेम करि रहत न देह संभार॥
दृष्ण धा भक्ति कहा बसो यह सब ते अधिकार॥
दृष्ण भक्तिन मह एक हू जिन राखी उर धारि॥
सोइ बल्लभ श्री राम कहँ कहा पुरुष कहँ नारि॥
सान्त दास अरु शिष्य ता पुनि वात्सल्य सिंगारि॥
जल महि मरु मुक नभ सुये भक्ति पंच रस सार॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
कहे भक्ति के अङ्ग सब सुख प्रद जन रघुनाथ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास-
राम सनेही कृत नौधा भक्ति वर्णनो नाम षष्ठ चत्वारिंशो ऽध्यायः॥४६॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
योग शास्त्र मत कहौं कछु हंसो पलि सद जानि॥

चौ० बोले भूप बहुत सुख पाई॥ बिन गुरु को सद पंथ बताई॥ ॥
पांताञ्जलि शास्त्र के माहीं॥ कहौ योग किमि सो मोहिं पाहीं॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह मुनि भले सुनो मनु लाई ॥ सघन सलकरि कहौं बुझाई ॥

दो॰ आठ अङ्ग हैं योग के यम नेमासन साधि ॥
प्राणायाम प्रत्याहार अरु धारणा ध्यान समाधि ॥

## प्रथम यम अंग

सत्य अहिंसा धुराय धृत क्षमा अचाह असङ्ग ॥
ब्रह्मचर्य निर भै भवन गुणा भुक थिर अङ्ग ॥

## द्वितीय नेम अंग

शौच धर्म जप तप आतिथि हरि गुरु सेव संतोष ॥
सोम तीर्थ उपकार पर निर्छल नेम अदोष ॥

## तृतीय आसन अंग

चौरासी आसन कहे तिनमा उभै विशाल ॥
एक पदुम द्वग शुद्ध मनि सेला धैशाथिसाल ॥

## चतुर्थ प्राणायाम अंग

चतुरथ प्राणामे करै षट चक्कर को सोधि ॥
एक अधार स्वाधिस्थान पुनि मनि पूरक को बोधि ॥
चौथा अनहद चक्र कहि पचवा नाम विशुद्ध ॥
छठवा आज्ञा समुझि कै जपै मंत्र शुद्ध ॥
पूरक में षोड़श जपै कुंभक में चौसठ्ठि ॥
रेचक में बत्तिस कहे हरे हरे जनि हट्ठि ॥
ज्यों ज्यों ठहरै पवन उर त्यों त्यों मंत्र बढ़ाय ॥
कुम्भक आठ प्रकार की सुनो कहों अवगाय ॥
प्रथमे सूरज भेदनी पूरे पिंगल बात ॥ ॥
रेचै बांये रोंकि कफ हरै वायु रुज गात ॥
उभै उज्जाई पवन की पूरि धरै उर माहिं ॥
ईड़ा तेरेचन करै कफ रुज्ज ले धर जाहिं ॥

तीसरि सीत जो कारणी पेय ध्यान ते पौन ॥
पीपी काहि मुख ते तजै भजै क्षुधातिर पौन ॥
चौथि सीतली पूरई जीह वदन ते प्रान ॥
रोकि नेवारै नाक तेहि करै बुद्ध ते ज्वान ॥
पचई भास्त्रिक स्वास ते भरै तजै अति शिघ्र ॥
पके करै रवि भाथि यहारि मिटै त्रिविध ज्वर विघ्न ॥
छठी भ्रामरी अंग धुनि भरै स्वास ते वाइ ॥
रेचै ताही शब्द ते मन चंचल रहु राइ ॥
सतईं मूर्छी नाम को सुमिरै सास उसांस ॥
प्रभुइ मिलावै दुख हरै करै पेट दुख नाश ॥
अठई केवल जो कही ग्रंथमें मंत्र गनाय ॥
सो कुम्भक नो सिद्ध है जिमि मनु बन में राय ॥

## पंचम प्रत्याहार अंग

पंचमा प्रत्याहार जो विषै वोर मनु जाइ ॥
घेरि लगावै ध्यान में ज्यों निज सुत को माइ ॥
तब अपावुइ वस होइ है जिमि बालक आकर भूत ॥
तदपि सजग रहिये सदा रिपु सम जानि कपूत ॥

## षष्ठ धारणा अंग

षष्ठम धारै धारणा पाँचो तत्वन केर ॥
प्रथमे गुरु गोविन्द की आशा पवन हिय हेरि ॥
काल ज्ञान तेहि लखै जो दरशायो विविध प्रकार ॥
वसु चक्र छाया पुरुष दीप गंधि ध्रुवतार ॥
मू अरिष्टि लौं हित जपै छाया अलख हित सात ॥
नासिका लौं चित पैन दिन रक्त मल सुख वास ॥
प्रभय विविध प्रकार की है सुरही में लेरिव

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो सब समुझा चहै तो लेइ सरोदै हेरि ॥

## सप्तम ध्यान अंग

सतवां अंग है ध्यान का सोउ चारि बिधि मीत ॥
पदस्थ पिण्डस्थ रु रूपस्थ चौथा रूप अतीत ॥
पदस्थ सो जो श्री राम के चरण कमल उर लेइ ॥
नख शिख लौं छबि निरखि पुनि पायन में मनु देइ ॥
करते करते ध्यान यह हरि को आपत्ति होइ ॥
की कुम्भक करि प्रणव युत जापत पावै सोइ ॥
दूजा ध्यान पिण्डस्थ है सोधै पिण्ड सरोज ॥
भ्रमर गुफा चढ़ि युक्ति ते चवली कोल है खोज ॥
रूप स्थ ध्यान तीसर सदा चितवै भृकुटी ओर ॥
लखै जोति उडमाल शशि रवि प्रकाश सब ठौर ॥
चौथा रूपातीत सो ध्यान शून्य का होय ॥
करत शून्य है आपहू रहै न भव रुज कोय ॥

## अष्टम समाधि अंग

अठवां किह समाधि के आपा जात नसाइ ॥
ध्याता ध्यान जु एक है मिलै तुरी में जाइ ॥
अष्टांग योग जो मैं कहो सो तुम समुझो तात ॥
अब सुनु जो षट करम में प्रथमै कीन्हे जात ॥
प्रथम मैं नेती नाक ते डारि दै है मुख ओर ॥
दूजा धोती झीन पट निगलि निकारै कोर ॥
तीजा बस्ती गुदा ते नीर खैंचि तजि देइ ॥
चौथा गज जल युक्ति युत रोचि उदर भरि देइ ॥
पचवां न्यौली कर्म ते न लै बिलो इ जाहि ॥
छठवां त्राटक दृग न की पलक लगावै नाहि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अब सुनु मुद्रा पंच विधि प्रथम खेचरी होय॥
मुख में तासु निवास है नइ वे जीभ विलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास॥ ॥
प्राण अपान जुदी जुदी करि दैवे यक पास॥
तीजी मुद्रा चाचरी बसै हगन बिच सोपि॥
नासा आगे दृष्टि धरि हेरैवे अवरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी करत श्रवण में बास॥
ज्ञान सुरति एक होत है अनहद शब्द प्रकास॥
पचई मुद्रा उन मुनी बसै सो दशयें द्वार॥
पावै सिद्ध समाधि तहँ होइ वासना छार॥
बंधन चारि प्रकार सुनु महा बंध पुनि मूल॥
जालंधर उड्डान चहुं हरै हृदय की भूल॥
योग क्रिया रघुनाथ सब बरणी मति अनुसारि॥
गुरु बिन सधन न समुझि तेहि कीन्ह्यों नहिं विस्तार॥
योग तपस्या कि किहि मिलै ऋद्धि अरु सिद्धि॥
तिन में बहैन चतुर सोइ अब सुनि तिनकी रद्धि॥
प्रथमें अनिमा लघु करै दूसरि महिमा मोद॥
तीसरि लघिमा तूल सम गरिमा करै बड़ोद॥
पचई प्रापति चहै जहाँ फिरि आवै अति हाल॥
छठी अकाम सुख पुरवै सत्तई ईसता जाल॥
बसीकरन सिधि आठवीं करै चहै तेहि बस्स॥
राम भजन बिन बादि अब सुन यक कम निधि दस्स॥
महा पद्म अरु पद्म पुनि कच्छप मकर मुकुन्द॥
शङ्ख खर्ब नीला ठये नवई निधि शुकुन्द॥
रिधि सिधि भई तो क्या भयो जो न भज्यो रघुवीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

खगबहुउडुनअकाशमेंकूपिबहुनांवतनीर ॥
लोकरिझायेहानिबडिलाभतुच्छसनमान ॥
वाहवाहकहिभाडकेसर्पडसनगेग्रान ॥
तेहितेंबोधिकोजियेहरिकोसुमिरनसार ॥
सत्यअमितिनाथफिरिकहौंसहितविस्तार ॥

चौबोलाछं० सुनुसुमिरनकीबातकहौंअबलोहिरे । जेहि-
लेइन्द्रिनसोंहलअचलमनहोहिरे ॥ षटमासनकोकरेनतो-
सिधजानिके । मेरुदण्डसमराखिचिबुकउरआनिके ॥ ना-
सापरकरिदृष्टिलिकुटीटामको । सुमिरेसांसउसासरामही
नामको ॥ रटतामिलैमिठासअभ्यासआगेधरै । अगिनफूलसे
प्रथमसुरहलागतझरै ॥ कछुदिनमेंलखिपरैदीपकीजोति
जू । पुनितारनकीमाहंबिंदुदातिहोतिजू ॥ सनदूरसनइरसो
मसूरबहुदेखई । सहसकमलपरपरमआतमाहिंपेखई ॥
बड़ोबिरहकोलायधायसुखरामही ॥ झिलमिलझिलमिल
जगततेजमेंभाषही । ज्यौंजलनिधिमेंबूड़िवलोकेमाहिजू ।
दशादिशदरशैजलैऔरकछुनाहिंजू ॥ बाजेअनहदनाद
तहांदशभांतिजो । बरनौंतिनकीरीतिरहानिहैजातजो ॥ प्रथ-
मभंवरगुञ्जारअङ्गपुलकावई । पुनिसुनिनेफरनादसुअ-
लसआवई ॥ तीसरेधुनिसुनिशङ्खप्रेमपीड़ाजगै । चौंदेअ-
मलसुनिघंटशीसघूमनलगै ॥ पंचमबावाजततालअमी
बरसावही । षष्ठममुरलितजिकपाटतेरेसोइपावही ॥ सप्त-
मभरीसुनतबदेछविमरकी । अन्तरयामीहोयलखैगतिदू-
रकी ॥ अष्टमअबकनिमृदङ्गनादअनहदसुनै । अपरलजा-
नैकोइकालयहांलहैगुनै ॥ नवमनफीरीसुनतअगोचरहो-
यजू । चहेंतहांचलिजायनदेखैकोयजू ॥ पुनिहोवैअस्थूल-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रुपासबदेवकी। दसईकेहरिनादसुनतअहमेवकी।। गांठि-
कठिनखुलिजायहोयसोब्रह्मही। सतचितआनन्दरूपमि-
टैसबकर्मही।। जिमिहिमिमालिमिलिउदधिकहावैउदधि
ही। होयबन्हिसंगबन्हिदहतजोसंगही।। करैसदायहध्यान
बैठिएकांतमें। अल्पअमलअनुरक्तरहैरसशांतमें।।
नाहितनिजपगमानिमूंदिनवद्वारको। सुनैसुरतितेशब्दअ-
नेकप्रकारको।। भाषतजनरघुनाथसनेहीरामके।। भयेय-
हीकरिसन्तनिवासीधामके।। जोचाहैहरिभक्तिभजैश्रवना-
रसों।। करैध्यानसबअङ्गसमुझिगुरुद्वारसों।। जपैइष्टकोनाम
प्रेममनठानिके। सदासर्वगतईशसर्वकोजानिके।। सुंदरश्या-
मस्वरूपहृदयउरआवहीं। ब्रह्मलोककासुखननवहैहियभा-
वही।। अन्तभावनासरिसलहैभगवन्तको। प्रभुलोकप्रभु
श्रुतिप्रसिधालकसंतको।। अलपइष्टकोअलपभूरिको-
भूरिहै। चाहवन्तकोनिकटचाहबिनदूरिहै।। कहतउपनिष-
दवेदसोईसोधारहै। जोजनकरणीकैकरनिहीसारहै।। क-
रनीहीहैकरडुकरनीहीसिद्धिहै। बिनकरनीनहिंहोतकिसी-
कीवृद्धिहै।। तातेजनरघुनाथसुकरनीकीजिये। असनवि-
नानहिहोततृपितसुनिलीजिये।।

दो० सिफतकेरैकोखांडकीधरैनमुखअभिराम।।
लहैस्वादरघुनाथकिमितिमिसुमिरनबिननाम।।
हरिसुमिरनकीन्हेंनहींकैसेसुखसरसाय।।
हरदीजरदीतबचढ़ैजबमरदीमलजाय।।
सुमिरनबिनजानेकहाकोउहरिनामप्रभाव।।
जिमिमानिककेमोलकोमानिकपरखैपाव।।
कुटिलकुनधनीकूरतेरामतत्त्वजनिगाय।।

अंधेकरहीतापरीदेईदूरिचलाइ ॥ ॥ ॥
रामतत्वगुरुभक्तसेकहियेज्ञानिकृतज्ञ
पदिकपारखीसेइगोहोइनकैसोंकज्ञ
वेदरुशास्त्रपुराणकरकहौंजोव्यापकमत्व॥
अबसुनुभाषौंस्वल्पमेंतिनमत्रहिनकोतत्व॥

कुण्डलिया चारिवेदके अंगषट शास्त्रसुनव्याकर्ण। शिक्षाज्योतिषछंदविधिपुनिनिरुक्त निजवर्ण॥पुनिनिरुक्तनिजवर्णवेदकेषटुउपवेदा।रिगुकाआउरतस्यचिकित्साशास्त्रअरेषदा॥यजुर्वेदकाधनुर्वेदतसुद्धशास्त्रकहि॥सामकेरगंधर्वतस्यसंगीतशास्त्रसहि।सहीअथर्वणाकोअरथसिल्पशास्त्रसुनधारि।अपरमिमांसाआदिहैहैंषटशास्त्रविचारि॥

चरयटछंद॰ तत्वमसीकंहैसामवेद।ब्रह्मजीवहैप्रकृतिभेद॥प्रज्ञानान्दरिगुवेदवयन।शीवस्वयंआनन्दअयन॥ब्रह्मअस्मिपदयजुरभाषि।चेतनसबमेंहैभरलसाषि॥अंआतमाअथर्वनआहि।सोईसबकोइभरतचाहि॥सकलवाक्यकोयहीअर्थ।ब्रह्मजीवमायाअनर्थ॥अबसुशास्त्रमतसुनुसुजान।जेहिविधिसुनियतकरतगान॥

दो॰ प्रथममिमांसाशास्त्रकेजैमिनिमुनिआचार्य॥
धर्मविधैरसुनाथअनिस्वर्गादिकफलकार्य॥
इतियेवैशेषिकशास्त्रतस्याचार्यकनाद॥
मूलपदारथज्ञानफलभावाभावविवाद॥
न्यायशास्त्रगौतमरिषिभाष्यौतर्कविशेसि॥
प्रामानादिषोड़सअरथबोधप्रयोजनलेसि॥
चतुरयपातंजलरिषियोगशास्त्रसुखमूल॥

बिषैनिरोधनचिनविरतिनासककंसंचिनसूल॥
पचवाँशास्त्रजुसांख्यके कर्त्ताकपिलयोगीस॥
प्रकृतिपुरुषनिरोधबिषैहेतुत्रिविधिदुखबीस॥
षष्ठमशास्त्रवेदांतके आचारजमुनिव्यास॥
ब्रह्मजीवकीयेकताबिषैमोक्षफलनास॥
सो॰ सर्गबिसर्गअस्थान।पोषनउक्तिमनंतरषि॥
मुक्तिनिरोधइसान।आश्रयदशपुराणमत॥
दो॰ वेदस्मृतिमुनिसंहिताआगमनिगमपुरान॥
एकवाक्यतासबनकेवेद्यएकभगवान॥
एकनगरकेबहुतपथसकलभूपचलिजात॥
अंतप्राप्तियेकैनगरत्योंशास्त्रनकीबात॥
वेदशास्त्रनसहितजोलखेकाव्यकीरीति॥
तौनहोयसंदेहकछुज्योंमुचनकीप्रीति॥
अरिलछं॰ चौहटहाटसमानवेदचहुँजानिये।बिबिधिभाँतिकीबस्तुबिकतनहँमानिये॥जोजेहिरुचैसोलेइदेइधनधामको।परिहाँलीन्हौजनरघुनाथरतनहरिनामको॥
पावनपरवतसरिसवेदअरुशास्त्रहैं।बिबिधिभाँतिकीधातुरहतलिनमाझहैं॥जोजेहिरुचैसोलेइभलेहितमानिजू।परिहाँसन्तनलीन्होभक्तिमनिनकीखानिजू॥
दो॰ वेदबिपिनिबूटीवचनहरिजनकिमिश्राकार॥
खरीजरीतिनकेकनेखोटीगहतगँवार॥
श्रीगुरुदेवाकासकेचरनकमलधरिमाथ॥
इतिहासायनग्रन्थयहपूरकीनरघुनाथ॥
गीतिकाछं॰ रघुनाथगुरुपदमाथधरिकह्योरामयशहितमानिकै।कल्यानकरतापुरायमत्तोपापहर्त्ताजा-

निकै॥ कहिहैं जे मुनि हैं सहित नेह बिदेह गति पैहैं सही॥
मनकामकरुणाधाम को शुचि नाम सो दृढ़ करि गही॥ ॥

दो॰ रामचरित गावत सुनत ते बिघन करत जो कोइ॥
जन्म २ तेहि उदर में रोग जलंधर होइ॥ ॥
विश्रामोदधि ग्रंथ में तीनि अयन हैं तात॥
इतिहास यन कृष्णायन रामायण सुखदात॥

चौ॰ प्रथम अयण परमान गनाई॥ उनइस से सत्तर चौपाई॥
दोहा छै से पचास सोहाये॥ उनहत्तरि सोरठा गनाये॥ ॥
कुण्डलिया चौबिस पहिचानो॥ तोटक छन्द अठारा जानो॥
कुकुभा चारि मालिका दोई॥ अष्टपदी तेरह हैं जोई॥ ॥
तोमर उनइस बरवै साता॥ हरियक आठ भुजंगप्रयाता॥
सुनि मधुभार सरपिका बारा॥ रोला मनु अश्लोक अठारा॥
बरवै तीनि सवैया चारी॥ सुभ पंकज बाटिका निहारी॥ ॥
शशि समानिका पञ्च सुन्दरी॥ दोधक तीनि सुप्रिया सुंदरी॥
एकइस छप्पै तारक चारी॥ हैं छब्बिस गीतिका करारी॥ ॥
हरिगीता कुकरहल मराली॥ चिन्तामनि मधु हिरनि गोपाली॥
कामा कमल बिजै हरिलीला॥ निसिपालिका मनोहर सीला॥
श्री अंमृतगति अंमृतधुक्ता॥ एक एक ये छन्दै मुक्ता॥ ॥

दो॰ अर्द्ध भुजंगी संयुता करखा द्वै द्वै धीर॥ ॥
शशिमुख दीपक आठ कटि चारि २ मुनि बीर॥
बीस चतुष्पद हंसकल उभै अरिल्ल प्रमान॥
चारि सहस पुनि पाँच सत हैं अश्लोक प्रमान॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन जो कछु कीन बखान॥
विश्रामोदधि के बिषे सो जानो विद्वान॥
विद्वन बिन जानै कहा विद्वन को पैसमै॥

जैसेदंभआदिसिरोपावसपीरकोमर्म॥ ॥

दुर्जनदेखैंदोषपरपैखेनहिंगुणसील॥

लक्षमुहरकेमहलमेंखोजतछिद्रपपील॥

संस्कृतप्राकृतपारसीविविधदेशकेबैन॥

भाषानाकोकहतकथितलखाकीनमें ऐन॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीमज्ज्ञानगम्यनंदिनंदकजानकीरामस्यानुरागानुरागीश्रीरघुनाथदासरामसनेहीनिर्मितायांसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः

इतिहासायनखण्ड समाप्तम

इति

श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकृष्णायन॥

॥ खण्डप्रारम्भः॥

## भुजङ्गप्रयातछन्द

नमोशारदाशारदाज्ञानबुद्धिं। नमोगुरुगणेशंहरन्विघ्नसिद्धं॥
नमोरामघनश्यामकामस्वरूपं। नमोजानकीजक्तमाताअनू-
पं॥ नमोभारतंअपलक्ष्मणाशत्रुआरी। नमोकेसरीनन्दनंमुक्त
कारी॥ नमोदीनदानीसदाशिवभवानी। नमोविष्णुकमलंन-
मोब्रह्मवानी॥ नमोमीनवाराहनरसिंहकूरम्। नमोवावनंपर
शुरामातिसूरम्॥ नमोकृष्णबलविध्धमानंकिबोरी। नमोका-
लिकेदेवचैतोसकारी॥ नमोमातपूगणभूमानुधर्मे। नमोवेदव्या-
संनिगम्हर्त्ताभर्मं। नमोसरद्विप्राशीसहस्रबुद्धिराशी। नमोस-
न्तआनन्दमुक्तिप्रकाशी॥ कहतदासरघुनाथयुगहाथजो-
रे। करौसर्वऊपरकृपादृष्टिमोरे॥

दो॰ जातिकृष्णकृपालकेकहौंचरितचितचोर॥
अघअमितअपारनमिनहोइमितलविचार॥

चौ॰ रामभक्तिकीसुनिप्रभुताई॥ पुनिसौनकबोलेसिरनाई॥
नाथवचनतबअमीसमाना॥ तृप्तनहोतउदधिममकाना॥
तेहितेअबकरुणाकरिगावो॥ कृष्णचरितकछुमोहिंसुनावो॥
मुनिसुमंत्रबोलेहरषाला॥ भलोप्रश्नकीन्हेंहोसुमताला॥
सुनोकहौंहरिचरितसोहाये॥ जौनपरीछितनेशुकगाये॥

सोसबकरि संक्षेप बखानौं ॥ आदिहिते तामें मन आनौं ॥
द्वापर कृष्णलीन अवतारा ॥ कीन्हें चरित अनेक प्रकारा ॥
कलि आवत गवने निज लोका ॥ मुनि पांडवन कीन अति शोका ॥
राज्य परीक्षित का सौंपाई ॥ आपन गले हेवारे जाई ॥ ॥
विष्णुरात जबते नृप भयऊ ॥ परजन कहं बहुबिधि सुख दयऊ ॥
एक दिवस का सुनो हेवाला ॥ बिजै हेत निकसा महिपाला ॥

दो॰ एक ठौर देखत भयो वृषभ एक एक गाय ॥ ॥
भयवस भागी जात दोउ पक नर मारत जाय ॥

चौ॰ तेहि के चिन्ह नृपन के ऐसे ॥ करतब करत नीच जन जैसे ॥
तबतौ भूप निकट चलि गयऊ ॥ वृषभ धेनु ते बूझत भयऊ ॥
को तुम अहे जात कित भागे ॥ यह को है मारत केहि लागे ॥
कह्यो वृषभ मल निश्चय नाहीं ॥ बोली तब सुरभी नृप पाहीं ॥
ऐहैं धर्म धरा हम आनू ॥ कलि के भय से भागे जानू ॥ ॥
कलिमल मलिन करी सब प्रानी ॥ बरणाश्रम के धर्म न जानी ॥
विप्रसु मारग पगु नहिं देहैं ॥ बेचिहैं वेद धर्म दुहि लेहैं ॥ ॥
बिबुध कुपंथ निरत दिठियारे ॥ केहि अब लखहि अन्ध बिचारे ॥
छत्री कुलमय कलिमल मूला ॥ वंचक विप्र वेद प्रति कूला ॥
बनिक महाजन साहु सुनामा ॥ बचन मधुर अति छलबल बामा ॥
शूद्र रहित निज धर्म बिचारू ॥ अशुभ जीव का अशुभ अहारू ॥
धर्मसुतीरथ संत समाजी ॥ तहें बिशेष कलि कुटिल बिराजी ॥
काई सुरसरि बिमल तड़ागा ॥ फूलत फलत समय बिन बागा ॥
तिनकर फल पुनि सुरि तड़काला ॥ बिबिध व्याधि बस जीव बिहाला ॥
सुकृती लघु जीमन खल नाना ॥ दाता निधन कृपिन धनवाना ॥
पावक बहु जग कोहू कृदानी ॥ होइहैं अपरिमित पातक जानी ॥
भूमि बीज बिन सटरस स्वादा ॥ पाट पोर बड़ बाद बिबादा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नृप मरो ष सब प्रजा दुखारी॥ कबधौं मिटै देव सब गारी॥ ॥
कालकर्म महिपाल अधीना॥ बरणत वेद सोई मति हीना॥
श्रीनिस कपट अकारण कोहा॥ करब मातु पितु गुरु तें द्रोहा
दोहि गासुतिय माहा गिन चेरी॥ गुन बरणत अच्युत कुल केरी
ठाकुर कूर मलिन मति हीना॥ होइहै पुरुष नारि आधीना॥ ॥
धनी कुलीन गुनागर सोई॥ धनी सुसाधु यदपि खल होई॥
साधु सुसील सुजाति सुजाना॥ धन बिन सहिहैं दुख अपमाना
बकता बिपुल सुनी नहिं कोई॥ गुरु शिष अन्ध बधिर गति होई
उपदेशक आचरण मलीना॥ बेचिहैं धन हित नाम नगीना
चतुर चोर भट जे बटपारी॥ सब नर नारि सुमन रुचि कारी॥
गिरही रंक यती धनवाना॥ शूद्र पुरोहित विप्र किसाना॥
निरबल साधु सकल खल कामी॥ दास सुजान नीच जन स्वामी
मूर्तिका पात्र अभूषण केसा॥ परिकर बसन बिछौना सेसा
जटिल कुभक्षक सिद्ध शरीरा॥ परधन पचैवे ते बड़ धीरा॥
जीवन थोर दुराशा भारी॥ सत्य कहव ते होब लबारी॥ ॥
चलिहैं पुरुष अनेकन पंथा॥ होइहैं लुप्त सुभग सद ग्रंथा॥
सोइ सद ग्रंथ जहां हरि नामा॥ धर्म विवेक भक्ति अभिरामा॥
सुता पितु दूषक कर बिन ब्यांह॥ पुनि रिपु होब नारि सुख चाहि

दो॰ तीस बरस की आयु नर होइ कलि अधिआइ॥
अष्ट अबद की कामिनी जनमी सुत पति पाइ॥

चौ॰ सुरुचि कुसंग अरुचि सतसंगा॥ तुलसिहिं हंस बसाह बभंगा
पति विरोध परपति रत नारी॥ पण्डित बाजब परम लबारी॥
कवि कविता साखी शब्द बखाना॥ निंदिहैं हरिहर वेद पुराना॥
तजि कुल कुटुम्ब होब बैरागी॥ तिनहु न माहि दुरयना लागी॥
भेष बिमद बातन में सूरा॥ भक्ति भजन में कादर कूरा॥ ॥ ॥

जो कोइ हरि सुमिरन परकासी। करिहैं सब मिलि तिनकी हाँसी॥
गाँजा चरस तमाल उड़ाई। होई कलि तेहि केरि बड़ाई॥ ॥
जो तिहै हरन हिके इक बधा। रहो न नेकु धर्म की सन्धी॥ ॥
विद्या बनिज कृषी सेवकाई। होई फलन लघु श्रम अधिकाई॥

दो० तरुवर झाऊ बिटप सम सुरभी अजा समान॥
मेघ बरसिहैं ओस सम बचन न जामिहैं धान॥

चौ० कलि के दोष कहे कछु गाई। सुनहु जे अहे सुनो सोराई॥
कलियुग मन कर पातक नाहीं। पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं॥
वाचक पाप जाइ पछिताये। सरयू सरि हरिपद जान्हाये॥
कायातें पातक जो होई। बिन भोगे छूटत नहिं सोई॥ ॥
सतयुग देश ग्राम त्रेता हीं। द्वापर कुल कलि मैं कर जाहीं॥
कलि मैं राम भक्त तनु धरिहैं। तेवहु जीव कृतारथ करिहैं॥
रामभक्ति करि करि नर नारी। भवसागर तरिहैं यहु भारी॥ ॥
कालकर्म गुण प्रकृति सुभाऊ। भक्ति समीप जात नहिं काऊ॥
कृतयुग जो गति ध्यान कि है ते। त्रेतायुग मख दान दिहे ते॥
द्वापर युग हरि पूजन ठानी। पावत रहे जौन गति प्रानी॥ ॥
सो गति कलि हरि के गुण गाये। पैहैं नर जपि नाम सुभाये॥
कलि केवल परमारथ हेतू। राम नाम भवसागर सेतू॥ ॥
साधन नाम सिद्ध फल नामा। जेहि न प्रतीति ताहि विधि वामा॥
धर्म चारि पद कलि एक दाना। जो हिन नहि भांति किहे कल्याना॥
जब शुभ पंथ सकल मिटि जाई। तब कहु हरि भजन रहिहैं भाई॥
मुनि नृप को पि बलाव लिबोरा। रवन नाम सुने नहिं मोरा॥
तब कलि देखि चरण में परऊ। बहुत भांति अस्तुति अनुसरऊ॥
जो कछु आयसु होइ तुम्हारा। सो हम कीजे यामें वारा॥ ॥
जब लगु इह न जगराज करीजे। तब लग आपन अमल न कीजे॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देहु माहिं अस्थान भलाई ॥ जहँ हम बसहिं कछुक युग जाई ॥
द्यूत चोर गणिका मद थाना ॥ कनक बसहु दूतने अस्थाना
सुनि नृप मुकुट बैठ सुख पाई ॥ सुरमति मिटी असुरमति आई
चला भूप कछु तृषा सतावा ॥ शृंगी ऋषि के आश्रम आवा
ध्यान स्थित लखि मन अनुमाना ॥ हमें देखि ठानि सबक ध्याना
मृतक सर्प धनु कोर उठाई ॥ कंठ लपेटि चल्यो हरषाई ॥
सुन्यो सुवन शृंगी ऋषि केरे ॥ आवा खुरल खिलाके नेरे ॥ ॥

दो० पन्नग कंठ बिलोकि कै दीन्हों श्राप रिसाइ ॥
सतयें दिन नरपाल का काटैल डंक जाइ ॥ ॥

चौ० काटइ उरग तब पतहि जगासा ॥ भूपति को किरतान्त सुनावा
आपशील मुनि आनि रिसियाने ॥ कीन्ह निपट अकाज अयाने ॥
जेहि के चलन विविध सुख कीजै ॥ ताहि कि चहीं दाउ अस दीजै
मुनि सेवक कछु बूझि कवहीं ॥ चतुर स्वामि मिलेहिं मन जतन वहीं
धर्मवान जानु नृप ऐसा ॥ नाहिं अनियम अब आवै कैसा ॥ ॥
अस कहि ऋषि चलि भेजिन चेला ॥ भूपहि बोध देन कै हेला
महाँ महीपति मुकुट उतारा ॥ तब मन भौ सब कीन्ह अधिकारा
कौन कर्म कीन्हें मैं आजू ॥ होइ कछु बड़ दोष अकाजू ॥
जो याकर फल मोहिं विधाता ॥ देहु अछत तन सो भलि बाता
तेहि औसर ऋषि पहुँचे आई ॥ लखि नृप परयो चरण अकुलाई
बोले ऋषि भइ तुम्हें सरापू ॥ सजग होउ अब होंते आपू ॥
कह नृप अति बड़ दोष हमारा ॥ थोरहि मालव तैंने निवारा ॥
नृप तुम कछु अपराध न कीन्हा ॥ होनहार है परबल चीन्हा
सुर मुनि दनुज नाग नर माहीं ॥ होनी टारि सकत कोउ नाहीं
हरषा कुश दम कंधर कंशा ॥ औरो भये भूरि क्षिति बंशा ॥ ॥
जीमना हित बहु किहिनि उपाई ॥ काल न भाइ कोउ बचे न राई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गरुड़कमौतेचह्यौबचायौ॥अजगरकेमुखमेंधरिआयौ॥
होनहारजोसुन्दरहोई॥सोजगमारिसकैनहिंकोई॥ ॥
कनककसिपुप्रह्लादैडाटा॥काकरिसकेठाटबहुठाटा॥
बालिबधनसुग्रीवैचाहा॥केहौबेरकरिकीन्हिनिकाहा॥
चन्द्रहासकासबजगजाना॥कार्कीन्हिसिकरियतनदिवाना
अंबरीखपरारिसअतिकीन्ही॥मुनिबरकौनिबड़ाईलीन्ही
सखिवसुधन्वैचह्योजसवा॥अंखलिखिनफलआपुइपावा
सुरुचिचह्यौध्रुवबरहिबिनाशा॥रामकृपाअबिचलभयोदासा
पाण्डुसुतनकहबहुलसाइनि॥दुरयोधनकछुकीन्हपाइनि
ब्रह्मअस्त्रतबऊपरधेरा॥दोणापुत्रकार्कीन्हिसिनेरा॥ ॥
जाकीमौतनिकटजबआवै॥तोहियमुकेसंघहूजावै॥ ॥
तेहिनेहोनहारहैजेती॥नीकिजबूनिहोतिहैतेती॥ ॥ ॥
सन्तचहैंकछुदेहिंमिटाई॥अपरनटारिसकेकोइराई॥
असकहिऋषिनिजआश्रमआये॥भूपतुरतमुनिसहजसुभाये
राजकाजतजिसकलअवासा॥आइकीनगंगातटबासा॥
व्यासपरासरआदिमुनीशा॥जुरेआइतहँबहुअवनीशा॥
कोउकहेकराभूपगोदाना॥कोउमुनिबरलबतावैनाना॥
दो॰ तेहिअवसरशुकदेवजी आयेनेगधरंग॥
नालबजावतबालबहुडारतलैरजअंग॥
चौ॰शुकहिदेखिजेरहेअखाड़े॥ज्ञानबिरधतेरवभेसबठाढ़े
आसनदीनभूपसनमाना॥आपनजन्मधन्यकरिजाना॥
बोलेबहुरिजोरियुगपानी॥कहोभद्रकीबातबखानी॥ ॥
हेनरेशमनशोचनकीजै॥नृपवक्षागबातचितदीजै॥ ॥ ॥
उभयघरीमेंभद्रगतिजाकी॥तुम्हसप्तदिनजीवनबाकी॥ ॥
हरिचरितामृतपानकराई॥तुमैंतारिदेहौंमैंराई॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असकहिकहनभागवतलागे॥आगेसुननभूपअनुरागे
प्रथमेकछुकामनादेखाई॥पुनिप्रभुचरितकहेहरखाई॥
जगउतपतिअस्थितसंहारा॥ब्रह्मनिरूपनज्ञानउचारा
भक्तियोगबैरागविवेका॥भाअस्कन्धसमापतएका॥ ॥
तबदूजेमेंलागलगावा॥पुनिकछुयोगरहस्यकरिगावा॥
विधिनारदकोकथाबखानी॥चौबीसोंअवतारहिजानी
जगउद्भवकहिपूरणकीन्हा॥तबअसकंधतीसरोलीन्हा
ऊधोमिलनप्रभासविषादा॥कह्यौविदुरमैत्रेयसंवादा॥
सप्तविकारसहितब्रह्मराडा॥रूपविराटकहतमेंअण्डा
सुक्षमथूलकालकीकरणी॥पुनिब्रह्माकीउतपतिबरणी
बधिहिरणायाक्षधराजिमिआनी॥बाराहकीउतपत्तिबखानी
शंभूमनुसतरूपाकेरी॥कहीकथाजैसुतानिवेरी॥ ॥
पुनिकरदमकाकह्योविहारा॥नवकन्यनतेसृष्टिअपारा
देवहुतीअरुकपिलकज्ञाना॥बरणिचौथअबकरतबखाना
दच्छयज्ञजेहिविधिभइभंगा॥सतीमरणकरकह्योप्रसंगा
ध्रुवचरित्रपुनितिनकरवंशा॥कह्योकथापृथुकेरिप्रशंसा
पुनिप्राचीनबरहैजिमिकीन्हीं॥कहिनसीपनारदजोदीन्हीं
तूर्जभूजिपंचमगहिपानी॥बरणिप्रियव्रतकेरिकहानी
ऋषभदेवकरआख्यानसुनावा॥भरथमृगीकरिजोदुखपावा
पुनिजड़भरथरहूगणज्ञाना॥कह्योभूपभानारिप्रजाना
दीपसिंधुगिरिसरिताधरणी॥रविशशिउडुमरयादाबरणी
जोतिचक्रपातालप्रमाना॥बरणोनर्कमहादुखनाना॥ ॥
षष्ठमअजामीलइतिहासा॥धर्मदूतसंवादप्रकासा॥ ॥

दो० सहसएकादशपुत्रवरदक्षकियेउतपन्न॥
नारदज्ञानसुनाइकैविपिनपठायेधन्य॥

चौ० तब तिन साठि सुता उपजाई। तिन ते सृष्टि भई अधिकाई॥
कश्यप के जन्मे सुत नाना। सुरगुरु हरि का बयर बखाना॥ ॥
विसे श्रवे वध वास बकीन्हों। हत्या लागि बांटि जिमि दीन्हों॥
इन्द्र वृत्तासुर युद्ध बखाना। नहुष भये जिमि पन्नग जाना॥
चित्रकेतु की कथा सुनाई। भेउन चास पवन जिमि आई॥
सप्तम कहि प्रहलाद चरित्रा। बरना आश्रम के धर्म पवित्रा॥
अष्टम कहे मन्व न्तर सोहा। गजनारद की कथा मनमोहा॥
कूरम कर अवतार सुनाइनि। सागर मथत रत्न जिमि पाइनि॥
समर असुर सुर मल्ल कहानी। बलि बावन की कथा बखानी॥
नवम माहिं रविवंश बखाना। नृप की कथा कीन तहँ गाना॥
त्रिशंकु की कथा सुनाई। अम्बरीष की कीन बड़ाई॥
सगर भगीरथ अति मन भाये। रामचरित प्रमुदित कछु गाये॥
निमि प्रसंग निमैं जग केरी। परशुराम की कथा निवेरी॥ ॥

दो० रवि शशि वंश मिलाप कहि इला बुद्ध संयोग।
बरणी सोम की कथा पुनि ययाति कर भोग॥

चौ० पुनि यदुवंश कहा विस्तारी। जामें प्रकट भये गिरिधारी॥
दशमें कहा कृष्ण अवतारा। बकी सकट तृणावर्त मारा॥
यमलार्जुन तिन का गति दीन्हो॥ वत्स बकासुर जिमि बध कीन्हो॥
कंस निधन विद्या जिमि पाई॥ जरासिंधु की कही लड़ाई॥
रुकुमिनि हरन द्वारके आये॥ सौरी चरित दशम बहु गाये॥
गेरहें कहा यदुन कर नासा॥ नव योगेश्वर जनक विलासा॥
हरि उद्धव का ज्ञान सुनाये॥ दत्तात्रेय द्विज का यश गाये॥ ॥
बहुरि भये प्रभु अन्तरध्याना॥ सो चरित्र सब कीन बखाना॥
द्वादश में युग लक्षण गायो॥ निकलंक की अवतार बतायो॥
होई संभल ग्राम अभिरामा॥ विष्णुदत्त ब्राह्मण के धामा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दसिमले कछु पुनिसतयुगहोई। कुमतिसबन कीजाईखोई
उतपति तीनि तराकी भाखी। परलयचारिभांतिकीराखी॥
दो॰ इतनीकथासुनाईकै सुकमुनिकीनिपयान॥
सुनतैंअहिकाट्यौनृपहिंआयोदिव्यबेवान॥
चौ॰ चढ़िनरेशहरिलोकहिंगयऊ। जयधुनिदेवकरतसबभयऊ
तब सौनककहमुनिबरज्ञानी॥ जनमेजयकीयज्ञबखानी॥॥
बेदनकी साखा उपसाखो॥ मारकंडेकी परलैभाखी॥ ॥ ॥
द्वादशस्कंधकीकथासुनाई॥ सूतसकलभागवतगाई॥
जोनरपाठनेमपुलकरिहैं॥ तासुदोषदुखश्रीपतिहरिहैं॥
दो॰ श्रीगुरुदेवादासकेचरणकमलधरिमाथ॥
अखिलभागवतकेरसमबरणयोजनरघुनाथ॥
चौ॰ पुनिसौनकबोलेसिरनाई। नाथसकलभागवतसुनाई
अबअभिलाष एकउरआई। कृष्णकथासुन्दरसुखदाई
दशमस्कंधहुंकृष्णकरिगाये॥ करिबिस्तार पूर्वाईसुनाये
जोउत्तराईनाथतुमगावा॥ इतिहासनमहँसो सुखपावा॥
सोइनिबालकृष्णलीलाअब॥ कहौमोहिंकरिकृपानाथसब
केहिप्रकारगोपालौ॥ केहिबिधिमार्योकंसभुआलौ।
बहुरिकामिनीमंगलगाये॥ व्याहकेहिभांतिबनाये
औरहुकिहिनिचरितबहुतेरे॥ सोसबकहहुदेवहितमेरे॥
बोलेसूतसुनहुमुनिज्ञानी॥ अबमैंसबकहौंबखानी
इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागर श्रीरघुनाथ-
दासरामसनेही कृत कृष्णायनप्रबन्धवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः१॥
दो॰ सुमिरिरामसियसंत गुरुगरापगिरासुखदानि॥
भारथमनकीरिकंसकोउतपतिकहौंबखानि॥
चौ॰ नगरएकमधुपुरअसनामा॥ कालिंदीतटअतिअभिरामा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उग्रसेन रहे तामें भूपा ॥ पवनरेखवरमनी रतिरूपा ॥ ॥ ॥
देवकनाम उग्रको भ्राता ॥ तिन हुं कित्रिया मनोहरगाता ॥
इकदिन उग्रसेनकी नारी ॥ सकलसिंगार किहिसिढ़िभारी
सखिनसंगलै उपवन देखन ॥ गई प्रथक है लागी परखन ॥
तेहि अवसर दानव इक आवा ॥ भूपरूप धरि हाथ चलावा ॥
बोली पति ऐसी मति कोजै ॥ दिनराति किहे पुराय सबछीजै ॥
तेहि माना नहिं कछु अय योगा ॥ बरबस किहिसि तासु संग भोगा
तेहिपाछे निजवपु प्रगटावा ॥ नृपपत्नीलखि बचनसुनावा ॥
रेखलनीच छलेतैं मोहीं ॥ कोइसि श्राप देतहौं तोहीं ॥ ॥
बोला मैं हौं दनुजजुभारा ॥ कालनेम है नाम हमारा ॥ ॥ ॥
सतयुगसमर विष्णुसेठाना ॥ आपन देहु लेहु बरदाना ॥ ॥
दो० तुम्हरे हमरे अंशते होई बालक एक ॥ ॥
महाप्रतापी भुजबली जीती भूप अनेक ॥
चौ० मारी असुरनिकर बलभारे ॥ बिन भगवंत मरी नहिं मारे
सुनत प्रसन्न भई तबरानी ॥ आई जहं सब सखी सयानी ॥ ॥
हंसि बोली बनिता तब ऐसे ॥ बिगलित भये बसन तब कैसे ॥
धावा कपि एक निकट हमारे ॥ आइनु भागि तासु भयमारे ॥
तेहिते अब चलिये निजधामा ॥ सुनि आई गृह निज २ बामा ॥
गर्भ अवधि सुखसहित बिताई ॥ माघ शुक्ल कुज तेरसि आई
जन्मा सोइ बालक अधराती ॥ भयेउ पद्रव नाना भांती ॥ ॥
उग्रसेन बहु द्रव्य लुटाई ॥ कंस नाम बुध राखिनि आई ॥
भा जब बड़ा बालकन संगा ॥ खेलन जाय करै तहं दंगा ॥ ॥
फोरै कूप भरन जल देखै ॥ भुजबल मस्त न काहु लेखै ॥ ॥ ॥
मगधदेशयक राजसिधावा ॥ जरासिंध को जाइ हरावा ॥ ॥
तिनके रहे सुतायुग आछी ॥ लावा तिन्है परणि सह सांछी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नामअस्तिप्रापतिमनहुंमनमथकीकरवाल॥
लग्यौकरणसुखसदनवसितिनयुतकंसभुवाल॥
चौ० एकदिवसभूपतितेबोला॥तोहिंकोरेगोराजिअडोला॥
असकहिकीन्हिसिकैदअभागा॥अपनाकरनराजसुखलागा॥
असुरमयावीविपुलबटोरे॥जेरिपुसमरमुंहनहिंमोरे॥ ॥
तिन्हैंसंगलैयकदिनधावा॥जीतिनिकरनृपपुरफिरिआवा॥
अपरसुनौदेवककीबारी॥नामदेवकीरहैकुमारी॥ ॥ ॥
तिनकोव्याहकरनकेकाजा॥खोजवायघरजहंतहंराजा॥
सूरसेनकेसुतबसुदेऊ॥सबहिनकहीइन्हैंवरिदेऊ॥ ॥
दो० तबनेरशबसुदेवकोदीन्हीसुता विवाहि॥
दोउदिशभाउत्साहअतिसोकोपैकहिजाहि॥
हैगज स्यन्दनहेमपटरतनअनेकनदीन॥
यन्वकसबपरतोषिकैबिदाबहिनिकरकीन॥
चौ० परवनचलाआपुसुखमानी॥तेहिछनाभईगगनइभिवानी
यहिकन्याकेबालकहोहीं॥अठवांसुतमारीनृपतोहीं॥ ॥
सुनिनृपउतरिकेशगहिलीन्हें॥खड्ग काढ़िमारणकोकीन्हें
तबबोलेबसुदेवपुकारी॥प्रमदाबधपातकहैभारी॥ ॥
तेहितेयाहिछांड़िनृपदीजे॥बोलातुमकछुशोचनकीजे
आगेतरुविषफलफलैकोई॥डारैताहिकाटिभलसोई
यहिहनितुम्हैपरागाहोंआना॥सुनिबोलेबसुदेवसुजाना
नृपकछुतवभगनीनहिंघालक॥रिपुतुम्हारहैंइनकरबालक
जबहींसुतप्रगटीजगआई॥देहौंतुम्हैंतुरतमैंलाई॥ ॥
सुनिविनतीदीन्हिसितबत्यागी॥आयेदोउनिजगृहअनुरागी
कछुदिनगयेसमौजबआवा॥प्रथमैंपुत्रदेवकीजावा॥
लैबसुदेवगयेनृपपासा॥जानिसिहैंसांचेहरिदासा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बालबिलोकिदयाउरआई॥कहिसिशोचनिजसुतलैजाई
तेहिअवसरनारदतहँआये॥कछुअनिधन हितबचनसुनाये
कंसकहालरिकाईकीन्ह्यो॥जानिबूझिनिजरिपुतजिदीन्ह्यो
सुनिमहीपअसबचनउचारा॥अष्टमसुतहै कालहमारा॥

दो॰ तबनारदलिखिवक्रगरिासक्रमअष्टमसुसोइ॥
कोजानैनृपशत्रुजोप्रथमैआवाहोइ॥ ॥

चौ॰असुनि कंसशिशुहिधरिमार्यो॥याहेबिधिषटबालकसंहार्यो
तबदेवकीमहादुखपावा॥मनहींमनश्रीपतिकोधावा॥ ॥
कंसवंश ममकीन्हेसिषीशा॥यहबिपदाहरिहोकबईशा॥
बेदपापपृथ्वीगरुआनी॥शिवबिरंचितेबिनतीठानी॥
सबमिलिगयेजहांभगवाना॥अस्तुतिकरतभयेविधिनाना
सुनिबोलेलखिदीनमुरारी॥निरभयहोउदेवमुनिभारी॥
धरिहौंमैनरतनअवआई॥हरिहौंसकलभूमिगरुआई॥
करिहौंपूरमनोरथसबके॥भावविवसकारजअबनबके॥
आयसुमयहिदीनपुनियेहू॥गोकुलजन्मजाइतुमलेहू॥
बेदऋचनकादीनिरजाई॥गोपीहोउसकलतुमजाई॥
पायरजाइसबनसोइकीन्हा॥आपुबोलिनिजमायहिलीन्हा

दो॰ कह्योदेवकीकेगरभहैसत्तवांममअंश॥
ताहिरोहिणीकेजठरकरिआवोनिरसंश॥

चौ॰सुनिसोइकरतभईहरिहांशा॥जानासबनगर्भभानाशा॥
अठयेंबासआपुहरिलयऊ॥बदनप्रकाशचंद्रसमभयऊ॥
अंगसुगंधवदनछबिजाई॥कंसदिष्टिसिलखिवंदिडराई
करहथकरीनिगढ़पगडारे॥जहँकपाटपहरूबैठारे॥ ॥
तिनतेकहेसिहोयसुतजबहीं॥सुनितुमहमैंजनायोतबहीं
यहिबिधिगयेककुकदिनबीती॥जोहिहरिप्रकटसुनहुसोरीती

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भादौं मास पक्ष अँधियारा। उड़ परो हिरणी अरु बुधवारा॥
तिथि अष्टमी रैनि अँधियारी। झिमि झिमि बर्षत बरवारी॥
प्रभु आगमन जानि सुर आये। करि बिनती पुनि गगन सिधाये॥
खुलिगे सकल पटल केवारे। भे निद्रावस सब रखवारे॥
अरु बसुदेव देवकी दोऊ। छूटि गये बंधन ते सोऊ॥
अद्भुत प्र[illegible] दिशि छाय [illegible]समाना। प्रकट भये तब श्री भगवाना॥
क्षीरसिंधु गोलोक निवासी। शोभा सदन सकल सुखरासी॥
शीश बसन श्रुति कुंडल लोला। उर बिशाल बनमाल अमोला॥
शंख चक्र गद पद्म बिराजै। मणि भुज चारि विप्रपद भ्राजै॥

दो॰ पीतबसन उपवीत उर राजत नयन सरोज।
अंग अंग पर रघुनाथ जन वारत अमित मनोज॥

चौ॰ लखि बसुदेव ब्रह्म कहँ चीन्हीं। अंजलि जोरि [illegible] कीन्हीं॥
पुनि उठि कह्यो तुम्हैं मैं जाना। परम पुरुष हौ तेज निधाना॥
परम जोति अद्वैत अविकारी। निरगुण ब्रह्म त्रिगुण तनुधारी॥
कंसासुर त्रासन निशि भोरा। हरहु नाथ मम संकट घोरा॥
पुनि मुनि प्रभु देवकी जानी। बंध त्रास युत बिनय बखानी॥
अहो पुराण पुरुष अविनाशी। निजानन्द निर्गुण गुणराशी॥
काल ब्याल ते मनुज डेराने। सर्व लोक कहँ जात पराने॥
तजत न मृत्यु जहाँ चलि जाहीं। निरभय होत कतहुँ सो नाहीं॥
तव पद पदुम प्राप्त जब होई। पद रक्षा सुख पावत सोई॥
मृत्यु डेरन लागी तब ताहीं। सेवत चरण कमल जो आहीं॥
ऐसे तुम मम उदर निवासी। है नरलोक बड़ी उपहासी॥
बोले तब श्रीपति सुनु माई। जेहि तें तव मन संशय जाई॥
पूरब जन्म माहिं तुम मोहीं। याच्यो बर तुम सम सुत होहीं॥
भक्तबछल मैं बिरद बिचारा। भयउँ आइ तेहि तेने तुम्हारा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कंसमहाखलसुनैतेग्राई ॥ तौमोहिंगोकुलदेहुपठाई ॥
यशुमतिकेउपजीमममाया ॥ लावहुतेहिउठाइकरिदाया ॥
कछुदिननन्दभवनकरिलीला ॥ मिलबतुम्हेंपुनिबन्धुसमीला ॥
अस कहि शिशुहोइरोवनलागे ॥ देखिमातुपितुप्रीतिअनुरागे ॥
नारवेवारसमेतउठावा ॥ लैबसुदेवचलेनभछावा ॥ ॥ ॥
कालिंद्रीजबलगेमंझावन ॥ यमुनाबढ़ीछुवनपदपावन ॥
गुलफजंघकटिआरतकआई ॥ शिरधरिठाढ़रहेडरपाई ॥ ॥
लखिप्रभुपाछेपाउंपसारा ॥ परसिबहींमुखननकधारा ॥
ऊपरशेषसहसफनछाये ॥ इतउतहरितरिगोकुलआये ॥
प्रविशेमहरिभवनकेमाहीं ॥ अगटीसुतातिन्हंसुधिनाहीं ॥
शिशुसोवाइतिनआगेदीन्हेउ ॥ लैबालकीभवनपुरकीन्हेउ ॥
निवसतनिलेबहुरिपटलागे ॥ बन्धनपरेपौरियाजागे ॥
सुनिकन्याकारोदनजाना ॥ भासुतनृपतेजाइबखाना ॥
सुनतकंसआतुरचलिआवा ॥ तबदेवकीबहुतसमुझावा ॥
तदपिनखलमानिसिपरतीती ॥ लीन्हेसिछीनिसुताविपरीती ॥
पटकनलागशिलापरनीचा ॥ करतेतड़िपगईनभबीचा ॥
बोलनभईकंसतवहंता ॥ प्रगटहोइचुकाहेकहुंअन्ता ॥
सुनिनभगिराउठाअकुलाई ॥ गिरादेवकीकेपगधाई ॥ ॥
मैंअपराधकीनसुतमोरे ॥ होनहारसोटरतनटोरे ॥ ॥ ॥
कंसज्ञानउपदेशतकैसे ॥ दीपप्रकाशतआनहिंजैसे ॥ ॥
कहदेवकीसुनोहेभाई ॥ निजकृतकर्मनतोरिलगाई ॥
जोजसकरैसोतसफलपावै ॥ बिनसमुझेपरदोषलगावै ॥
दुखसुखप्रदजगमेंनहिंकोई ॥ मनमानेकरसंभ्रमहोई ॥
यहसुनिउठिनिजमंदिरगयऊ ॥ सचिवबोलिअसबूझतभयऊ ॥
कहौकहाअबकौनकहोई ॥ जन्माकहुंअन्तेअरिसोई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोलि दुरस सुनो महराजा ॥ याकी तोहि है सहज इलाजा ॥ ॥

दो॰ एक बरष के बीच माँ जो सुत जनमें होइ ॥
डारहु सकल मराइ तुम आपु दूबधी न सोइ ॥

चौ॰ सुनत बोलाइ असुर समूहा ॥ कह्यो कि मारहु शिशु करि हूहा
चले जहाँ तहँ आयसु पाई ॥ लागे करन पाप अधिकाई ॥ ॥
यह इतिहास कही मन मानी ॥ अब गोकुल की सुनो कहानी ॥
रोदन तहँ जब कीन मुरारी ॥ जागि महरि सो सुनि भारी ॥ ॥
बालक देखि परम सुख पावा ॥ गोमय चन्दन भवन लिपावा
गो पुर कलस बिचित्र धराये ॥ नवल बधुन मिलि मंगल गाये
धुज पताक तोरण पुर छाये ॥ देवन हरषि सुमन बरषाये ॥ ॥
नन्द सहस दश धेनु मँगाई ॥ बिप्रन कहँ दीन्हो हरषाई ॥ ॥
मुदित नारि नर बीथिन डोलें ॥ जयति जय सुत की बोलें ॥
उड़त गुलाल सकल तन सींचा ॥ मारग मध्य मची दधि कीचा
बाजन हिं बाजन नाचहिं नारी ॥ हँसि देहिं नन्द कहँ गारी ॥ ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा ॥ कौतुक लखत फिरत ब्रज ईशा
बहुत कहाँ तक कहौं उछाहू ॥ प्रगट भये जहँ त्रिभुवन नाहू ॥
जातक कर्म बेद बिधि कीन्हा ॥ बहु बिधि दान याचकन दीन्हा
पुनि लै नन्द क्षीर दधि छेगू ॥ कंस देन चले मिलि नेगू ॥ ॥ ॥
मधुपुर आइ चढ़ाइन भेंटा ॥ सबन कहा इनके भा बेटा ॥ ॥
बहुत नीक कहि भीतर तेरे ॥ तहँ बैठाइ गयो उठि डेरे ॥ ॥
तुरत लिहिसि पूतन हिं बोलाई ॥ आवहु मारि नन्द सुत जाई

दो॰ चली तुरत नव नारि बनि सजि नन भूषण चीर ॥
जहर उरोज लगाइ के आई यमुना तीर ॥
पुरपतनी भौचकि रहीं रूप वान लखि तासु ॥
बिन बूझे आसन दयी बरिशा भागिनि जासु

सो॰ लालहिलखिदुलराइ।देरिदुचिनीमहरिको॥
लीन्होगोदलगाय।दीन्ह्योमुखविषसहितकुच॥

चौ॰ लागेपियनकृशाकरिजोर।भागीकबलछोड़ावनसोरा
लीन्हेखैंचिप्रानपुरवासा।योजनद्वैढसहिवपुभासा॥ ॥
दीन्हीगतिजननीकीनाहीं।कोकृपालअसभजियेजाहीं
कौनिसुरायथाकीन्ह्योभारी।जानेथीन्ह्योदूधमुरारी॥ ॥
रतनदामसुहितावलिकेरी।बावनवपुछविलोखबहुतेरी
मनमें चहिसिपियावौंक्षीरा।मोइइच्छापूजीयदुबीरा॥
कृष्णतासुकुचपरइमिराजें।जिमिघनशिशुगिरिशृंगविराजें
भयबसलोगनिकटनहिंजावें।दूरिहितेधाआराचलावें॥
हाइहाइकरियशुमतिधाई।लीन्हिनललाहिलखिगोदउठाई
भवनआनिदीन्ह्योबहुदाना।कह्योबचायोहरिभगवाना
पुरवासीमुनिदेखनधावें।बकिहिविलोकिविधिहिशिरनावें
करिरक्षामोहनतनकेरी।कहेंकिकेहुइंदिहिंउभानिफेरी॥
यहांनन्दनृपआयसुपाई।मिल्ठेमिलनचलेहरषाई॥ ॥
कुशलप्रश्नकहिकरिसनमाना।बोलेपुनिबसुदेवसुजाना
कालाधीनदेहनहिंनेमा।बिछुरिमिलेसमअपरनक्षेमा
भलेकृपाकरिदरशनदयऊ।अतिसुखमिलासुनासुतभयऊ
जाहुवेगिनिजमंदिरताता।करतफिरततमचरउतपाता॥
रक्षाकरतसुतनकीरहियो।करुणाहृष्टिरामकीचहियो
गोकुलआइदीखसोइहाला।लगेबतावनसबनरबाला
राइअकरिताकरअंगा।जारतकढ़ीसुगंधप्रसंगा॥ ॥
एकदिवसकागासुरआवा।पकनितासुशिरलोरिबहावा
पूर्वविप्रभारीयहरहेऊ।भइगुरुश्रापभुगतिगन लहेऊ
जन्मनहत्वपरापुनिआई।पूजनहितबदुरेकुलभाई॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्यामहिंसकट तरेथीठावा॥ महरिकाममेंचित्तलगावा॥
गईभूलि मोहि निपट विसूरा॥ मारील्लातसकटसोचूरा॥
सुनिलरिकनसुखयिलुप्रलमाता॥ दोसिलगाइनिपुत्रहिगाता॥
अचरज मानिकहैंनरनारी॥ टीकान्हकोकरिवरभारी॥
तृणावर्त्ततेहि पाछेमेजा॥ प्रभुइपरदेखासुठिसेजा॥
गरूआयास्नहिलखिमहतारी॥ जागतहेहिसिरहेतहंपारी॥
बौंडरहेकीन्हेअंधियारा॥ लीन्हेगहिगगनमझारा॥
गरलभयेप्रभु सधानभारू॥ गिरामहीतललभासंहारू॥
दलथंभनन्नृपपंडुरदेशा॥ दुरवाशादतमिल्योकलेशा॥
छातीपररवेलतसुतपाइनि॥ नन्दमहरिनिजभागमनाइनि॥
विप्रनबोलिदानबहुदीन्हा॥ गोपबधुनतबलेनालीन्हा॥
हइउरीनसबकेघरवारा॥ तुम्हेकामहैबहुतपियारा॥
बांधयनदेख्योसुतआंखी॥ तदपिनप्रीतिप्राणसमराखी॥
कहैरघुनाथनिरखिप्रभुवोरी॥ थकितहोहिजिमिचंदचकोरी॥
इतिश्रीबिश्रामसागरसबमनअगवंप्रपदजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतश्रीकृष्णजन्मउत्साहपूतनाकागासुरतृणावर्तबधवर्णनो
नामद्वितीयोऽध्याय: २॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंश्यामकीरहसिकछुकथाखंडकीआनि॥
कबूमहरिसुखचूमिकेबदनपयोधरदेत॥
कबूझुलावतपेलनेकबूलाइउरलेत॥ ॥

चौ० यहिसुखमेंकछुकालबितायो॥ अन्नपरासनकोदिनआयो॥
नन्दबहुतसामामंगवाई॥ मधुमिवापकवानमिठाई॥ ॥ ॥
साइतिसमुझिश्यामसुखदीन्ह्यो॥ विप्रबंधुपुनिभोजनकीन्ह्यो॥
दिनदिनबदनलखिगहरिकैसे॥ शुक्लपक्षकरनिशिकरजैसे॥ ॥

प्रगटी तन प्रति चंचलताई॥ गहैन एकौ छिन थिर ताई॥ ॥
आंगिनि कीसमुकनखीसिंगारा॥ धरतकरत तहं अहरिनि सारा
बत्सपूंछगहिकभूमगावैं॥ पुरजन पकरिमातुढिग लावैं॥
एकदिवस आये द्विजएका॥ किहि निवसोई सहित विवेका
पुनि तहं भोगलगाइनिवेटा॥ पावतदीखनन्दकाढोटा॥
कह्योनहरितेबहुरिकराई॥ भोगलगतपुनि पहुंचे आई
सबपशुमतिद्वकीसुनिलिहू॥ पुनि मोहिं बोलावतयेहू॥
दो० यहिभूंदेसंसारकोभावलभुरीभक्ति॥ ॥
कुरअहिलखिरघुनाथजेमिभागहिनियासुशक्ति॥
चौ० कछुदिनगयेगर्गऋषिआये॥ नामधरावसुदेवपराये
लखिब्रजपति पूज्यो सबभांती॥ कहि निजभागधन्यदिनराती
सुतसुखदुखप्रदतुमसुदहाला॥ शाकुगोरदेखेदोउभ्राता
शंकर्षणबलभद्रकरामा॥ कहे तीनि अग्रजके नामा॥
बासुदेवअरुकृष्णकन्हाई॥ इनकेनामअपरबहुराई॥ ॥
मातुलरिपुपरतियरतचोरा॥ होइहैं निलज निडरवरजोरा
साधुविपगोपालनकरिहैं॥ अभिमानिनकी अहमिति हरिहैं
मातपिताको आनंद दैहैं॥ नृपसुखसहित जगतयशलैहैं
औरौ फलबहुकहे तुभाई॥ आये भवनदक्षिणापाई॥ ॥
एकदिवस खाई हरिमाटी॥ लखिकनकहामहरिसुनि डाटी
मुखपसारिदेखरावनभयऊ॥ उदरबिलोकि बिसरितनगयऊ
देखासकलविश्वमुखमाहीं॥ कोनिसोबातजोवामेंनाहीं॥
सुरनरअसुरनागनभचारी॥ रविशशिउडुसरिसरदीघभारी
स्वर्गनर्कयमकालनिहारा॥ बिधिहरिहरबैकुण्ठबिहारा
इहिविधिसकलवस्तुदिखगई॥ मूंदिलिहिनिपुनिवदनकन्हाई
चकितभईस्वपनमेंदेखा॥ सांचोमांचकिनयननपेखा

भा विवेक सुत ईश्वर चीन्हा॥ बहुरि कृष्ण माया बस कीन्हा
कहैं रघुनाथ धन्य ते प्रानी॥ जे ऐसे प्रभु सों रति मानी॥ ॥
एक दिन एक ग्वालिन घर जाई॥ लागे माखन खान चोराई।
निज पर छाँह मुकुर लखि बोले॥ तुमहू खात कहौ जनि खोले
सुनि मृदु बचन हँसी सोइ बाला॥ भीतर ते भागे नन्द लाला।
एक दिन गये अपर घर बारा॥ छींके ते नव नीत उतारा॥ ॥
तेहि क्षरा धनि आइनि चलि यार्इ॥ बोले तासों बचन बनाई।
कूदत रही एक मंजारी॥ मैं उतारि कीन्ही रखवारी॥ ॥
भले करत तुम दोष लगावा॥ जानि पड़ा अब ही कलि आवा
तेहि तब कहा खाइ तुम लेहू॥ मोहिं नीक नाहिं लागत येहू॥
एक दिन गे एक भवन बहोरी॥ सींके लखि दधि पेंदी फोरी।
पावत तासु बचन सुनि चीन्हा॥ निकसे तुरत पकरि तेहि लीन्हा
पूछत भइ कस भागे जाहू॥ बोले तब तेहि ते सुर नाहू॥ ॥
कहिये कह दुख में दुख होई॥ भे नर मुरिडत की गति सोई॥

दो० स्वेदज दुख बिन कच भयो लख्यो धाम अकुलाइ॥
धरयो बाग सिर बेल फल गिरयो अधिक दुख पाइ॥

चौ० भैया मोहिं उठि मारन धाई॥ तेहि आयनु तब भवन लुकाई
तहँ देखी दधि खात बिलारी॥ सोइ डेरइहौं ते भागेन प्यारी
सुनि तेहि दीन तुरत ही छोड़ी॥ दौरि उतारिसि आइ दुधाड़ी।
एक दिन धाम अपर के गयऊ॥ माखन घट ले भागत भयऊ।
ते सब दिन पति देहिं उरहना॥ महरि न मानै तिन कर कहना
एक दिन गे कमला के धामहिं॥ धाइ धरिसि तेहि देखत श्यामहिं
गोकी कहैं चलो जहँ माई॥ तिनकी कसरि निकारी जाई॥
बोले श्याम मोहिं नहिं शंका॥ बिन कीन्हे कहं लगत कलंका।
यशुमति निकट दे खावन लाई॥ भये तासु पति तुरत कन्हाई।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोली महरि भई हँसि बोरी ॥ स्वप्न में पकरि देखावन दौरी ॥
पति मुख लखि लज्जित ह्वै भागी ॥ किह्यो कहा में मन्द अभागी
एक दिन पकरि लयाई आना ॥ ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा ॥
खात खसम सुत सब के चीन्हा ॥ हमरे पुत्र निवल करि लीन्हा ।
एक दिन प्रभु सब सखा बोलाये ॥ तिनते कौतुक बचन सुनाये
अहो मित्र गोपिन घर चलिये ॥ खाइय दधि भाजन दलि मलिये
जो वे मिलि पकरें बरजोरी ॥ तुम सहाइ हूज्यो तब मोरी ॥ ॥
एक मत लखि कोउ सकत न जूटी ॥ जिमि बुधि सेन बिहंगगा छूटी
एक मते ह्वै पंगुल अंधा ॥ बंच्यो अगिनि ते चढ़ि पर कंधा ॥ ॥
अस कहि कृष्ण चले अभिलाषी ॥ लागे संग सखा भल भाषी ॥
बदहिं परस्पर सुनिये मीता ॥ चलत मही पर लागत भीता ॥
एक कहैं तुम कादर भारी ॥ हम हरिहैं करिहैं कह नारी ॥ ॥
अपर कहैं भागब भय देखी ॥ शून्य सदन प्रविशे एक पेखी ।
सोज खाइ अरु कपिन लुटाई ॥ निकसि गये तब सो तिय आई
देखि बिनाश करत भइ शोरा ॥ दिनही में को आयो चोरा ॥
निकट जाइ बोली एक बाला ॥ मैं पैठत देख्यों नन्द लाला ॥
मन में भई पुकारों तोही ॥ गूंगी केहु करि दीन्ही मोही ॥ ॥
इतने में ताहू के धामा ॥ हालि गोरस खायो घन श्यामा ॥
लगी पुकारन घर जब आई ॥ नाहक मैं तब भवन सिधाई ॥
जो कोइ बीच जबर के परई ॥ लोमड़ी सम दुख सोऊ भरई ।
दधि माखन पकवान अनेका ॥ खाइ गयो राख्यो नहिं नेका ।
पुनि काहू के मंदिर धसेऊ ॥ देखि लीन तेहि सब का ग्रसेऊ ।
कह हरि साधु हमारे आये ॥ बाबा भोजन हेत टिकाये ॥ ॥
मैया मोहिं पठयो तब तीरा । माँगि लाव दधि माखन क्षीरा ॥
आये हमें भई बड़ि बारा ॥ माँगों कासों शून्य अगारा ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सखा बुलावन आये अबहीं ॥ चलो चह्योंते आई तबहीं ॥ ॥
जो चित चहै देह अनुरागी ॥ धन्य भाग्य पर स्वारथ लागी ॥
साधु सिंह सम चरित रहावै ॥ भाव हीन लखि मृतक न खावै ॥
लाल बदन की सो सुनि बानी ॥ बोली हँसि मन में सकुचानी
प्यारे जो ऐसी है बाता ॥ तौ मेरो सो तुम्हरो ताता ॥ ॥ ॥
संचित घृत दधि माखन क्षीरा ॥ हरि सिल आनि धर्‍यो हरितीरा
चले सखन के शीश धराई ॥ लागे सब मिलि चोहट खाई ॥
यह कौतुक सब गोपिन देखा ॥ बंचक धूत छली अति लेखा ॥
बोली एक तासु घर आई ॥ आजु भली तू गई ठगाई ॥ ॥ ॥
सुनि सो कहत भई है बाला ॥ मति बौराइ गयो ले लाला ॥
जाइ श्याम ढिग बोली बानी ॥ झूठ बखानि बस्तु कत आनी
लाल कही हम झूठ न भाषा ॥ मैं महं तये सब शिषि साषा
दीठ जानि सो मारन दौरी ॥ भागे दधि मुख मारि हथोरी ॥
इक दिन गये भवन में आना ॥ जड़ि कपाट लागे दधि खाना
ताही क्षण धनि आइ नि आई ॥ टेरत बार बार अकुलाई ॥
कह्यो श्याम भल टेरन देहू ॥ निरभय बस्तु खाइ तुम लेहू ।
तेहि जब द्वार खुलत नहिं जानी ॥ तब पर मांगि निसेनी आनी ।
भीति लगाइ चढ़ी छति जबहीं ॥ कृष्ण खोलि पट भागे तबहीं ।
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई ॥ लगी देखावन सखी बोलाई ॥
बाहेर कढ़त भयो यह दाहू ॥ कहो इहां किमि करिय निबाहू ।
जो यशुमति ते जाइ पुकारैं ॥ लखि नंदान न हंहैं मही हारैं ।

दो० जिमि अबूझ नृप के रहे बातन केर निआउ ॥
जतिहि चढ़ावत सूरि पर चढ़्यो बात सुनि राउ ॥

चौ० जो प्रथमैं मोहिं होतो ज्ञाना ॥ मेरे घर आयो है कान्हा ॥ ॥
तौ गहि भवन यशोदै लोती ॥ सुतकी सब लीला देख रोती ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब जानी मम साथिनि रामा ॥ बीते समय बुद्धि किस कामा ॥
एक दिन एककर पकरि लुटावा ॥ मुनिजननी मृदु बचन सुनावा
तुम्हरी कृपा लह्यो सुत मोहू ॥ देहु असीस करो सब छोहू ॥
मोहि प्राण ते बहुत पियारो ॥ बिन अपराध जात नहिं मारो ।
निज नयनन देखिहौं जब बीरा ॥ देहौं दराड धरहु मन धीरा ॥
और दराड तुम कछू न कीजे ॥ एक दुइ बरधम कीदै दीजे ॥
नृप बिन नीति प्रीति बिन सारे ॥ बिगरि जात सुत बहुत दुलारे
नीति निपुन नर बाल ते लाजे ॥ सूप बजाय सुत रन भाजे ॥

दो० एक दिन गे गृह एक के बैठे देख्यो ताहि ॥
पाछे ते मूंदे नयन सो सांगे को आहि ॥
दई सयन सब सखन सों ले गोरस समु हाय ॥
गये निकरि जब दूरि तब आपहु भगे बिराय ॥
जिनके घर नहिं जाइ ते विधि ते कहें निहारि ॥
कब ऐहैं हमरे भवन खैहैं माखन चोरि ॥

चौ० तब ताही के मंदिर जाहीं ॥ प्रीति समु झि दधि माखन खाहीं
खटक सुनत तुरते भजि जावें ॥ उरहन के मिसि देखन आवें
सुनि सुनि श्याम बदन की बानी ॥ प्रमुदित होइ बात सोइ ठानी
एक दिवस मिलि गोप लुगाई ॥ भवन आइ बोलीं सुनु माई ।
अबे तो कान्ह बरस षट केरे ॥ करत रहत छल बल बहुतेरे ।
बड़े भये धौं करिहैं काहा ॥ यही अंदेशा बड़ो है ताहा ॥ ॥
चितवत जेहि तन मृदु मुसक्याई ॥ सो बिन मोले जात बिकाई
डटी बस्तु फिरि ताहि नि छोड़े ॥ माखन हित सबके घर मांड़े ॥
करि जाने बहु भांति बहाना ॥ को धौं गुरू मिला नहि जाना ।
बधे बच्छ तजि धेनु पियाई ॥ सोवत लड़ि कन देत जगाई ॥

दो० कबहूं अंधेरे भवन में आपो रहत डराइ ॥

पाछे दीपजगाइ केभाजतताल बजाइ॥

चौ० बोलीमहरिसुनोहेमैया॥ तुम्हरे विधि दीन्हीबहुगैया॥
दधिमाखनभावैसोखाहू॥ परघरकत चोरनकोजाहू॥
माखनचोर कहैं सबनारी॥ सुनितेकोनहिंलागतख्वारी
फिरत धरावत मेरोनामा॥ मातुनदेतहोइगोधामा॥
परघरकाजकीन्हेकायावत॥ नाहकनिरमलपितहिलजावत
मातुबचनकरिश्रवणकन्हाई॥ बोलेतबनम्रताजनाई॥
हेमइयामैंखेलनजाहूं॥ काहूकेघरकछूनखाहूं॥
येइ मोहिंपकरिलैजावैं॥ नारिभेषकरिसंग पिसावैं॥
कबहूंगोमेंहेलधरावैं॥ कबहूं घरकीटहलकरावैं॥
कबहुंकजुरिमिलिटाढ़ीहोहीं॥ गावैंआपुननचावैमोहीं॥
मारिगुलिचनमेंहनतिलेहीं॥ तेहिपरआइउरहनादेहीं॥

दो० सत्यकहतबुधवामकोपलटतलगैनदेर॥
तियइलखौपतिकुपथमेंपतिहिकस्यौतेहिजेर॥
हमहूंनिरबलविप्रसमकरैंकालगुदरान॥
आखिरअहिरघुनाथभनिहैनभेककल्यान॥

चौ० औरोसुनोकर्मइनकेरे॥ मलैंसुअंगअंगमामेरे॥
कबहुंकपकरिमिजावैंपीठी॥ कबहुंतकैंतिरछीकरिदीठी
कबहुंकहमैंद्वारबैठाई॥ आपुसहितपतिपैदैजाई॥
सुनिगोपीबोलींमुसक्याते॥ सुनोमहरिनिजसुतकीबाते॥
कहतीहोजानतकछुनाहीं॥ भरेसकलगुनइनकेमाहीं॥
तुम्हरेनिकटसाधुसेदीसै॥ हैंखोटेअतिबिस्वाबीसै॥
झूंठकिसांचसांचकीझूंठी॥ करतरहतयहविद्यामूठी॥

दो० सुनारहेकोइचतुरनरनृपकीभेरिप्रमान॥
नाचिआयोघरखघतइनतेहूकेकारेकान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० सुनियशुमतिकहसहितसनेहा ॥ तुमजानोकीजानेयेहा
तुम्हरीइनकीबातअगूढी ॥ बूझिनपरतमोहिमतिबूढी ॥
एकदिनमहरिश्यामकोलैके ॥ परीपलंगपरलकियादैकै ॥
लागीकहनकथासुखदाई ॥ जिमिअवतारलीनरघुराई ॥
बालबिनोदबिवाहउछाहू ॥ बिपिनिगवनभूपतिकरदाहू ॥
भक्तसनेहलषणसेवकाई ॥ कहिखरदूषणकेरिलड़ाई ॥
कह्योजानकीकरहरणजब ॥ कहैंधनुसरकहिकशाउठेतब
यशुमतिडरपिउछंगलगायो ॥ बोलिसयाननहिंफूकडरायो
कबहुंकरावैभोजननाना ॥ कबहुंसिंगारेरूपनिधाना ॥
कबहुंबस्तुमांगेहठठानी ॥ जेहितेहिभांतिदेतसोरानी ॥
कबहुंधेनुरविपसरुचरावें ॥ कबहुंभूपबनिनीतिसिखावें

दो० जाकेकुलकीरीतिजसगहतशिशुहिसोइबाट ॥
नृपसुतमन्त्रीकेगयोतहंउठेनृपठाट ॥

चौ० एकदिनकह्योमातुमोहिंदाऊ ॥ आजुसखनबिचबहुतखिझाऊ
मोसकहैंमोलकोलीन्हो ॥ नंदबदलिबसुदेवैदीन्हो ॥ ॥ ॥
मातपिनागोरतेंकारो ॥ वैसूधेतेंकुटिललबारो ॥ ॥ ॥
सुनिमाहसिअंचलमुखघेरी ॥ मैंजननीतबतैंसुतमेरी ॥
कहुरिकह्योमोहिंबिपिनिलवाई ॥ कहिहाऊआवतकुहल्याई
लौंडरिंगइभगततबतीरा ॥ सबबहुनेकधरावतधीरा ॥
जानीमातुबुरीतंजाने ॥ फिरिकैवोखेलनासुसंगठाने ॥ ॥
अबतेंकहौरहुघरमाहीं ॥ तौमैंपकरिपिटावौंताहीं ॥
तबकछुकान्हनउत्तरदयऊ ॥ कहैंरघुनाथहरषिउरलयऊ
इत्यादिकयशुमतिसुखदेवें ॥ सर्वाराध्यधन्यकरिलेवें ॥
कहनृपकौनधर्मइनकीन्हा ॥ छपाबाललीलासुखदीन्हा
कहमुनिसुमसुदृोगाप्रधाना ॥ धामसमिपराधेभगवाना

विधि आये तिनतें इन काहा ॥ सर्वाराध्य होय शिशु लाहा ॥
एवमस्तु कहि विधि तेहि भावा ॥ नन्द महरि सोई सुख पावा ॥
प्रथम रहे द्रोण सन्दन भाला ॥ अब लीन्हेउ निरखत सुख नाता ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रा-
मसनेही कृत कृष्ण दधिचोरी बाल विलास वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख खानि ॥
कहौं दशम की रीति कछु ब्रह्मवैवर्तक जानि ॥

चौ० एक दिन सुनौ नन्द की रानी ॥ मथत रही दधि लिहे मथानी ॥
प्रभु करि अति उन्नत पट धारे ॥ ता पर किंकिणि जाल सवारे ॥
सुत अनुराग स्रवत कुच छीरा ॥ वर कुण्डल लोल शरीरा ॥
श्रमकन तन प्रकंट अति लसहीं ॥ सुमन मालती सिर ते खसहीं ॥
आइ कृष्ण तहँ भोजन माँगे ॥ मथि लीजै नब दीजै लागे ॥ ॥
ताही समय दूध उतराना ॥ दौरी तुरत उतारन जाना ॥ ॥ ॥
तब प्रभु निज मन कीन्ह विचारा ॥ हम ते भा पय बहुत पियारा ॥
गहि पाथर मटुकी महँ दयऊ ॥ फूटि मटुक गोरस बहि गयऊ ॥
यशुमति देखि क्रोध कियो भारी ॥ श्रम करि पकरत भई प्रचारी ॥
ऊखल में पुनि बाँधन लागी ॥ रंगी युग अंगुल सो पुनि माँगी ॥
यहि प्रकार रसरी बहु जोरी ॥ युग अंगुल घटि रही बहोरी ॥ ॥
गोपी सखी कहैं सब नेरे ॥ देख्यो आजु चरित सुत केरे ॥ ॥
अब तक कहे मो सुत सूधा ॥ काढ़त आजु छुरी कर दूधा ॥
जाना श्याम मातु खिसियानी ॥ लीन बँधाय एक रजु मानी ॥

दो० कृष्ण गई असनान तब महरि मुदित मन होइ ॥
यमलार्जुन की सुरति करि चले घसीटत सोइ ॥
धनपति के सुत ज्ञानि भ्रम नलकूबर मणिकंद ॥
नारद के श्राप ते भये दोऊ तरु छार ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जलविहार युवतिन बिषे देखि नगन सतवार
होउ विटप कहि पुनि कह्यो हरि करिहैं निस्तार॥
चौ०। निकसे प्रभु लिन तरु भेजाई। जलवल भरत गिरे अररा़ई॥
दिव्य पुरुष प्रकटे तहँ दोई॥ लागे करन बिनै भूमि सोई॥ ॥
रोला छं०। जयति जयति जगदीश ईशन व चरित अनन्ता॥
सुनत कहत अघ दहत ग्रहत दृमि सव मुनि सन्ता। जयति
मच्छ वपु धरयो सत्यव्रत प्रलै दिखावन। जय वराह वनिना-
थ कनक दृग दलि महि लावन॥ जय कूरम गिरि धरत रतन
चौदह उद्धारन। जय नृसिंह हति हिरणयकशिप प्रहलाद उ-
बारन। जय बावन बलि छलन चरण नख सुरसरि जावन।
जयति परशुधर सहसबाहु औरि विप्र रिझावन॥ जयति राम
सुर सुखद सन्त मुनि दशमुख गंजन। जयति कृष्ण कंसारि
असुर अरि तारत रञ्जन॥ जयति बौध श्रुति दोष दनुज छ-
ल पुराय छुड़ावन। जयति कलंकी निधन नीच छिति करि
हौं पावन। जयति व्यास वेदार्थ सोधि कृत विविध पुराने॥
जय पृथु प्रथवी दुहन भूजि प्रतिमास बठाने॥ जयति हंस बि-
धि सुतन अश्नकर उत्तर दीन्ह्यो। जय शंभु मनु आदि प्रजे-
जिन पखट कीन्ह्यो॥ जयति ऋषभ अर्हंत मार्ग जरि बुधन
दिखाई। जय हयग्रीव दनुज मारि निगमान्यो राई॥ जयति
धनु प्रद काम सम्राट भे मुनि जन काजे। जय ध्रुव करि हरि-
भजन अचल अस्थान विराजे॥ जयति धन्वंतर रूप जग-
त भौं निरवारक। जय बद्रीपति शक्र केर मद मान प्रहार-
क॥ जयति कपिल सुत सगर दहन गंगो दधि वासी। जय
दत्तात्रे ज्ञान भक्ति वैराग्य केरासी॥ जयति देव ऋषि ज्ञानि
ना यति इच्छा ठाने। जय सनकादिक ब्रह्म निरत पुरा सु-

नि सुख मानैं ॥ जय इति चौबिस बपुष धस्यो निज भक्तन हे-
ता। औरो होत अमाप मापि को पावै तेता ॥ जय प्रभु याही रू-
प मम हृदय बस्यो छबि सिंधु। शीश नाइ रघुनाथ निज
लोक गये दोउ बंधु ॥

दो॰ जासु नाम जग जाल ते देत बिनय भ्रम छोरि ॥
सोइ प्रभु जन बस मातु की तजत नखौं धी डोरि ॥
खग मृगादि शठ आपु ते कीन्हे अधिक महान ॥
अस प्रभु को निज ईशता तजि राखो जन मान ॥

चौ॰ सुनि यशुमति बिलखत ढिग आई। बंधन छोरि लिहिनि उरलाई
कीरति आदि लगीं सब दूषण ॥ गोरस हित बाँधे ब्रज भूषण ॥
धन गोरस अरु जन्म तुम्हारो ॥ जाते सकल ताहि तुम मारो ॥
राम जननि कछु कह्यो नतेहू ॥ मैया इन बिच दखल न देहू ॥
ताही समय नन्द घर आये ॥ सुनि यशु मति को बहुरिसि वाये
तब सबहिन मिलि कीन बिचारा ॥ इहाँ होत हैं बिघन अपारा ॥
चलो बसौ बृन्दाबन माहीं ॥ सकल सुपास सहित सो आहीं
चले सकल वृन्दाबन आये ॥ बसे सुथल जेहि का जो भाये।
श्री वृषभानु खबरि यह पाई ॥ सहित समाज रहे तहँ आई
वृष रवि कुँवरि नन्द घर आवै ॥ नन्दलाल कीरति पुर जावै ॥
बालक प्रीति परस्पर देखी ॥ तात मातु सुख लहे बिशेषी ॥
तहाँ एक दिन नन्द कन्हाई ॥ गये खरिक लग वावन गाई ॥
आई तहँ वृषभान दुलारी ॥ नाम राधिका छवि अधिकारी।
जासु जेठर ते भयो बिरादा ॥ दीन चलाइ कृष्ण तेहि डारा ॥
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई ॥ भली बात ब्रज बिहरत सोई ॥
जाके नयनन मध्य निहारा ॥ चौदह रतन दशो अवतारा ॥
चारि चारि खग मृग फल फूला ॥ लजत जासु बपु देखि समूला

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० भजत बिबिधि अवतार जब बहुत जन्म करि यत्न॥
तब राधा पद मिलत इमि कह हरि लीला रत्न॥

चौ० जे राधा राधा अस कहई॥ राम कृष्ण तिन के बस रहई॥
हरि ब्रह्माण्ड पुराण मंझारी॥ कह्यो राध आराध हमारी॥
तेहि प्यारी को जब हरि देखा॥ भये मुदित इत प्यारि उपेखा॥
तेहि क्षण झुकि आयि घनकारा॥ नन्द दीख जब अति अँधियारा॥
राधा ते बोले धर आहू॥ श्यामें दिहों सौंपि सब काहू॥
कर गहि चलत भई धीरे धीरा॥ आये दोउ यमुना के तीरा॥
तहँ लखि माया की प्रभुताई॥ मणि मन्दिर शुचि सेज सोहाई॥
श्याम सहित पर्यङ्क पधारी॥ परत पेखि तेहि तरुण बिहारी॥
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजे॥ मानुष जन्म पालि सुख लीजे॥
इतनी कहत स्वयंभू आये॥ सुर समस्त सामग्री लाये॥
मंगल मय मंडप तहँ छाये॥ बेद रीति सब कर्म कराये॥
बिधिवत ब्याह होन तब लागा॥ गावें सुरी सहित अनुरागा॥
कन्या दान बिधाता दीन्हा॥ बिधिवत कृष्णचंद्र सो लीन्हा॥
सब बिधि ब्याहि चलन जब लागे॥ दारहु भूमि भार बर मांगे॥
कहि जब गये भये प्रभु योवन॥ पूज्यो प्रिया मनोरथ को मन॥
बाल रूप ह्वै पुनि गृह आये॥ श्री जय देव चरित ये गाये॥
इक दिन कृष्ण बूझि दिन अच्छा॥ ग्वालन साथ गये लै बच्छा॥
लागे बिपिन चरावन जबहीं॥ आयो असुर बच्छ बन तबहीं॥
कृष्ण पूंछ गहि महि दै मारा॥ मरिगा जब तब सखन निहारा॥
एक दिवस यमुना के कूला॥ रहे चरावन बच्छ समूला॥
धरि बक रूप बकासुर आवा॥ लिहिसि लीलि श्यामहिं सह चावा॥
दीन्हिसि उगिलि अगिन उरजारी॥ निकसे तुरत चोंच गहि भारी॥
बाल बिलोकि सकल हरषाने॥ गावत गुण निज मरन तुलाने॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इक दिन खेलत रहे मुरारी ॥ आवा निकट प्रलम्ब सुरारी ॥ ॥
खेलन लाग बालकन संगा ॥ जबतब करै सखन ते दंगा ॥ ॥
जानि गये बलदेव कुमारा ॥ पकरि ताहि पुहकरते मारा ॥ ॥
दिव्य रूप है हरि पुर गयऊ ॥ मुनि दुरलभ कैसे पद भयऊ ।
इनके पूर्व जन्म कर हाला ॥ कहौं सोऊ तुम सुनी भुआला ।
बक प्रलम्ब केशी बत्सा सुर ॥ गंध मदन गन्धर्व के सुत फुर ॥
मुनि दुर्वासा शिष्य किये सब ॥ हित उपदेश दियो तिनको तब
पदुम सहस बरस तुम धारो ॥ विष्णु लोक में जाइ बिहारो ॥ ॥
लगे करन सोइ धरि उत्साही ॥ हरिमें प्रीति जनन में नाहीं ॥ ॥
मिले न तब शिव सर तेलाये ॥ दीन्हेउ श्राप उमा लखि पाये ॥
होउ असुर तुम चारो जाई ॥ पति मुख कृत सुनि करुणा आई
बोली हरि कर मृत्यु पैहो ॥ असुर योनि तजि हरि पुर जैहौ ।
तेई असुर है यह गति पाई ॥ अब सुन अपर कथा सुखदाई
इक दिन सखन सहित नदनन्दा ॥ रहे बिपिनि फादत फर फन्दा
तहं अहि रूप अघासुर आवा ॥ इक इक योजन अंग बनावा ।
बदन पसारि रहा तिन तीरा ॥ करि बिचार प्रविसे सब बीरा ॥
श्याम गये जब तब मुख चांपा ॥ बादत भये कृष्ण करि दापा ॥
उदर फारि पुनि बाहर निकसे ॥ सखन सहित बिषधरलखि बिकसे

दो० भूप वन्तिका पुरी को पुन्य कार मृग बढ़ ॥
कीन देखि गोतम दियो श्राप होइ असुरढ़ ॥
करी बीनती भांति बहु बार तन धन प्रान ॥
दीन दुखित लखि लोल पुनि बोले ऋषै सुजान ॥
ऐहैं जब गोलोक तजमें कृष्ण कुमार ॥ ॥
मृत्यु पाइ तिन हाथ ते होइ तब उद्धार ॥

चौ० सोई भयो अघासुर आई ॥ अपर कथा सुनिये ऋषि राई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक दिवस गे पुलिन मँझारा। निज निज भोजन सबन उतारा।
लागे खान स्वाद मुख गाई। सो सब चरित देखि बिधि आई
चहुँ दिशि उड़ुइव बाल अनन्ता। मध्य बिराजत शशि भगवन्ता
देत श्याम सब का सब ध्यामे। तब तौ ब्रह्म। स्योदु बिधामे।।
जिमि भुशुराड संग खेलत गेहा। भये भ्रमित तिमि कृत संदेहा
ये अवतार कवन बिधि आहीं। सबहिन की जूठनि जे खाहीं।
हममहुं बिवाहि गयनु इक बारा। अब कछु चही प्रभाव निहारा
अस बिचारि बछरा हरि लेगे। दूढ़न चले कृष्ण सब हरि गे।।
बालन हूं को तब हरि लीन्हा। जाना श्याम चरित अज कीन्हा
तुरत बच्छ बालक रचि लीन्हें। ज्यों का त्यों कछु जात न चीन्हें
माता करें अधिक अस नेहा। धेनु पियावे तजि नव गेहा।।
सन्तत करे चरित प्रभु सोई। जाना राम अपर नहिं कोई।।
बरष एक यहि बिधि चलि गयऊ। इत उत लखि अज बिस्मत भयऊ
पुनि सब बाल लखे हरि रूपा। सेवत पद बिधि भव सुर भूपा।
ब्रज बासी सब बिबुध समाजा। बहुरि दीख प्रभु आप बिराजा
बस्तु गई सो चिन्ता भारी। लज्जित है अज हृदय बिचारी।
देखो अति मेरो अज्ञाना। त्रिभुवन पति तिन ते छल ठाना
निकट आइ थिर नाइ बिधाता। लागे करन बरगा पुलकाना
नमो नमो त्रिभुवन पति स्वामी। नमो सकल उर अन्तर जामी
श्याम शरीर पीत पट कांधे। गुञ्जा भूषण दोउ कर बांधे।।
बिम्बा धर आनन छबि सींवा। जलजमाल कौस्तुभ मणि ग्रीवा
शीश मुकुट श्रुति कुंडल लोला। अंग अंग प्रति बसन अमोला
अरुण अंघ्रि पद मास बिशाला। करि कर भुज तिलका वलि भाला
कुंचित कच नाशिका सोहाई। बेणु बाद पर पालक गाई।।
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा। भयो अनुग्रह हेतु हमारा।। ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अहै सो इच्छामय वपु माहीं। पंचभूत की रचना नाहीं॥ ॥
असि समर्थ नाहिं मोहिं मुरारी। जानी महिमा अगम तुम्हारी
जावत अस वपु हृदय न धरहीं। आतम रूप विचारें करहीं॥ ॥
तावत ज्ञान परिश्रम आहीं। अस विचारि बुध त्यागत ताहीं
सुमिरि सदा यश विमल तुम्हारा। साधुन मुखानेक सत जो सारा
काय वचन मन तुम को ध्यावे। तुम्हरे जन मन में अति भावे॥
जीवन मुक्त अहैं ते ज्ञानी। जे तव पद पंकज रति मानी॥ ॥
यद्यपि हो तुम स्ववस अजीना। तदपि इन तुम का प्रभु जीता
तावन हैं रागादिक चोरा। जावत गृह के बंधन घोरा॥ ॥ ॥
तावत मोह निगड़ पैरे सोई। जावत कृस्न न तव जन होई॥ ॥
भक्ति तुम्हारि सकल सुखदाइनि। हे कल्याण करण मन भावनि
तेहि तजि केवल बोध इ लागी। करत यतन अनुदिन अनुरागी
तिनकर रहत परिश्रम सेवा। तव अस्थूल सघन कस लेखा
हो सुनंत तुम अपनी माया। करि विस्तार त्रिभुवन निकाया॥
तुमहीं शोभित हो जग भूपा। सृष्टि काल तहँ ब्रह्म सरूपा॥
तुम जग पालन काल मुरारी। संहारण हित तुम त्रिपुरारी॥
भूर जनक नभ नखत जे आहीं। काल पाइ सापनि होइ जाहीं॥
हितकारी तुम्हरे अवतारा। तिनके चरितन केर न पारा॥ ॥ ॥
तेहि ते करुणा दृष्टि तुम्हारी। है सब पर सामान्य मुरारी॥ ॥ ॥
आपन कीन कर्म है जैसे। अनायास भुंजत नर तैसे॥ ॥ ॥
नमस्कार तिनका बड़भागी। जिनकर मन तव पद अनुरागी॥
ते अनित्य भवसागर एहा। तरत बत्स पद सरिस सनेहा॥ ॥
तुम अनादि में आदि अपजानी। मायापति ने माया ठानी॥
तुम्हरे अंग का मेलन का। वृहद समूह केर जिमि कनका॥ ॥
कह मम सान विता की काया। कह तुम आगिन अंड उपाया

सकलसृष्टि तव उदर मझारी॥ तेहि ते छमिये शुनह हमारी॥
बालगर्भगत चरण चलावै॥ मातु सोचि अपराध न लावै॥
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी॥ है तुमते उतपत्ति हमारी॥ ॥ ॥
जब मैं नाभकमल ते भयऊं॥ तब फिरि ताके भीतर गयऊं॥
बरष एक सत खोज्यौं तोही॥ तबहुं न देखि परे तुम मोही॥
तप करि तहँ देख्यो तव रूपा॥ कोटि भानु सम तेज अनूपा॥
तम करि अंध चखु अभिमाना॥ तुमते पृथक ईश मैं जाना॥ ॥
तुम मम नाथ दास मैं तोरा॥ क्षमहु देव अब औगुण मोरा॥
दयायोग्य मैं अहौं तुम्हारी॥ ईशनके तुम ईशखरारी॥ ॥ ॥
सुनि बिनती चतुराननकेरी॥ पोछे दृग प्रभु निज पट फेरी॥ ॥
जाहु धाम कह कृपानिधाना॥ तजि मद मोह नर्क बिधिनाना
सुनि अज पदरज धरि शिर गयऊ॥ बच्छ बाल लै आवत भयऊ
जहं तहं धरि निज लोक सिधाये॥ बरष बंटोरि कृष्ण तब आये
बोले बालक सुनिये ताता॥ तुम बिन नहिं खावा दधि भाता
लागे बहुरि सकल मिलि खाना॥ विधि छल बल काहू नहिं जाना
गीतिका छं०। जाना न काहू मरम भोजन खाइ अस बोलत
भये। फल ताल लागे हैं सबै सखा मिलि खान के हित चलि गये॥ ध-
रि रूप रासभ केर धेनुक असुर यक तहं आयहू। पग पकरि पट-
केहु बिटप पर बलि राम सब हुन पायहू॥

सो० बलि सुत सह सिकनाम। हरि जनबन अपसरा लखि॥
भा सुनि थल बसकाम। दीन श्राप उद्धार कहि॥

दो० सोइ यह धेनुक असुर भयो गयो गति पाइ॥
मात नंत रघुनाथ सब कही कथा घर आइ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सने-
ही कृत कृष्ण बलबंधन यमलार्जुन उद्धार राधिका बिवाहन वत्सा वच्छह-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

णाधेनुकबधकरणकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंदशमकीरीतिकछुगर्गप्रदितमनआनि॥

चौ॰बालचरितबरनेऽघपतिपावन॥औरसुनौजेहैंमनभावन
इकदिनरामभवनबिहाई॥अपनागयेचरावनगाई॥ ॥
यहुँवेजनकालीदहतीरा॥पियतभयेगोबालकनीरा॥ ॥
मरेतुरतपुनिकृष्णजियाये॥सुरभिननिजरबच्छपियाये
लागेखेलनगेंदकन्हाई॥चढ़ेविटपशिशुमारिसिधाई॥
उछरिगेंदकालीदहगिरेऊ॥ताहीसंगकूदिप्रभुपरेऊ॥ ॥
गयेसपदिकालीकेतीरा॥निरखिचपटिगासकलशरीरा॥
निखुकिचढ़ेताकेसिरकूदी॥गरुयेंहृडारेफनखूंदी॥ ॥ ॥
चलारुधिरमुखचखुननेरे॥सिथिलअंगभेविनमदकेरे
नाथलीनदकृशाकृपाला॥बिनवतभईनासुकीबाला॥
नौमिकृष्णभंजनभयभारी॥नटवरभेषसुभगसुखकारी
पतिअपराधक्षमियभगवाना॥मोहबिवसमहिमानहिंजाना
सुनिबिनतीबोलेयदुराई॥रौनकदेशबसहुअबजाई॥॥
हेहमतेरखगपतित्रारी॥अनलगयेडरिहैंसोमारी॥ ॥ ॥
सबअहिदेतरहेभोजनतेहि॥ वसरीयरहमदीननहितयाहि
भितरतिभिरनुहमहूधरिधीरा॥हारिपराइदुरेनुयहितीरा
इहाँआयसोभरिक्रोधकेरी॥तेहितेगरुडकरतनहिंफेरी
कबहुँबैठितरुउगिलीमाँजरि॥कहमुनिपुनिआवतजैहैजरि
मेरोचरणचिन्हतवमाथा॥लखिअबबोलीनहिंखगनाथा॥

दो॰ पूर्वजन्मकोभूपतेंमदबसममपदमाथ॥
लिख्योदिह्योतजिसिरसिलेहिभयोसर्पपदमाथ॥

चौ॰उहाँनिकटगढ़ब्रजलोगा॥रोदनकरहिंसकलबसशोगा॥

यशुमतिनन्दनधीरजधरहीं॥संकर्षनउपदेशहिकरहीं॥
धरहुधीरगुणागुणिमनमाहीं॥कतहुंजादुकुसमहिभयनाहीं
तेहिअवसरउकेरयदुनाथा॥कालीसहितचढ़ेतेहिमाथा
लागिकरणानिरतपुनिकान्हा॥हरषेसकलमिलेजनुआना
उतरेजबतबरूपहिसिरनावा॥कुटुंबसहितरौनकहिसिधावा
कुसमहिंसबभेटैंपुरवासी॥तातमातप्रमुदितचरदासी॥
तेहिदिनरहेसकलतेहिघाटा॥असुरएकपठकेगेरडाटा॥
चहुंदिशिझारवरसूधिबनाई॥तेहिबनदीन्हिसिआगिलगाई
भयेविकलसबशरणपुकारे॥करिदवपानतुरतउबारे॥॥
रोहितचिन्हननेकुलखाना॥आयेभवनकरतगुणगाना
तेहिअवसरवरषाऋतुआई॥सचराचरसबकेसुखदाई॥
निज२गृहसबछावनलागे॥जिमिचेलहिंबुधजनपनआगे
उमड़िघुमड़िनभजलधरआये॥दानदेनजनुसुधनिकधाये
बगुलपांतिसोहतयहिभांती॥जिमिशुक्लतिनउरटेकसोहाती
नितेहिंमोरमुदितघनपेखी॥गृहीबिरक्तजिमिहरिजनपेखी
बरषतजलथलअमलभयचीन्हे॥जिमिसंपतिरघुपतिकेदीन्हे
भईकीचनरचलतनिहारी॥जिमिसज्जनजगमाहिंबिचारी
बोलतदादुरनहिंअलसाता॥जिमिसठकरतअकारणबाता
तड़ितचमकिफिरिजातबिलाई॥जिमजसतनधनसुततियभाई
बहुरिनीरआवतसरमाहीं॥जिमिसदगुणसबसज्जनपाहीं

दो॰ जोतहिंबबहिंकिसानमहिऋतुकरबीजप्रमान॥
जिमिशुभसाधनकरिकरहिंयुगकरधर्मसुजान॥

चौ॰प्रविदपाइवनसंकुलजामा॥बिषैसंगजिमिबहुविधिकामा
विविधजीवप्रगटेमहिआई॥प्रजाबढ़तजिमिनृपबरपाई॥
जरतजवासआपनेदोषा॥जिमिकुलनासहोतद्विजरोषा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

फलफारि विटप अवनि झुकि आये। जिमि सुधा सुख सम्पति पाये ॥
लागत मधुर बचन पिक केरे ॥ जिमि हरिचरित सन्त मुख तेरे ॥
प्रगटत कबहुं छिपत रबि भानू ॥ यथा सुसंग कुसंग ले ज्ञानू ॥

दो॰ भरयौ जल परिनाजमें ऊसर में नहिं कोइ ॥
हतभागिन के ज्ञान जिमि कथो सुने नहिं होइ ॥
चली क्षुद्र सरिता उमड़ि जिमि थोर धन नीच ॥
अचल होत जल जलधि महं यथा जीव हरि बीच ॥
द्वै महिना की दृष्टि ते भयो अन्न संपुष्ट ॥ ॥
रामनाम के रटे जिमि होत भक्त जब तुष्ट ॥ ॥

चौ॰ यहि बिधि बरषा ऋतु के माहीं ॥ बन बन कुसुम तिन सम कुसलाहीं
कबहुं तोर फल खेलैं गोली ॥ बोलैं कबहुं द्विजन की बोली ॥
कबहुं करैं षटपद गुंजारा ॥ कबहुं कास बनि कूदहिं डारा ॥
कबहूं बक कहं बेनु बजावैं ॥ देख नारि तन सुधि बिसरावैं ॥ ॥
गो वृष आदि बिपिन पशु जेते ॥ सुख तृण दाबि सुनैं धुनि तेते ॥
बत्स गेह सुख थन रहि जावैं ॥ नचहिं मोर सुद्ध पोर न पावैं ॥ ॥
खग सब शब्द सुनैं अनुरागे ॥ यमुना जल बहि सकत न त्यागे
आतप ते पावस हे जावैं ॥ पावस से आतप दरसावैं ॥ ॥ ॥
उठे फूलि लरु सिला पसीजे ॥ मुनिजन सकल प्रेमरस भीजे
ब्रजबासी सब रहैं निहारी ॥ फरकि उठहिं सिर छाव सिर धारी
बन्द करहिं जब तब सब जागे ॥ प्रमुदित है निज कारज लागै
एक दिन श्याम सखन युत भाये ॥ चलत मुञ्जावन आये ॥
चहुं दिशि से दावानल लागी ॥ जाइ कितै बालक भागी ॥
शरण भये नयन मुदाये ॥ देखें सब दव बाहर पाये ॥ ॥
मास दिवस भरि गोप कुमारी ॥ देवी की पूजा अनुसारी ॥ ॥
कात्यायनी रूपा उपवकीजे ॥ नन्द सुवन हम का पति दीजे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ग्वालपियसअरुसोवतजागत॥हरिपरिहरिचितअंतनलागत
अजहूंजासुमनहोइमगनअस॥कृपासिंधुहरिहोइतासुबस

दो० एकदिनसबकरतीरहैंयमुनामेंअसनान॥
चीरहरेलहैंआइकैऔचटश्यामसुजान॥

चौ० लटकायेपटकदमकिडारी॥मांगहिंसबमिलिगोपदुलारी
चीरदेहुतुम्हरीझमनतबहीं॥जलतेबाहरह्वैहौजबहीं॥ ॥
निकसींसबकरतलकरिओटा॥बोलेबिहँसिनन्दकेढोटा॥
दोउकरजोरिबिनयअसकीजै॥करतभईंसबतबअबलीजै॥
पूजेहुतुमजेहिहेतभवानी॥सोहमप्रगटभयहुबरदानी॥
जबतकजगकीलाजनखोवै॥तबतकमोहिंनप्रापतहोवै॥
असकहिअमितबनायेअंगा॥कीन्ह्योकेलिसबनकेसंगा
कमलाललिताबिमलाबिशेषा॥चन्द्रकलीसुखमादिकशेषा
जबतबसबकेसदनबिहारी॥जातकहतएकएकहिप्यारी
सपनबचनसुनिगोपिनकेरे॥करिआदरआवहिंबलिनेरे
एकदिनगेराधिकानिकेता॥बैठारिनिनिजढिगकरिहेता
श्यामबदनलखिआपनिछांहीं॥अपरनारिजानीमनमाहीं
कीनमानहरिनेहजनावा॥दूतीबनिबहुभांतिमनावा॥ ॥
कबहूंबैठेंपनिघटजाई॥काहूकेसिरधरेंउठाई॥ ॥ ॥
काहूकरघटडारेंफोरी॥लेयशुमतिलैकहैंनिहोरी॥ ॥ ॥
एकदिनदधिबेचनकेहेता॥चलींसकलब्रजबधूसचेता
सखनसहितयदुनन्दनहेरी॥मारगबीचलिहिनिसबघेरी
दीजेदानजानतबपैहौ॥हठकीन्हेपाछेपछितैहौ॥ ॥
डगरडगरमेंचलहुकन्हाई॥समुझिनलागेबहुतमोटाई
घिरपरकंसकबहुंसुनिपाई॥सकलतुम्हेंबंदिमाहिडराई
कंसहिंमारिमिलैहौंकारा॥उग्रहिकरिहौंबहुरिभुवारा॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हरिहौं सकल भूमि कर भारू ॥ याही हित मम अवतारू
झूठ बात मति बोलौ लाला । धेनु चरावत फिरत बेहाला
लकुटी हाथ कमरिया कांधे । मांगि खात दधि सबके रांधे
तुम ईश्वर नत हौ सोई ॥ बातन ते नहिं भूपति होई ॥ ॥
एक युवती पुनि अहिर गंवारी ॥ तुमको जानौ भूति हमारी ॥
ब्रह्मा शिव ध्यावैं नित हम हीं ॥ ऐसी दशा भई मिलि तुमहीं ॥
तुरत चतुर्भुज रूप देखाया ॥ लखि विश्वास सबन के आया
बोली सब हम हैं तव दासी ॥ भावै सो कीजै अविनासी ॥ ॥
प्रभु दिन कीन विहार बिहारी ॥ फिरि आई निज भवन निहारी

दो० एक सखी उनमत्त है टेरै सबके द्वार ॥ ॥
लेकोई ग्रथा मैं मोल दधि लीन्हीं नन्दकुमार ॥

चौ० अति बहु केलि गोपिकन केरी ॥ संक्षेप मैं कछुक निबेरी
सुनहु एक दिन एक ठिकाने ॥ गये चरावन सखा भुखाने ॥
बैठि करत रहे तहँ जागा ॥ पठये लाव हु मांगि बिभागा ॥ ॥
जाइ सखन जब भोजन मांगा ॥ सुनि कटु बचन कहन सब लागे
आये भूम कहिनि सब खोले ॥ अब तुम जाउ तियन ढिग बोले
द्विजबनि तनते भाषि निजाई ॥ बिपिन भुखाने राम कन्हाई
तुम्हरे ढिग पठइनि है हमको ॥ सुनि आनन्द भयो अति सबको
बिबिधि भांति के भोजन कीन्हे ॥ छिप्र चलीं थारक रलीन्हे
आइ कृष्ण के आगे राखे ॥ प्रेम सहित सब हिनमिलि चाखे
एक केर पति रोकि सिधाई ॥ तनु तजि मिली प्रथम सो आई
दरशन पाइ चकित भई सारी ॥ कहत भये तब विपिन बिहारी
जाहु भवन अब डेहु न काहू ॥ तव सेवा करिहैं तव नाहू ॥
सुनि समोद आई अस्थाना ॥ तव सब द्विज लागे पछिताना
हमरे सकल यज्ञ धिर कारा ॥ धिक हमरे बल बुद्धि बिचारा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

धृकविद्यापढ़िवोसबजानो॥ धृकहमरेजपतपव्रतदानो॥
धृककुलमदअभिमाननिछयनू॥हाइकृष्णसनेविमुखजोभयनू
धनिपत्नीयेहरिमनभावन॥इन्हेंपरसिहमहूँहैंपावन॥
धेनुचराइजाइजबधामा॥अवलोकहिंछविमिलिसबवामा॥
कार्तिकबदीचतुर्दशिआई॥घरघरअंजनकरहिंलोगाई
यशुमतिभोजनविविधिबनाये॥कृष्णचंद्रलखिवचनसुनाये
आजुकौनउत्साहतुह्मारे॥सुरपतिकीपूजनहैंप्यारे॥ ॥
ब्रजवासिनकेइष्टविशेजा॥जासुकृपासुखबाढ़तरोजा॥
बरषतजलतृनजामतजाले॥चरतधेनुपयप्रगटततातें॥
रहियोदूरिछुयोजनिलाला॥कृष्णकहैगोदेवविशाला॥ ॥
बोलेमनमोहनसुनुमाई॥यामेंहरिकीकौनभलाई॥
ईशरजाइजाहिभइजोई॥पिरधरिसदाकरतसबसोई॥
कोइसिरजेपालेसंहारै॥कोइधरैपैकरैतेकोइजारै॥
इन्द्रकहाकरिसकतविचारा॥नीकजकूनहाथकरतारा॥
बहुदिनतेपूज्योसुरराई॥काहुइकबहुँदिहिसिकछुआई
तेहितेअबछाँड़ोसुरपूजा॥गोवरधनकीठानहुँपूजा॥
जेहिकेऊपरधेनुचरावत॥सदातासुहितुमसबबिसरावत
निकटरहतसबतेबड़देवा॥तेहितजिकरतआनकीसेवा
जबहींतुमपुजिहौमनमाना॥ह्वैप्रसन्नदेइबरदाना॥ ॥
याहीबातचतुर्भुजरूपा॥कहीस्वप्नमेंपुरुषअनूपा॥ ॥
निजनिजकर्मबचनकाअपक्षा॥तातेतुम्हैंयहीगोरक्षा॥ ॥
सबब्रजमेंयहबातप्रकाशी॥कौंसलकरनलगेपुरवासी
सबकेमनआईसुनिलीजै॥जोकछुकृष्णकहैंसोइकीजै
श्यामसमानहितूनहिंकोई॥प्रभुताईनिजनयननजोई॥
सुनिसबनिजनिजआश्रमआई॥सकलनमेंसबसोजभराई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नानाविधिपकवान मिठाई। विविधमूलफलफूल खटाई॥
सालनसाक अनेक सोहाये। जो निःसब सकट सिधाये॥
बाल वृद्ध यौवन नरनारी। चले सकलमन आनंद भारी॥
बाजेंबाजन विविध प्रकारा। गावहिंगीत बधूमिलिसारा॥
पहुंचे जब गोवर्द्धनपाहीं। टिके सप्तयोजनमाहीं॥ ॥
समाचार सुनिजहँ तहँ तेरे। आये औरो लोग घनेरे॥ ॥
कार्तिक शुदी प्रतिपदा केदिन। बोले कृष्णनन्दतें यहि छिन
प्रथमे तुम पूजहु गिरिराजा। तेहि पाछे सब गोपसमाजा॥
पूजत भये नन्द सरवागे। पाछे सकल चढ़ावनलागे॥ ॥
एक देह कृष्णरूप धरि दूजा। पूर्णावधाल अनेकन भूजा॥
श्याम शरीर मुकुट शिरनीका। कुण्डल माल मनोहर हीका॥
पीतवसन पहिरे सुठि आंगा। चक्षु चपल अलकें जनुनागा
लागे खान उठाइ उठाई। लखिवहरूपसब लोग लुगाई॥ ॥
तिनते कृष्ण कहत भेतवहीं। देखलु मैं ऐसे सुरकबहीं॥ ॥
जो नित्य स्तव पूजन ग्वाला। तुम्हरी कृपामिले सब लाला॥
ललिता सखी गई सब जानी॥ राधानें बोली मृदुबानी॥ ॥
देखो श्यामकेरि चतुराई। आपु पुजावत आपुहि खाई॥

दो० भलीवस्तु रघुनाथ सोइ जो लागै हित श्याम॥
नतरु भई बादिहि गई ज्यों पानी केदाम॥ ॥

चौ० एक सखी गृह भोगलगावा। कर पसारि नाहू कर खावा
भोजन करि बोलप्रभु याही। मांगहु बर जो भावै जाही॥ ॥
जो जेहि रूचा सोई तेहि मांगा। बोले नन्द सहित अनुरागा॥
नाथ देहु बर यह मम कामा। नीके रहें कृष्ण बलरामा॥ ॥
सुनहु नन्द तव पुत्र न केरा। सदा होय कल्याण निबेरा॥ ॥
सहित समान रहौ तुम आछे। एक बात होइ मम पाछे॥

ताकोतुमतनकोमोलडरियो॥जोकछु कृष्णकहैसोकरियो॥
असकहिदिहिनिबांटपरसादा॥अंतरध्यानभयेसहलादा॥
हनुमतबचनलागियदुराई॥परसिपरबतजिदीन बडाई॥
दो० सेतुकरनभाषूरसुनिदीन्ह्योंब्रजमेंत्यागि॥
मिलेनस्वशनमोहिंतोहिं द्वापरमेंएककलाणि॥
चौ० ऐसेप्रभुनिजजनकीबानी॥करनसोचमुनिकोनप्रमानी
जयति२ कहिकरतबड़ाई॥आयेपुरलखिलोगलुगाई॥
तबबासोऽपतिकोपतभयऊ॥बोलिमघपरलयकेलयऊ॥
ब्रजबासीसबगयेसोटाई॥देहुबहाइसहितगिरिजाई॥ ॥
टुकटावरकेकहेहमारी॥दिहिनित्यागिभरवांगिरिहिजोहारी
कौनिवातबड़िबरनिसिधाये॥घनवृन्तवातवत्रब्रजआये॥
घेरिधुमरिजलछाड़नलागे॥सकलकोपहरिपदअनुरागे॥
तुरतगोबर्द्धनलीनउठाई॥ब्रजपरदिहिनिछत्रसमछाई॥
नखपरधरेदेखिब्रजनारी॥एकएककेलकहेंबिचारी॥ ॥ ॥
चोरिचोरितबमाखनखायो॥सोसखिस्यामकामअबआयो
यशुमतिकहेनिहारिनिहारी॥सवपरशक्रविपत्तिपहडारी॥
केहूनहिंगिरिराजहिधारा॥हमरेसुतभारूकहदहरा॥ ॥
लेहुलेहुअबतेकोउलेहू॥लालहिनेकुउसासीदेहू॥ ॥
होअहीरकोहेकछुदाया॥तबमोहनमोलेसमुझाया॥ ॥
सप्तदिवसमुदिरनबनपीटा॥काहूकेतनपरीनछीटा॥ ॥
त्रिभुवनपतिजिनकररखवारा॥कोकरिसकेतासुअपकारा
हतसबघनचलिभयेलजाई॥सहसअक्षसुनिउठाडराई॥
आयोतुरतकृष्णकेपासा॥चरणानाइशिरबचनप्रकासा॥
नमोकृष्णभंजनमहिभारा॥अखिललोकनायककरतारा
जगतपितागुरुअजभगवाना॥रक्षकधर्मदलनखलमाना॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मैंऽप्रपराध कीन ऽप्रतिभारी॥ क्षमहु नाथ ऽप्रबचूक हमारी
जाना नहीं तुम्हें मैं ईशा॥ ताते करन चह्यौ ब्रजखीशा॥ ॥
जो जाते कछु पावत होई॥ मिलै न ताहि कोटि रिस सोई॥ ॥
हम तुम्हार सब भाँति बसाये॥ कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये॥ ॥
बोले कृष्ण तजहु सब शोका॥ धेनु संमेत जाहु निज लोका॥
मोसों निज ऽप्रधिकार सदाहीं॥ भूले मोहिं बहुरि सुख नाहीं॥
ऽप्राये सुर पुर ऽप्रायसु मानी॥ देखि प्रभाव सभा हरषानी॥ ॥
सब मिलि कहैं कृष्ण हैं रामा॥ इन्द्र दहु जासु करत परनामा॥ ॥
गोबर्द्धन कीऽप्राहि कृपारी॥ भुज चूमति जसुमति महतारी॥ ॥
कहै रघुनाथ चरित हरि केरे॥ भवसागर के बोहित बेरे॥ ॥ ॥
इति श्री विश्रामसागर सदमत ऽप्रागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसने-
ही कृत नन्द राय ने चतुर्मास चरित्र हरण दान लीला गोवर्द्धन लीला वर्णनो
नाम पंचमो ऽध्याय: ५॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि॥
कहौं दशम ऽप्रस्कंध की रहस रास रस जानि॥

चौ० इन्द्रहि श्याम स्वर्ग पहुँचायो॥ ब्रज आनन्द लखि ऽप्रति सुख पायो॥
बसैं बहुरि सब निज निज गेहा॥ यक दिन तहाँ चरित भा एहा॥
नन्दहि वरुण दूत लै गयऊ॥ कृष्ण जाय पुनि लावत भयऊ॥
सुनी सबन प्रभुता ऽप्रभिरामा॥ ऽप्रब सुनिये जिमि कीन्ह्यो कामा॥
यक दिन देखि सरद उजयारी॥ बन में ऽप्रावत भये मुरारी॥ ॥
हरिहित गुनि ऋतु गण तहँ ऽप्राये॥ सफल बिटप नहिं जाहिं गनाये
डोलत त्रिबिध पवन सुखदाई॥ लखित है प्रभु दिशि हृदय उराई
त्रिभंगी ह्वै बेणु बजाई॥ सुनि गोपी सब ऽप्रातुर धाई॥ ॥ ॥

दो० कोइ सुत तजि कोइ सेज तजि कोइ भूषण कोइ चीर॥
कोइ पय तजि कोइ पाक तजि ऽप्राईं जहँ बलबीर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोलेहरिब्रजराजतुमकीननकेकाकाम ॥
सासुससुरपितुमातुपतितजिआइउयहिठाम ॥

चौ० तेहितेअबहीं जाहुपराई ॥ सुनिगोपीबोलीं अकुलाई ॥
यहतौदोषनाथतेहिलागै ॥ अपरपुरुषतेंजोअनुरागै ॥ ॥
हमरेपतितुमहींमहराजा ॥ यामेंकहोकौनकीलाजा ॥ ॥
त्रिभुवननाथप्राणपतिदेवा ॥ कुरमिलितजियेभूठीसेवा ॥
जोइमिरैहेहियेनिठुराई ॥ कैयोंबंशीतुमफूंकिबजाई ॥ ॥
अपावैकोइआसरालगाई ॥ लोगेदोषदेइदुहलाई ॥ ॥
तेहितेनाथरहसअबकीजे ॥ सूधेसूधजवाबनदीजे ॥ ॥
बिलपतरुदतबदलइभिबाला ॥ देख्योकृपासिंधुछबिजाला
मायातेसबकह्योगोपाला ॥ रचहुरहसमंडलततकाला ॥
योजनपांचमाहिंअभिरामा ॥ रचतभई बंशीबटधामा ॥ ॥

गीतिकाछं० छबिधामबंशीबटजहांमणिजटितकंच-
नकीमही । तंहरासमंडलरच्योमोहनजातसोकापैकही ॥
नवसातसहसजुगोपिकासजिसाजसबठाढ़ीभई ॥ यकए-
ककेमधिएकमूरतिकामकीशोभामई । रघुनाथतिनकेबीचजोड़ीरा-
धिकानन्दलालकी । बपुएकरूपअनेककीन्हेखबरिनहि-
यहिहालकी ॥ मिरदङ्गतालसितारबहुमुरचंगबेणुसरङ्गि-
का । सुरमन्दबाजतबांसुरीगतिमिलतउठततरङ्गिका ॥ क-
रजोरिनिर्त्तलछोरिकहुंमुखमोरिसिरनीचेकरैं । पगभूमि
पटकनिबाहुझटकनिग्रीवलटकनिमनुहरैं ॥ मृदुहंसहिं-
हेरहिंघुमरिझुकिमतिघूंघुरुनकीलावहीं । ततताथेईतत-
ताथेईततताथेईकहिगावहीं ॥ कोइडारिकरगरश्यामके-
मुरलीछिनाइबजावती ॥ कोइतानपूरलकान्हसंगकोइप-
करिउरचपटावती ॥ हंसिलेतगोदउठायमोहनहाथअंग-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निपैधरैं।लखिदेवनभपरसूनबरषैंहरषिसबजैजैकरैं॥
मणिकंठउरबनमालवरशिरमोरमुकुटविराजहीं।पटपीत
किंकिनिकाछनीकटिकानकुंडलछाजहीं।अँगअंगप्र-
तिबहुबिधिविभूषनअलकश्रमकनझलकहीं॥पदक-
जनूपुरबेणुकरमुखपानभरछबिछलकहीं॥यहिभांतिना-
चतगोपिकासबथकितहैझुकिझुकिरहीं।कहिमालपा-
यलचंद्रिकाखसिपरीनकबेसरिकही॥अतिश्रमितलखि
नंदलालतिनपरसुपटपवनढुरावहीं।उरसेबिभूषणहा-
रबेनीकमलकरिसुरझावहीं॥असप्रीतिकेबसश्यामल-
खिसुरअप्रगणमनमेंकहैं।धनिधन्यगोपीधन्यजिनकेसं-
गहरिक्रीड़तरहैं॥करजोरिहृदयनिहारिबिधितेंकहैंयहब-
रदीजिये।हमहोहिंदासीब्रजबधुनकीकृष्णपदरतिकीजिये॥

दो॰ कृष्णमहिमाकृतकरतजबदेरिवनसबब्रजबाम॥
मनमेंभाअभिमानतबहैंहमरेबसश्याम॥

चौ॰ आनिगयेसोमदभगवाना।तुरतभयेतहँअंतरध्याना॥
जेहिपरहोतअधिकअनुकूला।दलततासुहरिमददुखमूला॥
एकसखीकाकरगहिलीन्हा।गोपीबिषसंगबनकीन्हा॥॥
तेहितबनिजमनमांझबिचारी।मैंहोश्यामैबहुतपिआरी॥
बोलीपगनचलानजाई।लेहुमोहिंनिजकंधचढ़ाई॥ ॥
लीजेचढ़िबैठेमुसक्याई।चरणउठावतगयेहेराई॥ ॥ ॥
बिनप्रभुबालबिकलभैकैसे।जलचरबिनजलव्याकुलजैसे॥
शोचतहरिहिनपावतबामा।बिकलपुकारतआरतनामा॥
हेब्रजराजराजदुखमोचन।हेगोपीपतिबारिजलोचन॥
चरणाशरणमैंदासीतेरी।कृपासिंधुलीजेसुधिमेरी॥ ॥ ॥
यहिबिधिरुदनपरीतरुबाला।पक्षिलिनकाअबसुनोहवाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ढूंढत फिरहिं सकल उनमत्ता॥ जड़जीवन तें बूझहिं रत्ता॥
हे वट हे पाकरी करीला। तुम देखे मोहन गुन शीला॥ ॥ ॥
हे चलदल हे नीब पिथारी॥ तुम कतहूं देखे ब्रजनारी॥ ॥ ॥
हे रसाल हे पनस सुजानी॥ तुम आवत देखे इन कानी॥ ॥ ॥
हे जामुनि हे गूलरि तूला॥ तुम देखे यदुपति के पूता॥ ॥ ॥
हे दाड़िम हे कुन्द चमेली॥ तुम देखे गिरधर अलबेली॥
हे गुलाब बेला कचनारा॥ हे बट्टी हे ह रसिंगारा॥ ॥ ॥
हे नीबू अमरूत सरीफा॥ तुम देखे गोपाल हरीफा॥ ॥ ॥
मोमलिरी के कदम तमाला॥ तुम देखे नरहारे नंद लाला॥ ॥

दो॰ हे कुम्भाउशा द्विजा पथ्या क्रमुका कन्द॥
हे वस्वालं गूल अक्क तुम देखे नंदनन्द॥

चौ॰ यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे॥ भेटि पूछें हरि हेरे॥ ॥ ॥
जब नक कछू उत्तर नहिं पावें॥ निदरि तिन्हें बामा हिय आवें॥
हे वंशी तैं बड़ी गंवारी॥ अपने कुल की रीति बिगारी॥ ॥ ॥

सवैया वे मग रोपग अन्धन को तुम चालिबो आछे नहू को
निवास्यो। वे जल थाह बनावत हैं तुम प्रेम अथाह के बारि-
द पास्यो॥ वे वर बास बसाइ भले तुम बास छुड़ाइ उजारि भेंडा-
र्यो। काहि ये कहा हरि की बसुरी तुम आपन बंश को नाम बिगास्यो॥

दो॰ बिरह बन्हि तामें भरी है तू बंशी सांच॥
फूंकि फूंकि हरि गहत परि तदपि आंगुरी नाच॥

चौ॰ जो तें श्यामें तेन सा रानी॥ तो पर पीर जाइ किमि जानी॥
आगे चलि सो सखी निहारी॥ भेंटि कह्यो कित गये बिहारी॥
तेहिं नव आपनि कथा बखानी॥ कित धों गये हम हु नहिं जानी॥
बोली नवललिता मुख जोई॥ श्याम सरिस सख निठुर न कोई॥
कह राधिका श्याम का कीन्हा॥ केहि अभिमान दुखन हिं दीन्हा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विधिकरिगर्वविपुलविधिरोवे।शंकरभयेकामबसलेखे॥
लोमसल्नरिवासिमरीकीमाला।बसेविपिनिमेंदशरथलाला
नारदवानरकरमुखपावा।धीमरकरहनुमानबधावा॥ ॥
हरिकेकहेकथानहिंसुनेऊ।गरुडभुसुराडघरहसिरधुनेऊ
दशमुखसर्पिपराजैपाई।कुशतेनिजबलरामजुभाई॥
ज्ञानगर्वसनकादिककरेऊ।श्रापदेइजयमेंअवतरेऊ॥ ॥
गिरिथर्यालिस्वर्गतेभूमा।गजबसग्राहबहुतदिनभूमा॥ ॥
गिरिअरिगुरायौनमासभदूजा।हरीतस्यगोवर्द्धनपूजा॥ ॥
नाथसधरीशिलाशिरफेरे।जेरपंखसम्पातीकेरे॥ ॥ ॥
बसुधाथिसमुनितेमदकीन्हा।तेहिगंगाबमनुषतनलीन्हा
द्रुपदद्रोणातेअहमितिठानी।भईतेहिअर्द्धराजकीहानी॥
विद्यामदजबकीनिविमाले।रिसकरिरम्भजरायोनाले॥ ॥
शुक्रसुताअरुनृपतियऔडी॥।मदतेभइसरोमिथलौंड़ी॥
करिकन्दर्पदर्पतनुअंरेऊ।जिन्हुपानगङ्गाकरकेरेऊ॥ ॥

दो॰ प्रभुइदुरिबतलखिलयरोंकेभयोगर्वतेहिसम।
बिछुरतनारिसनेहबसजरतनिवारयोराम॥

चौ॰ तेहिनश्यामहिंदोषनदीजे।जसमदकिह्योतेसफललीजै
बोलीअपरसखीचलिकेअब।रहसकरोमिलिहैमोहनतब
आयसबनकीन्हीसाइरचना।विविधिभांतिकेबोलेबचना
कोइकृष्णबनीकोइप्यारी।आदिहिलेलीलाबिस्तारी॥ ॥
लागींप्रेमसहितजबगावन।तुरतहिप्रकटभयेमनभावन॥
अपरकर्मतुष्टताचिरकाला।प्रेमतेप्रकटहोतननकाला॥
कविअनपारसकेकोगाई।लखिब्रजबधूउठीहरषाई॥
काहूप्रीतिमकरगहिलीन्हा।काहूबाहुकंधनिजदीन्हा॥
काहूकटिपटपटउरधारे।मूर्छतहोयअसबचनउचारे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महाराज तुम व्यास वनो रूख॥ संशै चित हम प्रश्न करें सब॥
तीनि भाँति प्रानी जग बीचा॥ एक उत्तम मध्यम एक नीचा॥
बिन सेवा जो करैं सनेहू॥ उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू॥
सेवा लखि जे प्रीति बढ़ावैं॥ तिन मध्यम की पदवी पावैं॥
अधम अनन्य दास बिसरावैं॥ बिन सेवा नेह कौन चलावै॥
इनके लक्षण कहौ बुझाई॥ जेहि सुख लहैं न संशै जाई॥
गूढ़ गिरा सुनि गोपिन केरी॥ कृपासिंधु बोले हँसि हेरी॥
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावैं॥ ते सुकृती उत्तम गति पावैं॥
उभै हिये जहँ स्वारथ जानो॥ तहाँ न प्रेम सनेह पिछानो॥
जो सेवा लखि रचि एक बिन सेवा॥ तीनि तिन कैं सुनो तिन भेवा॥
तिन महँ जानहु चारि प्रकारा॥ आतमराम एक निरधारा॥
दूसर जानहु पूरनकामा॥ लहैं वस्तु तद्यपि निष्कामा॥
तीसर प्रीतिशै मूढ़ अजाना॥ भल अनभल जेहि परत न जाना॥
चतुर्थ गुरु द्रोही सुभावै॥ जो शठ कृत उपकार मिटावै॥
तुम सुनत गोपी मुसकानी॥ समुझि श्याम बोले मृदु बानी॥
अहो प्रिये तुम जस चित आन्यो॥ तस मोहिं कबहूँ मति जान्यो॥
मोहिं सेवक प्रिय प्राण समाना॥ करौं वियोग तासु हित जाना॥
लखत रहौं सुख करत भजन तबहीं॥ तुम ते उरिन न हौं मैं कबहीं॥
तजि दुर्जन गृह बन्धन घोरी॥ कीन्हों आय भजन तुम मोरा॥
कौन वस्तु अस है संसारा॥ जाहि दिये होइ उद्धारा॥
दो० यहि प्रकार के वचन सुनि पुनि गोपी हरषाये॥
लागी सोइ लीला करन कृष्ण सहित सुख पाय॥
चौ० कीन्ही विविध भाँति तिन क्रीड़ा॥ सो बरनत मोहिं लागत ब्रीड़ा॥
भय यामिनि अरधावधि केरी॥ छिय चलन भई सब भाँति फेरी॥
आई भवन होत भिनसारा॥ वरणों कछु है चरित अपारा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो यह चरित सुनै तजि मोहा ॥ लहै सो प्रेम भक्ति संदोहा ॥

इति श्री विश्रामसागर सकलमतऽनुरागग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत कृष्ण बाललीला वर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सनगुरु गणराय गिरा सुखखानि ॥
बरणौं श्री भागवत की कथा मनोहर जानि ॥
रहस चरित सुनि कह्यौ नृप श्रुति अवहेलि प्रधान ॥
कहौ हरी परत्रिय रमी सत्य सुनो सोउ हाल ॥
समरथ को नहिं दोष कछु रवि बुध गंग समान ॥
जिमि विष कीन्ह्यो पान हर पचै सकल को ज्ञान ॥

सो० भाववश्य भगवान कृपासिंधु निष्काम चित ॥
तजि कुतर्क मतिमान ॥ सुनो चरित हरि के सुखद ॥

चौ० केहू भाँति हरि पद चित लावै ॥ श्याम धाम सो निश्चै पावै ॥
यक दिन सुनो गोप मिलि सर्वा ॥ गये रहे हर पूजन कर्वा ॥
तहाँ एक आयो चलि नागा ॥ नन्दराय को लीलन लागा ॥
परसि सो रह हरि मारी लाता ॥ कुबल भयो विद्याधर ताता ॥
करि दराडवत कथा निज भाखी ॥ गा सुरपुर उरमूरत राखी ॥
एक दिवस मोहन ब्रजबाला ॥ करहिं केलि आवा तेहि काला ॥
शंखचूड़ धनपति कर दूता ॥ लै भागा एक सखी अभूता ॥
बध करि हरि तेहि त्रिय सो लीन्ही ॥ छीनि सुभग मनि राम हि दीन्ही ॥
एक दिन कंस असुर यक प्रेरा ॥ आवा धरि वपु विष भ केरा ॥
डहँकत फिरत उड़ावत छारा ॥ पकरि सींग सुखै प्रभु मारा ॥
पुनि केसी आवा हयरूपा ॥ देखि डरे ब्रज लोग कुरूपा ॥
घर बाहर निकसै कोइ नाहीं ॥ लखि गोविंद आये तेहि पाहीं ॥

दो० लाग चलावन चरण दोउ पकरि लीन्ह घनश्याम ॥
दिहिनि फेंकि गत धनुष पर गिरा जाइ जनुधाम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० पुनि रिस करि धावा मुखबाई। कृष्ण दीनि निज बाहँ चलाई ॥
बाढ़ी भुजा सलफि मरि गयऊ। लखि सब ग्वालन के सुख भयऊ ॥
यक दिन श्याम सखन के संगा। खेलत रहे तहाँ धरि रंगा ॥
बालक कर व्योमासुर आवा। खेलन लाग न जाने पावा ॥
वृक बनि शिशु यक यक उठाई। सब गिरि गुफा दुराइ सि जाई ॥
तब यदुनाथ गये जिय जानी। लरि मारा तुरते अभिमानी ॥
सुनि सुनि बध सुभटन कर काना। तब सुभोजपति अति अकुलाना ॥
बोला सकल सभा ते ऐसा। रिपु बध हित अब करिये कैसा ॥
कहत भये सब मल्ल संघाता। लेउ बोलाइ यहां दोउ भ्राता ॥
ऐहैं रंगभूमि चलि जबहीं। मल्लयुद्ध करि मारब तबहीं ॥
सुनि बारता भूप मन भाई। तुरत लिहिसि अक्रूर बोलाई ॥
मधुबन जाउ तात मम कामा। लावहु बोलि कृष्ण बलरामा ॥
धनुषयज्ञ देखन के काजा। कह्यो बोलाइ नि तुम का राजा ॥
शायद साजि निजु स्यन्दन दीन्हा। करि बहु बिनय बिदा पुनि कीन्हा ॥
कार्तिक बदी त्रयोदशि भोरा। चढ़ि अक्रूर चले ब्रज वोरा ॥
करत बिचार आजु हरि चरना। देखिहौं जाइ सकल दुखहरना ॥
अंकुश कुलिश सहित धुज रेखा। ध्यावत जिन्हें शम्भु पज शेषा ॥
प्रगट शीश मैं नावब जाई। लैबकि मोहिं उर लैहैं लाई ॥
दहिने मृग बिलोकि हरषाने। करत मनोरथ ब्रज नियराने ॥
नित्य निरामय निरमल नीका। परपद ते प्रिय त्रिभुवन टीका ॥
उतरि परे रथ ते नेहिं बारा। लागे लोटन धूरि मंझारा ॥
यामें परे कृष्ण पद पावन। निकसे हैं हैं धेनु चरावन ॥
भेंटहिं पाद यस जिय जानी। इनके तर बिहरे सुखदानी ॥
चलि न सकत तन सुधि न परेखी। दृग जल बहत चहत कब देखी ॥
प्रेम बिचारि कृष्ण बलरामा। लै गौवें आये तेहि ठामा ॥

पैरपरा अक्रूर निहारी ॥ उर लगाइ तब लीन बिहारी ॥
रूपनिहारि ठकित भयो नैना ॥ अतिसुख दीन बोलि मृदु बैना ॥
लाये भवन हरषयुत लीन्हा ॥ नन्द महरि बड़ आदर कीन्हा ॥
सेज बिछाइ सुभग बैठाये ॥ षटरस भोजन महरि बनाये ॥
जेंवत भये बैठि सब संगा ॥ अँचै बहुरि आये परयंगा ॥ ॥
बोले तब दंपति हरषाता ॥ गवन कवन हित कीन्हीं ताता ॥
सकुचे कहन रहत नहिं राखा ॥ पठवा भूप हमैं अस भाखा ॥
सहित गोप नन्दहि लै आवो ॥ दधि घृत क्षीर जहां तक पावो ॥
पुनि धनुमख देखन के काजा ॥ हरि हलधरहिं बोलाइनि राजा ॥
सुनि अस बचन बान सम लागे ॥ यसुमति दीख काल जनु आगे ॥
बोलत भई बिकल ह्वै बानी ॥ हे अक्रूर भूप मख ठानी ॥ ॥
तहां कहो मम बालन केरा ॥ कौन काम है जो नृप टेरा ॥ ॥
बहां चहौं भुजबल जिल माहीं ॥ मोहि ते मो सुत जैहैं नाहीं ॥
बोले कृष्ण जान मैं माई ॥ धनुषयज्ञ देखी नहिं काई ॥ ॥
आवब बेगि बबा के साथा ॥ अस कहि निठुर भये यदुनाथा ॥
बिकल महरि बहु बचन बखाने ॥ ये कौ अंक रहत नहिं जाने ॥
ब्रजबनिते बोली बिलखाई ॥ ला यो संग फेरि दोउ भाई ॥ ॥
यहि बिधि भई सकल निशि नाथा ॥ कृष्ण पिता ते बचन अकाथा ॥
लै दधि दूध चलहु तुम आगे ॥ गोपन सहित सखा संग लागे ॥
चले नन्द सकटन चढ़ि गोपा ॥ बालवृन्द पथ तकें सचोपा ॥
कछुक बार बीते दोउ भ्राता ॥ रथ पर भे सवार हरषाता ॥ ॥
तेहि क्षण शोक रहा पुर छाई ॥ महरि दशा कछु बरनि न जाई ॥
ब्रजबनितन जब सुना हवाला ॥ धाईं सबहै निडर बिहाला ॥
आइ निकट बोलीं कित जाहू ॥ चलहु भूमि जो निज भल चाहू ॥
सुफलकसुत इन का का कहिये ॥ नीति बिचारि मष्ठ है रहिये

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कामदार कामी कुपिता कन्या माँगन लोइ ॥
यपर पीर न पेखई होनी होय सो होय ॥ ॥

चौ० सुनि गोपिन के बचन बिहारी । सेमा साध्य सुर मुनि हितकारी
बोले बिहँसि बनज कर जोरी । एक अरज अब सुनिये मोरी ॥
धनुषयज्ञ कबहूँ नहिं पेखी । जो तुम कहो तो आई देखी ॥
सुनि सब के मन करुणा आई । आवहु देखि कहेनि अकुलाई
चले तुरत रथ हाँकि बिहारी । सकल चित्र सी रहीं निहारी ॥
पादप ओट होइ रथ जबहीं । एक एक ते भाषें तबहीं ॥ ॥
देखो वो हरि को रथ जाई । कमलनयन कर पट फहराई ॥
जब न भगर दपरी नहिं देखी । फिरीं सकल मन शोच बिशेखी
पुनि २ निरखहिं दिशि बनमाली । कह वृषभानु सुता सुनु आली

कबित्त पीछे हिक चितवत नयन मम वार २ पाछे न परत प-
ग काह मन दीजिये । पवन न भई हौं पताक हू अबर नाहिं र-
थ के न भई अंग के सी अब कीजिये ॥ धूरि हू न भई हरि लल-
शि जाती सङ्ग खग हू न भई जो उडाय दृष्टि लीजिये । आई ।
बिलखात जिमि माखी मधु जात छोरि जियो नहिं जात पे
दरश आश जी जिये ॥

चौ० गोपिन की कछु बिरह बखानी । अब सुफलक की सुनहु कहानी
कृष्ण महिं लखि युवतिन आधीना । तब अक्रूर बिचारहि कीन्हा
इन्हें सुनो हम हैं अवतारा । गोपिन के बस निपट निहारा ॥
यहि प्रकार की संशय आनी । जानि गये प्रभु अन्तर्यामी ॥
लागे जब अक्रूर नहाई । यमुना में निज मूर्ति दिखाई ॥ ॥
जल भीतर जब डुब्बी मारी । देखि परे तहँ राम बिहारी ॥ ॥
शिर निकारि पुनि रथ पर पेखे । कैयो बार यही बिधि देखे ॥
भये निमग्न दोऊ कर जोरी । दिव्य दरश तहँ दीख बहोरी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सेवत सुर मुनि सिद्ध विधाता ॥ लागे विनय करन पुलकाता
मैमिकुन्द अहै अविनाशी ॥ व्यापक ब्रह्म सकल घट वासी
माया व्यक्त विरज वागीशा ॥ स्तुति कहँ सर्व भागि गापद शीशा
यहि विधि कीन्ह विनय बहु जबहीं ॥ भये अदृश्य बहुरि हरि तबहीं
व्याकुल है आये रथ तीरा ॥ कह हरि कियो स्नान गंभीरा ॥
तब सुफलक सुत गहि दोउ चरणा ॥ बोले प्रभु मैं तुम्हरी शरणा
तव प्रभाव प्रथमैं नहिं जाना ॥ तेहि ते मैं अभाव मन आना ॥
करत नाथ तुम लीला कैसे ॥ बहुविधि स्वांग मनुज का जैसे ॥
तब प्रभु दानपतिहि समुझावा ॥ चले आइ मधुपुर नियरावा
सुफलक सुत बोले कर जोरे ॥ प्रथमैं चलो नाथ गृह मोरे ॥ ॥
आउब एक दिवस तव धामा ॥ अस कहि उतरि गये तेहि ठामा
सहित समाज रहे पुर पासा ॥ तेहि दिन तहाँ भई निशि नाशा ॥
दो॰ भोर भये प्रभु नन्द ते बोले प्रेम अनाय ॥
मधुपुर आई देखिय उपवसरवन सहित दोउ भाइ ॥
चौ॰ आवहु देखि ताल हरखाई ॥ काहू ते जनि करेहु लराई ॥
आयसु पाइ चले हरषाला ॥ श्रीदामादि सखा संग ग्वाला ॥
नवल नारि सम पुरी निहारी ॥ भये मुदित नख शिख सिंगारी
जात रजक ते कहा कन्हाई ॥ देउ हमैं वर पट पहिराई ॥ ॥
बोला निज सुख देखौं तोरा ॥ भूप बसन तुम जाति अहीरा
सुनि बलभद्र विघल कार डारा ॥ पहिरि निपट सरूप अनुहारा
दरजी वायक नाम विलोकी ॥ बसन साजि तन भयो अशोकी
आगे मिला सुदामा माली ॥ रचि पहिराय सिहार सुजाली ॥
लीन्हिसि मांगि कमल पद प्रेमा ॥ ज्ञान विशुद्ध भक्ति दृढ़ नेमा
आगे लखी कूबरी जाता ॥ कंसहि खवस लगावन गाता ॥ ॥
कहत भये तेहि नय दुराई ॥ देहु हमारे खवरि लगाई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चकित भई छबि देखि गोपालहिं ॥ निरभय खेलि लगाय सभालहिं
तब मोहन पग तें पग चापी ॥ चिबुक सुकर गहि ऊपर थापी ॥
मिटि गा तुरतहि कूबर तासू ॥ भयो दिव्य तन बिमल प्रकासू ॥
बोली चलहु नाथ मम गेहा ॥ ऐसे योग्य भयो बपु एहा ॥ ॥ ॥
पुरवासी निरखि कर जोरे ॥ कहैं अपर दिन आउब तोरे ॥ ॥
आगे चले नगर की नारी ॥ अपर लोकहिं छबि चढ़ी अटारी ॥
भूषण पट धरि हिये बिपरीता ॥ कोइ अंग अपघट कोइ अगरीता
एक एकंत प्रमुदित कहहीं ॥ ये देवकी यशुमति सुत अहहीं ॥ ॥
इन सम सुभग न कोउ संसारा ॥ धनि गोपी संग किहिनि बिहारा
कोइ बसुदेव देवकी केरे ॥ कहत दुराइ निय यशुमति सेरे ॥ ॥
बहु बिधि बिधि पूजी निज इच्छा ॥ अवर पांचि अफस्व अप्रति च्छा
पर कहैं अब कंस कुचाली ॥ मल्ल युद्ध हित बोलेसि आली ॥
कह मुष्टिक चाणूर बिशाला ॥ कहँ ये मृदुल नन्द के लाला ॥ ॥
आप कहैं बल में अति भारी ॥ बिपुल असुर इन डारे मारी ॥ ॥
मल्ल प्रास कंस हु के हरहीं ॥ आपा पुरराजि मधुपुर की करहीं ॥ ॥
यहि बिधि आपुस में बतलाहीं ॥ बरसैं सुमन जहाँ चलि जाहीं
कोइ लखरा नायक के तूला ॥ दक्षिण धृष्ट सदा अनुकूला ॥
द्वादश हाव भाव कोइ करहीं ॥ निज स्वरूप कोइ रति मद हरहीं
सखा जो रसिक सिरोमणि ताके ॥ निरखहिं तिय न भाँति बहु नैके
कुराइ लिया कोइ स्वकीय परकीय कोइ कोइ सामान्या ज्ञा-
ति ॥ बिय: सन्धि मुग्धा कोइ मध्या प्रौढ़ा चारि ॥ मध्या प्रौढ़ा
चारि कोइ ... अन श्रेष्ठा ॥ कोइ ज्ञाता अज्ञात कोइ जेष्ठा अजेष्ठा ।
कोइ धीरा अधीर लक्षिता कोइ गुप्ता पन । मुदित बिदग्धा को-
इ कोइ कुलटा अनुशयना ॥ कोइ उत्का स्वाधीन बासकसज्या
कोइ दुखिता । कलहंतरिता कोइ बिप्रलब्धा कोइ खण्डिता ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोइ खण्डिता अभिसारिका आगतपतिका होइ। प्रोषितप-
तिका धीन पतिगवितेन हेरी कोइ॥

चौ॰ यहि बिधि लखि युवतिन के लक्षण। अपु सों बसन लाइ प्र-
तक्षण॥ रङ्ग भूमि आये यदुराया। शक्र धनुष गहि तोरि बहाया॥
मारि चले रहे रखवारे॥ आये बहुरि टिके जहँ सारे॥ नन्द गो-
प लै असन कराये। सुनि सुनि दोउ भाइन समुझाये॥ ॥ ॥

दो॰ कंसौ अपचारी मति इहां निरंदै नृप कोगाउं॥
मलेन्ना रघुनाथ भरि मुख मन औ वेदाउं॥

इति श्री विश्रामसागर सद सम आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासराम स-
नेही कृत श्रीकृष्ण मथुरा आगमन वर्णनो नाम सप्तमो ऽध्यायः ७॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं दशम अस्कन्ध की कैसो कथा बखानि॥
रजक निपातन धनुदलन अरु सुर सरण बरजोर।
सुनि जहँ तहँ रघुनाथ जन पवी नगर में सोर॥

चौ॰ यह सब खबरि कंस जब पाई॥ तब तो अधिक उना अकुलाई॥
लीन्हि सिंबोलि मल्लबलभूरी॥ आवैत बतु मडाहो चूरी॥
द्वार कुव लया गज ठढ़ि आवा॥ अयुत नाग बल तामें पावा॥
कहिसि महावत ते गोहराई॥ पैंदस तैं डारें चपवाई॥ ॥
असुर सकल बैठाय ठिकाने। आपु बैठ उत्तम मंचाने॥ ॥ ॥
तब बोलवाइ सिराम गोपालू॥ नन्द सहित आवैं सब ग्वालू॥
कहौ चार मुनि सकल सिधारे॥ आये रङ्ग भूमि के द्वारे॥ ॥ ॥
बोले कृष्ण टारि लपीला॥ सुनि तेहि हरि सामने ठीला॥ ॥
लागे ताहि खेलावन दोऊ॥ दूरि हितें देखत सब कोऊ॥ ॥
कबहूं तर ऊपर चलि जावें॥ कबहुंक पाछे नाहि हटावें॥ ॥
एक बार हनि मुष्टिक मारा॥ गिरा अवनि करि घोर चिकारा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मस्तकबिश्वकिहंसगतभयऊ॥रामउपारिएकरदलयऊ॥
रंगअवनितबगयेसुसेषा॥जेहिजसभाउतैसतिनदेखा॥
मल्लनमल्लतियनरसरूपा॥गोपनसजननृपननरभूपा॥ ॥
पितनशिशुकोबिदनविराटा॥भोजराजनिजुकालहिडाटा
योगिनतत्वबेषाजिनदृष्टा।।यामेंकहीभावनाप्रिष्टा॥
बैठेसकलसुआसनपाई।।बोलातबमुष्टिकढिगआई॥
हैबलकंसअराइआवो॥भूपहिनिजकरतबदरसावो॥
समतवधर्मयहेहैताता॥भूपप्रसन्नकरीसोइबाता॥ ॥
बोलेअसुजानतसबकोई॥मल्लयुद्धबिनभेदनहोई॥ ॥
जोबिचारबिनभूपकरावे॥अवधिराजअताकीमिटिजावे।
देखेताहिमहाअघलागे॥देइछोड़ाइनतोउठिभागे॥ ॥
हमबालकतुमसेरुसमाना॥कुस्तीकरमर्मनबजाना॥ ॥
पुनिगरीबगोचारनहारे॥केहिबिधिलरियेसङ्गतुम्हारे॥ ॥
हमेंकहाअटकावतइतहीं॥खेलतरहतपुलिनमेंनितहीं॥
सभाबीचकाहेकरराता॥ठाढभयेपनबहूनोभ्राता॥ ॥ ॥
हरिचाणूरभिरेभुजठोंकी॥मुष्टिकसङ्गरामरिसरोकी॥ ॥
लागेलरनपेचकरिनाना॥लचकतकटिहरिपदभुरभाना॥
अतिसुकुमारदेखिपुरनारी॥कंसहिदेहिंअनेकनगारी॥
हाइदुष्टकेदयानआवत॥मृगसिंहनकरयुद्धकरावत॥ ॥
सभामद्धएसाकोइनाहीं॥समुझावेकंसहिछुटिजाहीं॥
इतनेमाहिंकंसचाणूरहि॥पटकिदीनमहिमराहजूरहि॥
हरिसराममुष्टिकहिपछारा॥सलतोसलतबभयेतयारा॥
पटकिनितुरतिनिन्हेंसोहिलागे॥अपरमल्लसबदेखतभागे
बोलाकंसनिरखिभयपाई॥करहुनगरबाहरदोउभाई॥
दो० नंन्दसंगजेगोपहैंलूटिलेउनुसभारि॥

उग्रसेन बसुदेव को अबहीं डारों मारि ॥

चौ॰ सुनत नन्द कंस मांहिं गए पहुँचे जाई ॥ पकरि केशिरवा महिदीन्ह गिराई
काढ़ि खांड़ा घसीट घसीटी ॥ डारे सकल निशाचर पीटी ॥ ॥
लखि सुर हरषि सुमन बरषाये ॥ कहिं लावत यमुना तट ल्याये
तहं बिश्राम कीन मन भावा ॥ सोइ बिश्राम घाट कहवावा ॥
सुनि सुत आइ पिता अरु माता ॥ छोरि बन्दि तें आनि सनमाना ॥
मातु पिता की सेवा कीन्हीं ॥ मात पिता की सेवन कीन्ही ॥
सुनि बसुदेव देवकी हरषे ॥ गोद लगाइ सकल सुख करषे ॥
दीन्हो उग्रसेन राज बहोरी ॥ तब यदुपति बोले कर जोरी ॥ ॥ ॥
कीजै राज कृपा करि आपा ॥ हमरे हय ययाति की श्रापा ॥ ॥
तरुण अवस्था पितहि न दयऊ ॥ तेहिते यदुकुल माहिं बिन भयऊ
कीजै तुम निधरक सुखभारी ॥ लैहों मैं सब काम सँभारी ॥ ॥
बहुरि नन्द ते बोले आई ॥ ग्वालन सहित आपु ब्रज जाई ॥
हम कछु दिन रहिहैं यहि ग्रामा ॥ आवब चलि तुम्हारे धामा ॥
निज सुत सरिस हमें तुम पाला ॥ तेहिते नहिं बिसरब तिहुँ काला
जननी ने कहियो पर नामा ॥ बिसरि जाइ जनि गिरधर रामा ॥
हम तिन को बहु भांति रिझावा ॥ उनके कबहुँ अभाव न आवा
गोपिन ने कहियो कुशलाता ॥ कछु दिन में ऐहें दोउ भ्राता ॥
सुनि अस बचन नन्द दुख पावा ॥ ठगि से रहे बचन नहिं आवा
श्रीदामा बोल्यो तब बानी ॥ कृष्ण कहा तव बुद्धि हेरानी ॥ ॥
अपने मात पिता को त्यागी ॥ पर घर रहि हो रातिदिन लागी ॥ ॥
कोनि वस्तु कमती घर तेरे ॥ जो नौकरी करब नृप केरे ॥ ॥ ॥
धरवैहौ निज पितु कर नामा ॥ तेहिते चलो अपने धामा ॥ ॥
भल कीन्ह्यो जो कंसे मार्यो ॥ उग्रसेन कर काज बिचार्यो ॥
राज पराई देखि लुभान्यो ॥ यही एक अनरथ मन आन्यो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जोसुखहै हमरेब्रजमाहीं। सोसुखतीनिलोकमें नाहीं॥ ॥
तनधन जाइ जाइबरुप्राना। तबहूं है परबसनहिं रहना॥ ॥
बोलेकृष्ण तात तुमभाखी। सोइसत्य हमहिंरदे राखी॥ ॥
परियहराज नहैं परकेरी। सबप्रकार तुमजान्योमेरी॥ ॥ ॥
आगे चलहु सकल तुमआछे। सहितराम हमआवत पाछे॥
सुनत गोपव्याकुलभये कैसे। गइमरिगा छीनिफणिककीजैसे॥
यद्यपिघट पटबहुपहिराये। तदपिविरहवसरुकन भाये॥
तबप्रभुकरिउच्चाटन दीन्हें। चलेसकल मनमानदकीन्हें॥
आयेजवबृन्दावन माहीं। यशुमतिदीखकान्हबलनाहीं॥
लागीकरन बिलापघनेरा। नन्दकह्योकछुजोरनमेरा॥ ॥
जोजोयदुमलिकहासोगावा। तदपिनमनमें धीरजआवा॥

दो॰ यहांकृष्णबलरामकह यदुपतिदीनजनेउ॥
पुनिपठये दोउपढनको पुरीअवन्तिकामेउ॥

चौ॰ आयेवसिसंदीपनगेहा। लगेपढावनसहितसनेहा॥
प्रथमवेदविधि दीनविचारी। पुनिपढाइ विद्यादशचारी॥

कुण्डलिया॰ ब्रह्मज्ञानयकजानिये उभैरसायनकुर्य। तीसरस्वरधारणनिपुणावेदपाठहैतुर्य॥ वेदपाठहैतुर्यपंचजोतिषपहिचानो। छठीकहतव्याकरणाधनुर्धारीसिसप्तमजानो॥ जानोवसुजलतरणनवमवैदिकदिशिकरिपर। रुद्रकोकरविबाजिचढनंतेरहोंजुनृत्यकर॥ बोधचतुर्दईचतुरदशविद्यापाइअभर्म। पढीकृष्णरघुनाथअवकहतकला विधिब्रह्म॥

चामर छं॰ वाद्यगीतनृत्यनाट्यलेखवज्रवेधनं। तंदुलामिषालिरंगकार्यपर्यिकंधनं॥ पुष्पतल्पगंधकल्पदंतचपलएनजू। दामधारिणीसजकर्णीवारिघातघातजू॥ नीरघातवि

अज्ञात माल इन्द्रजालजू ॥ पहपानि भूषनानि ग्रंथ कीट भा-
लजू ॥ पाककार कौं सुमार बीन बेणु जोगजू । करावें धनी सिं-
गार पान रस प्रयोगजू ॥ सूचिकर्म धातु मर्म सुत्र कीडु नोलि-
जू । वास दक्ष कबोल लक्ष सुक्ष बंच कालिजू ॥ ग्रंथ पाठ छिन्न
काठ नृत्य ज्ञान दायकं । काव्य पूरकं नेवार रज्जु रीति नायकं ॥
तर्क रीति वास्तु प्रीति स्वर्णाकार कारजू । रंग ज्ञान दक्ष थान मे-
ख सुर्ग मारजू ॥ कीर सारिका प्रलाप शत्रु धी उचाटनं । केस-
मार्जनं मकर्ष मुष्टि वस्तु डाटनं । देश भाख नीमलेच्छ फूल
संदनानि के यंत्र मंत्र का बिरोध मानसी पिछानि के । पिंगला वि-
धान कोस शोस कार्य साधनं । कूल उपाइ रक्षका यजय द देव
साधनं । द्यूत खेल बाल भेल ऐपार बैन तोषनं । बास दादि कृत
बिचार सर्व सार कोसनं ॥ चौसठे कला कही सुनीश आदि मा-
ग्रजू । सो लिखी बिश्राम सिंधु मध्य देवदासजू ॥

चौ० चौंसठि दिन में बिद्यासारी ॥ पढ़त भये श्री कृष्ण मुरारी ॥
बिद्यानिधि बिद्या अभिलाखी ॥ संप्रदाय की सींवा राखी ॥
बिदा होत बोले हरि यहू ॥ गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहू ॥ ॥
कहत भई तब गुरु तियबानी ॥ पुत्र हमार दीजिये आनी ॥
बूड़ेउ सुनि सागर में गयऊ ॥ पंचजन्य कहुं मारत भयऊ ॥
मिलान तब कीन्हों पछितावा ॥ चले बहुरि यमपुर में धावा ॥
दीन्ह आनि सो बालक श्यामा ॥ लहि अशीस आये निज धामा ॥
भक्तबसल त्रिभुवन दुतिदीपति ॥ सब उर अंतरयामी श्रीपति ॥
एक दिवस कुबिजा के गयऊ ॥ अति अद्भुत गृह देखत भयऊ ॥
बिबिध वस्तु संयुक्त सोहावन ॥ धूप दीप मंडित मनभावन ॥
चंदन आसन उपधान बिशाला ॥ पानदान धुनि बिपुल मसाला ॥
श्यामहिं देखि उठी हरषाई ॥ सखिन सहित सुठि सेज हि लाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आभुसुलन पद भूषगा सजिके ॥ तकत खड़ी षोडश बिधि भजिके ॥
प्रथम समागम सुभिलजानी ॥ अपर अलोगहि प्रभु पहँ आनी ॥
प्रभुहित करि तेहि संग भगवाना ॥ रमे कृपाकरि कृपानिधाना ॥
कोककला करि सरस बिहारी ॥ कामतपनि ताके रिनेवारी ॥
पुनि प्रसन्न ह्वै वचन उचारे ॥ रमौ कछुक दिन संग हमारे ॥ ॥
प्रभु प्रेमासिक रूपन गुगाके ॥ वचन विचारि औलियुत उनके ॥
एवमस्तु कहि निज गृह आये ॥ उद्धव सहित तत्त्व गुगा गाये ॥
सुपने खारा महि लखि मोही ॥ काम सहित कुबरी भइ सोही ॥
कौने उभाउ प्रभुइ जो ध्यावै ॥ लहै सही फल मृषा न जावै ॥ ॥

दो॰ जो कछु लीला जगत में सो सब रघुपति केरि ॥
कला अंश कहुं स्वयं बपु धारि करत हिय हेरि ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सने-
ही कृत कृष्णलराड कुबरी गृह आगमनो नाम अष्टमो ऽध्यायः ८ ॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुखदानि ॥
भंवर गीत हरि मीत मत शुक कृत कहत बखानि ॥

चौ॰ हे नृप जानिय दुनमें श्रेष्ठा ॥ सखा श्याम को भाग्य बरेष्ठा ॥
शिष्य वृहस्पति को बड़ ज्ञानी ॥ कृपासिंधु ब्रज की सुधि आनी ॥
तिन उद्धव कह लीन बोलाई ॥ ज्ञान मान खोवन मन आई ॥
बोले तात जाहु ब्रज माहीं ॥ लाबहु खबरि मिली सुधि नाहीं ॥
नन्द बबा के गहियो पाऊं ॥ बिसरि जाइ जन हमरो नाऊं ॥ ॥
पालागन मैया ते कहियो ॥ कृपा करत बालकन पर रहियो ॥
गोपिन ते सुठि योग संदेसू ॥ बरगयो तुम तजि सकल अंदेसू ॥
जो तत्र कहे वचन सुनि सहवी ॥ करि विवाद पुनि जरी न दहवी ॥
भरगा परसि चद्रि रथ हि सिधाये ॥ ब्रज रबि अस्त समय चलि आये ॥
रंजमगि उड़त सुरभिन पाछे ॥ बयडोलत खग बोलत आछे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राम कृष्ण गुण गावैं पुर जन ॥ धूप दीप करि पूरित लखिवन ॥ ॥
प्रमुदित ह्वै प्रविशे पुर माहीं ॥ खबरि पाइ निज पुत्रन पाहीं ॥
पुर नरनारि परम सुख माना ॥ राम कृष्ण आवत हैं जाना ॥ ॥
वैसे स्यन्दन वृषभ बिशाला ॥ वैसे मुकुट पीत पट माला ॥
निकट जाइ ऊधौ को चीन्हा ॥ हरख शोक मनमें तब कीन्हा ।
नन्द पवरि पहुँचे सुनि जबहीं ॥ निकसि महरि आई दिगतबहीं
श्याम सखा लखि चरण पखारे ॥ सुन्दर आसन दिला बैठारे ॥ ॥
मुदित बनाइ असन कर याये ॥ अचवन करि जब सनहि आये
तब यशुमति बोली जल ढारी ॥ हैं नीके बलकुञ्ज बिहारी ॥
पालि पोषि हम कीन्ह बड़ेरे ॥ बाजत पुत्र देवकी केरे ॥ ॥
जबते गये सुधि उनहिं लीन्ही ॥ धाइउ के नाते तजि दीन्ही
लीन्हि छीनि प्राण बसुदेऊ ॥ तबते तात न आने केऊ ॥ ॥
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं ॥ दासी ह्वै मुख देखन चहतीं ॥
बैरी भये कुटुम्बी मेरे ॥ जानन दीन्हिनि निरखिनि धेरे ॥
फूल होत नव नीत निहारी ॥ मोहन के सुख योग विचारी ॥
प्राते खात रहे दधि रोटी ॥ को अब देत होइ गो ओटी ॥ ॥
कीन्हे चरित लाल मन जोई ॥ सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई
निशि न नींद दिन लागन भूखा ॥ हन्त बदन ब्रज पति कर रूखा
गौन आदे पय तृण नहिं चरहीं ॥ वछरन सहित सकल हुङ्करहीं ।
बालक तरुण जठर सब लोगा ॥ भये क्षीण तन श्याम बियोगा
हम आपनि किमि दशा बखानी ॥ दीन्हौं काढ़ि नयन निज पानी
ऐसे दुख देने को रहेऊ ॥ तो कत दावा ते निरबहेऊ ॥ ॥
इन्द्र कोपते नाहक राखा ॥ गिरिहि छाड़ि देते करि माखा ॥
कठिन शोक निशि बासर केरा ॥ दीन लाल करि मधुपुर डेरा ॥
जीवत सकल दरश के लागे ॥ पुनि कबहूं देखब हरि आगे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह्यो तात कब ऐहै भैया ॥ कब मोहिं गोद रैहैं करि मैया ॥
कब गहिके दधि मथत मथानी॥कब मंगि हैं माखन हठ ठानी ॥
एक दिवस में रिस बस बाँधा॥ सो सुधि करि दुख होत अगाधा॥
कह्यो जाइ आवैं घर अपने॥ अब कबहूं नहिं बाँधब सपने ॥ ॥
माखन खात न बरजब रोसी॥उर हन देत न सुनब परोसी ॥ ॥
जल सुतारि जापति कर जाना॥ तासु मातु संग पठवब नाना ॥
मैं जानत सुख तिन्है न होई ॥ हठि राखत हैं हैं सब कोई ॥ ॥
कहा करौं पर बस भे लाला ॥ कहुं कहुं गुणाहु होत दुख ताता ॥
शुक सारिक जो पढ़ते नाहीं॥ तौ कत परते पिंजर माहीं ॥ ॥
शब्द बेध शर जो न चलौते॥ अंध श्राप कत दशरथ पौते ॥
रवि शशि जो करत न प्रकाशा॥ तौ संत तकत फिरत अकाशा
जो न होत रघुपति के दाया॥ तौ बन दुख कत सहत निकाया
जो न लाल को आवत जान्यों॥ तब देवै ते बचन बखान्यो ॥
जो रखती हो हम पर नेहू ॥ तौ सुत पठइ हमारे देहू ॥ ॥
जो कोइ कोटिन लाड़ लड़ावै॥ तद्यपि लाल हमते सचु पावै।
तुमरे पुत्र सही सुनु माई ॥ एकबार मुख जाइ देखाई ॥ ॥
यहि विधि बचन कहत बहु भाये॥तेहि छिन नन्द खरिक ते आये।
भेटे उठि उद्धव पुल काई ॥ लीन्है निज आसन बैठाई । ॥
लागे बूझन कुशल सबीके॥ हैं बसु देव देवकी नीके ॥ ॥
नीके रहत कृष्ण बलरामा॥ कछु आगवन कहिनिज धामा।
तोतल बचन बोलि सुख लागी॥बड़े भये दुख दीन्हिन त्यागी।
हमहू ते कछु बना न जाना ॥ जगत पिता बालक करि माना ॥
कोमल चरण खरस अधिकाई॥ तहं उनते हम गोचर वाई ॥
उन वाहूं में करयो न रोषा॥ गुण गहि जुख मढ़ि पाये दोषा ॥
हरि की बात हरी ले बनई ॥ थोरेहि में जरि उठते मनई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० नाम लेइ जेहि युवति को नहिं सुहाइ सुनि तासु ॥
राम जानकी के कहे तुष्टत तेहि पर आसु ॥
चौ० यहि विधि नन्द करत पछिताता ॥ तब उद्धव अस बचन सुनाता
अहो नन्द तुम यशुमति दोऊ ॥ शील सुकृत की मूरति होऊ ।
क्योंकि राम कृष्ण भगवन्ता ॥ प्रणत पाल दुष्टन के हन्ता ॥
तिनके चरण कमल चितु लायो ॥ यहि ते अधिक न कछु श्रुति गायो
हरिहिं आपु सुमिरत हौ जैसे ॥ तन मन धन वारण करि तैसे ॥
तुम ते तात न वाहर वोऊ ॥ बेचौं जहाँ बिकैं तहँ दोऊ ॥ ॥
जब तब बात तुम्हारी गावैं ॥ कहत कहत गद गद ह्वै जावैं ॥
चलत कहिनि पालागन बाता ॥ उऋण न हम तुम तें पितु माता
प्रति पालन तुम कीन हमारा ॥ होइ है युग युग सुयश तुम्हारा
देखो त्रिभुवन पति गिरधारी ॥ चाहत करुणा दृष्टि तुम्हारी ॥
बातन होइ बोध केहि भाँती ॥ जाको रहै सकल सुख जाती
हरि गुन कहत भई निशि नासा ॥ बोले द्विज अलि लीनि सुवासा
दीप जोरि गृह गोप लुगाई ॥ लगीं मथन दधि हरिगुण गाई
दो० तब उद्धव वृषभानपुर चले रजा यश पाइ ॥
मारग में अवलो कि रथ मिलीं गोपिका आइ ॥
चौ० गिरिधर की अनुहारि निहारी ॥ बोलीं तब गोपन की वारी ॥
आप गवन इत कित ते कीन्हो ॥ जानि परत मोहन सुधि लीन्हीं
बोले तब उद्धव हम आये ॥ मधु पुर ते ब्रज नाथ पठाये ॥ ॥
परम मित्र हैं कृष्ण हमारे ॥ हम हैं उनके बहुत पियारे ॥ ॥
सुनि सब बैठि गईं तेहि ठौरा ॥ बोलीं कहौ कान्ह कर ब्यौरा ॥
उद्धव नन्द नँदन हैं नीके ॥ हम सब तिन के जीवन जी के ॥
कब ऐहैं कछु कहिनि बखानी ॥ शोभा शील गुणन की खानी
गिरि अरि सुत रिपु पुरी बिताई ॥ अजहूँ नहिं आये सुख दाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उद्धव हम सब श्याम बिहीना ॥ बिकल रहत जिमि जल बिन मीना
निशि न नींद दिन असन न भावें ॥ नैन पलक सम कलप बितावें ।
हरि बिन सेज भयानक लागे ॥ कारागार सरिस एह जागे ॥ ॥
शीतल मंद सुगंधित बाई ॥ लागत मनहु आगि ते आई ॥ ॥
बिरह बन्हि सब अंग जरावत ॥ जरिन जात लोचन जल नावत ॥
हमते श्याम करी है ऐसे ॥ बधिक करै पक्षिन ते जैसे ॥ ॥
प्रथमे प्रीति आपही जोरी ॥ पाछे नाव मांझ मरि बोरी ॥ ॥
तुम ऊधो आये भल कीन्ह्यो ॥ हम सबका अवलंबन दीन्ह्यो ॥
सुनि यत रहैं संत परमारथ ॥ करत रहत सोइ दीख यथारथ ॥

दो॰ सजन स्वारथी नरन की स्वारथ ही तक प्रीति ॥
खग मृग जार असार लखि तजत सुथल सिरि रीति ।
बहु रंगी जित तितहि सुख एक अंगी कर अंत ॥
जिमि गणिका निधरक रहत दहत सती बिन कंत ॥

चौ॰ तिमि ऊधो हम हरि को जानें ॥ श्याम चहै मानै नहिं मानें ॥
सुनि ऊधो गोपिन की बानी ॥ योग संदेश न सकत बखानी ॥
सुफलक सुतै परी कठिनाई ॥ उत आज्ञा इत प्रेम अघाई ॥
धरि धीरज पुनि काढ़ी पाती ॥ बोले बांचि जुड़ावो छाती ॥
हमते नाहिन बनी बनाई ॥ चितवत गली छुवत जरि जाई ॥
आपु कृपा करि बांचि सुनावो ॥ श्याम सुखा मृत बचन सुनावो
सुनि ऊधो तब बांचन लागे ॥ लागी सुनन बैठि सब आगे ॥
गोपी सकल सुनो मम बचना ॥ भूलहु मति मायाकी रचना ॥
जो कछु गोगोचर में आवे ॥ माया कृत सो थिरन रहावे ॥ ॥
छोड़ि देउ तेहि ते असनाई ॥ निरगुण ब्रह्म जपहु मन लाई ।
पूरण है सब घट में सोई ॥ कौन सो ठौर जहां नहिं होई ॥ ॥
पांच पचीस तीनि घट तेरे ॥ पृथक रहत पुनि बिमल बसेरे ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो हम तुम तुमसे अरु मोसे ॥ छिनहू मात्र वियोग न होसे ॥
आत्म आत्म से हम प्रगटावैं ॥ पालन करि पुनि नाश करावैं ॥
रचत सकल निज माया जाते ॥ कार्य अंत पुनि कारण ताते ॥
कारज तजि कारण मन लावो ॥ जेहि ते सकल परम पद पावो
निर मल नीर मरा तव नेरे ॥ मरत पियासन तेहि बिन हेरे ॥
तजि कुसंग थे काल पसीजे ॥ द्वादश संयम नियम करीजे ॥
सूक्षम भोजन स्वल्प पियासा ॥ करहु त्यागि बसु भोग बिलासा
पदु मासन निर मल करि मनका ॥ शोधत रहो सदा निज तनका
पूरक कुम्भक रेचक करहू ॥ उलटि ध्यान त्रिकुटी को धरहू ॥ ॥
सोहं शब्द माहिं चित राखो ॥ मनते सकल कामना नाखो ॥
दश प्रकार अनहद सुनि पावो ॥ कौतुक बिबि धदेखिछकिजावो
यहि विधि योग ज्ञान जबगावा ॥ तब गोपिन अधिको दुख पावा

दो० यथा वैद औषधि कौ बिन पहिचाने रोग ॥
सो औषधि लागे नहीं उलटि बढ़े तेहि शोग ॥
तेहि अवसर इक मधुप तहं आयो करि गुंजार ॥
बैठि गयो राधिका के चरण कमल लखि सार ॥

चौ० तब सब गोपी मधुप पटारी ॥ लगीं कहन ऊधो ते सारी ॥
मधुकर तुम पगते उड़ि जाहू ॥ श्याम शरीर निठुर सब आहू
पहुंचत तहां फूल जहं फूले ॥ सूखी लखन जात नहिं भूले ।
रूप रहसि सब गिरिधर केरी ॥ है रोरे मे गुनन हेरी ॥ ॥ ॥
आई बकी पिआवन छीरा ॥ डारीनि ताहि मारि बल वीरा ॥
सुप नेखा रघु पति पहँ आई ॥ नाक कान तेहि लिहि निकराई
बलि पावनहिं सुसर्बसु दीन्हा ॥ तबहुं तासु तन बंधन कीन्हा ।
ब्याहु किहि नि हरी हरका गांसी ॥ पुनि आपुइ मिलि रानिन हांसी
कोयल सुतहि काग प्रतिपाले ॥ ऋतु बसंत तेहि तजि उड़ि चाले

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उरगे दूध प्रीति ते प्यावे ॥ उलटि श्रमी सो विष ह्वै जावे ॥ ॥
केचुलि त्यागि नसुधि फिरि लीन्ही ॥ तैसे श्याम हमैं तजि दीन्ही ॥
यामें भूलन उन की भारी ॥ कारेन की करनी है कारी ॥ ॥
पर गट जिन कीन्हे युग ताता ॥ कौन कहे यहि विधि की बाता ॥
तथा तुमहुं कछु अघ दित नाहीं ॥ रूप छड़ाइ गहावत छाहीं ॥
ऊधो श्यामहिं लाज न आवत ॥ तेहि पर मुनि यत दूस कहावत ॥
हमका ज्ञान योग लिखि भेजा ॥ आपु रहत कुबरी की सेजा ॥
जिमि गणिका निज कसबै ठाने ॥ औरन ते वैराग बखाने ॥ ॥
तेहि के बचन कहो को माने ॥ तैसे श्याम देत हैं ज्ञाने ॥ ॥
यक तो अंध कूप में डारी ॥ हेरत पंथ न परत निहारी ॥ ॥
तेहि पर तुम निज ज्ञान सुनावा ॥ मानहुं मुद्ग ऊपर ते तावा ॥
ऊधो तुम हो चतुर सुज्ञानी ॥ देश काल लखि कहिये बानी ॥
जाके मले अनल सम तावै ॥ तेहि के कहा गरल लग बावे ॥
हम बनि तन को चाहिय भोगा ॥ तिनका आइ सिखावत योगा ॥
धरत मराल न सुत शिर मेरू ॥ जिन ते चलै न पग भरि सेरू ॥
ऊधो कछु तुम्हरी न लगाई ॥ संगति केर दोष लगि जाई ॥
रस लम्पट गिरि धरन लवारा ॥ कौन होउ तिन संग खुवारा ॥

**कुण्डलिया** लम्पट की संगति कि है द्वादश गुण नशि जात। प्रथम सत्य पुनि स्वच्छता अरु संयम की बात ॥ अरु संयम की बात मौन ब्रत माया जानो। सम दम दया सुबुद्धि सहन शीतलता पिछानो ॥ प्रभुता यश नहिं रहत बसत हिरदय महं लम्पट। कपिल बचन बुधि जानि करत नहिं संगति लम्पट ॥

**दो०** जो कहो ऐसे पुरुष से क्यों तुम कीन्ह्यो प्रीति ॥
कर्म लिखा तेहि का करै जरै सलभ की रीति ॥
प्रेमिहिं मरन न लखि परै करै हरषित तन अर्प ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिमि गज कुरंग पतंग अलि झष पिक परिवा सर्प॥
मित्रहि चैन न मित्र बिन कैसो करै बिगार॥
जिमि गृह जारै अगिन पुनि होत अगिन को छार॥

चौ० बोली अपर सखी सुनि लेहू॥ नाहक दोष श्याम कर देहू॥
उनमें कछु लंपटता नाहीं॥ प्रीति पाइ परबस है जाहीं॥
तदपि रहत निरलिप्त बिशेषा॥ पद्य लहि यमुना में तुम देखा
जो कहो अब का प्रीति न हममें॥ रहत न कोउ इकरस हर दम में
जो कोइ है प्रभुता थी वाने॥ ते पर वेदन सुनै न जानै॥ ॥
देखो शेष धरे महि भारी॥ सोये तेहि पर जाइ मुरारी॥
अब नँद नन्द भये मह राजा॥ जो कछु करैं उन्हें सब छाजा।
दिन प्रति पावक सरिस सोहावन॥ बोली अपर सखी यहि भावन
प्रभुता की कछु लाग न होई॥ चेरी संग गई मति खोई॥ ॥
कैसो चतुर होइ किन कोऊ॥ नीच संग करि बिगरत सोऊ।
परम प्रवीन केकयी रानी॥ चेरि संग ते मति बौरानी॥ ॥
गृह जल गद पद पवन समाना॥ पार कुयोगिन को बिन साना
ऊधो ब्रह्म सबै तुम कहेऊ॥ अबहीं भयो कि आगेइ रहेऊ।

कुण्डलिया ऊधो जब जब पापते उठत धरनि अकुलाइ॥ तब तब क्यों सुर मुनि सकल हरिहि पुकारत जाइ॥ हरिहि पुकारत जाइ आपु किन धरि धरि रूपा। हरैं बिश्व को भार होइँ जो ब्रह्म सरूपा। तेहि ते बाद बिवाद त्यागि गहिये पथ सूधो। बिन प्रभु सेवक भाव तरयो भव निधि को ऊधो॥ माया बाद मदांध करि मूषित भयो जेहि ज्ञान॥ सोहंऽस्मि ब्रह्म सो पुनि पुनि करत बखान॥ पुनि पुनि करत बखान कुत्र ऐश्वर्य्य मतीते। कुत बिभुता कुत भूति कुत्र सरवज्ञ गतीते॥ तेहि ते ब्रह्म न जीव अहो तुम सुख बस काया। बुन्द कहै मैं सिंधु होइ किमि बिन हरि माया॥ ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० जो कहो पृथ्वी सम बरम्ह घट सम जीव अनेक॥
ताहि लखो वा ना लखो अन्त होब सब एक॥
एक भयो तो क्या भयो पुनि नाहिं गद्दी कुरवाल॥
तेहि ते माया बाद तजि भजो नन्द को लाल॥
अथवा तस्कर कयद में परो कहै हो भूप॥
तो का छूटै करम बस त्यों तुम ब्रह्म सरूप॥
ईश्वर आपु स्वतंत्र है जित चाहै तित जाइ॥
सर्व शक्ति जाके विषे भाव सरिस दरशाइ॥
सोहं सोहं जपत हैं जहँ लग अगजग जीव॥
राम कृष्ण सुमिरे बिना लहै न कोई पीव॥
ऊधौ तुम्हरी बात इमि जिमि रोगी हित माड़॥
जो जेंवत हैं सेर भरि सो किमि होवै चाड़॥
कर्म योग तब लग करै जब लग प्रेम न होइ॥
प्रेम पाठ पढ़ि क्यौ पढ़ै कक्का किहँ सोइ॥
ऊधौ तुम्हरी बात सुनि भयो न हमरे रोष॥
अपनोइ खोटो दाम तो परखैये का दोष॥

चौ० बोली अपर सुना हम ऐसा॥ कहत श्याम हैं अज धौं कैसा
गोपिन को सुनि नाम लजाहीं॥ चित्र धेनु लखि सकुचत आहीं
भूलि गई माखन की चोरी॥ खात रहैं घर सकल ढिंढोरी॥
जो यह बात रहै मन माहीं॥ तो कत किहि निरहम हम पाहीं
पथ मे ज्ञान बिराग सिखावत॥ जेहि ते कछु मन हूं में आवत।
जब हम रंगीं श्याम के रंगा॥ तब लखि परत का ज्ञान प्रसंगा॥ ॥
मधुकर को तजि सुरसरि बारी॥ कूप खोदि जल पीवै खारी॥
को तजि आक इहै को बौरा॥ को तजि पारस माँगे कौरा॥ ॥
को तजि श्याम सगुण मति चारू॥ खलत फिरै कलि अगुण पहारू

रूपरेख कछु जाके नाहीं ॥ सो का करब शून्य के माहीं ॥ ॥ ॥
अगुण सगुण युग ब्रह्म कहावत ॥ सो तेहि भजत जाहि जो भावत ॥
दो० यथा बिरोचन कुमुद दोउ हैं बिराट के नैन ॥
काहु इ भावत दिवसपति काहु शशि में चैन ॥
चौ० नहि प्रकार हम श्याम उपासी ॥ हैं सब बिधि उनहीं की दासी ॥
मुक्ति भुक्ति हम को नहिं चहिये ॥ प्रेम भक्ति किरपा करि कहिये ॥
जो कल स्थान कहे हैं बिन नाहीं ॥ तौ चलि जाउ बनारस माहीं ॥ ॥
हमरे तो मन एक रहारा ॥ गयउ श्याम संग बहुरि न आवा ॥ ॥
को अब अगुण ईश अवराधै ॥ को एकान्त में आसन साधै ॥
तलफत दृग बिन लखे किशोरा ॥ को चितवै भृकुटी की कोरा ॥
जरत रहत निशि बासर अंगा ॥ कीन्हें बिन गिरिधरण प्रसंगा ॥
तुम जो कहत हरि हिरदय माहीं ॥ सीतन्न है में धरत कल नाहीं ॥
ब्रह्म अंश कैसे हैं कान्हा ॥ माने भुवन बोदर में नान्हा ॥ ॥ ॥
मुख पसारि देखरावत भयऊ ॥ तब का ब्रह्म प्रथक रहि गयऊ ॥
कारण ते कारज है नीका ॥ यथा कंद ते दारस फीका ॥ ॥ ॥
कारण अगर रहत है संगा ॥ कारज अतर बिकस सो सहंगा ॥
तुम हो कारण में मन लावो ॥ हैं में श्याम में प्रीति दृढावो ॥ ॥ ॥
जो हरि तजि करि घास हि चरहीं ॥ तौ हमहूं जग थामहि करहीं ॥
भदाहि हंस मीन तजि मोती ॥ तो हमहूं सब ध्याइय ज्योती ॥
जो रन सूर तेग तजि देवै ॥ तौ हमहूं तुम्हरो मत लेवै ॥ ॥
खंडल बिहंगम हि बैठे हारी ॥ तौ हमहूं निर्गुण मत धारी ॥ ॥
जो चातक सरवर जल पावै ॥ तौ हम ब्रह्म श्याम तजि ध्यावै ॥ ॥
पशु पक्षी निज टेक हि करहीं ॥ हम मनुष्य कैसे परिहरहीं ॥ ॥
ऊधौ तुम बिरही हौ नाहीं ॥ नहीं दास नहिं मित्र न माहीं ॥ ॥
बिरही मीन जल हि अनुरागी ॥ बिछुरत प्रीतम के तनु त्यागी ॥ ॥

हासभावपपिहामैंजानै ॥ बिनस्वातीजलकरैनपाना ॥ ॥
गरजित्तरजिपविडारतमेहा ॥ तदपिबढ़तदिनप्रतिनवनेहा ॥
मित्रकमलबिनलखैतमारी ॥ तुरतजातहै संपुटमारी ॥ ॥
मधुकर हम चातिक सम अहईं ॥ बिनाश्यामके छुओरनचहईं
मानवकोबधिफेरिवनावै ॥ तबहूं मोहनमोहनलावै ॥ ॥ ॥
जो तुवकाढि दुंदभी साजै ॥ सोऊ लाललाल कहि बाजै ॥ ॥
गाढ़ि देइ मृतिका है जावै ॥ तिहि फूल फल ऊ चेरे नामैं ॥ ॥ ॥
सुवे अंग की है यह रीती ॥ जीवत किमि छूटत है प्रीती ॥
बोलो अपर भली विधि हेरे ॥ कठिन लोग हैं मधुपुर केरे ॥
जिनकी संगति परि नंदलाला ॥ सीखत भयो योग कर हाला ॥
हमहूं को आयो बह कावन ॥ फूंकन चहत सुमेरु उड़ावन ॥
मधुकर आपन योग दुरावो ॥ हम पूंछें सो बरनि सुनावो ॥
ब्रजमें कब ऐहैं बन वारी ॥ कबहरिहैं चूनरी हमारी ॥ ॥
कब दधिदान मांगिहैं रोकी ॥ हमहूं अबहट करबनकोकी
करिहैं रहस केलि अब आई ॥ खैहैं माखन कबै चोराई ॥
कब बजाय मुरली मन लैहैं ॥ कब दुरिके हमरे घर ऐहैं ॥
जेहि सुखहित हम भई कनौड़ी ॥ सो सुख अब लूटत है लौंड़ी
कौनिसि कौन तपस्या भारी ॥ जेहि ते पाइसि पति गिरिधारी
कब अब सुनब हमार लागी ॥ दीन्हों श्याम कूबरी त्यागी ॥
कहियो मधुप श्याम ते जाई ॥ कहां गई ब्रज की चतुराई ॥
कहे सनेह सयानप ढुकवा ॥ रहत न सुमति सयानप सुकवा
हम युव तिन कहं लिखत बिरागा ॥ आप परे चेरी के रागा ॥
अपना गुरू भये सयोगी ॥ केहि प्रकार हम होई योगी ॥ ॥
जो गुरु ही निज भट्टन चीन्हा ॥ तिन शिष्यन को कब सुख दीन्हा
जो गुरु कुटम्ब जाल में बांधे ॥ सो शिष्य के किमि काटे फांदे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो गुरु काम क्रोध में जरई ॥ सो शिषि को कब शीतल करई ॥
जो गुरु है तृष्णा बस लोभी ॥ सो शिषि को केमि करै अछोभी ॥
जो गुरु है पाथर की नावा ॥ सो सिषि को कब पार नघावा ॥ ॥
जो गुरु को कछु पदि नहिं आवै ॥ तो शिषि को केहि भांति पढ़ावै ॥
तेहि ते आपु दशा पर आवैं ॥ तब हम को लिखि योग पठावैं ॥
जेहि ते कछु लागे उपदेशा ॥ करहिं सकल योगी कर भेषा ॥
जो जल जरन आपही लागे ॥ तो तजि मीन कहां को भागे ॥
लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना ॥ बिसरि गयो उद्धव को ज्ञाना ॥
करत भयो गुरु गोपिन केहां ॥ पाइनि एक अनन्य व्रत तेहां ॥
रहे मास षट तिनके पासा ॥ देखत डोले कुञ्ज बिलासा ॥ ॥
भै मधुवन की प्रीति बहोरी ॥ बोले गोपिन ते कर जोरी ॥ ॥
तुम सब अहो प्रेम की खानी ॥ केहि बिधि हम उतकर्ष बखानी ॥
चातक मीन चकोर मृगाऊ ॥ धारता किहिनि तुम्हार सुभाऊ ॥
हमते जबतब प्रीति तुम्हारी ॥ बरनत रहे मुदित बनवारी ॥
उद्धव हमतन कोटि बनाई ॥ करें गोपिकन की सेव काई ॥
तबहूं कछु उद्धारन मानी ॥ ऐसी मम सेवा उन जानी ॥ ॥
ज्ञान के मिसि तिन मोहि पठावा ॥ भौंई तजि हरि रूपहि पावा ॥
अबकरि कृपा देहु बरदूहू ॥ बढ़े कृष्ण पद तिन नव नेहू ॥
खग पशु बिटप लता तनु पाई ॥ जन्म जन्म ब्रज बसिये आई ॥
तुम्हरे चरण कमल की धूरी ॥ प्रापत होइ भाग ते भूरी ॥

दो० जो मैं कीन्ही ढीठता हरि को आयसु मानि ॥
करेहु क्षमा अपराध सो अनुग आपनो जानि ॥

चौ० उद्धव तुम जानत सुखदायक ॥ हम हैं कौन बड़ाई लायक ॥
लोक वेद लजि कर तव ठाना ॥ तेहि ते निन्दत सकल जहाना ॥
तुम्हहो तात मरा हन योगा ॥ क्षमावन्त सब भांति बिसोगा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हम अहीर बहु भाँतिन केरे॥ कहे कठोर वचन बहु तेरे॥
तुम्हरे मारवन तन कहु आवा॥ धन्य २ जननी जिन जावा॥
उद्धव कृपा श्याम की चाही॥ निकट हु दूरि उभै भल आही॥

दो० बन बरही बारिद वियत लख्यो नार रवि पद्म॥
विलख कुमुद शशि सुख लहत लखि सनेह निज सद्म॥

चौ० बिन सनेह उप दूरि विरोधी॥ युग अंगुल श्रुति परत न देखी॥
चिरंजीव रहें दोउ भाई॥ मधुपुर करहिं राज सुख पाई॥
उद्धव हमरे दोउ कर लाडू॥ मिले तो आनि भल हरि नाजे आहु॥
जो न मिलब तबहू भल जानी॥ भयो सुयश तिहुँ लोक पिछानी॥
कह हम जाति बपुरा कुलहीना॥ श्रुति मर्याद सोउ तजि दीना॥
कहे हरि श्रीपति पालक सगरे॥ सो सब विधि कहवावत हमरे॥
इत उत फिरि ब्रजही आवे॥ जिमि परिवा छतुरी पर आवे॥
सत्य वचन तव झूंठ न आही॥ हरि निजजन बस सदा रहाही॥
कह उद्धव अब आज्ञा दीजे॥ तो हम गवन मधुपुरी कीजे॥
तीनि दिवस कर आय सुभयऊ॥ तेहि के बीति मास षट गयऊ॥
हमरी सुधि न बिसारब देवी॥ सब विधि जानि आप नो सेवी॥
विकुल बिरह सबन के जागा॥ कीन्हिन बिदा सहित अनुरागा॥
रथ चढ़ि चलि निज आश्रम आये॥ सभा बार यदुनन्दन पाये॥
पठवत भये दूत यदुनाथा॥ आये भवन तुरत तेहि साथा॥
भेंटे श्याम सखे मन लाई॥ बूझत भे ब्रज की कुशलाई॥
सुनि उद्धव सब बात प्रकासी॥ तुम बिन दुखित रहत ब्रजबासी॥
एक दिन आय आपो दरश दिखाई॥ सुनत वचन बोले यदुराई॥

गीतिका छं० यदुनाथ बोले सुनहु उद्धव घोष बासी जे-
अहैं। तिन पास मैं तिन रहत हौं वे नेकु न्यारे नार हैं॥ मम-
स्वासवेदन की त्रिचाहै गोपिकन के दुख कहा। सुनिहैं जे-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कहिहैं चरित तिनके नाशिहैं संकट महा ॥ जो कहेउ रहन-वियोग केहि हित सुनहु सोउ निकामहू । यक दिन गया-यक सखी घर हौं द्वार राखि सिदामहूँ ॥ तहँ आइ प्यारी चहत प्रविशो सखा रोकत रिस ठई । नहिं मिलहिं हरि श-त वर्ष तोहिं तेहुँ कही सोइ सोई भई ॥

सो० यद्यपि हौं तिन तीर । तदपि न देखत आप बस ॥
धरिहौं विविध शरीर । करत चरित बहु भाँति के ॥

दो० उद्धव गोपिन केर कछु कह्यो ज्ञान दृढ़ नेम ॥
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ बढ़ै इष्ट पद प्रेम ॥
प्रेम बिना पावै नहीं प्रीतम को दीदार ॥
तातें जन रघुनाथ तें करु उद्यापन सार ॥
प्रेम नवारी ऊपजै हिये न आवै राम ॥
प्रेम जगत रघुनाथ तब जब सुमिरै हरि नाम ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास-रामसनेही कृत कृष्णायन गोपी उद्धव सम्वाद वर्णनो नाम नवमो ऽध्याय-

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
दशमस्कन्ध भागवत की अब कहौं कथा बखानि ॥

चौ० गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा ॥ पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो ॥ बोध देइ कुन्ती को आवो ॥
असमय परे पांडु सुत छोटे ॥ परबस परि सुख लहत न पोटे
चले पांडु घर आये सोई ॥ देखि मिली कुन्ती उठि रोई ॥
आसन देत भई अनुरागी ॥ पूछन लागि नैहर की लागी ॥ ॥
नीके हैं पितु मातु हमारे ॥ भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे ॥
करत कबहुँ सुधि आइ निकेरी ॥ देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी ॥ ॥
सुनि बोले अक्रूर बिहारी ॥ सुखी सकल सुधि करत तिहारी

कहिनि कुसल कुस से कहियो ॥ चिन्ता कछु चित में जनि गहियो ॥
आवत हैं हम कछु दिन माहीं ॥ चली गयारि तिनकी नव नाहीं ॥
पुनि धृतराष्ट्र पास चलि गयऊ ॥ सुहृद वचन असबोलत भयऊ ॥
पांडु मरे तुम गादी पाई ॥ पालहु सबहिं एक सम भाई ॥
चलि अनीति अपयश जग पैहो ॥ देह तजे ध्रुव नरक सिधैहो ॥ ॥
करैजो पाप सुमति भ्रम पाई ॥ तेहि फल होत नाहि दुखदाई ॥
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे ॥ अन्त रहत हैं सबही न्यारे ॥ ॥
खलभल पाप परत सिर अपने ॥ तेहि ते पाप करेहु जनि सपने ॥
तुमहि बहु कह्यो तासु हित बानी ॥ सुनि धृतराष्ट्र नाहि यस मानी ॥
बोला गये अंधबेडु माना ॥ होई जो करिहैं भगवाना ॥ ॥ ॥

**दो०** यहि बिधि सुनि समुझाय पुनि पंचहुन कर दुख हेरि ॥
विदा भये धृतराष्ट्र ते आये मधुपुर फेरि ॥

**चौ०** समाचार यदुपतिहि सुनाये ॥ तेहि छिन अपर विघन कुछि आये ॥
रथ चढ़ि उभै कंस की बामा ॥ मगध देश आई पितु धामा ॥
बिबिधि भाँति ते रोदन कीन्हा ॥ जरासिंध सुनि धीरज दीन्हा ॥
यदुन सहित सब हरि बल रामा ॥ पठवौं कंस निकट तव नामा ॥
अस कहि दल तेइस अक्षौनी ॥ लैकै चला प्रबल है हौनी ॥
अक्षौनी द्वै भाँति बखानी ॥ लघु दीरघ सोउ दीजे जानी ॥

## लघु अक्षौहिणी कुकुंभी छं०

थकइस सहस अपाठ सो सत्तरि रथो होइ जह जानौ ॥ तेत नेही गजनाथ अश्व पति कोठदि सहस पिछानौ ॥ एक लाख नव सहस तीनि शत साढे पैदर जोई ॥ जन रघुनाथ बिचारि कहत नव एक अक्षोहिणि होई ॥

## दीर्घ अक्षौहिणी दो०

अयुत नाग नै अयुत रथ योधा लख दश लक्ष ॥

तुंग कोटि छत्तिस कहल पर चर यह दिर घास ॥

चौ० आइ मधुपुरी लीन्हिसि घेरी ॥ मुनि पहुँचे हीं वल तेहि बेरी
देखत ते कहन लागी कटु भावा ॥ बंध वधिक सुनि बचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीति निधाना ॥ हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निज बहु बार कंस के टारे ॥ अपने पाप गये पुनि मारे ॥ ॥
पर अपकार किहे दुख भारी ॥ खनत गाढ़ तेहि कूप लयारी ॥
तेहि पर आपु चढ़े अति रोसी ॥ हानि छांडि क कुलाभन होसी

दो० कीन्हि कुनह बिन गुनह जिन ति मुख सुना न पाव ॥
सहस्रबाहु सुरनाथ भृगु अपै सुत नृग राव ॥

चौ० तेहि ते सुपुर जाहु फिरि अबते ॥ बोला मूढ़ साधु भय कबते
सूर सुमुख नहिं सुयश सुनावें ॥ पुरुषारथ करि प्रगट देखावें ॥
जाना काल निकट तब आवा ॥ तानि बाध बिपरये पावा ॥
कहहल घर यह सब कोइ जानै ॥ लातक मनई बात नहिं मानै

कुंडलिया सुर तुष्ट है भक्ति ते द्विज तुष्ट लखि दान । सुहृद तुष्ट उप
कार लखि खल तुष्टत पर हान ॥ खल तुष्टत पर हान प्रीति ते तुष्टत नारी
मेवा बस सुचि बसि साधु आदर बस भारी । नृप तुष्टत गुण गान कथन रि
तुष्टत भुजबल शूर तेहि ते यहि पर । मिपि समर युद्ध करि सूरे सुर ॥

चौ० सुनत जरा सुत उठा रिसाई ॥ डारहु मारि सेन कहे राई
चहुँ दिशि घेरि लिहेसि रिपु कैसे ॥ रबिहि धूम घन पावक जैसे
लागे चलन बिबिध हथियारा ॥ शक्ति शूल अपसि बान कुठारा
इत उत फिरत गिरत कोइ लागे ॥ कोइ भट भुजन सुतको भागे
चढ़े अटा तिन पुरन्नर नारी ॥ लखि सोच करें अति भारी
कोइ सूरा दुभयि खेलाये योधा ॥ पुनि दोउ बंधु करन भे क्रोधा
छवा भेद लि सब सयन सो वाई ॥ जरासंध कर दीन बचा ॥
जेहि ते बहु रिलयावे पापी ॥ बही रुधिर की सरिता अपनापी

रथसुरेथ भुजमीन समाना॥ सिर कच्छप गज ग्राह प्रमाना॥
कच्च से वार सम धनुक तरंगा॥ आयुध परे बिटप जनु भंगा॥
भंवर चर्म मनि कंकर भारी॥ प्रगटी सरि अस कृष्ण बिहारी॥
है है नाल योगिनी नाची॥ प्रथम जनकी पट बीरी माची॥ ॥
गृहय गीध गोमायु कलोलें॥ छूटत मूंड कपाली डोलें॥ ॥
द्रुमिदल दलि प्रभु मथुरहि आये॥ मागध सूत बिजैगुण गाये॥
बरषि सुमन सुर पुर नरनारी॥ बसु बलि करि आरती उतारी॥
मगधाधिप की लूटि जो आई॥ सो सब यदुपति पास पठाई॥
नृप जो जाहिं दीन सो लयऊ॥ सुखिया सुख सम चहीं सो भयऊ॥
जरासिन्धु निज नगर हि आवा॥ दल बटोरि पुनि लरन सिधावा॥

दो० तेइस तेइस क्षौहनी लै लै एकइस बार॥
आवा चढ़ि बल कृष्ण सब करत भये संहार॥

चौ० यह यश कालयमन सुनि पावा॥ तीनि करोरि यमन लै धावा॥
तब बिसुकर्मा ते यदुराई॥ सागर बीच पुरी बनवाई॥ ॥ ॥
द्वादश योजन मधि हे मालै॥ त्रिविधि बतास काल तिहुं चालै॥
चौहट हाट सुगंध निकिरि की॥ लागे जहं तहं फाटक खिरकी॥
दामिनि सी पताक फहराहीं॥ जल थल बरनि जात सो नाहीं॥
बन उपबन बाटिका अनेका॥ रतन सुसदन एक ते एका॥
सोवत यदु सब तहां पठाये॥ अपना राम यमन पहं आये॥
कृष्णे अव देखि बसि निज आंगे॥ काढ़ि खड्ग धावा प्रभु भागे॥
धौलागिरि कंदर में जाई॥ मुचुकुन्दहि पट दीन्ह ओढ़ाई॥
आपु रहे छिपि सो चलि आवा॥ पीताम्बर लखि चरण चलावा॥

दो० जो नहिं जानत जासु गुण सो शठ निदरत ताहि॥
॥ सब जग पूजहि जासु हि जिमि स्वान देखि धरि खाहि॥

चौ० लागत लात सो लिह गयऊ॥ कान्ह ने मसु रतहि जसि भयऊ॥

दशा दीन लख यदुपति आई॥जटित वसन भूषण छबि छाई
अद्भुत रूप निरखि नृप बोला॥नाथ अहो तुम कौन अमोला
की चेदेवन में कोइ होऊ॥की रवि अग्नि चन्द्रमा कोऊ॥
पूजन के तुम योग गोसाईं॥ मैं हौं निशिदिन तव शरणाई॥
मोहि जगाइ जगा कोइ प्रानी॥भयो हमार परम हित जानी॥
कहँ प्रभु हे नृप प्राण पियारे॥जन्म कर्म मम बहु विस्तारे॥ ॥
नाम अनन्तान संख्या कोई॥ गनत थके बहु कबिता सोई
मेरि तु गति गनने की नाहीं॥कहत सुनत ऋषि भव तरि जाहीं
अब जन हित भंजन महि भारा॥भयो आइ बसुदेव कुमारा
कंस आदि बहु शत्रु निपाते॥यमनेसाहि लायो तेहि नाते॥
रिपु मराइ पुनि तुम्हें निहार्यौ॥एक पन्थ द्वै कारज सार्यो
अब बर मागु रुचे जो तोही॥नाथ भक्ति दीजे निज मोहीं॥
भै निद्रा विषया सन करिके॥बादि बयस खोई अव तरिके।
तव प्रभु भजन भाव समुझाई॥पुनि बद्रीबन दीन पठाई॥
कह नृप कौन रह्यो बड़ भागी॥बोले व्यास सुवन अनुरागी॥
नृप मुचकुन्द अवध के जानो॥पर उपकारी एकहि मानो॥
कीन्हि देवतन केरि सहाई॥बहु दिन गये रहा कोइ नाईं॥
इन्द्र मुदित होय कह वर लीजे।बोल्यो महिप मुक्ति मोहि दीजे
भूपति मोक्ष कहाँ हम पावै॥ ऐसो हरि के पास रहावै॥ ॥
तो फिरि नींद घनेरी देहू॥जौ जगावै जो सुलि लेहू॥ ॥
सुनि तिन एवमस्तु कहि दीन्हा॥तब ते यहाँ शयन इन कीन्हा

दो॰ निद्रहि कस सुख सेज महि त्रिषितहि कह घट सुद्धि॥
कामिहि कस भय लाज जग क्षुधितहि कस बल बुद्धि॥

चौ॰ सोवत कालयवन पग मारा॥तेहि अघ अधम भयो जरि छारा
पुनि प्रभु गे मधुपुर मिलि दोऊ॥मार मुसलमान सब सोऊ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेहि छिन जरासंध चढ़ि आवा॥ राम कृष्ण सो दल लखि धावा॥
लरे कछुक पुनि भागत भयऊ॥ गोमत गिरि ऊपर चढ़ि गयऊ॥
गिरा योजन केर निहारी॥ जरासिन्ध तब दीन प्रजारी॥
निकरि द्वारिकै गे दोउ भाई॥ ह्वै गा भूधर भसम बनाई॥
जरि गे जरासिंधु पस जाना॥ आवा बहुरि भवन हर्षाना॥
इहां सकल यदुबंसिन काहा॥ चहीं कीन हलधर कर ब्याहा॥
शहर आनरतालीरैवत भूपा॥ तासु सुता रेवती अनूपा॥
ताके संग होत भा ब्याहू॥ वेद बिधान सहित उतसाहू॥

दो० संसकार जाकर जहां मिलत सो नाहिं बिसेषि॥
त्रेता की कन्या बरी द्वापर में बल लेखि॥

इति श्रीबिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास राम सनेही कृत कृष्णायन जरासिन्ध समर बर्णनो नाम दशमो ऽध्यायः १०॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
नीति सहित रुक्मिनि हरण हरि कृत कहत बखानि॥

चौ० अब बिवाह रुकमिनि कर सुनहू॥ रहत सुभय ब्रजहरि उनहू॥
कुण्डिनपुर भीषम नृप हेरे॥ जनमी एक सुता तिन केरे॥
रुकमिनि नाम ज्योतिषिन राखा॥ सब गुण धाम श्याम पति भाषा॥
दिन दिन कन्या बर्द्धत कैसे॥ शुकल पक्ष कर चन्दा जैसे॥
खेलन संग सखिन के लागी॥ इक दिन यक बोली अनुरागी॥
रुकमिनि तै नित खेल बिगारा॥ लुकत कितौ करत उजियारा॥
सुनि हँसि गृह गौनी सुख पाये॥ तेहि छिन तहँ नारद ऋषि आये॥
देखि रूप गुण मन में जाने॥ कृष्णचन्द्र से आइ बखाने॥
कुण्डिनपुर महं भीष्मकुमारी॥ रुकमिनि है सो योग तुम्हारी॥
तब ते बसी हृदय पति सुर की॥ सुनहुँ कथा पुनि कुण्डिनपुर की॥
इक दिन सुयश याचकन गावा॥ रुक्म केर भूपति सुनि पावा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब निज भवन गवा वतभयऊ॥ सुनि रुकमिनि निज उर धरि लयऊ
करत भई संकल्प अनंगा॥ बरिहौं मैं इनही के संगा॥ ॥
इक दिन भीषम देखि बिचारी॥ भई बिवाहन योग कुमारी
सब भाइनि ते पूछै सिबोली॥ बरिये काहि रुकमिनी खोली
तब सब लोगन भूप गनाये॥ नाना देशन के नहिं भाये॥ ॥
तब छोटा बालक नृप केरा॥ रुक्मसेन बोला यहि बेरा॥
तात रुकमिनी कृष्णहिं दीजे॥ नवल नात बसुदेव ते कीजे
सुनि नृप सहित सकल पुर बासी॥ बोलि बात कही इम खासी
सेवक सुत बड़ छोटहु जानी॥ छल की बात कहै सो मानी॥
आदि पुरुष जिनके घर जनमें॥ मारेनि कंस असुर बहु बनमें
को मिलिहै इन ते भल भाई॥ सुनि बोला बड़ पुत्र रिसाई॥
बोलहु बचन सँभारि सुनीती॥ जानत तुमन कृष्ण की रीती॥
बोड़ सबर्ष नन्द के राहा॥ तब अहीर सब काहू काहा॥ ॥
घोड़ी कामरि गाय चराई॥ जातिहु तासु न जानी जाई॥ ॥
कोऊ नन्द केर सुत गावै॥ कोई यदु पति केर बतावै॥ ॥
अब तक भेद न काहू पावा॥ यह धौं कृष्ण कौन को जावा॥
प्रभुता बेसन लेश में नासी॥ उग्रसेन की करत खवासी॥ ॥

दो॰ तिन के संग बिवाह करि कहो मिली फल कौन॥
लायक ते कीन्हों चहौ बैर प्रीति अरु गौन॥

चौ॰ लोभ सो भल जहँ कल अधिकाई॥ चांद ओस पियास न जाई
नगत न्हाय सो काहु निचोवै॥ जेहि धन नाहिं सो का को उरवै
तेहि ले भूप चंदेली केरा॥ है शिशु पाल प्रतापी हेरा॥ ॥
जेहि भव परम परा ते गादी॥ आवत होत राज नहिं बादी।
ताको ब्याहि रुक्मिणी दीजै॥ कृष्ण केर अब नाम न लीजै
सुनि नृप सहित लोग पछि ताने॥ रहे साधि नृप सकल डराने

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मबल शत्रु नृप नीच गोसाईं ॥ इनते हठ कीन्हे न भलाई ॥
मूरख ते न कही हरिगाथा ॥ गिरि खोदै पैरै पाथर हाथा ॥
अस मन गुनि गवने कहि बीसा ॥ जबर कि राह कहूं न फुरशीसा ॥
तब तहं रुक्म बोलि बटु लीन्हा ॥ लगन सोधाइ पत्रपुनि दीन्हा ॥
जाइ विप्र शिशुपालहिं दीन्हा ॥ टीका बड़े भाव ते लीन्हा ॥

दो० यदपि कह्यो बहु भीष्म नृप चह्यो कृशाकोरैन ॥
तदपि न बूझ्यो बैर घल लालच ग्रसिल मुखैन ॥

चौ० तब शिशुपाल ब्याह हित फूली ॥ लोक वेद विधि करी समूली ॥
देके भेट बिदा करि ताही ॥ न्योत्यो बड़े बड़े नृप चाही ॥ ॥
आइ विप्र भीषमै सुनावा ॥ बड़ी धूम ते आवत तावा ॥ ॥
बेगि ब्याह की करहु तयारी ॥ तुरत गुनी जल लीनहूं कारी ॥
आनि विचित्र माड़ो तनवावा ॥ मंगल गान सकल पुर छावा ॥
एक सखी बोली मृदु बानी ॥ रुक्मिणि भई बड़ी तुम रानी ॥
अस सुनि कहत महीप कुमारी ॥ मनबच कर्म मम पति गिरधारी ॥
क्षिप्रहि विप्र बोलि यक लीन्हा ॥ लिखि के पत्र तासु कर दीन्हा ॥
दीजै जाइ कृष्ण के हाथा ॥ बहुरि उन्हे लायो निज साथा ॥
तो मैं बड़ तुह्मार हित मानो ॥ मोरे दीन दयाल पति जानो ॥
यह सुनि चला द्वारिके आवा ॥ कृष्णचंद्र को पत्र देखावा ॥
महाराज सुनि सत्य शनवीना ॥ तबते मैं तुमको पति कीन्हा ॥
मिलन केर आशा दृढ़ भावा ॥ वेदनहूं याही विधि गावा ॥
जाकर प्रेम सत्य है जामें ॥ सोतेहि मिलत न संशय यामें ॥
अब मोहिं लेन चहत शिशुपाला ॥ जिमि मृगपति कर भाग शृगाला ॥
तेहि ते सत्य बचन अविनाशी ॥ कीजै मोहि आपनी दासी ॥
जो नहिं लेहौ खबरि हमारी ॥ तौ तन त्यागब सपथ तुम्हारी ॥

दो० जिमि रघु रक्षी सुरभि बन रक्षी मृग पतिभय

मेहि प्रकार मोहिं रक्षिये प्रगत पाल प्रभु लेख ॥

चौ० ऐसे वचन बाँचि द्विज बारी ॥ आशा भरि नयननमें वारी ॥
तुरत उठे आयसु लीन्हा ॥ रथ चढ़ि गवन सहित द्विज कीन्हा ॥
पहुँचे जब कुण्डिन पुर जाई ॥ उतरे भूपति की फुलवाई ॥

त्रिभंगी छं० देखी बन वारी जनु नृप नारी अपबल अगा-
री थिर नहीं है । परि रहत दिगम्बर पुष्प घनी वर निरखि रूप
नर मोह लहै ॥ लहै गर्भिन गभ दिन प्रति आभै अर्पत स-
वै परसि धरै । परसत पनि पावै नदसि सोहावै सवतिन भाँवरिया-
नय धरै ॥ बोलहिं बहु बोला निज निज टोला धरि धरि चोला
विपुल सखी । श्यामहिं जनु सारी रही है कारी हर्षित प्यारी प्रेम लखी ॥

चौ० इहाँ रुक्मिणी करत विचारा ॥ अजहूँ नहिं आये करतारा ॥
पुनि पुनि चढ़ि महलौं पर आवै ॥ चहुँ दिशि चितै विकल फिरि आवै ॥
इतने में द्विज आइ बखाना ॥ मनहुं लह्यो जल सालि मुखाना ॥
प्रभुदिन है दीन्हो वर दानू ॥ जाहु सदा रहिहो धनवानू ॥
लहुरि कह्यो हरि तें उधारियो ॥ देवी पूजन में मोहिं हरियो ॥
याकेते आये बलदेऊ ॥ छप्पन कोटि यादव तेऊ ॥ ॥
सुनि महि पाल मिलन चलि आवा ॥ सो सब हाल रुक्म सुनि पावा ॥
बोला नृपन ऐसे दिन का ॥ कौने इहाँ बोलायो इन का ॥
जहाँ आन नहें करन बखेरा ॥ भीष्म कहा कछु मोहिं न बैरा ॥
निकले पहर नगर दोउ भाई ॥ आये लखि कहै लोग लोगाई ॥
जस गुण रूप तैस सनबंधा ॥ जिमि शुचि सोने माहिं सुगंधा ॥
इनके दरश माहिं सुख जैसो ॥ मुक्तिहु माहिं न होई ऐसो ॥

दो० गौर श्याम सुखमा सदन बदन बिलोचन चारु ॥
सहित बसन भूषण बसहु उरसि सहं जिमि हारु ॥

चौ० सहि दीरघ कहि मदन सुख पावा ॥ शिशुपाल हित वर रुक्म जनावा ॥

अब सब खबर हम ते रहना ॥ आये हैं उपाधि के गहना ॥
तब शिशुपाल समूह सिपाही ॥ पठइ दियं रक्षा हित ताही ॥
इत उत गई कनात तनाई ॥ देवी पूजन कुंवरि सिधाई ॥
संग सखी सोहैं बिधि वारा ॥ कीन्हे तन षोड़श सिंगारा ॥

**कुण्डलिया** मंजन पट अंजन तिलक मृक कुण्डल ताम्बूल । बेसरि अंगिया किंकिणी कंकन पायल मूल ॥ कंकन पायल मूल सुनूपुर कुंकुम बेनी । यह षोड़श शृंगार त्रियन के औरहु ऐनी ॥ ऐनी मानहु मदन केरि निकसी मद गंजन । गोल साथ रघुनाथ करत सुनि मुनि मन मज्जन ॥

**रोला कुं०** कोइ पद्मिनि सुकुमार लाज युत सहित सुगंधा । कोइ चित्रिनि सम रूप चहत उपबोध प्रबंधा ॥ कोइ संखिनि पुन रोस दया बिन बेगि अचाले । कोइ हस्तिनि बड़ उदर पयोधर कमर कराले ॥ कोइ स्वकीय सुख दुःख माहि निज नाथे जानै । कोइ पर किय पर पुरुष केर संग छिपि कै ठानै ॥ कोइ गुणा रूपा शक्त प्रेम बस कोइ रस छावै । कोइ सामान्या दर्बि लोभ बस प्रीति बढ़ावै ॥ संधि भयः कोइ अंकुच जननि यौवन कोइ मुग्धा । कोइ ज्ञाता अज्ञान वपु षवय भोग निरुग्धा ॥ कोइ मध्या सामान्य काम पुन लाज जनावै । कोइ प्रौढ़ा परबीन अधिक रस केलि सोहावै । कोइ धीरहन बिन कोइ आधीर रिसाती । कोइ ज्येष्ठा पति प्रीय कनिष्ठा कोइ कम चहती ॥ कोइ गुप्ता गनि अपलख कोई पर प्रीति लक्षिता । कोइ मुदिता सिक मिलन विदग्धा कोइ सुरक्षिता । कोइ अनुसयना दुखित जासु संकेत न मान्यौ । कोइ कुलटा आतृप्त चित चित ठौर लोभान्यौ ॥ कोइ स्वाधीनास्ववस कीन नाहि निज गुनते । कोइ उत्का केहि हेत न आयो पी-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तम सुनते ॥ वासक सज्या कोइ कंत को आगम देखै। कोइ क-
लहंतरिता दि निदरि करि शोच विशेखै ॥ कोइ खंडिता।
अपर पास लखि पतिहि रिझावै। द्विज लब्धा कोइ जौन
पतिहि संकेत न पावै ॥ कोइ अभिसारिनि आपु जाइ की
हरिहि हंकारै। प्रवत्त पतिका कोइ जासु पति गवन विचारै
कोइ प्रोषित पतिका हि कंत परदेशमें जाको। आगत पति-
का कोइ होइ उत कंठा ताको ॥ कोइ दूखिना दुखित होन।
लखि बाधक जानै कोइ गरबित पति रूप अधिक कोइ जे-
हर प्रमानै ॥ आई करत कलोल सकल देवी के पासा। पूज-
न कीन्ही कुँवरि कृष्ण की करि उर आसा ॥

दो॰ और सखी जे संग की करि प्रणाम कहैं बात ॥
यहि कन्या के कृष्ण पति देहु दया करि मात ॥
पूजन करत न पतिहि जब पस्यौ महिप कुमारि ॥
लगी करन अति शोच तब यहि विधि हृदय विचारि ॥

कुण्डलिया बीसन बुड़की में दई मुक्ता लग्यो न हाथ।
सागर केरन दोष यह निज अभाग रघुनाथ। निज अभाग र-
घुनाथ नाथ ऊलु सबहि फुलावै। पातन लहै करील ढील को ना-
की गावै ॥ गावत सुनै न बाधर भानु दुति तमचर दीसन। रहत
गंध बिन वेनु मलय ढिग यहि विधि बीसन मन चाहत है मि-
लन को मुख देखन को नैन ॥ श्रवरा चहत सुख प्रद सुन्यो श्या-
म सुन्दर के बैन श्याम सुंदर के बयन सैन बस होन न पावत। हाय दई
का करौं यतन एकौ न लखावत आवत एक प्रतीत ऋपहि प्रभु प्रणत
पाल मन ॥ शरणा समुझि सुधि लैहैं लैहैं पुनि लैहैं ठीक मन ॥

दो॰ यहि विधि मन में ठीक दै चली वहूं दिशि हेरि ॥
इतने में हरि आइ तहं परदा दीन्ह्यो घेरि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुंवरि कुंवर को रूप लखि भे मुरछित भट सर्ब॥
कर गहि रथ बैठाय प्रभु चले गंजि नृप गर्ब॥
औरा वरने नहिं चलत छल बल बुद्धि उपाइ॥
टटकन टरै न गाज जिमि मेरवन ते मृग राइ॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास रामसनेही कृत कृष्णायण रुक्मिनी हरण बर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः११

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि॥
नीति सहित रुकुमिन कथा हरि कृत कहत बखानि॥

चौ० यहि बिधि जब श्रीकृष्ण मुरारी॥ हरि चलि भे भीषमक कुमारी
तब तो जरासंध अस कहई॥ धृग धन्वी हम सब को अहई॥
जिन के जियत गोपनृप बारी॥ हरि ले गो जिमि सिय हरि नारी।
यशी पुरुष कहँ अपयश होई॥ मरन नीक भल जियन न सोई
अस कहि गहि आयुध सब दौरे॥ धरु धरु मारु मारु कहि बौरे।
इत हलधर यादौ लै धाये॥ भिरि गये ठौर ठौर भट साथे॥ ॥
पैदर ते पैदर हय ते हय॥ रथिन ते रथि जूटे गय ते गय।
छूटे चक्र बान बिकराला॥ तोमर परशु शक्ति सम काला
मुद्गर शूल भुशुण्डि सोहाई॥ पुनि कृपान ते मची लराई।
कोटिन मुण्ड धरणि पर गिरहीं॥ धरु २ कहि कबंध बहु फिरहीं
भूत प्रेत योगिनी कराला॥ मुदित भये खग स्वान शृगाला
यहि बिधि सेन नृपन की नाशी॥ शंख शब्द कीन्ह्यो बल राशी

दो० जरासंध शिशुपाल दोउ गये मुरतही भागि॥
धीरज दै सठ रुक्म तब चढ़ा रुकिमणि लागि॥
जैसे पाखी की दशा देखत पाँखी आन॥
तद्यपि कूदत दीप मँह अस बिमोह बलवान॥

चौ० आगे बढ़ि कृष्ण हि ललकारा॥ जान कहाँ करि बिप्र हमारा

रह्यो डहं कि कदरन के बीचा॥ जानहुं आजु आपनी मीचा।
अस कहि निकट आइ प्रभु पाहीं॥ मारिसि गदा मांझ उरमाहीं
पकरि कृष्ण शिर काटन लागे॥ कह रुक्मिणी जोरिकर आगे
बंधु भीख मां कहँ प्रभु दीजे॥ इतना कहा चेरि कर कीजे॥
मोछ मुडाइ राखि पुनि चोटी॥ पाछे बांधि लिहिनि निज जोटी
कटक निधनि आये बलभाई॥ सनेमान करि दीन छुड़ाई।
बोले हरिते उचित न कीन्ह्यो॥ बंधु विरूप बिरचि दुख दीन्ह्यो।
राजा सुत दुख पावा होई॥ लघु मति हमें कहब सब कोई।
बंधु केरे जो बध कर कामा॥ तदपि न हतिये हित परिनामा
जो बहु लाभ कुसंगम होई॥ तदपि न कीजे संगति सोई॥
होइ धनी धन रहित जो कीजे॥ तदपि ताहि लघु प्रकृति न लीजे
जो न होइ बल देन को दाना॥ तदपि न तजिये सम सनमाना
घटे प्रीति जो मित्र ते कबहूं॥ सुख ते उघरि न जूटिय तबहूं
जो निशि दिवस न हरिहि जिये ये॥ तदपि न सांझ सुचू बिसरैये
जो नर नारि होइ दोउ त्यागी॥ तदपि रखिये जिमि तृण आगी
पर हित करत प्राण जो जाई॥ तदपि न तजिये कबहु भलाई

दो० राशि रोग रिपु अगिन नृप करत तपोधन ब्याल॥
जो ये होवैं लघु तदपि सजग रहिय सब काल॥
बनिक बाम बैरी बिकल बिसनी चुगुल सुजान॥
करैं कोटि सोहें तदपि इन विश्वास न आन॥
जो कामी नर कपिण कहि करे आपनी निन्द॥
तदपि अकार्य न दीजिये विद्या बिंद रु जिन्द॥
जो सुर भूसुर साधु की सधे न सेवा भाव॥
तदपि न निन्दा कीजिये नाहि सुनिय करि चाव॥
उत्तम विद्या नीच ते मिले जो दीन्हे मान॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तदपि तासु ते लीजिये सिर पर धरि आसान॥
जो कबहूं सत संग ते उदय होय वैराग॥
तदपि एकही बार कुल धर्म न कीजे त्याग॥

चौ० जो सब तीर्थन मिलै करारी॥ तदपि न तजिये हरि पद बारी
जो कबहूं गुरु रहै रिसाई॥ तदपि निहोरि चूक बक साई॥
जो धन हित विद्या लघु करी॥ पढ़ि तदपि लीजे निज हेरी॥
जो शुचि दास कबहुं फिरि जाई॥ तदपि ताहि है नर्म मनाई॥
जो अपने ते बने न नेकी॥ तदपि अपर को करत न छेकी॥
जो श्रुति शास्त्र सुखागर नहिये॥ पढ़त सुनत नित तद्यपि रहिये
जो अति कष्टहु ते सत्संगा॥ मिलै तदपि नित करिय प्रसंगा
सुरस सन्त कछु कहैं न यद्यपि॥ करिये आदर मान लखि तद्यपि

दो० कवि बुध गुरु तिय सुत सुहृद द्विज मरसी पशु भाय॥
जो यह करैं अपनीति कछु तदपि न रहे रे जाय॥

चौ० पुनि रुक्मिणि ते गिरा उचारी॥ तजहु शोच निज बंश बिचारी
छत्री कुल विधि अस निरमायौ॥ अवनि खनि धन धाम लोभायो
भ्राते भ्रात हने करि कोहा॥ भूप कने अस पालक मोहा॥
सो गुण हममें एको नाहीं॥ सब कर हित चाहें मन माहीं
हितू अशाले प्रिय अधिकाई॥ सलभ जरै नहिं दीप लगाई
बहुरि विवाह आठ विधि तेरे॥ धर्म शास्त्र में मुनिन निवेरे।

दो० ब्राह्म दैव परजापती आर्ष असुर गन्धर्व॥
राक्षस बहुरि पिशाच अब सुनहुं ब्याह विधि सर्व॥

कुण्डली छं० सालंकार दान कन्या को ब्रह्म कहावै सोय। दान दक्षिणा में कन्या को देत दैव सो होय॥ तुम दोउ मिलि सब धर्म करो कहि देइ प्रजा पति जानो। लै है धेनु देत दुहिता जो सोई आर्ष पर मानो॥ शुद्र प्रमसतन की क-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न्यन को हरिबो सोइ पिशाचा। बरै कुँवरि बधि बंधु सो रा-
क्षस नृपै परत यह राचा॥ है सकाम कन्या कर पकरे ब्याह
सो गंध्रब कहिये। असुर अनीत प्रीति नहिं पौरुष यह उत्त-
महि न चहिये॥

चौ॰ तेहिते हम क्षत्री के बालक। कीनि अनीति न निज कुल घालक
सुनि बैदर्भी अति सुख पायो। मोह जनित बिषाद बिसरायो॥
रुक्म लाज बस भवन न गयऊ। निज दासन ते बोलत भयऊ॥
पहिलि प्रुरुष से बात जो कहिये। कृत बिन मुखन देखावा चहिये
ताही ठौर नगर यक डारा॥ नाम भोज कटु ताकर धारा॥
सब जाती सन मानि बसाई॥ रह्यो तहां सुत नारि बोलाई
इत शिशुपाल कह्यो बिलखाई। अब हम जावन निज कुस्माई
हँसी की बात कही नहिं जाई॥ मूरुख चन्द बने इत आई॥
जरा संध कह भूपन तीरा॥ हानि लाभ रह ते है बीरा॥ ॥
हम नहिं प्रथमे इन ते हारे॥ पुनि दोउ बंधु पौल पर जारे॥
तेहि ते तात तजहु गति मन की॥ दारु यथा पिता सम गति तन की
समुझि सो कबि सुख शोक न गहई। बर्तमान सम बर्तत रहई॥
मूरुख गई बस्तु को सोचैं॥ द्रब्य पाय जेहि धर्म न रोचैं॥
मूरुख करी कृत्य को मानैं॥ हित की बात न मन में आनै॥
मूरुख पंथ चलत मैं खावैं॥ मूरुख हँसत माहिं धत लावैं॥
मूरुख सदते करैं बिबादा॥ खरचैं द्रब्य बित्त ते जादा॥
मूरुख करै सबल ते बैरू॥ मूरुख बर राखै अपन गेरू॥
मूरुख बिन मतलब कटु बोलैं॥ मूरुख पाप अपर के खोलैं
मूरुख द्वै बिच तीसर फांदैं॥ मूरुख बात बाम की कांदैं॥
मूरुख निरधनि के धन धरई॥ मूरुख रहु माहिं तिय बरई
मूरुख बहिनि सास संग भेजे॥ मूरुख जाइ पराई सेजे॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मूरुख कर्म क्रिया ते हीना। मूरुख चलै न पति आधीना।
मूरुख मद माँगन में करई। मूरुख प्रीति जोरि पुनि लरई।
मूरुख निज मुख निज गुण गावै। मूरुख बालक मुहँ लगावै।
मूरुख त्यागी है धन जोरै। मूरुख बिन मतलब फल तोरै।
मूरुख दुख लदेइ बिन जाने। गहै चपलता गुरु अस्थाने।
सबते बड़ मूरुख तेहि चीन्हा। नर तन जिन हरिभजन न कीन्हा।
तेहिते तुम मूरुख के लेखे। मिली न मिली वस्तु अपान मेखे।
यहि बिधि सब भूपन समुझावा। तब लज्जात निज भवन सिधावा।
पहुँचे कृष्ण द्वारका तीरा। सुनिकै उग्र लई बहु भीरा॥
आगे लिहिनि धूम ते आई। राजमहल लाये सुख पाई॥
कीन्ह विवाह वेद विधि लेरे। लागे रहन सकल सुख मेरे॥
कह नृप रुक्मिणि पूर्व मझारी। करी पुराय अस कौनि कुमारी।

**दो०** तीनि अंश ते जानुकी लीन रहे औतार॥
वेदवती सोइ रुक्मिणी सतभामा महि भार॥

**चौ०** कृष्ण रुक्मिणी केर शृंगारू। कहन शेष नहिं पावहि पारू।
तोमैं किमपि कहौं मति थोरी। याय पपील कि सागर बोरी।
कछु दिन बादि रुक्मिणी जावा। बालक नाम प्रद्युमन पावा।
शोभा सदन मदन अवतारा। हरि प्रति बिंब मनहुँ अपतिथ्यारा।

**दो०** सम्बर राज्ञा यवन है हरि लैगा रिपु जानि॥
दीन्हिसि डारि समुद्र महँ लील लीन मीनानि॥

**चौ०** धीमर मीन पकरि सोइ लीन्हा। जाइ भेट संबर को दीन्हा।
चीरत सुत निकसा महिपाला। सौंपि दीन रति का तेहि काला।
पाँच बरष का भा जब बारा। भेद पाइ सबर को मारा॥ ॥
लैरनि संग द्वार के आये। मामहुँ प्राण रुक्मिणी पाये॥
भा तब सानद सहित बिवाहू। बसी सदन रति सह नरनाहू।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० श्री गुरुदेवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
कृष्णायन यह ऐन को पूर कीन्ह रघुनाथ॥

चौ० दुनिया ऐन कहौं समुझाई॥ पन्द्रह से पचास चौपाई॥
दोहा एक से सताइस जानो॥ सोरठ चारि सोऊ पहिं चानो॥
रोला छन्द नवे हैं सोई॥ नवै कुण्डलिया यामें जोई॥ ॥
कुकुभा छन्द तीनि हैं भ्राता॥ तीनि गीतिका यामें ताता॥

दो० भुजङ्ग प्रयाता एक हैं एक सवैया छन्द॥
एक कवित चामर सु एक एक त्रिभंगी छंद॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास सनेही कृत कृष्णायन रुक्मिणी मङ्गल प्रद्युम्न उत्पत्ति अरुहलि सङ्ग बिबाह बर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः १२॥

इति कृष्णायन समाप्तः

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

## श्री रघुनाथदासरामसनेही कृत रामायणाबाल काण्डप्रारम्भः

### श्लोक

बपुवनजविनीलं लोकलावण्यधामं॥
सुखनिधि समशीलं शोहिला संविशालं॥
कर धनुशर धारी क्रीटकं पिङ्गवस्त्रं ॥ ॥
बिधिहरिहर मीशं जानकीशं नमामि १॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि॥
कहौं ब्रह्मण्ड पुराण मत रघुपति खण्ड बखानि।
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
बरणत सीता राम गुण सुखप्रद जनरघुनाथ॥
कथा अलौकिक कुशल सुनि करैं नमनसंदेह।
राम अनन्त अनन्त गुण कतहुं होइ गो एह ॥
हाथ जोरि बोले वचन मुनि शौनक अभिराम॥
केहि कारण अवतार जग लीन परात्पर राम ॥

सो० सुनि सुमन्त सुखपाइ॥ बोले मुनि हरिगुण सुनहु।
जो बरणे गिरिराइ । गिरजा प्रति सोई कहब ॥

चौ० एक समय कैलाश मंझारी॥ बैठे रहे उमा त्रिपुरारी ॥ ॥
मन प्रसन्न शंकर कर जानी। बोली शिवा जोरि युगपानी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

राम सच्चिदानन्द निकेता॥ नर तन धरनि नाथ केहि हेता।
कीन्हिनि चरित कौन विधि केरे॥ सो सब नाथ कहौ हित मेरे।
ज्ञानहु तेपि श्रवण सुख भारी॥ सन कादिक जहं रमे विचारी।
सुनि शंकर बोले मृदु बानी॥ धन्य२ तुम धन्य भवानी॥ ॥
राम चरित पूछेउ सुखदाई॥ सो अब सुनो कहौं मैं गाई॥
कौन चहत लीला हरि जबहीं॥ ठाढ़ करत हैं कारण तबहीं।
जैसे बिशिष चलावै कोई॥ प्रथमें धरत निशाना सोई।
उभै देव जाने अभिमानी॥ अरि करि शरण भये भयमानी
तीसर हेतु मनु हि बरदाना॥ दीन रहनि प्रभु कृपा निधाना
तूर्य युद्ध जानु किहि देखावन॥ पंचम जग बिराग उपजावन
षष्ठम मुनि जन सुमिरन कीन्हा॥ भक्त बसल लखि दर्शन दीन्हा
सप्तम देखि धरम की हानी॥ अष्टम प्रीति जनक की जानी
नवम बचन विधि के बहुतेरे॥ कीन्हे चहैं सांच नेहि तेरे॥
दशम दशानन सबै सताया॥ बधन हेत प्रगटे रघुराया॥
यहि विधि हेत हजारन जानौ॥ इतने ही हित जन्मन मानौ।
पुनि गिरिजा बोलीं कर जोरी॥ राम कथा पर प्रीति न थोरी
नाथ कहौ केहि विधि जगदीशा॥ बपु धरि निधन कीन दशशीशा
केहि विधि भवन बसे सुखकारी॥ सुनि लागे तब कहन पुरारी

दो० इक रावण जय बिजय में युगुल जलंधर श्राप॥
तीसर रावण शंभुगण चतुरथ भानु प्रताप॥

चौ० यहि विधि कल्प२ प्रति रावण॥ होत करत हरि बपु धरि पावन
जेहि कारण साकेत बिहारी॥ प्रगटे तासु कथा सुनु प्यारी।
नाम प्रताप सखा प्रभु केरा॥ महि अवतरयो आइ प्रभु पग
सत्य केतु नृप केकै देशा॥ तस्य भवन जनु उयउ दिनेशा
नाम प्रताप भानु बल धामा॥ कीन राज रिपु दल अभिरामा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक बार बन गयो शिकारा॥ तहां कपट मुनि असुर निहारा
तिन्हें लोभ बस चीन्ह्यो नाहीं॥ गुरु बनि कि हिंसिपल घर माहीं
गोपल असन भई नभ बानी॥ विप्रन श्राप दीन दुख मानी।
राक्षस होउ कुटुम्ब समेता॥ ते जहँ भये सुनो सो हेता॥
ऋषि पुलस्त सुत ब्रह्मा केरे॥ रहे तप करत मेरु के नेरे॥
तहँ तृणा बिन्दु राज ऋषि रहेऊ॥ कन्या तासु आन्ति कर कहेऊ
सखिन सहित सो दिन प्रति आवे॥ कलबल मुनि के निकट मचावे
सुमिरन ध्यान बने नहिं राई॥ तब पुलस्ति अस कहा रिसाई।
आस पास जो हमरे आवे॥ प्रमदा पुत्रवती है जावे॥॥
कन्या गई रहा अब धाना॥ जब तृणा बिन्दु ध्यान करि जाना
तब सोइ सुता मुनिहिं बरि दयऊ॥ तेहि ते बिश्व श्रवा सुत भयऊ
बड़े भये पितु आयसु पाई॥ करन लाग तप कानन जाई

दो० भरद्वाज मुनि के रहे कन्या सुयशा नाम॥
बिश्व श्रवहि बर दीन तिन नेह सहित अभिराम॥

चौ० तिनके भये कुबेर बिधाता॥ कीन्ह्यो ताहि यक्ष पति ताता
तदपि एल बिल दिन प्रति आई॥ करहिं मातु पितु की सेवकाई
यहि बिधि बीति बरष अठारा॥ तब कुबेर निज हृदय बिचारा
जो मम पिता अपर प्रिय बरहीं॥ तौ दुन हुन की सेवा करहीं।
मय दानव याच्यो अभिरामा॥ माया दीन सुबक्षा नामा॥॥
तिनके हित नित फूल पठावा॥ सुनि मय दानव बचन सुनावा
बिप्र भिक्षा आंगन चाही॥ हम निज सुता बिबाहब ताही
औरो बचन कहे कटु नाना॥ दूत धनद ते आइ बखाना॥
सुनि कुबेर निज सेन बटोरी॥ चढ़े तहां भइ मारु न थोरी॥
लाये तिन्हहिं जीति यहि रीती॥ दीन्ही पितहि परम सह प्रीती
विविधि भाँति कीन्ही तिन सेवा॥ देखि प्रसन्न भये मुनि देवा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सांझ समय लीन्हिनि रतिदाना ॥ यद्यपि मुनिवर दोष बखाना
भई गरभ संयुत यहि भावा ॥ जन्म समय कर औसर आवा
उलका पात होन तब लागे ॥ गर्जैं मेघ समय बिन आगे ॥
रवि शशि ग्रहन पवन चलि जोरा ॥ दिनकी राति भई अति घोरा
काँपि उठी महि देव डेराने ॥ सब बिप्रन के पेट पिराने ॥
दुःखु मुदित मुनि भये मलीना ॥ अग्नि तेज हत नभ द्युति छीना
उदित केतु नभ जंम्बुक बोले ॥ मुनिदल कोर लखे बिधि लोले
प्रथमें सुत देवी युग जाये ॥ रावण कुम्भकर्ण कह वाये ।
कहूँ एक हत केकसी माता ॥ सो जय विजय समय की बाता
भए सुबक्षा के सुत पाछे ॥ त्रिजटा अग्र विभीषन आछे
माया सुत जन्में कर लेखा ॥ खर दूषण त्रिशिरा सुप नेखा ॥
अब कछु भये सयाने नीचा ॥ करैं उपद्रव कानन बीचा ॥
खग मृग न कहु बचन न पावैं ॥ तपत मुनिन कहँ जाइ सतावैं

दो॰ मारन मोहन बस करन उच्चाटन अस्तम्भ ॥
आकरषण सब भाँति के पढ़ें सदा करि दम्भ ॥

चौ॰ निश्चर प्रथम सुरन रण भाने ॥ बचे ते रहे पताल दुराने ॥
तिन निज वंश आयनि परजान्यो ॥ छिपि कर आवा गच्छ सुठान्यो
एक दिन दनुज पूज्य अस कहेऊ ॥ करहु तपस्या जो सुख चहेऊ
अमर बिना जरा रुग्न सरीखा ॥ लागे तपन सकल सुनि सीखा
अरध अधि रवि शशि हग दयऊ ॥ दिव्य सहस दश संवत गयऊ
महा कठिन तप लखि विधि आये ॥ दशमुख खल लखि बाग बोलाये
बैठि गिरा तिहि जीह मँझारा ॥ तब बिरंचि बरु माँगु उचारा ।
बोला सुनि रावन हम नाहू ॥ नर हरि तजि न मरैं कर काहू ।
एव मस्तु कहि अज तहँ आये ॥ जहाँ बिभीषण ध्यान लगाये
सुजन जानि बोले अनुरागी ॥ भावे सो लीजे बरु माँगी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह्यो बिभीषण दोउ कर जोरी॥ हरि पद प्रीति बढ़ै प्रभु मोरी।
एवमस्तु कहि पुनि धरि धीरा॥ पहुँचे कुम्भकरण के तीरा।
दो० ताहि देखि बागीश निज मन में कीन विचार॥
जो यह नित भोजन करी नाशी सब संसार॥
सो० करि यहि भाँति विवेक। प्रेरि गिरा फेरी उपज्न॥
माँगि सिवा सर एक। जागहुँ सोवहुँ मास षट॥
चौ० कहि अस्त्यातु बहुरि बिधि डोले॥ खर दूषण त्रिशिरा ते बोले
तिन माँगा हम होइँ बीरा॥ अन्त समय जाइँ हरि तीरा॥
देखि सो त्रिजटा शीश नवावा॥ होइ प्रीति हरि पद बरु पावा
पुनि लंकिनी नवायो शीशा॥ बोले तब तेहि ते बागीशा॥
शाखा मृग तुम का जब मारी॥ तब छूटी यह देह तुम्हारी।
दिव्य रूप धरि हरि पुर वासा॥ होई तब निश्चर कर नासा।
यहि विधि विधि सब का बर दीन्हा॥ पुनि निज लोक पयाना कीन्हा
दश मुख जो अजते बरु पावा॥ प्रभु दित है सो कविहि सुनावा
कह्यो शुक्र है गे बड़ि भूला॥ नर बानर कौ तज्यो समूला
बोला कौन चूक इन लागी॥ डरे बृथा तृण दारुहि आगी।
अस कहि लाग करन ठकुराई॥ निश्चर निकर रहे तहँ आई
दो० मय तन या मंदोदरी है मति संजात॥
बरि दीन्हीं तेहि रावरी समुझि सबल भलनात॥
नारि मनोहर पाइ के उठा अधिक हरषाइ॥
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि ब्याहे पाँचौ भाइ॥
चौ० सानंद नि ब्रक दंत कुमारी॥ सो भइ कुम्भकरन की नारी
नग दन्ती के हरि मख जाई॥ सो बल्लभा बिभीषण पाई॥
रद भख के कन्या त्रै बरणी॥ खर दूषण त्रिशिरा की घरणी।
बनि तन सहित सुपंखा आई॥ करहिं भवन सुख शोक बिहाई

यक दिन दश मुख पितु पहँ गयऊ। तेहि क्षण धनपति आवत भयऊ॥
बैठे धनद पितहि सिर नाई॥ मुनि कीन्ह्यो आदर अधिकाई॥
कछुक काल रहि आयसु माँगी॥ गये कुबेर भवन अनुरागी॥
आदर अधिक पिता कृत देखी॥ रावण उर भा क्रोध विशेखी॥
खलन केर यहँ लक्षण आहीं॥ पर प्रभुता लखि जरि बरि जाहीं॥
उठि ऋषि ढिग ते मन्दिर आवा॥ जननी ते वृत्तान्त सुनावा॥
तेहि तब कहा धनद ये आही॥ कंचन की लंका में रहई॥
चारो तरफ सिंधु है जाके॥ अमरपुरी नहिं सम सरि ताके॥
सो लंका तव नाना केरी॥ बसे आपु मम पितहि खदेरी॥
सुनि दशमुख अति उठा रिसाई॥ दल लै लंक गेर रिसि जाई॥
प्रथम कुबेर युद्ध अति कीन्हा॥ पुनि हे श्रमित त्यागि गढ़ दीन्हा॥
भागत देखि निशाचर राई॥ लीन्हिसि पुष्पक यान छिनाई॥
लंक बिलोकि परम सुख मानी॥ कीन्हीं तहँ रावन रजधानी॥
यथा योग्य पुनि निश्चर नाहू॥ दीन्ह भवन बाँटि सब काहू॥
तब कुबेर निज कुटुंब समेता॥ अलका पुरी बसाइ सचेता॥
आपु गये सुरपति के तीरा॥ सकल बेवस्था कही अधीरा॥
सुनि सुरेश सब देव बोलाये॥ हनि निशान लंकहि चढ़ि आये॥
दशमुख लै निकसा कटकाई॥ होइ इन्द्र ते लगी लराई॥
अस्त्र शस्त्र छूटैं बिधि नाना॥ अगिणित असुर होंइ बिनशाना॥
बासव कोपि बज्र यक मारा॥ गिरा मूर्छि तब अवनि मँझारा॥
निज गज ते तनु मर्दन लाग्यो॥ मानहु श्रमित जानि अनुराग्यो॥
कुंभकरण तब भिरयो प्रचारी॥ व्याकुल भये अदिति सुत भारी॥
रवि सुत सेन बिचल निज जानी॥ झपटि दंड मार्यो उर तानी॥
रावण अनुज दंड गहि लयऊ॥ सहजै निज मुख मेलत भयऊ॥
रवि उदर शठ सोवन लागा॥ षट महिना बीते पुनि जागा॥

दो० भयो तासु उर दाह तब उगिलि दिहिसि यम दण्ड॥
नमकि लीन महिषेश पुनि मारेहु दण्ड प्रचण्ड॥

चौ० लागत सिर तेहि पीर न व्यापी॥ भयो नींद बस पुनि खल पापी
तब हरि हने दण्ड अधिकाई॥ सोवत सो औधिक कछु सचु पाई
मुरछा तें तब रावण जागा॥ पुनि देवन सें जूझन लागा॥
नख भुज दण्ड धनुष सर लीन्हे॥ मारि बिबुध सब व्याकुल कीन्हे
लखि दिग्गज चिक्करि दिग आये॥ धनुषबान सब काटि बहाये
गहिसि तिन्हें तब भुजा पसारी॥ मारि दुरद न दशन प्रचारी॥
दश मुख के उरला महिं कैसे॥ शिला माझ बिन फर सर जैसे
लखि रावण तन की कठिनाई॥ तब सब दिग्गज चले पराई
धनद इन्द्र तब गे बिधि पासा॥ शीस नाइ सब हाल प्रकासा
कह बिरंचि सुनु शक्र सुजाना॥ रावण है तप बल बलवाना
तेहि ते तुम जनि करहु लराई॥ गिरि खोहन मा जाहु पराई
सुरन सहित सुमिरहु करतारा॥ बिन हरि को दुख मेटनहारा
सृष्टा बचन सुनत मन माने॥ देवन में तब आइ बखाने
सीख पुरंदर की लहि काना॥ सब हुन गिरि बन कीन्ह पयाना
जाय दशानन सैन समेता॥ सो धांसि देवन केर निकेता
जो सुर पुर धर मारग पावा॥ तिन्हें पकरि निज लंकहिं आवा
रावण लंकहि गा सुनि काना॥ बसे अमर पुनि निज अस्थाना॥
सुर पुर बिबुध बसे सुनि पावे॥ तब खल दल ले आतुर धावे
रहैं सजग जब आवत जानें॥ भागि जाहिं सुर समर न ठानें
एक दिवस अह मित अधिकाई॥ सत दीप में पहुंचा जाई

दो० युवतिन ले बोला बलकि कहां गये सुरवंक॥
तिन्हें जीति संग्राम में तुम्हें जाहु लै लंक॥

सो० सुनि एक जठर रिसाइ। पकरि पछारि उठाति कम॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दीन्हिसि सिंधु बहाइ है अचेत निकसा तुरत ॥
चौ० पुनि धरि धीर टेकि भुजबीसा ॥ बलि ढिग जाय नवा पद शीसा ॥
वैरोचन सुत आदर दयऊ ॥ कुशल बूझि तब बोलत भयऊ ॥
तव प्रसाद सब आनंद होई ॥ सुर सन्मुख होइ सकत न कोई ॥
तुमहूं निज शत्रुहि गहि लीजे ॥ चलि महि लोक राज निज कीजे ॥
कह बलि कान कनकशिप के मंडन ॥ पहिरि लेहु तुम सुत दुख खंडन ॥
लाग उठावन उठा न कोई ॥ याही पौरुष ते जय होई ॥
जिन ये अस सब अपमान धारे ॥ ते भट गे एक छिन मा मारे ॥
तेहि ते भवन जाहु ले प्राना ॥ चला तुरत मन माहिं लजाना ॥
बावन दीख जानि अभिमानी ॥ लीन धराइसि सुनि के पानी ॥
मारत लात जात गरि आवत ॥ निज अहार फिरें दिखावत ॥
दीन देखि प्रभु दीन छुड़ाई ॥ पंपा पुर तब गरजा आई ॥
प्रथमे बालि बहुत समुझावा ॥ सुनेसि न तब गहि बगल चपावा ॥
संध्या करि इस बांधिसि आनी ॥ छोरि दीन लखि तारा रानी ॥
तब हरि पुर रेवातट गयऊ ॥ सहसबाहु तहं क्रीड़त रहेऊ ॥
जल अस्थंभ किहिसि तेहि जाना ॥ पकरि पाशि है शाले आना ॥
शिरनि दीप धरि नृत्य करावा ॥ सुनि पुलस्ति मुनि जाय छुड़ावा ॥
लज्जित है कुलगुरु ढिग गयऊ ॥ निज बिरतांत सुनावत भयऊ ॥
कह कवि नरहरि दिहेउ बड़ाई ॥ तेहि ते तुम बर बिजय न पाई ॥
तासु शोच चित धरहु न ताता ॥ मैं जो कहौं करहु सो बाता ॥
अब तुम निज उर शिव पद धरहू ॥ जप तप जाल भाल मख करहू ॥
अभिमत बरु शंकर ते लीजे ॥ विश्व सुबस करि पुनि सुख कीजे ॥
सुनि तुरतै गा सिंधु समीपा ॥ लाग करन तप दनुज महीपा ॥
बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा ॥ साल यज्ञ में पुनि मन दीन्हा ॥
बरष पांच मन निज कर नीचा ॥ हुते शीश पावक के बीचा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहि विधि मख कृत देखि पुरारी। कहि नि माँगु बर रुचि अनुहारी
सुनि बानी बोला दशभाला॥ अजर अमर मोहिं करहु कृपाला
कह शंकर सुनु बचन हमारे॥ विधि के अंक टरहिं नहिं टारे।
तेहि ते जो तप कीन्हेउ भारी॥ तुव तन बल होई अधिकारी
शीस समर्पि दिह्यौ तुम मोहीं॥ एक के कोटि देब मैं तोहीं।
शिव बर अचल पाइ मन भावा॥ हरष सहित निज मन्दिर आवा।
हरि॰ गीतिका छं॰ आवा भवन निज कटक साजि सु-
रेश पर धावत भयो। भय भागि हरि बैकुंठ तजि लखि छीर
दधि तलि छिप गयो॥ सोइ पहिरि भूषण सकल तन म-
न मारि कपि पति पुर ढरयो। मिलि बालि जोरी मित्रता
सुनि सहस भुज ढिग सोइ करयो॥

सो॰ अमर नाग नर यक्ष। गंधर्व किन्नर बर सुत॥
जीति बैरसि पर तक्ष। बचैन लागै हाथ जे॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत रावणोत्पत्ति अरु युद्ध विषै जय पराजय वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः १॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि॥
कहौं वृहद सम्मत कछुक कोकिल काव्य बखानि॥

चौ॰ यहि विधि रावण बिगत बियोगा॥ करै लाग सुर दुर्लभ भोगा॥
फल भखै अरु मदिरा पीवै॥ सन्तत सुर मुनि मनुज दुखावै
भय जेहि पति कृत रुचै न लेशा॥ जब तब करै नीति उपदेशा
सो शिष दशकंधै नहि भावै॥ नीच न ताकहँ कर्म सोहावै॥
एक दिवस नारद तहँ आये॥ प्रथमै दश मुख सभा सिधाये
दण्ड दीय ताकी रुचि गाई॥ पुनि मय जा घर गे ऋषि राई
करि प्रणाम सब विधि सनमानी॥ आसन दै बोली मृदु बानी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देव देखि मोहिं निज पति करनी ॥ संग्रहोत जात नहिं बरनी
ताकर होई कौन हवाला ॥ त्रिकालज्ञ पुर कहें कृपाला
बोले सुनि तप बल बिबुधारी ॥ करत और करिहै सुखकारी
पुनि सुर मुनि हित त्रिभुवन राई ॥ सूर्य वंश औतरिहैं आई ।
पितु निदेश करिहैं बन पावन ॥ तिन की रवनि हरी तव रावन
लंकहि जब जग दम्बा आई ॥ तूल सरिस कपि लंक जराई
सेतु बांधि ऐहैं प्रभु पारा ॥ कुटुम्ब सहित करिहैं संहारा ॥
होव सुखी सुर विप्र समाजू ॥ करिहैं अभय विभीषण राजू
अस कहि कुंभकरण हो गयऊ ॥ सुनि भय जाउर अति दुख भयऊ
करि विचार मन राखि बिसि गोई ॥ हरि इच्छा होई सो होई ॥
कुम्भकरण तेहि औसर जागा ॥ मुनिहिं देखि उठि चरणन लागा
कछु हरि गुण अरु षितहि सुनाये ॥ पुनि मुनिवर विधि लोक सिधाये ।
कुम्भकरण पुनि सोवत भयऊ ॥ यहि विधि कछुक काल चलि गयऊ
विपुल पुत्र भे रावण केरे ॥ सब विद्या बल बुद्धि घनेरे ॥
बारिद नाद जेठ सुत ताका ॥ प्रथम जासु सुभटन महं साका
सो जब बीस अब्द करि भयऊ ॥ तब तप करन हेत बन गयऊ
वर्ष सहस्र किहिसि तप भारी ॥ आय शक्ति तब गिरा उचारी
मांगु तात बर निज मन भावा ॥ मेघनाद अस बचन सुनावा
यान लोप सब साज समेता ॥ देहु एक मोहिं कृपा निकेता
जेहि पर चढ़ि करि मैं मैदाना ॥ जीतहुं सकल वीर बलवाना
सुनि स्यन्दन तब दीन्ह्यो देवी ॥ बोली बचन जानि निजु सेवी
यहि रथ का तुम धर्यो छिपाई ॥ अति रण कठिन परै जब आई

दो॰ तब यहि पर आरूढ़ है आयहु व्योम मंझार ।
युगुल जाम करि युद्ध तहं जीतिहो सुभट अपार ।
जो त्यागी द्वादश बरष नींद नारि अरु अन्न ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो सुत मारी तोहि जग अपर न मारी जन्न ॥

चौ०सुनि शिर नाइ मुदित गृह आवा ॥ पथ दुरी धरि पुनि बनहिं सिधावा
तप करि वर लीन्हिसि शिव तेरे ॥ समर समय भय होय न मेरे ॥
एव मस्तु कहि गो गिरिराई ॥ पुनि आवा गृह शोच बिहाई ॥
एक दिवस लै सुभट अपारा ॥ सुर पति केवल ठनि सिसिकारा
सुनि बासव अति बहुत रिसाना ॥ चढ़ि ऐरावत कीन पयाना ॥
मेघनाद लखि चाप चढ़ाई ॥ मारे सर गज के बहु घाई ॥
लागत सर बिद्रुम करि क्रोधा ॥ धावा पटल मेर तहँ योधा
पुनि गज झपटि धरनि तेहि गयऊ ॥ बारिद नाद तुरत गहि लयऊ
सुरपति मारे बज्र घनेरे ॥ लागत मनहुँ कुसुम करि केरे ॥
नाग सूँडि तेहि छाँड़ी नाहीं ॥ लावा गहि लंकहि पितु पाहीं
देखि पराक्रम निज सुत केरा ॥ दश मुख के मुख भयो घनेरा
बोलि सकल बाजन बजवाये ॥ उत्सव करि बहु रत्न लुटाये ॥
लंकहि गहार बांधि आने काना ॥ आये जहँ रावण बलदाना
हंसा रूढ़ बिधातहि देखी ॥ दश मुख उर भा हर्ष बिशेषी
पुत्र सहित उठि नायो माथा ॥ दर्शन दै मोहिं कियो सनाथा
अब सो कहो आयो जेहि हेता ॥ तब बोले अज कृपा निकेता
बारिद नाद धन्य बल धामा ॥ अब ते इंद्रजीत भा नामा ॥
शक्रहि देउ अमर पुर जाई ॥ अब तुम ते नहिं करी लराई ॥
ब्रह्म बचन सुनि कहेउ असुरारी ॥ बचन तुम्हार सकै को टारी ॥
कहिसि जाउ सुर पति निज गेहू ॥ प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू ॥
तब बिधि वा रा शक्ति एक दयेऊ ॥ निरफल होव न अस कहि गयऊ
सुनि घननाद बहुत हरषाना ॥ नाग लोक बत किहिसि पयाना
जहँ बासुकी तहाँ चलि गयऊ ॥ देखि नगर अति गर्जत भयऊ
सुनि धुनि अहि पति ब्याल बंदौरी ॥ आइ घेरि लीन्हिनि चहुँ ओरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दोउ दिशि ते शर छूटन लागे ॥ बीज सकल रुधिर ते जागे।
चौदह दिन तहँ भई लराई ॥ तब सब पन्नग गये पराई ॥
रहे अकेले अहिपति जाना ॥ गहिसि भुजा टल धुद्राम समाना।
तुरतहि निज लंकहि लै गयऊ ॥ रावण का कहँ दशानन भयऊ
पुनि लावा निज मंदिर बीचा ॥ बाँधेसि सेज सिराने नीचा ॥
वासुकि उर बहु पीर अपारा ॥ तब फनीश अस बचन उचारा
दंड चहौ सो हमसे लीजै ॥ जीवत मोहिं छाँड़ि अब दीजै
कह धन नाद सुनहुं अहिनाहू ॥ कन्या दंड देहु घर जाहू ॥ ॥
उरग राज तेहि जानि प्रचंडा ॥ देन कही निज दुहिता दंडा।
सुनि घन नाद छोड़ि तब दयऊ ॥ हरष वासुकी के कछु भयऊ।
लै आये निज लोकहि ताही ॥ दीनि सुलो चनि सुता बिबाही
अति सुन्दर घरनी जब पाई ॥ आवा तब लंकहि हरषाई।
मात पिता पद शीस नवावा ॥ पुनि पत्नी युत निज गृह आवा।
लागा करन सुख शोच बिहाई ॥ अपर सुनौ अब ताकर भाई।
अछै कुमार सघन बन गयऊ ॥ महा कठिन तप साधत भयऊ
सहस वर्ष बीते हर आये ॥ मांगु तात बर बचन सुनाये ॥
तब तेहि कहा सुनहुं भगवाना ॥ देहु मोहिं एक तीक्षण बाना
जेहि तें रण रिपु जीतहुं भारी ॥ दै कर सर अस कह्यो पुरारी
यहि विशिखे लै घर सुत जाहू ॥ कपि यक तजि जितिहो सबकाहू
सुनि संभाद निज मंदिर आवा ॥ तेहि क्षण महा हरि सुत पावा
बीस व्याल युत सुनि बिबुधारी ॥ रावन योग न मनसि बिचारी
स्वाना नन ते कहेउ बोलाई ॥ आवहु याहि गाड़ि कहुँ जाई
दूत दाबि नै अरन्य सिधावा ॥ पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा
रघुपति चरित करन हित आगे ॥ मरा न सो बालक तेहि लागे
खाइसि खनि माटी एक मासा ॥ पुनि गा निकरी नीरनिधि पासा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तेहि लखि राहु जननि अनुरागी। भवन लाइ निज पालन लागी॥
एक दिन तहँ शुक्र चलि आये। बोले पुत्र कहाँ यह पाये॥
छाया ग्रहनि कह्यो तब गाई। जेहि विधि उदधि तीर ते लाई॥
दनुज पूज्य पुनि वचन उचारा। यह है रावण केर कुमारा॥
आदिहि ते सब चरित सुनाये। अहि रावण धरि नाम सिधाये॥
निज उतपत्ति सुनी तेहिं जबहीं। कूदि परा सागर महँ तबहीं॥
निकसा तुरत बितल महँ जाई। तहाँ रहे अति पुरी सोहाई।
सत्तरि योजन बसत ललामा। चामीकर के अति सुठि धामा
दर्वीकर तहँ रहें भुवारा॥ सो बासुकी केर मन मारा॥ ॥
तासु पुरी लखि कौतुक नाना। पुनि गा जहँ नित होत पुराना
तप प्रभाव तहँ सुनि अधिकाई॥ सपदि विपिनि पहुँचा हरषाई
बन में लखी नदी एक बहई॥ कामदना देवी तहँ रहई॥
सुथल समुझि तहँ ध्यान लगावा॥ संवत चौदा सहस बितावा
सब विधि देखि समाधि अडोली॥ वरं ब्रूहि तब देवी बोली॥
इष्ट वचन सुनि बिबिधि कर जोरी॥ माँगिसि वर करि विनय बहोरी
अमरन ते अधिकी सुख करहूँ॥ जीतहुँ तेहि जेहि के संग लरहूँ

दो॰ शेष महेश दिनेश सुर ईश अजीश अनन्त॥
मरौं न काहू हाथ मैं होउँ निशाचर कन्त॥

चौ॰ पितहि कीन्ह अपमान हमारा॥ सोऊ मोहिं याचै एक बारा
सुनि देवी बोली सुनु ताता॥ करि हौ तुम बहु विधि सुख गाता
जेता शेष समय दश शीशा॥ याची तोहिं और भुज बीशा
मारी तुम्हें न कोउ जग माहीं॥ कपि एक मम आचा बस नाहीं
तेहि प्रभु ते जनि कहेउ कुचाली॥ तौ तू अजर अमर कहि चाली
रहन लाग तहँ दनुज कुमारा। अपराजित रवग भूप [illegible] अहारा
यहि विधि बरष पाँच शत बीती॥ तब खल करन लाग अनरीती

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विविधि भेष धरि अहि पुर जाई ॥ अज गज हय खर डारहि खाई ।
एक दिवस दर्वी कर राजा ॥ धरन गये तेहि सहित समाजा ।
अहि रावण करि कठिन लराई ॥ दीन्हे सकल नाग बिचलाई ।
तब दर्विक अनन्त पहँ गयऊ ॥ सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ ।
मुनि बोले करि शेष बिचारा ॥ अहि रावण तप बल अधिकारा
तेहि ते नहिं ऐहो दरि आई ॥ कन्या दै मिलि रहो जाई ॥
तब दर्विक बोल बाबा नाही ॥ दीन्हो बिधिवत सुता बिवाही
कुन्दनि नाम पाइ वर नारी ॥ हस्तिनते तब गिरा उचारी ॥
अब सब होउ बिगत संदेहू ॥ करिहों मैं कानन महँ गेहू ।
अस कहि कामदना ढिग आवा ॥ योजन नव कर नगर बसावा
असुरन सहित रहे तेहि माहीं ॥ करन लाग सुख भोगिन जाही
इन्हं चरित जवन में गावा ॥ आदि रमायन में सो पावा ।
जो रिपु कर प्रभाव कहै कोई ॥ सो तेहि घातक कर यश होई
तेहि ते राम लषण हनुमत का ॥ बरन्यों बीर्जन असुरन कर बर
यहि बिधि सुत दशकंधर केरे ॥ भये भूरि रिपु देवन केरे ॥
जो सब तिन के चरित सुनावों ॥ बाढ़े कथा पार नहिं पावों ॥
औरौं निकर निशाचर बीरा ॥ मेघनाद आदिक रण धीरा ।
कुरु मुख खर मुख करिबा नारा ॥ जंबुय भाल कुमुद कर वारा ।
कुलिस दन्त स्वाना नन पापी ॥ अधम केतु सूकर मुख दापी
कुम्भनि कुम्भ अकम्पन सूरा ॥ केस प्रकेस महिष मख कूरा
कूट प्रहस्त समान न रोषी ॥ तारा बरवत अस्त भष दोषी
खर दूषण त्रिशिरा मति अंधा ॥ बक बिराध अति काय कवंधा
काल नेम सुबाहु मारीचा ॥ उर्ध्व केश मंजारा नीचा ॥
धूम्र केतु लवना सुर सारे ॥ एक एक जग जीतन हारे ।
इन सब के संयुत दश भाला ॥ करे लङ्क बसि राज बिहाला

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत मेघनाद अहिरावण विजय वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः २॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
वृहद् रमायण कहौं कछु कौशल्य चरित बखानि॥

चौ॰ एक बार संग लै कटकाई॥ विश्व विजय हित चला बजाई॥
फिरि आवा तीनों पुर माहीं॥ सन्मुख समर कीन कोहु नाहीं॥
तब रावण मन कीन गुमाना॥ हम सम सुभट न जग में आना॥
तब सब योधा लिहिसि बोलाई॥ आदर करि निज ढिग बैठाई॥
त्रिभुवन भेद लेन के हेता॥ बाटन लाग्यो देश निकेता॥
निश्चर अर्ब पचास समेता॥ काश्मीर पठवा खर केता॥
सोरठ देश दशानन गयऊ॥ नव्वे अर्ब असुर संग दयऊ॥
मूक देश करनाटक दीन्हा॥ खर्ब सवाउ असुर संग कीन्हा॥
मंजारा मालवे पठावा॥ उभै अर्ब तम चर ले धावा॥॥
बक बकच निशिचर रण धीरा॥ खर्ब अढ़ाई संग लै बीरा॥
मारवाड़ कर कानन बीचा॥ आय रहा अधमाधम नीचा॥
भेषा सन भट लै दश अर्बा॥ चला कलिङ्ग देश सह गर्बा॥
गेदा अर्ब असुर लै तारा॥ बङ्ग देश कहँ मुदित सिधारा॥
बीस सहस्र अस्थि भख लयऊ॥ अरुण मृत्तिका देशहि गयऊ॥
अर्ब ऊर्द्ध कच नर भख पाई॥ मगह देश आवा हरषाई॥
चौदा अर्ब खर्ज नख पाये॥ मुख बिख लै गुजरात सिधाये॥
असित कोटि घोड़ शख ल लीन्ह्यो॥ आरब देश पयाना कीन्ह्यो॥
अयुत कोटि भट लै मारीचा॥ संग सुबाहु ताड़का नीचा॥
गाधिपुरी ढिग कानन भारी॥ रहे आय तहँ खल अघकारी॥
लक्ष अठारह सहस छियासी॥ लवणासुर लै खल बल रासी॥
घन बन कोलपुरी के पासा॥ हर्ष सहित तहँ कीन्ह्यो वासा॥

मनु सहस्र लै भट बलवाना ॥ दण्डक बन हुत कौन पयाना ॥
दो० प्रथमै खरदूषन उभै तीसर त्रिशिरा बीर ॥
चौथ बिराध कबंध कहि पञ्चम सबसाधीर ॥
चौ० शत शत योजन बन बिलगाई ॥ रहै कटक लै पँचौ आई ।
यहि विधि सकल देश दशशीशा ॥ दीन्हें बाँटि अधम रजनीशा ॥
जहँ तहँ बिबिध भेष धरि चरहीं ॥ हिंसा करत न नेकहु डरहीं ॥
कोनिउ बात कतहुँ लखि पावैं ॥ तुरत आइ रावणै सुनावैं ॥
भुजबल विश्व स्ववस करि राखा ॥ सुभट स्वतंत्र न एकहु राखा ॥
मराउ लोक पति पाय प्रकाशा ॥ कीन्हिसि सकल देव निज दासा ॥
आयसु जाहि दिहिसि करि जोई ॥ सन्तत सभय भजै तेहि सोई ॥
सादर वेद बिरंचि सुनावैं ॥ दरशन देन पुरौतक आवैं ॥
यम प्रतिहार पाक भख करई ॥ मघा पयद छत्र शशि धरई ॥
झारू दार पवन बल रासी ॥ महा मृत्यु धोवत पग दासी ॥
बरुण कुबेर नाग नर देवा ॥ आइ करैं सब यहि विधि सेवा ॥
एक बार कैलाशै गयऊ ॥ सुमन समान सु कर धरि लयऊ ॥
मनहुँ जोरि भुजबल थल राखी ॥ आवा भवन गवन अभिलाखी ॥
यहि प्रकार बीते बहु काला ॥ एक दिवस कर सुनहु हवाला ॥
घननादादि रहैं जे बीरा ॥ तिन्हैं बोलि बोला रण धीरा ॥
सुनो रहै सुर शत्रु हमारे ॥ तेते भे सब दिवस बिचारे ॥ ॥
बिष्णु बिबुध दिशि बारक वारा ॥ आये तहँ मैं मुष्टिक मारा ॥
शत योजन पर गरुड़ समेता ॥ गिरे जाइ फिरि फिरे न चेता ॥
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ ॥ कब तक रहि हैं दुरे दुरेऊ ॥
अब एक बचा रहत भगवाना ॥ जाहि जपत मुनि सन्त सुजाना ॥
मोन परत कहुँ दृष्टि हमारी ॥ तेहि जीतन हित बात बिचारी ॥
साधुन बस सो रहै श्रुति गावै ॥ जो वे अर्पत सो वो पावै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तिहि ते सन्त सतावो जाई ॥ जप तप करन न पावैं भाई ॥
जब ह्वै हैं यहि बलते हीना ॥ तब तेउ मिलिहैं आइ अधीना
तब मरिहौं की छड़िहौं देखी ॥ कीन चही रिपु सुबस बिशेखी
सुनि धाये जहँ तहँ तमचारी ॥ लागे करन उपद्रव भारी ॥
योग यज्ञ कोइ करन न पावैं ॥ विप्र धेनुजन धरि धरि खावैं।
हरि हर घर पुर देहिं जराई ॥ श्रुति पुराण कोइ सकै न गाई
जो जग दान पुराय परकासे ॥ पकरि ताहि खल बहु विधि त्रासे
जेहि विधि होइ धर्म के हानी ॥ सोई करैं अहनिशि अभिमानी
बाढ़े पतित पाप समु दाई ॥ तब तौ अवनि उठी अकुलाई
धेनु धाम धरि गइ बिधिलोका ॥ कहत भई निज बिपति सशोका
धीरज दै अज कह्यो बुझाई ॥ यामें कछु नहिं मोरि बसाई
तेहिते सकल देव यक वेरी ॥ करहु सप्रेम बिनै प्रभु केरी ॥
दीन दयाल दीन जन जानी ॥ करब कृपा मिलि अस्तुति ठानी
जय जय जय जग पति सुखकारी ॥ जय जय करुणासिंधु मुरारी
जय जय माया रहित अनन्ता ॥ जय जय दुराधर्ष भगवन्ता।
जय जय अविगत अलख अनूपा ॥ जय जय सत चित आनँद रूपा
जय जय वेद भूमि उद्धरता ॥ जय जय बिबुध संत हित करता
जय जय सृष्टि उपावन हारे ॥ जय प्रभु संकट हरो हमारे।
रावण असुर देत दुख भारी ॥ पाहि नाथ हम शरण तुम्हारी
इमि अस्तवन जब विनय सुनाई ॥ गई गिरा नव गगन सोहाई
दो० अब सब निर भय होउ सुर भूसुर सत सुभाय ॥
तुम्हर हित कौशल पुरी धरिहौं नर तन आय ॥
कौशिल्या दशरथ भवन लै स्वछन्द अवतार ॥
करि तहँ बाल चरित पुनि मरिहौं शत्रु तुम्हार ॥
चौ० सुनि नभ गिरा सकल सुखदाता ॥ हर्षे सुर मुनि सहित बिधाता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब ब्रह्मा देवन ते भाखा ॥ अब सब होउ जाइ मृग साखा
हरि हित सदल बिबिध हरषाई ॥ धरत भये कपि तनु जग आई
जो अवतार सबन के कहऊँ ॥ बाढ़ै ग्रंथ पार नहिं लहऊँ ॥
रहे पुरि महिं गिरि बन नाना ॥ प्रभु मारग चितवैं बलवाना ॥
यह सब चरित सुना बिबुधारी ॥ जन मतही हन करब बिचारी
बसत सकल मम बस रबि बंसी ॥ तेका सकिहैं मोहिं बिध्वंसी ॥
तदपि सजग रहे का हानी ॥ दिये असुर करि कछु तहँ थानी
उतपति मरण आदि कछु होई ॥ कर समेत पहुँचावे सोई ॥
भये दलीप भूप जब आई ॥ जानि असुर सब दिये उठाई ॥
सुनि रावण बल देखन आवा ॥ द्विज लखि सब रानिन बैठावा
पूजत पद प्रगटेसि निज रूपा ॥ भागी भवन भीरु मनि भूपा ॥
तब रावण सरयू तट आयो ॥ अर्चत तंदुल नृपति चलायो
पूंछा लोगन ते तब कहेऊ ॥ धेनुहिं हरि एक मारन चहेऊ ॥
सुमिरत सपदि सालिहीं पेरे ॥ सत सर हैं लागे हरि केरे ॥
सुनि दसमुख मन अचरज आवा ॥ देखा जाय मृतक बन पावा
समुझि प्रताप गयो निज धामा ॥ नृपते हाल कहा नृप बामा

दो० रावण कृत सुनि अवध पति चंगुल भरि जल लीन ॥
पवन मंत्र पढ़ि क्रोध युत दक्षिण दिशि तजि दीन ॥
भये बिशिख दश लाख लखि कह नृप लंक हि जाहु ॥
सहित त्रिकूट समुद्र महँ बोरि फिरहु तेहि नाहु ॥

सो० चले पवन गति मोरि । जाते उलटावन लंग ॥
मय तनया कर जोरि । दीनि दोहाई नृपति की ॥
इहाँ न कोउ नृप आहि । सुनि आये महिपाल हिग ॥
सकनि कह्यो गुरु पाहि । [illegible] मुनि रह्यो सुपार अब ॥

चौ० इमि दश सहस बरष चलि गयऊ ॥ रघु राजा तब [illegible] दयऊ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मारुत बान दहन गृह लागे ॥ बनिता बिनै बचन सुनि त्यागे
बहुरि भये अज अवनि पकानन ॥ मांझ देखि बरुण चह्यो दशानन
अनिल अस्त्र ते कटक समेता ॥ दीन ताहि पहुंचाइ निकेता
तेज बान लखि रहा छुपाई ॥ तेहि पाछे भे दशरथ राई ।

दो॰ दश सहस्त्र रवि कर लखे दशो दिशा रथ जाहि ॥
दश शिर रिपु प्रगटे सुवन कहिये दशरथ ताहि ॥
सुनि रावण निज दूत मुख माँगि पठायो दंड ॥
हरि सर घेरे भूप कहि जड़ो कपाट प्रचंड ॥

चौ॰ जो रावण पट लेइ उघारी ॥ तौ हम कर देई बिन रारी ॥
मन्दिर द्वार गये सब मूँदी ॥ रहा उघारि असुर पति खूँदी
दस कर्यो पटन भटन मुख मोरे ॥ मिली मार्ग मय जाकर जोरे
तब रावण नभ बात बिचारी ॥ बिपिनि जाइ कीन्हिसि तप भारी
बरं ब्रूहि ब्रह्मा जब भाषा ॥ बोला तब दश मुख अभिलाषा
दशरथ नृप बीरज ते सोई ॥ जग में पुत्र न प्रगटे कोई ॥
सुनि स्रष्टा मन में दुख माना ॥ एव मस्तु कहि कीन पयाना
तब दश मुख कोशल पुर गयऊ ॥ कौशिल्ये हरि लावन भयऊ
सहित मजूषा सागर जाई ॥ राघौ मच्छ दिहिसि सौंपाई
चतुरानन धरि रावण रूपा ॥ लाये माँगि सुता सोइ भूपा ।
बन में धरि बिधि गे निज लोका ॥ तहं सुमंत्र पट खोलि बिलोका
कन्या ते बोले मृदु बानी ॥ तुम हो किनकी सुता सयानी
तब कौशिल्या गिरा उचारी ॥ हम हैं कोशल राज कुमारी
नहिं जाना को बन में लावा ॥ सुनि सुमंत्र तुरते उठ धावा
ले आये कौशल पुर तामा ॥ रोदन होत रहे नृप धामा ॥
जाय मजूषा भूपहि दीन्हा ॥ जेहि बिधि मिला सो बरणन कीन्हा
बोले नृप तुम को हो ताता ॥ कह सुमंत्र सुनिये प्रभु बाता

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अवध पुरी नृप दशरथनामा॥ धर्म धुरंधर सब गुण धामा
बल निधि लै निधि रघु कुल दीपा॥ ता सुरसिव सम ग्रह नृपमहीपा
सुनि राजा बोला कहि धन्या॥ तब नृप का बरिहौं मैं कन्या
तुरतै नाऊ बिप्र पठावा॥ नृप के टीका आइ चढ़ावा।
चली बरात बिपुल नरनाहा॥ बड़ी धूम ते भयो बिवाहू।
बिदा कराइ फिरे जब धामा॥ मग खादि रोक्यो मुनि नामा
को प्रिस्यो परन मुनि घल राख्यो॥ शिव बरदान अभय गुरु भाख्यो
आपु समर करि असुर बिडार्यो॥ देखि बिजै सुर जय ति उचार्यो

दो॰ तहँ बिरधासन सुत सुता नाम सागरा आनि॥
दीन्ही ब्याहि सुमंत्र कहँ सुभग गर्ग कुल जानि॥

चौ॰ दीन्ह्यो दायज बिबिध प्रकारा॥ भये मुदित मुनि सहित भुवारा
पुनि ह्वै बिदा निले निज आये॥ बहु बिधि दान याचकन पाये
तब केकई सुमित्रा घरनी॥ तिन पाछे ब्याहीं बहु घरनी
करहिं सदा सेवा सब रानी॥ पालै भूप प्रजहि सन मानी
नव सहस्र सम्बत चलि गयऊ॥ तब नृप के मन बिसमै भयऊ
त्रेपन गे चौथो अब जाना॥ हमैं पुत्र नहिं दीन बिधाना
बिन बालक सुख कौने काजा॥ सकल जानि दुख केर समाजा
जल बिन सर जिमि गृह बिन दीपा॥ तिमि बिन अंगज मलिन महीपा
यहि बिधि करि बिचार मन माहीं॥ आये चलि बशिष्ठ के पाहीं
माता पिता गुरू बड़ भाई॥ साधुन के ढिग आपुइ जाई।
चरण नाइ सिर आयसु मांगी॥ निज कामना कही अनुरागी।
दुख सुख मंत्र औषधी दाना॥ सुहृद बिना नहिं करिय सयाना

दो॰ मुनि बशिष्ठ बोले सुदिन भूप धरहु मन धीर।
ह्वै हैं तुम्हरे चारि सुत गुण सागर बर बीर।

चौ अब तुम सुत बिभांड के जावो॥ शृंगी ऋषि इहाँ लै आवो

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हैं नृप निकट ग्राम में आये ॥ लोम पाद मख हेत बोलाये ॥
पठै अप्सरा कानन माहीं । छल करि सो लाई नृप पाहीं ॥
रहे अनुग्रह तासु के देशा ॥ मख कराइ मे सुखी नरेशा ॥
ऋषिहि श्राप डर जेहि विधि चाही ॥ दीन्ही शांतासुता विवाही ॥
सुनते नृप निज मंदिर आये ॥ हय गय बाहन बिपुल सजाये ॥
रहीं सात से साठि रानी ॥ द्वादश तीनि नायका जानी ॥
मंत्री मित्र सेन सब गाहा ॥ सब के सहित चले नर नाहा ॥
पुर बाहेर निकसे नृप जैसे ॥ लागि होन सगुन तहँ ऐसे ॥
देखा नकुल निडर दधि मत्ता ॥ विप्र तिलक युत गो सह बच्छा ॥
पूरण घट पट पीत निहारा ॥ बायें मधुप करत गुंजारा ॥
दीप अन्न गणिका कल गाना ॥ औ हाती लिय खाय पाना ॥
नारि ससुवन फूल फल देखें ॥ दहिने पग बग ठाढ़े पेखे ॥
चील स्वान मुख भक्ष समेता ॥ श्रुति धुनि आनंद होत निकेता ॥
दहिने मृग मिल तीतुर कागा ॥ सारस मोर सोर भल लागा ॥
खंजन उत्तर दक्षिण प्राची ॥ बायें दिशि खर जंबुक राची ॥
मन महँ हर्ष चलत पर होई ॥ तेहि सम सगुन और नहिं कोई ॥
हरि उत्पति कर कारण पाई ॥ मानहुं सांच भये सब आई ॥
यहि बिधि दशरथ ग्रामहिं आये ॥ लोम पाद मुनि लेन सिधाये ॥
लाये निज मंदिर सन मानी ॥ तब नृप नृपते बात बखानी ॥
लोम पाद सुनि अति सुख पावा ॥ शृंगी ऋषि ते जाइ जनावा ॥
तुम्हैं लेन आये अवधेशा ॥ जाहु नाथ अवध के देशा ॥
राम जन्म कर आगम जानी ॥ भूप संग चलि भे मुनि ज्ञानी ॥
अवध नगर आये ऋषि नाथा ॥ पुर बासी सुनि भये सनाथा ॥
सरयू तट तहँ भा मख साजा ॥ जुरे बिपुल वैखानस राजा ॥
गीतिका छं० नृप सारयू के तट कियो आरम्भ जब मख

केर जू। मुनि रत्न नाना भाँति हय गय भूप लाये ढेर जू॥ लहैं लिये अपा-
गाल हेम घट द्विज भरे उदक ललाम जू। यजमान के अस्नान कारक
महा मंगल धाम जू॥ अरु औषधिन को सुरस दीन्हो औषधीश
पठाइ जू। विधि विष्णु श्रीसलिलेश सिद्धी शंभु गन सुख पाइ जू।
दिसि पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिंधु को वर वारि जू॥ नवरत्न
खचित सुकुंभ आये भरे सहस नभारि जू। धन दियो धनद प-
ठाइ बहु रहे यद्यपि इत कम नाहिं जू॥ अमरेश पठये देवतास
व गुप्त रक्षक ताहिं जू। अति ऋद्धि में महिपाल शोभित भ-
यो वरुण समान जू॥ जब तब यथा चित कर्म कृत किय
गुरु निदेश प्रमान जू। महिदेव भोजन रत्न दान सुदेइ आहु-
ति पर्म जू। यजि त्रिपित कीन्हों सुरन कहँ सब भाँति सों-
सह धर्म जू॥ सुर विप्र आदिक वरण चारों भरे मोद लला-
म जू। वसु अन्न दान महान आहुति पाइ कै अभिराम जू॥
ऋषि नारदादिक वेद विद बहु लसत वेदी पास जू। ल-
खि पूर्ण मख दिन अग्नि की नृप करी विनय प्रकाश जू। जय
यज्ञ पति तुम देव तन के वदन हो अभिराम जू। तुम करत पा-
वन जगत ताते अहै पावक नाम जू॥ हो वहत हव्य सु कहत ता-
ते हव्य बाह समर्थ जू॥ पुनि जातवेदस नाम याते भये वेदस्व
दर्थ जू॥ हरि चित्रभानु सुरेश अनलहि रम्य रेता राम जू। हो
स्वर्ग के तुम द्वार दाता ज्वलन सिखि सुख धाम जू॥ विगेश
विस्वा नरप्लवंग सुभूरिते जस सर्व जू। सुकुमार सुभगवान
रु द्रहिरराय गर्भ अखर्ब जू॥ ऋषि विप्र देवन दनुज के तुम य-
ज्ञ कारक आम जू। जग धूम केतु अहेतु हे तनु पाप ना-
शक नाम जू॥ हे सार भुक तुम देहु हम का सुमन वाँछित फल
जू। कैरें होम जो मंत्र पढ़ि यह होय तो कर भल्ल जू॥

दो० शृंगी ऋषि तब प्रीति ते दीन्ही आहुति सार।
प्रगटे पावक तेज निधि लीन्हे हवि कर थार॥

चौ० बोले रवि नृप हवि यह लीजे। यथा योग निज रानिन दीजे॥
ह्वै हैं बालक चारि अनूपा। जो प्रथमै बरणों ऋषि भूपा॥
अस कहि मे शुक अंतरध्याना। सुनि समाज सकलो सुख माना॥
तब नृप लीन्हों बोलि विचित्रा। कौशिल्या केकई सुमित्रा॥
गुरु वशिष्ठ हवि बाट बताये। चारि भाग भूपाल लगाये॥
उभै दीन कौशिल्ये तहियाँ। तीसर भाग केकई कहियाँ॥
चौथ भाग के युगुल बनाये। कौशिल्या केकई गहाये॥
तिन मन मुदित सुमित्रहि दीन्हे। निज निज भाग पाइ सोइ लीन्हे॥
गहि विधि रूप शील गुणखानी। भई गरभ संयुत तिहु रानी॥
दिन दिन तेज बढ़त तन जाई। मनहुँ उग विधु मंदिर आई॥
सुख समेत कछु काल बितावा। रामजन्म कर अवसर आवा॥
भे अनुकूल सकल शुभ योगा। प्रमुदित विश्व चराचर लोगा॥
बन उपबन फूले तरु नाना। शीतल मंद चले पौमाना॥
ब्रह्मादिक नभचर नभ आई। बरषि सुमन दुंदुभी बजाई॥
गावहिं गुण गंधर्व सरागा। अस्तुति करहिं देव मुनि नागा॥
चैत शुक्र शशि कर्क प्रमाना। नषत पुनर्वसु अभिजित जाना॥
मध्य दिवस विश्रामद जानी। प्रगटे तब त्रिभुवन सुखदानी॥
चौबोला छं० चैत्र मास सित पक्ष छपाकर वारजू। नौ-
मी दिन श्रीराम लीन अवतार जू॥ नील जलद तन श्याम-
काम छवि कोटि जू। अलन अलक बिच सुमन धरे जनु खो-
टि जू॥ शीस मुकुट मणि जटित जग मगत जाल जू। श्रुति
में कुंडल ललित तिलक दिहि भाल जू। कमल नयन नासि-
का समेत बुलाक जू॥ जनु कवि कुज गुरु राहु बसे सु कहा-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कजू। बिंबाधरधर बदन रदन दमकैं घने। भृकुटी कुटिल
कपोल गोल गहुवर बने॥ कंबु कंठ कल बचन बिसद कौ-
स्तुभ लसै। उर मोतिन की माल मनहुं मन में बसै॥ भुजग
भोग भुज दराड चराड धनु सर लिहे। कटि निषंग सब
अंग अलंकृत हैं किहे॥ पर देहीं पट पीत पिछौरी पा-
दकी घुंघुरु जर कसी जाम दाम अनधार की॥ चरण कम-
ल मुनि बिमल जिन्हैं नित ध्यावहीं। अंकुशादि बहु चिन्ह-
सदा मोहिं भावहीं॥ देखि अलौकिक रूप भूप कौशल सु-
ता बोली जय जगदीश चरित तव अद्भुता॥ बरणि न जानैं
बेद भेद बिन खेद जू। प्रणतपाल सब काल कुटिल कुल
छेद जू॥ जय अनन्त सुर सन्त कंत भगवन्त जू। जन मन
मानस हंस वंश बिचरन्त जू॥ कोटि कोटि ब्रह्माराड रोम प्र-
ति जासु जू। सोमम जठर निवास बड़ी उपहास जू॥ तब प्र-
भु पूरब केरि कथा सकलो कही। पुनि ह्वै बालक रूप लगे
रोदन सही॥ सुनि नृप रानी सकल उठीं हरषाइ कै। कौशि-
ल्या पहं तुरत पहूंची आइ कै॥ देखि सुवन सुख राशि स-
कल भौं हर्ष की। कीन कृतारथ हमैं कृपा मुनि वर्य्य की॥
खबरि पाइ अवधेश परम आनंद लह्यो। बाजहिं
बाजन बोलि बजनि हम ने कह्यो॥ आप सुमंत्र म-
मंत गये चलि धाम को। शिशु मुख सुखद बिलो किक-
ह्यो परनाम को॥ पठये कुल गुरु बोलि सहित मुनि-
आयहू। त्रिभुवन पतिहि निहारि महासुख पायहू॥
करि मज्जन महिपाल लीन कुस हाथ में। मुदित लगा-
यो तिलक द्विजन के माथ में॥ नंदी मुख निज पितर पुजा-
ये हित बैर। गुरजन द्विज पहिराइ पाँइ सब केसरे॥ गाग-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ज है रथ हेम रतन बांछित दये। बहुरि बन्धु वर मित्र मान मंडन भये॥ मागध बंदी सूत जाहि जिन याचहू। सोइ सोइ दीन्ह्यो नाहि नकोई बांच हू॥ विप्र बयस नृप शूद्र निधन वाधन भये। राम निछावरि लेन भिखारी सब भये॥ नगर नारि नर वृंद बिलोकन धावहीं। सहज सिंगार सवाँरि मनो जल जावहीं॥ अंतह पुर धुर जाइ उतारि आरती। निरखि पुत्र को रूप सरूप बिसार ती॥ धन्य आजु को दिवस धन्य अब की घरी। धनि रानी की कोखि जहां जन्मे हरी॥ धन्य हमारे भाग लाग फल फूल में। करें निछावरि छोरि गहन अन कूल में॥ पुरुषोत्तम परसाद चुके नहिं नेक हूं। याचक ह्वै ह्वै भूप गये बहुते कहूं॥ बाजे बाजन बिपुल अपसरा नाचहीं। गावैं गंधर्व गीत समय सुख सांचहीं॥ देव दुंदुभी देइ सुमन बरसावहीं। मृग मद कुंकुम नीर अबीर उड़ावहीं॥ बंदन वार पताक केतु सज वायहू। गोपुर कलश सुरंग अधिक छबि छायहू॥ बालक वृद्ध जवान जहां तहँ डोलहीं। सुर धरि मानुष रूप भूप जय बोलहीं॥ तेहि क्षण डावर केर दादि रक आय हू। राजहि सीस नवाइ सुबचन सुनाय हू॥ सुनि रोरे कर सुयश पेज हमहू करी। निज भूषन सब देहु हुकुम राधी॥ चलत देखि बड़ पुत्र कह्यो अस टेरि कै। दश दन्ती मम हेत लयो ग्रो हेरि कै॥ बोला मोंझिल तनय तुरग ते तीस जू। लायहु मम हित मांगि ग्राम गुरु बीस जू॥ पाछे छोटा डिंब कह्यो डंड भरन को। लायहु महिरवी मांगि बयालिस लरन को॥ तब बोली माता सु ऐसही आय हू। मम हित नेरहु थान पालकी लाय हूं॥ पान दान पर धान टह लुई

लीनि जू। सुनि नृप हर्ष समेत सोज सब दीनि जू॥ यहि बि-
धि दानी देखि दास रघुनाथ जू। लीनि भक्ति वर मां-
गि लागि गे हाथ हू॥ जो यह मंगल गावै सुनै सप्रीति जू।
बसै सो हरि पुर जाइ मिटै भव भीति जू॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगार ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम स्नेही कृत राम जन्मउत्सव वर्णनो नाम तृतीयो ऽध्यायः ३॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं भुशुण्डी चरित कछु लोमस भणित बखानि॥
राम जन्म के समय को उत्सौ शोभा सुक्ख॥
बरणि सकैं नहिं शेष मैं कहा कहौं एक मुक्ख॥

चौ० जो यह नौमी रहै उपासा॥ सो नर बसै राम के पासा॥
वेद पुराण कहत सब कोई॥ यहि सम व्रत अपर नहिं होई॥
जन्मस्थान दरश जो करई॥ सो गर्भ सुत पुर पाउँन धरई॥
जन्म भवन के उत्तर कोना॥ तीस धनुष पर महल सलोना॥
नाम पुत्र केकई जाया॥ दशमी के दिन परम सोहाया॥
दक्षिण वार सुमित्रा धामा॥ तीस धनुष पर अति अभिरामा॥
जन्में उभै सुवन तिन नामें॥ रुचिर दिवस हरि तिसरे जामें॥
धर तिल जव ते अंगुल होई॥ चतुरो गुल कर मुष्टिक सोई॥
अट मुष्टिक का दण्ड बखाना॥ अस दण्ड का धनुष प्रमाना॥
केकै भवन सुमित्रा केरे॥ भई भीर मग मिलत न हेरे॥
यहि अवसर मुद मंगल शोभा॥ कहि को सकै देखि मन लोभा॥
दश स्यंदन उरभा सुख जैसा॥ बरणि सकै को जग मैं ऐसा॥
तेहि क्षण जोजन मांगल जोई॥ ताहि देत हँसि भूपति सोई॥
देश देश के याचक आये॥ हय गय रत्न अनेकन पाये॥
भये रंक ते सब धन वाना॥ जहँ तहँ करैं बड़ाई नाना॥

मुनिप्रसन्न ह्वै देहिं असीसा ॥ जियें सकल सुत कोटि बरीसा
अवध पुरी शोभा अधिकाई ॥ जनु देखन बरषा ऋतु आई
अगर धूम घन घटा समाना ॥ बाजन बाजन गरजत जाना ।
बंदी गण गुन बरणत मोरा ॥ भवन बेद धुनि दादुर सोरा ।
बरषत सुमन देवगंण भूरी ॥ कर्दम मन कुंकुम कस्तूरी ।
बिबिधि जीव नर संकुल राजें ॥ बिपुल बिटप तृण हरित बिराजें
जहं तहं कलश दामिनी चमकें ॥ मन्दिर मनि खद्योतो दमकें
मुदित धेनु सुर नर मुनि धरनी ॥ आक जवास असुर छयकरनी
सरिता पाय अडुरि पुर लागा ॥ थाँचक पूरण भये तड़ागा ।
बचन बदत सब जहँ तहँ डोलें ॥ झल्ल झल्ल जनु झींगुर बोलें
यह सब चरित आय नब जाना ॥ जब उर बसे आय भगवाना
निज निज नगर देव मुनि भूले ॥ देखत फिरें बीथिकन फूले ।
नाचहि चपल अपसरा नाना ॥ हरष समेत देहिं नृप दाना ।
रंगु जदिन पलना ले आवा ॥ बढ़ई नेगु सुइच्छित पावा ।
कजरोटा ले दीन लोहारा ॥ देखि भूप नग दये अपारा ।
माला कर अग्रधरि डाली ॥ पायि जलज थार भरि माली ।
नृप कर बाल सुबनिक मसाला ॥ मन भावत बर दीन भुवाला
यहि प्रकार ते सब पुरबासी ॥ पाइनि नेग दास अरु दासी-
कौतुक देखि भूलि रबि गयऊ ॥ मास एक कर बासर भयऊ-
खबरि पाइ उर धरि नृप ढोटा ॥ बिमन गये रवि पर्वत वोटा
अस्त भये रजनी नब आई ॥ बाजहिं घर घर अवध बधाई
गई रोशनी सब पुर साजी ॥ लागी छूटन आतस बाजी ।
और कमल फनूसें झाड़ें ॥ मानहुं भये नदिन मनि आड़ें ।
स्वाँग अनेक बिदूषक करहीं ॥ सब नर मगन बिलोकत फिरहीं
जासु उदरबस भवन अपारा ॥ सोवत सो प्रभु सूप मझारा

सपनेहु जेहि मन खेद न होई ॥ कहौं रुकरि रोवत सोई ॥
पालत बिश्व सकल सुख पावत ॥ कौशिल्या तेहि क्षीर पियावत
महिमा जासु जान नहिं ज्ञानी ॥ तिन्हें गोद लै बैठल रानी ।

दो० जाहि महेश बिरञ्चि मुनि सुमिरत ध्यान लगाइ ।
तिन के तन तिल सर गरी तेल लगावत आइ ॥

चौ० सुनौ शिवा सज्जन सुखदाई । भक्ति बछलता प्रभु दिखराई
यहि बिधि बासर पांच बितायो ॥ छठयें दिवस छठी करवायो
जाति बंधु नृप नेवति जेंवाये ॥ भूसुर सकल दक्षिणा पाये
देखि महोत्सो सुरमुनि सारे ॥ प्रमुदित निज भवन सिधारे
बरहें दिवस जो बरहीं कीन्हा ॥ पुनि बहु दान द्विजन कहँ दीन्हा
कछुक काल सुख सहित बितावा ॥ नामकरण का अवसर आवा
गुरु बशिष्ठ नृप बोलि पठाये ॥ बिप्रन सहित तहाँ चलि आये
उठि नरेश सबहिन शिर नावा ॥ षोडश भांति पूजि सुख पावा
लोक बेद बिधि मुनि करवाई ॥ शिशुन सहित तिहुं रानि बोलाई
आईं सुंदरि सुत लिये सङ्ग । उमा रमा शारद धरि अङ्गा
मिलि सब जननी भई शरीका ॥ देखैं बाल बिनोद हरीका ।
चारु चौक बैठीं सब रानी । शोभा शील सुकृत की खानी
गोद मोद निधि बालक लीन्हें ॥ चितवत बड भागी मन दीन्हें ।
रक्षा ऋचा ऋषिन उच्चारी ॥ गणप गौरि द्विज साधु पुरारी
सब सब बिधि पुजाइ अनुरागे ॥ गणित सुलिखि नाम धरन मुनि लागे

दो० जासु तेज चर अचर में ब्यापक ब्योम समान ॥
तासु राम अस नाम जो सुख सागर भगवान ॥
बिश्व भरत सोइ भरत भनि भव भंजन गुण जासु ॥
जेहि सुमिरे रिपु होइ हत नाम शत्रुहन तासु ॥
सब लक्षण युत होइ जो जानै जिय के काम ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रामानुजप्रिय भूमिधरतस्यलषनअसनाम॥
ते बड़भागी जीवजे करिहैं इनते प्रीति॥
पैहैं बिन श्रम सकल फलजैहैं जग रिपुजीति॥
यहि विधि सुन्दर नाम सुनि हरष्यो सब रनिवास॥
दीन दान सनमान निज गे मन मुदित निवास॥

सो० पुनि कछु दिन में आइ। पहुँच्यो प्रासन अन्नकर॥
सुनि पुर लोग लुगाइ। हरष सहित सब से कहैं॥

छं० सखि आजु श्री अवधेश सुत को अन्न प्रासन आहि जू। चट चलहु चलि अवलोकिये चख चहत चाहत काहि जू॥ सुन सकल साजि सिंगार आईं अमित मुद मङ्गल जहाँ। लखि ललकि लीन्हीं लाइ रानिन दीन आसन जस चहा॥ बहु भाँति के भये सकल व्यञ्जन विविधि विधि मिष्ठान्न जू। नृप जाति बंधु बोलाइ पठये परत पहुँचे कान जू॥ तब कौशिला कैकै सुमित्रा सुवन निज निज उबटि के। अन्हवाइ तन पहिराइ भूषण बसन सुन्दर डुपटि के॥ पुनि कनक थार भराइ जाउरि धरी घृत मधु लाइ के। महिपाल लैनै मुख जुठारत उठी युवतिन गाइ के॥ परकार षटरस केर जहैं लों सकल अधर छुवायहू। पुनि तनक जलते पोंछि आनन जननि ढिग पहुँचायहू॥ हिय हरषि शिशुमुख चूमि सुन्दरि सकल दुलरावैं लगी। अनपार भे जेवनार निज रुचि सरस नहँ दहँ का खगी॥ यहि भाँति सुखदिन राति भोगत धन्य पुर नरनारि जू। रघुनाथ कौशिल नाथ सुत छबि नाम पर बलिहार जू॥

दो० बरष गाँठि पाछे भई गई दुगाई बाढ़ि॥
विप्रन दीन्ही दर्बि बहु लीन्ही कीरति गाढ़ि॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बारे हिते पति भृत्य ज्यों राम लषण के प्रीति ॥
भरत शत्रुहन की रहत तेही तरह की रीति ॥

चौ॰ श्याम गौर जोरी दोउ देखी ॥ जननि जनक सुख लेहिं बिशेषी
ले उछंग बहु बिधि दुलरावैं ॥ छबि बिलोकि तृण तोरि बहावैं
रूप शील निधि चारौं भाई ॥ तदपि राम शोभा अधिकाई ।
मेचक मुदित कलेवर पीना ॥ पहिरे पीत झंगुली झीना ।
उन मुख चिकुर चिक्कने सोहैं ॥ शिर चौतनी अमोलिक मोहैं ।
ललित भाल मसि बिंदु बिराजे ॥ भृगुटी कुटिल श्रवण अति भ्राजै
कठुला कंठ बाघनख नीका ॥ नीरज नयन मयन शर सीका ·
द्वै द्वै दसन कपोल अनूपा ॥ बिम्बाधर आनन द्विज भूपा ।
चिबुक चारु नासिका सोहाई ॥ लट कुन की लट कनि मोहिं भाई
पंकज पानि पहुंचियां राजैं ॥ नख दुति लखि मुक्ता हल लाजैं
उर बर बाल बिभूषन पेखा ॥ नाभि गम्भीर उदर त्रै रेखा ॥
कटि किंकिनी कुधरि डगडोलैं ॥ झुनु झुनु झुनु झुनु नूपुर बोलैं
पद पाथोज जनित तल जोहैं ॥ चारु चिन्ह अरु लालिम सोहैं
स्वस्तिक अष्ट कोन श्री केरा ॥ हल मूशल पन्नग शर हेरा ।
नभ नीरज रथ बज्र अघाता ॥ ऊर्द्ध रेख सुरतरु सुख दाता
अंकुश ध्वज अरु मुकुट छबीला ॥ चक्र सिंहासन दण्ड नबीला
चमर छत्र नर जव अरु माला ॥ दक्षिण पद ये चिन्ह बिशाला
गोपद पृथ्वी कुंभ पताका ॥ जम्बू फल अरु धाम्र कबीका ॥
दर षट कोन त्रिकोण गदारा ॥ जीव बिंदु मत्स्य सरि धारा ॥
शक्ति सुधा थल त्रवली मीना ॥ पूरणा बिधु बंशी धर बीना ।
धनुष तूण चंद्रिका मराला ॥ बायें पद ये चिन्ह बिशाला ।
एक एक कर अमित प्रभावा ॥ महा रसायण में शिव गावा ॥
सन्त सहाय करन के हेता ॥ दृढ़ करि धरे कृपा निकेता ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इन सब चिन्हन युत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई॥
जानु पानि किलकत लहि डोलैं। कल बल बचन मधुर हँसि बोलैं॥
कहै मातु कब चारिहु भैया। हँसैं बोलैं हैं कहि कहि मैया।
कब कर बाण धनुहियाँ गहि हैं। कब चलि राजसभा में जैहैं।
कबहुँक कर मोदक पकरावैं। जो भावैं हँसि ताहि खवावैं।

दो॰ जासु शक्ति ते चराचर चलत खात हरि जात॥
तासु पाणि गहि आँगुरी अजिर चलावत मात॥
कला रूप धरि धरणि जिन लीनि रचि जग नापि॥
मोद बढ़ि सकुचत पलंग पर रहत देह ही चापि॥

चौ॰ कबहुँक हँसि नृप गोदे आवैं। कबहुँक किलकि मातु ढिग जावैं॥
कबहुँक परि पलना में झेलैं। कबहुँक बिबिध खिलौना खेलैं॥
जिन्हैं काल सब काल डेराई। सो प्रभु हरि बिडरत निज झांईं।
जासु भ्रुव बस शिव चतुरानन। नांचत सो प्रभु नाचत आँगन॥
दंपति प्रेम बिबस भगवाना। बाल बिनोद करत बिधि नाना॥
एक दिवस करि मातु बिबेका। असन सँवारि भांति अनेका॥
इष्टदेव श्रीरंग सभावा। बसन ओट करि भोग लगावा॥
तेहि क्षण तहं शिशु पावत रखा। पलना निकट गई तहँ देखा॥
पुनि इत लखि पुनि उत लखि पावा। कौशिल्या के मन भ्रम छावा॥
मातहि बिकल जानि रघुबीरा। देखरावा निज थूल शरीरा॥
रोम रोम कोटिन बसु धारा। रोम रोम प्रति ब्रह्मांड निहारा॥
अगणित रवि शशि अनि बिताना। अपर बिष्णु शिव सुर दिशि त्राना॥
नग बिपिन गिरि शशि सरित तड़ागा। किन्नर खग पशु नर मुनि नागा॥
पितर पिशाच निशाचर जाती। काल कर्म गुण नाना भांती॥
देखी माया सबै नचावै। लखी भक्ति जो तिन्हैं छुड़ावै॥
देखे द्वीप उदधि तरु खंडा। देखी अवधि सकल ब्रह्मंडा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अंड कोस प्रति ऋापन रूपा ॥ देखा माइ शिशु चरित ऋनूपा
हाथ जोरि तब बिनती ठानी ॥ जय प्रभु गुणातीत गुण खानी
जगत पिता तुम ऋज भगवाना ॥ मैं बिन ज्ञान पुत्र करि माना ।
सुनि बिनती बोले रघुराई ॥ हमैं छांड़ि केहि पूजन माई ॥ ॥
हम तव भक्ति विवस तव नीरा । गइउ भूलि लखि बालशरीरा
तेहिते मैं निज भूलि देखाई ॥ का हूते जान दियो बताई ॥
कौशिल्या तब बचन सुनावा ॥ ऋब मोहिं ज निब्यापे नवमाया
एव मस्तु कहि पुनि भगवन्ता ॥ हूेगे बालक रूप तुरन्ता ॥ ॥
देखि मातु फिरि क्षीर पियावा ॥ ईश जानि ऋति प्रेम बढ़ावा ॥
कबहुंक ले पौढ़े सुठि सेज्जा ॥ कबहुंक लेहि लगाइ करेजा ।
कबहुंक कहें नींद किन ऋावै ॥ हित करि मेरो लाल बोलावै ।
कबहुंक करि सब तन श्टंगारा ॥ पठवें जहाँ भूप दरबारा ॥ ॥
देखि नरेश लेहिं उर धारी ॥ चितवैं नर सब पलक बिसारी ॥
जो कोई निज निकट बोलावैं ॥ प्रीति परखि ताके ढिग ऋावैं
मुनिजन ध्यान लगावत जाही ॥ पुरजन ऋछत खेलावत नाहीं
सबै सुलभ तिन का सव नीरा ॥ जिनपर कृपा करैं रघुवीरा ॥
एक दिन काग भुशुंडी तेरे ॥ किये चरित ऋति ऋद्भुत हेरे ॥
कछु दिन में कन छेदन ऋावा ॥ हरषि सखिन ने सखिन जनावा

**गीतिका छं०** सखि ऋाजु नृप सुत केरहे कनछेदनो च-लि देखिये । दम दान हरि गुण गान जीवन जन्मकर फल ले-खिये ॥ नवसात साजि श्टंगार ऋाईं ऋयन जहि रचना रची । वहु भाइ करन गहाइ दीन्हेौ माल पूरी गुर सची ॥ हरि हँस-त बिहँ सत बहुत लखि धक धकी मातन के हिये । भरि देत रो-चन सीक ते श्रुति नीर धूरे करि लिये । ऋति चतुर लीन्हे छे-दि छिपे उठे शिशु ऋकुलाइके । भरि नयन नीर जनीं सजन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

निन लीन हृदय लगाइ के ॥ मणि बस्त्र मुक्ता करि निछा-
वरि दीन महि देवन घने । पहिराइ पुर जन सकल मानहुँ मा-
र रति बपु बहु बने ॥ सुर अंग नामी अवध बासी सर सदासी-
के नहीं । रघुनाथ उपमा देइ तब जब होइ त्रिभुवन में कहीं ॥

चौ० यहि प्रकार जब चारिउ भ्राता ॥ बढ़े भये परिजन सुख दाता ॥
चूड़ा कर्म आदि गुरु कीन्हा ॥ नृप बहु दान द्विजन कहँ दीन्हा ॥
अनुज सखा सब मिलि निज सेरे ॥ खेलहिं खेल महीपन केरे ॥
भूप रसोई जीमन आवे ॥ जब तब मातु बोलावन जावे ॥
क्रीड़ा शक्त देखि सब भाई ॥ बोली तब कौशिल्या माई ॥
अहो लाल हे लछिमन भैया ॥ भरत बत्स रिपु सूदन छैया ॥
अब क्रीड़ा दिशि चित्त न दीजे ॥ देर भई चलि भोजन कीजे ॥
बैठ बाट बिलोकत राजा ॥ क्षुधित भये सब सखा समाजा ॥
इमि सुनि प्रेम बचन चलि आवें ॥ बैठि भूप ढिग भोजन पावें ॥
कौनेउ दिन आवें नहिं टेरे ॥ जननी धरन जात तब नेरे ॥

दो० मातहि आवत देखि प्रभु ठुमुकु ठुमुकु चलि देत ॥
झपटि कहत तब भूप पहँ लै आवत करि हेत ॥

चौ० सुभग शरीर सुरभि रज लागी ॥ झारि सुअंचल ते अनुरागी ॥
लखि नृप निकट लिये बैठाई ॥ मिलि जेंवत तब चारिउ भाई ॥
इत उत चितै चले पुनि भागी ॥ अरुण अधर हँसि जाउब लागी ॥
पुनि आवे जहँ बालक सारे ॥ देखि मात पितु होहिं सुखारे ॥

दो० नृप रानिन कर भाग सुख संपति सुयश सुभाउ ॥
मैं का बरणौं एक मुख कहि न सकें अहिराउ ॥

चौ० खेलत देखि नारि पुर केरी ॥ जाइ भवन भजि आवे फेरी ॥
पुनि घर भूमि सखिन ते कहई ॥ जेवाँइ पवारि पराके रहई ॥
जब ते मैं भूप तनय निहारा ॥ तब ते रुच तन जग ओ हारा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असमनु होइ खेलावहि करहूं ॥ रोवैं न परि गुरुजन कहं डरहूं ।
कबहुंक निकसि दुवारे आवैं ॥ ले उछंग पुरजन घर लावैं ॥
बदन चूमि कर राखि मिठाई ॥ रुख लखि महल देइ पहुंचाई ।
कबहुंक चुनत बिहंग लखि पावैं ॥ हाथ पसारि धरन तब धावैं ।
उड़ि जब जात करत मचलाई ॥ सुकसारिका दै राखत माई ॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास ।
रामसनेही कृत श्री रामचन्द्र बाल लीला बर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० सुमिरि राम सिय मन्त्र गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
कहौं भुशुण्डी के चरित कछु रघुबंश बखानि ॥

चौ० यहि बिधि बाल चरित प्रभु करहीं ॥ देखि लोग अति आनंद भरहीं ।
एक दिन एक मलूका आवा ॥ नृप के द्वारे कीस नचावा ॥ ॥
देखि राम ठानी मचलाई ॥ कहहिं कि मोहिं कपि देहु मंगाई ।
भूप मंगाइ देन बहु लागे ॥ तदपि न लेत रुदत पुनि आगे ।
तब नृप भाष्यो गुरु ते जाई ॥ मुनि बशिष्ठ बोले हरषाई ॥

दो० जेहि हित रोवत रामजी सो मरकट है आन ॥
सुनो तासु उत्पत्ति मैं तुम ते करौं बखान ॥

चौ० उत्तर दिशि सुमेर गिरि भारी ॥ तहं केशरी रहत बन चारी ।
तासु परम पतिब्रता नारी ॥ नाम अंजनी छबि अधिकारी ।
तेहि एक बार कीन शृङ्गारा ॥ ठाढ़ी गिरि पर पवन निहारा ॥
बपु धरि तन अपस्पर्श सु कीन्हा ॥ लखि सो चहीं श्राप कहुं दीन्हा ।
बोले तब नभसुत सुनु प्यारी ॥ मम अस पर्श सकल तनुधारी ।
तेहि ते मोहिं श्राप जनि देहू ॥ हम बरदान देनु सो लेहू ॥ ॥
होइहै तुमरे सुत बलवाना ॥ राम भक्त गुण रूप निधाना ।
अस कहि अनल अदर्शित भयऊ ॥ सुख युत कछुक काल चलि गयऊ ।
कार्तिक बदी चतुर्दशि बारा ॥ भौमिक दिन भा प्रगट कुमारा

लखि पितु मातु कीन उतसाहा॥ लागे सुत सेवन जस चाहा॥
प्रात अरुण रबि निरखि फलंगा॥ ग्रसत भयो फल सरिस पतंगा॥
झपटि बज्र मारा सुरराई॥ चिबुक मध्य तेहि मुरछा आई॥
देखि पवनसुत लीन उठाई॥ राखी रोकि समीर रिसाई॥ ॥
चढ़े उदर सब देवन केरे॥ आये तब आसुग के नेरे॥ ॥ ॥
करि बिनती सुर सकल सुजाना॥ लागे देन सुतहि बर दाना॥
कह ब्रह्मा होई बजरंगी॥ लगी न मम सर शक्ति अभंगी॥
बोले द्रुहद जरौ नहिं आगी॥ इन्द्र कह्यो मम कुलिश न लागी॥
हर त्रिशूल यमदंड सुनावा॥ बारि न बूड़ें बरुण बतावा॥ ॥
बाली शक्ति भक्ति लखि नेकी॥ बचन मोर यहि सके न छेंकी॥

दो॰ यहि बिधि सब बिबुधन दये बर बरदान निहोरि॥
सुनि प्रसन्न भे स्वसन तब छूटी पवन बहोरि॥

चौ॰ प्राण दान देवन जब पाये॥ महावीर कहि भवन सिधाये॥
हनोमान हनि दुसमन नासा॥ लागे रहन मातु पितु पासा॥ ॥
जब तब जाइ मुनिन के तीरा॥ डारे फोरि कमंडल नीरा॥ ॥
बिटप तोरि गिरि सिखर ढहावे॥ बल अति भूरि अंग धुनि होवे॥
ऋषिन श्राप तब दीन बिचारी॥ भूलि जाहु निज पौरुष भारी॥
जब जब कोइ सुरति कराई॥ तब फिरि तुमरे बल ह्वै आई॥
रहे तहाँ कछु दिन हरि आसा॥ पुनि गे पढ़न सहस गो पासा॥
लागे पढ़न जोरि कर आगे॥ करत सुरबागर उन्मुख भागे॥
विद्या सकल पाइ अस भाषा॥ मांगो जो तुमरे अभिलाषा॥
बोले रबि मम सुत सुग्रीवा॥ रिक मूक पर रहत सहीवा॥ ॥
तिनके तीर रहो तुम जाई॥ मिलिहैं तहाँ तुम्हें रघुराई॥ ॥
गुरु अनुसासन मानि बिधाता॥ रहन भानुसुत के ढिग लाता
राम लालम चले तेहि हेता॥ तेहु गंगा तारि करि खेता॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तुरत भूप भट भूरि पठाये ॥ सकल सुकंठ पास चलि आये ॥
जो नृप कह्यो सो बखान कीन्हा ॥ सुनि सुकंठ तुरत कपि दीन्हा
लै आगे मन्दिर हरषाई ॥ देखि राम उर लीन लगाई ॥ ॥
हनो भान के अति सुख भयऊ ॥ मिलि रघुरूप नहां होयगयऊ
जहं जहं खेलैं राम सुरंगा ॥ तहं तहं कपि राखे निज संगा।
दो॰ एक दिन एक शिशु अंध को डारी रज प्रभु दृष्टि ॥
बोरहन दै रघुनाथ तेहि देखरायो दै दिष्टि ॥
चौ॰ एक दिवस एक बानिक आवा ॥ बेचन हित नग नृपहि देखावा
लै रघुनाथ कूप में डारा ॥ देहु वहै हंसि भूप उचारा ॥ ॥
तुरते वृक्ष कूप ते जामा ॥ लागे लाल अमोलक तामा ॥
फरत झरत पुनि लागत भारी ॥ लैलै जात सकल नर नारी ॥
सात दिवस भै लूट बिशेषी ॥ पुनि सो बिटप परा नहिं देखी
यह लीला लखि भूपनि साहू ॥ चकित रहू मन परम उछाहू ॥
एक दिन एक बांधक चलि आवा ॥ अद्भुत पक्षी नृपहि देखावा
देखि राम लै दीन उड़ाई ॥ बोला खग सो देहु मंगाई ॥ ॥
सुनि प्रभु तासु पक्ष महि गाड़ा ॥ भा तह तुरत जबै गल डारा ॥
दो॰ लागत फल्त फूटत तुरत निकसत उड़त बिहंग ॥
बैठत महलन पर धरत धावत बालक संग ॥
पुर बासिन पाले सबनि देखि बिहंग अनूप ॥
सुनि सुनि तहं लै लै गये देश देश के भूप ॥
बांधक दीन्ही दर्वि बहु भा सबके मुख सोत ॥
यह प्रभुता कछु बहुत नहि इच्छा ते जग होत ॥
चौ॰ यहि बिधि सानुज राम सुशीला ॥ आठ बरष कीन्ही शिशु लीला
जब पौगंड भये सब भाई ॥ पढ़न हेत पठये रघुराई ॥ ॥
गुरु पद जाइ नवाय शीशा ॥ लगे पढ़ावन मुदित मुनीशा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पढ़न भये प्रथमे बिन खेदा ॥ साम दाम अरु दंड बिभेदा ॥
मिलि सनेह कीजै सोइ सामा ॥ खान पान धन दीजे दामा ॥
भेद सो सबलाहि फोरि मिलावै ॥ दंड मार दुख त्रास देखावै ॥
राजन के लछ्छ साधे जानो ॥ तिन पाछे अस पढ़ो बखानो ॥

दो० बरणा वेद उपवेद अंग आदि शास्त्र उपशास्त्र ॥
सकल पुराणो संहिता तंत्र सुमंत्र कलास्त्र ॥
निकस्यो नहीं नबर्ग के अंतको अक्षर शुद्ध ॥
जान्यो नव रघुनाथ सुनि हैं गुण बिश्व बिरुद्ध ॥

चौ० अचिर काल सब बिद्या लीन्हो ॥ बहु बिधि गुरुहि दक्षिणा दीन्हो ॥
भये मुदित मन पितु अरु माता ॥ खेलन जाहिं जहां सब भ्राता ॥
हरखि लोग सब होहिं सुखारी ॥ थकित बिलोकें छबि नर नारी ॥
जोवन जेठर अपर जे बारे ॥ लागहिं सबन प्राण ते प्यारे ॥
सुदिन समुझि इक दिन नर नाहा ॥ दीन जनेऊ सहित उछाहा ॥
नित्यानन्द निरोधि अपारा ॥ छिन छिन बाढ़त अवध मँझारा ॥
पुरबासी सब ताके माहीं ॥ रहें निमगन सुगति कछु नाहीं ॥
नारदादि मुनि दिन प्रति आवें ॥ चारु चरित चहि चहुं दिशि गावें ॥
मुनि सुर सकल सराहिंसि प्रेमा ॥ सुमन चढ़ावें हित निज क्षेमा ॥

दो० एक दिन ध्यान बशिष्ट मुनि करत देखि अर्थ देख ॥
कह्यो बिघ्न कर वाइ के प्रगट गाद किन लेख ॥

चौ० एक दिवस प्रभु सरयू माहीं ॥ अनुज सखन युत मुदित नहाहीं ॥
असुर एक रावण कर प्रेरा ॥ मगर रूप धरि मुखवें गेरा ॥
निकसे सपदि ताहि हरि मारी ॥ सुनि पुरजन सब भये सुखारी ॥
जिन जिनके बालक नेहि खाये ॥ दीन्हें काढ़ि मनहु धरि आये ॥
मातन दीन्ह्यों दान अपारा ॥ गुरु प्रसाद कल्याण हमारा ॥
इमि पोगराड अवस्था माहीं ॥ किये चरित बहु बरणि न जाहीं

पुनि सब बंधु भये के सोरा ॥ रूपराशि पुरजन चित चोरा ॥
नित प्रति सरयू करि अस्नाना ॥ बहुविधि देहिं द्विजनकहँ दाना
कबहुँक चढ़ि निज नाउ मँझारा ॥ खेलैं दृग जासध्य नेधारा ।
कबहुँक सानुज सखा सुजाना ॥ खेलैं गेंद जाइ चौगाना ॥ ॥
कर कर कंदुक भूमत कैसे ॥ हरि पद बिमुख जीव जग जैसे
कबहुँक चढ़ि बर बाजि नचावैं ॥ पुरबासी लखि अति सुख पावैं
कबहुँक बदि ठानैं घोड़ दौरा ॥ धरि निज निज मोहौं इक ठौरा ॥
भरत संग जब बाजी लागे ॥ तब प्रभु कस रहैं निज आगे ॥ ॥
कहैं सकल हारे रघुराई ॥ जीते भरत भावते भाई ॥ ॥ ॥
सुनि बकसत हय गय पट हीरा ॥ प्रमुदित होइ पाइ सब बीरा
कबहुँक अनुज सखन के साथा ॥ बिचरहिं पुर धनु सर गहि हाथा
इक दिन इक मज्जन कृत नारी ॥ देखन लगी तासु महतारी ॥
बोली बसन बिना कोइ देखा ॥ को अस इन्हैं छाड़ि मोहिं पेखा
ते नृप तनै न अबै निहारे ॥ परे दृष्टि नहिं अंग हमारे ॥ ॥
कबहुँक जाइ अखेटन करहीं ॥ अनुज सखनयुत बनतन करहीं
कबहुँक राखि निशाना मारैं ॥ मज्जन करि पुनि गृह पगु धारैं
देखि मातु अतिशय सुख पावैं ॥ नृपयुत भोजन हेत बोलावैं
मंजु छंद ॰ जेवन बैठे भूप मौलि निज संग सुवन लै चारी जी
सहित सनेह परूसन लागीं लषन लाल महतारी जी ॥ मोह-
न भोग मखाने की हवि मधुर मलाई धारी जी । खोवा खाँड़
खीरि कलेवर पूरी खाजा खुरमा खारी जी ॥ मालपुवा माधुरि
मधु मिश्री मलि माखन मैं डारी जी । पन्नी धूप परपरी पापर
पाक पिराक पनारी जी ॥ मोती चूर मूर के मोदक बोदक की
उजियारी जी ॥ सेमई सेव सेंजना सूरन सोवा सरस सोहारी
जी ॥ उज्जल भातु भटाकर भरता भाँति भाँति तरकारी जी ।

मूंग सारव सरहटकी पांहनी चनक कनक सम दारी जी॥ब-
रीबरीक बराचहु बिधिके ककरी कटु कर हारी जी। पाकारि
कल्नी फल्नी मुनि तरुकी कूष्मांड कच्चनारी जी॥पारवर पाइ-
यकोरी पालक पेठासन रुचिकारी जी॥अरुई आँब अँबिर-
ती अररव अँवरा अमित अचारी जी॥ रोटी रुचिर मिही मे-
दाकी छुनमें बोरि निकारी जी। मेथी सरस सेमि दल सरसों
सोवा मुनि सुरवारी जी॥ चौराइ तोराइ तो तोरई मुरइ मुरव्वा
सारी जी। डुभकोरी मुगछोरी रिकवछ इंड हर क्षीर छछारी
जी॥ रवट्टी कढ़ी करेला कुंदरू केला फल फलहारी जी।
गरी बदाम छोहारा किशमिश पिस्ता दारव अपारी जी॥ रिवरसा
रवीर चेड़ा घेवर धन गुझ्झा गुरि यारी जी। फेनी फूल निमोना
डिंडसा सूरन लालू ग्वारीजी॥ जलित जलेब अँदरसा बुकुनू
दधि वरनी चटकारी जी। यहि विधि चारि भाँति षटरस के व्यं-
जन बिपुल सँवारी जी। कनक थार मनि जटित कटोरनि भरि
भरि धरे अगारी जी॥ पंच कवर करि जेवन लागे लखि हरषी
नृप नारी जी। शीतल जल सरयू कर बासित पीवत बारहु बा-
रीजी॥ कहत कौशिल्या भोजन कीजे बहुरि न पीजे बारी-
जी। गयन अघाइ माइ अब हमते तनको टरत नटारी-
जी॥ दशस्यंदन नन्दन सुरवसदन अचिवें उठे उतिशु बिचारी जी॥
अनुग आइ अचवन करवायो कर अँगु छायाभारीजी॥
दीन तंबूल अरगजा कुमकुम लीन्हयो अवध बिहारीजी। सीत प्र-
साद दास दासिनि मिलि पायो सरव पछारी जी॥ जेहि जूठनिको
सुर मुनि नर मन पन मन कबहु न डारी जी॥ सोई जन ल
रघुनाथ भाव भरि पावत बारहु बारीजी। देव दनुज नर नाग राग युत ज-
न जगदाय अगारी जी॥ जो जेवनार राम कीगावै तासुरव की बलिहारी जी।

तोटक छं०॥ कबहू बन जाइ सिकार ठनैं। मृग आदि-
क साउज नाहिं हनैं॥ जब सूकर नाहर दृष्टि परैं। तुरतै नि-
ज बाजिन तें उतरैं॥ लखि राम कहैं हथियार धरै। यहि तें-
सब एकहिं एक लरै॥ करि युद्ध पछारत जौन सरवा। ते-
हि देत इनाम मे श्रीरामलखा॥ निज धाम पठावत साउज-
सो। घर आवत गावत राउज सो॥ रघुनाथ कहैं यहि भाँति प्र-
भू। नव निज चरित्र करैं बरभू॥

चौ०। एक दिन यक सूकर बन आवा। धुरधुराइ प्रभु सन्मुख धावा॥
गहि पद पटक्यो भूमि भुजासू। छूटत भयो दिव्य बपु तासू॥
अस्तुति करि अस बचन उचारा। पूरब प्रभु मैं रह्यों भुवारा॥
एक दिवस तव जन लखि पावा। बस अभिमान न शीश नवावा॥
निन्दा करि निज मंदिर आयों। तेहि अपराध कोल तनु पायों॥
अब तव दरश दूरि दुख भयऊ। अस कहि परम धाम कहँ गयऊ॥
एक दिन मैं नाहर ते भेटा। तेहि शठ प्रभु पर कीन झपेटा॥
साधि बाण मारा रघुराया। तनु तजि सो हरि लोक सिधाया॥
यहि बिधि बन सिकार मिलि जाई। पावन करैं जीव रघुराई॥
खग मृग निरखि निकट चलि आवैं। तिन्हें न कबहूं भूलि सतावैं॥
जे इल घात करैं गति हेता। तिन्हें देइ हनि कृपा निकेता॥

दो०। एक दिवस इक सिंह ने बधी विप्र की गाय॥
गरजत डोलै पुर निकट कोई पास न जाय॥

चौ०। सुनि रघुपति कमिकदि परबाधा। धनुष चढ़ाइ पानि सर साधा॥
मुदित जाइ सन्मुख ललकारा। खल हो सजग तोहि मैं मारा॥
दृ तन सुनि सन्मुख सो धावा। पंच बान मुख मारि गिरावा॥
तुरत भयो सो गंध्रव रूपा। बिनती करि निज हाल निरूपा॥
महाराज मैं गंध्रव अहऊं। इन्द्र सभा नित गावन रहऊं॥

एक दिवस नारद तहं आये॥ नाथ चरित तब वरणि सुनाये
तेहि समाज में हंस्यो बठाई॥ सुनि मुनि बोले बचन रिसाई

दो० सिंहनाद सम करत सठ होउ जाइ हरिहार॥
मरिहैं निज कर राम जब तब होई उद्धार॥
यहि तन पायों अमित दुख अब सब नाशे शोक॥
अस कहि पद शिर नाइकै जात भयउ निजलोक॥

चौ० तब नृप पहँ आये रघुराई॥ तहाँ विप्र ठाने मच लाई॥
कहत सुरभि सोई मम दीजे॥ भूपति भनत अपर बहु लीजे
तब साधो बोले सुनु ताता॥ झरि तरु बहु दिन लागे पाता।
गई बीति बय पुनि कहं आवे॥ समय चूकि फिरि कापछितावे
तेहि ते तजहु आस लेहि केरी॥ अपर धेनु लीजे बहु तेरी॥
तदपि न विप्र तजो हठ लाई॥ देखा चहत राम प्रभुताई॥
तब प्रभु कहा लषन ले जावो॥ विप्र समेत दूंढ़ि गो लावो॥
चढ़ि रथ गये प्रथम यमलोका॥ लखि डर भातिन के सुखशोका
षोड़श भाँति पूजि मनमानी॥ हाथ जोरि बोले मृदु बानी॥
नाथ कोन हित आयहु आजू॥ आयसु होइ करिय सोइ काजू
बोले लषण विप्र की गाई॥ दीजे आनि होइ जो आई॥

सो० सुनि बोले यमराय। पांच कोस तक अवध में॥
जो कोई मरि जाय। सो नहिं आवत धाम मम॥

चौ० करम करत भल पोच घनेरे॥ तिन कर न्याउ हाथ हरि केरे
जैसे राज सभा कर कोई॥ तेहि ते कछु भल अनभल होई
ता सुनि साफ करै सोइ राजा॥ नाहिं न कछु कोतवाल ते काजा
सुनि रथ चढ़ि चलि भे तत काला॥ जाइ बिलो के सक लघ लाला
पुनि चढ़ि सातों स्वर्ग ढुंढ़ाये॥ तेहि पाछे बैकुण्ठहि आये।
रहत जहाँ श्रीपति भगवाना॥ कीन दण्डवत तिन सनमाना

पूंछे ते बरणा निज हेता ॥ तिन तब कहा जाउ साकेता ॥
जोजन कोटि पचास अगारा ॥ रहत राम इच्छा आधारा ॥
दो॰ जहां न पावक पवन पवि चन्द्र सूर्य्य नहिं कोय ॥
रहत एक रस सर्बदा राति दिवस नहिं होय ॥
चौ॰ सुनि चलि भे देखा सोइ जाई ॥ बसत रतन मय छवि अधिकाई
चारि द्वार तेहि पुर के हेरे ॥ बाजत बाजन भांति घनेरे ॥ ॥
उत्तर बसत महा बैकुण्ठा ॥ महा बिष्णु जहँ रहत अकुण्ठा
बिरजा बिमल बहत पुर तीरा ॥ मज्जत सन्त सकल मति धीरा
ज्योति एक जहँ जरत निराधा ॥ कोटि भानु सम तेज प्रकाधा
योगीजन जेहिं सादर ध्यावें ॥ अन्त समय तेहि माहिं समावें
पूरब द्वार जनक पुर सोहे ॥ दक्षिण चित्र कूट मन मोहे ॥
पश्चिम दिशि गोलोक निहारा ॥ जहां करत गोपाल बिहारा
षोड़स संवत केरि अवस्था ॥ बपु छबि लखि कोटिन मनमथा
पहिरे भूषण बसन अमोला ॥ मृदु मुसक्यानि मनोहर बोला
दो॰ पीत बसन बनमाल उर कर मुरली मुख पान ॥
परिकर सहित समूह सखि सोहत तहँ भगवान ॥
चौ॰ रहती हैं सुरभी तेहि माहीं ॥ पूछा जाइ लखन तिन पाहीं
ब्राह्मण की कपिला इत आई ॥ सुनि दीन्ही गिरधरन मंगाई
मुदित मध्य साकेत ते आये ॥ मंदिर बिपुल बिचित्र सोहाये
जो रचना निरखी कहुं नाहीं ॥ सो सब देखी ताके माहीं ॥
दिव्य रूप सब तहां के बासी ॥ षट बिकार बिन नित्य सुपासी
आगे सीता हि देख्यो जाई ॥ रूप अनूप अमित प्रभुताई ॥
जासु अंश उपजे गुण खानी ॥ अगणित लक्ष उमा ब्रह्मानी
अगणित सखी करें सुठि सेवा ॥ अगणित अली लिहे कर मेवा
अगणित अनुग करें परनामा ॥ अगणित सन्त उचारहि नामा

असंगादिक शक्ती हरि गुण गावैं ॥ तिनमा नैं तिस मुख्य कहावैं ।

सोरठा ॥ श्रीभू लीला क्रांति कृपा जोगाई ध्याना । उत्कृ-

ष्टा भीयनी चंद्रिका कूराज्ञाना ॥ पुन्या परबी कला कीर्ति-

अहलादिनि क्रांता । मा विन्या शोभना लांविनी विद्यासाला

ईलानुग्रह महोदया उन्नती सुविमला । छाता नंदनि शुभद

सत्य सोक्षा हित विमला ॥ ए शक्ती तेतीस सदा सिय भृकुटी

दिशिलखैं । करैं विश्वकर काज सवन के सहस सहस सखि ॥

चौ० ॥ इन सब हिन की कीरति करणी ॥ महारमायन में शिव बरणी ॥

सहित विप्र लक्ष्मण शिर नावा ॥ करि सनमान निकट बैठावा ॥

प्रीतम के गुण पूछन लागी ॥ कहे सकल लक्ष्मण अनुरागी ॥

हाथ जोरि द्विज पूछत भयऊ ॥ स्वामी कौन कहां तव गयऊ ॥

हमरे पति महि अवध मंझारा ॥ लीन जाइ नृप गृह अवतारा ॥

कछु दिन में हमहूं तहं आई ॥ जनक नगर प्रगटव अंगनाई ॥

सुनि शोभन अति मो हरषाना ॥ रामैं सकल लोक पति जाना ॥

अब तुम जनि भरमो मव धामा ॥ मूंदो नैन जाहु निज ग्रामा ॥

नयन मूंदि देखें तहं नाहीं ॥ बैठे राज सभा के माहीं ॥ ॥

बोले राम धेनु निजु पायो ॥ तब शोभन चरणन शिर नायो ॥

धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला ॥ धन्य तुम्हारे चरित कृपाला ॥

प्रथमे मैं तव सुना प्रभावा ॥ जड़मति मन विश्वास न आवा ॥

ताही ते ठान्यो हठ भारी ॥ देख्यों प्रभुता अमित तुम्हारी ॥

दो० ॥ तव सम दूसर ईश कोइ तव पुर सरिस न ग्राम ॥

तव चरित न सम चरित नहिं तवजु नाम सम नाम ॥

चौ० ॥ मैं प्रभु कीनि ढीठता भारी ॥ सो क्षमिये जन जान अनारी ॥

सुनि प्रभु हँसि बहु विधि सनमाना ॥ तात करेहु जनि अनत बखाना ॥

भले नाथ कहि निज गृह गयऊ ॥ पुरवासी सब हरषत भयऊ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहि विधि राम चरित्र निकेता ॥ करत चरित भक्तन सुख हेता
एक दिन सुर ऋषि आवत रहेऊ ॥ मग मिलि लोमस से अस कहेऊ
चलो आजु श्रीरामहि देखो ॥ जीवन जन्म सुफल करि लेखो
सुनि मुनि कह्यो सहित अभिमाना ॥ थिर ह्वै करो ब्रह्म का ध्याना

दो० यहि विधि आवत जात बहु बिश्व विषे रघुराइ ॥
इनते तो हमहीं भले अचल ब्रह्म रहे ध्याइ ॥
पर ब्रह्म श्रीराम हैं हरता अखिल दुख भार ॥
सुन्यो न जब तब देवऋषि आये अवध मझार ॥

चौ० तेहि क्षण तहाँ राम की माया ॥ ब्यापी लोमस को यहि भाया
उमड़े सिंधु सकल दिशि तेरे ॥ बहे ऋषि परि तिन के केरे ॥
प्रथम प्रलय सम चन्यो विचारा ॥ पैरत आये प्राग मझारा ॥
लख्यो अछै बट में हरि रूपा ॥ कह्यो मोहिं राखो सुर भूपा ॥
बोले हरि राखन हित तुमका ॥ है न राम की आज्ञा हमका ॥
इतने माहिं लहरि के साथा ॥ अपर अंड में गे ऋषि नाथा ।
तहाँ अछै बट पर हरि पाई ॥ कह्यो कह्यो नहिं राम रजाई ॥

दो० इमि अगणित अंडन विषे गे लखि गहो न कोइ ॥
यम जातना शरीर सम पायो दुख अति सोइ ॥
तब मुनि कह्यो कौ राम को जिनकी आज्ञा नाहिं ॥
लीन्ह्यों जिन साकेत पति जन्म अवध पुर माहिं ॥

चौ० तिनकी जाय बिनै जब करिहो ॥ तब तुम दुख सागर ते तरिहो
नाम रूप अरु लीला धामा ॥ रहत नित्य ये होत न वामा ॥
हमैं न ढूंढ़े मिली कृपाला ॥ लहरि संग पठयो तब काला ॥
जल आवरनु अवध चहु फेरा ॥ तंबू सम तानो तहे हेरा ॥
पुरवासी सब सुखसों जहवाँ ॥ रहत बहत नहिं दुख कस कहवाँ
तब लोमस ऋषि रघुपति केरी ॥ कीन्हीं बिनै भाँति बहु तेरी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनि प्रभु सेवक ते बोलवायो ॥ रामहिं लखि मुनि शीस नवायो ॥
कह्यो नाथ बिन कृपा तुम्हारी ॥ कोइ कर तूं तिन सके उबारी ॥
तुम सब नाथन के हो नाथा ॥ जीव दशा सब तुम्हरे हाथा ॥ ॥
चहो मसक को ब्रह्म बनावो ॥ विधिहि मसक करि लोक भ्रमावो ॥

दो० अस कहि लहि आनन्द मुनि गौने निज थल फेरि ॥
पंचस्यंसिर लखि कियो नारद को गुण केरि ॥

सो० राम मंत्र को पाइ । आइ चरित रघुनाथ के ॥
बरणो तब ऋषिराइ । अस प्रभाव श्रीराम को ॥

चौ० एक दिन राम पतंग उड़ाई । देव लोक सो पहुंची जाई ॥
तहं हरि सुत जयंत की नारी ॥ अति बिचित्र तेहि चंग निहारी ॥

दो० मन में किहिसि बिचार यह जासु गुड़ी अस आहि ॥
सो पूरब कस होइ धौं हँसि गहि लीन्हेसि ताहि ॥

चौ० तब प्रभु हनूमान ते भाखी ॥ देखो केहि पतंग गहि राखी ॥
तुरत पवन सुत जाइ निहारी ॥ देहु छांड़ि पुनि गिरा उचारी ॥
बोली जासु चंग यह आही ॥ दरशन तासु कीन्ह हम चाही ॥
नाहीं ते याको हम गहिहू ॥ आइ अनिल सुत प्रभु ते कहेऊ ॥
सुनि हरि कहा कहो तुम जाई ॥ चित्र कूट महं देव देखाई ॥ ॥
हनूमान चलित सो भाषा ॥ दिहिसि छांड़ि मनकर अभिलाषा ॥
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्हो ॥ निशि गृह आइ बियारू कीन्हो ॥
मणि मय पलंग गयो बिछावा ॥ क्षीर फेनु सम बसन सोहावा ॥
कीन शयन ता पर जग त्राता ॥ प्रात जाय बोली दिग माता ॥
भोर भयें जागहु रघुराई ॥ मुख छबि पर जननी बलि जाई ॥
रविहि बिलोकि गयो तम भागी ॥ ज्ञान उदय जिमि मोह बिरागी ॥
शशि नक्षत्र भे मलिन सुभाये ॥ जिमि सब गुण दालिद के आये ॥
लागे लुकन निशाचर कैसे ॥ हरि सुमिरण ते पातक जैसे ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

उठे फूलि सरसिज रबि देखी ॥ जैसे सुजन सुजन कहँ पेखी ॥ ॥
तिनपर मधुप करत गुंजारा ॥ जनु तम बपु धरि शरण पुकारा
बोलत बिहंग बिबिध बिधि टेरे ॥ मानहु मुनि बहु गुणगण लेरे ॥
प्रमुदित कोक कुमुद बिलखाने ॥ हानि लाभ जिमि पाइ सयाने ।
अनुज सखा बोलत यहि भाँती ॥ जिमि चातक चाहै जल स्वाती
बन्दीगण बिरदावलि भाषैं ॥ याचक द्वार खड़े अभिलाषैं ॥
सुनत उठे तब अवध बिहारी ॥ देखि मातु आरती उतारी ॥ ॥
मित्र बंधु सेवकन पद बन्दे ॥ दान पाइ याचक आनन्दे ॥ ॥
पुनि सरयू तट जाइ नहाने ॥ सब बिधि साधु बिप्र सनमाने ॥
जहँ तहँ सुनैं कथा करि नेहा ॥ करि प्रणाम आवैं पुनि गेहा

दो० एक बार रघुनाथ लै संग सुजन समुदाइ ॥
तीर्थाटन करि सबन को दीन्ही बिशद बड़ाइ ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत रामचरित्र बर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
घट ज संहिता कर मत कहौं कछुक रुइ बखानि ॥
यक दिन प्रभु लागे करन निज स्वरूप कर ध्यान ॥
पवन तनै अवलोकि इमि मन में कृत अनुमान ॥

चौ० इन्हें सुना हम सब के स्वामी ॥ ब्रह्मादिक जाके अनुगामी ।
सुमिरण ध्यान करत हैं सोऊ ॥ इनहु लके ऊपर है कोऊ ॥ ॥
पूछत प्रभु ले तिन हँसि काहा ॥ परब्रह्म किमि जाँचे चाहा ॥ ॥
निकटौ दूरि निबाहु न होई ॥ जैहौं छिप्रन मग कटु कोई ॥ ॥
मुंदरी दै उत्तर दिशि फेरा ॥ कुधर खण्ड बन हले घनेरा ॥
लोकालोक अद्रि के आगे ॥ अंधकार पावक थल त्यागे ।
सत संबत परगये निकेता ॥ बुढ़िया एक मिली तहँ सेता ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ब्रह्म कहां मृतलोक पधारे ॥ सहस माज्ञ भे दशरथ बारे ॥ ॥
पुनि देखे रघुपति आसीना ॥ विधि हरि हर सेवत पद लीना

दो० करत दराडवत पुनि तहां कोई पर्यो न देखि ॥
पीताम्बर को खूट ले आंये अवध विशेषि ॥

चौ० करत प्रणाम राम हंसि कहेऊ ॥ आयो देखि ब्रह्म कस रहेऊ
कह कपि तुमही हो सब ठौरा ॥ तुमते पैर नहे कोइ औरा ॥
बोले प्रभु तुम पहुंचे नाहीं ॥ अबहीं फिरि आयो मोहिं पाहीं
तब पवनज पर चिन्ह देखावा ॥ रघुपति कर खारिड तस पावा ॥
गिरे चरण कहि धनि तव लीला ॥ जन मन संशय शमन सुशीला

दो० एक दिन पद चापत गुन्यो इन्हें श्रुति कहे अरूप ॥
है अरूप पुनि श्रुति विनय देखरायो निज रूप ॥

चौ० एक दिन सखन सहित रघुबीरा ॥ खेलत ते सरयू के तीरा
विहंग रूप धरि रावण आवा ॥ घात पाटि शठ चहत उडावा ॥
जानि राम बिन फर सर मारा ॥ गिरा जाइ निज लंक मझारा
सात दिवस पर मुरछा जागी ॥ समुझि प्रताप लाज उर लागी
तब दूतन ते कहि सि बोलाई ॥ तपसिन ते लावहु कर जाई ॥
आयसु पाइ आइ हठ कीन्हा ॥ मुनि भरि कुम्भ रुधिर तिन दीन्हा
कह्यो जाइ रावण के पासा ॥ यहि घट ते होई कुल नासा ॥
गगन जाइ दसमुख बेसुनाई ॥ आवहु गाड़ि जनक पुर जाई
शंभु सभा श्रुति बाद मझारा ॥ प्रथमे रहा जनक ते हारा ॥
तेहि गस ते तहँ कुम्भ पठावा ॥ दूत गाड़ि मिथिला पुर आवा
हरि इच्छा तहँ पर्यो दुकाला ॥ बिन जल भे सब जीव बेहाला
लखि बिदेह बुध लीन बोलाई ॥ बूझे ते तिन युक्ति बताई ॥
उदक हेत शुभ यज्ञ करावो ॥ कनक केर ले हल बनवावो ।
जोतो अजिर सहित निज रानी ॥ होई वृष्टि सकल सुख दानी

दो० सुनि नृप कीन्ही युक्ति सोइ जोतत अवनि प्रकार ॥
प्रगट्यो सिंहासन सुभग अद्भुत तेज अपार ॥
चारि सखी चारों तरफ लीन्हें सुरफल हाथ ॥
मध्य विराजत भूमिजा रूपराशि रघुनाथ ॥
वेदवती रिपु बधन हित तजन हेत महि अंश ॥
एक रूप हैं प्रगट भइ आदि शक्ति निमिवंश ॥

चौ० देखि विदेह बिनय तब ठानी ॥ भई तुरत कन्या लघु जानी
सखिन सहित सिंहासन सोई ॥ अंतर ध्यान गयो तब होई ।
रोदन सुनत सुनैना रानी ॥ लीन उठाइ गोद सुख मानी ॥ ॥
सुनि पुरजन सब भये सुखारी ॥ देखन उठि धाये नर नारी ॥
भूपति दान दीन विधि नाना ॥ यथा मनोरथ जाकर जाना ॥
दिन दिन कन्या बर्धत कैसे ॥ शुक्ल पक्ष कर चन्द्रा जैसे ॥
कुठीं बारहीं अन्न परासन ॥ कीन नरेश निगम अनुशासन
नामकरण दिन नाम कढ़ावा ॥ बुधन जानकी नाम बतावा ॥
नारद आइ धर्यो तब सीता ॥ जगत जननि सब भाँति पुनीता
सुर रंजन भंजन खल हेता ॥ प्रगट भई नृप तब संकेता ॥
सकल लोक पति प्रभु सुखराशी ॥ मिलौ इन्हें वरसों अविनाशी
औरो लक्षण युक्ति समेता ॥ कहि मुनिवर गे ब्रह्म निकेता ।
सुनि ऋषि बचन माल गुहि लीन्ही ॥ सो निज उर सिय धारण कीन्ही
जनक बंधुजा सखिन समेता ॥ देखैं जहं तहं रूप निकेता ।
बाल वृद्ध यौवन नर नारी ॥ लागहि सबै प्राण ते प्यारी ॥ ॥
पुनि नृप त्रिपुरा पद नवैदाई ॥ अचिर काल सब विद्या पाई
यह चरित्र भाख्यो भव सेतू ॥ अब सुनु सिया स्वयम्बर हेतू ।

दो० एक समय मिथिलेश अति शंकर करत पसीन ॥
आइ कह्यो हर मांगु बर तब नृप बोलय लीन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाथ इष्ट जो आशुकर जेहि श्रुति नेति बखान॥
तहि देखों भरि नयन में यह बर देहु न आन॥
सुनि शिव दीन्ह्यों धनुष जो मिला रहै शिव साथ॥
कह्यो कि पूजेहु यही ते मिलो आइ मम नाथ॥

चौ० सुनि विदेह प्रभु हित अनुरागे॥ नित नेम करि पूजन लागे।
यक दिन सिय सेवा ढिग जाई॥ लीले लीन्ह्यों धनुष उठाई।
देखि जनक अति अचरज माना॥ तेहि छिन नह्यौं कठिन प्रण ठाना।
जो लेई शिव चाप चढ़ाई॥ सो नृप मम कन्या बरि पाई॥
लिये बोलि कारीगर भूरी॥ रंगभूमि बिरची तिन रूरी॥ ॥
चहुं दिशि चामीकर अस्थाना॥ तासु मध्य मणिमय मंचाना।
दश सहस्र मिलि मल्ल बिशाला॥ लावत भय धनुष मखशाला।
देश देश प्रति पत्र पठाये॥ सुनि सुनि भूप अपने गन आये
बन उपवन पुर पंथ निकेता॥ उतरे निज निज सैन समेता॥
सुनि दशमुख बाणासुर आवा॥ प्रथमे निज निज पौरुष गावा।
रावण धस्यो धनुष तब जाई॥ बहु बिधि बल कीन्हा उठाई
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े॥ अति बल कीन कढ़ा तब काढ़े
सभा मध्य करि कपट बहाना॥ जात भये निज निज अस्थाना।
भूपहु दिन प्रति बिपुल उठावें॥ टरै न जब तब दुंदि मचावें॥
यहि बिधि बीते केतो मासा॥ अब सुनु मुनिवर की इतिहासा।
गाधि सुवन नन्दन बन रहहीं॥ यज्ञारंभ कीन जब चहईं॥ ॥
तब तब असुर करहिं अपकारा॥ लखि मुनिवर निज हृदय बि
भानु बंश प्रगटे रघुराई॥ लोचन सफल करहु तहं जाई
लावहु मांगि सुभग दोउ भ्राता॥ ते दलि खल हैं हैं मख त्राता
क्वार कृष्ण ऋषि दिवस सिधाये॥ नौमी दिन कौशलपुर आये
देखी बनानि अवध पुर केरी॥ तीनि लोक ते सकल अनेरी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पुर चहुँ ओर कनक कर घेरा ॥ उपवन बाग मनहु मधुसेरा ॥
बसु दिशि बसु दरवार बिराजै ॥ आठ आठ सेना पति राजै ॥
रहैं वेद घांट का परमाना ॥ जाहिं भवन जब आवैं आना ।
बिधि हरि हर धनपति रद एका ॥ बसत मनो धरि रूप अनेका ।
वापी कूप तडाग घनेरे ॥ मणि सोपान मधुर मधु नेरे ॥ ॥
बिस प्रसून बिकसे बहुरंगा ॥ कूजत खग गन गूंजत भृंगा ॥
मणि मय महल बिशाल अपारा ॥ मानहुं नभ तनि ऊपर धारा
चित्र बिचित्र अनेक बनाये ॥ कनक कलस शशि सरिस सोहाये
ध्वज पताक तोरण नव ठाटा ॥ देहरी बिद्रुम कुलिश कपाटा
चहुं हट हाट फराकन हींची ॥ बीथी सकल सुगंधनि सींची
आवत जात निकर नर नीके ॥ गज रथ बाज भावते जी के ॥
बाजन बिबिधि भाँति के बाजैं ॥ मत्त गयंद अनेकन गाजैं ॥
कतहुँ मल्ल गण भिरैं प्रचारी ॥ कतहुँ गीत गावैं मिलि नारी ।
कतहुँ बिप्रबर वेद बिचारैं ॥ कतहुँ सन्त जन नाम उचारैं ।
कतहुँ हंस सुक सारिक बोलैं ॥ कतहुँ केकि पारावत डोलैं ।
मध्य ग्राम नृप धाम अनेका ॥ बननि बिशाल एक ते एका
भूप सभा शुभ की रुचिराई ॥ देखत बनै बरणि नहिं जाई

दो॰ आवैं जांइ अनेक नृप झुकि झुकि करैं प्रणाम ॥
राजत कोशलराज जहँ सुरपति ते अभिराम ॥

चौ॰ उत्तर दिशि सरयू सरि बहई ॥ अमल अपाप आप सो अहई
आशु अधो मति कुंचित चाले ॥ औरहि देत ऊर्द्ध पद हाले
बांधे घाट मनोहर नाना ॥ जहँ तहँ जीव करैं असनाना ॥
निकट निवास मुनिन के रूरे ॥ सुमन बाग तुलसिका हजूरे
देखत मुनिवर पुर की शोभा ॥ सरयू तट आये मन लोभा ।
मज्जन कीन मुदित जल खावा ॥ ऋषि आगमन नृपति सुनि पावा

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सचिवन सहित तहँ आवत भयऊ ॥ करि सनमान सदन लै गयऊ ॥
नाये सब रानिन पद शीसा ॥ दीन्ही मुदित मुनीश असीसा ॥
गहे चरण पुनि चारौं भाई ॥ पृथक पृथक हैं आशिष पाई ॥
भये प्रेम बस रामहि देखी ॥ चपल दृगन परिहरी निमेषी ॥
षोडश भाँति पूजि महिपाला ॥ बोले वचन नाइ पद भाला ॥
भूरि भाग हम तुम्हैं निहारा ॥ कृपा कहौ केहि हित पगु धारा ॥
सुनहु नरेश तपोवन माहीं ॥ करन देत मख निश्चर नाहीं ॥
तेहि हित याचन आयों ताता ॥ दीजे राम लषण दोउ भ्राता ॥
सुनि मुनि वचन बान सम लागे ॥ बोले भूप भभरि भय त्यागे ॥

दो० याचक जन नाहक किये जगत पिता संसार ॥
हित अनहित न निबाह कछु माँगन ही को कार ॥
विविध यतन कीन्हें मिले चौथे पन सुत चारि ॥
निपट निठुर निर्मोह तुम माँगहु नाहिं विचारि ॥

चौ० कहँ सुकुमार सुवन मम बारे ॥ कहँ निशिचर सम असुर भयकारे ॥
जे अनुसरगहि जानत नाहीं ॥ ते कैसे लरिहैं रण माहीं ॥
राम सनेह सहित सुनि बानी ॥ है प्रसन्न पुनि कह मुनि ज्ञानी ॥
नृप देखत हैं राम नदाने ॥ अहहिं सबल अति चतुर सयाने ॥
इनकर रूप प्रताप जहाना ॥ जानत सब गुरु सरिस महाना ॥
तेहि ते देहु लेहु करि नामा ॥ याही हेत धरयो वपु रामा ॥ ॥

दो० तुम कहँ याचक जगत में आदि विश्वामित्र कीन ॥
सो नहिं भूपता दानि के कोशलराज लघु पीन ॥

चौ० कह नृप सत्य झूठ कछु नाहीं ॥ राम प्राण प्रिय दिये न जाहीं ॥
हम सब संग चलौ सजि साजा ॥ तुमते नहिं होई यह काजा ॥
धरणि धाम धन चहौ सो लीजे ॥ केवल त्यागि राम कहँ दीजे ॥
मोह विवश हैं करत विवादा ॥ त्यागत निज कुल की मर्यादा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इतना कहत क्रोध उर जागा ॥ महि पताल नभ हालन लागा ॥
सुरनर अहि सब उठे डराई ॥ चाहत होन प्रलय की नाई ॥
तब वशिष्ठ मृदु वचन प्रकाशा ॥ कीजे कृपा जानि निज दासा ॥
राजा से बोले मुनि लेहू ॥ बालक इन्हे मुदित मन देहू ॥

दो० इन ही के तप तेज बल बधित मख चर आसुरारि ॥
ऐहैं अल मंगल सहित सर्व विजय शिव सारि ॥

चौ० सुनि नरेश तब सहित सनेहा ॥ दीन्ह सौंपि सुवन कहि येहा ॥
नाथ हाथ ये बन मग जाता ॥ तुमहीं हो इनके पितु माता ॥
विश्वामित्र लहे दोउ भाई ॥ मानहु रङ्क महा निधि पाई ॥

छं० मानो महा निधि पाइ तब मुनि राय है संतुष्ट जू ।
बोले अहो तुम धन्य नृप निज राज नय में पुष्ट जू ॥ हे अ-
र्थ सब तब सिद्धि याते धर्म रत चित जो अहौ । मुनि सु-
खा लीन स्वधीन हीन मलीन पथ नाहीं गहौ ॥ जो पूर्व पि-
त्र पिता महादिक कीरही सद्वृत्ति जू । सो अर्थ धर्म सु-
काम में तब भई नहिं निरवृत्ति जू ॥ मोहि देत रामहिं कि-
हेउ कष्ट सो नष्ट पथ नाहीं अहे । रघुनाथ प्रेम विहीन कौ-
ने धर्म फल पायो अहे ॥ तुम गहत हो नहिं काल कौन्यौ सू-
द्र मूढन की दसा । पल्लवत फूलत फलत सुरत्सो सर्वरस
तुम्हरी दसा ॥ सत शौच धीरज दया मृदु तप तोष क्षमा ग-
म्भीर हो । निरमान मति बलवान ज्ञान निधान हर पर पीर हो ॥
वस करत भाँति देवाइ भीरुइ श्रेष्ठ हित गहे विनय हो ।
समनून को करि निज रावत स्वबस तुम दिन छिने हो ॥ तु-
म भ्रात पितु गुरु मित्र को रिपु घोर लखि बध करत हो । अ-
ति अन्त लक सम सन्तनति बचन प्रिय अनुसरत हो ॥ तु-
म मारि प्रति पक्षीन पाछे कृपा करि कृत बोध हो । मुनिव-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लत पथ को कर्म लायक देत फल करि सोध हो ॥ जिसवा
स हू के मरन ते नहिं रहत कबहुं निधांक हो। है जासु नहिं
बिश्वास तासों सदा शंकित अंक हो ॥ जे चार लायक ति-
न्हें करि के चार भेजत देश हो। बहु भेष धरि ते खबरि ला-
वत लखत तेहि तुम बेस हो ॥ तुम सदा रहत प्रसन्न सब
से निठुर कारज काल हो ॥ करि मंत्र राखत गुप्त सन्तन सा-
व धान नृपाल हो ॥ तुम जात दीन नदीन पै कृत कार्य्य च-
हत न साथ हो। निःशेष कार्य्यन करत पर को रखत कछु
निज हाथ हो ॥ तुम शत्रु भय को देखि तासों होत अभय सं-
हारि हो। जो कार्य्य आगे होइ गतिहि प्रथम लेत बिचारि
हो॥ पुनि देश काल स्व भाग्य माफिक कार्य्य में मनु दे त-
हो। करि साधु बिप्रन तोष आशिर बाद तिन सों लेत हो॥
तुम त्यागि मत नास्तीक तालस लखत आमद खर्च हो।
गज अश्व गढ़ भट काम कारक आदि सुरकी अर्च हो ॥ श्र-
म थोर फल बहु बिधि सो जानत प्रजन के पुर नाम हो ॥
रघुनाथ माला कार सम तुम करत जग को काम हो ॥ जल
असन धन पट अस्त्र अनुपम किये बहु अर्जित सहो ॥ हैं
भूप जे तव वश्य तिन को संग नित लीन्हे रहो ॥ निर बंधु पं-
गु अनाथ इन को करत नित पालन अहो। बुध बेद मंत्र
न को भिवादन करत करि लालन चहो ॥ कर लेत बनिक-
न ते तिन्हें घर कुशल पहुँचावत अहो। रण दान में नहिं
गहत लालच चपलता मन में गहो ॥ हो लेत कारज जासु से
तेहि देत सम्पति भूरि हो। हरिभक्त मन बच कर्म रहत अध
र्म ते नित दूरि हो ॥ निज कुटुम्ब पाल समाज सुखप्रद भये
सुत जिनके हरी। हौ सकत तेहि न प्रशंसि देत अशीश जीवहु वय औ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० पुत्रन हित करौ शोच न किनका॥ कोऊ न है दुखदायक इनका
सुनिकै सकल मातु अकुलानी॥ करि हैं बिघ्न राम जिय जानी
तुरतै प्रभु निज माया पेरी॥ तेहि तब हरी प्रीति सब केरी॥
दुवादशी दिन पारणा करिकै॥ पुरबासिन कै धीरज धरिकै।
पहिरि बसन भूषण प्रति अंगा॥ कटि तरकस कर सर सारङ्गा
जननि जनक पद शीश नवाई॥ पाइ अशीश चले हरषाई।
चलत दीन हनुमा नै छोरी॥ कछु दिन में बन मिलब बहोरी
कहत सुनत इतिहास हरी का॥ देख्यो आइ तपोवन नीका।
परि ता दिवस ताडुका धाई॥ रामहि मुनिवर दीन देखाई।
लखिकै प्रभु अब लोकत नारी॥ द्विज द्रोही बध दोषन मारी
बैरोचनजा दीरघ जिह्वा॥ सुरपति तेहि मार्‍यो लखि लिह्वा
भृगु भामिनि निष्ठुर हितकारी॥ नारायण तेहि आपु संहारी
परसराम गंभी निज माता॥ तिमि तुम याहि हतौ गति दाता
गुरु आयसु सुनि नीति निधाना॥ बरजि तून तें काढ़ो बाना।

दो० कढ़त एक धनु चढ़त दश कर्षत भे शत बाण॥
तजत सहस तन लागहे लक्ष गये तेहि प्राण॥

चौ० तनु छूटत भै सुन्दर भामा॥ अस्तुति करत गई हरि धामा
लखि प्रभाव मुनि माया कीन्ही॥ विद्या निधि का विद्या दीन्ही
जेहिते लागन क्षुधा पियासा॥ अस्त्र शस्त्र विधि तेज प्रकासा
पुनि मुनि ते बोले रघुराई॥ निरभै यज्ञ करौ तुम जाई॥ ॥
आयसु पाइ करत मख लागे॥ बैठे प्रभु रक्षा हित आगे॥
खबरि पाइ सुबाहु मारीचा॥ धावा बिपुल संग लै नीचा॥

गीतिका छं० धावा बिपुल लै नीच बीचहि राम बिन फ-
र सर हन्यो। शत योजन नाग्र बिचारि कारज पार सागर के ग-
यो॥ पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु मार्‍यो लषण सब सेना हनी।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

हरषे सकल सुरसन्त बरषि प्रसून कहि रघुकुल मनी ॥
इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत विश्वामित्र मखरक्षणो नाम षष्ठो ऽध्यायः ६

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि।
अगिनि बेष मत कहौं कछु पद्म पुराण बखानि॥
करि अवभृथ मख अथ दोउ मैथल हेतु ग्रंथीश॥
रहे तहाँ निज दूत सुनि पठयो मिथिलेश ॥ ॥

चौ॰ दूत आइ मुनि बैरे सुनायो॥ महिप समाज विदेह बोलायो।
हेतु समुझि बोले मुनि ताता॥ देखन चलहु धनुष मख ताता।
भले नाथ कहि कृपा निकेता॥ चले गाधि सुत ऋषिन समेता।
हरि दिन एक शिला लखि पाई॥ कह मुनि पद प्रभु देहु छुवाई।
कारण कौन सकल मुनि बरणो॥ गौतम श्राप पाक रिपु करणी।
एक दिन इन्द्र मुनन ते कहेऊ॥ मम त्रियते बर तिय कहुं चहेऊ।
देखन रवि रवि शशिहि बतायो॥ अधिक अहिल्या मुनि तहं आयो।
सुनि मुनि गे तम चुर सम बानी॥ गौतम बपु बासव रति दानी।
कह्यो गंग छल तुमरे गेहा॥ भवन आइ लखि कह बच नेहा
एक भग हित तुम आयो हमरे॥ होइ सहस भग सब तन तुम्हरे
कह्यो अहिल्याते पवि रूपा॥ हे सब कष्ट सहौं सुर भूपा ॥
बिनय सुनत बोले हरि चरना॥ छुवत तोर होइ निस्तरना॥
इन्द्र स्तुति सुनि कह मुनि भारी॥ धनु धुनि सुनि होइहैं सब आंखी
बहु दिनते पथ लखत बिचारी॥ सुनि प्रभु पद रज दीन निहारी
परसत चरण भई बर नारी॥ सन्मुख ह्वै अस्तुति अनुसारी

दो॰ जय जग दीपक सर्व पर प्रेरक प्रकृति प्रभाव॥
अहे ब्रह्म अनादि सुर राम अकाम सुभाव॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद पुराय यशाश्रित जगत॥

भवधिवत्स पद परम्पद पद बिपदानहिं देयु ॥
जे बिसइक जग जीव जड़ कर्म क्रिया युनभाव ॥
ताही के मद ते छके माया मोहित ज्ञान ॥ ॥
ते नर भाखिल होत नहिं तव पद पङ्कज नाथ ॥
भूली सुधि शुभ पन्थ की बिचरु कुपन्थ सो हाथ ॥

चौ० तुमि करि बिनय भक्ति बराई ॥ हृदय सहित पति लोक सिधाई ॥
मुदित सकल लखि गति अभिरामा ॥ जाइ गंग तट कीन प्रनामा ॥
पूछा प्रभु किमि आई गंगा ॥ कौशिक मुनि कह सकल प्रसंगा ॥
नृप भगीरथ तप करि लाये ॥ जुरिखा जेहि बिधि स्वर्ग सिधाये ॥
जासु प्रभाव सुनिन बहु गावा ॥ सोइ सुबोधि ताकेहि नहिं पावा ॥
मुनि समसमाज सप्रेम नहाने ॥ दीन दान भूसुर सन माने ॥ ॥
मुनि सब ऋषिन सहित रघुबीरा ॥ पहुँचे जाइ जनक पुर तीरा ॥

दो० देखे बन उपबन बिबिध बापी कूप तड़ाग ॥
मानि सो पान पियूष जेहि पान करत श्रम भाग ॥
बीथी करबर सबन के चोहट हाट अनूप ॥
धनिक बणिक बैठे मनहुँ धनद धरे बहु रूप ॥
मिथिला नलिके महल की शोभा किमि कहि जात ॥
जहँ बिहरत श्री जानुकी अखिल लोक की मात ॥
रमयन्ती रति बिधु मती मान रूप श्रुति जात ॥
लाजत मदन मयंक लखि सील जू को गात ॥
रवि ते मौरा शशि शम्भु ते जो वावन ते गंग ॥
लही अधिक छबि त्यों लही निमि कुल सीय प्रसंग ॥
जहँ तहँ टिके नरेश बहु बाल बाहन जिन साथ ॥
सुचि आश्रम लखि मुनिन युत उतरे तहँ रघुनाथ ॥

सो० खबरि पाइ मिथिलेश ॥ सहित सचिव भट भूरि द्विज ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आये जहां अवधेश। नाय मुनि पद शिर सबन॥
चौ० दीन अशीस निकट बैठाये। बूझी कुशल दरश नव पाये
रामलषण कर रूप निहारी॥ जनक सहित सब भये सुखारी
जोरि पाणि बोले मुनि नेरे॥ नाथ कहो ये सुत किन केरे॥ ॥
मुनि कुल तिलक कि नृप कुल जाये॥ कीदोउ ब्रह्मरूप धरि आये
इन्हें देखि मोहि भा सुख जैसा॥ नहिं त्रयताग ब्रह्म सुख तैसा
की भरि जन्म योग हम कीन्हा॥ ताका फल बिधि वत बिधि दीन्हा
कह मुनि सत्य कह्यो तुम ताता॥ ये प्रिय सबै जहांलगु गाता॥
कोशलेश दशरथ बल जाका॥ जानत दश मुख सुर पुर नाका
तिन के तनै मनोहर चारी॥ लक्ष्मण राम भरत रिपु आरी॥
उभै रहे अवधेश निकेता॥ लायों मांगि मिथुन मख हेता।
असुर मारि मम यज्ञ कराई॥ पद परसत मुनि तिय गति पाई
धनुष यज्ञ सुनि तव पुर आये॥ भले नाथ दृग सफल कराये
निज समाज ते पुनि सुख दानी॥ गाधि सुवन की कथा बखानी
इनकर बिभौ जात नहिं जाना॥ तेज पुंज अति क्रोध महाना
जासु समुझि तप तेज बिधाना॥ अजहूं डरत रहत सुर नाना
मुनि बशिष्ठ के पुत्र अनेका॥ जिन मारे नहिं छोड़े एका॥ ॥
जन्मि क्षत्रि कुल भे द्विज बर्णा॥ सृष्टि दूसरी लागे कर्णा॥
तप बल ते जिन नदी अमाना॥ करी कौशकी पुराय महाना
गोत्र संकु करि गुरु अपराधा॥ दियो शरण ताको निरबाधा
ऐसे जिनके कर्म अनेका॥ सुनि मुनि बोले सहित बिवेका

दो० एक लोक परलोक नहिं यक परलोक न लोक॥
एक सुखी दोउ लोक में तिन मा तुम गत शोक॥

चौ० सुनहु भूप सब भूप कहावैं॥ निज रक्षा कोइ करि न सकावैं
तुम साधे नृप दूनहु लोका॥ करत भयो सब प्रजा बिशोका

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाथ कृपा कहि सहित समाजा॥ आनि उतारे शुभ थल राजा
षोड़श भाँति पूजि सह चेला॥ हरष सहित तब गये निकेता

दो० पहर तीसरे कह्यो प्रभु मुनि पद शीश नवाइ॥
लषण दीख चाहत नगर आवहु तात देखाइ॥

चौ० आयसु पाइ चले दोउ भाई॥ खबरि सकल पुर बासिन पाई
बालक वृद्ध तरुण नर नारी॥ धाये निज निज काज बिसारी
देखें जब रघुपति बपु आई॥ अंग अंग प्रति रहे लोभाई
करहिं बात सब आपुस माहीं॥ इन सम रूपवन्त कोउ नाहीं
विधि हरिहर हैं बिश्व बिशाला॥ ते मुख चारि भुजा बिकराला
मदन अतनु शशि रहत न पूरा॥ अपर जीव अस कोहै रूरा
कोइ कहै धन्य नगर इनकेरा॥ संतत जहँ ये करत बसेरा॥
धन्य सकल पुर बासी अहहीं॥ जब तब जे अवलोकत रहहीं
कोइ कह धन्य मातु जिन जाये॥ कोइ कहै धन्य दरश हम पाये
कोइ कहै भागवती नृप जाई॥ विधि जस कातस देत मिलाई
कोइ कहैं अबै कठिन नहें कामा॥ कोइ कहैं धनुष तोरिहैं रामा
कोइ कहैं ए बालक महि थोरा॥ देखत छोट अहैं बरजोरा।
जिन मग शिला उधारी एका॥ मख हित मारे असुर अनेका
कोइ कहैं ए सहि करे विधाता॥ तौ हम का सबका सुखदाता

दो० बारी रूप अनूप बर बरता बाम ते बाम॥
कहैं बाम विधि विधि करी बाम देव धनु बाम॥

चौ० कोइ कहैं इन्हे भूप जब देखी॥ तजि प्रण करी बिवाह बिशेखी
कोइ कहै प्रथम नरेश निहारे॥ प्रण नहिं तजी लाज के मारे।
कोइ कहै धर्म कर्म भल सोई॥ जेहि पाछे पछि ताव न होई।
कोइ कहै मनमे करो उछाहू॥ होइ राम सिया कर ब्याहू।
कोइ कहै जो विधि बस अस होई॥ तो कुल धन्य होइ सब कोई

बार बार नृप सुता बोलैहैं ॥ देखब जन तब चालन ऐहैं ॥ ४ ॥
कोइ कहै हम चाहैं नृप ढोटा ॥ होंइ न कबहूं नयनन वोटा
कोइ कहै भाग चही अस माई ॥ सूती में नहिं सिंधु समाई ।
जौन होत बड़ि भाग्य हमारी ॥ तौ न मिलत मिथिला पुर प्यारी

दो॰ फिरिकीसी थिरकी फिरैं बिबरि किन प्रति नर नारि ॥
थिरि किनि तजि रघुनाथ कों निरखैं पलक बिसारि ॥

चौ॰ जब जेहि नयन वोट चलि जावैं ॥ भइ हानि अस बचन सुनावैं
एक कहै तुम भले निहारे ॥ भइ सखि बैरिनि लाज हमारे ॥
आवत निकट बदन पट दीना ॥ भरि नयनन अब लोकिन लीना
एक कहै बर बस मन मोरा ॥ हरि लीन्ह्यो सांवरो कि गोरा
एक कहै अस जगमें कोहै ॥ इन्है बिलोकत जौन बिमोहै ।
कोइ कहै सत्य बचन सखि तेरे ॥ इन चित चोरि लिये सब केरे
अब धौं बिधि कब दरश देखाई ॥ रंग भूमि फिरि देखब जाई
कोइ कहै सपने की निधि जानो ॥ बिन रति बंधवादि सुख मानो
कोइ कहै जो बिधि होई दाहिन ॥ तौ इन ते धनु उबरै चाहि न
नाहित दरश दूरि इन केरे ॥ अबला बपु कछु होत न हेरे ॥
यहि बिधि निज निज मति अनुहारी ॥ करैं बात जहं तहं नर नारी
शोभा सागर अनुज समेता ॥ सुलभ दरश सब काहु देता
रंग दास पुनि देख्यो जाई ॥ रचना बिचित्र रचना मन भाई ॥
बालक जो जेहि ओर बोलावैं ॥ प्रेम बिबस प्रभु तेहि दिशि जावैं
सब के नाम कहैं मृदु बचना ॥ तुम भलि भांति देखायो रचना ।

दो॰ जाकी इच्छा ते रचत माया अंड अनेक ॥
सो प्रभु चितवत चकित चित भक्त बत्सल हित एक ॥
लौटत सब के सफल करि लखन सहित रघुनाथ ॥
आये जहं तहं आइ के मुनि पद नायो माथ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गई निशा सेयि सकल शौचक्रिया करि प्रात॥
समै पाय आयसु लै सुमन लेन दोउ भ्रात॥

त्रिभंगी छं॰ पहुंचे नृप बागा सह अनुरागा देखन लागा- अति नीका। जामें ऋतु राजा सहित समाजा रहत विराजा। नित हीका॥ नाना तरु फूले सफल समूले मधुकर भूले गुं- जारें। खग विविध कलोलें जहँ तहँ बोलें जनु निज टोलें हँकारें॥ सर मध्य सोहाना मणि सोपाना जल चरनाना क- मल लसें। तँहि तट अति नीका सदन सती का छवि जन जी- का चोरि बसैं॥ अतुलित फुलवाई सकल मझाई पुनि दोउ भा- ई प्रेम पगे। माली गण जेता पूछि सचेता मुदित सुमन दल लेन लगे॥

दो॰ तेहि अवसर सीता तहँ आई सखिन समेत॥
मातु पठाई मुदित मन गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जन करि सर सखिन युत गई गवरि के धाम॥
पूजि यथोचित मनहि मन मांग्यो बर अभिराम॥

सोरठा एक सखी तजि संग। देखि बालक जाइ दोउ॥
आई सहित उमंग। बूझे ते बोलत भई॥

चौ॰ सुनहु सखी यहि बाग मँझारा॥ आये हैं द्वै सुभग कुमारा
गोरे श्याम छबिधाम किशोरा॥ चितवत चित चोरयो जिन मोरा
रूप अनूप सकों किमि भाषी॥ नैन अबैन बैन बिन आँखी
कह्यो एक है हैं सखि सोई॥ जिन मोहे पुरजन सब कोई।
बरनत जहँ तहँ रूप विशेषी॥ देखन योग चलहु सखि देखी
आगे करि सोइ सखी पियारी॥ चली सकल चहुँ ओर निहारी
बिटप ओट जब देखे जाई॥ गई अपनपौ सबै भुलाई॥ ॥
वैदेही जब रामहि देखा॥ गिरी मूर्छि महि प्रेम विशेखा॥॥

रूप चित्ति सब विष बिक्षुरन रागा ॥ जोन गिरि अधतो नहिं लागा ॥
धरि धीरज सब सखिन उठावा ॥ लेहु देहु नृप सुत सुनि भावा ॥
पुनि सनमुख दरसे दोउ भ्राता ॥ सहज सो हाव न पावन गाता ॥
दो० सारंग दृग सुख धारि ॥ पर सारंग कटि वपुधार ॥
सारँगधर रघुनाथ छवि सारँग मोहन हार ॥
चौ० रंग अंग छवि देखि जुड़ानी ॥ पितु प्रण समुझि बहुरि पछितानी ॥
सकल सखिन निज मन अस चाहा ॥ हठ परिहरि नृप करें विवाहा ॥
तौ सब के मन होइ अनन्दा ॥ अपर अधिप संग काज मंदा ॥
इत जान किहि देखि रघुवीरा ॥ बोले लक्ष्मण ते धरि धीरा ॥
दो० तात तकहु छवि राशि यह जनक सुता है सोइ ॥
जेहि हित धनुमख होत सुनि बहुरें नृप सब कोइ ॥
जासु अलौकिक रूप लखि सहस सबहु मन मोर ॥
भयो क्षुभित निज सोच तजि सो गति जाने कोर ॥
कह्यो लषण होतव्य जो सो प्रथमे सरणा ल ॥
करत बात इमि तात तन मन अटक्यो सिय गात ॥
इते सखिन लखि गहरु निज उर हरि मूरति लेखि ॥
आई गवरि निकेत पुनि खग मृग मिसि दिशि पेखि ॥
यथा पुत्र पितु प्रेमकृते चिन्ता भरी मोहि देह ॥
हरषै दीरघ धाम कहु फिरि आवे कहें येह ॥
कमल छं० तिमि सीया । लखि पीया ॥ हित वरी ।
लगि करी ॥
त्रिभंगी छं० जय जय भव भामिनि त्रिभुवन स्वामिनि मृगपतिगा-
मिनि ज्ञान निलं । तड़ितंगा सत्रूप अद्भुत रूपं मुख द्विजभूपं पाक
दिलं ॥ भुज चंड त्रिकालं धृत करवालं कृत जनपालं कामप्र-
दं । सुर नर मुनि बंदनि असुर निकंदनि भूधर नन्दिनि

कूट कूटं ॥ जय जलजन बिलोचनि रतिम दमोचनि परहित सोचनि कंक बिधे । अव बिमल प्रकाशिनि कलिमल नाशिनि स्वबस बिलासनि नीति निधे ॥ अति अमित प्रभावा वेद न गावा तदपि नयावा पार कुतं । विधनेश षड़ानन सम सुति मानन रिधि सिधि सासन नेम युतं ॥ जै जै नव वरणां सुखनिकरणां तेवर बरणां लब्ध फलं । पति पद रति सानी तिय अनुरागी सोबड़ भागी होन हलं ॥ अब भाष रसाला कुक मई माया प्रगटन गाथा गुन खानी ॥ सुनि सुस्य वचन गौरि मुसुकानं बोली वचनं मृदु बानी ॥

चौ० जय जय श्री मिथिलेश दुलारी ॥ जय कारम जननि जनक मनुहारी ॥
जय जग मगल त्रिभुवन धीरा ॥ तड़ित बरन वपु छवि गंभीरा ॥
जय जग दुस्तर दरशा तुम्हारे ॥ करि करुना बिचरत पद धारे ॥
जय भव भय भंजनि सुख देनी ॥ विधि हरि हर बन्दत सुरश्रेनी ॥
जय जप तप करि सुगति जे चहईं ॥ बिन तव कृपा न सपनेहु लहहीं ॥
सबके परे वेद जेहि गावै ॥ सो तव सुमिरत ते कर आवै ॥
दिव्य वरष शत शंकर ध्यायो ॥ राम गुरू है पंथ बतायो ॥
तब तव दरशन ते सुख लहेऊ ॥ कुम्भज आसन संहिता कहेऊ ॥
शेष सहस मुख दश मुख बानी ॥ तव महिमा नहिं सकत बखानी ॥
हम समान तव कोटिन दासी ॥ नयन निमिष नित करैं खवासी ॥
सो तुम मातु बिनय मम कीन्हीं ॥ निज जन जानि बड़ाई दीन्ही ॥
चतुर काल कोऊ जब जैसा ॥ तब तहं नाच करावै तैसा ॥
तेहि ते खेद अधीश हमारी ॥ पूजे मन कामना तुम्हारी ॥
नारद बचन सदा उर धरेऊ ॥ पद परीक्षा पुनि धरि हरेऊ ॥
सुनि सिय सकुचि सहित उर राखी ॥ चली पूजि पुनि गृह अभिलाषी ॥
सीतहि जात जानि रघुराई ॥ चित्र चारु इक लीन बनाई ॥

अनुज सहित आये गुरु पासा ॥ सुमन दीन सब हाल प्रकासा
अरचन करि मुनि बचन उचारे ॥ होइ मनोरथ सिद्ध तुम्हारे।
सुनि मन मुदित भये दोउ भाई ॥ भागन दिवस निशा तब आई
प्राची दिशि शशि देखि सोहाना ॥ सिय मुख सरिस न पुनि अनुमाना

दो॰ बढ़त घटत नित मढ़त नभ दिन मलीन रिपुराहु ॥
सिय मुख सम किमि होइ शशि दीन दुखद सब काहु ॥
गवरि गिरा सम कहिय किमि शैल सुता वाचाल ॥
रति अनङ्ग पनि सिंधुजा चपला जुज जेहि काल ॥
छबि पयोधि गिरि कूर्म अहि शामासुर सब जोइ ॥
इमि मथि काढ़े लक्ष जो सोउ न सिय सम होइ ॥
यहि विधि ते अंग अंग की उपमा करत विचार ॥
भई निशा सब नाथ पुनि देखि परा भिनसार ॥
बोलि लक्ष्मण ने लखहु अरुण उदै भे तात ॥
काहु तो अलि सुखद है काहुइ दुखद लखात ॥

चौ॰ मुनि सौमित्र कह्यो मृदु बानी ॥ प्रभु प्रताप भूरवन पर आनी
जिमि रवि लस गंज्यो करि ताता ॥ तिमि तव धनु बिदली भव चापा
उदि हैं फूलि कमल सब सन्ता ॥ होइहैं पुर जन मुदित अनंता
मृगुपति गति मयंक दुति छीना ॥ नृप गण हैहैं नखत मलीना
खल उलूक दुरिहैं तजि धीरा ॥ हैहैं चक्रवाक यक तीरा ॥
सुहृ गिरा सुनि प्रभु मुसकाने ॥ एका दिन वन जाइ नहाने ॥
नित्त नेम करि मोहन समाजा ॥ तेहि सरा बोलि पठाये राजा
सतानन्द तहँ आइ अचाना ॥ जरथेन सहित मुनि कीन पयाना
लागे लोग अनेकन संगा ॥ धाये विपुल प्रथम महि रंगा ॥
चहुँ दिशि फिरत विचार समेता ॥ तेहि अवसर आनन्द निकेता
रंग भूमि आये दोउ भाई ॥ जनु शोभा मधि शोभा छाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन जेहि भाँति भावना आनी ॥ तिन तस देखेव सारंग पानी ॥
योगिन तत्व न्रपन नृप श्रेष्ठा ॥ बुध विराट भक्तन निज इष्टा
सुरन नाथ असुरन सम काला ॥ सिसुन सुहृद मन सिज वपु बाला
जनक जनक रानिन जामाता ॥ मिथिला पुर वासिन बहु नाता
वैदेही देख्यो जेहि भाँती ॥ उर अनुभवत न सो कहि जाती ॥ ॥
सबके मन भरोस अस आया ॥ अवशि चाप तोरिहैं रघुराया

दो० भई भीर अति जनक लखि सेवक दिये पठाइ ॥
यथा योग सब काहु तिन आसन दीन्ह्यो जाइ ॥
रंग भूमि मुनि नाथ कहँ सकल देखाई भूप ॥
बोले कौशिक धन्य नृप रचना कियो अनूप ॥
सब मंचन में मंच यक अद्भुत बनेनि विशाल ॥
तेहि ऊपर सब मुनिन युत बैठाये नरपाल ॥
धनुष ध्वंस नभ रंग महि उडुगन लोग अपार ॥
राम लखण युग चन्द्र सम ऊगे सभा मँझार ॥

चौ० चितवैं सकल राम की ओरा ॥ जिमि मयंक दिशि विपुल चकोरा
कोइ कोइ न्रपन नृपन ते भाषा ॥ चलहु भवन परि हरि अभिलाषा
धनु दलि सिय वरिहैं रघुराई ॥ तुम कत तजि हौ मान बड़ाई
विनहु दले पैहैं जय माला ॥ सुनि बोले तब कुटिल नृपाला
टूटे धनुष कठिन है व्याहू ॥ बिन भंजे को वरी कुजाहू ॥
कालहु कसन होइ यक जोरा ॥ सिय हित समर करब हम घोरा
सुनि बोले तब सज्जन राजा ॥ गाल बजावत तुम्हे न लाजा
कनक कशिप स्वर नावक बीरा ॥ सहस बाहु मधु कैटभ धीरा
जिन ते विजय न काहू पाई ॥ तुम जिति हौ अब बल अधिकाई
परम सुभट अवधेश कुमारा ॥ वरिहैं सिय मथि मान तुम्हारा
जीतन हार न कोउ जग जावा ॥ करै चहै सो गाल बजावा ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जगत पिता रघुपतिकहँजानौ॥ जगजननी जानुकिहि पिछानौ
तेहिते दुरबासना नेवारी॥भरि लोचन छबिलेहु निहारी।
नहिं मानो तो खंधक जाहू॥ हमैं मिला नरतन करलाहू।
तेहि अवसर मिथिलेशपठाये॥सभामध्यबन्दी गया आये
भुज उठाइ बोले तहँ दोऊ॥सुनहुं सुप्रण नृपकर सबकोऊ
भुवन चतुर्दश केर भुवारा॥बैठे हैं यहिसभा मंझारा॥ ॥
जो लेई शिव चाप उठाई॥सोबर विजयसहित सिय पाई॥
सुनि हरषे अविवेकी भूपा॥ कसि कसि कमर चलेअहिरूपा
निज निज इष्ट सुरन शिरनाई॥हुमकि धरहिं धनु उठै नराई।
बल विवेक गरुवातम शोभा॥फिरहिं हारि धनुकर बसलोभा

दो० लज्जित है दशसहस नृप मिलिकरि किहिनि विचार॥
लावहु डारी तोरि धनु पुनिलखिय लेव पछार॥

चौ० दशसहस्र इकसंग भुवाला॥रहे उठाइ न नेकहु हाला॥
हसनयोगभे ते नृप कैसे॥ बिन बिराग संन्यासी जैसे॥
जे नृप रहैं चतुर मति धीरा॥तेनहिं जाइँ शरासन तीरा॥

गीतिका छं० नहिं जाइं ते धनु तीर देखि विदेह बदगह
वर हियो।सुरनाग नरनृप असुर आये सुनत जो हम प्रणकि-
यो॥ को कहै कररवन केर काहुन अवनि अल्प छुड़ायहू।
वर बिजै कीरति कुंवरि पावन हार ब्रह्म नजायहू॥तेहिते
सकल तजि आश निज निज भवन गवनव सर्वजू।भट हीन
महि कहि अवन कोई वीर ठानै गर्व्वजू॥जो बात यह जनत्यो
प्रथम तो नेम नहिं करतो मिदं।किन रह कुंवरि कुमारि कर्म
न धर्म त्यागत कोविदं॥

चौ० सुनत वचन पुरजन अकुलाने॥सकलसभा के नृपसकुचाने
मरसम वचन लषणके लागे॥ बोलि उठि रघुपति के आगे॥॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नाथ जनक अति अनुचित भाखी। काहू की कछु कानि न राखी।
तेहि ते जो नव आयसु पावों। तौ इनको बौरला देखावों॥
कंदुक इव कर गहि ब्रह्मंडा। धनुष समेत करहुं सत खंडा॥
नाथ सपथ जो अस नहिं करहूं। तौ फिरि हाथ न धनु सर धरहूं॥

दो॰ यहि प्रकार के बचन जब बोले लखन सरोष॥
डग मगानि महि कुधर सुनि पायो सुरमुनि तोष॥

चौ॰ जनमन मुदित जनक सकुचाने॥ सियसमेत पुरजन हरषाने।
नयनन प्रभु अनुजहि चुपवावा॥ सहित सनेह निकट बैठावा।
तब बोले ऋषि प्रभु ते बाता॥ अब उठि शिव धनु तोरहु ताता।
उठे तुरत गुरु आयसु पाई॥ सहज सुभाय चले शिरु नाई॥
हरषे सुनि मुनि जन प्रभु केरे॥ देखि बिदेह कही ऋषि तेरे॥
नाथ राम जो ते मन लोभा॥ तेहि ते भई अधिक तन शोभा।
धनु के करषण योग न आहीं॥ बरजि लेहु तेहि ते जनि जाहीं।
भूप करहु मति बिसमै कोई॥ इन ते कठिन को दंड न होई॥
रामै चितै जनक की रानी॥ बोली बिलखि सखिन ते बानी॥
देखो सखि यहि सभा मंझारा॥ बैठे हैं बुधिवन्त अपारा॥
यहि अवसर सब की मति खोई॥ उठि रघुपतिहि न बरजत कोई
गरुव कठोर कहां शिव चापा॥ हारे सकल भूप करि दापा॥
तेहि हित अब बालक पठावें। हंस सुवन कहु मेरु उठावें॥
सुनि बोली गुरु तिय तिन पाहीं॥ तेजवन्त लघु गने न जाहीं।
कहं पावक बन दहत प्रचंडा॥ कहं वामन नाप्यो ब्रह्मंडा
कहं रवि कहं तम तोम बिनाशै॥ कहं अंकुश कहं करि हि सवांरै
प्रणो मंत्र यक अक्षर जाके॥ बिधि हरि हर सुर सब बस ताके।
भृगुसुत च्यवन पेट ते काढ़िकै॥ असुर पुलो महि जारयो बढ़ि कै
बाल खिल्य अङ्गुष्ठ प्रमाना॥ सुरपति को मरद्यो तिन माना।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिमि कुंभज दधि पीन पिछानो॥ तेहि विधि तुम धनु रामहिं आनो॥
सुनि भरोस रानी मन आवा॥ तब तहँ लखि सीता दुख पावा॥
कमठ पृष्ठि सम धनुष कठोरा॥ कहँ श्यामल मृदुगात किशोरा॥
कथम जाइ धरिज उर आना॥ कहत तात प्रण दारुण ठाना॥
हे गणेश गिरिजा गिरिराई॥ राम भुजन पर होउ सहाई॥
हे पिनाक तव काज विशेषी॥ होउ हलुक रघुपति तन देखी॥

दो॰ जो हमरे मन क्रम वचन गति न अपर सुर केरि॥
तो करिहैं भगवान मोहिं रघुनन्दन की चेरि॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास रामसनेही कृत रामरंगभूमि आगमनो नाम सप्तमो अध्याय: ७॥

दो॰ वेदन मुख रघुनाथ मुनि करी निवेदन देह॥
वेदन मग भेदन करौं जो वेदन सो नेह॥

चौ॰ जो निज चेरिकरब प्रभु नाहीं॥ तो तजि तनु मिलिहों तुम पाहीं॥
यहि विधि सिय प्रण कीन्हें जबहीं॥ धनु दिशि प्रभु अवलोकेहु तबहीं॥
लषण लख्यो अब चाहत तोरा॥ दियें सजग करि कुधर कठोरा॥
आपु चापि महि व्योम सो हावा॥ तब रघुपति हर चाप उठावा॥
प्रथम सो शशि मंडल सम भयऊ॥ पुनि तेहि तीनि खंड है गयऊ॥
एक गयो नभ एक पताला॥ एक गिस्यो तेहि ठौर कराला॥
गहत उठावत तोरत माहीं॥ रहे सब ठाढ़ लखा केहु नाहीं॥
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू॥ पलमा करें विश्व चहु नासू॥
पाछे तासु भई धुनि घोरा॥ रही पूरि त्रिभुवन महं सोरा॥
गड़ गड़ात गिरि तरु महि खसेऊ॥ कमठ कोल अहि पति कसमसेऊ॥
दिग्गज गिरत भिरत नभ लागे॥ सुर विवान रवि चलत न आगे॥
चपिरो महि लखि सकल भुवारा॥ जनक हृदय सुख भयो अपारा॥
हरषे सब पुरजन नर नारी॥ सिय हिय भा अति आनंद भारी॥

जय जय जय कहि सुरसमुदाई ॥ बरषि सुमन दुंदुभी बजाई ॥
तब बिदेह रामहि सहप्यारा ॥ सिंहासन ऊपर बैठारा ॥ ॥
पुनि तहँ तनया बोलि पठाई ॥ सखिन समेत सभा महँ आई
पहिरे बसन बिभूषण नाना ॥ दहिने कर जय माल सोहाना
सिय शोभा लखि सकल भुवाला ॥ भये अपन यो रहित बिहाल
रामै चकित चितव बैदेही ॥ कहाँ गये मम परम सनेही ॥ ॥
रघुपति ढिग लेगईं सहेली ॥ देहु माल प्रीतम उर मेली ॥
प्रभु छबि लखि सिय कंकन माहीं ॥ रहीटेकि करटारत नाहीं ॥
धरि धीरज पुनि माल उठाई ॥ सकुच सहित हरि उर पहिराई
देखि देखि रघुपति उरमाला ॥ सुरनर मुनि सब भये निहाला
पुनि सिय कर गहि कंचन थारी ॥ हरष सहित आरती उतारी
सखिन कह्यो पति पद गहु बाला ॥ कुवत न पुनि मुनितिय कहाला

दो० पहिरे कर नवरतन प्रिय तिय भय धरतन हाथ ॥
प्रीति अलौकिक समुझि के मन बिहँसे रघुनाथ ॥

चौ० सखिन सहित पुनि चली निकेता ॥ तब सब भूपन कैभा चेता
कुटिल महीप स्वान ज्यों जागे ॥ जहँ तहँ गाल बजावन लागे ।
कोइ कहै सीतहि लेहु छिनाई ॥ कोइ कहै धरि मारो दोउ भाई
जो बिदेह बरजै कछु लेखा ॥ लेहु लूटि तिनहूँ कर देशा ॥
सुनि अनन्द करि सरिस मत कहीं ॥ सरिस बंधु भय बोलि न सकहीं
बोले तब नृप साधु सयाने ॥ समुझि बूझि मति होउ अयाने
जो लक्ष्मण मुनि पैहें कबहीं ॥ भये न रहो मनो तुम तबहीं ॥

दो० बारण ते बारण कहूं होइ जुवारण नाहिं ॥
लागी बाण बधत रिपु इन्हे सुवारण माहिं ॥
दुति दिमाक बल बांक पन मान सहित तवनाक ॥
कीन्ही नास अनासही दे के हाँक पिनाक ॥

चौ० तहिते तजि कटु बचन उछाऊ। देखो राम सिया कर ब्याहू
यहि बिबि बादे बिपुल नृपाला॥ अब सुनु परशुराम कर हाला
रोला छं० गाधि राजकी सुता रूप केसी अस नामा। भृगु
सुत रिचिक हजाइ अश्व देवरी लल्लामा। भृगु बोले बरु मांगु
उभे सुत दीजे देवा। यक हमका यक पितहि भले करि यज्ञ क
रेवा॥ हवि कर करि द्वै भाग कह्यो याको तुम खायो। होई सुत
द्विज प्रकृति मातुके नृपगुणगायो॥ देत भाग गा बदलि बहुरि
तपसी बर मांग्यो। सोई भये यमदग्नि जननिके कोशल राग्यो॥
तिन को सदल बशिष्ठ जेंवायो नंदनि बलते। गोमागत गे हा
रि भयो तापस तेहि चलते॥ तप प्रभाव ऋषि राव ऋषिन में प्र-
गट कहाये। रच्यो स्वर्ग मख हेत मांगि रामैं जे लाये॥ यमदग्नि
हि परसेन रेणुका सुता बिवाही। भे सुत सरमें बड़े परशु धर बि-
ष्णु कलाही॥ यक दिन तिनकी मातु चित्र सेने लखि मोही।
कह्यो पिता सिर काटु केहू नहिं काट्यो वोही॥ होउ सकल
जड़ रूप राम मुनि शीश निपाता। बरले चेतन बंधु करे ज्याई
पुनि माता॥ एक दिन सहस सुभाय हरी गो राम हत्यो तेहि॥
पितु अरि भो सुत तासु तेहीते बिपुल बारमहि बिन क्षत्रिन के
करी वरी बिप्रन कहं सोई। रहि महेंद्र गिरि मध्य सिंधु ते सु-
नत चलोई॥

चौ० इत नृप मूढ़न की गल मदरी॥ मिटन न पाई जब तक सगरी
तेहि अवसर आये भृगुनाथा॥ लीन्हें धनुसर परशा हाथा॥
गोर बर्ण शिर जटा बिशाला॥ अरुण नयन उर तुलसि कमाला
सह जहु चित वे जासु कि ओरा॥ सो जाने जिव लीन्हि क्षि मोरा॥
जहं तहं देखि देखि नृप भाजे॥ बहुतेन रूप नारि के साजे॥
बहुत समय बरशान शिरनावें॥ पिता सहित निज नाम बतावें।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जनक सहित सिय नायो शीशा॥ भृगुनन्दन लखि दीन असीशा॥
कौशिक ऋषि लै दोनों भाई। मुनिपद मेले नाम बताई॥
रामहि देखि रहे ठगि ऐसे॥ बोले पुनि अनजानत जैसे॥
जनकपुरी केहि हेत समाजा॥ सीय स्वयम्बर है महराजा॥
आगे धनुष टूट महि देखा॥ बोले तब करि क्रोध विशेषा
छं० कहु जड़ जनक बताउ धनुष कौने यह तोरा। सो तजि
सर्व समाज निकसि आवै मम ओरा॥ नाहि त नृप सब
मारि देश तब चौपट करिहौं। तीनि लोक में ढूँढि तासु क-
रनद संहरिहौं॥ सुनि बिलखे पुरनारि नर हर्षे कुटिल न
रेश सब। हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्री रघुनाथ तब॥
सुनहु नाथ सब साथ प्रबल भावी लखि परई। जो कृत तिनु
के कुलिस कुलिस तिनुका सम करई॥ कहाँ शंभु को दंड
कहाँ हम बालक बारे। होनहार कर दोस दोस शिर परयो
हमारे॥ यथा तार फल पाकिकै पतित होत खग नाम भव
जो भावै सो कीजिये सब प्रकार हम दास तव॥ सुनहु राम सो-
इ दास सदा जो सेवा ठानै। करै शत्रु कर काम ताहि को दास
बखानै॥ तेहि ते हर को दण्ड आजु जेहि खण्डा होई।
सहसबाहु सम समुझि तासु गति करिहौं सोई॥ भृगुपति
केर सुभाव सुनि भई सिया अति शोच बस। तब तिन ते मु-
सक्याइ कै बोले लषण कुमार अस॥ सुनहु विप्र पनबा-
ल बहुत धनुहीं हम तोरी। तबन किहेउ रिस कबहुं आजु
केहि हेतन थोरी॥ तव जननी कर पाप पाप त्रिपुरासुर के-
रा। अपर नृपन कर पाप चाप चित चेति सबेरा॥ रघुपति भु-
ज तीरथ विषे तजेसि प्राण गति हेत तेहि। बिन समुझे रघु-
नाथ पर करत रोष परि तोष नहिं॥ रे बालक मति मन्द मोहिं

नृत्रान सिखावत। सब धनुहिनि की सरिस शंभु को हराइ बतावत॥ सहित राम सिय तोहिं खेदि बन मांझि जुझै हीं। नृप दशरत्थे मारि सकल पुरजनहिं रोवैहीं॥ मरले भुतल तोपिके बहुरि तपैहीं तापबहु। जान कोहुं अस णिवसपथ तोन कहावौं नाम यहु॥ सुनि बोले पुनि लषण मृत्याकत भारत गाले। ईश चहै सो करै अब ते रोमन हाले॥ सब धनु एक समान कोन यामें अधिकाई॥ छुवँते टूट पुरान घुनन डारा रहै खाई॥ जोनहिं प्रिय यह नाम तो लीजे अपर धराइ मुनि। विप्रन की कछु कमी नहिं मुनि बोले भृगुनाथ पुनि॥ रे नृप बालक मंद देखु परसा को अोरा। जेहि ते बध्यि बहु भूप छीनि छोनी बरजोरा॥ को जाने केबार सौंपि विप्रन कहँ दीन्ही। तो को बालक समुझि ढील यतनी हम कीन्ही॥ अबते परखु प्रभाव मम यम जनि पितु रोवाउ निज नाहित डरिहौं मारि फिरि निपटहि जानु न मोहिं द्विज॥ हे मुनि कत हरबार देखावत मोहिं कुठारी। फूकनते तृण उड़त उड़न नहिं भूधर भारी॥ जो तुम होतेउ सुभट तदपि हमरे कुल माहीं। विप्र धेनु सुर साधु लरत इन ते कोइ नाहीं॥ बधे पाप हारे अयश सब विधि भला जो खाइ गम। अस विचारि मन मारि तव सहियत हैं कटु बचन हम॥ गाधि सुवन सुनि लेहु अहै या बालक खोटा। जान चहत यमलोक ललित परिहरि निज ओटा॥ तेहि ते लीजे बरजि कछुक कहि सुयश हमारा। नाहित सब के अछत आजु खल जाइ मारा॥ कौशिक समुझौ मन विषे मुनि जानत हैं बाल ये। असन विचारत जग तपनि हैं कालहु के काल ये॥ हँसि बोले पुनि लषण सुनहु मुनि सुयश तुम्हारा। तुम्हे अछत को कहै अहै अस को

सर नारा ॥ जोन एक सुख चुके करो दश बीस मजूरा । ओहि ने
सब सुनि लेइ सपदि है जाँवै पूरा ॥ सूर न बरगत सूरता का-
दर करत कलाप घर । समुझि परत मोहिं कछुक दिन की-
नि मरहुगी आप वर ॥ सुनि लक्ष्मण के बचन जनक मनमा-
हिं डेराहीं । पुरबासी है बिकल कहें आपुस के माहीं ॥ देखो
भूप किशोर गोर जेतनै है छोटा । तेतनै खोट लखात डेरत
नहिं मन कर मोटा ॥ भृगुनन्दन करि कोप तब परशु सुधारउ
हाथ गहि । बालक करु समर इत नाहित धरु धनुबाण म-
हि ॥ कह अनन्त यहि भाँति हमैं जो अपर प्रचारत । तौ फि-
रि के रख्यो समर चहे सो है मा हारत ॥ भृगु पर रिस करे गुरु
कर पद लोपे पुनि । पकृ पारि रोपे पाँव नीच के करम मिंद सु-
नि ॥ बोले बिश्वामित्र तब छमहु जानि अज्ञान जू । बालक
के गुण दोष होउ गणतन जे बुधिवान जू ॥ सुनि बोले भृगु
नाथ याहि जो अबतक राखा ॥ सो सब शील तुम्हार भार-
ते कौन न मारखा ॥ नाहित काटि कुठार उरिन होतेउं गुरु ते-
रे । तब मन में सुख होत मोन मिटते उर केरे ॥ गाधि सुवन म-
न में कह्यो मुनि सम अज्ञ न आन कोउ । इन्हें बिचारत खा-
ड मय अय मय जानत नाहिं दोउ ॥ कह्यो लषण पितु केर
करज जननी धरि दीन्ह्यो । गुरु कर ऋण रहिगयो चहत हम-
ते सो लीन्ह्यो ॥ गये बहुत दिन बीति ब्याजु बढ़िगा बहु भा-
ई । लीजे ब्योहर बोलि तुरत मैं देहुं गनाई ॥ चरहि सकल क-
रि अचर प्रभु अचरहि जो करि देत चर । तासु अनुज पर प-
रशु धर कैसे सकै चलाइ कर ॥ सुनो जनक सुख तनक अहै
बालक कटु बादी । मरन कहत मम हाथ चहत नहिं देखन
सादी ॥ बेगि करो दृग ओट चहो जो याहि बचावा । पाछे दिहेउ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

न होय काल याकर चलि आवा ॥ परम कठिन मम नाम सुनि गर्भ स्रवै नृप रवनि सब । ताहि जरावत जंतु जड़ सुनि बोले हँसि लषण तब ॥ सुनो बिप्र जो तुम्हें नीक उतसाह न लागे । तो लीजे दृग मूंदि देखि कोइ परै न आगे ॥ नाहित बन भजि जाहु बोलि पठवा नहिं काहू । जरत होय जो गात पैठि जल मांझ नहाहू ॥ बैदहि बोलि देखाइये ज्वर कर होइ न दोष उर । सुनि कोपे भृगुनाथ अति डरे नारि नर जानि फुर ॥ लखि बोले तब राम काम हौं नाथ बिगारा । मोपर कीजे रोष दोष बिन बालक बारा ॥ देखि धरे धनु बान कहिसि कटु जात सुभायन । जो औत्यो मुनि भेष परत प्रमुदित तव पायन ॥ हमरे कुल की रीति यह काल्हु ते नाहीं डरैं । क्षमहु चूक अनजान की संत सदा दाया करैं ॥ सुनि बोले भृगुनाथ राम रिस जीवे कैसे । अबहूं तक तव बंधु बिलोकत टक्कर जैसे ॥ जो न याहि फल दीन कीन करि रोस कहा हम । गर्भ स्रवैं नृप नारि निकट ठाढ़ो बैरी मम ॥ बहत न कर बर दहत तनु कटु कुठार कुरीठल भयो । किधौं बसी करुणा हिये की सुभाउ सो फिरि गयो ॥ सुनि बोले पुनि लषण नाथ मैं दास तुम्हारा । टूट धनुष नहिं जुरी किहे रिस बारहि बारा ॥ जो अति शै प्रिय होय कछुक तो करिय उपाई । बोलि गुणी द्वै चारि बहुरि दीजे जोर वाई ॥ बैठि जाहु करि कृपा अब पायन के रिपु होउ जनि । नयन तरेरे राम तब गे गुरु पहँ तजि कटु बकनि ॥ सुनि भृगुपति तब कोपि बचन रघुपति ते भाषा । छलशठ बिनवत मोहिं भुरै उत सोदर राखा ॥ करु मम सन्मुख समर तो तोहिं डरिहौं मारी । त्रिपटै बिप्र न जानु अहौं मैं रिपु मद हारी ॥ धनुष तोरि अह-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मित भई मानहुं जीत्यो जगत सब। सोनव अपकड़ मिटाइहौं मुनि बोले रघुनाथ तब॥ हेमुनि कहौ बिचारि बड़े जनि अब अधिक काई जो हम निदर खबिप्र अपर को शीश नवाई॥ परसत टूट पिनाक करब हम मद केहि हेता। स्वामिहि सेवक समर कहौ कस हेत निकेता॥ यह प्रभुता प्रभुवंश की अभै होय तुमते डरै। गूढ़ गिरा सुनि राम की भयो ज्ञान परसाधरै॥ तब बोले हे राम धनुष श्रीपति कर येहू। आकर्षहु गहिपानि मिटे जेहि मम संदेहू॥ छुवते चढ़्यो पिनाक देखि भृगुपति पछि ताने। मारहु मम गति कूट छूट सर सकल नसाने॥ जानिहु राम प्रभाउ तब पुलकि गात जुग जोरि कर। लागे मुनि अस्तुति करन जय रघुकुल मणि मान हर॥ जय जगदीश दयाल जयति सुर द्विज प्रति पालक जय मुनि मानस हंस जयति तम चर कुल घालक॥ जय शोभा सुख सिंधु जयति करुणा गुण आगर। जय बल बिपुल बितंस जयति रघुबंश उजागर॥ जय जग जावत जीव की तव पद प्रीति न होइ है। तावत संश्रित शोक ते कूटि न सुख में सोइ है॥

**दो०** जो मैं अन जाने कहा सो क्षमियो दोउ भ्रात॥
असकहि शीश नवाइ मुनि मुदित भयेबनजात॥
हरषे लखि पुर लोग सब बरषे खेचर फूल॥
बाजे बाजन विविधि विधि भाजे प्रति अनकूल॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत परसुरामबन यात्रा बर्णनो नाम अष्टमो ध्यायः॥

**दो०** सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बर्णो मानस मन कछुक नाटक चरित बखानि॥

तब बिदेह मुनिते कह्यो होइ जो आयसु नाथ॥
करों सो मुनि कह गाधि सुत भयो ब्याहु धनुहाथ॥

हरिगीतिका छं० भयो ब्याहु यद्यपि साथ धनुके तदपि दूत पठाइ कै। लीजे दशरथहि बोलि सहित बरात ब्याहें आइकै॥ भल देव कहि लिखि भेद दीन्ह्यों पत्र ले धावन चले। कार्तिक बदी श्रुति पद्म दिन लिय बोलि कारीगर भले॥ तिन ते कह्यो पुर सकल साजहु सुभग भवन बितान जू। शिर राखि मन अभिलाष लागे करण गुण निदान जू॥ बिरचे कनक मय रुचिर खंभ अचंभ मरु मणि पालजू। तिमि घौरि धनि करि बोलि लोहित सुमल मंजु लखवान जू॥ सुरचित्र मित्र सरोज धरि द्रुम्य कलि अलि धेनु जू। असित नारवन्दन वार मुकता हार हरित सुवेनु जू॥ चहुँ ओर दीप अपार कुलि करि गुलिक चौक पुरायहू। ध्वज कलस चामर छत्र सौरभ परिस तरण तुरायहू॥

दो० जिमि सर गत सोपारण मणि जटित लसे दिशि चारि॥
विधिवत कीन बितान तिमि निरखत हित नरनारि॥

चौ० कहँतक कहौं तहाँ की साजा॥ जहँ दुलहिन दूलह सियरामा
नृप गृह सरिस सबन निज साजे॥ शोभा निरखि देवपति लाजे
बसन लसत जहँ कपट सरूपा॥ तहँकर बिभो कि जाइ निरूपा
कौशल नगर सकल नरनारी॥ राम लखण बिन रहे दुखारी
कौशिल्यादि कहें नृपरानी॥ वीर जननि सुत बादि बियानी
राजहु के रहे प्रिय अधिकारी॥ मुनि लेगयो ठगो रिसि डारी॥
तबते मिली नखबरि यथारथ॥ दलन रोव दुखप्रद परमारथ
यकुती बन मुनि अनुगण लीन्हे॥ ऋषि प्रसन्न हित हम हुन दीन्हें
केहि पठई जो खबरि लयावै। भे दिन बहु अब कछु न भावै

तेहि छन दूत अवध पुर आये। फाटक दिन मुनि नृपनिकट बोलाये
करि प्रणाम पाती तिन दीनी ॥ लागे पढ़न प्रेमरस भीनी ॥ ॥
चौबोला छं॰ स्वस्ति श्री श्री पत्री सुभस्थानजी। कोशल
पुर धुर पहुंचे नृपकर कानजी॥ लिखी विदेह नगरते विश्वा-
मित्र की। मिलि बाचने अशीस साहित सुर पित्र की॥ कुश-
ल क्षेम तव तनै अपहें मम साथ जू। तिन हूं केर प्रणाम चर-
ण धरि माथ जू॥ रौरे पुण्य प्रताप अचल मम मख करी। ता-
रिनि पदरज डारि अहिल्या अघ भरी॥ धनुष यज्ञ पुरजन-
क जुरे नृप भूरिजू। गज इव पंकज रामसो डार्‍यो तोरिजू॥
सीताहू जयमाल तिन्हें पहिराय हू। भृगुपति करि अभि वा-
दन बनहि सिधायहू॥ अवशुभ साजि बरात आइ सुत
परणाये। सुनि नृप मुद यश लह्यो सो कैसे बरणाये॥ जि-
मि काहू के क्षेत्र क्षीण सब ले लये। ह्वै प्रसन्न तिन सहित
ग्राम के यो दये॥ धरि धीरज पुनि कह्यो जनक कैसे लखे।
महाराज कहुं छिपत कुमुद पंकज सखे॥ सुनत भरत रिपु
दवन दौरि आये तहां। पूछत प्रिय दोउ बंधु कुशल युत हैं
कहां॥ तब भूपति पत्रिका दई सो बांचेऊ। भये प्रफुल्लित
गात अधिक सुख माचेऊ॥ लागे निछावरि देन मुकर का-
नन दये। लखि समोद नृप सचिव सहित गुरु पहं गये॥

दो॰ दीन पत्रिका बन्दि पद बांची मुनि सह मोद॥
कह्यो कि सुकृती नरन कहं अवनि अम्ब की गोद॥
जिमि सब सरिता सिंधु में जाहिं यदपि अनयास॥
तिमि सुख सम्पति आवहीं धर्म वान के पास॥
तुम सम सुकृती पुरुष को भयो अपर तनु धारि॥
राम सरिस सुत जासु युग कौशिल्या सी नारि॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सपदि सजाइ बरात वर चलहु भले कहि तत्र ॥
पुनि आये रनिवास सब बोलि सुनायो पत्र ॥
भईं मुदित रानी सकल दीन्हिनि बिप्रन दान ॥
पुरबासिन के हरष सुख को करि सकै बखान ॥

**हरिगीतिका छं०** करि सकै कौन बखान सरिस बेवान गृह सबहिन सजे । रचना अलौकिक देखि निज चित लेखि चतुरानन लजे ॥ नृपधाम अति अभिराम तामधि बन्यो दिव्य बितान जू । बिधुबदनि शोभा सदनि सुन्दरि करहिं मङ्गल गान जू ॥ कतहूँ पढ़ैं बटु बेद कतहूँ बन्दि गरा बिरदावली । कतहूँ टिके अवनीप आय नेवत नृत्य करावली ॥ देखत फिरैं पुर लोग बरदन योग सुर मुनि गात को । तब अवधनाथ बोलाइ सचिवन कह्यौ सज्यौ बरात को ॥

**त्रिभंगी छं०** दीन्ह्यो जब आयसु मंत्रिन कायसु धाइ रजायसु सब धाये । लागे हरषातहि सजन बरा तहि बरणि न जातहि जो ल्याये ॥ कुंजर बहु कारे बड़ मतवारे परे वोहारे लकलक्के । गज घंट जो बाजैं जनु घन गाजैं अति छबि छाजैं धकधक्के ॥ कंचन की ढारी कसी अँबारी मणि मय सारी पचरंगी । बैठे तिन माहीं नृप हरषाहीं देखि लजाहीं निरअंगी ॥ बर बाजि अनेका एक ते एका चलनि बिबेका जिन माहीं । करि कोइ कारे सेत ललारे बिबिधि सँवारे ठहनाहीं ॥ छम छम्म छमक्कें कुवन चमक्कें फुरकि धमक्कें पग भूसें । भरतादि नवीले कुँवर छबीले धनुसर कीन्हे चढ़ि चूसें ॥ गज रथ बहुतेरे अपरबन केरे वृषभ घनेरे अति सोहैं । सुख पाल अपारा सुतर सवारा परे वोहारा मन मोहैं ॥ भाले बरदारे अंडिन वारे अग रौन्त धारे फुलवाई । लीन्हे बहु ताज़ी आतश

बाजी बिपुल समाजी गुन गाई ॥ सुंदर चौपाला एक बिशा-
ला जलज प्रवाला सोपान भयो। ता मध्य बिराजै बालक छा-
जै चमर ढ़राजै इन उनयो ॥ बाजैं बहु बाजन बिबिध अ-
वाजन आगिल नाजन पै धमकै। बाँधे हथियारा बीर अ-
पारा तुपक तयारा असि चमकै ॥ पकवान मिठाई रुचिर
बनाई सकट लदाई निज संगा। चौपे समि याना तंबू नाना
छकरन पाना अपरभंगा ॥ रेसमी गलीचा दीरघ बीचा कुक-
ड़न बीचा लदवाये। कंचन के थैला अतर भरैला सुमन
सजैला बँधवाये ॥ धन बिपुल सँदूखन भरे बिभूषन बसन
अदूषन अति नीके। अप्सरा अनेका नृत्य करैं का भांड भे-
डैका ढुढ़ जीके ॥ यहि भाँति बराता सजि भै ताता चली स-
माता नहि मगमें। सुनि सुनि नर धावहिं देखन आवहिं थी-
स नवावैं नृप मगमें ॥ भये सगुन अनंता हित भगवंता सुर
मुनि संता तिन माहीं। गुरु सहित नरेशा मनहुं सुरेशा ल-
सत बिशेषा लघु नाहीं ॥

**कबित्त** करन बरात को पयान नरनाह जब सुरगण आस-
मान देखत बहार हैं। डेढ़ कोटि हैं मतङ्ग औ तुरंग तीस कोटि
पालकी पचीस कोटि पैदर अपार हैं ॥ भार बरदार सवा सात
कोटि ऊंट जाति सेवक समूह पाँच कोटि बाज दार हैं। रथ
सवा तीन कोटि दशरथ राय जीके साठि लाख नौ हजार साँड़िया
सवार हैं ॥

**दो०** जहं तहं करत निवास मग पहुंचे पुर मिथिलेश ॥
लेन चले अगवान सुनि साजि समाज सुवेश ॥
कनक कलस को परात भरि भोजन विविध प्रकार ॥
दधि चूरा भूषण बसन लैलै चले कहार ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० बरबरात अगवानिन देखी॥ इतउत भये अनन्द बिशेखी
हरषि परस्पर भे एक मेला॥ पुनि कछु दूरि चले बग मेला॥
जनु पश्चिम कर सागर भारी॥ आवत ताहि चला लै टारी॥
सकल सोज नृप आगे कीन्ही॥ लीन्ही हरषि याचकन दीन्ही
पूजन करि सब भाँति सोहावा॥ जनवासे मह आनि टिकावा
सुनि सिय सिद्धी सकल बोलाई॥ भूप पहुनई करन पठाई॥
सुर पुर के जे भोग बिलासा॥ दिये पूरि तिन सब के पासा॥
सिय प्रभुता रामैं लखि पाई॥ अपर जनक की करैं बड़ाई॥
पितु आगमन जानि दोउ भाई॥ मुनिवर संग चले हरखाई॥
आये जहँ जन वासे भूपा॥ चले बिलोकि नृपति जनु कूपा
कीन्हि प्रणाम मुनि पद धरि शीशा॥ नृपहिं गाधि सुत दीनि अशीशा
पुनि पितु चरण परे दोउ भाई॥ मुदित भूप उर लिये लगाई।
विप्रन सहित बशिष्ठे बन्दे॥ पाइ अशीश भये आनन्दे॥
भरत सबंधु मिले सुख मानी॥ सकल समाज भेंटि हरखानी
कुशल प्रश्न कहि तिष्ठत भयऊ॥ सहित देव जनु मन्दिर भयऊ
नाक नटी नृत्तहि करि गाना॥ कौतुक करहिं बिदूषक नाना
भूप निकट सोहैं सुत चारी॥ मुदित भये लखि पुर नर नारी
बिबिके बेद भये कोइ कहई॥ अपर बंदे अब आये अहईं।
दहिने दिशिहैं लक्ष्मण रामा॥ बाँये भरत शत्रुहन नामा।
धन्य भूप भल देव मनाये॥ जो सुत चारि मनोहर पाये॥
धन्य बिदेह सुनैना दोऊ॥ धन्य सुता सुत हम सब कोऊ
जित्त सिय सहित सुवन चहुँ हेरे॥ पुनि देखब बिवाह इनकेरे

दो० वीन तालिस दिन लगन ते आई प्रथम बरात॥
तेहित पुर आनन्द अति सकल लोग हरषात॥

चौ० बिधि ते विनय करैं यहि भांती॥ देहु बढ़ाइ दिवस अरु राती

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गये बीतिबासर यहि भावा ।। लगन केर दिन जादिन आवा
हिम ऋतु मार्ग मास सुखमूला ।। ग्रह तिथि नखत योग अनुकूला
लगन शोधि विधि नारद हाथा ।। पठै दीनि जहँ तिरहुत नाथा ।
गर्गी जनक के गनिकन खोली ।। हरषि कही तिन अहै अमोली
सुनि बिदेह बोले सुखसाई ।। अवध पतिहि लै आवो जाई
सतानन्द तब साजि समाजा ।। आये जहँ जनवासे राजा ।।
कोश लेश कर विभौ बिलोका ।। अति लघु लाग तिन्हें सुरलोका
भयो समय पग धरिये नाथा ।। साजि समाज चले तिन साथा
लखि सुर सकल सुमन बरषाये ।। चढ़ि चढ़ि जान जनकपुर आये
पुर शोभा लखि देव लोभाने ।। निज निज लोक सबन लघु जाने
विधिहि भयो अचरज अतिभारी ।। निज करनी नहिं कतहुँ निहारी
शंभु कह्यो जनि भर्म भुलाहू ।। देखहु राम सिया कर ब्याहू ।।
जासु किये हम तुम सब कोई ।। यहि पुर आजु विराजत सोई ।
सुनि सुवचनु सुख लह्यो बिधाता ।। आगे देख दशरथै जाता
सबन बीच नृप सोहन कैसे ।। अमरन मध्य अमर पति जैसे
चढ़े तुङ्ग तं वरम माहीं । विविकर कनक लुटावत जाहीं
चौपाले मधि रघुपति सोहे ।। विधि हरि हर सुर देखि विमोहे
बिशु विधिहि विधि भवे सराहें ।। बसु दृग लखि [illegible] सरसु निकाहें
बड़ भागी भे चखु हजारा ।। अस कहि मिले बरात मंझारा ।
रामहि देखि नगर नर नारी ।। करहिं आरती हाथ पसारी ।।
आवत जानि बरात सुनैना ।। लागी साज सजावन ऐना ।।
विविध बधू धरि कपट सरूपा ।। मिली मादिर निवासे भूपा ।
देखि सबन सन मान्यौ रानी ।। चीन्हे बिना प्राण सम जानी ।
समै समुझि सब सखिन समेता ।। चली मुदित बरपरछन हेता ।
गावें गीत मनोहर नाना ।। सुनि छूटें तपसिन के ध्याना ।।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दुलहे देखि अधिक हरषानी ॥ भई प्रेम बस प्रफुलित रानी ॥
लोक वेद विधि करि सुखपाई ॥ अर्घ देत नर मंडप लाई ॥
प्रीति सहित आसन बैठारी ॥ कनक थार आरती उतारी ॥ ॥
मणि मय मांडव छबि यहि भांती ॥ देखि परी तहं अगणित बाती
भूषण बसन निछावरि करहीं ॥ याचक पाइ मोद उर भरहीं ।
मिले मुदित मन समधी दोऊ ॥ सो उपमा कहि सकै न कोऊ
देत पावड़े अर्घ सोहाये ॥ सादर जनक मंडपै ल्याये ॥ ॥
आसन दीन सबहि सनमानी ॥ पूजे विप्र वृन्द मुनि ज्ञानी ॥
सहित बरात दशरथै पूजा ॥ मानि ईश सम भाव न दूजा ॥
रामचंद्र मुख चन्द सोहाना ॥ चितवैं सकल चकोर समाना
समै समुझि बोले ऋषि राई ॥ बेगि कुंवरि अब आनहुं जाई
मुनि उपरोहित की बर बानी ॥ चली सिये लै सखी सयानी
पद कमलनि धुनि नाद छाई ॥ मनहुं मदन मोहनी सोहाई ।
चंद्र मुखी तड़ित इव मृगनयनी ॥ सकल मनोहर कोकिल बयनी
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी ॥ जग दंबिका रूप गुण खानी
आवत देखि बरातिन सीता ॥ कीन मनहिं मन प्रणाम पुनीता
सुतन सहित दशरथ हरषाने ॥ बरषि सुमन सुर हने निशाने
पहुंची जब मंडप बैदेही ॥ लागे शांति पढ़न मुनि नेही ॥
कुल गुरु गौरि गणेश पुजाये ॥ प्रगट लेन पूजा सुर आये
सुर पुजाइ शुभ आसन दीन्ह्यो ॥ पुनि मुनि बोलि सुनैने लीन्ह्यो
जनक सव्य दिशि सोहत सोई ॥ मनहुं सुकृति छबि मूरति जोई

दो० कनक कलस कोपर रुचिर भरि पियूष निज पानि ॥
लागे धोवन बर चरण नृप रानी सुख मानि ॥
जे पद बसत महेश उर ध्यावत मुनि जन देर ॥
ते पद पदुम परवारहीं धन्य भाग नृप केर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० करतल जोरि कुँवरि बर दोऊ॥ शाखोच्चार कीन मुनि सोऊ॥
पानि ग्रहण तेहि पाछे भयऊ। कन्यादान भूप बर दयऊ॥
करि सुहोम गठि बंधन रागी। प्रमुदित होन भाँवरें लागी॥
मणि मय थंभ रही छबि पूरी। निरखत मनहु मदन रति भूरी॥
भये छकित सब देखन हारे। फेरा फेरि करधिन बैठारे॥
राम सिया सिर सेंदुर दीन्हा॥ मनहुं उरग शशि भूषित कीन्हा॥
पुनि दोउ एक आसन बैठारी। देखि लोग सब भये सुखारी॥
कहँ रघुनाथ तहाँ की शोभा॥ बरणि सकै जग अस कबि को भा॥
दो० बनी बनी जाकी जनी लगत जनी दृषि केरि॥
बनो बनी जाको जनी कृष्णा जनी जनु हेरि॥
चौ० तब बिदेह मुनि आयसु पाई॥ लीन्ही तीनिहुं कुँवरि बोलाई॥
नाम मंडवी गुण मय चीन्ही॥ सो नृप ब्याहि भरत कहँ दीन्ही॥
परम सुशील उरमिला नामा॥ सो लक्ष्मणहिं बरी अभिरामा॥
श्रुति कीरति छबि जाइ न बरणी॥ रिपुसूदनहिं भूप सो परणी॥
राम सरिस भे सकल बिवाहा॥ त्रिभुवन में भरि रहा उछाहा॥
सबर सुन्दरी राजहिं कैसे॥ जिय युत बिभु न अवस्या जैसे॥
कुण्डलिया बपुष बितान बिचित्र मधि जीव अवध अवधेश। जाग्रत अवस्था श्रुति सुयश बिभु विश्वक रिपुदेश॥ बिभु विश्वक रिपुदेश स्वपन मंडवी विमल मति। बिभु-तेजैक सो भरत उरमिला उदित सुखापति॥ उदित सुखापति केर बिभु प्राग कै लक्ष्मण अदुख। तुरी सिया बिभु राम जी अन्तर यामी दिवि बपुख॥
चौ० कुँवरि कुँवर अन रूप निहारी॥ मुदित भये सुर नर मुनि नारी॥
अवध राज लखि अति मन भाये॥ क्रियन सहित जनु चहुं फल पाये॥
दो० अर्थ क्रिया आधीन ता धर्म किश्रद्धा शक्ति॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कामक्रिया करतव्यता मोक्ष के केवल भक्ति॥
श्रुति कीरति रिपुहन भरत भरत मंडवी काम॥
धर्म धरणीधर उर मिला मोक्ष जानुकी राम॥
नृप मणि दायजु दीन अति हय गय रथ हथियार॥
भूषण पट गो रत्तन गण दासी दास अपार॥
लीन अवधपति मुदित मन दीन जाहि जो आस॥
उबरि रह्यो याचकन ते सो आवा जनवास॥
तब बिदेह तहँ सबन की बहु बिधि बिनती कीन्ह॥
सुनि सन मान्यो अवधपति मुनिन आशिष दीन्ह॥

चौ० पुनि दशरथ जनवास सिधाये॥ देवन देखि सुमन बरषाये॥
तब बनितन मुनि आयसु पाई॥ लरिकन कोहबर चलीं लवाई॥
गौर श्याम छबि अमित अनंगा॥ ब्याह साज सोहैं सब अंगा॥
कमल नयन चितवत चित चोरैं॥ देखि देखि युवती तृण तोरैं॥
कोहबर लाइ सकल अनुरागी॥ लौकिक रीति करन तहँ लागी॥
प्रभुइ उमा लहकवरि सिखावैं॥ सीतै श्री शारदा बतावैं॥
निजकर मणि बहु रूप निहारी॥ प्रेम बिबस सिय सकल नरारी॥
हास बिलास भयो बहु भांती॥ पुनि आये जहँ सकल बराती॥
बहुरि रसोई भई तयारा॥ बोलि पठाये जनक भुवारा॥
परत पावड़े मंदिर आये॥ चरण छालि चौकिन बैठाये॥
सुतन सहित दशरथ पग धोये॥ आसन देइ सुवारन जोये॥
लागे ते परसन पनवारा॥ षटरस ब्यञ्जन विविध प्रकारा॥
नाना विधि पकवान मिठाई॥ दधि गोरस फल फूल खटाई॥
बरणि न जात देखि अनुरागे॥ पंच कौर करि जेंवन लागे॥
वधू बिलोकि लगीं गरि यादन॥ सुनहु राम दूलह मनभावन॥

दो० बने फिरत जो आपके गुरु ही विश्वामित्र॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तौ कहि विधि रघुनाथ तुम कारज करौ पवित्र॥
जनक सुता के जनक को जनक कहहु सब आहु॥
कौन कौन के जनक ये याको करो निबाहु॥

चौ॰ सुनियत अज के सुत दशस्यन्दन॥ दशस्यन्दन के भे जनन्दन
यह अवरेव परी केहि भांती॥ समुझि परत अस मम कल नराती।
मुदित होइ सब सुनि इमि गारी॥ अमुके परसौं कहैं पुकारी।
यहि विधि सब हित भोजन कीन्हा॥ आदर सहित आचमन लीन्हा
देइ पान पूजे मिथिलेशा॥ जनवासे आये अवधेशा॥

इति श्री विश्राम सागर सद्धमन आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास-
रामसनेही कृत रामचन्द्र विवाह वर्णनो नाम नवमो ऽध्यायः॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं कलेऊ मंतक छुक कोशल खंड बखानि॥

चौ॰ निशा निरखि सब सोवन लागे॥ बड़ प्रात कोशलपति जागे
प्रात क्रिया करि आयसु पाई॥ चारि लाख बर धेनु मंगाई॥
विप्रन का दीन्हों नरनाहा॥ गज रथ बाजि जाहि जेहि चाहा
कीन्हे याचक सकल सुखारी॥ यथा अभ्र हैं सेवन वारी॥
तेहि अवसर नृप मंत्री आये॥ करन कलेवा भूप बोलाये॥
उठे कुंवर पितु आयसु पाई॥ चढ़ि चढ़ि घोड़न चले सिधाई
कोइ अरबी जंगली पहारी॥ चिर चंचक चंपा खंधारी।
कोइ कबली अंबोज कोइ कच्छी॥ बोत मसमना मुंजी लच्छी
कोइ किसमी भुतार फुलवाई॥ गरी गुराढ जुमिल दरिआई
श्याम करण कुम्मैद पठानी॥ टांघन तुरकी पच कल्यानी।
सुमकी सबज इराकी पोये॥ पीन नवीन विशाल अदोषे।
सकल अलंकृत चलनि सुठीका॥ सबते तुरंग राम कर नीका
विश्व विमोहन हेतु विचारयो॥ बाजि भेष जनु मनसिज धारयो॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पहिरे पट भूषण तन माहीं ॥ चपल तुरंग नचावत जाहीं ॥
मनहुं मेघ युत उडगण धामा ॥ जात नचावत धाय अभिरामा ॥
देखें जहं तहं लोग लुगाई ॥ कहें जात हैं चारो भाई ॥ ॥
पहुंचे जब सब जनक अगारे ॥ कनक पलंग रानिन बैठारे ॥
बहु विधि के भोजन धरि आगे ॥ नेग पाइ निज जेवन लागे ॥
अचवन करि बैठे तिन पासा ॥ लगीं करन तिय हास बिलासा ॥
एक सखी बोली तुव माई ॥ केहि हित सुत जनमें हु दिखाई ॥
कह्यो राम कत बूझत येहू ॥ निकट नरेश परीक्षा लेहू ॥
अपर बसन कर ख्यो निज ओरा ॥ मिले चोर तुम सब चित चोरा ॥
तेहि क्षण लक्ष्मी निधि की नारी ॥ सिद्धि नाम लै सखिन सिधारी ॥
सहजानन्दनि मदन मंजरी ॥ चंद्र कला कमलाक्ष सुन्दरी ॥
चन्द्र मुखी चंद्रावति योगा ॥ विमला उतकर्षिनि प्रियभोगा ॥
चित्रा चित रेखा ईशाना ॥ कृपा कांचनी सत्या ज्ञाना ॥ ॥
सुदर्शना चंद्रानन नि हंसी ॥ सुधा मुखी मुख मंजु प्रशंसी ॥
माधुर्यो उज्वल विम्बाक्षी ॥ चरुशिला अति शोला साक्षी ॥
औरो अली अनेक अनूपा ॥ सहित सिद्धि आईं अलभूपा ॥
रघुपति छवि अवलोकि जुड़ानी ॥ बोली विहंसि हास की खनी ॥
सुनियत लाल काम अति नीका ॥ तब अंबनि कीह्यो तेहि पीका ॥
हम चित चोरि सासु पहं आये ॥ तुमही देखत बदन दुराये ॥
बोली सिद्धि रावरे भगनी ॥ अस किमि बरी हरी नत मगनी ॥
कह्यो लषण जस लिख्यो लिलारा ॥ तैसे होत टरत नहिं टारा ॥
हम नरेश सुत जनक योगीशा ॥ भयो व्याह भावी बस ईशा ॥
कबते राजकुमार क हाये ॥ पाल्यो अरथे अरथे उपजाये ॥
हलते भल तापस सब दिनके ॥ लेबो लाल हम हुं शिषि तिनके ॥
बोली कलावती सिधि भगनी ॥ लक्ष्मी निधि की सारि सुलगनी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० एक कुमार पुनि मुनिन सँग रहियहि रस की बात॥
सिख्यो कहाँ कराधि तियन पहँ की शारक हिगतात॥
कह्यो शत्रुहन सत्य परि तुम हँ कुमारी आहु॥
तुम कहुँ पायो ज्ञान यह की कोइ करि असनाहु॥

चौ० बोली चन्द्र कला कर टेकी॥तुम साधुन के बंधु विवेकी
गौरे को रस हासन चाही॥परस्वारथी संत गति आही॥
हमहू सुनि अस नेह तुम्हारा॥दरशा हेत हारे पग धारा॥
गइउ चीन्हि बिन कहे पतीजे॥तन धन ते सेवा अब कीजे॥
सर्प डसित को जो नहिं भावै॥लगै दोष नत मंत्र विसारै॥
यहि विधि बदि बातै सुख लेवे॥निज निज रुचि सबरो मैसेवे
कह्यो सिद्धि हम नारि अपावन॥पर एक गुणाहु दीन्ह जग जावन
जेहि ते नेह करै अनुरागी॥सर्व सुजाहु सकै नहिं त्यागी।
तिमि तुम ते ठानी हम प्रीती॥करो निबाह समुझि निज रीती
कह प्रभु मोहि सनेह समाना॥प्रियन कछू यह जान जहाना
तुम प्रिय प्राण सरिस मोहि मांसे॥माँगि बिदा गवने जन वासे
बोली बहुरि जीति हम लीन्हा॥दिहल फेरि सुख हम तजि दीन्हा
यहि विधि बातन सबन हराई॥जन वासे आये सब भाई॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत राम विवाह कलेऊ करन विधि बरनिनो नाम दश्मो ऽध्यायः १०॥

दो० राम रमत जो सबन में सब जहँ रमै सो राम॥
रामहि लखि रघुनाथ जन लहत सब वाञ्छित काम॥

चौ० नित नव आदर करै नरेशा॥भूपै चलन देत नहिं देशा॥
कौशिक कही जनक सुनि लीजै॥बहु दिन भये बिदा अब कीजे
भले नाथ कहि सभा मँझारी॥जहँ तहँ लागी होन तयारी॥

सुनि निछे पुरजन अकुलाने ॥ जिमि चकवाक जात रवि जाने
जनक विविधि मेवा पकवाना ॥ दीन्हे पठै पंथ अस्थाना ॥
बीस सहस सेंदुर सजवाये ॥ स्यंदन सहस पचीस सोहाये ।
तुंग लाख सुरभी युग लाखा ॥ महिषी लक्ष सवाई भाखा ।
कनक बसन मणि भूषण भूरी ॥ अनगन भाजन सिविका रूरी
औरौ बस्तु अनेक प्रकारा ॥ प्रथम पठाई अवध मंझारा ॥
तब विदेह गुरु सचिव बोलाई ॥ कह्यो लयावो भूपहि जाई ।
सुनि मंत्री तित आइ सुनायो ॥ विदा हेत मिथिलेश बोलायो
दशरथ सुनि ले दूलह संगा ॥ तथा बरात साजि बहु रंगा ॥ ॥
राजभवन गवने लखि लोगा ॥ हरष शोच बस भये वियोगा
एक एक ते कहैं विशेषी ॥ आतुलेहु भरि दृग छबि देखी
भूरि भाग विधि दरशन दीन्हें ॥ सो अब जात तयारी कीन्हें ।
भूप भवन जब पहुंचे आई ॥ बैठारे सबहिन सचु पाई ॥ ॥
विनती भई परसपर नाना ॥ मम समधी तिन सम को आना
जनक विदा हित सौज मंगाये ॥ देखि सभा सब अचरज पाये
मणिगण मोल अनेक अपारा ॥ कनक गनै को केतने भारा
भूषण सुभग एक ते एका ॥ भरे मंजूषा चित्र अनेका ॥ ॥
बसन रत्न पट पाट अपारे ॥ परम रम्य अतिशै गुण भारे ।
भाजन मणि हाटक रजु केरे ॥ रसति विचित्र बहु भांति घनेरे ।
मेवा विर उत्तम पकवाना ॥ धरे कूट इव सुख प्रद नाना ॥ ॥
शस्त्र सकल स्यंदन गज पांती ॥ सिविका सुतर सुहैं सब जाती
औरौ बस्तु भांति बहु राखी ॥ हाथ जोरि अस्तुति तब भाखी ।
हे [illegible] विमल यश केतू ॥ सकल काम परि पूरण सेतू ॥
मैं [illegible] यह सौज देखाई ॥ जिमि कोइ स्वर्ण सुमेरहि लाई
[illegible] जे अहई ॥ तिन की रीति बेद इमि कहई ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दास फूल फल जल जो देहीं॥ प्रभु नेहि अधिक प्रीति से लेहीं
अस बिचारि मोहिं दृढ़ विश्वासा॥ पुजिहैं मम मन की तुम आसा
सुनि नरेश निज कर सिर धारी॥ गद गद हैं अस गिरा उचारी
करिय कहा मिथिलेश बड़ाई॥ जिन घर हमहु प्रतिष्ठा पाई॥
निज सम सब बिधि मोहि करि लीन्हो॥ उभै लोक अनवधि यश दीन्हो॥
यामें अचरज अहै न कोई॥ मलय समीप कुतरु हरि होई॥
जो गुरु लघु लघु सुता न नेवारी॥ सोउ छोट कछु होत न भारी॥
मिले परस्पर कंठ लगाई॥ जयजय धन्य धन्य धुनि छाई॥
यथा तथा विधि बिबि विलगाने॥ बरषे सुमन देव सुख माने॥
तब बिदेह लहि आनँद भोरे॥ निज कर सब दूल्ह सिंगारे॥
मनि भूषण पट परम सोहाये॥ नख सिख कवर बिचित्र चाये
यद्यपि सब अन प्राकृत सामा॥ तदपि लगत लघु तन अभिरामा
पुनि नरेश प्रभु पद सह गहेऊ॥ नर तन धरे केर फल लहेऊ॥
मन में कहत लोग सुत चाहे॥ कन्या का कछु कमती आहे॥
जो जानुकी न होत हमारे॥ रामचन्द्र किमि होत्त द्वारे॥ ॥
विप्र बेद धुनि करि हरषाने॥ दानमान दै नृप मन माने॥
सकल बराती तब पहिराये॥ यथा योग्य जो जेहि जस भाये
बंदीजन गन गुणी अपारा॥ रुचि लखि दान दीन अनपारा
लेत हैं सकल अनूप सोहाहीं॥ लोकपाल लखि जिन्हें लजाहीं
रघुपति छबि माधुरी अनन्ता॥ रहे देखि सुर नर मुनि सन्ता
बहुरि सुने ना धाम हँकारे॥ मित्र मंडली सहित पधारे॥
रानिन देखि लह्यो सुख भारा॥ बैठारे सब करि सतकारा॥
दिव्य जलज मनि कनका भरना ॥ बसन रम्य उत्तम बर बरना॥
नख शिख दूलह सकल सजाये॥ सखन समेत बिचित्र सोहाये
नारि वृन्द जिमि शशिहि चकोरी॥ निरखहिं प्रभु छबि पलक न मोरी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिया मातु कर जोरि रसाला। कह्यो वत्स तुम होउ कृपाला
सुनिये जीवन प्राण अधारा। बिनती यह मम बारहिं बारा
भूप सचिव हम सब चर दासी। जाति बंधु जहँ तक पुर बासी
सबहिं प्राण प्रिय सुता हमारी। कबहूँ लागि न ताति बयारी
दृग पुतरी इव सब दिन पाली। निरखत रहिहु यथा मनि व्याली
तुमरे कर निबाहु तिन केरा। करहु सो मोद लहै मन मेरा॥
अस कहि कुँवर लगाये छाती। कीन्हि निछावरि नाना भाँती
धरि चरण समुझाइ सुभाये। पाइ असीश मंडपे आये॥
तब नृप विदा किये सिरनाई। जनवासे आये हरषाई॥ ॥

दो० आतहु पुर रानी सकल बिकल नारि लै संग॥
मणिपट दिव्य अमाप बर सजे सुतन के अंग॥
नख शिख साजि सरूप सखि लखि वारैं तन प्राण॥
चलन निकट गुनि लहैं दुख कोटिन मरण समान॥

सो० सासु ससुर गुरु देव। भूसुर सन्त अनन्त हित॥
करेहु सुपति की सेव। अस कहि लिहिनि लगाइ उर॥

चौ० जे मति धीर नारि वय भोरी। तिन मन अति कठोरता धारी
कीन्ही बिलग सुता महि तेरी। रोवैं मिलै अपर स्वर टेरे॥ ॥
सुनि धुनि द्रवैं दारु पाषाना। चेतन की को करै बखाना।
सुता कहै मेरी महतारी। लीजे सुधि लखि दीन हमारी
सुनि महि मातु गिरी मुरझाई। दौरि रवनि टेकिन समुदाई
सुक सारिक जे पिंजर भीरा। हाय सिया कहि तजैं शरीरा॥
तिनकी दशा अपने सी देखी। दिये संग करि प्रेम विशेषी॥
पुरजन बिकल वियोग घनेरे। मृत्यु मिलै मांगैं विधि नेरे॥
जनक हिं देखि मिली लपटाई। है अधीर धरि धीर छुड़ाई।
मंत्रिन दिव्य बिमान सजाये। मनहु महीप गृह अपर सोहाये

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असन बसन आदिक बहु सामा ॥ सेजपीठि लोचन सुखधामा ॥
वस्तु समस्त अनूपम सारी ॥ आनि जानमहँ धरी सुधारी ॥
तिनमा आनि कुँवरि बैठाई ॥ नैलख नृपजा हित सेब काई ॥
अरु दीन्हे बहु दास पुनीता ॥ विकल लोग गावहिं गुन गीता ॥
उठे बेवान देखि सुर हरषे ॥ हनि निशान कुसमावलि बरषे ॥
पाछे भूप चले पद चारी ॥ पठवन कन्या प्राण पियारी ॥ ॥
मंत्री पुरजन जे गुण भारे ॥ नृप सँग सकल जात मनु मारे ॥
आवत पुरपथ चले विवाना ॥ सिविका करि हरि धेरे नाना ॥
नगर नारि नर निरखि मनावे ॥ हे विधि कुँवरि बेगि फिर आवे ॥
बाहेर नगर रुकेउ जब जाना ॥ नृप ढिग जाइ कीन सनमाना ॥
बत्सन रोवहु रहो चुपाई ॥ बेगि लेब मैं तुम्हे बोलाई ॥ ॥
ज्यों त्यों करि धीरज उरधारा ॥ बिदा कीन मन कछु अपारा ॥
पूजि विप्र उपवधेश सिधाये ॥ मंगल मूल सगुन बहु पाये ॥
जय जय कहि सुर बरषहिं फूला ॥ बाजे बाजन विविध समूला ॥
नृप करि विनय महाजन फेरे ॥ याचक सब परतोषि निबेरे ॥
तब विदेह बोले अनुरागी ॥ नाथ मोहिं कीन्ह्यो बड़ भागी ॥
कोश लेश समधिहि सनमाना ॥ पुनि प्रभु ते मिलि बचन बखाना ॥
राम करहु किमि सुसुख बडाई ॥ चिदानन्द तुम सब सुखदाई ॥
सेवक समुझि दरश मोहिं दीन्ह्यो ॥ सब बिधि ते अापन करि लीन्ह्यो ॥
तदपि एक बर दीजे अबहूं ॥ मन तव पद परि हरै न कबहूं ॥
मुनि रघुपति ससुरे सनमान्यो ॥ पितु बशिष्ठ कौशिक सम जान्यो ॥

दो० भरथ लषण अरु सूदन हि मिले विनै करि राय ॥
शीश नाइ बा पाइ सब बंधु चले हरषाइ ॥
कौशिक मुनिपद नाइ शिर बोले निरहुत राज ॥
नाथ कृपा तव दास के भये सिद्ध सब काज ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

**सो०** सकल मुनिन शिर नाइ पाइ असीस विदेह सब ॥
फिरे भवन पछिताइ । प्रमुदित चली बरात इत ॥

**गीतिका छं०** इत मुदित चली बरात बालक बाजि जातन धावहीं । मग लोग लखि रघुनाथ छवि निज जन्म को फल पावहीं ॥ बरबास करत निवास शुभ दिन अवध पहुंचे आइ के । पुर नारि वर मुनि सकल जहं तहं चले देखन धाइ के ॥ नृप धाम अति अभिराम कौशिल्यादि रानिन जानेहूं । अनुराग बस है शिथिल मंगल चार पुनि सब ठानेहू ॥ दधि दूब तन्दुल तुलसि दल फल फूल धन निशि आरती । धरि थार रवनि अपार गावत चलीं मानहुं भारती ॥ जब द्वार गई बरात प्रमुदित मातु सब परछन भई । करि वेद विधि कुल रीति पांउड़ देत मंदिर लै गई ॥ तहं चारि सिंहासन सुतिन पर कुंवरि कुंवर पधारेऊ । पग धोइ करि आरति निछावरि विविधि वस्तु उतारेऊ ॥ अवलोकि सुत वर बधुन युत आनन्द बस जननी भई । जिमि मूक पावै वाक्य पार सुरंक अंधा रवी गई ॥ मिलि करें लौकिक रीति तब सुत अस्नुषा सकुचावहीं । सुर पितर पूजि पुजाइ मांगे नीक सकल रहावहीं ॥ महिपाल बोलि बरात दीन्हे जान पट भूषण भले । सिर नाइ पाइ रजाइ रामै राखि उर निज पुर चले ॥ पुर नारि नर पहिराइ सेवक छकित सब याचक भये । तब भूप सहित बशिष्ठ भूसुर संत अंतहपुर गये ॥ शिर नाइ सब अन्न्ह वाइ रानिन विविधि असन जेवांये हू । करि दान अति सनमान देत असीस सकल सिधाय हू ॥ पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर सुत संपदा आगे धरयो । निज नेगु मांगि बशिष्ठ रामहिं राखि उर घर को

ढ़ह्यो ॥ तब भूप रानिन सहित विश्वामित्र की पूजाक-
री। कर जोरि दीन निवास भीतर भवन निरखत हरषरी॥
पुनि पूजि प्रियपाहुन अमर गण सुमन बरषि सिधायहू।
तब बोलि द्विजगुरु ज्ञाति सुतन समेत भोजन पायहू॥
गावैं वधू मिलि गीत अचवन कीन निज धामन गये।
तब भूप रानिन ते सकल मिथिलेश गुन बरणत भये॥
भये मुदित सब तब कह्यो लरिका श्रमित उनींदे अ-
हैं॥ करवाइ ये अब शैन गे विश्राम मंदिर जहँ रहैं॥ मनि
जटित पलँग बिछाइ पट मृदु शुभ्र सींच सुगन्ध सों।
पौढ़ाइ चारो भाइ बोली माइ करुणा कंद सों॥ किमि-
तात मारेहु असुर गण किमि विप्र वनितहि तारेहू॥
किमि कठिन भंजेउ शंभु धनु किमि परशुधरहिं नेवारे-
हू। सब काज सब मुनि कृपा ते बलि जाहु भुज चापन
लगी। पर तोषि प्रभु सब मातु पुनि भे नीद बस ते रँगरँ-
गी॥ वर बधुन ले सब सासु सोईं नाग मणि सम गोद
के। भे भोर लागे पढ़न बन्दी राम जागे सोइ कै॥ करि
शौच विप्रन दान दे सह बंधु नृप जहँ तहँ गये। अवलो-
कि विधि सुत गाधि सुत सब सभा युत हरषत भये॥ शि-
र नाइ बैठे गुरु पिते इतिहास मुनि लागे कहे। यहि भाँ-
ति नित नव होत मङ्गल वरणि को पारे लहे॥ माँगे
बिदा ऋषि नाथ नित करि विनय रघुपति राखहीं।
समुझै विशेषि तयार तब कर जोरि नृप अस भाषहीं॥
सुत धाम धन सब नाथ रानिन सहित मैं सेवक सदा। प्र-
भु करत रहियो छोह सब पर दरश देब जदा तदा॥ पु-
नि परे चरण सनेह सहित अशीष मुनि सबको दई।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सिय राम छबि उर राखि ऋषि बन चले बरणत पहुन-
ई ॥ रघुबीर पंद्रह बर्ष के षट अब्द की श्री जानकी।
भये ब्याह द्वादश बर्ष रहि पुर राम लीला आन की ॥ म-
हि देव सन्तन हेत सो समुझत सुखद मन भावनी।
अबिबेक वन्तन मोह प्रद को विदन बिरति बढ़ावनी॥
सिय राम जन्म विवाह मङ्गल मुदित सुनहिं जे गाइ-
हैं। रघुनाथ ते प्रभु कृपा करि हरि जगह में सुख पाइहैं ॥

दो० श्री गुरुदेवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
बाल काण्ड संक्षेप करि बरणा जन रघुनाथ॥
दधसुत भगनी पति तनय तासुत जननी कन्त॥
सैल सुता पति आदि भुज कहैं राखो सब सन्त

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ
दास राम सनेही कृत बाल काण्ड समाप्तस्
नाम एकादशो
ऽध्याय: ॥ ११

श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्रामसागर

## अयोध्या काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों मानस मत कछुक अध्यातम महिं बखानि॥
जबते आये व्याहि प्रभु नित नव मङ्गल होत॥
मुदित रहत पुरनारि नर तात मात गुरु गोत॥
इक दिन विश्वा वसु तहाँ कियो गान गन्धर्व॥
मुनि प्रसन्न ह्वै स्वपुर तेहि कह्यौ रहन हित सर्व॥
तेहिं कह इन्द्र निदेश बिन मैं न सकत रहि अन्न॥
कह्यो केकई बसत हैं हमरे बल सुर कन्त॥
हमरे आवत रिस करत अस तुम गये मोटाइ॥
पठइ पत्रिका बानकर लखि नृप रहे चुपाइ॥
मन में समुझे केकई लिखि पठये बच बङ्क॥
हमरिउ लागी घात तब हम हूं देब कलङ्क॥
लिखि पठयो बिश्वा बसुहि कह्यो जो कहै भूप॥
यह सत्यो पाख्यान कीमैं कहि कथा अनूप॥

चौ० यहि विधि द्वादश बरषै बीती। एक समय की सुनिये रीती
केकै नृप सुत केकय नामा॥ अवध आइ कह्यौ नृपते कामा
सर सुख देश हमार उजारा॥ तेहि हित दीजे भरत कुमारा
गुरु निदेश सुनि भरथे दीन्हा॥ केकय भुवन गवन तब कीन्हा
बिदा होत पर राम लषण दोउ॥ सचिव सुतन संग सुखानन्द सोउ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो कछु दूरि पठै फिरि आये ॥ सानुज भरत नगर निय राये ॥ ॥
कै कय बलि आगे लय गयऊ ॥ लखि आनन्द सबन सुख भयऊ
बिप्रन ते तब होम करावा ॥ सुर मुख सुनत सेन लय धावा ॥
भरथ समर करि मार्यो ताही ॥ निरभय भये देश जस चाही ॥
नेह दिवस है मातुल केरे ॥ रहत तहाँ सो चरित निवेरे ॥ ॥

**दो०** यहाँ राम सिय लषण लखि सगुन कहैं यह बात ॥
समुझि भरत आवत भरथ भये बहुत दिन जात ॥
बरष अठारह की सिया सत्ताइस के राम ॥
कीन्ही मन अभिलाख तब कर नो है सुर काम ॥
ताही क्षण तहँ देव ऋषि विधि संदेश कह्यो आइ ॥
पूजी शंनिभा सहित प्रभु विदा किये समुझाइ ॥
एक दिवस श्री अवध पति मनमें कीन विचार ॥
रामहिं दीजे राज अब भापन चौथ हमार ॥

**चौ०** गुरुहि पूछि नृप कीन तयारी ॥ मङ्गल साज सकल सँवारी
जो कछु नृप अभिषेक मचाही ॥ फल दल जल मगवायो ताही
बाजहि पुर गह गहे निशाना ॥ नाक नटी नाचैं करि गाना ॥
सेवक सचिव कहैं नर नारी ॥ धन्य भूप भलि बात बिचारी ॥
प्रभु दिन बढ़े एक ते एका ॥ देखब काल्हि राम अभिषेका ॥
अमरन सो उत्साह न भाई ॥ बोलि विघन हित बाग पठाई ॥
नाम मन्थरा केकै चेरी ॥ आइ गिरा ताकी मति फेरी ॥ ॥
पुर रचना तेहि दीख नवीनी ॥ पूछेते काहू कहि दीन्ही ॥ ॥
राम राजि सुनि शर सम लागी ॥ अनसनि गई केकई आगे ॥

**दो०** मम सोदर की राज जिन बावन है हरि लीनि ॥
करौं विघन तिमि महूँ अब जेहि लगि सेवा कीनि ॥

**चौ०** यहि विधि करत विचार कुबूड़ी ॥ तजत अंस करि प्रथम कोंसुड़ी

भरथ मातु बोली का भयली ॥ जानि परत लक्ष्मण सिय दयली
हमें सीख दई कत कोई ॥ तब दुख लखि मोहिं भा दुख सोई
बरत अगिनि शिर ऊपर आई ॥ सो तुम अभय जानि नहिं पाई
कौन वृहद बीते दिन आजू ॥ पैहैं काल्हि राम युव राजू ॥ ॥
सुनि रानी अति शय हरषानी ॥ लगी देन भूषण निज पानी ॥
जो तव वाक्य सत्य यह होई ॥ फिरि देहों जो मगिये सोई ॥
हमें रीझि तुम देहो काहा ॥ तुमहीं का नहिं होई लाहा ॥
राम चंद्र जब राजहि पैहें ॥ कौशिल्या तब तुम्हें सतैहें ॥
जिमि कद्रू बिनतै दुख दीन्हा ॥ चित्र केतु तिय अनभल कीन्हा
सुरुचि सुनीता को सुत बनमें ॥ पठइ दीन्ह सुख नाहिं सपन में ।
शुक्र सुता सर मिष्ठे कष्टा ॥ दीन कीन निज पति की नष्टा ॥
सहित गरल भे सगर सयानी ॥ भई बाँझ सब शशि की रानी
यदपि सवति तव सरल सुभाऊ ॥ कर परि कु असि करत अनथाऊ
भूप करत तब आदर भारी ॥ देखि सखी नहिं सवति तुह्मारी
तब सुत पठे नन्यौरे दीन्हे ॥ लेत राज निज पुत्रहिं लीन्हे ॥
सुवन सहित करिहौ सब काई ॥ नाहित रहि हो पितु घर जाई ॥
समुझि परत मोहिं विश्वा बीशा ॥ परी विपति सब तुम्हरे शीशा
जो कहो राम चहत अति मोहीं ॥ निर बल में रिपु मित्रहु होहीं ।

**दो०** जिमि बन जारत अगिनि तब पवन सखा होय जाइ ॥
सोई मारुत कृश देखि कै दीपै देत बुझाइ ॥ ॥

**सो०** सुखद दुखद शशि होइ । लहि रवि बसु श्रुति चौथ गृह ॥
मृग मधु जहि बिन तोइ । दहत कहत मग छतज जम ॥

**चौ०** तोहि ते अबहीं करहु उपाऊ ॥ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ।
है वर नृप थाती सो लेहू ॥ सुतहि राज रामै बन देहू ॥ ॥
एक तो दुखित काल सुख हारी ॥ दूसर सुर संग्राम मझारी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनि प्रवीन रानी मन आई ॥ हरि इच्छा तुम जानहु भाई ॥ ॥
कोपभवन पहुँची तजि साजा ॥ भावी बस आये तहँ राजा ॥
कोपभवन मंथरहि बतावा ॥ सुनि नरेश मन मे भय पावा ॥
सुरपति सुहृद दनुज अरिजोई ॥ कालहु ते नडरहि रण सोई ॥
तिय रिस सुनि भे कंपित गाता ॥ कामकृपान निसित अति नाता
धरि धीरज रानी ढिग गयऊ ॥ शीश परसि कर बोलत भयऊ
केहि कारण कीन्ह्यो रिस प्यारी ॥ कोतव दूसर है तनु धारी ॥ ॥

दो॰ कहु कहि रङ्क हि नृप करौं नृपे रङ्क करि देउं ॥
तब अरि अमरहु होइ तेहि बध करि पांये पेउं ॥

चौ॰ कहौं देखि निज कोप प्रसंगा ॥ भूषण सजहु मनोहर अङ्गा
हे प्रसन्न चितवहु मम ओरा ॥ आजु भयो मनभावन तोरा ॥
हे है कालिह राम युवराजा ॥ हरष समय तुम दुख उपराजा ॥
सुनि नृपवचन भयो दुखभारी ॥ दिहिसि पाणि निज सिर ते टारी
पुनि धरि कर बोले अनुरागी ॥ जो भावे सो लीजे मांगी ॥ ॥
तवहित कछु न अदेय हमारे ॥ सुनि केकै तब वचन उचारे ॥
मांगु मांगु बर जब तब कहऊ ॥ लेत देत फिरि कछू न अहऊ ॥
आगे देन कह्यो बर दोई ॥ अब लग मोहिं मिले नहिं सोई ॥
सुनि नरेश हँसि बोले लीन्हा ॥ कव मांगेहु कव हम नहिं दीन्हा
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा ॥ वचन न जाइ जाइ बरु हंसा ॥
झूठे दोष देहु जनि प्यारी ॥ लेहु मांगि किन द्वै के चारी ॥ ॥
जो पति शपथ राम की कीजे ॥ तौ हम मांगि उभे वर लीजे ॥
हँसि नृप राम सपथ तब खाई ॥ सुनि बिग मरिस उठी हरषाई
प्रथम देहु बर यही समाजा ॥ भरथहि बोलि करहु युवराजा ॥
दूसर राम धाम तजि राई ॥ चौदा बरष बसैं बन जाई ॥ ॥ ॥
सुनि नरनाह मूर्छि महि परेऊ ॥ मनहुँ तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

धरि धीरज पुनि आखि उघारी॥ पुरह किरातिनि सरस निहारी॥
बोली बहुरि सुनो नरनाहा॥ भरत तने तब होइ न काहा॥
जासु राज सुनि भा दुख भारी॥ प्रथम देन कत कहो पुकारी॥
कह नृप सत्य कहौं तोहिं पाहीं॥ भरथ राज सुनि दुख मोहिं नाहीं॥
दूसर बरु मांगेहु दुख रासी॥ सांच हु सांच कि कीन्हो हांसी॥
तोहिं प्रिय राम रहै अति आगे॥ आजु कठिन केहि कारण लागे॥
जो कृत बैरिहु कर उपकारा॥ सो किमि करी मातु अपकारा॥
जेहि दुख दुसह देत सब काऊ॥ मैं तोसे निज कहौं सुभाऊ॥

दो॰ रहै भानु बिन दिवस बरु रहै मीन बिन नीर॥
राम बिना मम प्राण नहिं रहि हैं सुमुखि शरीर॥

कुण्डलिया—नारद ऐसे प्रभाव नृप संजे सुत मल्ल हेम। होत जानि हरि हरि हतन करि कछु लह्यो न नेम॥ करि कछु लह्यो न नेम तर कि तल्प पुनि भल्लते। हरि परि भव हित गोप गृह प पाल्यो गोपल ते॥ तेस्वा सिंहहि देखि दबकि बिल माहिं लुकान्यो। मिल्यो सुरभि को पाप स मुझि पाछे पछितान्यो॥ पछितान्यो तिमि तुम्हें शोच तो धरी बिचारद। मूरख की रघुनाथ इमपि कृत होत न नारद॥

चौ॰ तेहि ते पुनि मागहु मोहिं पाहीं॥ रहैं राम घर बनहिं न जाहीं॥
जेहि ते हमहु बरथ दइ एका॥ देखें भरथ राज्य अभिषेका॥
सुनि बोली बोढर जनि करहू॥ निज कुल रीति हृदय महं धरहू॥
देखो शिबि दधीच हरि चंदा॥ सहे धर्म हित दुख अति मंदा॥
मधु कैटभ सिर बिष्णुहिं दयऊ॥ बिट बहु ले कछु कष्ट न भयऊ॥
बोलि बचन जिन नहिं प्रतिपारे॥ कहत बेद तिन के मुख कारे॥
तेहि ते तजहु सत्य जनि नाथा॥ पठबहु जाहि बिपिन रघुनाथा॥
जौ न प्रात जैहैं मुनि बरणा॥ तुमहिं अयश होइ मम मरणा॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनि पुनि नृप बहु बिधि समुझावा ॥ होनहार तेहिं तन कन भावा ॥
गिरयो भूमि हूँ बिकल भुवाला ॥ जानेहु तिय मिसि आयहु काला ॥
हृदय मनावत शंभु बिधाता ॥ करहु कृपा जेहि होइ न प्राता ॥
गुरु गणेश शारदा भवानी ॥ रहैं राम तजि घर मम बानी ॥

दो० भेषज सुर अभिषेक जन नेकन ना निरफल जात ॥
काल बिबस जग जाल जिमि नौ चढ़ि जल बहि जात ॥

चौ० यहि बिधि बिलपत भयो बिहाना ॥ बाजे जहँ तहँ द्वार निशाना ॥
बंदी गण गुण गावन लागे ॥ अनुदित प्रिय पुरबासी जागे ॥
सुनि नरपतिहि न नेकु सोहाई ॥ समर समय जिमि गारी गाई ॥
प्रात बशिष्ठ सभा महँ आये ॥ लखि सुमन्त्र ते बचन सुनाये ॥
सदा प्रथम आवत नरनाहा ॥ आजु गहर भे कारण काहा ॥
बेगि खबरि तुम लावहु जाई ॥ चले सुमंत्र परम चपलाई ॥
गये कोपमंदिर सुनि बाता ॥ सभय उलंघी ड्यौढ़ी साता ॥

दो० प्रथम तरुणा युग जेठ पुनि बालक ड्यौढ़ी चारि ॥
पंचम यौवन बिरध षट सप्तम गौरी नारि ॥

चौ० आगे जाइ केकइहि देखा ॥ परे बिकल तहँ भूप बिशेषा ॥
शीश नाइ बोले मृदु बानी ॥ भूप परे कस बिबरन रानी ॥ ॥
रामहि प्रथम लयावहु जाई ॥ भूप कुशल तब बूझेयो आई ॥
नृप रुख पाइ सुमंत्र सिधाये ॥ बेमन राम के मंदिर आये ॥
देखि पिता सम प्रभु सनमाना ॥ पूछे तेनिन हाल बखाना ॥
चले तुरत प्रभु संग उचारे ॥ देखि लोग सब भये दुखारे ॥
पहुँचे जाइ जहाँ नृप रानी ॥ बोले राम जोरि युग पानी ॥ ॥
जननि जनक केहि हेत दुखारी ॥ कहिय सो कृत जेहि होइ सुखारी
सुनहु राम दुख मूल सनेहू ॥ बढ़ी न सुख यहि कढ़ी न यहू ॥
हानि लाभ सुख दुख किन होई ॥ कहिये देन तेहि दीजे सोई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विविबर में मांगे इन पासा ॥ भरतहि राज तुम्हे वन बासा ॥ ॥
धर्म केतु कछु कहत न बानी ॥ तुम ते सधै करो सोइ जानी ॥
सुत सोइ जो पितु सुयश बढ़ावे ॥ आपयश देइ तेहि सुत को गावे
सुनि कैकै के वचन कठोरे ॥ बोले राम अमीजनु बोरे ॥ ॥ ॥
अतिलघु बात पिते दुखभारी ॥ अपहेतु कछु हे महतारी ॥
भरत सपथ मैं सत्य बखाना ॥ कारण आन मोर नहिं जाना ॥
तब रघुपति गहि नृपहि उठावा ॥ हाथ जोरि अस बचन सुनावा ॥
तात तर्कि तन तजहु गिलानी ॥ मंगल समय मोद उर आनी
जो जननी जाँचे बर दाना ॥ तामें अति हमार कल्याना ॥ ॥

दो॰ एक तो बन मुनिजन दरश भरत प्राणप्रिय राज ॥
पुनि निदेश पितु मातु कर मोहि विधि दाहिन आज ॥

चौ॰ ऐसहु पर निज करहु न काजा ॥ जानेहु मोहि मूढ़न कर राजा
मूढ़ सो सत्रा विधि के जानो ॥ कहे पूर्व मनु तैस बखानो ॥ ॥
मोहिं पत्री छं॰ कहैं इमपि पूर्व मनु स्वयंभू मूढ़ सत्रह होत जू
जन जो अधिक व्यहि करत शिक्षा तौन पहिले पोत जू ॥ हैं जौन सेव-
त दार दिहि धन देत दूजो तौन जू । करि तौन तो जो रक्षि शत्रुहि
कुशल चाहत जौन जू ॥ हैं सो चतुर्थ जो कथत निज मुख कर्म का-
रज पूर्ष जू । जो बैर ठानत प्रबल सो है निबल पंचम मूर्ख जू ॥ मूढ़
छठवां करत कुत्सित कर्म जो गुरु ज्ञान जू । गुण कहत सखा हीन
सों सो मूर्ख सतवों ख्यात जू ॥ गुरु गोत्र तिय सों करत निन्दित कर्म अ-
ठवां तौन जू ॥ जो पुत्र तिय गत्ति मान चाहत नौम सो अधा भौम जू
निज बीज जो पर खेत डारै दशम मूरख खेद जू । हैं सो एकादश मू-
र्ख तिय सो कहत जो निज मंत्र जू ॥ अरु देन कहि नहि देत जो सो
मूढ़ द्वादश गंथ जू । जो भेद जानो बिना जल पत तौन ते रहौं अन्य जू ॥
जो चतुर दशवां मूढ़ गुण तन कर्म को फल पाय जू । अरु पंचदश जो याचक न

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सो कहत कटु रिस छाय जू ॥ जो दान भोगन करत सो रहौं मू-
ढ़ सो धनवान जू। निज बंधु भागहि हरण चाहत सत्र दृश-
मन दान जू ॥ जो लखत लोक प्रलोक नहिं सो मूढ़ सब में
श्रेष्ठ जू। सोउ पाइ ऐसो समय तज वन भजव है असपष्ट जू ॥

दो॰ धृति सम दम सुचित्ता दया सति प्रिय सुवचन नेम ॥
आनंद बरधन समन अघ दोउ दिशि दायक क्षेम ॥
मोह दीनता भूप के करत सकल गुण नास ॥
तातें दोउ तजि राखिये स्वधरम सहित हुलास ॥
सुत तिय तन धन धाम सोइ जासों सधै स्वधर्म ॥
तातें देहु निदेश मोहिं वन हित परिहरि भर्म ॥

चौ॰ सुनि नरेश अति ही अकुलाने ॥ मोह विवस रघुनायक जाने
करि प्रबोध पर्य्यंक सोवाये ॥ विदा होत हित हर्षि सिधाये।
आये प्रथम जानुकी धामा ॥ देखि दीन आसन अभिरामा
बोले प्रभु मोहिं पितु अरु माई ॥ आयसु दीन बसहु बन जाई
धर्म हेत धर मत्त नृपाला ॥ प्रगट सुरायसु चाहिय पाला ॥
चौदा बरष बास करि ज्यारी ॥ ऐहों फिरि तुम रह्यो सुखारी ॥
सासु ससुर की सेवा करेऊ ॥ नारि धर्म सो हिरदय धरेऊ ॥
कानन भय दुख नाना रंगा ॥ जाहित लेले त्यों निज संगा ॥
जो हठ बस चलि हो संग प्यारी ॥ तो गालव सम होव दुखारी

दो॰ गालव कौशिक केर शिषि कह्यो दक्षिणा लेहु ॥
सेवा ते संतुष्ट हम हयै तुष्ट नहिं एहु ॥
श्याम करण हय आठ शत हठ लखि बोले लाउ ॥
सुनि मुनि गयो ययाति नृप निकट विचारि प्रभाउ ॥
पूछि प्रयोजन तिन दई कन्या सो लै विप्र ॥ ॥
नृप हरश्व ते कह्यो यह लेह देहु हय छिप्र ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक भुवन जन माइ तिन दीन्हे दुइ शत बाज॥
तिमि काशीस उसीरींपति अरप्यो अर्भक काज॥
दुइ शत मिले नतेहु पर तब मुनि मानि गिलानि॥
गये विश्वामित्र ढिग अस हे हरु दुखदानि॥
चौ० सुनि बोली नवजनक दुलारी॥ सुनहु प्राण पति विनय हमारी
अनुज अम्ब पितु सुत सुख नाना॥ पिय बिन अमर्दे प्रेत समाना
तेहि विधि नाथ मोहिं जग माहीं॥ तुम बिन सुख्द कतहुं कोइ नाहीं
दो० ॥ रहे चंद्र बिन चन्द्रिका रहे मीन बिन पाथ॥
तो घरमें मोहिं राखिये बहुत कहों का नाथ॥
देखि प्रीति बोले चलहु संग चली हरषाइ॥
सुनेहु लषण बन जात प्रभु ढिग आये बिलखाइ॥
चौ० सोच नाइ शोचत मनमाहीं॥ मोहिं प्रभु संग लेहैं की नाहीं
देखि बिकल बोले रघुराई॥ धीरज धरि रहो घर भाई॥ ॥
भवन भरत नहिं प्रिय रिपु आरी॥ तात मातु मम बिरह दुखारी
जो मैं तुमहिं चलौं ले साथा॥ हूँ हैं पुरजन निपट अनाथा
जेहि नृप राज प्रजा दुख पावै॥ अवशि अधिप सो नर्क सिधावै
अस बिचारि रहिये गृह भाई॥ करहु मातु पितु की सेवकाई ॥
भव भय हरनि मातु पितु सेवा॥ बिमुख निरय भाषत महिदेवा
सुनि लक्षमण अतिशै दुख पावा॥ पद शिर धरि अस वचन सुनावा
दो० नाथ बात जो कही तुम नाहि करै नर सोइ॥
कीरति सुगति बिभूति तिय तनुज जाहि प्रिय होइ॥
चौ० मोहिं एक प्रभु तुमते नाता॥ अपर न जानहुं गुरु पितु माता
तेहि ते तजहु न किंकर जानी॥ सुनि रघुपति बोले मृदु बानी
दो० तात मातु ते बिदा है आइ चलो मम साथ॥
जाय सुमित्रा के चरण भय युत नायो माथ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० बोली देखि दुखित कै सताता॥ तब तहँ लषण कही सब बाता
सुनि गइ सहमि सुमित्रा रानी॥ धरि धीरज बोली मृदु बानी॥
तात राम सिय तव पितु माता॥ रहैं जहाँ अवध सुख दाता॥
जो बन जात राम सुकुमारा॥ तो घर में का काज तुम्हारा॥
तेहि ते बन तिन के संग जाहू॥ लेहु वत्स जगजीवन लाहू॥
मोहिं समेत भयो बड़ भागी॥ जो तव राम चरण रति जागी॥
करेहु तात सोइ बात बिचारी॥ जेहि न राम सिय होंइ दुखारी॥
सुनि लक्ष्मण उठि शीस नवायो॥ पाइ अशीस राम ढिग आयो॥
तब प्रभु सहित जानकी भ्राता॥ आये जहँ कौशिल्या माता॥
चरण छुवत निज उर बैठारे॥ भई गहर कत बचन उचारे॥
बोले तब रघुपति सुनु माता॥ बन को राज दीन मोहिं ताता॥
आयसु देहु मुदित मन ताते॥ कुशल आइ पद देखिय जाते
कौशिल्या सुनि अति दुख भयऊ॥ मनहु छीनि सुख सर बजु भयऊ
बोली केहि अपराध भुवारा॥ राज देन कहि बिपिन निकारा
सचिव सुवन सब बात बखानी॥ सुनि व्याकुल है बोली बानी

दो० सुत अरि ते दधि भक्षते रसावन पिता निकेत॥
हे बिधि राखे मोहिं तू यही देखावन हेत॥
धरि धीरज बोली बहुरि तात किहेउ अति नीक॥
पितु आयसु सब धर्म मय वदत वेद है टीक॥

चौ० जो मैं कहौं रहो सुत धरमा॥ बढ़ै बयरु शिर चढ़ै अधर्मा
तेहि ते अवशि जाहु बन भैया॥ आयहु बेगि जाइ बलि मैया।
सिय एकहु दुख जानत नाहीं॥ इनकर लाड़ सह्यो बन माहीं
मैं बहु भांति सिखावन दीन्हा॥ तदपि चलन हित हठि प्रण कीन्हा
लषण लाल अपति से सुकुमारे॥ रहत न तेउ संग जात तुम्हारे।
रूप स्वरूप सुख इनकर देखी॥ सहि न सक्यो सुधि लिह्यो बिशेषी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

है स्वतंत्रवन दूनो भ्राता॥ करेउ न कबहुं जीव कर घाता॥॥
चलेहु सांई जेतना चलि जावै॥ कह्यो संदेश इते कोइ आवै
मोहिं सम नारि अभागिनि कोई॥ भई न अहै न आगे होई॥
जो जन तिउ आगे दुख एहा॥ तो नहिं कर तिउ नृप ते नेहा॥
जात विपिनि मम बालक वारे॥ देखि न निकसत प्राण हमारे
अस कहि अवनि गिरी मुरझाई॥ प्रभु जननी बहु विधि समुझाई
पुनि धरि धीर भाषि सुत बक्षा॥ लागि करन अंगन की रक्षा॥
**रोला छं०** नमो विष्णुपद पातु जानु तिविक्रम वीरा। क-
टिहि रक्ष गोबिंद नाभि अच्युत रणधीरा॥ गुल्म पातु पदु
माक्ष उदर हरि उर श्री नाथा। भुज मधुसूदन पातु कुक्ष पृथ्वी
धर साथा॥ कंठ जनार्दन पातु कृष्ण मुख मंडल सोहै॥ कर-
ण मूल बाराह घ्राण दामोदर जोहै॥ नेत्र निरंजन पातु भाल
लक्ष्मी नारायन। केशो पातु कपोल सर्व तन चक्र धरायन॥
पूर्व पातु पुरुषोत्तम सदा अग्ने गरुड़ध्वज। दक्षिण दिशि-
नरसिंह पातु नैऋत्य चतुर्भुज॥ वासुदेव बारुण्य पातु बाय
व्य विप्रव भराम रक्ष कौबेर्य शंख ईशान गदाधर॥ कमल
नाभि अध ऊर्ध पातु जल गिरि बन बावन। व्याघ्र सिंह ते पातु
सदा शंकर मन भावन भूत प्रेत बैताल ब्रह्म राक्षस छल का
रि। अग्नि चोर बिष बीछ सर्प ते पातु मुरारी॥ पर विद्या उभ
यंत्र मंत्र पर तंत्र जहां लो॥ माधौ सकल निवारु मारु र-
ज धूल तहां लो॥ यहि विधि रक्षा कीनि दीनि पुनि सुख द
अशीषा। सहित लषण सिय चले नाइ जननी पद शीशा॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदा-
स राम सनेही कृत बन यात्रा नृप विषाद वर्णनो
नाम द्वादशो ऽध्याय: १२॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों मानस सहित कछु अगिनि बेस कृत आनि॥

चौ० कछुक शोच चित कछुक उछाहा॥ आये बहुरि जहां नरनाहा
भे सुनि विकल सकल पुरवासी॥ मनहुं दवाहु दिशि लागि दवासी
कर थिर धुनहिं भागि बिन जानी॥ मन मलीन तन दशा भुलानी
कोइ कहे भलन कैकई कीन्हा॥ कोइ कहे नृप काहे कबर दीन्हा
कोइ कहै विधि चाहै सो करई॥ कोइ निज कर्मन के सिर धरई
कोइ कहै भरतहु कर मत होई॥ सुनि कर कान्ह राखि कहै कोई
लागत पवक असकिय बखाना॥ राम भरत कहँ आश समाना
अगिनि होइ जल बरुन भ फूला॥ भरत न होब राम प्रति कूला
यहि बिधि कहत सुनत सब धाये॥ बिरह बिकल नृप मंदिर आये
भइ अति भीर भूप दरबारा॥ बरणि न जाइ बिषाद अपारा
तेहि अवसर के सुधि जब आवें॥ अजहुं दरार अवनि उरजावे

दो० तब रघुबर सिय लषण सुत नृप पद शीश नवाइ॥
कह्यो बिदा मोहिं कीजिय तात बिषाद बिहाइ॥
निरखि भूप शिशु रूप उठि लीन्हे हृदय लगाइ॥
हे बस धर्म सनेह कछु कह्यो न रह्यो चुपाइ॥
देखि कैकयी तमकि कै मुनि पट भाजन दीन॥
बोली पहिरहु जाहु बन जो चाहो हित कीन॥
अनुज सहित बलकल पहिरि करि पितु मातु प्रणाम॥
कृष्ण पक्ष बैशाख दिन छठे चले बन राम॥
विप्र बधू बर कैकयि हि रहीं बहुत समुझाइ॥
तेनहिं कीन्ह्यो कान तब चलीं अधिक दुख पाइ॥
कह्यो भूप तब सचिव ते रथ पर लेहु चढ़ाइ॥
बन देखाइ अन्ह बाइ सरि लावहु तात फिराइ॥

तुरत बाजि रथ साजि के गये राम के तीर ॥
सुनि बिनती आरूढ़ भे सिया सहित दोउ बीर ॥
चले अवध शिर नाइ सब पुरजन लागे साथ ॥
प्रभु फेरत नहिं फिरत सो खग मृग बिकल अनाथ ॥
आइ रहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिन नीर ॥
करुणा मय भे दुखित तब देखि सजन के भीर ॥
लोग श्रमित गे सोइ तब कह्यो सचिव ते राम ॥
खोज मारि रथ हाँकिये नाहिंत बिगरत काम ॥
आयसु पाय चढ़ाइ रथ हाँक्यो खोज दुराइ ॥
जागि लोग भे बिकल तब जब न लखे रघुराइ ॥

चौ०। राम राम कहि खोजन लागे ॥ रथ कर चिन्ह न देख्यो आगे
फिरि आये गृह आपुहि जानी ॥ करदम मीन धन्य करि मानो
राम दरश हित जप तप नेमा ॥ लगे करन पुरजन युत प्रेमा ॥
इहाँ राम सिय सचिव सभाई ॥ शृंगबेर पुर पहुँचे जाई ॥
उतरि कीन सुरसरि अस्नाना ॥ यतने माहिं भील पति जाना
ले फल फूल भेंट तहँ आवा ॥ कीन्हि दण्डवत लखि सुख पावा
उठि रघुनाथ लीन उर लाई ॥ पूछी कुशल पास बैठाई ॥ ॥
नाथ कुशल सब भाँति हमारे ॥ पद पंकज दुख दलन तुम्हारे
आपु कहाँ इत कीन पयाना ॥ तब रघुपति सब हाल बखाना
सुनि निषाद मन भयो बिषादा ॥ बोल्यो बहुरि सहित अहलादा
तुम प्रभु होउ इहाँ के राजा ॥ हम सब सेवक सहित समाजा
चलहु भवन प्रभु कह तिन पाहीं ॥ ग्राम जान की आज्ञा नाहीं
तब सिसुपा तर लै गयऊ ॥ कुश साथरी बिछावत भयऊ ॥
तेहि पर उतरि सबन फल खाये ॥ पौन कीन पुनि सहज सुभाये
सोवत प्रभुहि निषाद निहारा ॥ दुखित लखण ते बचन उचारा

दो० जे सोवत रहे मणि पलँग पुरट महल के माँहिं॥
ते पौढ़े कुश साथरी विधि जु वाम केहि नाहिं॥
मुनि बोले सौमित्र कछु विधि कर दोष न होइ॥
निज कृत कर्म अभंग फल भोगत हैं सब कोइ॥
राम सच्चिदानन्द घन रहित समस्त विकार॥
करत चरित सुर सन्त हित धरि स्वतंत्र अवतार॥

चौ० अस विचारि दुख परिहरि नेहा। करहु राम पद पदुम सनेहा॥
मृगतृष्णा सम जग व्यौहारा। सतसंगति हरि सुमिरन सारा॥ ॥
तात परम परमारथ सोई। जो रघुबीर चरण रति होई॥ ॥ ॥
यहि विधि कहत सुनत भा भोरू। जागे सकल सुनत खग सोरू॥
करि स्नान सिर जटा बनाये। लखि सुमंत्र तब बचन सुनाये॥
नाथ कह्यो मोहिं कौशलनाथा। बन देखाइ लै आयो साथा॥
कहु प्रभु तात सकल तव जानी। धर्म न दूसर सत्य समाना॥
सो मैं सत्य तजहुं किमि जानी। अयश होइ पुनि धर्म कि हानी॥
तेहि ते तात जाहु घर आजू। नाहित होइ अवध अकाजू॥
कह्यो पिता सन बिनै हमारी। मम हित करैं न संशय भारी॥
जननिन ते कहियो शिर नाई। आवत सपदि फिरे दोउ भाई॥
कह्यो भरथ जब मंदिर आवैं। करहु राजि जेहिं सब सुख पावैं
गुरु पितु मातु बचन अनुहारी। करत कछू तेहिं लागि न खारी
यदु यमदग्नि गणेश हरी के। चरित चारु जग प्रचुर परी के॥
तुम पितु सम मम बिनै तुम्हारी। करेहु सो जेहि नृप रहें सुखारी
अस कहि चले सचिव शिर नाई। सुरसरि तट आये रघुराई॥ ॥
माँगी नाव न केवट लावा। कहै तुम्हार मरम मैं पावा॥ ॥ ॥
पाहन ते कीन्ह्यो मुनि नारी। तेहि ते कठिन न नाव हमारी॥
यहि ते पलत मोर परिवारा। नाथ न जानहुं अपर प्रकारा॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुरसरि पार जान जो चहहू॥ तौ प्रथमै कलेश कछु सहऊ॥
लेन देहु मोहि पदरज धोई॥ मानुष करणा सुनिहै सोई॥ ॥
धोये बिनन देहौं अन्त जाना॥ लछमण कोप किन मारहिं बाना
सुनि वाणी प्रभु केवट केरी॥ बिहसे सिय लछमण तन हेरी॥
बोले पुनि लीजे पर छाली॥ कमठ पृष्ठ लावा जल हाली॥
पद पखारि जल कीन्ह्यो पाना॥ सुरन देखि बड़भागी जाना॥
नाव चढ़ाइ पार तब कीन्हा॥ शीस नाइ जब चाले लीन्हा॥
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे॥ बोला सहित जोरि कर आगे॥
तुम केवट भवसागर केरे॥ नदी नार के हम बहु तेरे॥ ॥
हमरी तुमरी कसि उतराई॥ नापित नापित की नहि बाई॥ ॥
सुनि प्रभु ताहि भक्ति वर दीन्हा॥ पुनि सुरसरि महँ मज्जन कीन्हा
करि बिनती सिय नायहु शीसा॥ दीन मुदित मन गंग असीसा
तब प्रभु सखे कह्यो घर जाहू॥ बोला तब भीलन कर नाहू॥
जैहों जहँ तहँ तक पहुँचाई॥ फिरिहौं तब प्रभु कुटी बनाई॥
सुनि चालि भे प्रभु सहित हुलासा॥ तेहि दिन भयो पथ में बासा।
नौमी दिन तीरथ पति गयऊ॥ त्रिवेणी जल मज्जन भयऊ॥
विप्र वृन्द सनमानि सिधाये॥ भरद्वाज के आश्रम आये॥ ॥
कीन दण्डवत सहित समाजा॥ उर लगाइ बोले ऋषिराजा।
आजु सफल मम जप तप ज्ञाना॥ तीरथ ब्रत योग मख दाना।
धन्य जन्म जग जीवन भारी॥ भयो कृतारथ तुम्हें निहारी॥
अब करि कृपा देहु वर मोही॥ काय वचन मन सुमिरौं तोही
जब तक तव पद प्रेम न होई॥ तब तक सुख न लहै नर कोई।
अस कहि मधुर मूल फल दीन्हे॥ सबन सहित प्रभु भोजन कीन्हे
तेहि निशि रहि करि प्रात स्नाना॥ मुनिहि नाइ शिर कीन्ह पयाना।
ग्राम निकट जेहि निकसहिं जाई॥ थकित होहिं लखि लोग लुगाई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक एक ते कहैं विचारी ॥ ए बालक बन योग न प्यारी ॥ ॥ ॥

दो० कोइ कहे इनके मात पितु हैं कठोर मम जानि ॥
कोइ कहैं होय न होय हरि निकसे मानि गलानि ॥

चौ० कोई कहैं नृपसुवन शिकारी ॥ बन विचरत मिलिंगे सुरनारी ॥
कोइ कहै बरबस भूपकुमारी ॥ बरिआंग बन भवन बिसारी ॥
कोइ कहै काम बाम ले रूरी ॥ चंद्र शम्भु पर बैर बिसूरी ॥ ॥
कोइ कहै विप्र शाप बस आहीं ॥ सिद्धि समेत सिद्ध कोइ आहीं
कोइ कहैं है ठग लिहे ठगोरी ॥ ठगत फिरत मन मति करि भोरी
कोइ कहै ए सुकृती हैं कोई ॥ निज परलोक सुधारत सोई ॥
उदय भये कछु भाग हमारे ॥ भरि नयनन जो इन्हें निहारे ॥
यहि बिधि कीरति कै करि भूरी ॥ पूंछे निज निज जाइ हजूरी ॥
कहेउ राम सति बचन तुम्हारे ॥ फलत भाउ जस बैर हमारे
तेहि अवसर तापस एक आवा ॥ करि बिनती हरि धाम सिधावा

दो० मगबासिन सुख देत इमि उतरे यमुना जाइ ॥
मज्जन करि हरि सखहि तब बिदा कीन बरिआइ ॥
चले लषण सिय सहित प्रभु करि यमुनहिं परनाम ॥
उतरे सीतहि श्रमित लखि बट तरु तर ढिग ग्राम ॥

चौ० एक अली लखि गइ निज गेहा ॥ कहत सखिन ते सहित सनेहा
सखि यहि ग्राम पथिक द्वै आये ॥ गौर श्याम छबि धाम सोहाये

दो० तिन संग सुन्दरी एक जेहि लखि लाजत अगमेव ॥
चारि सुमन फल चारि पसु विहंग चारि श्रुति देव ॥

चौ० सुनि पुरजन सब देखन धाये ॥ उतरे प्रभु जहँ तहँ चलि आये
लख शिख सुभग स्वरूप निहारी ॥ सीता ढिग आईं मिलि नारी ॥
पूछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे ॥ ये दोउ बालक कौन तुम्हारे ॥ ॥
देवर लषण कहेउ सिय बैनन ॥ निज पति प्रभु इ बतायो सैनन ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोशल पुर है इनकर धामा॥ नृप दशरथ के सुत अभिरामा॥
कारण कौन फिरत बन माही॥ कोमल पद पद त्राता हुं नाहीं
सासु सबनि कीन्ह्यो उत पाता॥ दियो बन बरष सात अरु साता
सुनि सिय बचन सकल बिलखानी॥ बोलीं बिधि गति जान न जानी
निपट निठुर चित करत जो भावै॥ नीके माहिं जवून लगावै॥
आधि सीतल घट बद सकलं की॥ कोमल कुवलै किहि सिकटकी
रूप कल्प तरु जल निधि खारी॥ नीच धनिक बड़ बिप्र भिखारी
इनकर रूप अनूपम कीन्हा॥ तेहि पाछे कानन लिखि दीन्हा
जो पै इन्हें दिहिसि बन बासा॥ तो कत कीन्हि सभोग बिलासा
यहि बिधि कहि सब आपुस माहीं॥ बोलीं पुनि रघुपति के पाही
आजु रहो चलि हमरे धामा॥ आखिर रहा दिवस यक यामा॥
कह प्रभु हमें दूरि है जाना॥ अस कहि उठि बन कीन्ह पयाना
लखि सब लोग उठे अकुलाई॥ मनहुं गई गृह सम्पति आई
दृग जल पूरि कहत बरजोरी॥ फिरत करे उइत कृपा बहोरी
हरि इच्छा जस समय बिलोकी॥ कर बल सथा थल पथ रोकी
प्रभु सिय लखण जात इमि लागा॥ भक्ति सहित जनु ज्ञान बिरागा
मग में देखि ज्योतिषी कहई॥ राज चिन्ह सब तुम्हरे अहई॥
सो बन बिचरत बिन पद त्राना॥ ज्योतिष झूठ हमारे जाना॥
बहुरि बिचार कराहिं गनि आछे॥ होई राज कछुक दिन पाछे॥
जो देखैं सो संग सिधावै॥ बूझहि तब जब बहु समुझावै॥
जिन सिय राम बटोही हेरे॥ भव दुख दूरि भये तिन केरे॥
अजहुं जासु उर वह छवि सोवै॥ निश्चय सो पर धाम सिधावै
मग निवास करि प्रात सिधाये॥ बालमीक के आश्रम आये

दो० कीन्हि दण्डवत मुनिहि प्रभु लीन बिप्र उरलाय॥
लखण राम सिय रूप लखि भये मुदित ऋषिराय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कंद मूल फल अमी सम दीन्हे करि सनमान ॥
भोजन करि पति भृत्य ते बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुर दश बरष मो बन दीन्हों महिपाल ॥
सुथल बतावहु निर विघन तहां रहौं कछु काल ॥
कह मुनि राम नरेश प्रिय अरहु काह निज तंत्र ॥
अद्भुत चरित तुम्हार लखि कोन भूलि हैं मंत्र ॥
अकथ अलौकिक रूप तव तर्कि सकै नहि केउ ॥
जानै सोइ करि कृपा तुम जाहि जनावो देउ ॥
निज रहिवो हित बेस्म जो पूछेउ सो सुनि लेहु ॥
कहें सुनें तव चरित जे तस्य हृदय तव गेहु ॥
मंत्र राज तव जपहिं जे रटैं निरंतर नाम ॥
निरद्वंदो निस्पृह सदा तस्य उरसि तव धाम ॥
पर त्रिय जानै जननि जिमि पर धन गरल समान ॥
सम लोष्ट सम कांचन नहिं तस्य मनसि तव थान ॥
जाति पाँति धन धाम तजि तुम्हे रहैं लवलाय ॥
तिनके मन मंदिर बसहु सिया सहित दोउ भाय ॥
तिनके मान न मोह मद त्वद दासन में नेह ॥
काम क्रोध कटु रहित जे ते मानस तव गेह ॥
तव उच्छिष्ट भोजन करैं तव प्रसाद पट लेहिं ॥
बसहु तासु उर राम जे क्षुधित हि भोजन देहिं ॥
दुख सुख समुझै एक सम शांत शुद्ध चित मौन ॥
जगत रीति ते रहित जे तस्य उरसि तव भौन ॥
षट विकार मय बपु लखै आतम रहित विकार ॥
करैं सदा सत संग जे तेहि उर भवन तुम्हार ॥
श्री मम सेवै गुरु चरण नावे द्विज पद माथ ॥

करौं नाम प्रभाव नित तहां बसहु रघुनाथ ॥
तप तीरथ व्रत दान करि मागहिं तव पद प्रीति ॥
बसहिं तरथ अपवर्ग जे चले राम रसजीति ॥

चौ० और हु इमि बहु आश्रम अहहीं ॥ बसेउ राम तुम लखि सुख तहहीं ॥
यहि अवसर सम सुफल जो चहऊ ॥ तौ चलि चित्रकूट में रहऊ ॥
चरणन सुर मुनि संत बिधाता ॥ चित्रकूट चिंतित फल दाता ॥
भले राम कहि कीन पयाना ॥ आइ कीन पयसरि अस्नाना ॥
तेहि दिन कामदगिरि प्रभु आये ॥ समाचार सुर सन्तन पाये ॥ ॥
आइ सकल सब नाये माथा ॥ नाथ आजु हम भये सनाथा ॥
पर्ण कुटी सुग सुभग बनाई ॥ निज निज लोक गये सुख पाई
सुनि सुनि आये कोल किराता ॥ कंद मूल फल धरि धरि पाता
देइ भेंट जो हाथ जोहारी ॥ निरखि राम छबि होइ सुखारी ॥
करि सनमान राम बैठारे ॥ तिन तब प्रभु ते बचन उचारे ॥ ॥
धनि तिन जानि प्रभु दरशन दीन्हों ॥ हम सब काहु कृतारथ कीन्हों
अब तुम इहैं बसहु सब मासा ॥ सकल सोज कर अहै सुपासा
हम तव दास सहित परिवारा ॥ आयसु देत न करब बिचारा
करि परितोष बिदा प्रभु कीन्हे ॥ चले भवन चरणन चित दीन्हे
जब ते राम बसे बन आई ॥ तब ते भयउ सकल सुखदाई ॥
फूलहिं फलैं बिटप बहु भांती ॥ सुर तरु सम बिहरत अलि पांती

दो० करि हरि कपि वृक कोल मृग बिचरत बैर बिहाइ ॥
प्रेम बिबस चलि जाहिं तहँ जहँ दरशन होइ भार ॥

गीतिका छं० चलि जाहिं तहँ जहँ बंधु दोउ तब देखि सुर तापस कहैं । ये अहैं बड़भागी सकल जे प्रभु इ सब लोकन रहैं ॥ हि म मोल सुर तरु जन्तु जा गिरि गहन पय सरि देखहीं । तहँ भाग्य जानहिं तुच्छ पायुहि तिन्है बड़ करि लेखहीं ॥ ॥

इति श्रीविश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसनेही कृत श्रीरामचित्रकूटआगमनो नाम त्रयो
ऽध्यायः १०॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं मानस मत कछुक आगिवेश कृत आनि॥
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे सो मैं कहौं बखानि॥
अब सो सुनहु सुमन्त जिमि अवध गये दुख मानि॥
केवट ह्वै हरि ते बिदा जब आयो निज ग्राम॥
देख्यो परे सुमंत महि रटै राम हा राम॥ ॥
जाइ निषाद विषाद बस लीन्ह्यो गोद उठाइ॥
चर्चि चढ़ाये रथ विषे बहुत भांति समुझाइ॥
लीन्हे सेवक बोलि निज दीन्हे करि तिन साथ॥
चलत न हय हिहिनात हैं फिरि देखि दृग रघुनाथ॥
इत उत ऐंचत अटत मग लेत जो हरि को नाम॥
चित वत तेहिं तन हरि दिवस पहुँचे कोशल धाम॥
पुर प्रवेश नहिं करि सकत तकत सचिव निशि छोर॥
जैसे जाइ चोराइ गृह सब कर समुझा चोर॥ ॥
मनमें करत विचार मोहिं देखि पूछिहैं लोग॥
कौन उतर दैहौं तिन्हें नृप रानिन तव भोग॥
निकसत निठुर न प्राण मम रहत कौन सुख लागि॥
धृग जीवन रघुवीर बिन जरत न बपु बिरहागि॥
अर्धघरी निशि गत गये कौशिल्या के धाम॥
सुनि नृप उठि उर लाइ कह कहु सुमंत कहँ राम॥
तब सुमंत बोले समुझि धीरधरहु उरनाथ॥
हानि लाभ जीवन मरण दुख सुख सब के साथ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सब का कौन अराम प्रभु सीता लषण समेत॥
आपु गये बन लवचन लगि मोहिं पठै दुख हेत॥
सुनि महिपाल बिहाल है गिरयो धरनि पछिताइ॥
अन्ध आपकी सुरति करि कही सबन समुझाइ॥
सत्रिय विप्र दै बाध सुतश्रवण बध्यो गज जानि॥
तजिहों तन सुत बिरह इमि दिहिनि शाप दुख मानि॥
पतंगिका के पूंछ में सींक चलाई जोन॥ ॥
लहौं तासु फल महा मुनि भूल तहां हम कौन॥
कह्यो शंभु को लिङ्ग जहं जल जासन को माथ॥
मिटत कर्म बस भानु जहं तहं हम का रघुनाथ॥
सत्य कहत श्रुति कर्म बिन भोगे छूटत नाहिं॥
नाम रटनिते मिटत जिमि चूना परि निधि माहिं॥
राम मातु बोली बिलखि नाथ धरहु उर धीर॥
तो मिलिहैं सिय राम फिरि सो भ सुनी रघुबीर॥
हाय राम सिय लषण कहि हाय राम करि शोक॥
तृन सम हरि हित त्यागि तनु भूप गयो सुरलोक॥
लखि लागीं रोवन रवनि गुन बल तेज बखानि॥
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन जानि॥
यहि बिधि बीती राति सब प्रात काल मुनि आइ॥
शोक मिटायो सबन कर बिबिध प्रसंग सुनाइ॥

चौ॰ कह वशिष्ठ मन धीरज धरहू॥ धर्म बिचारि शोच परिहरहू॥
जो जनमत सो मरत बिशेषी॥ देह दृष्टा यह अघटित देखी॥
कनक कसिपु हरणाक्ष सरीखे॥ गुणिन केर गुण गुणि यत जीखे॥
सागर सहस भुज आदि नरेशा॥ सुमिरन मात्र रहो अवशेषा॥
जिन के रथ यहि बन ते सागर॥ भेय सो भये काल बस नागर॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पूर्व कर्म अनुसार जहाना ॥ हात मौत करि बिबिध बहाना ॥
प्रथम सृष्टि जब रची बिधाता ॥ लहै न कोइ तहं जीव निपाता ॥
तब रचि मौत बधाय सु दीन्हा ॥ अयश समुझि तेहि रोदन कीन्हा ॥
आंसुन ते भय रोग घनेरे ॥ कह बिधि ये सब संचर तेरे ॥
इनके वोट हरो तुम प्रानी ॥ कल सोई बिधि आज्ञा मानी ॥

दो॰ मेदिनि मेरु मझारि सुर सोउ एक दिन नशि जात ॥
गज श्रुति सम नर आयु चर ताको कौन बिसात ॥
लही बड़ाई भूप वर हरि हित परिहरि देह ॥
षट बिकार परते परे आतम आनन्द गेह ॥
छेदि सकै नहिं शस्त्र जेहि पावक सकै न जारि ॥
मारुत सकै न सोषि यहि बोरि सकै नहिं बारि ॥
जिमि बिहाइ जीरन बसन धारत मनुज नवीन ॥
तिमि देही तनु जीर्ण तजि नूतन गहत नवीन ॥
आदि अन्त अव्यक्त है मध्य जासु कछु व्यक्त ॥
तेहि आतम के हेत की करहु कलस नात्यक्त ॥
रोये जो मिलि जाइ तेहि रोवै भले पुकारि ॥
जोन मिलै रघुनाथ तो धीरज धरे बिचारि ॥
सज्जन के संसर्ग ते कश्यन मानस ताप ॥
मिटी मिटत मिटिहै न मुनि त्यागिये सबन कलाप ॥
तेल नाव तनु राखि नृप लिये दूत युग बोलि ॥
बेगहि लावहु भरत कहं कह्यो न तुम कछु खोलि ॥
चले चार दूत पवन जिमि जहं भरत दोउ भाइ ॥
दीख भयावन स्वप्न निशि भावन पहुंचे जाइ ॥

चौ॰ भूतादिक तहं पहुंचे जाई ॥ गुरु निदेश सुनि दोनहु भाई ।
चपल बाजि चढ़ि तुरत सिधाये ॥ कुहू दिवस निज नगरहि आये

पुर प्रविशत भे असगुन भारी ॥ घरे देखि सब जीव दुखारी ॥ ॥
लोग मिले नहिं कुशल सुनावैं ॥ गवैं जोहारि जोहारि सिधावैं ।
गे चलि प्रथम केकई गेहा ॥ बैठारे तिन सहित सनेहा ॥ ॥ ॥
पूंछि कुशल निज नैहर केरी ॥ बोले भरत तासु तन हेरी ॥ ॥
भूप कहाँ सुरलोक पधारे ॥ कारण राम विरह के मारे ॥ ॥ ॥
दुख किं देत रहे युवराजू ॥ काहे न दिहिनि कि हेउ मैं काजू ॥
कौन काज नृप पद तब हेता ॥ लिहेउं दिहेउं रामै बन चेता ॥
राम कौन सुत सवति के जानी ॥ सवति कौनि कौशिल्या रानी
बोलत कस कहं राम सभाई । गे बन बंधु सहित महि जाई ॥
सुनि महि मुरछि गिरे दोउ भ्राता ॥ कहि हा राम लषण सिय ताता
हा पितु स्वर्ग लाग प्रिय तोहीं ॥ रामहिं सौंपि गयऊ किन मोहीं ।
हा सिय राम लषण मम पाछे ॥ सहिहैं दुख बन मुनि पट काछे
हे जननी तैं अस वर मांगे ॥ हरे सकल सुख एकहि लागे ॥ ॥
जौ तें यहे रहे उर धारे ॥ जनमत मोहिं मारि किन डारे ॥ ॥
राम सबहि प्रिय प्राण समाना ॥ तैं किमि तिन्है कहे बन जाना ॥
भूप प्रतीति कीन्हि भलि तोरी ॥ मरन काल कछु मति भइ भोरी
भूप लगाइ न दोष तुम्हारा ॥ दुख कर मूल अभाग हमारा ॥
अब दृग ओट बैठ उठि जाई । तेहि छिन लहौं मैं घरा आई ।
लखि कर पु दवन लात यक मारी ॥ गिरी भूमि हा हाय पुकारी ॥
पकरि केश झटत उत घसि लावा ॥ पर अपकार केर फल पावा ।
भरत साधु लखि दीन छुडाई ॥ कौशिल्या गृह गे दोउ भाई
राम मातु उठि हृदय लगाये ॥ जनु बन राम लषण फिरि आये
रोदन करि पुनि हाल सो बरना ॥ राम गवन बन भूपति मरना ॥
जन्म मरण फल भल नृप लीन्हा ॥ मोहि विधि विरचि बज्र करि दीन्हा
मातु गिरा सुनि दुख रस बोरी ॥ बोले भरत बिलखि कर जोरी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मातु मृषा मोहिं विधि जन मावा ॥ मम पाछे सबहुन दुख पावा ॥
कैकै सुत अपयश अधिकाई ॥ मातु मते मोहिं कौन बताई ॥

दो० जो अघ गो द्विज मातु पितु सुत तिय मारे होइ ॥
जो मम सम्मत होइ तौ मोहिं अघ लागै सोइ ॥
शिव निरमाय लपल भवीमद विभिचारा सोर ॥
जो गति पावै सोइ मोहिं मिलै मानि मत मोर ॥
जे श्रुति निंदक हरि विमुख खल संगति न सोहातु ॥
तिनकी गति मोहिं मिलहि जो होइ अरमत मातु ॥
मातु भरत के वचन सुनि बोली सुचि सुख धाम ॥
रामहिं प्रिय तुम प्राण सम तुम्हें प्राण सम राम ॥

सो० तात मातु मत माहिं । तुम्हें कहैं मति मन्द ते ॥
सुगति लहैंगे नाहिं । अस कहि लियेउ लगाइ उर ॥

चौ० एहि विधि विलपत रैनि सेरानी ॥ होत प्रात आये मुनि ज्ञानी
करि प्रबोध भरतहि समुझावा ॥ उठे तुरत गुरु आयसु पावा ॥
नृपतन छालि बेवान बनाई ॥ राखी मातु सकल समुझाई ॥
गंधसार समधी बहु लीन्ही ॥ दाह क्रिया सरयू तट कीन्ही ॥
पांडु पीर वाते श्रुति रीती ॥ दीन्हि तिलांजलि सबन सप्रीती ॥
गौर पक्ष ग्यारसि दिन जाना ॥ कीन भरत दश गात्र विधाना ॥
द्विजहि दान दीन्ह्यो सब भांती ॥ तिसरे दिन भइ तेरही सांती
पितु हित भरत कीन्ह अस करनी ॥ सो मुख सह सहु जाइ न बरनी

दो० एका दिन गुरु जन सकल जुरे सभा मधि आइ ॥
शोच बिवस लखि भरत ने तब बोले ऋषि राइ ॥

चामर छं० सुवन सुनि लीजिये । सबन सुख दीजिये ॥
दृगन जल पोंछिये । नृपहि कत शोचिये ॥

छप्पै शोचिय द्विज निज धर्म त्यागि जो रहे विषे रत । शोचि

य नृप नय रहित सहित तम तोष पोष गत ।। शोचिय बरिा-
क बजाइ पाइ धन धर्म न ठानहिं। शोचिय तिय पिय छलनि
शूद्र विप्रहिं अपमानहिं ॥ शोचिय यती विराग विन तिय
न शोचिय सब भांति भल। सुर दुरलभ तनु पाइ जिन भजे-
उ नरायहिं छांड़ि छल ॥

चौ० शोचनयोगन जनक तुम्हारे॥ नीति निरत त्रिभुवन उजियारे
प्राण पुत्र तजि राखे बचना॥ प्रगटी प्रेम प्रीति की रचना॥ ॥
अस जिय जानि शोच परिहरहू॥ पितु आयसु सो सिरपर धरहू
तुम्हें राज्य दैगे नृप ज्ञानी ॥ पालहु प्रजहि परम हित मानी ॥
सुरपुर नृप पर तोषै पैहैं ॥ राम लषरा सिय सुनि हरषैहैं ॥ ॥
यामें दोष न निगम बतावै ॥ जेहि पितु राजि देइ सोइ पावै ॥
सुनि सुमित्र कौशिल्या बोली॥ गुरु आज्ञा सुत अहै अमोली
पुनि पितु बचन जाइ बलि संबा॥ होउ तात सबका अवलंबा
सुनि मृदु बचन भरत अकुलाने॥ बोले सबन नेह बस जाने॥

दो० यदपि मातु पितु गुरु बचन बिन बिचार चहि कीन॥
तदपि मोह बस उतरु मैं देत क्षमेहु लखि दीन॥

चौ० प्रथम पिता पन पूर निबाहा॥ राम लषरा सिय बन भल चाहा
जो मोहिं राजि देत बरजोरा॥ यामें हित तुमार की मोरा॥ ॥
मम हित सो रघुपति पद सेवा॥ अपर उपाइ न जानहु देवा।
हित तुम्हार हम ते किमि होई॥ केकै सुवन जान सब कोई ॥
जेहि उदगारि सबका दुख दीन्हा॥ कारण ते कारज कइ चीन्हा॥
मन मुख मूल सरिस सुखदायक॥ धर्म शील चाहिय नर नायक
तेहि ते सबै कहौं शिर नाई॥ आयसु याहि देहु हरषाई ॥ ॥
प्रात काल रघुपति पहँ जावों॥ जरनि मिटै जब दरशन पावों।
भरत बचन सुनि सब हरषाने॥ बोले मुनि तुम परम सयाने॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शोक सिंधु बूड़त अवगाहू ॥ तुम अवलंब दीन सब काहू ॥ ॥
मातु मते औ तुम्हे बताई ॥ सो सठ कीट नर्क दुख पाई ॥ ॥ ॥
अवशि चलहु बन जहँ अवधेशू ॥ गे निज निज गृह पाइ निदेशू ॥
भरत बोलि सुचि सेवक लीन्हे ॥ भवन भंडार सौंपि सब दीन्हे ॥
सचिवहि दीन तिलक कर साजू ॥ विपिनि देव गुरु रामहि राजू ॥
होत प्रात चढ़ि पुरजन जाना ॥ सबन कीन बन ओर पयाना ॥ ॥
जेहि राखहिं गृह रक्षा हेता ॥ सो कहैं हरि बिन जरै निकेता ॥
सुक सारिका पिंजरन बोलैं ॥ अधिक उचाट कपाटन खोलैं ॥
चढ़ि चढ़ि रथ ऋषि द्विजन समेता ॥ चले सकल बन रघुपति हेता ॥
शिबिका सुभग समूह सँवारी ॥ चढ़ि गवनी मुनि तिय नृप नारी ॥
जेष्ठा दी बिबेक कहि मोदे ॥ भरत शत्रुहन चले पयादे ॥ ॥
भरतहि देखि लाग अनुरागे ॥ तजि तजि जान चलन पग लागे ॥

दो० कौशिल्या दिग जाइकै कह्यो चढ़ो रघुनात ॥
है है पुरजन बिकल अति सुनत चढ़े होउ भ्रात ॥
प्रथम दिवस तमसा रहे उभै गोमती तीर ॥
तिसरे दिन बस सई दिग प्रात चली सब भीर ॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमतआगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत भरत चित्रकूट गमनो नामच-
तुर्दशोऽध्यायः १४॥

दो० जेठ कथा चतुरथ दिवस भृग सरु नियरान ॥
आवत भरत निषाद सुनि गुरि फराइ दिल खान ॥
प्रथम मातु मिलि दीन बन अब लै कपट समाज ॥
चढ़े राम सिय लषण पर करन अकंटक राज ॥
जो न होत यह बात उर तौ न लेत दल साथ ॥
उभै भाँति गुह जाति सब बोलि लिये रघुनाथ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० तिन ते कहिसि सजग सब होहू ॥ पारि हारि तात सुतन कर छोहू ॥
सन्मुख समर भरत ते करहू ॥ राम हेतु तनु तजि भव तरहू ॥ ॥ ॥
चतुर चित्र नीते मनि लेहीं ॥ मूढ रतन कौड़ी लगि देहीं ॥ ॥
भले नाथ कहि भट अनुरागे ॥ कसि कसि अस्त्र शस्त्र भे आगे
सब निज कटक देखि गुह राजा ॥ कहेसि जुझार बजा बहु बाजा
तेहि अवसर भइ बांयें छींका ॥ सगुनिन कहा सगुन यह नीका
रामहिं भरत मनावन जाहीं ॥ तुमते होव रारि कछु नाहीं ॥ ॥ ॥
राम नाथ सुनि सबसे कहेऊ ॥ मैं अब जात सजग तुम रहेऊ ॥
लेहों भेद भरत कर जाई ॥ प्रीति अप्री तिन छित छिपाई ॥ ॥
कंद मूल फल सुरसरि नीरा ॥ घटन भराइ गयो तिन तीरा ॥ ॥
मुनिहिं कीन लखि दण्ड प्रणामा ॥ दीनि अशीस समुझि प्रिय रामा
भरत बिलोकि तुरत रथ त्यागा ॥ चलि तेहि मिले सहित अनुरागा
भेटत देखि देव अनकूला ॥ जयति जयति कहि बरषे फूला ॥
कहें वशिष्ट कहं भरत निषादा ॥ भेटत ताहि सहित अहलादा ।
यह हरि शरण केरि प्रभु ताई ॥ नीचहु होत पवित्र लखाई ॥ ॥
पूंछी कुशल भरत ता केरी ॥ अबसब भांति कुशल भइ मेरी ॥
समुझि मोहि जे प्रभुइ न भजहीं ॥ ते जग वंचक सब सुख तजहीं ।
बहुरि मिले रिपु दवन कुमारा ॥ पुनि सब रानिन कीन जोहारा ।
दिहिनि अशीष लषण सम जानी ॥ पुरजन लखि हरषे सुख मानी
कहैं सकल यह है बड़ भागी ॥ भेटे जाहि राम अनुरागी ॥ ॥
तब निषाद निज लोग बोलाये ॥ घर बन बाग सकल भर जाये ।
प्रथमें सब सुरसरितट गयऊ ॥ करि मज्जन सुख पावत भयऊ ।
मांगि मांगि रघुपति पद नेहा ॥ टिके आइ जहं तहं तरु गेहा ॥
तब गुह पति बहु असन मंगाये ॥ कन्द मूल फल सबहि नखाये ॥
भक्त सखा कहि लीन जवाई ॥ गे जहं रैनि रहे रघुराई ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कुस साथरी देखि तरु पयामा ॥ परिकमा करि कीन प्रणामा ॥
दो० सजल नैन हि मखाते बोले सकुल समेत ॥
हाय राम सिय लषण बन सहत विपति मम हेत ॥
चौ० जनक सुता अतिशै सुकुमारी ॥ सासु ससुर पति प्राण पियारी ॥
लोने लषण सरिस सुचि भ्राता ॥ भयो नअहै नहै है ताता ॥ ॥
मृदु मूरति रघुपति सुकुमारे ॥ जीव चराचर सबहिं पियारे ॥ ॥
ते सोवत बन दर्भ डसाई ॥ बिधि गति मति कछु जानि नजाई ॥
जिन्है प्राण सम पितु महतारी ॥ जोगवत रहे नगर नर नारी ॥ ॥
तेबन चिचरि फूल फल खाहीं ॥ देखि हृदय मम फाटत नाहीं ॥
छण छण छण मोहिंबारहि बारा ॥ धन्य तात प्रण भल प्रति पारा ॥ ॥
सुनि बोला कर जोरि निषादू ॥ जानि बाम बिधि तजहु निषादू ॥
नाथ आपु प्रिय रामै भारी ॥ करत रहे उत कथै तुम्हारी ॥ ॥
धरहु धीर सुख समुझि प्रनामा ॥ करहु सयन चलि गये मुकामा
हरि गुण कहत भयो भिन सारी ॥ करि मज्जन सब भये तयारा ।
केवट नाव अनेक मगाई ॥ उतरि सकल चलिभे हरखाई ॥ ॥
सानुज भरत पयादे देखी ॥ सुचि सेवक सकुचाहिं बिशेखी ॥ ॥
तिसरे पहर प्राग चलि आये ॥ करि अस्नान सबन शिर नाये ॥ ॥
बिप्रन दान दीन बहु भांती ॥ मांगि राम पद प्रीति सोहाती ॥ ॥
जानि काम प्रद तीरथ नाथा ॥ बोले भरत जोरि युग हाथा ॥ ॥
सब फल दायक तुम भगवाना ॥ दीजे आज्ञु सकृत मोहिं दाना ॥
दो० चहौं न सुगतिन सुमति सुख रिधिसिधिमें नहिं नेह ॥
बढ़े रामपद प्रीति नित यही दान मोहिं देहु ॥
शशि चकोर घन मोर धन कृपिन मकर मधुरीति ॥
सातृक स्वाती ते अधिक प्रभु पद बाढ़े प्रीति ॥
जो कहो प्रथमें तजि तिन्हें कतगवनेहु परभोन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अंत अनुग अज्ञान ते अघन होय अस कौन ॥ ॥

सो० भरथ बचन सुनि सार । भईत्रिवेणी में गिरा ॥
तात तजहु कुविचार । तुम रामहिं प्रिय प्राणसम-

चौ० बेनी बचन भरत सुनि हरषे । कहि बड़ साधु सुमन सुर बरषे ॥ ॥
भरद्वाज पहँ गे दोउ भाई ॥ कीन दण्डवत मन सकुचाई ॥ ॥
शीष अरतु पुनि भेजल भारी ॥ पद झलकत झलका जनु बारी ॥
लखि मुनीश उठि हृदय लगाये ॥ देइ अशीश निकट बैठाये ॥ ॥
कहि अरथि तुम सकुचत कत ताता ॥ अचल ईश गति बाम बिधाता ॥
रामहिं प्रिय तुम समनहिं कोई ॥ तब मन कहब लहब अघ सोई ॥
मल लेहु भजाहि तदपि नहिं फीका ॥ प्रभु पद प्रेम किहेउ अति नीका ॥
तेहि पर कहि कलंक बड़ येहू ॥ हम सब का उपदेशहि देहू ॥ ॥
समुझि परत मोहि अस निरबहेऊ ॥ राम कृपा मूरति तुम अहेऊ ॥
बालक बिधि सम सुयश तुम्हारा ॥ हरण ताप तम पाप अपारा ॥ ॥
भरि नयनन छबि निरखि तुम्हारी ॥ हम आपुनि बड़ि भाग बिचारी ॥

दो० सब साधन कर फल लहा लखण राम सिय दर्श ।
तेहि फलकर फल अब भयो भरत त्वया अस्पर्श ।

चौ० सुनि मुनि बचन भरत तब बोले ॥ पुलकि गात जल लोचन लोले ।
नाथ मोहिं नहिं पितु कर शोचा ॥ नहिं दुख जिय जग कहे कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शंका ॥ नहिं कछु डर बिधि भयो बिवंका ॥
एकहि कष्ट हृदय मम भारी ॥ लषण राम सिय होत दुखारी ॥ ॥
यहि आमय की औषद आवे ॥ तब कछु और बात मन भावे ॥ ॥
कह मुनि करहु न शोच तुम्हारे ॥ सब दुख मिटिहैं प्रभुइ निहारे ॥
आजु होउ तुम अतिथ हमारे ॥ भले नाथ कहि कटक सिधारे ॥ ॥
तब मुनि करि बिचार सुख पाई ॥ ऋद्धि सिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा ॥ हरषी सकल पाइ बड़ देवा ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रथम कनक मय महल सोहाये ॥ कैयो योजन माहिं बनाये ॥ ॥
दीन्ह्यों बास सुरुचि सब काहू ॥ सुभग सेज स्त्रक सरस उकाहू ॥ ॥
असन बसन बर भोग अनेका ॥ दिये तोपि तिन एक पर एका ॥ ॥
दासी दास अप्सरा नाना ॥ बाग तड़ाग बिबिधि पोमाना ॥ ॥
सुर दुरलभ सुख लहि सब लोगा ॥ बिसरे घर बन बिरह बियोगा ॥
भरथ बिलोकि मुनीश प्रभाऊ ॥ भयो राम पद अधिकहु चाऊ ॥
चक्र बाक सम रैनि बितायो ॥ प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो ॥
बर बिराग बिपेन्द्र निहारी ॥ मुदित दिये संग सेवक चारी ॥ ॥
आयसु पाय सुसेन सिधाये ॥ बीच बास करि यमुनहि आये ॥ ॥
रघुपति बरण निरखि बर बारी ॥ हरषत भये सकल नर नारी ॥ ॥
भरत भाव भरिग सक तन धोखा ॥ अपर कबिहि अति अगम बिशेषा
जिमि मन मलिन मनुष्यन कैहा ॥ दुरलभ ब्रह्मानन्द अग मेहा ॥
तेहि निशि रहि तहँ उठि भिनसारा ॥ एकै खेव भये सब पारा ॥ ॥
करि अस्नान चले शिर नाई ॥ देखि कहैं मग लोग लुगाई ॥ ॥
का दोउ राम लषण हैं सोई ॥ होती संग सीय कहे कोई ॥ ॥
सैन साथ पुनि मानस खेदा ॥ तब इक सखी कह्यो सब भेदा ॥
सुनि सो कथा सकल अनुरागीं ॥ भरतहिं बहुरि सराहन लागीं
कैकेय योगन सुतये अहहीं ॥ ॥ एक कठोर बिधाते कहहीं ॥
भली भई भव भूत बिगारी ॥ एक कहैं अस कहो नप्यारी ॥ ॥

दो० राज्य हरण पुनि पितु मरन बिपिनिचरण जगदीश ॥
दैव करै ऐसी बिपति परै न काहू शीश ॥ ॥

चौ० यहि बिधि जहँ तहँ ग्रामनिवासी ॥ कहैं सुनैं सुमिरैं सुख रासी ॥
भरतहि जिन देखे मग लोगा ॥ तिनके सकल मिटे भव रोगा ॥
सहित समाज जहां मग धरहीं ॥ महि कोमल तरु छाया करहीं ॥
यह बड़ि बात भरकै नाहीं ॥ जिन्हैं राम सुमिरत मन माहीं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखि गुरु ते बोले सुरराजा ॥ बनी बात ऽअब होत ऽअकाजा ॥
रामहि भरत मनावन जाहीं ॥ ऽअस कछु करहु मिलें जेहि नाहीं
दो० कहहु सुर गुरु हरिभक्त जो कोउ ऽकरत कुचालि ॥
परत पलटि तेहि शीश सोइ ज्यों रज रविहि उछालि ॥
सेवक की सेवा किहे हरिहि होत परितोष ॥ ॥
करै भक्त ते बैर जो जरै राम के रोष ॥ ॥
यद्यपि एक रस एक प्रभु गहत न मारा सार ॥
तदपि सुभक्तन हित करत सम ऽअरु विषम बिहार ॥
चौ० ऽअस जिय जानि तजहु ऽअविचारू ॥ सुमिरहु भरत चरण सुखसारू
सुनि सुरपति उर धीरज ऽआवा ॥ बरषि सुमन पद प्रेम बढ़ावा ॥
पूछत प्रभु भरतहि चलि ऽआये ॥ नय निवास करि प्रात सिधाये
सब के उर ऽअभिलाख बिशेखी ॥ कब सिय राम लखण मुख देखी
तब निषाद गिरवरहि देखावा ॥ प्रेम मगन सबहिन शिर नावा ।
सुमिरत नाम दशरथ की ऽआथा ॥ उभय कोश चलि कीन निवासा
प्रात काल उठि चले बिशेखा ॥ इतै सिय स्वप्न प्रात ऽअस देखा
पुरजन सहित भरत जनु ऽआये ॥ सासु ऽआन बिधि सब दुखताये
सुनि प्रभु कह्यो स्वप्न भल नाहीं ॥ कीन ऽअस्नान शोच मन माहीं
उत्तर दिशि देखी नभ धूरी ॥ दुरे ऽआइ खग मृग तहँ भूरी ॥ ॥
तब तें चकित उठे रघुराई ॥ ऽआइ किरात न खबरि जनाई ॥
भरत ऽआगमन सुनि रघुबीरा ॥ भये प्रेमबस पुलक शरीरा ॥
पुनि मन शोच कीन रघुराऊ ॥ उत सुर हित इत बंधु स्वभाऊ
बहुरि समुझि मन भये सुखारे ॥ भरत कहे महँ ऽअहैं हमारे
दो० लखण लख्यो प्रभु शोच बस उर मनुष शर साधि ॥
बोले सन्मुख जोरि कर सहित क्रोध ऽअह लाधि ॥
चौ० नाथ कनक रसना प्रभुताई ॥ पावत पुरुष जात बौराई ॥

बेनु नहुष भुज सहस सुरेशा ॥ शशि त्रिशंकु ययाती दिनेशा ॥
अरु कृतवीर्य दसगति गाई ॥ सुरसरी में नहिं सिंधु समाई ॥ ॥
भरत साधु बड़ रहे सयाने ॥ तेउ राज मद पाइ भुलाने ॥ ॥ ॥
विपिन नयकाकी समुझि सुभाये ॥ करन अकंटक राज सिधाये
जो मन में यह बात न आवत ॥ तौ केहि कारि हारि कटक सोहावत
प्रथम मातु मिलि किहिनि खोटाई ॥ समय पाइ फल लागन आई
भरतहि आजु सबन्धु प्रचारी ॥ नाथ सपथ रण डरिहौं मारी ॥
अति अपमान रजहिं नहिं सोहै ॥ हम नृपतनै करावहु सोहै ॥ ॥
सुनत बचन लोकप भय मानी ॥ तब तहँ भई गगन इमि बानी ॥
ऐसे भलहैं तात तुम्हारे ॥ परिबुध करत न कछु अविचारे ॥
सकुचे लषण राम सनमाने ॥ तात बचन तुम सत्य बखाने ॥
भरत सरिस शुचि बंधु जहाना ॥ भयो न अहै तात नव आना ॥
गरुड़े बहु रजु अहि गहि खावै ॥ गोपद बूड़ि घटज बरु जावै ॥
भरतहि होब न नृप मद भाई ॥ बिन मांकि पयनिधि इव हरखाई
गुण अवगुण मय जग विधि कीन्हा ॥ भरत हंस जल तजि पय लीन्हा
यहि विधि प्रभु इत करत बड़ाई ॥ उतै भरत पय सरित नहाई
सकल समाज राखि तेहि तीरा ॥ आपु चले जहँ सिय रघुबीरा ॥
संग निषाद नाथ लघु भ्राता ॥ विविध कुतर्क करत मग जाता ॥
कैके सुत लखि चहैं तजि देहीं ॥ सेवक समुझि अपर करि लेहीं
तजेहु अतजेहु मोहिं गति याहीं ॥ शिशु न तजि मातु पितहि कित जाहीं
यहि विधि ठटु कल बदत अधीरा ॥ आये चलि प्रभु आश्रम तीरा
फूले विटप अनेक प्रकारा ॥ खग मृग मधुकर करत बिहारा ॥
दो० पाकरि जंबु तमाल चुल तामधि बट लख श्याम ॥
जेहि तर सरिता तट बनी परण कुटी अभिराम ॥
तहँ तुलसी तरु सुमन लक रुचिर वेदिका एक ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होत कथा नित आइ तहँ बैठत साधु अनेक॥

चौ॰ चलत शोभा जब भरत निहारी। मिटे सकल दुख भये सुखारी॥
चले प्रणाम करत दोउ भाई। पहुँचे जब रघुपति पहँ आई॥
उठे तुरत प्रभु जबै निहारा। कहुँ धनु शर कहुँ दूर बिसारा॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हो। मिलनि निरखि सुर जय जय कीन्हो॥
प्रीति प्रतीति भरत रघुवर की। बिधि हरि हर सुर सकहिं न तरकी॥
हौं केहि भांति कहौं मति थोरी। मिले लषण ते भरत बहोरी॥
राम सखहि भेंटे हरषाई। मिले शत्रुहन प्रेम बढ़ाई॥
केवट लषण शत्रुहन भेंटे। पुनि दोउ बंधु सियापद लेटे॥
दीनि अशीश सहित बैठारे। भे अनुकूल बिलोकि सुखारे॥
तब केवट वर बचन सुनाये। प्रभु मुनि मातु लोग सब आये॥
गुरु आगवन सुनत रघुबीरा। गये जहाँ सरि तट सब भीरा॥
मुनिहिं प्रणाम कीन दोउ भाई। प्रेम समेत लिये उर लाई॥
विप्र विप्र बनितन शिर नावा। आशिर्बाद सबन ते पावा॥
आरत लोग समुझि सुखाला। पल मा सबै मिले दोउ भ्राता॥
पुनि देखी सब मातु बिहाला। प्रथम कैकइहि मिले कृपाला॥
पद परि प्रभु तेहि कीन सुखारी। बहुरि सकल भेंटी महतारी॥
मिले सुमित्रहि पुनि दोउ भाई। कौशिल्यै भेंटे अकुलाई॥

दो॰ अति सनेह बस मातु दोउ बंधु लिये उर लाइ।
तेहि क्षण भयो बिलाप जस तस को पै कहि जाइ॥

सो॰ भेंटि सबै दोउ भाइ। गुरुहि कह्यौ पग धारिये।
मुनि कर आयसु पाइ। उतरे जल थल हेरि सब॥

चौ॰ द्विज गुरु सचिव मातु लै साथा। आये निज आश्रम रघुनाथा॥
सिय उठि मुनि पद नायो माथा। उचित अशीश दीनि अरुंधिमाथा॥
मुनि गुरु तिय द्विज प्रिय पद लागी। दीन अशीश सकल अनुरागी॥

मासुन सकल मिलो बैदेही ॥ लखि लखि सबै लाइ उर लेही ॥
तब मुनीश सब का बैठाये ॥ प्रथम कछुक हरि चरित सुनाये ॥
पुनि नृप सुरपुर गवन जनावा ॥ सुनि सिय राम दुसह दुख पावा ॥
करहिं बिलाप लषण युत रानी ॥ सो करुणा नहिं जाइ बखानी ॥
तब बिधि सुत दीन्ह्यो सहज्ञानी ॥ सबहिन जाइ कीन्ह अस्नाना ॥
दशम दिवस रह्यो तेहि दिन चीन्हा ॥ बरतनि जला सबहिन कीन्हा ॥
प्रातहि जो ऋषि आयसु दिहेऊ ॥ सो प्रभु सहित प्रीति ते केहेऊ ॥
करि पितु क्रिया बेद बिधि रीता ॥ मदन दिवस भे शुद्ध पुनीता ॥

सो० परम पुनीत जोइ । कोइ न जानत जासु गति ॥
नर नाटक कृत सोइ । करत निजा नुग भाव बस ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत भरत चित्रकूट आगमन राम मिलाप बर्णनो नाम पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

दो० सुमिरि राम सिय मन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं मानस मत कछुक अगिनि बेस कृत आनि ॥
कौशल पुर बासी सकल सुखप्रद परवत पास ॥
बसत कमत तनु लसत लखि न शल जगत की सास ॥
तब रघुपति गुरु ते कह्यो नाथ बिकल सब लोग ॥
लखि मोहिं श्रम सम जात पल नहिं फल भस यायोग ॥

चौ० बोले मुनि तुम सुनहु कृपाला ॥ प्रथम लोग सब रहे बेहाला ॥
मन ते कीन्हिनि दरश तुम्हारे ॥ तबही ते सब भये सुखारे ॥ ॥
तेहि ते रहन कछुक दिन देहू ॥ भले नाथ कहि गे निज गेहू ॥
लागे रहन मुदित नर नारी ॥ देखि शैल सब होइ सुखारी ॥ ॥
पय सरि करहिं त्रिकाल सनाना ॥ कंद मूल फल लै सै नाना ॥
कोल किरात मुदित ले आवैं ॥ धरि धरि आगे शीश नवावैं ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देहिं लोग धन लेहिं न सोई ॥ कहैं हमार भला किमि होई ॥ ॥
तुम सुकृती हम बनचर पापी ॥ राम कृपा भयउ दरश कलापी ॥ ॥
प्रिय पाहुन तुम सब सुख दाता ॥ सेवा योग न कीन विधाता ॥ ॥
फल दल लेहु दीन जन जानी ॥ रीझत साधु प्रेम पहि चानी ॥
सुनि मृदु बचन सकल अनुरागे ॥ तिनके भाग सराहन लागे ॥
प्रीति बिलोकि लेहिं फल फूला ॥ सुखी होहिं तब लखि अनुकूला ॥
यहि बिधि लोग सकल हरषाहीं ॥ बासर बीति पलक सम जाहीं ॥
सबके मन इच्छा यह होई ॥ जहँ सियराम तहैं सब कोई ॥
सिय करि सब सासुन पद सेवा ॥ किहिनि सुजस कोइ जानन भेवा ॥
यहि बिधि रीधि बासर चलि गयऊ ॥ तृतिया दिन सब बहुरत भयऊ ॥
भरत आगमन राम मुनि रानी ॥ निज मति सरिस कहैं सब बानी ॥
तेहि क्षण जनक दूत युग आये ॥ प्रभु देखि भे दुखित सुभाये ॥
बूझत गुरु विदेह कुशलाई ॥ बोले तब सुचार सिर नाई ॥ ॥
प्रभु अब कहहु कुशल कहि लागी ॥ कुशल हेतु सो भयो बिरागी ॥
ततरु कुशल गे अज सुत साथा ॥ मिथिला युत भइ अवध अनाथा ॥
नृप परलोक सुना जब राजा ॥ भये बिकल तब सहित समाजा ॥

**दो०** पुनि धीरज धरि अवधपुर दूत पठाये चारि ॥
खबरि कही तिन आइ तब आपुइ चले बिचारि ॥
किहिनि निवास न मग कहूं चलत भये दिन तीनि ॥
आइ पहूंचे खबर हित तब मोहिं आज्ञा दीनि ॥

**चौ०** जनकागमन सुनत रघुबीरा ॥ आनन चले संग बहु भीरा ॥
पुरजन सुनि सब भये सुखारी ॥ कहैं कि रहब बहुरि दिन चारी
गिरवर देखि जनक रथ त्यागा ॥ कीन प्रणाम सहित अनुरागा ॥
मग श्रम स्वल्प न काहूं पावा ॥ मनु प्रभु पास प्रथम हीं आवा ॥
इत उत लोग सकल नियराने ॥ लागे मिलन प्रेम रस साने ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जनक मुनिन पद नायउ माथा॥ ऋषिन प्रणाम कीन रघुनाथा॥
मिले बिदेहैं बंधु समेता॥ लै आये सह प्रीति निकेता॥॥
दोउ समाज मिलि भये बेहाला॥ रहन ज्ञान धीरज तेहि काला॥
भूप रूप गुण शील बखानी॥ रोवहिं सकल बिकल नृप रानी॥
रामहिं देखि अधिक उरदाहा॥ हाइ बाम विधि कीन्हे का हा॥
सुरनर मुनि सब भये दुखारी॥ नृप बिदेह की दशा निहारी॥॥
मोह बिवश भे जनक सुज्ञानी॥ यह रघुपति पद प्रीति पिछानी॥
जप तप योग बिरति बिज्ञाना॥ राम प्रेम बिन लोन्य समाना॥
मुनिवर सबहि बोध बहु दीन्हा॥ राम घाट तब मज्जन कीन्हा॥
उतरे सब जहँ तहँ जल तीरा॥ तेहि दिन सकल रहे बिन नीरा॥
आन सबन उठि कीन सनाना॥ कोल किरात बात सुनि नाना॥
कंद मूल फल सरस सोहाये॥ भरि भरि भार भूरि भट लाये॥॥
मुनिवर भेट जनक यहँ दीन्हे॥ सेन सहित नृप पारण कीन्हे॥
यहि बिधि भे गत बासर चारी॥ प्रभुहि देखि सब लोग सुखारी

दो॰ दोउ समाज कहँ नारि नर अवन जाब घर दूरि॥
सिय रघुपति संग रहब बन सुरपुर ते सुख भूरि॥
जेठ शुक्ल जिय युग दिवस जनक राज रनिवास॥
आयहु सुनि सब कारण तहँ जहँ सिय की सब सासु॥

चौ॰ कौशिल्या सादर बैठारी॥ श्रवत नयन जल सकल दुखारी
सिया मातु बोली बिधि करणी॥ परम कठिन कछु जान न बरणी
देखहु बिध बायस बहु तेरे॥ मधु मराल कहुं मिलत न हेरे॥॥
जन्म बिवाह उछाह अपारा॥ कहँ वह सुख कहँ यह दुख डारा
लखण मातु कह ऐसे अहई॥ बाल चरित सम कन जो रहई॥
कौशिल्या कह बिधिहि न दोषू॥ निज कृत कर्म केर सब रोषू॥
मोहिं न शोच भूपति कर कोई॥ नहिं बन जात राम सिय सोई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गूढ़ सनेह भरत कर देखी ॥ यही एक मोहिं शोच विशेखी ॥ ॥
तेहि ते दीन्ह कहेउ नृप नाहीं ॥ बहुरे लषण भरत संग जाहीं ॥
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई ॥ कहैं शेष पर सकैं न गाई ॥ ॥
जब लग मोसे बंदें महीपा ॥ भरत भये हमरे कुल दीपा ॥ ॥
कनक कसौटी चढ़ि खुलि जाई ॥ पुरुष परखिये औसर पाई ॥
मुनिवर वचन सकल बिलखानी ॥ अरहु धीर पुनि कह्यो सुबानी ॥
लषण मातु तब कह्यो सप्रीती ॥ देखि दशाइ युग यामिनि बीती ॥
कौशल्या कह अब थल जाहू ॥ हमरे तब पति शाप निबाहू ॥
सुनि बोली अस का इन कहहू ॥ राममातु दशरथ प्रिय अहहू ॥
अंगीकार करे गुरु नाहीं ॥ न्याय गिरि सम प्रतिपालन नाहीं ॥
तब हित हरि काहु को अनुसरई ॥ रवि सहाइ कहुं दीपक करई ॥

दो० रामलषण सिय जाव बन करि सुर मुनि को काज ।
फिरि ऐहैं निज नगर तब पैहैं त्रिभुवन राज ॥

चौ० याज्ञवल्क्य नारद इमि काहा ॥ झूठ न होव सत्य हम चाहा ॥
अस कहि सिय हित बिनै सुनाई ॥ आई निज थल करत बड़ाई ॥
प्रिय परिजन नाहिं मिल्यो लखि सीता ॥ भे सब बिकल मोह मद जीता ॥
जनक सियहि उर लाइ ल्यो लाई ॥ बोले पुनि धरि धीरज राई ॥
पुत्रि पवित्र सेउ कुल कीन्हो ॥ पावन सुयश सकल पुर लीन्हो ॥
सुनि पितु बचन सिया सकुचानी ॥ रैनि रहे भल यहाँ न जानी ॥
लखि रुख भे प्रसन्न पितु माता ॥ पठइ नि तब तहँ भेंटि सुगाता ॥
सियामातु तब पतिहि सुनाई ॥ कौशल्या कृत भरत बड़ाई ॥
सुनि पुलकित तन बोले राऊ ॥ ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ ॥
हम वशिष्ठ मुनि बहु अवगाहा ॥ मिली न भरत बुद्धि की थाहा ॥
योग भोग युत नय मैं राऊ ॥ किमि जानो हरिजन कर भाऊ ॥
भरत भाग्य गुण शील बिचारा ॥ शेष कहैं पर लहैं न पारा ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महिमा भरत केरि सुनु प्यारी॥ जानै राम न सकैं उचारी॥
तौ फिरि अपर सकै को गाई॥ चिरिया उर कहु सिंधु समाई॥

दो० लखगाहिं फेरहु भवन तव कहौं भरत बन जान॥
जो मैं पावहु थाह कछु प्रीति प्रतीति अमान॥

चौ० राम भरत के बाल प्रमाना॥ जानैं राम भरत नहिं आना॥
इमयि भरत की करत बड़ाई॥ हर्ष सहित सब रैनि बिताई॥
प्रातकाल करि मज्जन तीरा॥ जनक वशिष्ठ भरत रघुवीरा॥
कौशिकादि पुरजन अधिकाई॥ बैठे सब बट तरु तर आई॥
बोले तब राघव ऋषि तेरे॥ नाथ सहत दुख लोग घनेरे॥
जो आयसु मोहिं होइ गोसाईं॥ सो मैं करौं दास की नाईं॥
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा॥ कसन कहो यहि बिधि महराजा॥
अस कहि बहुरि भरत ते भाषा॥ कहो तात निज मन अभिलाषा॥
बोले भरत जोरि करि दोऊ॥ अवसर समुझि कहत सब कोऊ॥
बैठ जहँ प्रभु त्रिभुवन त्राता॥ पुनि कौशिक मुनि उभै बिधाता॥
तुम प्रभु विधि गति छेकन हारे॥ सचिव जनक पितु और हमारे॥
औरो ऋषि बैठे बहु ज्ञानी॥ तहँ हो लघु किमि सकहु बखानी॥
जो तुम सबकर आयसु होई॥ सोइ हित मानि करैं सब कोई॥
कह मुनि मम सम्मत सुनि लीजे॥ जो कछु राम कहैं सोइ कीजे॥
तृगुरा आदि दै जहँ लग ज्ञानी॥ राम रजाय सबन सिर आनी॥
कौशिक सचिव भरत मिथिलेशा॥ सबन कह्यो भल सम्मत एहा॥
जानि राम निज ऊपर भारू॥ बोले पुनि मुनि ते श्रुति सारू॥

दो० नाथ सपथ मुनि मांह जग भरत सरिस शुचि भाइ॥
भयो न है नहिं होन अब बहुत कहो का गाइ॥
जे गुरु पद रज सिर धरैं लोक वेद बड़ तौन॥
तेहि पर रौरे की कृपा भरत सरिस जग कौन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० मुखपर केहि विधि करौं बड़ाई। सकुचत सुमति समुझि लघु भाई॥
भरतै पावक कहै जो कोई। महा मूढ़ पापी है सोई॥ ॥ ॥
मातहि दोष देइ सोउ मूढ़ा। जानि न जाइ ईश गति गूढ़ा॥ ॥
मातन में अति प्रिय सोइ माता। भाइन में प्रिय भरत सुभ्राता॥
भरत देइँ मोहिं आयसु जोई। शम्भु सपथ मैं करिहौं सोई॥ ॥
सुनि प्रभु बचन डरे सुरराई। पठवत शारद सो नहिं आई॥ ॥
नब बास बशत पर अपकारी। निज उच्चाट सदन शिव डारी॥
जनक भरत मुनि सचिवै त्यागी। सुरमाया सो सब के लागी॥
मन उच्चाट भये सब केरे। छिन सोहात घर छिन बन हेरे॥ ॥

दो० बोले तब मुनि भरत ते तात कहौ अब सोइ॥
जेहि ते जावत जीव जग सबहि न कर हित होइ॥
सुनि मुनि ते बोले भरत देव कहौं सति भाव॥
मैं जानत निज नाथ कर अतिशै सरल सुभाव॥
जननि जनक सोदर सखा सेवक सचिव परोस॥
काहु न देख्यो आजु तक प्रभु कर बदन सरोस॥

चौ० सब पर कृपा करत सम लखाई। तदपि प्रीति मोपर अधिकाई॥
शिशुपन में खेलत प्रभु संगा। कबहुँ न किहिनि मोर मन भंगा॥
जो कछु वस्तु अनेरा खो पावें। मोहिं दिये बिन आपु न खावें॥
महूँ आजु तक अति पृथु जानी। प्रभु सन्मुख कछु बात न ठानी॥
निशिदिन रही दरश अभिलाखा। सो सनेह बिधि मोर न राखा॥
सेवक धर्म स्वामि सेवकाई। सो तजि गयो करन अध माई॥
सुनि प्रभु मातु पिता गुरु बानी। परिहरि चहुँ बेउ पास प्रमानी॥
ऐसेहु अघ प्रभु गने न राई। शरण जानि लीन्ह्यो अपनाई॥
ऐसे प्रभुइ नहीं अनुहरहूँ। सेवक है मन मुख हठ करहूँ॥ ॥

दो० निज स्वारथ हित स्वामि ते हठै सो सेवक पोच॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जो मोहिं आयसु देहिं प्रभु सोइ करौं तजि शोच॥

चौ० सुखद वचन सुनि सब हरखाने। भरतहिं धर्म धुरंधर जाने॥
राम भरत ते वचन उचारे। तात रहत मम हित धुर यह तुम्हारे॥
जो हम मही परा राख्यौ बाता। तौ अब कहौं सुनौ हे ताता॥
जो प्रथमैं पितु आयसु दीन्हा। हमैं तुम्हैं सोइ चाहिय कीन्हा॥
जिन गुरु पितु पति गिरा न धारी। तिन जानहु नेह डारयौ मारी॥
अस जिय जानि मानि हित भाई। पालहु प्रजहिं अवधि भरि जाई॥
होइहि तुम्हैं न लेस कलेशू। सिर पर गुरु मुनि मिथिलेशू॥
महूं बिपिनि रहि अवधि बिताई। ऐहौं सपदि भवन सुख पाई॥

दो० सुनि रघुपति के वचन मृदु भा भरतै संतोष॥
मनहु लह्यो फल जन्म कर मिटे सकल दुख दोष॥

चौ० बोले बहुरि जोरि युग हाथा। तिलक साज सब लायों नाथा॥
सो अब कहा करिय रघुबीरा। कह प्रभु चलहु चली ऋषि तीरा॥
अत्रै मुनि जहं देइं बताई। तहं धरि देहु काम फिरि आई॥
अस कहि चले गये मुनि धामा। करत भये सब दण्ड प्रणामा॥
आदर करि मुनिवर बैठारे। भरत अत्रि ते वचन उचारे॥
नाथ नीर सब तीरथ केरा। धरिय कहौ सो करहु निबेरा॥
कह मुनि है एक कूप रसाला। लोपत सो छिन को नेउ काला॥
ताही में जल राखहु ताता। सुनि तब भरत कीनि सोइ बाता॥
भरत कूप कह बावन सोई। पीवत जल निरमल मन होई॥

दो० पुनि अनुनै बोले भरत नाथ जो आयसु होय॥
आवहुं तीरथ देखि सब राम कह्यो भल सोय॥
धाइ रजायसु चले तब जहां जहां चलि जात॥
नेम प्रेम लखि भरत कर मुनि जन मन सकुचात॥
पांच दिवस में सकल बन देख्यो भरत दिठोरि

हरिदिन प्रात स्नान करि प्रभु ले करैं बहोरि ।।
दीजै मोहिं अधार कछु जेहि लखि अवध सिराय ।।
सुनि दीन्ही निज पादुका भये मुदित मन पाय ।।
जननि जनक गुरु सचिव प्रिय पुरजन सखा सुभ्रात ।।
भेंटि सबन कीन्हे बिदा चले सकल बिलखात ।।
तेहि छन माया मुनन की सबका भई सहाय ।।
नाहि त रघुपति बिरह ते तरन सकत कोउ जाय ।।
बैठे प्रभु सिय अनुज युत परनकुटी के माहिं ।।
करत बड़ाई भरत की हृत अघ मन सब जाहिं ।।
तेहि दिन रहि यमुना निकट उभे भीलपति ग्राम ।।
तीसर बासा गोमती चौथल अवध मुकाम ।।
भूता दिन आये अवध जनक रहे दिन चारि ।।
जहँ तहँ सबनि बसाइ के निज पुर गये सिधारि ।।
भरत सुदिवस सोधाइ के पुनि गुरु आयसु मांगि ।।
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी अनुरागि ।।

**गीतिका छं०** बैठारि प्रभु पद पादुका सिरु नाइ अनुज बो-
लाइ के । सौंपाइ पुरजन मातु सब तब आपु आयसु पाइ के ।।
पुर दक्षिणा योजन एक नंदिग्राम गुफा बनाय हू । लागे रहन
फल पात भषि जग भोग सब बिसराय हू ।। सुनि अवध सुरख सु-
रराज लाजत धनद धनु लखि राग ही । तेहि त्यागि दीन्हेउ
भरत किमि जिमि मधुप चम्पक बाग ही ।। रघुबीर पिय पु-
नि बंधु तेहि जड़ मोहि माया किमि सकैं । जे अहैं सनमु-
ख राम के नेउ तासु तन नाहीं तकैं ।। यह भरत चरित पुनीत
पावन करन मुनि बर्णन कर्यो । रघुनाथ करि संक्षेप क-
छु बिश्राम सागर में धर्यो ।। कहिहैं जे सुनिहैं मुदित तिन

की प्रीति प्रभुपद बाढ़ि हैं। नशि हैं सकल दुखराम धामन-जात कोउ ऽपाड़ि हैं॥

दो० श्री गुरुदेवा दासके चरणकमल धरिमाथ॥
भरत चरित संक्षेपकरि कहा कछुक रघुनाथ॥

सो० हरिहरजन गुण गूढ़। मूढ़ न लखै बिमूढ़ बिन॥
जिमि संथित आरूढ़। बूढ़ न जानत जीवगति॥

इतिश्री बिश्राम सागर सबमत ऽागर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास राम सनेही कृत ऽयोध्याकाण्ड संपूर्ण नाम षोड़शो ऽध्याय:
॥(१६)॥

श्रीगणेशायनमः

# अथविश्रामसागर

## आरण्यकाण्डप्रारम्भः

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं नाटक मन कछुक आदि रमायण जानि ॥

चौ॰ भरत चरित्र कहे कछु नाना ॥ अब सुनिये रघुपति की बाता ॥
सीता अनुज समेत कृपाला ॥ बसत कामता पर सब काला ॥
चहुँ दिशि सघन लता तरु नाना ॥ मनहु काम रति रचित बिताना ॥
शीतल मंद सुगंधित बाऊ ॥ डोलत बोलत वय करि चाऊ ॥
नामधि फटक शिला अति सोहै ॥ उपमा देन हार अस को है ॥
तहँ एक दिन प्रभु निज करतेरे ॥ चुनि प्रसून स्रक रचे घनेरे ॥
सीतहि पहिराये सुख मानी ॥ तिलक करनि किमि जाइ बखानी ॥
तेहि प्रकार मिथिलेश कुमारी ॥ प्रभु के अंगन सजे सँवारी ॥ ॥
बैठे सहित सनेह सान की ॥ आस दोऊ दिशि प्रेम पान की ॥
करहिं प्रकाश पास मनि भारी ॥ रही छिटकि पूनौ उजियारी ॥
तेहि निशि नारि जयन्ता केरी ॥ आई तहँ लै सुमुखि घनेरी ॥ ५
रघुपति रूप बिलोकि जुड़ानी ॥ नृत्य गान कीन्ह्यो कल बानी ॥
मनभावन बर मांगि सिधाई ॥ सो सुधि कतहु जयंतै पाई ॥ ॥
इरषा बस बायस बपु बनिके ॥ मार्‍यो सिय पद चँगुल भरिके ॥
रुधिर देखि प्रभु तृण एक लीन्हा ॥ ब्रह्म मंत्र पढ़ि पाछे दीन्हा ॥
ज्यों ज्यों भागत जात जयन्ता ॥ त्यों त्यों बढ़त बान बल हंता ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० बत्तीबेधाबिरूपाक्षयक्षपादि सब पास ॥
गयौ दयो नहिं रहन केहुं किमपि जानि निजनाश ॥
सुखद सुखद है जात तब जब रोखत रघुबीर ॥
विकल देखि तेहि देव ऋषि कहि पठये प्रभु तीर ॥
है निराश दुखवास मम आइ नाइ शिर दैन ॥
बोल्यो सन्मुख जोरि कर जय प्रभु करुणा ऐन ॥
जय जग जीवन जगतपति प्रणत पाल तुम एक ॥
रहित सकल नहिं विपति में अपर जो ईश अनेक ॥
दीन वचन सुनि शत्रु के समुझि शरणगति भेद ॥
एक नयन करि तज्यो नहिं जेहि न होइ फिरि खेद ॥

चौ० यहि प्रकार प्रभु सहित सुपासा ॥ शास्त्र मास तहं कीन्हो वासा ॥
अवध लोग तहं भे रहावें ॥ बीसक जाइ पचीसक आवें ॥
तब प्रभु निज मन आन्यो टीका ॥ बन कर नगर भयो नहिं नीका ॥

दो० मांगि विदा सब ऋषिन ते क्वार मास शुभ जान ॥
सहित लषण सिय राम दिशि दक्षिण कीन पयान ॥
प्रथम गये अत्रि भवन कीन्हों दण्ड प्रणाम ॥
लीन लाइ उर विप्र लखि छबि पूजे सब काम ॥
प्रमुदित आसन दीन शुचि फल दल मूल पवाइ ॥
लागे पुनि अस्तुति करन मुनिवर प्रेम बढ़ाइ ॥

नाराच छं० नमामि रामराघवेश देश नाथ नायकं । महेश शेष ब्रह्म धर्म सेव्यमान दायकं ॥ दयाल दास दुःख दोष दर्प दम्भ गंजनं । मुनीन्द्र वृन्द भूमि साधु देव धेनु रंजनं ॥ भजन्ति जे न ते पदार विन्द बांधि नर्क में । पतन्ति ते प्रभंति शास्त्रिनादि अंत नर्क में ॥ त्वमेक सर्व काल विश्व पाल मूर्वि जापतिं । ददामि जेन्व दाश्रितं सुयोगि दुर्लभं गतिं ॥ अनूप श्याम सुंदरं स्वरू

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कोटि कामने। चरंति शक्ति सानुजं परादि स्वी नाथिते॥ स्वछंद सानुकूल जन्म मूल भक्त वत्सलं॥ भवांघ्रि मध्य में सदा बसंत बुद्धि निर्मलं॥ × × + + + + + + + + +

चौ० मुनिमुनि विनय राम सुखपाता॥ नवसिय मुनि तिय पद शिरनावा॥ अन सूया लखि मिली सप्रीती॥ दीन अशी राम सुखद जस रीती॥ उपधारि पट भूषण काढ़े॥ जेपाये हरिले निज गाढ़े॥ ॥ ॥ दीनहि यद्दि राये हि न जानी॥ रहल नयल नित बोली बानी॥ सुनु स्वामिनि जग भामिनि केरा॥ पतिहि देव न दूसर हेरा॥ ॥ अंध बधिर किन होइ निकामा॥ करि अपमान पंते नम वामा॥ पतिव्रत को छोड़ि का सोरवा॥ बिन श्रम परपद लहैन धोरवा॥ तुम्है प्राण प्रिय राम सुजाना॥ यासें जग हित कोन बखाना॥ सुनि सिय सुख लहि नायो माथा॥ नब मुनि ते बोले रघुनाथा॥

सो० नाथ जाउँ बन आन। आयसु दीजे जानि जन॥
सुनि मुनि परम सुजान॥ नाइ शीश बोले बहुरि॥

दो० तुमसम नाथ न नाथ कोउ सुन्दर सरल सुभाउ॥
मैं सेवक कैसे कहौं नयन अयन ते जाउ॥
मुनि पद पंकज नाइ शिर बिनै वचन बहु भाषि॥
चले लषण सिय सहित प्रभु निज मूरति उर राषि॥

चौ० प्रभु इ चलत लखि गिरि मग देही॥ घन सु छाँह महि मृदु है लेही॥ जहँ तहँ मुनि आश्रम बहु भावें॥ जाइ जाइ सबके शिर नावें॥ पूजें सकल सुरुचि भव भांती॥ चलें प्रात बस सुथल सुराती॥ आग जग मग बासी लखि कहई॥ इतिमा भवन को बनये अहई॥ निकसि गय गुण कहँ बिसरी॥ जबते देख पथिक हजूरी॥ ॥ तबते माभ मन ताच अटका॥ खवी गाड़ नहि सांगत लटका। यहि विधि बन नांघत प्रभु जाहीं॥ मिल्ला विराध असुर मग माहीं

महाविशाल रूप बिकराला। हाथ त्रिशूल गहे मृग जाला ॥
प्रभुहिं पेखि बोला कुबिचारी। साधु भेष तुम हो छलकारी ॥
हरि आन्यो काहू की बाला। लिहे फिरत बन संग लला ला ॥
अस कहि गहि सिय सपदि सिधावा। लखि रघुबीर दुसह दुख पावा ॥

दो० प्रभु बाण दे लषणा तब छांडे बिशिष कराल ॥
उर लागत भा बिकल तजि सिय धावा जनु काल ॥

चौ० धावत लखि तहि देव डेराने। रुका मृग मुनि ले जो बरदाने ॥
गिरि सम बपु बेग पौमाना। फूटहिं पबि टूटहिं तरु नाना ॥
लषण मारि तन जर्जर कीन्हा। महि गिरि उठत मरत नहिं चीन्हा ॥
तब प्रभु मुनि शर मारि गिरावा। दिब्य देह दे स्वपद पठावा ॥
अस्ति तासु खनि गाड़ि कृपाला। सीते ले पुनि चले रसाला ॥
सुरपति ले तहँ स्यंदन आये। करि प्रणाम निज लोक सिधाये ॥
बिचरत प्रभु सिय लषण समेता। पहुँचे जहँ थिशर भंग निकेता ॥
निरखि राम छबि अति सुख माना। मनहु सुधित लहि असन अघाना ॥
करि हरि बिनय भक्ति उर मांगी। जोगानल तनु तजि बड़ भागी ॥
चढ़ि बिमान बैकुण्ठहि गयऊ। भेद भक्ति हिन मोक्षन भयऊ ॥
आगे मुनि बहु मिले प्रवीना। भेंटि भेंटि सब का सुख दीन्हा ॥

सो० कुंभज शिष्य सुजान। नाम सुतीक्षण रामजन ॥
प्रभु आवत सुनि कान। धायो करत मनोरथ बहु ॥

दो० बिसरी तन सुधि प्रेम लखि उर प्रगटे सियराम ॥
गौर श्याम बहु काम छबि निरखि लह्यो बिश्राम ॥

चौ० तब प्रभु तिन ढिग जाइ बखाना। उठहु प्राणप्रिय बिप्र सुजाना ॥
उठत न जब जान्यो भगवंता। भय चतुर्भुज हृदय तुरंता ॥
रामरूप जब उर नहिं देखा। उठे बिकल जिमि मनि बिन शेषा ॥
आगे सानुज सिय रघुराई। लखि हरष्यो जिमि गत निधि पाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कीन्हि दंडवत प्रभु उर लाये ॥ आश्रम आनि पूजि मन भाये ॥
करि बिनती माँग्यो बर एहा ॥ बंदै नाथ पद नित नव नेहा ॥
सीता लषण सहित तुम स्वामी ॥ बसहु स्वांत मम अंतरयामी
एवमस्तु कहि राम सिधाये ॥ मुनि सुमंत कुम्भज पहँ आये
राम प्रणाम कीन ऋषि देखी ॥ लिये लाय उर प्रेम बिशेषी ॥
कुशल पूछि आसन बैठारे ॥ पूजन करि मृदु बचन उचारे ॥
आजु भयो मोहिं आनँद कैसे ॥ चातक पाइ स्वातिजल जैसे ।
बैठे प्रभु सब दिशि मुनि बृन्दा ॥ चितवैं मुख चकोर जिमि चन्दा
कह हरि मंत्र देहु मोहिं बोही ॥ जेहि ते मुनि मारौं सुरद्रोही
बोले मुनि मोहिं बूझत काहा ॥ तुम्हरे भजन ज्ञान कछु लाहा
जेहि बस सुर मुनि अज त्रिपुरारी ॥ सो माया किंकरी तुम्हारी ।
काल कराल सकल जग खाई ॥ सो तव डर डरपत रघुराई ॥
ते तुम बूझत मनुज समाना ॥ दीन्ह्यो मोहिं सुयश मैं जाना ॥
ऐसे आपु अनुग हितकारी ॥ तिन्हैं त्यागि सुर अपर सँभारी ।
भवनिधि पार चहै पुनि लीन्हा ॥ स्वान पूँछ गहि जिमि मतिहीना
परब्रह्म पार न पावै कबहीं ॥ तिमि तव भजन बिना नर सबहीं ।
देहु सुभक्ति मोहि रघुराई ॥ अब सो कहँउ बसहु जहँ जाई ।

दो० पंचवटी गुण गण जटी टटनि दरी नट रास ।
अघट घटी दुख सुख पटी कुटी करो तहँ बास ॥

सो० दण्डक नृप मुनि जात भोगी सुनि दियो श्राप तिन ॥
गिरि बालू दिन सात ॥ जरो देश सोउ बसिये ॥
मुनि अनुशासन पाइ ॥ पंचवटी सिय अनुज युत ॥
आये कोशलराइ । भे प्रसन्न शोभा निरखि ॥

कुण्डलिया — राम लषण सिय पद परत मिटी श्राप ऋषि केरि । भयो दिब्य बन बिटप नहँ मिले गीधपति हेरि ॥ मिले ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गीधपति हेरि पिता इव प्रीति बढ़ाई। गोदावरी समीप रुके रूल कुटी गढ़ाई॥ कुटी डारि जब ते बैर सेरे सबन के काम। बरणि सकै को तासु यश जहँ राजें नित राम॥ + + + + + + + + +

चौ० आवैं तहँ अनेक ऋषिराजा॥ होइ सदा सत संग समाजा॥
एक दिवस लक्ष्मण शिर नाई॥ बोले प्रभु ते आयसु पाई॥ ॥
नाथ बात सब विधि तुम जानो॥ मैं पूंछों संक्षेप बखानो॥ ॥
जग समुद्र मधि को आधारा॥ गुरु कृपाल यह बोलनिहारा॥
गुरु को जो देवै हित बोधा॥ शिष्य कौन जो सुने प्रबोधा॥ ॥
बंधित को विषया अनुरागी॥ को वा मुक्ति विषै जिन त्यागी॥
नर्क सो कौन घोर निज देही॥ तृषा त्यागि स्वर्ग सुख येही॥
तमो द्वार किं किंकर नारी॥ मोक्ष मार्ग सत संग विचारी॥ ॥
सोवत को जग रहे जे टेकी॥ जागत किं सद असद विवेकी
को वा शत्रु निजेन्द्री मीता॥ सोई सुहृद तिन्हें जिन जीता॥
रंक कौन जेहि तृशा चोषी॥ धनी सो को सब विधि संतोषी॥
महा अंध को जो मदनातुर॥ निज भल करै सोई बड़ चातुर
क्षमावंत को तेहि मुनि कहई॥ परुष वचन सुनि जो नहिं दहई
मृतक कौन जेहि कीरति नाहीं॥ जीवत जासु सुयश जग माहीं
दीरघ रुज किं यह संसारा॥ औषधि तासु अनूप विचारा॥ ॥

दो० को हौं आयो कहां ते कित जैहौं का सार॥
को मैं जननी को पिता यासो कहिय विचार॥

चौ० किं अनीति जहँ वेद विरुद्धा॥ परम तीर्थ किं निज मन शुद्धा
बिन प्रतीति को कञ्चन कांता॥ सेवा करन योग को संता॥
किं ज्वर चिंता चितर्क जानो॥ सठ को जो बिन धर्म पिछानो॥
लाभ कौन बड़ि भक्ति हमारी॥ हानि न भज्यो मोहि तनु धारी॥
को वा सूर सुभावे जीते॥ भूषण किं जो शील नवीने॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विद्या किं जो भेद मिटि जाई ॥ भेद अविद्या है दुख दाई ॥ ॥
लज्या किं नहिं करै विकारा ॥ महावीर जिन मनहिं प्रहारा ॥
धीरज वंत वली अति कोवा ॥ सुमुखि कटाक्षन मोहे जोवा
दुख किं अनित्य वस्तु में नेहा ॥ सुख प्रद को मम चरण सनेहा
पातक मूल लोभ लखि परई ॥ पढ़न सुनन की कुपथ बिसरई ।
त्यागी को जो मन वच काया ॥ करि सत कर्म भजै फल पाया ।
सत्य वचन किं जो मोहिं लीन्हे ॥ पंडित किं विकार तजि दीन्हे ।
मम स्वरूप जानै सोइ ज्ञानी ॥ मूरख किं सुदेह अभिमानी ॥ ॥
पंथ कवनि जामें मोहिं पावै ॥ दानी जो मम भक्ति बतावै ॥ ॥
महा पतित को हिंसा चारी ॥ धन्य कौन जो पर उपकारी ॥ ॥
को धर्मिष्ट निरत हरि कर्मा ॥ नीच कौन जो करै कुकर्मा ॥ ॥
संग्रह योग कहा गुण मेरे ॥ आइनि किते कुसंगति नेरे ॥ ॥
तप किं विषै भोग परिहरई ॥ दया जो भूत द्रोह नहिं करई ॥ ॥
किं यम जाल सुता मम मोहा ॥ प्रेम कहा जहं नहिं तन छोहा ॥
साधु कौन जाके उर दाया ॥ हरि ते विमुख करै सोइ माया ॥
दुख सुख सम सब काल तितीक्षा ॥ किं विज्ञान विवेक परीक्षा ॥

दो० हौं नहिं तन मन वचन बुधि जाति वरण कुल एक ॥
मैं हौं चेतन सबन में याको कहत विवेक ॥ ॥
थावर जङ्गम सबन में जहं लग जीव जहान ॥
सकल रूप निश्चय भयो सोइ अनन्य विज्ञान ॥
जीव ईश में भेद किं यतनोइ अहै सदीव ॥ ॥
बद्ध दशा में जीव कहि मोक्ष दशा में सीव ॥

छप्पै जो जानो चित रूप जीव ता लहन कौन विधि । तो सुनि-
ये है नाम अविद्या दस परम निधि ॥ गुण सुपक्ष बिन ईश बिं-
म गुण पक्ष नाहि जेव । निवसत तामें आइ होत गुण पाप

प्रगट तव ॥ यथा वासना भ्रमत नित हैं जीवत्व उपाधि इमि ॥
अरु ज्ञान कर्म करि होत है मोक्षबंध श्रुति कहत इमि ॥

दो॰ जैसे महदाकासते घटाकाश को भेद ॥
तैसे मिटे उपाधि के जीव ब्रह्म निरभेद ॥

श्लोक सतसंगी वासनात्यागो ध्यात्म विद्याविचारयेत् ॥
प्राणस्पन्द निरोधन्ते मुक्ति द्वारा चतुर्विधं ॥

चौ॰ गुरुसंयोगि हि ब्रह्मन दरशै ॥ बिन बिराग जिमि ज्ञान न सरशै ॥
बिरति कहाविधि लोक प्रयन्ता ॥ काक बिष्ट सम समझै अन्ता ॥
भूत कहा भय धीरज धामा ॥ परम जाप किं जो मम नामा ॥ ॥
चुगल कौन पर औगुण खोलै ॥ मोनी बचन युक्ति ते बोलै ॥
पिता बिवेक सुमति सो माता ॥ हरिजन मिलन मोक्षसुखदाता
दुस्तर किं सब जननि दुराशा ॥ रारि मूल किं केवल हासा ॥
पशु को जो बिन सुकृत रहावै ॥ बंधु बिपति में काम जो आवै ॥
सखा किं जो मुदित अवालस ॥ क्रिया बिषे दुख सहै निरालस
किं बिश्वास गरो श्रुति सांची ॥ नाथ कौन निष्काम अयांची ॥
निष्ठा किं करिये जहँ प्रीती ॥ लखि न अभाव होइ बिपरीती ॥
रुचि किं रहित शोच सुख पाये ॥ भाव क्षमादि सकल गुण आये
आशक्ती किं प्रिय बिन देखे ॥ रुचत न कछु तन धनहि लेखे ॥
भोजन किं जग तीनि प्रकारा ॥ उत्तम मध्यम नीच निहारा ॥ ॥
मधुर मंजु मृदु सात्विक जानो ॥ तिक्त तात रज गुणहि पिछानो ॥
भक्षाभक्ष नाम तिन केरे ॥ तिमि त्रै बिधि के मनुज निबेरे ॥ ॥
पूजा तीनि भांति की हेरी ॥ प्रतिमा बेषो आतम केरी ॥ ॥
उत्तम आतम मध्यम साधू ॥ कछुक निष्ट प्रतिमा अवराधू ॥
सान्ति सो कौन बिकार बिहीना ॥ निर अभिमान ज्ञान किं दीना
बसीकरन किं कोमल बानी ॥ मारणमंत्र क्षमा बड़ जानी ॥ ॥

जीव उभे किं बंधबिमोक्षा ॥ सहित रहित बासना अपेक्षा ॥
साम्य सुबास कुमति पर केरी ॥ जगत मन्यता आसा चेरी ॥ ॥
परिमल किं प्रसाधन किं धर्मा ॥ करणी बिन बादे बे सर्मा ॥ ॥
ईश्वर सब पर प्रकृति नियन्ता ॥ बहु विधि कहो जानकी कन्ता ॥
मुनि प्रभु बचन लखण हरषाने ॥ बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने ॥

दो० रत्नमाल मत जाल लै भगवत गीता साथ ॥
राम गीत नवनीत यह बरणायो जन रघुनाथ ॥

सो० सुनि गुनि हैं जे जीव । पैहैं परमानन्द ते ॥
पुनि पृथ्वि द्विजा पीव । करिहैं ताप अति कृपा ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास रामसनेही कृत राम दण्डक बन आगमनो प्रश्नोत्तर बर्णनो नाम सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

दो० सुमिरि राम सिया सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं मानस मत कछुक नाटक रीति बखानि ॥
बीरासन सर चाप गहि चहि चहुँ दिशि सौमित्र ॥
लगे बिचारन मन बिषे रघुपति बचन बिचित्र ॥
जनक नन्दनी सहित प्रभु पर्णकुटी के बीच ॥
राजत लाजत लक्ष लखि रति पति प्रिय युत नीच ॥
तेहि अवसर रावण स्वसा सुपनेखा तहँ आइ ॥
राम रूप मोहित बचन बोली गर्ब बढ़ाइ ॥

त्रिभंगी छं० सुनिये नृपनन्दन सुर मुनि बन्दन मैं हौं राज दुलारी । निज सम सुख मानि पुरुष न जाने अब तक रहिउं कुमारी ॥ तुम का जब देखा कछु मन लेखा बिधि कृत यह संयोगा । तेहि ते निज दासी करु बन बासी जो चाहौ वर भोगा ॥ सुनि सिय दिशि हसि के कह प्रभु हँसि के है मम अनुज कुमारा । सित-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तन तिन केरी हूजे चेरी सोइ संयोग तुम्हारा ॥ हस्तिनि तियला-
यक ससा ननायक दुख दायक सुख हरणी । पदुमिनि मोहिं
धारो निरस निवारो नेति नेति प्रभु बरणी ॥

चौ० तब सो गई धरनिधरि पासा ॥ कह लक्ष्मिमन मैं उनकर दासा ॥
भूप परोसि कहे हो रानी ॥ नाहित जग दह भुई बखानी ॥
यामें कौन सुयश सुख लाहू ॥ तेहि ले महाराज पहँ जाहू ॥
सुनि पुनि गई जहाँ भगवन्ता ॥ तिन फिरि पठई पास अनन्ता ॥
बोले लषण तोहि सो व्याहै ॥ जो लोकौ परलोक न चाहै ॥ ॥

दो० तब लजाइ प्रकटत भई निज विकराल स्वरूप ॥
बदन खोह गिरि शृंग शिर नाक कान जनु सूप ॥

चौ० बोली तुम दोउ साधु न सहहू ॥ पर पतनी धर घालन चहहू ।
मोहिं देखि जो कीन्ह्यो हासू ॥ सो फल तुम्हैं देवैहौं आसू ॥
सुनि सिय सभय राम गे जानी ॥ वैद वाद नभ कह्यो बखानी ॥
गये समुझि लक्ष्मिमण ततकाला ॥ नाक कान बिन कीन कुचाला ॥
हाय हाय करि भवन सिधाई ॥ रुधिर श्रवत गे जहं खर भाई ।
बोली भूपालन वीर प्रभावा ॥ तिन पूछा छल करि समुझावा ।

दो० सुनि खर दूषण क्रोध करि असुर सहस दश चाहि ॥
लिये बोलि संग सब चले अस्त्र शस्त्र भट धारि ॥

चौ० कज्जल गिरि सम जिनके अङ्गा ॥ गर्जहिं तमोहिं सहित उमङ्गा ॥
बाजें विविध जुझाऊ बाजा ॥ असगुन होत न माने राजा ॥ ॥
कोउ कहै धरि मारौ दोउ भ्राता ॥ ले लीजै ललना भलि बाता ॥
कोउ कहै निधनि न आई उनहीं ॥ चुप रहिं चहि दनुजेश न सुनहीं
यहि विधि बदत निकट चलि आये ॥ लक्ष्मिमण ते प्रभु वचन सुनाये
सीते ले गिरि कन्दर जाहू ॥ आवा चढि शिर निश्चर नाहू ॥ ॥
ले सिय लषण गये तेहि लागी ॥ चाप चढ़ाइ चले प्रभु आगे ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिमि केसरी द्विरद दल हेरी ॥ आइ लिहिनि बग भेलु गरेरी ॥ ॥
देखि अकेले अति सुरसमाना ॥ वेदे समापर जिमि परवाना ॥ ॥
प्रभु छवि देखि चकित सब भयऊ ॥ खरदूषण मंत्री ते कहेऊ ॥

दो० ये कोउ नृप बालक अहैं नरवर रूप निधान ॥
अस शोभा भरि जन्म हम देखी सुनी न कान ॥

सो० यद्यपि किहिनि कुकर्म तदपि न मारन योगये ॥
जाइ कहौ तुम मर्म । देइं नारि फिरि जांइ घर ॥

चौ० आइ सचिव रघुपति ते काहा ॥ सुनत बिहंसि बोले सुरनाहा ॥
हम क्षत्री मन शंक न आनैं ॥ कालहु ते सन्मुख रण ठानैं ॥ ॥
सुर रंजन खल गंजन हेता ॥ विचरत हम बन त्यागि निकेता ॥
जो तुमरे पति होइं डेराने ॥ फिरैं न हम रण हतैं पराने ॥ ॥
दूतन खर दूषन ते भाषा ॥ बोला सुनि मारौ करि माषा ॥ ॥
धायेत बतमचर करि सोरा ॥ लखि प्रभु कीन चाप टंकोरा ॥
भये बधिर पुनि धीरज धारा ॥ लगे विविध बरसन हथियारा ॥
सर तोमर तरवारि त्रिशूला ॥ चक्र परिघ पवि शक्ति सूला ॥
तिल समान प्रभु काटि नेवारे ॥ निज नराच संधानि पवारे ॥
जाइ असुर दल काटन लागे ॥ हाइ हाइ करि भट बहु भागे ॥
कोइ कहै खरदूषन मतिहीना ॥ इनते आइ समर जेहि कीना ॥
सुनि सकोपि बोले तिहुं भ्राता ॥ फिरौ जो नहिं हौं करब निपाता ॥
मरता जानि घूमें अनुरागी ॥ चहुं दिशि मारु मारु रट लागी ॥
देखि देव सब होइं अधीरा ॥ निशचर निकर एक रघुबीरा ॥ ॥
रामबान लागहिं खर भारी ॥ खण्ड खण्ड ह्वै गिरहिं सुरारी ॥
शिर धर धरो धरो कहि धावैं ॥ गगन उड़ै बहु भगरा चलावैं ॥
बहु मरिगे बहु कर हत डारे ॥ बहु कहैं कह पितु मातु हमोर ॥
बहु तन कंक काक शिव स्वाना ॥ भक्षन करत कटकटी नाना ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अन्त्रावलि गहि बहुन भजावैं ॥ विपुल व्याल जनु गुड़ी उड़ावैं ॥
भूत रु प्रेत पिशाच पिशाची ॥ खप्पर भरे योगनी नाची ॥ ॥

दो० निज दल विचल निहारि खर दूषण त्रिशिरादि भट ॥
अगणित अस्त्र प्रचारि प्रभु पर डारे एक संग ॥

चौ० रघुपति सब निज सरनि निवारे ॥ दश दश विशिष सबन के मारे
कहि कहि राम तजे तिन प्राणा ॥ बिन श्रम पायो पद निरवाणा ॥
छिन मा सकल कटक संहारी ॥ सुमन वर्षि सुर जयति पुकारी ।
सीता लषण आइ शिर नावा ॥ निरखि श्याम वपु अति सुख पावा ।
तब सुपनेखा गइ जहँ रावन ॥ जनु दनुजन की मौत भयावन ।
करि रोदन बोली तकि ताही ॥ तोहिं जियत मम असगति वाही
समुझि परत अब रहीन राजू ॥ नहिं देखत निज काज अकाजू

दो० सुनि अकुलानी सभा सब कह रावण कहु हाल ॥
केहि काटे श्रुति नाक तव काकर आयहु काल ॥

चौ० अनुज गिरा सुनि बोली बचना ॥ अति अतर्क अवलोकी वना
हैं तपसी तपसी बन आये ॥ सुन्दरि सुन्दरि सुन्दरि लाये ॥ ॥
हौं लखि हौं लखि हौं लखि बोली ॥ राम न योग न राम न जोली ॥

दो० सो कसि कानन कानि लब करी न करी न आन ॥
मो बिन कानन कान बिन करी सो करी न कान ॥

चौ० खर दूषण सुनि लाग गोहारी ॥ छिन मा तिन सब सेना मारी
त्रिशिरादिक बध सुनि दनुजेशा ॥ मनहुँ जरे सम भयो कलेशा ॥
सूर्पनखे प्रबोधि बल भारी ॥ भवन गयो विस्मै मन रारी ॥ ॥
सुर नर अहि त्रिभुवन महँ सोई ॥ मम अनुचर न निदरत कोई ॥
खर दूषण मोहिं सम बलधामा ॥ तिन्हें को मारे बिन श्रीरामा ॥
जो प्रकटे सुर मुनि हित कारी ॥ तौ करि बैर तरौं भव भारी ॥ ॥ ॥
तामस तन कछु भजन न बनई ॥ राम विमुख गति वेदन भनई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जिन नहिं निज परलोक सुधारा॥ तौ तेहि सुधि बल जन में छारा।

दो॰ जौ नृप सुत कोउ जाइ तौ हरि लैहौं निज बाम॥
चला अकेले यान चढ़ि सो मारीच के धाम॥
पूछा करि सनमान तेहिं तात चलेहु केहि हेत॥
कही कथा दश मुख सकल मुनि बोला शिष देत॥

सो॰ मुनि मख में मोहिं राम। बिन फर मार्यो बिशिष एक॥
शत योजन यहि ठाम। आयो छिनमा बिकल है॥
षर दूषण करि बैर। भे बिनाश ताते सबल॥
जो चाहो कुल खैर। तौ फिरि जाउ निकेत निज॥
सुनि दशमुख करि क्रोध। बोला मोहिं सम सुभट को॥
गुरु इव करत प्रबोध। चलत न आइ मीचु नव॥
करि बिचार रवि साथ। चला मुदित सँग मन गुणात॥
मरौं न रावण हाथ चला मुदित मन सँग गुणान॥
भरि नयनन छबि आजु देखिहौं प्रभु सिय लखण की॥
तब होई मम काज। जब बधिहैं मृग रूप लखि॥

दो॰ इत सिय ते कह राम तुम करो अगिनि निवास॥
जब तक करि नर चरित मैं करौं न निश्चर नाश॥

सो॰ स्वामि रजायसु पाइ॥ बेद बती बपु राखि तहँ॥
आपु हुताशनि जाइ। कीन बास हरि यास नित॥

चौ॰ यह रहस्य लछमणहु न जानी॥ माया सीय सकल गुण खानी
बैठे प्रभु सिय परण कुटीचा॥ आयो तहँ रावण मारीचा॥ ॥
हेम हरिण ह्वै निकसा आगे॥ लखि जानकी कह्यो अनुरागे॥
हे स्वामी मृग पकरहु धारी॥ नाहिं त बनी छाल भल मारी॥ ॥
कह प्रभु हिंसा अघ बड़ जाना॥ होनहार बस सिय हठ ठाना॥
भक्त बछल प्रभु धनुशर लीन्हा॥ आश्रम सौंपि भ्रात कहँ दीन्हा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अपना चले कपट मृग पाछे ॥ आवत देखि भाग सो आछे ॥
तब शर सजि धाये रघुराई ॥ थकनि नवनि चितवनि मोहिं भाई
प्रकटत दुरत लखत छबि भूरी ॥ लेगा इमि रघुवीरहि दूरी ॥ ॥
तब प्रभु ताहि नहां नकि मारा ॥ हा इ लषण अस आदि पुकारा ॥
पाछे कहि हरुगे सिय रामा ॥ तनु तजि गा मुनि दुर्लभ धामा ॥
इत सीता सुनि आरति बानी ॥ बोली लक्ष्मण ते छल जानी ॥

सो० संकट बस तव भ्रात । जाहु वेगि सुनि शेष कहँ ॥
प्रभु इ न दुख कहु मात । तुम्हें सौंपिगे किमि तजहुँ ॥
सुनि सिय वचन कठोर । कहे लषण कहँ लषण तब ॥
रेख खेंचि चहुँ ओर । चले चकुल चित राम पहँ ॥

दो० सूनबीच लखि रावण जती सरूप बनाइ ॥
मांगी भिक्षा सुनत सिय आगी देन हर याइ ॥

चौ० बोला कुटिल वँधी यह भीषा ॥ सोन लेब मैं मानों पीषा ॥
माघ शुक्ल भूला दिन जानो ॥ छन्द महूरत मैं पहिं चानो ॥ ॥
भाषी बस सिय बाहेर आई ॥ रावण बंदि लै चला उठाई ॥

दो० औंध जोति तनमें यथा अगिनि धूम के माह ॥
तिमि रावण के कर परी सिय सरूप की छाँह ॥

चौ० गगन जात रथ बिलपत सीता ॥ हा रघुपति हा नाथ पुनीता
हा करुणाकर हा रण धीरा ॥ आरत हरण हरहु मम पीरा ॥
हा बल सिंधु लषण सुखदाई ॥ परी तात गोमर कर गाई ॥
कहे वचन के दुख मम भाई ॥ सो क्षमि करि मोहिं लेहु छिनाई
तुम्हें कलंक दीन बिन दोषा ॥ ताकर फल पावा अति चोखा ॥
उपति वचन जौं नहि काना ॥ तेउ भैं दुख हमें समाना ॥ ॥
हा पितु मातु दूरि तव धामा ॥ भा केकयी केर सब कामा ॥ ॥
पठै देउ बन देउ कृपाला ॥ हरि पत्नि हि चँहै बर स्याला ॥

सीताके सुनि आरति बानी ॥ भे सब विकल चराचर प्रानी ॥ ॥
गीधराज आना बैदेही ॥ लीन्हे जात असुर पति तेही ॥ ॥ ॥
चला कहत धुची धरु धीरा ॥ नीच मीचु में आयों तीरा ॥ ॥ ॥
रे रे रावण सुनु मम बाता ॥ तजि जानु किहि जाहु कुशलाता ॥
नाहित सकुल नाश नव होई ॥ सुनि तेहि कानन कीन्ह्यो कोई ॥
तब खग चपरि चोच गहि केशा ॥ रथते महि पटका लंकेशा ॥
सियनिज निलै राखि फिरि आवा ॥ अरिकर धनु धरि काटि गिरावा ॥
चोच चंगुलनि तनु बिद कायो ॥ मूर्छित ह्वै पुनि असिलै धायो ॥
पंख काटि सीतै लै भागा ॥ तब खग महि गिरि शोचन लागा ॥
हमते कछु न बनी भलि बाता ॥ पापे करत भयो बपु घाता ॥ ॥
दशरथ सम मुनि प्रेम न पाला ॥ राख्यो सिये न हरि यहि काला ॥
भरत राम मुख देखि न पावा ॥ खलकर तब नहि प्रभु सुनावा ॥
एकै बात भई भलि एहा ॥ राम निहोरे छूटी देहा ॥ ॥ ॥

दो० इत सिय बिलपत जात नभ नग पर कपिन निहारि ॥
दिये डारि निज भूषण रघुपति नाम पुकारि ॥
आगे लखि संपाति सुत गहि रथ दीन्ह्यो छारि ॥
यहि बिधि लावा लंक तब बोला सियै निहारि ॥
सुमुखि न शोचे नरन हित उनमें कौन प्रभाव ॥
पितु प्रेरित बन सहत दुख निर्बल रंक न राव ॥
अकुल अजाति कुजाति पति गति मति रहित अभीत ॥
जटी कपाली प्रिय प्रभात तव दोपिन कर मीत ॥
नहिं जानी केहि कर्म करि परिउ नरन के हाथ ॥
अब जागे बड़भाग तव जो आइउ मम साथ ॥
हम सम सबल न भूप कोउ जेहि वश सुर मुनि सर्व ॥
तहि लै मेरी भार्या होउ त्यागि दुख सर्व ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुरकन्याकेयेसहस मंदोदरी समेत ॥ ॥
है हैं तेरी टहलुई हौं सेवक कहि देत ॥ ॥
सुनि सिय शोच सकोचबश कछू न उत्तर दीन ॥
तबतेहि निज ऐश्वर्य सुख सकल देखावे लीन ॥
अधिक बिकल भइ जानु की बिभव नीच कर देखि ॥
यथा बिरहिनी दुख लहै शरद चंद महि पेखि ॥
सो० पुनि बोला दशशीस । देखेसमम ऐश्वर्य सिय ॥
तब सीता कर रीस । कहत भई त्रण ओट करि ॥
सुनु दूषन शिरमोर । बिन मराल सर हंसिनी ॥
निरखि काग कर ठौर । मुदित होत कहुँ तिमि महूं ॥
सुनि सिय बचन सरोष । डरि करि बिपिनि अशोक महं ॥
राखि सिहित निज मोस । दुरि हवि गये खबाइ हरि ॥
चौ० इहाँ लषण मृग अरि तहँ गयऊ ॥ अनुजे लखि बोलत अस भयऊ
द्वादश बरष मास सर बीते ॥ इहाँ रहत सिय तजी न रीते ॥ ॥
आजु जनक तनया तुम खोई ॥ कहा लषण मम दोष न कोई
आश्रम देखब जाइ बिन सीता ॥ भये बिकल जनु जोषित गीता
इत उत हेरि हाँकि हँसि बोली ॥ आवहु निकसि न करहु ठठोली
तुम्है कहा कौन मैं जाई ॥ अब केहि कारण रहिउ कुहाई ॥
लषण अरोध लखी जब नाहीं ॥ तब प्रभु मूर्छि गिरे महि माहीं
कलहुं बान धनु पट तूनीरा ॥ लषण उठाइ कियेउ कतीरा ॥
बोले नमिहे नाथ उदारा ॥ सुरमुनि हेत लियो अवतारा ॥
ज्ञाननिधान सबल बुधि माहीं ॥ भूलत मूढ़ मनुज की नाहीं ॥
बंधु बचन सुनि धीरज धारा ॥ बहुरि अस इव बचन उचारा ॥
को बोलत लक्ष्मिण तब दासा ॥ हमको तुम राखो बन बासा ॥
करत कहा दूटत प्रियप्यारी ॥ हाहा सीते जनक दुलारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो० कहा लषण मिलिहैं बहुरि उठि ढूंढो बनमाहिं॥
धनु सर तरकस साजि तन पूंछि चले सब पाहिं॥
हे हरि करि कुज द्रुज दखिल सब परमारथ रूप॥
तुम देखी मम प्रीतमा देहु बताइ अनूप॥
हे सीते जेहि नेह कहि तजि पितु आरज गेह॥
हठि आइउ मम साथ अब कहा कियो सो नेह॥
भृंग जलज शुक कुन्द पिक करि हरि श्रीफल केर॥
मुदित मनहुं अरि जीति किन हरो मान इन केर॥
यहि बिधि खोजत कुञ्ज बन गण गिरि गुफा तड़ाग॥
गये जटायू खग जहां घोर गात लखि दुख लाग॥
चौ० आगे परा गीधपति चीन्हा॥ हा पितु हा कहि उर धरि लीन्हा॥
पूंछा हाल सकल तेहि काहा॥ मोहिं बधि सिय लैगा खलनाहा॥
रहे प्राण तव दरशन हेता॥ चलन चहत अब कृपा निकेता॥
सुनि प्रभु पद्म नयन जल ढारी॥ बोले पांसु जटा ते झारी॥
हे सौमित्र आइ इन शरणा॥ मोहिं लखि पस्यो न पितु कर मरणा॥
सहि न सकौ मो आजु बिधाता॥ पक्षा पक्ष लखि कीन्हि सिधाता॥
पुनि कह तात राखिये देहा॥ बोला तब खग सहित सनेहा॥
कृपासिंधु तुम शील निधाना॥ मोहिं खग खलहि पिता सम माना॥
अस तुम तेहि न भजे नर जोई॥ महा मूढ़ हत भागी सोई॥ ॥
जासु नाम अघ गनिन गति दाता॥ कस न मरहुं तिन के कर ताता॥
चारिउ फल न मरण सम मोरे॥ अस कहि मुदित प्राण निज छोरे॥
राम रूप है अस्तुति कीन्ही॥ अबिचल भक्ति मांगि सोइ लीन्ही॥
कह प्रभु सिया हरण पितु तेरे॥ कहौ न दुख होइ सुनि मेरे॥ ॥
दो० तुम्हरे पुण्य प्रताप ते कछु दिन में रिपु मारि॥
सकुल पठैहौं आइ सोइ सुमुख कही बिस्तारि॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भलेनाथ कहि नाइ सिर प्रभुमूरति उर राखि॥
चल्यौ गगन लखि सुमन सुख बरष जयजय भाखि॥
पितु ज्यों दीन्हौं धाम निज मृतक कर्म सब कीन॥
ऐसे प्रभुइ बिसारि मन तैं चाहे सुख लीन॥ ॥

चौ॰ सहित शोक सिय की सुधि आई। बोले लक्ष्मण ते अकुलाई॥
जावत मैं यदि जीवति ताता। तावत जीवत विश्व लखाता॥
नाहित सुर नर असुर समेता। करिहौं भस्म अखिल जग जेता॥
सुनि प्रभु बचन सभय भव काँपा। लागे होन अरिष्ट अमापा॥
सहित शंक लक्ष्मण गहि चरणा। बोले अहो दीन दुख हरणा॥

कुण्डलिया मान्धाता इक्ष्वाकु इभ भागीरथ नृप नाथ। रघु दलीप अज आदि दै जावत तव पितु नाथ॥ जावत तव पितु नाथ लोक तिहुँ तेने समाना॥ पालत आयं सदै सुयश सकल्यो जग जाना॥ तिन कुल कीरति वर्ध हित प्रगटे आपु सुजान। सो किमि जरिहौ जग अखिल बिन ऽपराध श्री मान॥४॥

सो॰ बंधु बचन सुनि राम। लज्जित ह्वै लखि लषण कहँ॥
लिये लाइ निज धाम। बोले पूरब देखि थाँहि॥

कुण्डलिया लषण तकहु तरु उये रवि नाथ मलिन है चन्द। निज कुल के अकलङ्क ते तरुण तेज भो मन्द॥ तरुण तेज भो मन्द कमल नहिं फूले ताता। अहो मित्र दुख दुखी खिले कैसे जलजाता॥ अहें नरखत प्रफुलित कुमुदु शत्रु बिपति लखि हँसत मन। पुनि न दीन उत्तर चले घन तरु तर रघुपति लषन॥

चौ॰ यहि विधि प्राकृति मनुज समाना। दूँढ़त कीन्हौ पुरः पयाना॥
मिला बिराध ताहि गति दीन्ही। चले बहुरि सेवरी सुधि कीन्ही॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पूछत फूलनभरे मुखतेरे ॥ निवसत बड़भागिनि केहि सेरे ॥
जासुभजन बल बन सुखदाता ॥ करवं देखि तेहि गैललगाता ॥
इहांप्रात सेवरी जब जागी ॥ लखि शुभ सगुन समुझि अनुरागी ॥
रामलषण सिय पाहुन मोरे ॥ ऐहैं आजु अनुजयुत जोरे ॥
ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी ॥ मो सम को बड़भागिनि दूजी ॥
लहिहों हों प्रभु प्रभु निजबाना ॥ दोउ दिशि लाभन लाभ समाना ॥
दोनन राखि कन्द फल फूला ॥ चितवत अंब सरिस अनुकूला ॥
छिन द्वारे छिन भीतर आई ॥ प्रीति परखि पहुंचे दोउ भाई ॥
सेवरी देखि परी नब पायन ॥ मन मानी प्रभु आसम चायन ॥
आश्रम आनि पूजि जस रीती ॥ दिये रुचिर फल दल करि प्रीती ॥
लगे खान प्रभु पुलकित गाता ॥ स्वाद सराहि सराहि न जाता ॥
मांगत देत देखि सुर सन्ता ॥ बरषि सुमन कहि जय भगवन्ता ॥
त्रिभुवन नाथ नरेश कुमारा ॥ पावत फल तजि अरसे अपारा ॥
अस बिचारि रघुनाथ अरूखे ॥ जान्यो राम प्रेम के भूखे ॥
अचे उठ तब सेवरी बोली ॥ हाथ जोरि दोउ गिरा अमोली ॥
नाथ रहिउं में औगुन खानी ॥ कीन्हों तुम मुद मंगल दानी ॥

दो॰ कह प्रभु तें निज कर्म ते भई श्रेष्ठ जग बीच ॥
जो न भजै मम चरण प्रिय सोइ सम ली सोइ नीच ॥
सेवरी के सुनि मुनि निकर आये दिग अनखाइ ॥
पूछो सब वर सुद्ध किमि होइ कहो रघुराइ ॥
कह प्रभु पावन सुरस को परसि कीन तुम रोष ॥
गये स्वच्छ हित सरकहू भयो रुधिर तेहि दोष ॥
अब ते सेवरी के चरण धोइ ताइ ता मध्य ॥
देउ लेउ पानिय पुनि करल भयो सुखि मध्य ॥

सो॰ ऐसे प्रभु को ओर जो निज लघुता दास की ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

करै कीर्ति सबठौर तब हरि सेवरी ने कह्यो ॥
अब सुधि सीता केरि कहिये करि गामिनि सुखद ॥
सुनि सेवरी मुख हेरि कह्यो जाउ पंपा सरहि ॥
तहँ मिलिहै सुग्रीव कस्यो मिताई तासु ते ॥
सो हित करी सदीव मिलिहैं इमि सीता तुम्हैं ॥
यहि विधि वदि सब हाल राम धाम गइ त्यागि तनु ॥
तेहि की किया कृपाल कीन यथोचित जननि जिमि ॥
गीतिका छं० जिमि जननि की गति करै कोउ तिमि राम सेवरी की करी । अस और कौन कृपालु स्वामी शरण जाकी अनुसरी ॥ प्रभु कहल सेवरी केर यश सह प्रीति पंपा सर गये ॥ मन मुदित मज्जन कीन शोभा निरखि मुनि हरषत भये ॥
दो० भये मुदित मुनि वृन्द तहँ मिले देव ऋषि आइ ॥
पूछिनि प्रभु ते मोह निज राम कहा समुझाइ ॥
सो० सकल दोष दुख दानि जानि हस्यो अभिमान तब ॥
सुमुखि शोक की खानि तहि न लिहउँ बचाइ पुनि ॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास राम सनेही कृत आरणय काराड संपूर्ण नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥
(१८)

श्रीगणेशाय नमः

# अथ विश्रामसागर

## किष्किन्धाकाण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि॥
बरणौं कोकिल मत कछुक वृहद्चरित्र बखानि॥
नारद अविचल भक्ति वरु पाइ चले हर थान॥
तब सानुज रघुबंश मणि रीक मूक भे जान॥
सबल पुरुष सुग्रीव लखि डरि पठये हनुमान॥
द्विज ह्वै पूछा जाइ निजु हाल कहा भगवान॥

सो० सुनि मारुत सुत बैन। प्रभु चीन्हि चरणन परे॥
लाये कपि पति ऐन मुदित भये सुग्रीव लखि॥
कीन मित्रता भाव। जनक सुता की बात सुनि॥
सिय भूषण कपि राव। दिये लिये उरलाइ प्रभु॥

चौ० कह्यो लषण ते चीन्हो ताता॥ सुनि सौमित्र कही बरबाता।
कंकन कुण्डल मैं नहिं जानौ॥ नूपुर नित पद बन्दन ठानौ॥
प्रभु दुखित लखि कह्यो सनेही॥ तजहु शोच मिलि हैं बैदेही
हरषि प्रीति हरि हरि पति पाहीं॥ तुम केहि हेत बसहु बन माहीं
तब सुग्रीव कहा सब हाला॥ जेहि हित बालि बैर अति पाला॥
सुनि बोले रघु धरा कुमारा॥ मैं मारिहौं रणा शत्रु तुम्हारा॥ ॥
मित्र मित्र दुख दुखी न होई॥ बदन बेद श्रुति सखा न सोई॥ ॥
सुनि सुभाय बोले कपि नाहू॥ बालि बली वध योगन काहू॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अस्ति दुंदुभी केर समूहा ॥ महा कठिन लागे दश धूहा ॥ ॥
तिन्है एक शर बेधै जोई ॥ मुनिवर बालिहि मारे सोई ॥ ॥

**दो०** दूसर दुंदुभि निधन सुनि इन्द्रताल फलसात ॥
पठये हैं हैं सप्त दिन अजर अमर इनु खात ॥
नारद आय बालि कहं दीन्ह गहन मंझार ॥
महि धरि लगे नहान सो करिगा भुजंग अहार ॥

**चौ०** हरिसुत लखि बोला बचनेहा ॥ सात ताल आमें तब देहा ॥
कह भुजंग जो हमें उबारी ॥ तेहि निधि नास तुम्हें सोइ मारी ॥
सर्पाकृत सो ताल बिशाला ॥ को एक बान दहावन वाला ॥
तीसर बरु बासव कर साधा ॥ रिपुबल सन्मुख पावन आधा ॥
यहि ते बालि बधन के माहीं ॥ आवत मोहिं प्रतीति प्रभु नाहीं ॥

**दो०** हँसि बोले भगवन्त तब चलो देखावो मोहिं ॥
बेधि गिरावौं सुसर जेहि निश्चै आवै तोहि ॥

**चौ०** भले नाथ कहि प्रभुइ लवाई ॥ दीन्ह गिरि सम अस्ति देखाई ।
बेधे सकल एकही बाना ॥ दश योजन छिरगरिब सयाना ॥ ॥
नभ महि तल सब तीर्थ नहाई ॥ राम तून प्रविसे पुनि आई ॥
तब सुग्रीव देखाये ताला ॥ सर्पाकृत सब दहे कृपाला ॥ ॥
छूटि भुजंग चला जय भाषी ॥ बरषे देव सुमन अभि लाषी ॥

**दो०** प्रभु प्रभाव बल बिपुल लखि कपिपति प्रीति बढ़ाइ ॥
निश्चय भय बधबंधु हित बोले पद शिर नाइ ॥
सुनो नाथ तव कृपा ते मिटे सकल मम शोक ॥
शत्रु मित्र दुख सुख सम धि मन कृत नहिं परलोक ॥

**चौ०** तेहि ते त्यागि मोह मद माया ॥ भजब सदा तव पद रघुराया ।
बालि हमार परम हित कारी ॥ मिले आइ जेहि आपु खरारी ।
मोहित बचसनिक होउ खरारी ॥ मृषा होत नहिं गिरा हमारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तब सुग्रीव जाइ पुर गरजा ॥ । चला बालि सुनि तारा बरजा ॥
रामा श्रित सुग्रीव न जाहू ॥ कह हरि सुत सब विधि मोहिं लाहू ।
अस कहि आवा अर्कज तीरा ॥ भिरे क्रोध करि दोनो बीरा ॥
बालि वृहद विधु मुष्टिक मारी ॥ विकल भाग सुग्रीव पुकारी ॥
भें जो कही केशव तुम पाहीं ॥ बालि मोर रिपु सोदर नाहीं ॥ ॥
कह प्रभु तुम एक सम दोउ आहू ॥ तेहि भ्रम मैं मारा नहिं काहू ॥
कृपा दृषि ताकि तुदन मिटावा ॥ सुमन माल पहिराइ पठावा ॥
चैत्र चतुर्दशि सित चित चाड़े ॥ भिरे फालि भुज पुनि पुर डाड़े ॥
बिविधि यतन करि जूझत जोरा ॥ प्रभु पेखत ठाढ़े तरु ओटा ।
जाना जब सुकराट हिय हारा ॥ साधि बाण वर बालिहि मारा ।
गिरा भूमि व्याकुल है बीरा ॥ तव माधव चलि गे तेहि तीरा ॥ ॥
प्रभुइ बिलोकि मुदित उठि बैसा ॥ बोला वचन क्रोध युत जैसा

दो० राम तुम्हार प्रभाव बल मैं घर सुना अपार ॥
देखा कर्म किरात कर कारन कारहित विचार ॥

सो० मोहिं मिल्यो यहि रीति । तुरत मिल्यो त्यों आनि सिय ॥
करि कादर ते प्रीति । मार्यो बिन अपराध मोहिं ॥

चौ० कह प्रभु हम निर्बल के संगा ॥ अभिमानी ढिग जाहिं न बंगा
धारना पाल कुल रीति हमारे ॥ बधा तोहि छिपि साल के मारे
अनुज बधू कीन्हे निज घरनी ॥ तोहि सम मूढ़ पतित को बरनी
प्रभु अजहूं अघ वने हमारे ॥ अन्त काल भे दरश तुम्हारे ॥
सुनि कृपाल कह राखै देहा ॥ अकनि बालि बोला सह नेहा ।

दो० जासु नाम जपि जीव जड़ तरै करै मुनि ध्यान ॥
ते तुम मम आगे खड़े कहत राखु निज प्रान ॥
केहि सुख संपति लागि अब राखौं सरल शरीर ॥
सुरतरु खनि रूधैं बबुर को अस शठ रघुवीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चौ० तेहिते अब जैहौं हरिधामा ॥ पर यह बर दीजै अभिरामा ॥
कर्माधीन जहां मैं रहऊं ॥ तहं तव चरण नेह निरबहऊं ॥
अङ्गद मम समान बलवन्ता ॥ तेहि कीजे निज दास अनन्ता ॥

सो० प्रभु पद शीश नवाइ । बालि गयो हरि धाम तब ॥
पुरजन सुनि दुखपाइ ॥ आये जहँ कपिपति मृतक ॥
तारा शिर उर ताडि । लागी इमि रोदन बदन ॥
मैं आरहौं पति भाषि । मान्यो सीख न काल बस ॥
राम बिकल तेहि जोइ ॥ बोले करहि न शोच प्रिय ॥
मिलि बिछुरत सब कोइ । आपु अकेल न संग कोउ ॥
मातु मही पितु मालि । काल कृषी कर सरसमुझि ॥
बोइ प्रथम पुनि पालि लूनि खात ब्रह्मादि सब ॥

चौ० अस बिचारि शोचत नहिं ज्ञानी ॥ कर्माधीन देह गति जानी ॥
सब दिन एक थल बसत न कोई ॥ पथिक मेघ इव संगति होई ॥
भूमि बिकार घटादिय थाई ॥ उपजत बिनसत बपुधन ताई ॥
रहत एक रस अक्षर सो जैसे ॥ जीव अनित्या होत न तैसे ॥
जो यह भेद न नीके जाने ॥ सो देहादिक सत्य प्रमाने ॥
तासु वियोग योग जब लहई ॥ संचित परि भुगते दुख सहई ॥
ईश कृपा जब होत बिशेषी ॥ नित्या नित्य परत तब देखी ॥
नित्य वस्तु भगवत सन बंधी ॥ और सकल ममता मति बन्धी ॥

सो० इमि बहु दीन्ह्यौ ज्ञान । बोध भानु प्रगट्यो तुरत ॥
मिटा तिमिर अज्ञान । लिहिसि मांगि हरि भक्ति वर ॥

चौ० तब सुग्रीव रजायसु पाई ॥ मृतक कर्म सब कीन बनाई ॥
प्रभु लक्ष्मणहि कह्यौ सजि साजा ॥ करि आवो सुग्रीवे राजा ॥
जाय लषण पुर लोग बोलाये ॥ विप्र महाजन चलि सब आये ॥
राज तिलक सुग्रीवे दीन्हा ॥ बालि सुतहि युव राजा कीन्हा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सब विधि सेवै सीख दे धीरा ॥ रह सुकंठ आये प्रभु तीरा ॥
दिग बैठाइ दीन उपदेशा ॥ जाहु भवन तजि सकल अंदेशा ॥
मैं सह बंधु शैल पर जाई ॥ रहिहौं अरि बरषा नहिं छाई ॥ ॥
तुम युत अङ्गद कीज्यो राजू ॥ दीजो जनि बिसारि मम काजू ॥
अंस नाय कहि निलय सिधाये ॥ राम प्रवर्षण गिरि पर आये ॥
प्रथम सुरन रचि कंदर राखे ॥ राम रहन हित चित अभिलाखे ॥
जबते प्रभु प्रविशे तहँ आई ॥ सकल सौज सुख संपति छाई ॥
नानारूप विरंचि मुनि देवा ॥ करहिं सदा रघुपति की सेवा ॥
संतत होय सुभग सत संगा ॥ संशय समाधान बहु रंगा ॥ ॥
निगमागम मत विषय दारथ ॥ कहत सुनत सम बोध यथारथ
प्रावित काल कंद नभ घेरे ॥ गर्जत चलत पवन के पेरे ॥ ॥
जनु रवि ते बासव महिं बैरा ॥ है ठान्यो संगर अति घोरा ॥ ॥
की पावस ऋतु खनि नर बोली ॥ प्रभु रिझावन चली छबीली ॥
की संवत की तरुण अवस्था ॥ की अवनी को अंब विसरता ॥
राम अनुज ते ताकी करणी ॥ कही जगत जीवन पर बरणी ॥
सरद सुंदरी सुमति समाना ॥ आइ प्रकासी पंथ प्रमाना ॥
गुराल तासु गति मति बिसराई ॥ बदत बंधु ते मोह जनाई ॥ ॥
तात सकल बरषा ऋतु नासी ॥ सिय सुधि कछु न मिली कदु खासी
जियत वियत कैसो सुधि पावौं ॥ बल करि बयहि जीति महिं लावौं
जिन मम हित सुख सकल बिसारे ॥ तिन बिन हम किमि होइ सुखारे
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा ॥ पाइ राज पुर संपति दारा ॥ ॥

दो० जो हम हूं अब बदलि के बधी बालि सम ताहि ॥
तो सुनि सब मूरख हमैं कहैं न सकें निबाहि ॥
विरह बचन सुनि लखण तब तमकि लीन धनुबान
लखि प्रभु पुनि पर बोधि कै पठयो कृपा निधान ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दूत हनुमान विचारि करि कह सुकंठ ते जाइ ॥
राम काज लहि राज सुख दीन्ह्यो तुम बिसराइ ॥
सुनि सुकंठ डरियो कह्यो विषय हस्यो मम ज्ञान ॥
अवते पठवहु दूत ते ले आवै कपि आन ॥

सो॰ कह अंगद यह काम । हनुमाने ते होइ है ॥
नाहित दूरि मुकाम । चले तुरत सुनि पवनसुत ॥

चौ॰ पारपत्र गिरि प्रस्थ मैं गयऊ ॥ गव गवाक्ष ते आवत भयऊ ॥
राम काज लगि मरकट नाहू ॥ बोल्यो बेगि सहित बल जाहू ॥
सुनि कपि असी संकु सत सात्ता ॥ लै संग चले सुभट हर षात्ता ॥
पुनि रैवत कदलीवन आये ॥ दुर्द्धर गज ते वचन सुनाये ॥ ॥
सात पदुम कपि असी कोरोरी ॥ लै दोउ चले तुरत हरि ओरी ॥

दो॰ पुनि पहुंचे बलबीर के सुनि कपि नेइ सत्लाख ॥
साठि सहस सत संग लै चले करत अभिलाष ॥
धुंधमाल गिरि पुनि गये मिले सिरवंडी नाम ॥
सुनि कपि छप्पन कोटि लै चले कहत जय राम ॥
पुनि पहुंचे अर्जुनी गिरि कुमुदे दीन हुकुम्म ॥
कपि सत्तासी लाख लै गवन्यो चारि पदुम्म ॥
पुनि चलि आये नाव गिरि मिले नील बलवन्त ॥
सुनि कपि षोड़श खर्ब लै चले बहुरि हनुमन्त ॥

सो॰ बद्री परवत जाय । गंधमदन ते सब कह्यो ॥
सुनत चले हरषाय । लै संग गेरा अर्बि कपि ॥

चौ॰ पुनि पहुंचे अर्जुन गिरि जाई ॥ तारा वषत चले सुधि पाई ॥
नवै लाख सत्तासी कोटी ॥ संग सकल मरकट मति मोटी ॥ ॥
पुनि सुमेरु परवत पगु धारा ॥ मिले केसरिहि हालु उचारा ॥ ॥
सुनि दश कोटि लाख नव कीशा ॥ लै संग चले सहस्र षट बीशा ॥

पुनि कैलाश पुलिंदे कहेऊ ॥ जय अरु विजे अंड सुधि लहेऊ ।
सत्रह संकु कोटि यक कोरी ॥ चय कपि चले चाह नहिं थोरी ॥ ॥
पुनि विन्द्या चल भूधर आयो ॥ बारा बसन्त सुनत सुख पायो ॥
हरिहर कोटि सहस सत लैके ॥ चले चपल चित संचल कैके ॥
तड़पे बहुरि विजय गिरि गयऊ ॥ मिलि रति मुख ते भाषत भयऊ ॥
आठ पदुम नौसे इक्यासी ॥ ले कपि चले सहित सर मासी ॥
कूदे बहुरि काम गिरि पावा ॥ मुद मयंद ते हाल सुनावा ॥ ॥
तिन कपि पदुम कोटि एक लीन्हे ॥ चले सपदि प्रभु पद चित दीन्हें
जामवन्त भूधर पुनि गयऊ ॥ जामवान सुनि सागत भयऊ ॥
धूम केतु निज शेहर नेरे ॥ बारा वृन्द बसु संकु सुडेरे ॥ ॥ ॥
छप्पन कोटि अपर मरु लाखा ॥ लै संग चले भालु करि भाखा
पुनि धवला गिरि आइ बिधाता ॥ बरणी सकल दुविद ते बाता ।
एक कोटि कपि लाख पचीसा ॥ गवने संग सूम लै तीसा ॥ ॥
पुनि उदयाचल पनसय लहेऊ ॥ सर्वा सर्व सत्य ते कहेऊ ॥ ॥
अर्द बुद आठ पदुम मुनि लैके ॥ मरकट चले चहूं चित दैके ॥
यहि विधि सबै बुलाइ कपीशा ॥ आइ सुकंठे नायो शीशा ॥ ॥
यहमें गिनती जौन गनाई ॥ वृहद रमायण महं सो पाई ॥ ॥
बाल मीक मुनि पुनि कछु जानी ॥ युद्ध काण्ड में कह्यो बखानी

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम
सनेही कृत सुग्रीव मित्रता राम प्रवर्षण निवास वर्णनो

नाम ऊनविंशोऽध्यायः १९॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
सर्व रमायण केर मत जो सो कहौं बखानि ॥

चौ॰ पवन तनय जहं जहं कहि आयो ॥ किह्यो सो मुनि सुकंठ मन भायो
तेहि अवसर लक्ष्मण तहं आये । देहुं जारि पुर बचन सुनाये ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

डरे लोग सुनि बालि कुमारा ॥ आइ पाइ करि क्रोध नेवारा ॥
सुनि सूरजसुत उठि डेराई ॥ हनोमान ते कह्यो बुझाई ॥ ॥
तारा सहित प्रथम पहं जावो ॥ करि प्रबोध मंदिर ले आवो ॥
भलेहि ईश कहि शीश नवाई ॥ बिनती कीनि लखन की जाई ॥
तारा हंसि बहु वचन सुनाये ॥ करि सनमान भवन लै आये ॥ ॥
मिले सुकंठ सप्रेम प्रबीना ॥ चरण पखारि बरासन दीना ॥ ॥

दो० कहा लखन सिय केरि सुधि लीन चाहिये भ्रात ॥
बालि पठाये बिपुल कपि आवन चाहत तात ॥
अस कहि सिबिका रूढ़ है आये जहं रघुबीर ॥
बैठे जनु कैलाश पति सोहत श्याम शरीर ॥

सो० देखि नवायो माथ हाथ जोरि करि बिनय बद ॥
तव मायावस नाथ जीव सदा भरमत फिरत ॥
बिषय बिवस मुनि देव मैं पशु कपि कामी महा ॥
कीन्हे बिनतव सेव मिटत न इन्द्री जनित दुख ॥

चौ० सुनि प्रभु बैठायो सनमानी ॥ सिय सुधि लीन चही सुखदानी
जेहि हित त्यागि लाज तनु राखा ॥ सो न भई पवनक अभिलाषा
तेहि अवसर आये कपि यूथा ॥ नाना बर्ण बिशाल बरूथा ॥ ॥
पीत रक्त बिसंगम नीला ॥ करबुर धूला धूल धुमीला ॥ ॥
सात ताल सम पृथुल कराला ॥ जिन्हे बिलोकि लहै भय काला
सब कपि युद्ध बिसारद बीरा ॥ स्वामी हित कारक रणधीरा ॥ ॥
मिलि लंगूल पति आय सुदीन्हा ॥ सबन प्रणाम राम कहं कीन्हा
भये छकित छबि नख शिख देखी ॥ धन्य भाग अनुराग बिशेषी
राम कुशल बूझी सब केरी ॥ बोले तब सूरज सुत टेरी ॥ ॥ ॥
सुनहुं सकल मरकट मम बाता ॥ जाते जीव केरि कुशलाता ॥
जपतप दान ज्ञान बहु करई ॥ बिन हरिभजन न भवनिधि तरई

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ विद्या बुद्धि विवेक बित धर्म कर्म भल सोइ ॥
अन्तर्यामी राम प्रभु जाते पर सन होइ ॥
मुख भुज कटि पद तें भये बरनाश्रम हरि सूत ॥
जो न भजे तेहि चारि महँ तेहि जानिये कपूत ॥
बरनाश्रम तें भ्रष्ट हैं सोइ परत भ्रम कूप ॥ ॥
पुनि पावत यम जातना निज अघ के अनुरूप ॥
अस बिचारि छल छाड़ि कै करहु राम कर काम ॥
मास दिवस महँ आय हू लय सिय सुधि अभिराम ॥
आई अवध बिताइ जो सो पाई बड़ दण्ड ॥
गव गवाक्ष ते कह्यो तुम जावो पूरब खण्ड ॥

चौ॰ भले नाथ कहि माथ नवाये ॥ सात पदुम कपि पाइ सिधाये ॥
तारा बरवत सुखेन मयंदा ॥ कह्यो जाहु उत्तर सह नन्दा ॥ ॥
गेरा पदुम कौशल्य साथा ॥ खोजत चले बिपिन गिर पाथा ॥
पुनि बसन्त सत बीर बोलाये ॥ कह्यो जाहु पश्चिम महिं सिधाये ॥
सोरह कोटि कौशलय भारी ॥ तब अंगद ते कह्यो हकारी ॥ ॥
जामवन्त हनुमत नल नीला ॥ सब दक्षिण दिस जाहु शुशीला ॥
दश करोरि बानर संग लैकै ॥ चले सकल प्रभु पद चित दैकै ॥
हनोमान जब नायौ माथा ॥ कर मुद्रिका दीन रघुनाथा ॥ ॥
कहि नि दिह्यो सीतहि सहिदानी ॥ फिरयो बेगि मम बिरह बखानी ॥
सुनि प्रभु बचन चले सिर नाई ॥ ढूंढ़त गिरि बन कपि समुदाई ॥
वज्र दंत दानव यक पावा ॥ अंगद तेहि खा मारि गिरावा ॥ ॥
मग में तृषित भये कपि भारी ॥ बिवर देखि प्रविसे हित वारी ॥
भवन एक तहँ बिना निकासू ॥ बैठि बाम तप पुञ्ज प्रकासू ॥
सबहिन जाइ ताहि सिर नावा ॥ बूझे ते वृत्तान्त सुनावा ॥ ॥
सुनि बोली फल दल जल खाहू ॥ खात भये सब सहित उछाहू ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पुनि आये जहँ तापस बाला ॥ तब सो कहत भई निज हाला ॥

**कुण्डलिया** हेमा अपसरा की सखी स्वयं प्रभा मम नाम । हं-
रि आनी मय स्वर्ग ते दुरि राखी यहि ठाम ॥ दुरि राखी यहि
ठाम इन्द्र सुनि लय गे ताही । मय रहि गइ यहि नयन राखि
राघव मन माहीं ॥ मन माहीं प्रभु राखि नाम सुमिरयो नित
नेमा । अब कारज ह्वै गयो भयो पारस मिलि हेमा ॥ अब तुम
मूंदह नयन निज जाहु विवर के पार । मैं जैहों रघुबीर पहँ ।
सुनि झांपे दृग तार ॥ सुनि झांपे दृग तार लखे तो सिंधु कि-
नारे ॥ आपु गइ प्रभु पास बहुरि बद्री पगु धारे ॥ इहां बिचा-
रहिं कीश मिलि बादिहि बीती अवधि सब । मिली न सी-
ता केरि सुधि समुझि परत भई मीचु अब ॥

**सो०** सुनि कपि शन के बैयन । निकसा कहिहं पाति तब ॥
मिला असन निज अयन । हेरि परानेकी शसब ॥
कह अंगद अनुरागि । धन्य जटायू समन कोउ ॥
राम हेत तनु त्यागि । गा हरि पुर है धृग हमैं ॥
अनुज नाम सुनि सोइ । ठाढ़ कि हिसि कपि सपथ करि ॥
जामि उठे पर दोइ । मारि असित दृशामी दिवस ॥
निज गति बरणान कीन । जरे पंख जिमि जेहि भये ॥
पुनि सिय की सुधि दीनि । है रावण पुर विटप तर ॥

**चौ०** अस कहि गीध गयउ निज गेहा ॥ तब सब कपिन भयो संदेहा
सत योजन सागर हित तरना ॥ निज निज बल सब काहू बरना
पार जान हित सकल सकाने ॥ जाम वन्त तब बचन बखाने ॥
हे हनुमान ज्ञान गुण धामा ॥ होई यह तुमही ते कामा ॥ ॥
ताते निज बल अतुल संभारो ॥ हम सब की जानि बाट निहारो
सुनि हनुमंत हरष उर लीन्हा ॥ तेरह योजन कर तनु कीन्हा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

बोले ऋक्षपते सुनि लीजै ॥ का ऽब करौं तौन सिख दीजै ॥
कहौ रावनै ऽयावौं मारी ॥ कहौ लै ऽयावहुं जनक दुलारी ॥
इतनी बात करहु तुम ताता ॥ सीतहि देखि कहो कुशलाता ॥
गीतिका छं० कुशलात ह्यां सिय केरि तात सुनाइये सुधि ऽयाइ कै । जेहि जानि राघो कीश लै गढ़ लंक घेरैं जाइ कै ॥ करि समर मारहिं रावणहिं सुर साधु बंदि छोड़ाइ कै । भव सिंधु तरिहैं जीव जड़ यह सुयश सुनि ऽरु गाइ कै ॥ ३

दो० सब रामायण के विषे देख्यो जौन चरित्र ॥
सोई जन रघुनाथ हूं बरन्यो कछुक पवित्र ॥

इति श्री विश्राम सागर सबमत ऽागार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत किष्किंधा काण्ड सम्पूर्ण नाम विंशो ऽध्याय: २०

श्रीगणेशायनमः

# अथबिश्रामसागर

## सुन्दर काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं आदि कवि कहनि कछु नाटक रीति बखानि॥
जामवंत के बचन सुनि हनोमान बलवान॥
चले लंक कहँ हरि दिवस जिमि रघुपति को बान॥
सुर प्रेरित बल लखन हित सुरसहि रोक्यो आइ॥
बदन पैठि पुनि निकसि कै चल्यो आशिष पाइ॥
राहु जननि रहि सिंधु महँ गहि खग करै अहार॥
सोइ छल लखि हनुमान तेहि मारि भये दधि पार॥
शिवा शाप युत शैल पर गयो भयो नहिं बाल॥
यह नहिं प्रभुता प्लवंग की प्रभु प्रताप बस काल॥

सो० गिरि चढ़ि देखी लंक। अति विचित्र मुनि मन हरनि॥
फिरत असुर बहु बंक। चहुँ दिशि रक्षा हेत पुर॥
करि बिचार कपि शेष। दशाडारि बपु धारि तब॥
निशि गढ़ कीन प्रवेश। लखि बोलत भइ लंकिनी॥
जानत मोहि न अयान। मम अहार हरि लंक कर॥
सुनि मुष्टिक हनुमान। हनत मरी भइ दिव्य बपु॥
कहत भई कर जोरि। भयो सत्य बर ब्रह्म कर॥
जाहु नगर भय छोरि। सुमिरि राम पद कपि चलहु॥
सब घर हेरे पौन। कतहुँ न देखी जानकी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गये दशानन भौन। अति विचित्र पुष्पक जहां॥
दो० सर्व काम प्रद सब रतन सर्व काल जेहि माहिं॥
सर्व मोज देखत बनै बरनि जात सो नाहिं॥॥
चौ० तहं। नर्थक दसमुखै निहारा॥ सोइ गयो कल करत बिहारा।
चौदह सहस सुनाग कुमारी॥ जहँ तहँ कनक लतासी डारी॥
देखि भयो हनुमानहिं शोचा॥ नाहक हरिसि जानकिहियोचा
अब ते देइ पठै जो सीता॥ तो न होइ यहि पुर ते रीता॥॥
राम काज लगि सब त्रिय देखी॥ जनक सुता सो कतहुँ न पेखी।
पुनि गे भवन विभीषण केरे॥ रामायुध तहँ अंकित हेरे॥॥
तब लागे मन करण विचारा॥ जागि विभीषण नाम उचारा॥
भयो मुदित कपि सज्जन जानी॥ यहि ते मिले न होइहै हानी॥
लागे कहन राम गुण धीरा॥ सुनत विभीषण आयो तीरा॥॥
पूछा हाल पवन सुत भाषा॥ दोउ दिशि भइ पूरन अभिलाषा
दो० कह्यो विभीषण जोरि कर कबहुंक श्रीरघुनाथ॥
करि हैं कृपा कृपायतन जन पर जानि अनाथ॥
तामस तन कछु भजन नहिं नहिं पद कमल सनेहु॥
बिन हरि कृपा न दरस नव भयो भरोसो येहु॥
कह कपि परम कृपाल प्रभु सचिव किये कपि भाल॥
वा कन बुद्धि न रूप कुल तोख हेत तिहुँ काल॥
सो० ऐसे प्रभुहि बिसारि। कस न परहि नर निरय महँ॥
सुनत भयो सुख भारि। पुनि पूछ्यो कहँ जानकी॥
दीन्ही युक्ति बताइ॥ गे अशोक बन विशद जहँ॥
कनक बिटप समुदाइ। नाना चित्र विचित्र फल॥
खाजत खसत प्रभात गये शिंशपा बिटप तर॥
बैठी जहँ जग मात। मनहुँ बिरह मूरति धरे॥॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखि न बायो शीश। मन हीं मन रहे बैठि तरु।।
तेहि अवसर दशशीश। अगारी लै तहँ संग सुमुखि सब।

चौ० बोला जनक सुता ते बानी।। सुनहु प्राणप्रिय सुमुखि सयानी।
मैं सुर असुर नाथ बल धामा।। मन्दोदरी आदि सब भामा।।
मेघनाद आदिक सुत जेते।। तिनकी रखनि रहत जन तेते।। ।।
करहुँ सकल सुचि सेवक तोरे।। एक बार निरखौ दिशि मोरे।।
तेरे योग सकल सुख आही।। तृण धरि बद सीता तेहि पाही।

छप्पै रावण जे अहैं राम चरणन अनुरागी। तेसरि प-
ति चुम्बवत लखै ललना मम आगी।। चिन्ता मणि अस
मवत सरिस खद्योत तमारी।। स्वर्ण मेरु लोष्ठ वत भूप भृत्य
वत विचारी।। कल्प विटप निर्नवत जग रासि भारवत देह।
तो तैं काह देखावई मोहि लघु लंका येह।।

दो० होत प्रफुल्लित कमलिनी कहु खद्योत प्रकाश।।
कहत वचन मरजाद तजि हेत आपने नाश।।
सुनि सीता के वचन वर मनहुं लगे उर बान।।
काढ़ि खड्ग मारन उठ्यो तैं मम कृत अपमान।।

सो० मन्दोदरि गहि पाणि। समुझायो बहु भाँति तब।।
बोलि बकी अघखानि। कहिसि कि त्रासहु जनकजाहि।
मास दिवस के बीच। जो नहिं मानी वचन मम।।
तो कटिहौं शिर नीच। लज्जित ह्वै गा भवन निज।।

दो० विविध रूप धरि राक्षसी लगी सियै दुख देन।।
त्रिजटा तब समुझाइ कै जात भई निज ऐन।।
राम बिरह बस जानकी सबनि निहोरि निहोरि।।
मांगहिं पावक देहु जेहि मिटै विपति अति मोरि।।

चौ० सुनत पवनसुत हृदय विचारी।। दीन मुद्रिका सनमुख डारी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखि मुँदरी रघुपति कर केरी ॥ बोली बचन तासु तन हेरी ॥ ॥
थी घरबन हम तव यह रीती ॥ अब को करिहि बिगत परतीती
कहु हैं कुशल लखण रघुवीरा ॥ कैसे तें पाई मम तीरा ॥ ॥
तब हनुमत बोले सह चाऊ ॥ मातु भानुकुल दशरथ राऊ ॥
तिनके सुवन लखण रघुनाथा ॥ आये बन बैदेही साथा ॥ ॥
महिं जे नहँ हरि लैगा कोऊ ॥ ढूँढ़त फिरैं बिपिन महँ दोऊ ॥
गीधराज ते सुधि जब पाई ॥ तबैं तो अधिक उठे अकुलाई
बहुरि सखा सुग्रीवहिं कीन्ह्यौं ॥ भूषण पाय थाह सी लीन्ह्यौं
बरषा समुझि रहे गम खाई ॥ अब कपि अगणित बटुरे आई
पठये चहुँ दिश चाहन भूरी ॥ मोते कहिनि नयन जल पूरी ॥
लै मुँदरी जाहु तुम ताता ॥ सीतहि देखि कहेहु कुशलाता
कालिह मातु मैं लंकहि आयौं ॥ खोजत आनु दरशन तब पायौं
रामचरित यहि बिधि सुनु सीता ॥ भई मुदित दुख दारुण बीता
बोली जेहिं यह कथा सुनाई ॥ सो अब प्रगट होत किन भाई

दो० सुनि सीता के बचन कपि आयो धुरह लजात ॥
चूके औसर सुजन जिमि सज्जन सन्मुख जात ॥

चौ० कपिस्वरूप लखि सीय सकानी ॥ राम दूत मैं सत्य सयानी
तिनके गुण कछु करौं बखाना ॥ पीशनाथ बोले हनुमाना ॥

कुकुभा छं० प्रथम दया दुख देखि सकै नहिं उभय कृ-
पाकरि गहई । अनुकंपा हित करत न त्यागत करुना कष्ट
न सहई ॥ आनृशंस गुण सहित दोयहू ताकी रक्षा चाहैं
अनूक्रोश निज शरणि केर कलि कर तब पुनि पुनि काहैं ।
दम गुण इन्द्री दमन दर्प परिभव दानव संतापा । सम गुण
सुमत बिरोध बोध बपु परि पूरन निघा यापा ॥ सत्य सदा स-
च कहत गहत लखि प्रीति प्रतीति अपावन । क्षमा छिद्र

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखि क्षमहि सदा घापति सो लभ्य सोहावन ॥ सोशिल्या तज्ञदीन खीन बुधि सुधि धररा गत पाले । प्रणात विधुर बात्सल्य भोगकृत प्रमुदित आपु कृपाले ॥ सब उरफुर सर वज्र अघट धटना कर शक्ति सरूपं । यज्ञकृत गणात कृतज्ञ मेरु सम सुमिरत भक्ति अनूपं ॥ गुणगम्भीर रहि तोर जासु की गति मति जातन जानी । चतुरति चित्र बिचित्र रचत रचना अगणित विचबानी ॥ थिर सुनाम गुण धाम अचल अर्पत अन हेतु उदारा । धीर्यधार रिपुमार मोह मधि मानस टेरे नटारासूर समर सुखं लहत नेज जग जीवनि निज बसराखे बल बड़ कारज करत होइ श्रम स्वल्प न पद्ध ति नाखे ॥ सो दृष्यी स्लिल अहृ सुभग चरव चाहत चाहन डोले ॥ महा मीठ माधुर्य साम्य सो रम सबते भल बोले ॥ भागवान ब्रह्मादि धनी बहु जाके धनते भयऊ । शिरस सुमन सुकुमार्य आर्य आज्वलि अजीत अरि जयऊ ॥ शुद्ध सुबेषकिशोर सौर्य मार्दव विरक्त विज्ञानी । धर्म धाम निष्काम राम रघुनाथ अनाथ अमानी ॥

दो० कहि के कहत न गहत गहि दैके देत न काहु ॥
बधि के बधत न तजत तजि भजेहि भजत तवनाहु ॥
संग सुमित्रा सुवनते अधिक भरत में प्रीति ॥
कइक बार मोसे कहिनि कुटिल काग की रीति ॥

चौ० सुनि हनुमान ब नबैदेही ॥ जान्यो मन क्रम राम सनेही ॥ बोली अहैं कुशल दोउ भाई ॥ हमते तात न कछु बनि आई ॥ सासु ससुर पति बचन नेवारी ॥ आइन संग सनेह पुकारी ॥ अछत देह जब भयो बिछोहा ॥ तजे न प्राण कौन बड़ मोहा ॥ यह उ सहे उ दुख दुसह अभागी ॥ जरिन गयो बपु बिरह दवागी

तेहि ते तात प्रीति को बाना ॥ जानत भरत कर दम जल जाता ॥
आरज सुवन दया के सिंधू ॥ सरल सुभाव दीन के बंधू ॥ ॥
निज दिशि देखि चहैं सो करहीं ॥ हमरे करम सदा दुख भरहीं ॥
सुनि पवनज कह पुलकित गाता ॥ दीन बचन कल भाषत माता ॥
जन के दुख रघुनाथ दुखारी ॥ तव वियोग संभव दुख भारी ॥
करतु अनरोध मोध बिनसाये ॥ ज्यों त्यों इन ने दिवस बिताये ॥
नाहिन कह रघुपति सम भानू ॥ नम बरूथ कहे निशाचर जानू ॥
जो मैं हरि लै जावौं आजू ॥ बिन निदेश बिगरै सुर काजू ॥

दो० तेहि ते कछु दिन धीर धरु कपिन सहित दोउ भाइ ॥
आइ तुम्हे लै जाइ हैं अरि हरि सुर पहुंचाइ ॥
सुनि बोली सिय कीश सब हैं सुत तोहि समान ॥
तब तो कीन्ह्यो स्वरो गिरि सरिस सु तनु हनुमान ॥

सो० बिन कीन्हे करतूति कथत ताहि लघु जानिये ॥
काल्हि कहौं गो भूति । धोइ समर सबिबदन मसि ॥
मै जो सुने कटु बैन । कहे जो निश्चर नीच ने ॥
धरि राखे उर ऐन । समय पाइ सब काढ़िहौं ॥
भइ सीतहि परतीत । देखि बुद्धि बल की आकर ॥
दीन्ह अशीस सप्रीति । अजर अमर सुत होउ प्रिय ॥
सुनि कपि नायो माथ । हाथ जोरि बोल्यो बहुरि ॥
सुधा लागि मोहिं मात । हरषि कहौ सुत खाहु फल ॥

इतिश्री विश्रामसागरे सब मत सागरे ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सने-
ही कृत मारुत नंदन श्री सीतापति श्री राम संदेश बरनो नाम एक विंशोध्याय:

चौ० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरापति गिरा सुख खानि ॥
कहौं आदि कवि कथनि कछु नाटक रीति बखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय पुर हुतन ते बर बाग ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दशमुख दुख हित खाइ फल कपि तरु तोरन लाग॥
बरजत मारे असुर कछु कछुक गये गृह भागि॥
कछुन जनायो रावणहि सुनत लागि जनु आगि॥

चौ० तुरत बोलि मंत्री सुत लीन्हा॥ लखि किन्नर कहँ आयसु दीन्हा॥
असी सहस्र सुभट संग लैके॥ आवा निकट दुंदुभी दैके॥ ॥
हरषे हरि सुत सैन निहारी॥ बोले जै रघुनाथ खरारी॥ ॥
जै लक्ष्मण सुग्रीव कपीसा॥ लखि किन्नर मारे शर बीसा॥
तब हनुमत हसि न रुख कीन्ह्यो॥ तेहि एक विशिख खंड न्है कीन्ह्यो॥
कपि योजन की शिला उपाटी॥ लक्षबाण करि किन्नर काटी॥
तब बजरंग रोस करि धायो॥ पटकि पानि शिर मारि गिरायो॥
पाछे अपर निशाचर मारे॥ भागि बचे ते जाइ पुकारे॥ ॥
सुनि तब अक्षकुमार पठावा॥ उभै लाख भट लै सो आवा॥
देखि ताहि गरज्यो कपि भारी॥ भाग हय गय हहरि पछारी॥

दो० साथि सकल आये निकट कहि कहि बानी बिंग॥
कूदेहु कपि तिन मध्य इमि जिमि मेरवन महँ सिंग॥
कछुकोनाथ दांडे करनि कछु माडे धरि पाइ॥
कछुक मिलाये धूरि महँ भूरि मसनं कीनाइ॥

चौ० निज बल बध लखि अक्षयकुमारा॥ लोह खंभ लै की शाहि मारा॥
लागत सो मुरछा सी आई॥ मारे तब लाखन सर धाई॥ ॥
भयो चेत तनु पूरित देख्यो॥ भानु किरनि जनु चहुँ दिसि लेख्यो॥
झिटकि देह सब बान गिराये॥ गहि गिरि एक अंछे पर धाये॥
आवत लखि मारे बहु बाना॥ दहि ने करते खंभा परवाना॥ ॥
तुरत बाम गहि सिर दै मारा॥ सहित सूत रथ भा संहारा॥ ॥
तासु सचिव सुत पाँच प्रचारे॥ कछु खेलाइ पुनि सोऊ मारे॥
बैठ बहुरि महल पर जाई॥ बोले लंका दिसि गोहराई॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेहीं कोशलेंद्र कर दासा ॥ बैठ लवा वन कीन्हे नासा ॥ ॥
जासु सुभट मन होइ खुशाली ॥ आइ करे सो समर कुचाली ॥
अछै निधन सुनि निश्चर राई ॥ मेघनाद कहँ लिहिंसि बोलाई
कह्यो बाँधि वानर कह लावो ॥ मारेहु जनि सुत मोहिं देखावो ।
आयसु मानि अनीलि संगा ॥ आवा लहँ जहँ कपि रणरंगा ॥ ॥
लखि पवनज फाँद्यो तिनबीचा ॥ मारे छिटकि अनेकन नीचा
पुनि प्रचारि रुषरिपु ले भिरेऊ ॥ मृगपति सम महि कोउन गिरेऊ।
भरि अनंग दिन भई लराई ॥ जाना यह हरिजीत नजाई ॥ ॥
ब्रह्म अस्त्र तब साधि चलावा। करि बिचार हनुमान बँधावा
लीलेन्हे पाँयजहँ रावण ॥ देखा कपि जनु कुधर भयावन ॥
अफरा नयन रिसबस अंगजरहीं ॥ सभय देव सब आयसु करहीं
लखि प्रभाव कपि शंक न आनी ॥ बोला तब दशकंधर बानी ॥

**गीतिका छं०** कपि कौन तू सुत अस्स घालक कौन ब-
ल रघुनाथ के। रघुनाथ को खरदूषणांतक अनुज लक्ष्म-
ण सात के ॥ लखण को तब भगिनि जानत परशुधरिमद
जेहि हर्यो। परशु धर को सहस भुज रिपु दीप जेहि तब-
छिर धर्यो ॥ पठवा जु केहि सुग्रीव का हरि बालि से द-
र जानिये। कपि बालि को तुम रहे जाकी कोष में सुधि-
आनिये ॥ किमि सिंधु नांघे गोप ह्ज्यों केहि हेत सिय चोरे-
लखे। सिय कौन कन्या जनक की तुम बानगे जाके भखे ॥
कस बान सोइ बलि भुवन जेहि तेहि बाँधि नाच नचा यहू।
को कहत यहि विधि पद्मिनी जेहि जलधि माँभ चलायहू॥
सठ बाँधि आयसि यही बात नबात यह नहिं आन है। तब त्रि-
यन लखि अघ त्याग पुनि तोहिं देन शिक्षा ज्ञान है। देकौन
शिक्षा देत याही बयर प्रभुसे जनि करी। परि पाइ सीतहि देह

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सब बिन मोत जाते नामरी ॥ को मारिहै मोहिं कर्म तेरे कोन तिन ते राखिहै । श्रीराम करुणा धाम जब तें शरण मुखने भाषिहै ॥ मम शरण त्रिभुवन आजु तो हमशरण काकी आहिरे । नहिं जाइ है तो पाइहै फल कटुक कछु दिन माहिंरे ॥ मृग नारि द्विज कपि नाह हों खर दूषणां धक निरबली। मोहिं भेंटि जब फिरि जाइ है तब बात कछु आगे चली ॥ जब समर रोरिबहें राम सब को सुभट सायक सहि सकी । सुनि समुझि बूझत नाहिं श्रीसहु नयन फूटे बर बकी ॥ रेपोच कपि नहि डरत काको मोहिं तू सठ है कहां । नहिं दीन आयसु ईश नातरु ख्याल कर त्यों जस चहा । यमराज तो हिं करि सुभट रसु युत लेक खल खल तोस्वयं । पुट पाक करि सुर पतिहि देत्ता घने घन घल तो त्वयं ॥ सुर नाग नर दिग पाल सब जग जाल जेहि कर तल अंहे । तेहि शत्रु ते करि रारि जीवन मरण दोनो भल रहें ॥ अबलीन सेना मापि तव नहिं सबल कोउ मोते हवे । पर डरत आयसु भंग ते नत सबन करिजाता सवे ॥ सुनि किहिसि निश्चर बोलि यह कपि काल बसबध कीजिये । बर बाग की गति किहिसि जिमि तिमि बाँटि तन को लीजिये ॥

**सो०** सुनि धाये जिमि भूत । कह्यो विभीषण आरिकर ॥
नाथ न मारिय दूत । घटत कि दधि दलि बूंदयक ॥

**चौ०** अपर दराड कीजे जो चहऊ ॥ तो बालधि पावक ते दहऊ ।
जहि ते फिरि तप सिन महँ जावे ॥ कपिन समेत इहां ले आवे ॥
एक गये जो मिले अनेका ॥ तो तुरते तजि दीजे एका ॥ ॥
सबहिन कहा मंत्र यह मूला ॥ लगे लयावन घृत पट तूला ॥
जहँ तहँ लगे लपेटन बोरी ॥ कपि खेलार करलूम बढ़ोरी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ठोर ठोर पावक पर जारी॥ ज्यों कोटि रवि किधौं दैबारी॥ ११
लघुहै निबुकि मेरु समअथऊ॥ रावनभवन कूदि चढ़िगयऊ॥
नाराच छं० चढ़ौ फलांगि धाम धूम लाम को उठायऊ।
मनो अकाश ते नदी कृसानु की बहायऊ॥ किलंकलोल
नेककाल ओह सो पसारेहू। किधौं अनीक अयफ सूर सय
फ सीनि कारेहू॥ किधौं सुरेश चाप की कलापदामिनी मंहै।
बिलोकि जातुधान सो पराल भे जहैं तहैं॥ फिराइ लाइ लाइ
अयन मयन से लगे बरैं। गयंद छोरि बाजि छोरि बाजि छो-
रि ऊंट छोरि ये खरै॥ अनेक शाल बालकी सुतात मातबो-
लहीं। बचाइ लीजिये हमें सबै समान डोलहीं॥ अनेक ना-
रि मारि रिंभ डिंभ काढ़ि लावहीं॥ अनेक डारि डारि बस्तुवा-
रि लेन धावहीं॥ अनेक कंत बीर ने पुकारि वयन यौं कहैं।
उठाइ लेहु लाल माल जाल दे परान हैं॥ बिलोकि दैत्यौं
कहै कपीश यज्ञ माठनी। सुरारि सोज लंक कुंड हाक स्वाह सो-
भनी किधौं बिराट के सुरारि राज रोग जानि जू। तिभिल तासु वद्ज्यो
र भूंगाक बानि जू॥ मथंति मद राजकी मनोज फागु खेलई। बिरागभू-
त्यबोध को बिमोह बंधु ठेलई॥ गिरे कपूर हूति ते बिबेक है मंदोदरी।
बिहाइ लोक लाज का निभाग तीन बैंग अरी॥ अरे अकंपनाय किला
य कंठ की महा धरं। लबाइ लेउ अद्भ गाति पूत नाति सोदरं॥ अ-
नेक बार मैं कही बुझाइ हू बिभीषणं। नमामि रादि आरु को कुठा-
र वंस तीषणं॥ निकेत द्वार अई ऊद्ध हाट बाट मैं जहां। लुका-
त जाय नीर कीश तीर देखिये तहां॥ घने स्व बस्त्र जात के-
निसात स्वस्ति पावहीं॥ बोलाइ शेष राघवेश जानकी क-
हावहीं॥ बधू जो कुम्भ करी की पसारि पानि भाखिये।
देहाइ रामचन्द्र केरि मोरकन्त राखिये॥ अनेक धाइ

धाइ जाइ रावरो सुनायहू। बिचारि बीर मेघनाद से बली पठायहू॥ अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आइ मारने लगे। घुमाइ दीनि बालधी पुकारि कूर से भगे॥ सुमंत्र जाइ यों कही बड़ोबलाइ कीश है। निशंक बंकहू बड़ो सुनोन ऐस दीस हैं॥ बिशाल ज्वारल जानि कोपि मेघ बोलियों कही। बुलाइ देहु आगिरे बहाइ जन्तु को सही॥ भले सुनाय चाप आय पुंज पाथ छाँड़ेऊ॥ यथा सनेह पाइ चौगुनी कृशानु बाढ़ेऊ॥ लगी जु अङ्ग अङ्ग बाण प्राण ले भगे सबै। निहारि रीति मालवान स्यान बोलियों तबै॥ न आहि याहि आभिसूस आहि ईश बामता। समीर स्वांस सीय की जु राम रोष भामता॥ बिड़ोजब्रह्म बिष्णु रुद्र आदि देव जोन हैं। डेरात मोहिं सर्व बङ्ग ईश और कौन हैं॥ बोलाइ कालते कह्यो लगूल लाउ मारिकै॥ बटोरि भूत प्रेत गण्ण दण्ड चंड धारिकै॥ बिलोक बात जान घात कीनि मयन तासुको। उठाइ गाल में धरयो परयो खंभार जासु को॥ समेत शंभु भास राम दास पास आयहू॥ सभीत पंकजा सनादि बीनती सुनायहू॥

**दण्डक छं०** जयति श्री बात संजात विख्यात बल बिपुल पन बाल रवि गाल धर्ता॥ लोक लिपि कही श्रुत शास्त्र विद्यानि पुराण निरस संसार महिं भार हर्ता॥ जयति बज्रंग रण रङ्ग अरिभङ्ग कृत कर्म निहिं भर्म रिक्ष मूक बासं। सत्य सुग्रीव सुख हेतु बुध केतु बपु बचन मन काय रघुनाथ दासं॥ जयति गुण ज्ञान विज्ञान बैराग निधि नाम बसु जाम उर धाम धारी। साधु सुर रंजनं असुर गण गञ्जनं दुष्ट मुख भञ्जनं बिपति हारी॥ जयति कपि सिंह पर सिंह-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पावक परम धर्म धुर धर्ता हरि दर्प हन्ता। स्वर्ण से लाभ ज-
ल दाम विग्रह बरण विमल यश मूर्त वीराग्र गन्ता॥ जय-
ति जन कात्मजा शोच मोचन बिपिनि निधन निर्द्वन्द्व द-
श ग्रीव जाता। निपट निर संक गढ़ लंक दाहक काम क्रोध
मद देव दानंद दाता॥ जयति शिर श्रवण दृग स्वेत कटि उ-
दर कर शूल निरमूल नाभिस्थ आमं। पातु पूरब दक्षि बिदि-
शि पश्चिम उत्तर ऊर्ध अध सर्वदा सर्व ठामं॥ जयति पर
यंत्र पर मंत्र नेवारणं साकिनी डाकिनी घोर मारी॥ भूत य-
म दूत बैताल पावक प्रेत चोर बिग बिच्छु अहि बंध नारी॥
जयति सुर सिद्ध मुनि वृन्द वन्दित चरण सरण भय हरण
धृत कुधर हाथं। अंजनी आनि दोहाइ श्रीरामकी हरहु दु-
ख सपदि रघुनाथ नाथं॥

दो० देहु छाँड़ि यम राज कहँ यही बीनती मोरि॥
परबस आयों स्रवन सुनि दीन गाल ने छोरि॥
जरत देखि पुर जान किहि भयो शोच कपि हेत॥
लागी सोंपन सब बिबुध बिस्नुहि प्रीति समेत॥
बैदेही की सुरति करि हरि हु लाग पछितान॥
पुनि अपनी दिसि देखि के दूरि कीन अज्ञान॥
बच्यो बिभीषण भवन अरु कुंभकरण कर द्वार॥
अपर लंक सब जारि कपि कूद्यो जलधि मँझार॥
पूछ बुझाइ बनाइ लघु वपु आय सिय तीर॥
कह्यो चिन्ह कछु देहु मोहिं जिमि दीन्ह्यों रघुबीर॥
सुनि सह प्रीति उतारि निज चूड़ामणि तब दीन्हि॥
गहबर बोली तात तुम भले समय सुधि लीन्हि॥
जिमि मनि बिन व्याकुल भुजग जल बिन व्याकुल मीन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तिमि देखे रघुनाथ बिनु तलफत हौं मैं दीन॥
कहु सुत अब कब आइ हैं दीनबंधु यहि पार॥
दैहैं राज बिभीषणै करि निशिचर संहार॥
बिजै पाइ कब राजि हैं मोहिं सहित दल माहिं॥
देवबंदि ते छूटि कब बिनय करब प्रभु पाहिं॥
कबधौं बिधि यहँ आइ है फिरि कोशलपुर नात॥
भरत शत्रुहन लोग सब कब लहिहैं मुद मात॥
ह्वैहैं मंगल काज कब पुजिहैं याचक काम॥
नख सिख कब अवलोकिहौं रघुपति छबि अभिराम॥
सीस मुकुट मणि गण जटित श्रवणनि कुंडल लोल॥
जग मगात कब देखिहौं टोपी दिये अमोल॥
अलकैं सौंधी अतर सो निकट कपोलन मुक्त॥
भरि लोचन कब देखिहौं कुसुम कलिन संयुक्त॥
भाल तिलक भासित उरद भृकुटी धनु अनुहारि॥
भूरिभाग कब देखिहौं नयनन पलक बिसारि॥
चंचल चारु बिशाल बिवि लोचन मोचन मान॥
चितवत हिसि कब देखिहौं मन को करहि कुरबान॥
कीर तुंड सम नासिका लटकन की छबि भूरि॥
कब चकोर सम देखिहौं मुख मयंक तृण तूरि॥
अरुन अधर दाड़िम दशन रसन चारु मृदु हास॥
हे हरि कब अवलोकिहौं ससि कर सरिस प्रकास॥
मधुर बचन जन मन हरण कब सुनिहौं निज कान॥
चिबुक चारु कब देखिहौं चितवन अमी समान॥
कंबु कण्ठ तुलसी सुभग मनि मोतिन की माल॥
उर दीरघ अवलोकिहौं कब त्रिवली सुखजाल॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भुज विशाल करि कर सरिस करतल कमल समान॥
अहित विभूषण देखिहौं कब लीन्हे धनुबान॥
कौन भृगा पहिरे ललित ताऊपर पट पीत॥
कब निज नयन सेराइहौं देखि उहर उपबीत॥
कटि केहरि हरि कर धनी पट पर दनी सुरंग॥
कब पद पदुम पलोटिहौं आनु पानि सब अङ्ग॥
मैं सुत कंत अनन्त कर जानत सरल सुभाउ॥
तातें कहलन सहत दुख तुम तें कौन दुराउ॥
विरह आगिनि ते देखि तोहि सीतल भय निज देह॥
सोउ कहत तुम जान फिरि सोइ दुख सहब सनेह॥
दीन बचन सुनि सीय के भयो बिकल कपि राय॥
नीकि न लागी अमरता छल बल कछु न बिसाय॥
कीन्हो मातु प्रबोध तब होइ तुव मन जौन॥
चल्यो नाइ शिर नाद करि कूद्यो सागर लौन॥
आवत जानि लंगूल सब चढ़े बिटप गिरि धाइ॥
देखत पहुँचे आइ हनु कह दिवस सुखदाइ॥
भये कौन ते पीन सब शाखा मृग एक साथ॥
वृहद रमायन केर मत कहा कछुक रघुनाथ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दासराम सनेही कृत हनुमान लंका पुरी विध्वंस वर्णनो नाम द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
सार रमायण कहे कछु गीतावलि मत आनि॥
सिये रंजे बन भंजि पुनि धुर जराइ मनि पाइ॥
आयो मारुत सुत हि लखि हरषे कपि समुदाय॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भेंटि भेंटि पूछा सबनि हाल कहा हनुमान॥
सुनत चले सानन्द है जहँ सुकराठ भयवान॥
मार्ग पञ्चमी शुक्ल दिन मधुवन पहुँचे आइ॥
खाये फल दल मधु सबनि रखवारे बिड़राइ॥
षष्ठी दिन कपि पतिहि मिलि मुदित कहा सब हाल॥
सतयें दिन आये प्रबिल जहँ रघुनाथ कृपाल॥

चौ॰ चरणपरत भेंटे रघुवीरा॥ सानुज बैठारे निज तीरा॥ ॥
जामवन्त तब सकल बखाना॥ जेहि विधि काज कीन्ह हनुमाना
सुनत समोद गोद भरि अङ्का॥ हनुमानहिं पुनि मिले श्रीरङ्का
उपपधारि बूझी कुशलाता॥ किमि सिय खबरि लयायो ताता

गीतिका छं॰ किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवन सुत पद गहि कहा। प्रभु पास ते जब चलेन ढूंढ़त दूरि एक सागर चहा॥ शत योजनं कर तेहि नाघि चालिस कोस त क आराम है। पुनि हेम के त्रैकूट लङ्क सुवेल सुन्दर नाम है॥ तहँ पाँच लाख पषान के गृह दारु के नव लक्ष हैं। पुनि ताम्र के मुनि कोटि घर श्रुति कोटि रजके स्वक्ष हैं॥ ते तनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग क। षट को- टि तृण के वंश छद के कोटि सत बहु भाग के॥ अस्फटि क के नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र से। मैं दीख रतनं- ति लै लंका दुर्ग सत योजन नवसे॥ दश शीश नाकोईश जाकि कोप तें त्रिभुवन कँपै। उपवाग तामें जानकी नव विरह पावक में तपैं॥ जहँ रहत तहँके विहंग निज निज भवन साजि भजि भजिगये। भइ भेंट स्वास समीर ते तिन फिरि न तिहुँ मद पगदये॥ कृशगात सो जरि जान लजि दृग बारि निज दिन रा- खहीं। तब नाम सुमिरत याम आठों और कछु नहिं भाषहीं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जब प्राण मीन समान बिन जल जानि तन त्यागो चहैं। तब सींच प्रभु गुण राखि त्रिजटा जाय मैं देखी तहें ॥ शिर नाइ दीन्ह्यों मुद्रिका कहि कुशल बन भंजन कह्यो। बधि रा-क्ष लङ्क जराइ चूड़ा रत्न सीता ते लिह्यो ॥ सोलीजिये र-घुनाथ ले निज हाथ हृदय लगायहू। भे प्रेम पुलकित गात शिथिल न बात मुखते आयहू ॥ सुनि शोग सीय बियोग सागर माझ बूड़न लागेहू। हनुमान बोहित सरिस लीन उठाइ आतुर लागेहू ॥

चौ० शोश नाइ बोले हनुमन्ता। केतनिक बात करो प्रभु चिन्ता ॥
कहो रावणै दल युत मारौं। कहौं आनि तव चरणन डारौं ॥
कहो लङ्क ले सागर बोरौं। कहौ त्रिकूटे घट इव फोरौं ॥ ॥
कहौं लाइ गिरि सागर तोपौं। कहौ पान करि जल उर लोपौं।
कहो धरौ मैं सघन बढ़ाई। तापर सेन उतरि सब जाई ॥ ॥
कहौं तुम्हे लेसिय दिखावौं। कहौ जानकी आनि मिलावौं ॥
तव प्रताप ले सब कछु करिहौं। बिन निदेश पथ पाउ न धरिहौं
तातेजो भावे सो कहऊ ॥ कह प्रभु तुम सुन ऐसे अहऊ ॥
सब विधि हौ निज मन अनुमाना। तुम सम मोर हितू नहिं आना
प्रति उपकार योग मैं नाहीं। तेहिते हौं ऋनिया तुम पाहीं ॥ ॥
सुनि हनुमान सकुचि अस भाषा। तव प्रताप मे का मृग साषा

दो० धूरि मेरु गोपद जलधि जल पावक भय प्रीति ॥
नाथ कृपा जापर करहु विपरीते विपरीति ॥
सुनि प्रभु लीन लगाइ उर बोले सम्मत नीक ॥
मांग्यो जोन रजाइ तुम तात रहे सो ठीक ॥

चौ० परमें निज शायक बरि राखे। रहिहैं सुधित तुम्हारे भाखे।
रूजग हित लीला नहिं बाढ़ी। मिटी आस दसमुख की गाढ़ी

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर्म प्रधान बिश्व मैं कीन्हा॥ देव चहैं निज बदला लीन्हा॥
सो सब फिरि रहि जाई ताता॥ तातें अब कीजे यह बाता॥ ॥
ले कपि भालु चलहु चढ़ि लङ्का॥ देखौं महँ कैस गढ़ बङ्का॥ ॥
कह कपिनाथ बेगिही कीजे॥ अभिजित समुझि कूच करि दीजे

दो० सुपदिन यह साइति सुभग जहँ अपयोगन खान॥
सुनत अष्टमी दिवस प्रभु रविलौरव कीन पयान॥

गीतिका छं० प्रभु कीन लङ्क पयान जब तब धनुष निज
टंकोरेहू। सुनि शब्द घोर कठोर चौंके शम्भु बिधि मुख मोरेहू।
भयो काम सकल निकाम शिरसे गंग धारा बहि चली। ध-
रि धीर हृदय बिचारि निज निज काज लागे बिधि भली॥ भ-
य बिकल सब दिगपाल चौदहु भुवन के बासी डरे। दशमौ-
लि सभय बेहाल पुरजन गर्भ तिन के गिरि परे॥ कपि भालु
ठोकहिं ताल अति बिकराल बहु कट कट करै। बदि बाद कू-
दहि नादकरि हरि सप्त उपरो पर परैं॥ अति पीन परम बिसाल
कर गिरि बिटप धृत चञ्चल महैं। मुख बिकट लोचन पिङ्ग
जिन्हैं बिलोकि भय कालहु लहैं॥ धरु मारु भुजा उखारु
अरिदल डारु सागर लोपई। नहिं होय देखब ताहि जो ते-
हि हेत तन को कोपई॥ यहि भाँति मर कट कटक बोलत
चलत मरु पंगुल भये। शशि भानु लोप जान नभ थल धू-
रि परि सब पटि गये॥ अपनि मेरव बहत निमेरव मानलि स-
हस दृग अकुलाने हूं। सुनि हांक श्री हनुमान की पर अपन
काहु न जाने हूं॥ बल खात दिग्गज कोल कूरम शेष शिर
हालत मही। सुख मुहुर मुहुरा मर्थि कर्षत गई तन करक-
स मही॥ श्रीराम राजत पवन पर जिमि उदे गिरि पर रबिल-
सै। सौमित्र अंगद कंध मानहुं अगनि घर बेदा बसै॥ कसम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सत इमि मग बसत बितयें दिवस सिंधु तट आयहू । उतरे नि-
रखि जल रासि फल दल फूल सबहिन खायहू ॥ इत रह-
त असुर सशंक जब ते लंक गो कपि जारि के । सुत सचिव
रावण बोलि बूझ्यो मंत्र कहो बिचारि के ॥

चौ० सुनि घटश्रुति बोला अहंकारी ॥ को है त्रिभुवन सरिस हमारी
जो सन्मुख सक नयन मिलाई ॥ अस कहि चला बिवस ओंघाई
तब सक्रोध बोला अतिकाया ॥ आयसु मोहिं देहु करि दाया ।
अबहीं छिति नर हरि बिन करहूँ ॥ और मंत्र का बहुत उचरहूँ ।
कामरूप बोला घननादा ॥ मम प्रभाव जग जानत आदा ॥
बिधि हरि हर बस किहेउँ जुझारू ॥ नर बानर हित कौन बिचारू
कुंभ निकुंभ दंभ छलकारी ॥ बोले बिभुता बिदित हमारी ॥ ॥
रूपा हरषि सब देव निहारें ॥ देखत उच्चासन बैठारें ॥ ॥ ॥
भोजन हित कहियत तिन पाहीं ॥ हम काहू कर छुधा न खाहीं ।
डाटत बोलि सकै नहिं एकू ॥ कपि मानुष हम गनें न नेकू ॥ ॥
मत्सर रूप अकंपन कहई ॥ हमें जियत अस को मिल लहई ॥
कहा उपाइ करौ अब सोई ॥ नर बानर जेहि बचे न कोई ॥ ॥
अपर कथा कहिये का छोभी ॥ तब भा भनत महोदर लोभी ।
जो आवे अनगन्त करोरी ॥ डारों खाइ भरे महि झोरी ॥ ॥
तो कपि सहस लाख केहि लेखे ॥ जैहैं घूमि न अब हम देखे ।
बोला तब दुर्मुख पाखंडी ॥ छल करि हरि आनो दोउ दंडी ।
जो चाह्यो सो कीन्ह्यों पाछे ॥ दस मकराक्ष कपट बपु काछे ॥
बिपुल बिप्र जोमें बरि आनी ॥ भूसुर बानि कोइ सकै न जानी ॥
जनि बो करत सकत करि काहा ॥ सो किमि जात जासु नर नाहा
सुनि प्रहस्त बोला डर पाई ॥ मम मत सीतहिं देहु पठाई ॥ ॥
नारि पाइ जो फिरि चढ़ि आवै ॥ करहु युद्ध जेहि जान न पावै ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यामें नहिं अधर्म की बात्ता ॥ बोला तब हिं सकु नर घाता ॥ ॥
सकल बस्तु भोगन हित आवे ॥ धर्मा धर्म कहां कह बावे ॥ ॥
करत बत कही कादर केरी ॥ यह नहिं मारिहि सबन खदेरी ॥
नीति कहत हम कादर ठहरे ॥ जाना अब तुम सोइ हो छहरे

दो॰ कह्यो सुमति मंदोदरी सुनहु कंत मम बात ॥
कर जामय रिपु अगिन नृप लघु करि गनेन जात ॥
भुव नेप्वर सर बज्र जो गनत छोट तुम नाहिं ॥
मीचु बेसाहत सुकर यह भली बात नहिं आहि ॥
सुवन सचिव तव मंद मति कहत वचन सुख पेखि ॥
नगर जरत तव सबन कर लीन पराक्रम देखि ॥
तेहिते श्री जानुकी कहं पठइ देउ मन मानि ॥
नाहित दूषण बालि की होई गति सति जानि ॥
नारि बचन सुनि मोह बस बोला सोहिं समान ॥
सबल कुटुम्बी नृप धनी पर तापी को आन ॥
भागत सुर जेहि नाम सुनि सको को तातें जूझि ॥
जान्यो तेहिं है काल बस परे न तातें सूझि ॥
सूहि बिभीषण नाइ सिर तेहि अनुसासन पाइ ॥
जो चाहौ निज भद्र तो सीतहि देउ पठाइ ॥
तात राम नहिं नर अधिप अखिल लोक करतार ॥
गो द्विज सुर महि संत हित लीन मनुज अवतार ॥
जप तप तीरथ ध्यान करि जिनके दरशन दूरे ॥
सो प्रभु आयो अकुल अधि धन्य भाग तव भूरि ॥
मेघनाद भट आदि जे बैठे मारत गाल ॥
ते किमि सकब धरि धीर जब छुटि हैं बान कराल ॥
तेहिते सकल बेकार तजि नाउ राम पद शीश ॥

मिटै सकल अपराध जेहि बने रहैं भुज बीश ॥

सो० सुनि तिरछे करि पक्ष । बोला शठ जीवत इहां ॥
करत शत्रु कर पक्ष । जाउन कहि मारयो चरण ॥
करि बिचार शिरु नाइ । आयो घर निज मातु ढिग ॥
कही कथा सब गाइ । सुनि बोली मन मानि सो ॥
कहा भयो जो लात । मारी पितु सम भ्रात बड़ ॥
इहां रहे कुशलात । वहां गये नहिं नेकु भल ॥
समुझि बिमोहित बयन । चलेउ वन्दि सचिवन सहित ॥
आये धनपति अयन । लखि कीन्ह्यो सनमान तिन ॥
कह्यो सकल निज हेतु । सुनि कुबेर सोचन लगे ॥
बोले तब वृषकेतु । तात कियेउ अतिनीक तुम ॥

दो० औषधि हित उपदेश बहु करत न लागत जाहि ॥
रुज असाधि शठ जानिकै तजत सुजन जन ताहि ॥

चौ० पर अवशर रा राम की जाहू ॥ शापदि मंत्र बूझो मति काहू ॥
सुन सुत राम बिमुख जे प्रानी ॥ भूले भव वन गज चढ़ि मानी ॥
आगे रुद्र राक्षसी देख्यो ॥ पाछे सिंग भयानक पेख्यो ॥
तब तो गज वह गयो बिलाई ॥ आपु कूप गृह गिरयो डेराई ॥

दो० तेहि नर ताक्यो काल सम अजगर छाड़ी नाहिं ॥
तब गहि दुर्बा आर बल्ल लटकि रहा तेहि माहिं ॥

चौ० तहँ सुंदरि मधु लागि निहारी ॥ प्रमुदित है तेहि गहि सि अनारी ॥
सहित कुटुम्ब उड़ी सब मारवी ॥ लपटि गईं पग कटि मुख आँखी ॥
पर यक बूंद कि हिसि मधुपाना ॥ सो सुख मूढ़ परम सुख माना ॥
श्याम सेत बिबि मूषक खूबा ॥ लागे निशिदिन काटन दूबा ॥
चुटि गे जबै गिरा हहराई ॥ तुरतै अजगर लीन चबाई ॥
यह गति सब जीवन की जानो ॥ बिन हरि शरण न कतहुँ ठिकानो ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ रामशरण बिन काल ते बचा चहै भजि आन॥
सो शठ अहि भय गरुड़ तजि दादुर पक्ष लुकान॥
राम बिमुख जग जीव जे तपत ताप त्रै माहिं॥
तेहि दुख नाशन हित यतन बद श्रुति सो इमि आहिं।
जिमि सिसु हित पितु रोग गद नीर तरन हित नाव॥
पालत पावन चढ़त पर थिर कर होत अभाव॥
याते सांचे सुचि सुखद शरणापाल रघुबीर॥
केवल ताके शरन बिन मिटै न भव भय भीर॥

चौ॰ सुनि सुख पाइ सिवै सिर नावा। मंत्रिन सहित समोद सिधावा॥
अंतह करण सहित जिमि जीवा। हरिहित के दुख सुभ अतीवा॥
करत मनोरथ मग इमि जाहीं। प्रभु मिलन गुण अतिहरषाहीं॥
अहो भाग्य मम उदै अपारा। कौन कौन अस शुभ आचारा॥
साधु विप्र कवका अस दीन्हा। कौन अपूरब नय हम कीन्हा॥
जो सबौं पर प्रभु सुख अयना। देखिहौं जाइ आजु भरि नयना॥
निज जन हित श्री बपु प्रगटाये। धराभार भंजन महि आये।
शोभा सिंधु दरश अब पैहों। तब का परमानन्दन लैहौं॥ ॥
जे पद पदुम भजैं सब सन्ता। बिधि हरि हर सनकादि अनन्ता॥
जिनके चिन्ह धरा दुख हारी। रजकन परसि तरी ऋषि नारी॥
जासु बारि भव निज सिर धारा। जेहिं तारे जग अधम अपारा॥
जिन पद पीठ भरत मन रंजा। धरिहौं मैं शिर तिन पद कंजा॥
जेहिं कर कमल असुर बहु मारे। भय साधु श्रुति रक्षण हारे॥
जेहिं कर गहि भंज्यो भव चापा। परसत मिटत काल परि तापा॥
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी। मम मस्तक धरिहैं सोइ पानी॥
पूछिहैं जब तब कहिहौं नामा। नाथ होव मैं तोर गुलामा॥ ॥
निशिदिन निज करिहौं सेव काई। छांडि कपट हठ मान बड़ाई॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

यहि रव पद उतरे जो पैहों ॥ बची बचाई जूठनि खैहों ॥ ॥ ॥
सुनि लैहैं अपनाइ कृपाला ॥ तब होयहौं सब भांति निहाला ॥
निसदिन देखिहौं प्रभु की झांकी ॥ तब का रही करणा की बाकी ॥
भरतो जाइ कहां बिललाई ॥ यह गति शंभु कृपा हम पाई ॥
निज दिस देखि शंक मन धारे ॥ हरषे जब प्रभु रीति बिचारे ॥

दो० यहि बिधि करत मनोरथ आये जहँ हरि सैन ॥
करि बिचार नभ दूरि ते बोले गदगद बैन ॥
जय सर बज्ञ कृतज्ञ प्रभु कृपा सिंधु गुन गाथ ॥
शरणा भये पाले बिपुल अब मोहिं पालहु नाथ ॥
नाम बिभीषण असुर कुल रावण रिपु कर भ्रात ॥
श्रवण सुयस सुनि शरण तव आयो लै निज गात ॥

चौ० सुनि प्रभु बोलि सचिव सब लीन्हा ॥ बूझयो यहि का चाहिय कीन्हा ॥
कहँ कपि पति रिपु सोदर येहू ॥ भेद लेन आवा गहि लेहू ॥
कह अंगद आरि बर बध करना ॥ अबहीं क्यों न हतत है सरना ॥
जामवन्त कह रिपु कर भ्राता ॥ अब हमते यहि ते कस नाता ॥
सीय हरी तब क्यों नहिं आवा ॥ दे हु जान मुख अनत सुनावा ॥
कह नल दूत पठै मत लीजे ॥ ऐसहि कैसे बिदा करीजे ॥ ॥
उत्तम होइ तौ राखहु पासा ॥ नाहित हतत बनैल प्रकासा ॥
सांचेहु यह शरनागत आवा ॥ राखिय देव मोहि अस भावा ॥
सभय तजे अघ लाग अनन्ता ॥ होइ जो मात पिता कुल हन्ता ॥
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया ॥ राक्षस है न शरण जो आया ॥
बलि प्रहलाद सुकंठ यथा धू ॥ जानहु तुम तिन सम यह साधू ॥
छली न प्रभु तव सन मुख होई ॥ फिरे सभीत द्वार ते कोई ॥ ॥
बहुरि बात कछु कहन न पाई ॥ बीच बिभीषण गिरा सुनाई ॥

दो० अब तब आवत दीन के हरत रह्यो दुखभार ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अस अभाग बड़ मोर जेहि सुरतरु करत बिचार ॥
दीनबंधु सुनि दीनके बचन उठे अकुलाय ॥
कह्यो लयशा हनुमान ते अबहीं लावहु जाय ॥

सो० लाये करि सनमान। पूसबदी भूता दिवस ॥
प्रभु छबि देखि सुजान। कीन दंडवत ताहि कहि ॥

चौ० प्रभु उठाइ भेंटे उरलाई ॥ बैठे निज समीप बैठाई ॥ ॥ ॥
पूछी कुशल कहो लंकेशा ॥ दुष्ट संग सम कछुन कलेशा ।
बोले नाइ बिभीषण भाला ॥ सुमिरन जे तव करत कृपाला ।
तिन्हैं कुशल मंगल कल्याना ॥ देत बिरंचि बिनै करि नाना ।
जो मूरति मुनिजन अनुमारी ॥ करहिं ध्यान नहिं सकैं निहारी ।
तेहि भरि अंक मिल्यो मैं आजू ॥ याहिते अधिक कवन सुखसाजू
कह प्रभु सत्य कहौ मैं तोही ॥ दास सरिस प्रिय अपर न मोही ॥
जिनके हों हित अनन्य नेहा ॥ तिन हित आइ धरौं मैं देहा ॥
अस कहि जलु सागर कर लीन्हा ॥ तिलक बिभीषणाके शिर कीन्हा
सुनि सुभाव लखि कपि सब हरषे ॥ जय जय कहि प्रसून सुर बरषे

दो० जो पुर कलह कलेश करि रावण पाये तीन ॥
सो प्रभु छिन बिभीषणहिं तृण सम अस सम दीन ॥
ऐसे प्रभुहि बिसारि जे करत आनकी आस ॥
ते शूकर श्वान हित धर्महिं तजि भजत दासको दास ॥
चंद्रोदय परबोध मत मूल सार श्रुक गाथ ॥
बरन्यो सुंदरकाण्ड शुभ सुखप्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेही कृत सुंदरकाण्ड संपूर्ण नाम त्रयो

विंशोऽध्यायः २३॥

श्रीगणेशायनमः

# अथ विश्राम सागर

## लङ्का काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं केकिल कहनि कछु अमिन वेसमत आनि॥
प्रात पंचमी दिवस प्रभु पूंछा सचिव बोलाइ॥
केहि विधि उतरिय उदधि सुनि बोले कपिकुलराइ॥
नाथ आपु कर एक शर सोखे सागर कोटि॥
तदपि नीति अस सिंधु तें मागहु मारग ओटि॥
कहो तात भल होइ हित जो करें दैव सहाइ॥
लषण जूहि सर मारि मैं शील सो को भाइ॥
बोले प्रभु नहिं उचित मोहिं साधु अवज्ञा तात॥
तोहि ते यह करि लीजिये पुनि कहु दानव बात॥

चौ० अस कहि दर्भ डासि दधि तीरा॥ बैठे करि प्रणाम रघुवीरा।
विनवत तीनि दिवस चलि गयऊ॥ तब प्रभु कोपि शरासन लयऊ।
अग्निबान संधान्यो जबहीं॥ लागेउ जलन वारिनिधि तबहीं।
विप्ररूप धरि हरि ढिग आवा॥ रतन भेंट दे पद शिरुनावा॥
नाथ सृष्टि सब तुम्हरी अहई॥ जेहि जस कीन्ह्यो सो तस रहई।
अब जस आयसु होइ तुम्हारा॥ सोई करौं मैं परम उदारा॥ ॥
कहो सुखाइ जाउं एक बारा॥ मरि जैहैं जल जीव अपारा॥ ॥
कृपा सिंधु बोले हँसि ताता॥ कपि दल तरै करो सोइ बाता॥ ॥
तेहि तब कहा नील नल कीशा॥ तिन पर से जल तरत गिरीशा।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आयसु देहु रचै ते सेतू ॥ महूं सहाय करब तव हेतू ॥ ॥ ॥
अस कहि नौमी दिन सोगयऊ ॥ परा रंस दशमी ते भयऊ ॥
चहुं दिशि बोलन देहि कपि आनी ॥ सो नल नीलहिं देहिं निज पानी
रचहिं सेतु अति सुदृढ़ बनाई ॥ शिव स्वरूप थाप्यो रघुराई ।
कह्यो महातम चिरजग हेतू ॥ तेरसि दिवस सिद्ध भा सेतू ॥
बिस्तीरण दश योजन केरा ॥ दीरघ कोस चारि सत हेरा ॥ ॥
प्रभु नल नीलहि बहुत सराहा ॥ पूजी भुजा सहित उत्साहा ॥
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा ॥ प्रभु छवि देखत जीव अपारा ॥
राजत हनोमान के कांधे ॥ लछिमन बालितने के रांधे ॥
दो० विपुल चले जल चर णिकपि बिपुल सेतु असमान ॥
जैसे भव निधि तरण हित कर्म उपासन ज्ञान ॥
चौ० इमि उतरत निश दिन इकधारा ॥ द्वितिया दिवस भये सब पारा
पाइ रजाय निकट फल खाये ॥ तृतिया दिन सुबेल गिरि आये
कोष्ठा टालक गोपुर शृंगा ॥ दशमी तक उतरे पल बंगा ॥ ॥
हरि दिन शवण दूत पठाये ॥ दल देखन सुक सारण आये ॥
चरचि चपल गहि मारण लागे ॥ रामशपथ दीन्हा तब त्यागे
आये तब दशमुख के तीरा ॥ बोला लखि कहु कपि दल भीरा
काल बिवस आये यहि पारा ॥ होइ हैं एक दिवस कर चारा ।
पुनि कहु रहे बिभीषण भीरू ॥ जानि बूझि भा जब कर कीरू
बहुरि भाखु तपसिन की बाता ॥ जिन्हें निकारि दीन पितु माता
मुनि बोले शुक सारन ऐसे ॥ सुनो कृपा करि बूझ्यो जैसे ॥
कुण्डलिया सहस लाख कर कोटि यक सहस कोटि
कर शंकु । सहस शंकु कर अरबुद सहस दबुद बिर्द कु ॥ स-
हस दबुद बिर्दकु सहस कर पदुम प्रमाना । सो अष्टा दश-
सुने संग युत्थप बल वाना ॥ बल बानाकपि जाल मबकाल-

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सरिस हम लखि गहस। कहत मिलावन लंक तब पंक माहिं ऐसे सहस॥

दो० आयसु मिलत न पिलत पुर भये बिभीषण राज॥
तिन ते सम्मत बूझि के करत आपहू काज॥
मुनि बोला हौंस बादि क्यों करै बड़ाई भूरि॥
जासु बिभीषण से सचिव परी कि तिन ते धूरि॥

चौ० तब शुक कह कछु दूरि न भारी॥ चढ़ि अट्टालक लेहु निहारी॥
सहित सुसुख भट चर तेहिं बारा॥ चढ़ि देखी कपि कटक अपारा॥
शुक सारन कहि नाम बताये॥ अंगदादि जे भट सँग आये॥

दो० वे अंगद हनुमान वे वे सुकराठ नल नील॥
वे सुखेन वै रिच्छपति वे दीध मुख सत शील॥
जटा मुकुट मुनि पट धरे धनुर्बाण तूणीर।
अस्थित हरि मृग चर्म पर सेवत थट बहु बीर॥
गौर श्याम छबि धाम वे सहित लक्ष्मण राम॥
बैठि बिभीषण गुरह लखि कीन्हि सिमन पर नाम॥
ऐसो कपिदल दरसि के बोला बिहँसि निसंष
देख्यो कौतुक काल कर दिहिसि पिपिलकन पंख॥
इत प्रभु छत्र समेत तकि मार्यो शर यक सङ्ग॥
मुकुट प्रसून गिराइ पुनि प्रबिस्या आइ निषङ्ग॥

चौ० देखि अचम्भित रहे सब लोगा॥ कोइ कहै प्रथम भयो अपयोगा
बोला यामें अपसगुण काहा॥ सिर दुख से भट करे उमाहा॥
तेहि ते शयन करहु सब जाई॥ चलि भे सकल रजायसु पाई॥
तब मय सुता कह्यो भय भीता॥ हे पति काल भयो विपरीता॥
जे तव सन्मुख सके न बोली॥ ते अब तुम ते करत ठठोली॥
जेहिं पुर सकै बिष्णु नहिं आई॥ ताहि तुच्छ कपि गयो जराई॥

जेहि जग नांघ सके नहिं कोई ॥ ताम सेतु कि गिरिकर होई ॥
जासु नाम सुनि सुर भजि जावैं ॥ तापर कीश असन चढ़ि आवैं ॥
जो सोदर निजु करत बिलासा ॥ सो कि जाइ किमि शत्रुन पासा ॥
तुमहूं अस हठ कबहुं न ठानी ॥ तेहिं ते परत बाम बिधि जानी ॥
अवते परि हरि हठ सठ ताई ॥ करहु काम किन होइ भलाई ॥
जेहिं प्रभु मधु कैटभ संहारा ॥ हिरनाकुस हिरनाक्षहि मारा ॥
जेहिं खरादि बहु भट बध कीन्हे ॥ बालि प्रान इक बानहि लीन्हे ॥
सोइ प्रभु सेतु समुद्र में बांधा ॥ बीसहु नयन होहिं जनि आंधा ॥
मोहिं समेत जग दम्ब हि लैके ॥ पायन परहु राम कहं दैके ॥ ॥
प्रनात पाल प्रभु कृपा अगाधू ॥ तुरतहिं क्षमिहैं तव अपराधू ॥
बोला सत्य बचन तव प्यारी ॥ पर इक बात न जानि निहारी ॥

**कुण्डलिया** शिव निर्माल्य शीश ये रघुपति लायक नाहिं । तेहि ते इन्हे निवारि हों समर रसा के माहि ॥ समर रसा के माहिं प्रथम बल तिन्हे देखहों । प्रभु आये जेहि हेत तस्य मन साध मिटैहों ॥ साध मिटैहों तस्य मैं आपन छाड़ि शरीर सब । मिलिहों निज नाथैव सों जस गैहें सन कादि शिव ॥

**दो०** चौंसठि युग जिन बांह बल किहेउ अकंटक राज ॥
तिन्हें अकृत अरि पद परों धृग कादर कर काज ॥

**चौ०** मम बस सकल जीव जग जेता ॥ ते यहि भांति डरत कहि हेता ॥
जासु बिनाश निकट जब आवै ॥ तेहि बिपरीति क्रिया अति भावै ॥
अस कहि सो सोई चुप साधी ॥ जागत निशि बीती सो आधी ॥
प्रात काल उठि सभा सिधावा ॥ आपन बल सब भटन सुनावा ॥
सुनि सठ सचिव सेनपति हरषे ॥ लगे कहन कादर जन करषे ॥

इति श्रीविश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसनेही कृत श्रीरामसुबेल आगमनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः २५ ॥

दो० सुमिरि राम सिव सन्त गुरु गनप गिरा सुखदानि॥
बरणौं मानस मन कछुक कोकिल काव्य बखानि॥
दशमुख इतहू दिसि दरसि दीन्हे दलपति फेरि॥
आपु जानकी पास है आयो तेहि थल फेरि॥

चौ० इहाँ प्रात परि वादिन प्राता॥ अंगद ते बोले सुर त्राता॥
बालि तनै बल बुद्धि बिशाला॥ लंकहि जाहु जहाँ दशभाला
हित उपदेश दिहेउ तुम भूमी॥ नहिं मानै तो आयो सूमी॥ ॥
भले नाथ कहि माथ नवाई॥ चले राखि उर प्रभु प्रभुताई॥ ॥
पुर प्रबिसत रखवारन रोका॥ सुनि युवराज सबनि कहँ ठोंका।
रावण सुत बिय मुख तेहि दीशा॥ बोला बदि तें काकर कीशा।
राम केर को जाकी भामा॥ हरि लायो पितु अपने धामा॥ ॥
सोई राम जिन दे लघु भ्राता॥ तव फूफ काल्प नियाता॥ ॥ ॥
इतना सुनि तेहि पाँव उठारा॥ अंगद पकरि भूमि दै मारा॥ ॥
हेरि असुर भट केते हि काला॥ एक एक ते कहे न हाला॥
पुरजन चहहि चट पट देखेहीं॥ बूझे बिन बताइ मग देहीं॥ ॥
मन में कहैं दशानन मीचू॥ सिय का आनी सबकी मीचू॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा॥ यह धौं काह करै करतारा॥ ॥
जहँ अब निस दिन मचो लराई॥ तेहि पुर बसि पुनि कौनि भलाई
आवत कपि रावण सुनि पावा॥ दूत पठै निज सभा बोलावा॥
दश मुख बैठि दीख कपि आई॥ सहित तहँ सजनु गज गिरि राई॥
सुर मुनि असुर नाग गन्धर्वा॥ चितवत तेहि भृकुटी दिसि सर्वा॥
हरि लखि उर सकल इक धारा॥ बोला तव रिस करि अनि हारा॥

छन्द पढ़ै न क्यों विधि बिनै शंभु कत ध्यान देवै। जीव करै कत सोर धर्म क्यों न ध्यान सेवै॥ रहै न दूरि दिनेश देव ऋषि स्वर लय गावै। पवन सहित कुबेर बेर करि क्यों नित आवै॥

चंदन बोले मंद मति मातलि सभान यह अहै। बैठि आहु
ग बैदि सब तब रावरा कपि ते कहै॥ रे वानर तू कौन दूत ह-
म रघुपति केरे। इत आयो केहि हेत अहं रक्षा हित तेरे॥
कौन विपति सठ मोहिं शत्रु सिर पर प्रभु आये। ईश कोपि
रघुनाथ जासु तुम तिय हरि ल्याये॥ कौन कहत हनुमान
को जेहि तेरी लंका दही॥ करुणा सिंधु सर्वज्ञ सो सुनि-
व्याकुल है यों कही॥ जाय जाय कोइ जाय धाय रावरो सु-
नावै। जेहि सिय देहि बताइ रंक कर जिउ बचि जावै॥ सु-
नि बोले सब सुभट नाथ जो हम चलि जैहैं। उजुर करौं क-
छु शत्रु ताहि बिन बधे न ऐहैं॥ तब प्रभु नहिं पठयो तिन्हैं॥
मोहिं कह्यो लखि साधु सुनि। मोरेहु मन आई दया निज
पितु कर तोहि मित्र गुनि॥ ताते आयों तात बात अब मा-
नहुं मेरी। जाते तब भल होइ बंचै सब रै अत तेरी॥ श्रीम-
द महिप सुभाव जान अथवा बिन जानेहुं। हरि आन्यो ज-
गदम्ब आदि भल यहै न मानेहु॥ सो जस भा तस भा अज-
हुं सीते लै निज नारि सुत। जाहु शरण श्री राम के मिटिहैं।
सब अपराध उत॥ रे बानर रहु चुप्प बादि बक वाद-
न ठानै॥ विश्व विदित तै मोर अभै पर भाव न जानै। सुर-
नर मुनि पशु नाग जीति सब निज बस कीन्ह्यो। शिवै दियों
सिर स्वकर गिरिहि कंदुक इव लीन्ह्यों॥ अस मैं पुनि भ्रा-
ता सुभट जेहि देखत दुनिया डुरै। मेघनाद अस सुवन जो-
महि आन्यो सुर पति धुरै॥ कह अंगद सो सत्य अहै एसब-
ल तोरा। पर नहिं राघव साथ सिंह हित जिमि गज जोरा॥
जे जे भे प्रति कूल परी नहिं किसी कि पूरी। सठ नाक का सुवा-
हु मिले खर दूषण धूरी। विश्व सुभट बल शंभु धनु हरि-

बैठ्यो तेहि धरि दलो। ताको मिलि तजि मान मद जो चाहै आपन भलो॥ ऐसर कट मम सरिस अहै को सुभट अनारी। सो कहु को तव पिता बालि कपि नाथ बिचारी॥ रहा रहा कपि रहा भले कहु हैं सो नीके। कछु दिन में तहँ जाय कुशल पूछ्यो निज जीके। राम बिमुख कर जौन हाल होत सो सब नीके पढ़ी। जानि बूझि बातें गढ़ल रदन मोत तव थिर चढ़ी॥

दो० मरम बचन युवराज के सुनि रावण रिसयोंकि॥
बोला सुख सुर भेद हित प्रथम सुकर महिखोंकि॥

कहयो हे अंगद बल वन्त बालि सुत तोही आही। तव सम जौके पुत्र तासु ऐसी गति चाही॥ जन मत क्यों नहिं मर्यो बालि कर नाम धरायो। जेहि डार्यो पितु मारि तासु शठ दूत कहायो॥ अबते मम दल ले सकल कपि तुव करु निज राज चलि। हनिसन भलसु सुश्रुयुचे आठ आठ दिशि देहु बलि॥ कहु अंगद रे नीच मोचबस मति बदि बोले। मम मन ठानत भेद पवन ते गिरि कहुं डोले॥ जासु भृत्य ब्रह्मादि तासु हम हैं करि दाशा॥ बैरि दीन कुल कह सि अह सिते निशिचर बाशा॥ तेहि कछु करत बिचार नहिं सो फल पैहै सपदि बरु। जावत आवत अवधि नहिं तावत मावत सोइ करु॥ रेरे कपि जगमाहिं मोहिं को हूय फल दाई। लोक पाल यम काल नमत मोको नित आई॥ चहों जाहि नृप करों चहों तेहि रंक बनावों। उजुर न करता कोइ बहुत का तोहि सुनावों॥ कहु अंगद ते अजित अस सो रावण औरै दियो। जदव सहस भुज बालि बलि अयध नृपन जेहि दुख दियो॥ सुनि अंगद के बचन मूढ़ लज्जित है बोला। बालपने

की बाल गाल तव निरवल्ल होला ॥ कौशल्ल नृप सब जीनि प्रथम अपने बश का हौ। जबते भये दलीप छाड़ि तब नेक र दीहौं ॥ ताहित जे कछु घटि गयो भयो नमन में एक तिल। विदित बरेहु शिर शिवहि शिव गिरि करि धाऱ्यो यथा शिल ॥ कह अंगद का भयो शीश जो निज कर काटे । बाजीगर बहु करे बेठि कौड़ी हित हांटे ॥ कहा भयो गिरि लयो भालु कपि धारे डोले। तहौं नपायो सुयश आजु रोउना सब बोले॥ कहाभयो सब जग जयो भयो न जो रघुनाथ जन। तोसब जानो स्वप्न सम अवनि रवनि सुत धाम धन॥ कह रावण हैं सिराम दास तुमहीं जोभयऊ। दिहिनि काल मुख आइ लाभयामें कालयऊ॥ तीनलोक परलोक शोक सब तन के नाशे। मिलिहैं तोतन बियत जियत जव जाव इहां से॥ तहें ऊँतव सुग्रीव रिपु तासु विभीषण केर में। अपर कीश रीछहैं असुर रहें तपसी घर में॥ कह अंगद रे चोर बालि जिन इक सर मारा॥ भृगुपति कर बल दर्प सर्प लीलि संहारा॥ खर दूषण त्रिशिरादि दनुज यदि बचि नभागे। तोरि चाप सिय बरी सकल भूपन के आगे॥ यस्य अनुग इक लंक दहि चतुर अन्स तव भट दले। तिनसों ते लरिहै कहा गाल मारि ले चहु भले॥ कह रावण जो अहै सबल अस स्वामि तुमारा। तो पठवत केहि हेत बसीठी बारे बारा॥ करहि आइ कलि कर्म धर्म जो क्षत्रिन को है॥ रिपु ते डरत अनीति लाज नहिं लागत जो है॥ मन कदराइ तो जाइ फिरि भागे को नहिं हम हने। यदि आवे जो मोत बस सकल कौन पन की बने॥

दो॰ पाथि समुद्र बाँधे कहा अभै परे भुजबीश॥
कुऐहै नना घनहार कोउ सुनि बोल्यो पुनि कीश॥

**कुण्डलिया** कारण ज्ञान अज्ञान का बल निर्बलक-र अन्त। कारज ते खुलिजात जिमि नारि कपट सुत पंथ॥ नारि कपट सुत पंथ तुम्हैं हम तबहीं जान्यौं। जब धरि ता-पस रूप विपिनि सिय ते छल ठान्यो॥ ठान्यो लेखा गृहप गयो धनु रेखा पारण। आयों मैं न बसीठ राम पठयो यहि कारण॥

**कुण्डलिया** बोले कपि सब आजु चलो प्रभु शत्रुहि मारी। कह हरि तेहि बध किहे कौन होइ यश भारी॥ जिमि मृग पति ह-ति भेष शेष सर खप थिर लीन्हे। तिमिल घुता लघु दान ज्ञान मूरुख कहँ दीन्हे॥ यद्यपि यह जानत तदपि छत्रि जाति कर रोष अपति॥ ताते अबहूँ दीन है सीते ले मिलु मन्द मति॥ कह रावण नृप सुवन संग सब कीश लबारा। प्रथमै आवा एक झूंठ ही जाय पुकारा हमहीं दीन छड़ाइ भीर मैं मरयो अक्ष सुत। लागि गई गृह आगि कहिसि मैं कीन काम उत॥ तैसे तोहू नरन की करत बड़ाई क्रूरगति॥ मोको जानत छोट करि विश्व विदित जो सूर सति॥ कह अं-गद मति मन्द छन्द रत बोलु विचारी। कल्प विटप सम वि-टप सकल सीता सम नारी॥ चिन्ता मणि पाषाण सरित शर स्वान समाना। अभै दान विज्ञान सरिस लौकिक कर ज्ञाना॥ यगली बातें अकनि तब अस मन होत हमार ह-रि। तोहि सहित सब लंक लैबोरौं उदधि मझार परि॥

**कुण्डलिया** शोचु न घालत साधु फिरि राज करी के-हि भौन। मोहिं जियत किमि होइ नृप तोहि जियन कहैं को-न॥ तोहि जियत कहैं कौन काम बस अजसी मूढ़ा। जीव-त मृतक समान सरुज हरि विमुखमति बूढ़ा॥ तव शोणित के भूषित पुनि रघुपति के नाराच। तेहि ते राखत रोकि ॥

रिस नाहित बन त्यों सांच ॥

छप्पै कह रावण जो होत हिरस यहि विधि बलतेरे । तौ-कत कर त्यों आदु देशई पितु ऊपरि केरे ॥ करत मातु संग भोग सूर सुत सो तप जानै । मरत नशठ विष खादु बान हू मत्त बादि हानै ॥ नरबन रन की कौन गति तीनि लोक मिलि जो चढ़ै । करौंलमर मन सुख तभू कभू न पग पीछे परै ॥ तब अंगद करि कोप पटकि दोउ भुज महि दीन्हे । गिरा अधर सुख भट मुकुट कर मैं चुति लीन्हे ॥ प्रेरे प्रभु के पास धरे पवन जमहि आगे । भूरि भानु सम तेज नरकि कपि देखन लागे ॥ राम बिभीषण के शिरसि भूषित कियें सवांरि तिन । देखि देव बोले विमल जय जानकि पति भगत हित ॥ तब तम चर पति नमकि कह्यौ धरि धरि हरि खाहू । मिलि मारो दोउ बंधु बंक कपि कल मत जाहू ॥ अब तक नीति बिचारि बचन सुनि रोसन कीन्हा । आखिर चढ़्यो कपार अधिक अधमैं मुख दीन्हा ॥ जिन बल बाढ़त बलकि बल तिनके अहै न अलपसन । पर तिय पर धन पर अहित करत डरत जो छाम छल ॥

कुण्डलिया तब अंगद कह चरण मम जो कोइ देवै टारि । फिरैं राम निज धाम मैं जाहु जानकिहि हारि ॥ जाहु जानकी हारि सुनत घन नादिक योधा । लगे उठावन भूरि भूरि बल करि करि क्रोधा ॥ डग मगात महि सुतल नभ उदर सिंधु सुर बिकल सब । बालि बलीके सुवन कर पग नहिं हाल्यो नेक तब ॥

छप्पै लीख रावण हिय हारि आपु उठि कपिहि प्रचारयो । चरण छुवत तेहि देखि बचन युवराज उचारयो ॥ मम पद

पैन ठीक गहै बिन हरि पद जाई । सुनि सिंहासन सपदि बैठ मन माहिं लजाई ॥ कहिं कि कौन पतने है सो क्यों नहिं डारत खाइ खर । हँसि कपि कुंन पवाहाइ निज कहि कै चल्यो उडाइ ऊपर ॥

सो० दीरघ एक प्रसाद पर पद परसत पतें है सोउ ॥
बहुरि चल्यो करि नाद प्रभु पद नायो आइ शिर ॥

दो० लखि बोले रघुनाथ हँसि तात किहेउ भल काम ॥
कह अंगद मम मान नहिं तव प्रभाव सब राम ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मल आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ
दास राम सनेही कृत अंगद रावण सम्वाद व-
र्णनो नाम पंच विंशो ऽध्यायः २५ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौ मानस मत कछुक कोकिल कहनि बखानि ॥
इहाँ दशानन अभै निशि निज सित उरधाखार ॥
लागे निरखन नित्त की कौतुक करें अपार ॥
राम लखण कपि भालु सब हँसे समुझि अभिमान ॥
साहिन सके सुग्रीव बिन बूझे कीन पयान ॥
दश योजन कर बीच तहँ पहुंचे एक कुलांच ॥
सिंहासन ते अवनि पर पटक्यो मारि तमाच ॥
गिरा न बांचे सभरि कै भिरा क्रोध करि सोउ ॥
कर पद मुष्टिक पेंच शिर निज निज मारे दोउ ॥
यहि बिधि बाजे जाम भरि परे कोउ सका न हारि ॥
लाग्यो माया करण तब कपिपति चले बिचारि ॥

चौ० इहाँ न प्रभु सुग्रीवै देखा । भये धाल बस सोधि विशेखा ।
इतने में सो पहुंचे आई ॥ बूझे ते सब बात जनाई ॥ ॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कह प्रभु अस औषधि पै नहिं चाहीं॥ सो कछु होत रहत गहि काहीं
हम सिय लय का करतें नु ताता। दें तनु त्यागि तुरत निज गाता
सुनि नासत सब कुटुम्ब हमारा॥ नाथ कृपा को मारन हारा॥
अस कहि पाइ रजायसु सोये॥ उठि प्रभात पुनि हरिपद जोये
दुनिया दिन करि कटक बिचारा॥ लंका घेरी चारिउ द्वारा॥
पूरब दिशि नल नील बिराजा॥ दक्षिण सेन सहित युवराजा
पश्चिम पवन पुत्र बलधामा॥ उत्तर रहे अनुज युत रामा॥ ॥
मध्य सुकंठ माह संग योधा॥ चहुं दिशि लखत बिभीषण सोधा
यहि बिधि पुर निरोध सुनि रावण। चहुं दिसि निज भट लाग पठावन
प्राची दिशा प्रहस्त पठावा॥ जाम्या द्वार महोदर आवा॥
मेघनाद दिसि गयो प्रतीचा॥ रहा दशानन द्वार उदीचा॥ ॥
बिरूपाक्ष तिष्ठा मधि देशा॥ नारंतक चहुं ओर प्रवेशा॥ ॥
यहि बिधि राखि सबन ते बोला॥ गहि गहि खाउ भालु कपि टोला

दो० भले नाथ कहि हाथ गहि परसु भिंड असि साग॥
तोमर मुगदर सूल सब धाये दै दै बाग॥ ॥
बाजे बाजन युद्ध के सुनि भट गने न बोध॥
आवत तमचर चाहि कै धाये कपि करि क्रोध॥

गीतिका छं० करि क्रोध धाये भालु कपि ग-
हि बिटप परवत अपन गने। दोउ ओर ते लागे चला
वन अस्त्र शस्त्रादिक घने॥ कोउ गिरत कोउ उ-
ठि भिरत कोउ पुर फिरत कोउ लरत कारई॥ को
उछुरत कोउ भट मुरत नाहिं कोउ हटत कोउ चढ़ि
मारई॥ यक साथ सब रघुनाथ बल पल बंग गढ़-
पर चढ़ि गये। बिकलाइ असुर निकाय मर्द अपर
लखि भागत भये॥ पुर पुरेउ हाहाकार बिपुल कुमार बनित

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रोवहीं। दूरि देहि गारी दश मुखै अब जासु हम दुख ओवहीं॥ दि-
शि शीश निज दल बिचल लखि सबते कहिसि गोहराइहै।
घर आइहै जो भागि सो मम हाथ मारा जाइहै॥ सुनि सु-
भट मानि गलानि घूमे जानि बध दोउ बीर ते। करि युद्ध की-
न्हे चौंसत बानर भागि चले गढ़ घोर ते॥ एक एक दिति-
सुत दाबि कूदे नाहि नीचे राखि कै। बिन प्राण करि हरि बी-
र बोले बचे आगलि भाखि कै॥ हनुमान पश्चिम बीर सुनि
घननाद के पग मारेहू। रथ सूत हति तेहि बिकल करि पु-
नि लंक आइ प्रचारेहू॥ इत कूदि आयो बालि बच्च मिलि
उभै रावण गृह गये। लागे ढहावन भौन जहँ तहँ राम गु-
ण गावत भये॥ कपि खेल करि डर बाइ राम कहाइ तिन्है
निवारेहू। फाँदे बहुरि रिपु सयन महँ अगणित निशा-
चर मारेहू॥ खरभरि परी सब ग्राम तम चर बाम फिर
पुनि यों कहैं। उतपात के घर कीश दोऊ आजु घर आये
अहैं॥ केतनेक खग गहि पटकि रावण निकट दीन चला-
इकै। केतने फिकै प्रभु पास गति नेहि देत राम बजाइ कै॥
निशि जानि आये नाथ पहँ दोउ देखि प्रभु बिन श्रम करे।
हनुमान अंगद गये थल सुनि भालु मर्कट सब फिरे॥ अनि-
रोध पाइ प्रदोष बल धाये असुर जय बोलि कै। कपि देखि
भिरे प्रचारि पुनि सब चले निश्चर डोलि कै॥ निज हारि ल-
खि अतिकाय आदिक अनिप निज माया रनी। भये नि-
मिरि में अंधियार सूझन हाथ भागी कपि अनी॥ वहँ बा-
र ते मग मिलत नहिं कच रुधिर बरषत बालुका। लखि-
राम मारयो बिसिख एक मिटि गई माया मालुका॥ कपि गी-
रु पेखि प्रतिभट पलटे बहुरि रिपु भागत भये। तब असिन

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

आये राम पहं पग परत सबके दुख गये ॥ यहि भाँति बा-
सर आठ निज निज घाट कपि कीनप लरे । तब कहो रावण
सचिव ते कस करिय दल बहु भट मरे ॥ सुनि माल्यवंत सु-
मंत्र बोलेहु आपु जबते सिय हरी । तबते कियो बहु बात
एकहु तात नहिं पूरी परी ॥ अबते समुझि भल जानकि-
हिं गहि पाइ प्रभु कहँ दीजिये । भये मूढ़ मारहु तेहि का पर
बैठ मुख करि लीजिये ॥ कछु रीति पुछियत नाहि सो श-
ठ अधिक भाँति देखावई । जिमि कहै कोइ गिरि मेरुते भु-
कि जाहु आँधी आवई ॥ तेहि तुरत जान्यो कालबस स-
ठ नाहि उठि घरका गयो । तब मेघनाद सदर्प सन्मुख आइ अ-
स बोलत भयो ॥ देख्यो पराक्रम काल्हि मम बहु आनु-
का निज मुख भनौं । सुत बचन सुनि हरषान मन रणसूर
सुनि करखा मनो ॥ उठि प्रात नौमी दिवस रथ चढ़ि मुकुत
कपि दल आयहू । कहँ राम कहँ सौमित्र कहँ हनुमान कहँ
कच जायहू ॥ सुनि भालु कपि धाये कुधर गहि देखि सो मा-
रन लगा । लखि तासु बाना वरी सब अकुलाइ मर्कट दल
भगा ॥ तब भिरे लषण प्रचारि बाणन मारि तेहि ब्याकुल
किया । जब भयो बिनरथ सूत जानिसि मारि इन मोको लि-
यो ॥ तब ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ती लषण के हिय दे हनी । म-
हि मुरछि गिरे अनंत रहा उदार करि माया धनी ॥ किमि
उठै जगदाधार लखि हनुमान मुष्टिक मारेहू । पुनि लात
मारि अचेत करि धरि लंक ऊपर डारेहू ॥ निशि जानि तब
हनुमान शेषहि लादि प्रभु पहँ लायहू ॥ लखि राम हृदय
लगाइ भ्रातहि बिरह बचन सुनायहू ॥ हा ईश जगनन शी-
श मैं इक पात तैं बिरचा रहे । भट भांति भायप मित्र गुणनि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चढ़ाइ अब बोरा चहे ॥ हा तात तजि पितु मातु बनमम बिपति आइ बटायहू । तिन साथ हौं सुर लोक लौंहँसि प्राण नाहिं पठायहू ॥ निज कर्म निज कर भूति ते तुमता- त सब सुकृती भये । मैं शखि तुम बिन देह धीरज नाहिं सि- अप यश लए ॥ अस समुझि परत कठोर ता मम हृदयते कुलिसे भई । जो समुझि आप सनेह तुरते द्रवकि दर ज- न ह्वै गई ॥ पितुमरण भामिनि हरण खग बध दहिन भु- जा गवायहू । सब भाँति अपने बंधु सुचिमें कालि मामेंल- यहू ॥ जिन तुम्हे सौंप्यो मोहिं तिन सों कहा कहि हौं जाइ के । पिय बंधु खोयो वाम हित तेहि सक्यौ नाहीं लाइ के ॥ कपि भालु जैहैं गिरिगुफन तब संग मोको रोचहै । है हे विभी- षण की कवनि गति यही बड़ मोहिं शोच है । दुख देखि स- कत नरह्यो मम अब हेत केहि करुना तजी । जेहि देत न- हिं उठि बोध बीरन कौन बल धनुशर सजी ॥ धन धाम सु- त तिय कुटम्ब जग ह्वै जात पुनि पुनि आवही । पितु मातु सोदर जन्मभरि नहिं मिलत जबते जावही ॥ प्रभु वचन न- र अनुहारि सुनि कपि भालु सब हिय हारे हू । तब रीछ पति हनुमान कहें तेहि समय जानि प्रचारेहू ॥ ✣ ॥ ✣ ॥ ✣

चौ० कह हनुमंत जोरि युग हाथा ॥ लषण शोच जनि कीजे नाथा
कहो चन्द्र मैं पट इव गारी ॥ अबहीं देहुं अमी मुख डारी ।
कहो बिबुध बैदे गहि आनो ॥ मीत मारि सबके दुख भानो
कहो फोरि नभ रविहि निकारों ॥ रिपुसेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरि हर का आनी ॥ अमर अमर बोल वावों बानी
कहो पताल जाइ हति नागा ॥ आनों अमी कुराड यहि जागा
कहो देहुं निज देहे त्यागी ॥ अबहीं उठें लषण घट जागी

दो॰ जो कछु तब मन में रुचै सो मोहिं आयसु होइ॥
नाथ सपथ खरा में करौं प्रभु प्रताप बल सोइ॥
पवन तनै के बचन सुन सहित राम कपि भाल॥
उठे जागि जिमि मंत्र सुनि सर्प ग्रसित द्रुम जाल॥
बोले श्रीपति सत्य सुत सब लायक तुम आहु॥
चाही वेद सुखेन है अरिपुर आनन जाहु॥
पहुँचे तुरत बिचारि तेहि ल्याये सदन समेत॥
तासु बचन सुनि पुनि चले शीघ्र सजीवन हेत॥
कालनेम मग मारिकै सब गरा साठि हजार॥
रोकत लूम लपेटि सोइ देखा जाइ पहार॥
देखी जहँ तहँ ओषधी तब मन माँझ बिसूरि॥
लीलै चले उठाइ गिरि दलि दश मुख भट भूरि॥
किधौं अपत्र पलास बन किधौं प्रभात लखाइ॥
छाँडि प्रभु गये बहुरि मग दरयो अवध पर आइ॥

चौ॰ देखि भरत मन असुर बिचारा॥ बिनु फर बान हृदय महँ मारा
कपि महि गिरत राम मुख भाषा॥ पवन साधि द्रोणाचल राखा
तेज तासु पुर गयो समाई॥ ज्यौं सरिता सागर महँ जाई॥ ॥
दौरि भरत गहि हृदय लगावा॥ जागन जब तब बिलखि सुनावा
जो रघुपति पद प्रीति हमारी॥ बहुरि होइ अनकूल खरारी॥
तौ कपि होउ बिगत श्रम पीरा॥ सुनि उठि बैठ राम कहि बीरा॥
भरत रिपु हने लखि भ्रम छायो॥ का घर राम लखण फिरि आयो
पुनि पहि चानि पुलकि शिर नावा॥ पूछा सब बिरतान्त सुनावा
व्याकुल है बोले धृग हम हीं॥ प्रभु के काज न आयौं कबहीं।
कुसमय जानि कह्यो धरि धीरा॥ चढि सर सपदि जाहु प्रभु तीरा
सुनि सह गर्व बैठ सर जबहीं॥ सुमन समान उठायो तबही॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखि प्रभाव उतरि कपि परेऊ ॥ शीघ्रगवाइ प्रशंसा करेऊ ॥
तव प्रताप उर धरि रघुबीरा ॥ जैहौं अति लाघव प्रभु तीरा ॥
भले भरत कहि बोले ताता ॥ पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥ ॥
तेहि ते चलि दीजै समुझाई ॥ आइ भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहि ॥ भयो हरष अरु शोच विचित्रहि
बोली धन्य सुवन मम आजू ॥ जूझ्यो समर स्वामि के काजू ॥
पर इक कलंक होत बड़ि ताता ॥ कुसमय भये राम बिन भ्राता
पुनि सुभाय रिपुहन ते कहेऊ ॥ जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ ॥
सब बिधि कह्यो भजन सोइ सच्चा ॥ नर तन को फल याही बच्चा
सुनत उठे मुद सहित प्रकासा ॥ बिधि बस सुदर दरे जनु पासा

दो० अम्ब अनुज गति देखि मन मानी सबन गलानि ॥
बोली रघुपति मातु तब कपि ले धीरज आनि ॥
प्रथम भेंट कहि कह्यो इमि कह्यो कठिन उदम्ब ॥
लाल लछिमण ते ललित लागत अहो कदम्ब ॥
बोले मारुतसुवन तव सकल धरहु मन धीर ॥
कुशल जानकी लषण युत ऐहैं घर रघुवीर ॥
अस कहि चले समेत गिरि आये जहँ भगवन्त ॥
औषधि कीन सुखेन उठि बैठे तुरत अनन्त ॥
कृपा सिंधु बंधु इ मिले मिट्यो सकल दुख भार ॥
मुदित भालु कपि जन लह्यो समर पयोनिधि पार ॥
भेंटि सचिव बूझन लगे बड़ दुख पायो तात ॥
कहत नछत मेरे लग्यो पीर भई प्रभु गात ॥
होत पदिक के कान्ति जिमि दुख सुख लहे भुआर ॥
मुक मुक जानत धाइ करि अरथ पदारथ हार ॥
बिमल बचन सुनि शेष के कहन लगे सब बीर ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

रामलषण की प्रीति कौं उपमा क्षीर न नीर॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दा-
स राम सनेही कृत लक्ष्मण हित राम विरह व-
र्णनो नाम षट् विंशो ऽध्यायः २६ ॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बर्णौं मानस मत कछुक सार रमायण जानि॥
चौ० पुनि ताही थल पवनकुमारा॥ धरि आये गिरिवैद अगारा
सुनि रावण मन परयो खभारा॥ प्रान लगे कपि चारहु द्वारा॥
मेघनाद पुनि रथ चढ़ि आवा॥ बरषि बान कपि दल बिचलावा
दश दश बिशिष सबन के मारे॥ जहं तहं भट कहरत हैं डारे
पुनि विधि बचन लागि दोउ भाई॥ नाग फांस ते लीन बंधाई॥
मुदित पिता ढिग लंक हि लावा। रावण देखि परम सुख पावा।
बिबिधि प्रशंसा करि सुत केरी॥ सीतहि जाइ देखाइसि टेरी।
प्रभु बन्धन लखि सिय अकुलानी॥ गरुड़े तब पठयो विधि ज्ञानी
आइ सकल पन्नग बिचलाये॥ पुनि दोउ बंधु कटक महं लाये
अस्तुति करि सुनि रघुपति बचना॥ हरिपुर गये गुणान प्रभु रचना
इहां बिभीषण हनुमत दोऊ॥ सोधा दल अचेत सब कोऊ।
कह्यो बिभीषण रिच्छ पति ते॥ हे कछु चेत चलहु गे से रे॥ ॥
जामवन्त तब बचन बखाना॥ कहो अहैं नीके हनुमाना॥ ॥
सुनि दनुजेश कह्यो धरि धीरे। पूछ्यो नहीं लषण रघुबीरे॥
तजि कपि पति युवराज समेता॥ हनुमाने बूझ्यो केहि हेता॥
जो होइ हे जीवत हनुमंता॥ तौ जानौ सब जियत अनन्ता॥ ॥
जो कदापि गिरिगे हनुमानो॥ तौ तुम मृतक सबन कहं जानो
सुनि लंकेश सरस सुख पावा॥ पवन तने चरणन शिर नावा॥
आयसु होइ करौ सोइ बाता॥ लावहु चारि औषधी ताता॥ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

दो॰ एक बिसल्य करनी अहै युग सांवर्नीनाम ॥
तीसरि संजी वनि तुरत संधानी अभिराम ॥

चौ॰ सुनि मारुत सुत तुरते धाये ॥ आनि जरी सब सुभट जिआये
भये सबल सब गाजन लागे ॥ देखि राम लक्ष्मन अनुरागे ॥
हरि दिन चढ़ि धुम राक्षसुरारी ॥ आइ कीनि अति संगर भारी ॥
भये बिकल कपि भालु अपारा ॥ दुबादसी दिन पवन जमारा
आवा बहुरि अकंपन योधा ॥ महा समर कीन्हिस सह क्रोधा ।
तेरसि दिन गंजेहु युवराजा ॥ बहुरि प्रहस्त आइ रण गाजा ।
किहिसि मारि सर जरजर गाता ॥ परिवा दिन तेहि नील निपाता
तीनि दिवस तब लरा करीशा ॥ पंचम्या दिन सुनि दशशीशा
कुम्भ करन कहँ आनि जगावा ॥ नाना विधि करि कुटिल उपावा
पुनि बहु भाँति कराइसि भोजन ॥ बोला सो निज कहो परोजन
कह रावण हैं मानुष आये ॥ शत्रु समुझि हम तिय हरि लाये
सेतु बाँधि उतरे यहि पारा ॥ सुभट समूह कि हिनि संहारा ॥
मिला बिभीषण जाइ अयाना ॥ मोहिं तोहि नहि नेकु डेराना ॥
कपिन सहित तेहि भक्षण कीजे ॥ सहित कुटुम्ब मोहिं सुख दीजे
सुनि घट करन कह्यो सुर साली ॥ प्रथम पूछि किन किहेउ कुचाली
यक दिन बात जनाई थोरी ॥ प्रकटी नाहिं सीता की चोरी ॥ ॥
त्रिभुवन पति सों बैर बढ़ाई ॥ पुनि सुख चहत कहा अब भाई ।
ताते त्यागि कुटिल पन येहू ॥ जग दम्बा लै रामहिं देहू ॥ ॥
जेहि ते करौ सकल सुख भेरी ॥ सुनि बोला रावण मुख हेरी ॥
कितो करौ चलि संगर भारी ॥ कितो रहो पुनि सोइ सभारी ॥ ॥
नाहित भीरु बिभीषण जैसे ॥ परो पाइ रिपु पायन तैसे ॥ ॥
मैं निज बल बिरोध यह ठाना ॥ करि हौं निमि सब कर कल्याना ।
सुनि घट करन काल कृत जानी ॥ प्रभु दरशन हित मन में आनी

अनुजै भेंटि समोद सिधावा॥ लखि रावण बहु सुरा पियावा
करि मद पान भयो मतवारा। चला कहत कहँ भूपकुमारा
हाय हाय करि खेचर भागे॥ लखि तेहि मिले विभीषण आगे
चरण परसि निज नाम बतावा॥ सुनि सखाहि प्रभु पास पठावा
कहिनि नाइ रघुपति पद माथा॥ कुम्भकरण यह आवत नाथा
रावण बंधु विपुल बल लाहू॥ जो त्रिभुवन में गनत न काहू॥
उड़ै अकास ब्योम चर मारै॥ धसै पताल फनिक फन फारै
मणि उतारि लावत है कैसे॥ उपवन ते सुहपन को जैसे॥
बिनही प्रलै प्रलै करि देतो॥ जो षट मास न सूतत येतो॥
पर प्रभु भृकुटी कुटिल निहारी॥ लोप होत भव का तम वारी
सुनि कपि भालु चले करि हूहा॥ डारिनि तेहि शिर शैल समूहा
सुमन सरिस बरषत जिय जानी॥ धावा सुख पसारि दोउ पानी
कोटिन कपि चापि गे तरवारे॥ कोटिन कर समेटि मुख मोके।
कोटिन श्रवण नाक मग मारवी॥ निकसहिं जिमि बाबिन ते पाखी
कोटिन दिशा विदिशा उड़ि भागे॥ कोटिन प्रभु के पाछे लागे।
कोटिन हनुमंतादिक बोले॥ कोटिन कुनप दुरावत डोले
कोटिन गये समुद महँ बूड़ी॥ कोटिन काटि चलाये मूड़ी
आगे लखि रघुनाथै पावा॥ करि प्रणाम मन वचन सुनावा

दो॰ नामें आहौं ताड़ुका नामें अहौं सुबाहु॥
नाहौं धनु मारीच मग नाहौं खर कपि नाहु॥
मैहौं रावन केर रिपु आइ करौ रन राम॥
जेहि चढ़ि आयेगर्व करि मो अब पूजो काम॥

चौ॰ सुनि सुग्रीव लात यक मारी॥ पकरि तिन्हें पुर चला प्रचारी
लखि सब हनन लगे यक साथा॥ सोरस पाइ निकस्यो कपि नाथा॥
श्रवण नाक कर मुरवते कारी॥ गयो राम यहँ प्रभु के आगी॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

चला रुधिर तब देखि लजाना ॥ फिरि कपि निकर किरेसि दिनशन ॥
हनो मान निज लूम लपेटी ॥ डारिन सिंधु मांझ जिमि फेंटी ॥
धावा तब करि क्रोध कराला ॥ मारि कीस सब किहिसि बिहाला ॥
नारद आइ कही असि बाता ॥ बधउ बेगि प्रभु प्रोक्त बिधाता ॥
थीथि नाइ जब कीन पयाना ॥ तब हरि धनुष बान संधाना ॥
मारे शायक बिपुल प्रचारी ॥ धावा मुख पसारि गिरधारी ॥
लखि राघो भुज काटि गिराई ॥ लिहिसि बाम कर सोउ उड़ाई ॥
बिन भुज गिरि मंदर सम धावा ॥ शीस काटि प्रभु लंक बहावा ॥
लुराड मुराड बिन चल्यो प्रचंडा ॥ तब प्रभु काटि किये युग खंडा ॥

दो० देखि देव बरषे सुमन हरषे मुनिन समेत ॥
मुदित भालु कपि कटक मधि सोहे कृपा निकेत ॥

चौ० अनुज शोच लखि रावण शोचा ॥ असन बसन तेहि भये अशोचा ॥
मेघहिं रखि शिर रावण ताके ॥ चला महोदर लै भट बाँके ॥
कपि दल आइ समर अति ठाना ॥ एका दिवस हता हनुमाना ॥
फाल्गुण कृष्ण आदि दिन भोरा ॥ चढ़ा नरंतक लै भट घोरा ॥
नाना बिधि तेहि युद्ध मचावा ॥ जाना कपिन काल निजु आवा ॥
हरिबल पाइ लरत तेहि चीन्हा ॥ फनि दिन निधन अराननकीन्हा ॥
तब अति काय आय रन ठाना ॥ अष्टम्या दिन भेगत प्राना ॥
कुम्भ करण सुत कुंभ निकुंभा ॥ आइ किहिनि दोउ युद्ध असंभा ॥
लरत लरत दिन पांच बिताये ॥ तेरसि दिवस गये दोउ पाये ॥
तब खर सुत मक राक्षसि धावा ॥ कपि दल दलतु लक्ष्मण पहं आवा ॥
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना ॥ कटेन बहु बिधि कर बर दाना ॥
झपटि लखण कहं निगलिसि धावा ॥ मनहुं मयंक हि तुदन दुरावा ॥
हाहा कार भयो दल भारी ॥ निकसे लखण उदर तेहि फारी ॥
फाल्गुण शुक्ल प्रथम दिन जूझा ॥ भा रावने मोह यथा बूझा ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेघनाद लखि बचन सुनावा। केहि हित तुम अस खेद बढ़ावा
जब लग मैं जीवत सुत तोरा। तब लगि करहु राज्य बर जोरा
देखो आजु मोर संग्रामा। अस कहि चला दिव्य रथ तामा
एक अदृश्य पुनि निसि नभ गामी। आवा जहां भालु कपि स्वामी
गर्ज्जा प्रलय पयोद समाना। सुनि कटु शब्द सबन भय माना
अस्त्र शस्त्र पुनि बरषन लागा। मघा नखत सम असि सर सांगा
गहि गिरि तरु कपि जाहिं अकासा। मिलै न कोउ लवफिरें उदासा
भये बिकल कपि भागन लागे। जहां जांइ मग मिलै न आगे।
अंगद हनोमान नल नीला। शेष सुकंठ बिभीषण कीन्ला।।
औरौ दुर्द्द रादि जे बीरा। मारि सबन कह किहिसि अधीरा
पुनि अति समर राम ते ठाना। नाग फांस बस भै भगवाना।
जासु नाम भव बंधन हर्त्ता। सो कि होइ पर बस जस कर्त्ता।
समय समान चरित प्रभु करहीं। अस बिचारि बुध भर्म न परहीं
देखा सबन बिकल घन नादा। तब भा प्रगट कहत दुर्वादा।।
देखि नर अपति चले प्रचारी। तब तेहि तीब्र शक्ति तकि मारी
जामवन्त सोइ मारि गिरावा। चरण पकरि पुनि लंक पठावा
गरुड़ आइ प्रभु बंधन काटा। भे सब सबल राम जब डाटा।
गहि गहि गिरि गुरु पादप धाये। मारि सकल निश्चर बिचलाये
मेघनाद मुरछा ते जागा। जाय अजैमख करन सो लागा

दो॰ आनि बिभीषण प्रभु सों कह्यो जोरि युग पानि।।
इन्द्र जीत निकुम्भ लै गा मख हित रिसि आनि।।

सो॰ जब लगि होइ न सिद्धि तब तक ताको मारि अपु।
पाछे पाइ प्रसिद्धि बेगि न जाइहि जीति रिपु।।

चौ॰ सुनि प्रभु कहा लषण ते तबहीं। जाहु तात लै कपिदल अबहीं
मख बिध्वंसि पुनि मारेहु ताही। भलेनाथ तव आयसु आही

अस कहि साजि धनुसर तूनीरा॥ चले संग हनुमन्त सुवीरा।
आवहिं कपिन अंग सब कीन्हा॥ मारुत लखि धनु छीनेहि लीन्ही
छ सर जाम बन्त के छेदे॥ तीनि बाण अंगद के भेदे॥ ॥
चारि विभीषण अंगनि फारे॥ पांच विशिख पवनज के मारे।
एक एक सर सबके दयऊ॥ पुनि लक्ष्मण पर छाड़त भयऊ
सकल अनंत काटि महि डारे॥ पुनि निज बाण कराल पबारे
आवत लखि सब भयो अलोपा॥ छाँड़िसि बहुरि शूल करि कोपा
तुरत कीन्हि सत खण्ड अहीशा॥ तब यक गिरि महि डारिसि शीशा
रज सम करि सोऊ महि पारा॥ अस्त्र शस्त्र पुनि तजेसि अपारा
सो तब लक्ष्मण नेवारत भयऊ॥ यहि विधि बीति मास दिन गयऊ
महा युद्ध लखि सुर मुनि सारे॥ हर्ष शोक बस होइ विचारे॥
तब लक्ष्मण करि कोप कराला॥ छाँड़ेउ एक बाण बिशाला
जासहि शिर भुज काटेउ तासू॥ गर्जत पुनि मारेसि आसू॥
राम लक्ष्मण कहि सह अनुरागा॥ तेरसि दिवस भये तन त्यागा
सुनि बोले अंगद हनुमाना॥ धन्य मातु तव तोहि बलवाना
कटि तनु पर्यो समर महि तामा॥ दहिनी भुजा गई तेहि धामा
शिर लै कीश राम पहं आये॥ अनुजहि लखि प्रभु हृदय लगाये
फेरि कमल कर छत हरि लीन्हा॥ बरषे देव सुमन जय कीन्हा
पुनि रघुपति कपि भालु बिलोके॥ भये सकल श्रम रहित विशोके
अरि पुर मेघनाद की नारी॥ पति भुज लखि मन संशय धारी॥
दीन्हि कलम खरि कर गहि लीन्ही॥ लक्ष्मण की कीरति लिखि दीन्ही
कोटि कल्प जो योग कमावै॥ सो उन लखण की यश सरि पावै॥
सुनत सखिन युत रोवन लागी॥ आजु दशानन भयो अभागी
कपिहं कीश मुदित पुर फेरी॥ छूटि बंदि सब देवन केरी॥ ॥
कोइ जय लहै हमें का करना॥ जस्यो जगत जो आपन जरना।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

असकहि भुजपालकी चढाई ॥ आपु बैठि रावण पहँ आई ॥
सासु ससुर पद शीश नवाई ॥ रोदन करि सब कथा सुनाई ॥
जो पावौं निजपति कर माथा ॥ तौ रचि चिता जरहुँ तेहि साथा ॥
मय तन यादि जहाँ तक रानी ॥ लगीं बिलाप करन दुख मानी ॥
सुनि दशमुख हु मुर्छित महि परेऊ ॥ पुनि धरि धीर बचन अनुसरेऊ ॥
सुमुखि समुझि जिय करहु न शोका ॥ प्रकट नाम याको मृत लोका ॥
मातु भूमि पितु बीज बिचारा ॥ काल किसान जीव तृण भारा ॥
पालत पुनि लूटत सोइ खाई ॥ कौन कौन हित रोवै धाई ॥
दो० रह्यो न कोइ रहैगो पुनि कछु जाइ न साथ ॥
धन्य भाग्य इन सबन के जो जूझे प्रभु हाथ ॥
सब सम जानन मोहि तू मैं हौं पति बलवान ॥
देखो कालिहि कपिन कर मेटि हौं जाइ गुमान ॥
बालि बिभीषण पवन बिधि तापस नील कपीश ॥
इन सब शीशन सहित तव आनौं पति कर शीश ॥
बड़ बिमोह बस जानि तेहि कछु न उत्तर दीन ॥
नारद के वर बचन तव भयजा अस्थान कीन ॥
तातें निज हित राम पहँ जाहु सकल तजि शोक ॥
होइ भूप धरमज्ञ जहँ तहँ कोउ रहे कि बोक ॥
बहुरि रहत तहँ ससुर तव भय न कछू शिरनाइ ॥
चली यान चढ़ि भवन युत पहुँची कपि दल जाइ ॥
सो० लखि हरषे कपि भालु । बिन श्रम पाई जानकी ॥
मिटा सकल जंजालु । भयो सुयश हम सबन कहँ ॥
चौ० यहि बिधि गई जहाँ रघुराई ॥ नख सिख लखि दोउ बंधु लोनाई ॥
कीन्ह दण्डवत बिनय समेता ॥ तब लंकेश कहा सब हेता ॥
सुनि कृपाल बोले अनुरागी ॥ जो भावै सो लीजै मागी ॥ ॥

कहौं देहु पति तोर जियाई ॥ भूजहु राज कल्पभरि जाई ॥
सुनि सुर मुनि कपि भालु डेराने ॥ बहुरि सुलोचनि वचन बखाने
कृपा सिंधु मैं दीख विचारी ॥ यहि मरने ते जीवन खारी ॥ ॥
बिष बदले जो अम्मृत पावै ॥ लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै ॥
ताते नाथ देहु पति शीशा ॥ दीन देवाइ तुरत जग दीशा ॥
दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ लाई सागर पास ॥ ॥
भई सती पति सहित पुनि कि हिसि सत्य पुवास ॥
इति श्री विश्राम सागर सवमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दा-
स राम सनेही कृत मेघनाद बध और सुलोचना
सती बर्णनो नाम सप्तविंशो ऽध्यायः २७
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि ॥
बरणौं मानस मत कछुक सार रमायण जानि ॥
तेहि दिन भयो न समर कछु दश मुख शोचै लीन ॥
अहिरावण को यादि करि आकर्षन जप कीन ॥
चौ० दंड चारि महँ सो तहँ आवा ॥ रावण लखि निज हाल सुनावा
सकल सैन कपि भालुन मारी ॥ तात रही यक आस तुम्हारी ।
सुनि बोला यह केतिक बाता ॥ जैहौं लै पताल दोउ भ्राता ॥
देहौं बलि कामद कहँ सोई ॥ जानेहु नभ प्रकाश जब होई
अस कहि बिरचि बिभीषण रूपा ॥ गयो जहाँ लछिमन सुर भूपा
सोवत लखि लै गगन उड़ाना ॥ दश मुख देखि सत्य तेहि जाना
यहि विधि सो लै गयो पताला ॥ प्रभु बिन भे कपि भालु बेहाला
तब सब हाल बिभीषण काहा ॥ अहि रावण लै गा नर नाहा ।
दहत नाग पुर जो कोइ लावै ॥ सो सब को दे प्राण जियावै ॥
कह हनुमान तजहु सब शोका ॥ लैहौं प्रभुहि ढूँढ़ि तिहु लोका
चले खबरि मग खगते पाई ॥ छिन महँ अहिपुर पहुँचे जाई ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

द्वारपाल मकरध्वज आहा ॥ तासु पूंछि तेहि बांध्यो गाढ़ा ॥
पुनि लघु बन देवी मठ गयऊ ॥ होत होम लखे दानव भयऊ ॥
तब नहैं बिकट रूप धरि लीन्हा ॥ गे धामि प्रान सुतल थल दीन्हा ॥
देखि सहित कुल हरषा राजा ॥ प्रगटी देवि भया अब काजा ॥
नाना बिधि मेवा पकवाना ॥ आनि चढ़ाये पूरजन नाना ॥
यावति बस्तु सकल कपि खाई ॥ पुनि बलि हित आने दोउ भाई ॥
बाजहिं बाजन गावहिं नारी ॥ सुनि निश्चर सब होइ सुखारी ॥
तब प्रभु ते बोले सब साई ॥ सुमिरो जो कोउ तुम्हरे होई ॥
सुनि रघुपति तब कीन बखाना ॥ यहि अवसर चहिय हनुमाना ॥
मारन हित खिघे सब ठाढ़े ॥ घन समान कपि गर्जेहु गाढ़े ॥
निश्चर डरि अस कहत बिरोधी ॥ क्रोध कीन देवी नर देखी ॥
बहुरि गर्जि कपि प्रभु उठावा ॥ दोउ भे यन दोउ कंध चढ़ावा ॥
निज लंगूर कर कोट बनाई ॥ असि लै मारेहु खल समुदाई ॥
अहि रावण शिर काटि कुमारा ॥ देवी की आहुति में डारा ॥
पौरी असुर मिले ते मारे ॥ पुनि ले प्रभु चलेहु लखि द्वारे ॥
बिनै कीन मकरध्वज माथे ॥ राज देइ निज सेनहिं आये ॥
लखि कपि भालु सुखी सब भयऊ ॥ बूड़त मनहु थाह मिलि गयऊ ॥
हनुमानै सब लोग सराहैं ॥ कह प्रभु इन बिन को मम आहैं ॥
बोले पवन तनै शिर नाई ॥ आपु चहै तेहि देउ बड़ाई ॥

दो० यहां दशानन दूत मुख सुनि अहिरावण नाश ॥
एका दिन निज सैन लखि चढ़ा समर बिन त्रास ॥
बाजहिं बाजन बिबिधि बिधि अपसगुन होइ अपार ॥
गनहिं न एकहु गर्व बस महि सहि सकत न भार ॥

चौ० निज निज नाथ कीरति भाखी ॥ धाये इत उत भट अभिलाखी ॥
कपि कर मुक दल संगम भयऊ ॥ जनु घन श्याम सैन मिलि गयऊ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गर्जहिं मनहुं बाजने बाजें ॥ चमकहिं खड्ग छटासी राजें।
बर्षहिं बान बूंद जनु भारी ॥ छूटे तोब गाज जनु पारीं ॥ ॥
भयो अँधेर उड़ी रज कूरा ॥ इन्द्र धनुष बहु लसै लंगूरा ॥
गिरहिं सुभट मंदिर हहराई ॥ स्रोनित सरित चली उमड़ाई।
भुज अहि कच्छप चर्म सोहावै ॥ कुंजर अस्व ग्राह द्युति पावै ॥
फिरत चक्र आवर्त अनेका ॥ उछरहिं शीश सुमिटि गएका
भूषण भेक उपल सम रेनू ॥ धनुष तरंग बहै पट फेनू ॥ ॥
कर पद मीन जु केस सेवाला ॥ दोउ दल कूल बिटप रथ जाला
बहु भट बहैं न टे खग नीचा ॥ जनु नेवार खेलहिं सरि बीचा।
खैंचै आँत गीध गहि तीरा ॥ बंशी मनहुं लगाई कीरा ॥ ॥
भूतरु प्रेत पिसाच पिसाची ॥ मंजहिं मुंडन्ह जोगनी नाची ॥
बीर बिनोद लहैं सर देखी ॥ कायर त्यागहिं प्राण बिशेषी ॥
देखि कटिन कोपेहु हनुमाना ॥ मर्दन लगे निशाचर नाना।
गजते गज घोड़ेन ते घोरा ॥ खर ते खर रथ ते रथ तोरा ॥ ॥
महिष ते महिष ऊँट ते ऊंटा ॥ पैदर ते पैदर दल कूटा ॥ ॥
कोटिन कर शिर लातन मारे ॥ कोटिन पटकि सिंधु महँ डारे।
कोटिन हाथ पाय बिन कीन्हे ॥ कोटिन फेंकि गगन महं दीन्हे
हँसि प्रभु कहैं लखण ते हेरी ॥ देखउ लरनि पवन सुत केरी।
निज दल बिचल देखि दशशीशा ॥ धावा लै धनु सर भुज बीसा
जहं तहं उड़े कीस भय पाये ॥ यथा पात बौंडर के आये ॥ ॥
अंगद हनुमदादि भट भारी ॥ लै लै गिरि मारे एक बारी ॥ ॥
फूटहिं पविसो मुरे न नेका ॥ लाग निपातन कीस अनेका ॥
दीन्हिसि पूरि दशहु दिशि बाना ॥ भागत कतहुं न मिलै ठिकाना
बिकल पुकारहिं जहँ तहँ ठाढे ॥ पाहि राम लछिमन दिन गाढ़े
सुनि लछिमन धनु बान सिधारे ॥ सरिस आइ सन्मुख ललकारे।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होउ सजग अब सुन दशभालू ॥ पहुँचेउ आइ तोर में कालू ।
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहु मारे ॥ सकल काटि सौमित्र निवारे
पुनि छांड़े निज बान अहीशा ॥ सूत समेत भयो रथ खीशा ।
सत सत बिशिष दसो शिर मारे ॥ मनहु चले बहु रुधिर पनारे
पुनि सत सर छाती महँ दीन्हे ॥ बीसहु भुज बरही सम कीन्हे
धावा बिकल क्रोध करि भारी ॥ बिधि की दीनि सांगि तकि मारी
लागत उर लक्षिमन महि परेऊ ॥ रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ ॥
जेहि शिर रज सम भुवन अपारा ॥ तेहि उठाइ किमि सके लबारा
देखि पवन सुत मुष्टिक हनेऊ ॥ है अचेत अवनी ढन मनेऊ ।
प्रभु ले गयो जहाँ भगवाना ॥ देखि दसानन अचरज माना

दो० चैत्र कृष्ण नौमी दिवस अनुजै लखि रघुबीर ॥
कहौं काल के काल तुम सुनत उठे रन धीर ॥
पुनि रिपु सन्मुख जाइ तेहि बिकल कीन रनमारि ॥
लखि अचेत निज नगर तब लेगा सूत निकारि ॥

चौ० भवन दीख जब रावण जागा ॥ निज सुमंत्र कहँ खोजन लागा
रे मति मन्द भीरु धृग तोही ॥ रण ते बिमुख करायं मोही ।
अस कहि दशमी दिवस सचेता ॥ लाग करन मख बिजै के हेता
सुनि प्रभु भट पठये बहु पासू ॥ करहु विध्वंस जाइ मख जासू
अंगद हनुमदादि कपि बीरा ॥ कौतुक ही आये तेहि तीरा ॥
लखि लागे सब मारन लाता ॥ उठे न सो स्वारथ मन राता ॥
तब कपि करन उपद्रव लागे ॥ दिये छोरि हैगे मृग भागे ॥ ॥
फारि पट बितान धट फोरे ॥ छत्र चमर बिञ्जन गहि तोरे ॥
लखि मन्दोदरि उठी रिसाई ॥ दुरी चित्रशाला महँ जाई ॥
अंगद हू घुसि गे तहँ फूले ॥ ॥ बिबिधि चित्र पुतरी लखि भूले
धाइ धरैं पुनि तजैं निहारी ॥ नाचे किमि सुन्दरि बन चारी ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देखि हँसी सुर कन्या एका॥ गहत बताइ सिनारि अनेका।
तेही देखाई रावण रानी॥ असुर निकट लाये गहि पानी
भूषण बसन परे सब छूटी॥ कामपुरी जनु शिव गण लूटी
आरत बचन पतिहि लखि कहई॥ जे जस करै सो तस फल लहई।
सीतहि दियो भूप दुख भारी॥ देखहु निरगति सोचु हमारी।
नारि बचन सुनि उठा रिसाई॥ गये भागि कपि जहँ रघुराई

त्रिभङ्गी छं॰ गे भागि कपीशा तब दशशीसा गहि भुज बीसा धनु तीरा। सँग सेन अपारा चलेउ जुझारा मद मतवारा रणधीरा॥ इन सुर प्रभु तीरा॥ कह्यो अधीरा मेदहु पीरा वेगि भले। कटि कसि पट बाँधा धनु शर साँधा दलन प्रबाधा हेतु चले॥ लखि इंद्र अजाना स्यंदन आना पवन समाना देखि प्रभू। हरि दिन तेहि माहीं चढि सब पाहीं कहो कि नाहीं नीक अभू॥ सुनि सब बनचारी भये सुखारी देखि मुरारी कोप ठन्यो॥ कहि बचन कठोरा धायक घोरा तजि बहु तीरा कीश हन्यो॥ है बिकल पराने सकल ठिकाने लखि अकुलाने बिसिरव भरे। तब राम सुजाना पावक बाना छाँडि नाना सकल जरे॥ दशमुख दीशा हयऊ रथ बिनभयऊ दूसर लयऊ क्रोध जुतं। पुनि सर बर घाटे सब प्रभु काटे निस्चर डाँटे बालि सुतं॥ कटिकटि भट परहीं पुनि उठि लरहीं बल करि धरहीं यक खाले। कोटिन बिन माथा धावहिं साथा कह रघुनाथा सिर बोले॥ धरु धरु धरु मारू पकरि पछारू करहु अहारू कोउ नबचै। अति चंचल कीसा बध बन रीसा जो बागीसा भूलि रचै॥ धाये कपि भालू जनु बपु कालू मारि बिहालू असु किये। नख उदर बिदारें आँत निकारेंलिज

गरु डारें हर्ष हिये ॥ लखि रावण कोपा प्रभु रथ तोपा दे-
खि अलोपा देव डरे। हय मारि गिराये राम उठाये सन्मु-
ख धाये क्रोध किये ॥ कर खेड सर दावा श्रुति तक आवा
तब कर बावा यों बोला। भोजन हित हारू रहत अगा-
रू समर पछारु कयों डोला ॥ सुनि कहीं जु आंहू पूछ-
न जाहूं दश शिर दाहूं की एका। प्रभु सकल बलाये अ-
स कहि धाये जाइ गिराये सिर तेका ॥ फिरि भये नवीने
पुनि प्रभु बीने पुनि हरि दीन्हे पुनि काटे। पुनि पुनि इमि जा-
में राम गिरामें दस दिशि तामें भरि पाटे ॥ जब असुर ति-
साई सांग चलाई लखि रघुराई आपु सही। चहि चल्यो
विभीषण जहँ रिपु तीक्षन बदन सुसी धन नीच गही।
अस कहि लल कारा गदा प्रहारा लगत प्रहारा धरणि
गिरा। मुख ध्वव नलि दाहा शोणित बाहा उठि करि हा-
हा बहुरि भिरा॥ मारे एक एके अस्त्र अनेके हरि बल छ-
के अमित लखा। पवनज तब धायो मारि गिरायो प्रभु ढि-
ग आयो राम सखा॥ रावण हनुमाना मेरु समाना भिर-
त बहाना असुर ठने। नभ सुर मुनि हेरी दुनहुन केरी ज-
य जय टेरी टेरि भने॥ कपि भालु निहारे हनु मति हारे
गिरि तरु धारे सब धाये। लखि निष्ठुर भूपा धरि बहु रू-
पा कीणा अनूपा बिचलाये॥ भागत भट घेरहिं आतुर ते-
रहिं मुख में गेरहिं भुज बीशा। दुरि देव पराने बहुरि पुजाने
रहे ठिकाने अज ईशा॥ ब्याकुल लखि बंदर हँसि कमु-
कंदर सब दस कन्धर नाश किये। पुनि एक निहारा मर्क-
ट धारा धाइ अपारा असुर छिये॥

दो॰ पुनि छाड़े निज बाण प्रभु काल सरिस बध हेत॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लागे काटन असुर के यथा हाथ तृण खेत॥
सो० सात दिवस दिन राति। बाजेउ घंटा अनुक्रम॥
हरि पूजा की भाँति। भये सुभट संहार सब॥

कुंडलिया घंटा की परमान अब सुनु जेहि संगर बीच। नाग अयुत दश लाख है रथी इड़ सत मीच। रथी इड़ सत मीच लहै पैदल दस कोटी। तब एक नटै कबंध कोटि पर खेचर चोटी॥ खेचर नाचहिं कोटि बिना सिर के निह कंठा। तब राघो के धनुष का बाजत एक घंटा॥

श्लोक नागा नाम युतं तुरंगा नियुतं साहं रथी नार्बुदं॥
पादातां दस कोटि सन्निपतने निर्तत कबंधारव्ये॥
एवं कोटि कबंध नर्तन विधौ नृत्यत्तथा खेचर॥
तेषां कोटिक नर्तने रघुपते कोदण्ड घंटा रवः॥
एवं सप्त दिनिश्च्यातं स्वर्गमृत्ते रसातले॥
भवेन्मूरि भटं नाथ राम रावण संगरे॥

चौ० दशमुख आपुहि जानि अकेला॥ लाग करन माया कर खेला॥ भूत पिशाच प्रेत बैताला॥ अमित जंतु प्रकटे तेहि काला॥ लीन्हे धनुष सिली मुख चोखे॥ मारु मारु धरु बोलहिं रोखे॥ नितहिं करहिं रुधिर कर पाना॥ गहे कपाल योगिनी नाना॥ मुख पसारि दौरैं हम खावा॥ भागे कपि तहँ देखहिं दावा॥ ऊपर ते बरषैं बहु बालू॥ भये थकित सब मर्कट भालू॥ शेष सहित नवाहैं हाथ खरारी॥ सुनि प्रभु माया सकल निवारी॥ देखि सुभट धाये करि हूहा॥ प्रकटे तेहि कपि भालु समूहा॥ सन्मुख चले बिटप गिरि धारी॥ देखि क्रोध बोले हिय हारी॥ सब मर्कट है गे रिपु घोरा॥ कौन कुशल जो बिधि घर फोरा॥ आपुइ आप लरैं नहिं कोई॥ भागे अब कछु जीति न होई॥ बहुरि हरी माया भगवाना॥ तब तेहि रचे लषण हनुमाना॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखिकपि भालु सकहि नहिं मारी॥ घेरेनि रामहि धनुहिं गिर धारी।
डरे देव कपि प्रभु हरषाने॥ पुनि समूह शायक संधाने॥॥
छांड़त रिपु शिर काटन लागे॥ जनु समूह शर ते खग भागे।
रहे पूरि नभ केतु समाना॥ छेदे निकर एक यक बाना॥ ॥
लोक लोक गिरि गिरि बन जहईं॥ भयो राम रावण रण तहईं॥
सुर नर नाग सबै अकुलाने॥ जाइ कहा कोउ सुखद ठिकाने
मारु मारु धरु धरु शिर बोलैं॥ कालब्याल से रवेदे डोलैं॥
प्रभु काटत शिर बारहिं बारी॥ मनहुं अनार उडै फुलझारी।
सो॰ यहि विधि छीनत माथ बीते अष्ट दिवस तब॥
बोले श्री रघुनाथ। सुयश देन हित घटज से॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास
राम सनेही कृत राम रावण समर वर्णनो नाम
अष्ट विंशो ऽध्यायः २८॥
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
सार रमायण केर मत कहौं इतिहास बखानि॥
चौ॰ नाथ थकित भे भुजा हमारे॥ तदपि असुर मरत नहिं मारे।
ताते यतन करहु जेहि छीजे॥ कह अगस्त मुनि प्रभु सुनि लीजे
प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा॥ जासु प्रताप विदित सब देशा
तिनकी विनय करहु कर जोरी॥ होइ विजै आनंद बहोरी॥॥
सुनि प्रभु देन बड़ाई हेता॥ बोले रवि दिशि प्रीति समेता॥

## भुजंग प्रयात छंद

नमो मार तंडं प्रचंडं नमारी॥ नमो कल्मषा मेदुरबालं कहारी।
नमो भानु मे पातु प्राच्यां दिवासं। नमो पातु वेदांगजाम्याले नाशं
नमो पातु ता पेन्द्र देव प्रतीचं। नमो मे रविं रक्ष रक्षेदुदीचं॥
नमो रश्मि गर्भ सिर ईशान देशं। नमो संयमा पातु देखे सुवेषं॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

नमो पातुनैऋत्य हीरन्य रेतं। नमो पातु वायव्य देवार्क मेतं॥
नमो मित्र मूर्द्धो निसे धिष्णु मर्ड्डं। नमो चारुतां पातु सर्वत्र बड्डं॥
नमो मातु सर्वांग सुर्या सतोयं। नमो जन्म मृत्यु जरा व्याधि भेयं॥
नमो धर्म का मार्थ निर्वान दाता। नमो दोष दारिद्र संताप हाता॥
नमो विश्व भूतात्म भूतात्म भूपं। नमो ज्ञान विज्ञान रूपं अनूपं॥
नमो लोक नाथादि मध्यांत शेकं। नमो तीव्र तेजार्क नामं अनेकं॥
नमो मेक चक्रं रथं दिव्य गामी। नमो कंद कालज्ञ कारुण्य स्वामी॥
नमो निर्मलं निर्विलोकं विरालं। नमो भूधिलं भूषणं रत्नजालं॥
नमो स्वर्ण संकाश माकाश वासी। नमो सज्जनानंद दा वेग रासी॥
नमो सुक्ष्म भावित्त प्रागल्भमीसं। नमो ब्रह्म विद्या विभो वैबली सं। नमो त्रैगुणं त्वं त्रिमूर्ति त्रिकालं। नमो त्वं तुरीयं निरीहं निरालं॥ नमो स्त्व सुरा सुर भू ता सेव्य मानं। करो सो कृपा ज्यों तज्यों शत्रु प्रानं॥ यही बीनती दास रघुनाथ की है। यथा बाल बानी लेहो जानि ही है॥

श्लोक सूर्याष्टकं जे शुभिदं पठे नराः मध्यान्हकाले शुचि नेम युक्तः नश्यन्ति सर्वा निरुजानि तस्य प्राप्नोति सो दाथ जया भि रामं॥

चौ॰ यहि विधि करि बिनती जगदीशा। छांड़े शरि युदीसि एक तीसा॥
यक भार नाम सरा मृतसो बा॥ बीस भुजा काटे करि रोषा॥
दस शिर काटि दसौं दिशि माहीं॥ धरि आये रघुनन्दन पाहीं॥
बिन भुज शिर धावा करि कोपा॥ कहां राम रण कहहु अलोपा॥
तब प्रभु काटि किये युग खंडा॥ गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्मंडा॥
तासु तेज प्रभु बदन समाना॥ देखि देव नभ हने निशाना॥
जय धुनि पूरि रही चहुं वोरा॥ तिन मधि कोशल राजकिशोरा॥
कुसमित किंसुक तरु के बीचा॥ राजत तरु तमाल जनु सींचा॥

जटा मुकुट सोहत मुनि चीरा॥ कर कमलन फेरत धनुतीरा
राजिव दृग करि क्रिया निहारो॥ सुरनर मुनि सब भये सुखारे
यह छवि सुखद बसै उर जासू॥ मोह असुर तब होइ बिनासू
पति बध सुनि मैजादिक रानी॥ आईं तहँ शिर पीटत पानी
रावन गति लखि देह बिसारी॥ लागी कहन तासु गुण भारी
जेहि भुजबल जीतेउ सुर सबहीं॥ नन सुरह किहेउ सकल सहाली
सोइ वपु बाहु स्वान शिव खाहीं॥ राम बिमुख कछु अचरज नाहीं
जासु कर्म फल चाहिय सोका॥ तदपि कृपाल दीन निजलोका
देखि बिभीषण हूँ दुख पावा॥ प्रभु प्रेरित लछिमन समुझावा
अनुज क्रिया कीन्ही जस चाही॥ द्वितिया दिन आये प्रभु पाहीं
तब रघुपति लिय बोलि अनंतहि॥ कपि रिच्छप अंगद हनुमंतहि

दो० कह्यो बिभीषण आइ पुरराज देहु जस रीति॥
भलेनाथ कहि आइ शिर कीन्हों तिलक सप्रीति॥
बाजे बाजन बहु किये सुवतिन मंगल गान॥
सहित बिभीषण लखन पुनि आये जहँ भगवान॥

चौ० तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरे॥ जनक सुता हि लावहु हिय मेरे
सुनि पवनज अंगद लंके गा॥ आइ मातु पद नायो शीशा॥
पूछी कुशल कुशल सब भाषी॥ पुनि पवनज बोले मन माषी
मातु तम चरित तोहि दुख दीन्हा॥ तेहि ते इन्हें वही बध कीन्हा
कह सीता जनि मारिय ताता॥ रिछ मनुज की बरणी बाता॥
सुनि सुख सहित बिभीषण भावा॥ षोड़स विधि शृंगार करावा॥
शिबिका सुभग माँझ बैठारी॥ लाये सादर जहाँ खरारी॥
पावक ते प्रगटन के हेता॥ कहे बचन दुर्बाद समेता॥
सुनि जानकी बहुरि दुख पाई॥ लछिमन ते पावक मँगवाई
चिता रचाइ कह्यो तेहि पाहीं॥ रघुपति तजि गति दूसरि नाहीं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

तौ जल सरिस होउ तुम केशा ॥ अस कहि तामें किये प्रवेशा
विप्र रूप धरि पावक लाये ॥ प्रभुइ सौंपि अस बचन सुनाये ।
राम बाम दिशि आसन दयऊ ॥ देखि भालु कपि हरषत भयऊ ।
लषण राम सिय शोभा रूरी ॥ निरखि सुमन बरषे सुर भूरी ॥
दशरथ सहित राम पहँ आये ॥ लषण सहित प्रभु सीस नवाये
बोले तव प्रसाद रिपु मारे ॥ सुनि बिनती सुर लोक पधारे ॥ ॥
तब बिरंचि बिनती बहु कीन्ही ॥ प्रभु पद प्रीति माँगि सो लीन्ही
आइ बिनै तब कीन पुरारी ॥ भल कीन्हे प्रभु बधे सुरारी ॥ ॥
मन बाँछित वर माँगि सिधाये ॥ तब सुरेश वर बचन सुनाये ॥
नाथ कृपा करि सुर मुनि रंजे ॥ दास जानि सब के दुख भंजे ॥ ॥
अब मोहिं जौन रजायसु देहू ॥ करहुँ सो सुनि बोले प्रभु येहू ।
तात देहु कपि भाल जियाई ॥ दिये जियाय अमी बर धाई ॥
तब लंका पति बचन उचारा ॥ नाथ करिय कछु अंगीकारा ॥
कह प्रभु तोर कोश गृह मोरा ॥ मोर कोश गृह तवन निहोरा ॥
करहु कल्प भरि राज मिरामा ॥ अंत समय आयो मम धामा ॥
पुनि बोले पट भूषण लाये ॥ कपि भालुन चहिये बरताये ॥
कह प्रभु होइ गहरु बिरोधी ॥ मम मन है भरतहि कब देखी
ताते लै अकाश महँ जाहू ॥ देहु बरसि मिलिहै सब काहू ॥
जाइ विभीषण नभ बरसाये ॥ पहिरि पहिरि सब प्रभु पहँ आये
नाना जिनिसि देखि कपि भालू ॥ बिहँसि सकल ते कह्यो कृपालू
तुम्हरे बल मैं रिपुरण जीता ॥ भे लंकेश मिली मोहिं सीता ।
होइ त्रिभुवन सुयश तुम्हारा ॥ पुनि पैहौ पर धाम हमारा ॥
अबहिं जाहु निज निज गृह भाई ॥ सुनि कपि भालु चले हरषाई

दो० सहित जानकी लषण युत यूथप सब लंकेश ॥
पुनि दिन पुष्पक यान चढ़ि चले आपने देश ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लखत लखावत बास निज आये दंडक तीर॥
मिलि घट जादिक मुनिन कहँ पुनि गवने रघुबीर॥

सो० चित्रकूट में आइ। पर तोषे मुनि साधु सब॥
पुनि तीरथ पति पाइ। न्हाइ दान दीन्हो द्विजन॥

चौ० भरद्वाज कहँ मिलि सनमाना॥ सिंगबेर पुनि आयउ जाना
मिला गुहा अति प्रीति समेता॥ पवनज ते कह कृपा निकेता
जाइ अवध भरतहि सुधि देहू॥ तिन के रहसि कहेउ मोहिं तेहू
सुनि चलि भे कपि करि पर नामा॥ आइ रहे तेहि निशि तेहि ग्रामा
इहां सकल शोचहिं पुर वासी॥ आवत हैं की नहिं सुख रासी
रघुपति बिरह अनल सब जाहीं॥ सगुन सभूमि सुभ धीरज धरहीं
अवधि बीच एकहि दिन जानी॥ कौशिल्यादि मातु अकुलानी
फरिा दिन रबि भरगी सह चावा॥ तिसरे पहर गनिक बोल वावा
पग परि पूँछेहु सह अनुरागा॥ सुनि जोतषी बिचारे लागा॥

कुराडलिया तिथि रु पहर संयुक्त करि बारहु तार मिलाय। देइ सात कर भाग जो बचै तासु फल गाइ॥ बचै तासु फल गाइ एकते तेहि अस्थाना। द्वै ते आवन कहत तीनि ते मग में जाना॥ चतुरथ पहुँचे आइ दिग पंचम पुनरावृत्ति विधि। षष्ठे व्याधि समेत मुनि मृतक कहै इमि विसु तिथि॥

दो० यहि बिचार ते जानिये। आये प्रभु पुर पास॥
सुनि सब मातन दान बहु दीन्हे सहित हुलास॥

इति श्री बिश्राम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदासराम सनेही कृत लंका कांडे रावण बध और श्री राम अयोध्या आगमन वर्णनो नाम ऊनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

लङ्काकाण्ड समाप्तः॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः

# अथ विश्राम सागर

## उत्तर काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
सार रामायण केर मत कहौं इतिहास बखानि
रहा एक दिन अवधि का भरत समुझि मन माहिं॥
लागे शोचन विरह बस धीरज आवत नाहिं॥
तेहि अवसर हनुमान तहँ आये विप्र स्वरूप॥
रटत नाम अवलोकि कै बोले बचन अनूप॥
जासु विरह शोचत अहो आवत सो समरत्थ॥
लषण जानुकी सहित सुनि प्रभु हित मिलन भरत्थ॥
तात कह्यो सन्देश जस तस कछु नहिं जो देहुँ॥
तातें ऋनिया आपकर हौं मैं उऋण न लेहु॥
देखि भरत की प्रीति कपि कही राम ते जाइ॥
सुनत चढ़े प्रभु यान चढ़ि पुर ढिग पहुँचे आइ॥
भरत शत्रुहन सहित गुरु पुरजन सचिव समाज॥
लेन सिधाये रघुपतिहि कहिजननिन ते काज॥
जहँ तहँ सुनि पुर नारि नर धाये दरशन हेत॥
एक एक तें कहें तुम देखु कृपा निकेत॥ ॥
कोटिन चढ़ि गिरि तरु अटनि निरखैं व्योम विमान॥
कोटिन मंगल द्रव्य लै करहिं राम गुन गान॥
कुण्डलिया अवध विराजत आजु यामिनी जिमि-

विरहिनि त्रिय वारु। पति आवत सुनि मुदित मन कीन सु तन सिंगारु॥ कीन सुतन सिंगारु कोटि कटि किंकिनि जानो मनि विद्रुम मय भवन अंग प्रति भूषण मानो॥ साजे बसन सुरंग संग सखि चित्र अनेका। पगनूपुर पुर सोर घोर गति बाजन एका॥ चंचल अंचल पानि पताका धुज फहराहीं। ग्राम धाम के लोग सकल धाये प्रभु पाहीं॥ ऊंच अटनि पर छत्र उचकि चितवत मग फूली। कनक कलस कुच प्रगट मोद बस कंचुकि भूली॥ भूली कंचुकि मोद बस नेत्र झरोखा स्वर बबध। थक टक रहे निमेष तजि नारि रूपमय इमि अवध॥

दो० भरतहि आवत देखि प्रभु त्याग्यो तुरत विमानु॥
सन्मुख चले सनेह बस परे धनद पहं जानु॥
प्रथम मिले गुरु द्विजन पुनि गहे भरत प्रभु पाय॥
बलकरि तुरत उठाइ हरि भेंटे हृदय लगाय॥
राम शत्रुहन मिले पुनि भरत लछिमन दोउ॥
पुरवासी छिन में मिले बाल वृद्ध सब कोउ॥
भरत शत्रुहन सीय पद परसे पाय असीस॥
पुनि भेंटे सब कपिन कहं विप्रन सहित मुनीस॥
बाजहिं बाजन विपुल सुर वरषहिं सुमन सराहि॥
द्वार द्वार प्रति आरती करहिं लोग सब चाहि॥
सुनि सुनि धाई मातु सब ज्यों बच्छा हित धेनु॥
प्रथम कैकई भेंटि पुनि मिले सबन सुखदेनु॥
एकै दिन गे सबन गृह सब के भोजन कीन॥
केहू न जानेहु मर्म यह कच उतरावे लीन॥
प्रात सप्तमी दिवस मुनि कह्यो राज पद देन॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुनि रघुपति सब ऋषिन ते बोले कोमल बैन॥
नाथ द्रव्य मद राज मद विद्यामद बपु लेखि॥
जोबन मद तहँ राजमद सबते यहै विशेखि॥
तेहि पीने कछु सुख नहीं केवल निरे नेवासु॥
पुनि चंचल नहिं होत निजु ताते चहै न दासु॥
सो॰ नरतन कर फल एक। कहत वेद बुध साधु सम॥
परि हरि काम अनेक। भजे सदा जगदीश कहँ॥
सुनि बोले ऋषिनाथ। तुम बिन अस को कहै प्रभु॥
सो माया तव हाथ। काल कर्म गुण जासु बस॥
जो सुमिरत तव नाम। ते छूटत अभिमानते॥
प्रभु पर पूरन काम। तेहि की होइ श्रीराजपद॥
चौ॰ तेहिते लेहु राज पद राखा॥ पूजे हम सबकी अभिलाखा॥
भले भाखि पट भूषण साजे॥ घर घर मोद बधाये बाजे॥
मंगल दर्वि अनेक प्रकारा॥ लेले धाये अनुग अपारा॥
जोजन एक कनक की छानी॥ तामधि चंद्र वेदिकालीनी॥
ताके बीच महल यक रंभा॥ मनि मे चहुँ दिशि षोडश खंभा॥
कोनेन प्रति सुर तरु तहँ आसन॥ तेहि गृह मध्य रत्न सिंहासन॥
तेहि पर कमल अष्ट दल केरा॥ धरे विविध भाजन चहुँ फेरा॥
गुरु बशिष्ठ शुभसम्वत चाहा॥ तेहि ऊपर बैठन हित काहा॥
कुण्डलिया विप्रन शीश नवाइ के सिंहासन श्री राम॥
बैठे श्री सीता सहित मानो रति युत काम॥ मानो रति युत काम किधौ श्री युत भगवाना॥ किधौं तड़ित युत मेघ किधौं विद्या युत ज्ञाना॥ किधौं सिद्धि युत बृहद रवि कल्प लता प्रद छिप्र। छवि सिंगार श्रम कीर्ति लखि वेदु उच्चरे बिप्र॥ ससि सम छत्र सुकराठकर चँवर

विभीषण हाथ। लषण लिहे आदेश वर अंगद पावन पाय॥ अंगद पावन पाथ पान रिपु दल नप बाँवै। बिंजन करत निषाद भरत सब का ढिग लावै॥ जामवन्त हनुमन्त कर छरी छबीली शक्ति असि। बचन सुधारत तरनि नन चंरनु शिर चंद्रिका शशि॥ नाक नदी गुन मन जटी लटी न छटी अनूप। रटनि उटी नहिं कछु पटी मननि पटी पद रूप॥ मननि पटी पद रूप टहि विघटहि गतिऊपर॥ भटकि मुकर कटि मटकि लटकि पट कहि पग नूपुर। नूपुर पट कहि लटकि छवि लखि मट के बुधि बाक। तान कटी मुनि चट पटी लहे मनुज मुनि नाक॥ जान्यो जब अविशेष की आई घटिका सिष्ट। प्रथमे श्री रघुनाथ सिर कीन्हों तिलक वशिष्ट। कीन्हों तिलक वशिष्ठ अपर सब तिन के पाछे करहिं आरती मातु निछावरि पद अलि आछे॥ विप्रन दीन्हें दान सोई जेहि जो मन आन्यो। नृपन धरी बहु भेंट बंदि त्रिभुवन पति जान्यो॥ तब विरंचि कर जोरि के बोले सन्मुख बयन। जय रघुनाथ अनाथ पति प्रणत पाल सुख अयन॥ प्रणत पाल सुख ऐन मयन छवि कोटि बिराजै। धन्य भाग्य बड़ तासु लखा जिन याहि समाजै॥ लखा समाजै आज मोहि दान देहु निज भक्ति अब। सुनित थास्तु बैठे पुरहु आये मुदित महेश तब॥ बन्दे हं त्वत्पद प्रभो संसृताब्धि दृढ़ पोत। परि भवाब्धि धेयं सदा तीर्थास्पद सुख सोत तीर्थास्पद सुखसोतनुतं कमलजहं रिईशं। प्रणत पाल श्रीश द्रोह भृत्यारत खीसं खीसं कृत अघ वोघ सव्य श्री मुनिमानं दे। गुनामार मैं पातु सततं स्याहं वंदे॥ विप्र रूप धरि वेद तब बोले गिरा अनूप। जय जग दीश अजीस पति निर्गुण सगुण सरूप॥ निर्गुण

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सगुण सरूप भूपभव पार उतारण। जे नर तजि तव भक्ति पचत जग सुखके कारण॥ सुर दुर्लभ तनु पाइ ते पत तनर्कम-हं छिप्र। चरण कमल रति देहु सुनि सबहि नजाने वि-प्र॥ बोले शिव मित्र तव जय जन वन मन हंस। रघुकुल कुमुद चकोर शशि शिव धनु कृत विध्वंस॥ शिवध-नु कृत विध्वंश वंश सुत असुर निकंदन। जय सुर नर मुनि पाल काल सब दशरथ नन्दन॥ दशरथ नन्दन भक्ति देहु निज मोहिं अडोले। तब तहं बाल सरूप आइ सन कादिक बोले॥ जय भगवन्त अनन्त अज अनघ अनामें एक। करुणा सिंधु सर्वज्ञ धिव सुख प्रद नाम अनेक॥ सुख प्रद नाम अनेक कर सतत पावन कारी। काम क्रोध मद मोह लोभ गज सिंकव खरारी॥ जगद धिता रन पोत दिद कहत सुनत हरि लेत भय॥ बसहु सदा मम उर अयन सीता लषण समेत जय॥ कह वशिष्ठ कर जोरि तव जय प्रभु रूप तुमार। वचन अगोचर बुद्धि पर जाने कहा गंवार॥ जाने कहा गंवार परम धर सके नजानी। प्रगट विष्णु अवतार वेग निज कीन्हिनि हानी॥ शिव अरधंगिनि दक्ष आ-श्रम बस बहु संकट सहा। खग पति काग भसुण्ड से भूले तो जड़ नर कहा॥ सगुण सरूप भूपभव पार उतारण।

दो॰ आपु जना बहु जाहि सो बिन श्रम लेइ पिछानि॥
मम उर करहु निवास नित यहि समाज सुखदानि॥

कुण्डलिया यहि विधि सुर नर नाग नृप सबहिन बि-नती कीनि। तब रघुपति सब कपिन कहं निज पर सादी दीनि॥ निज पर सादी दीनि मुकुट लंका पति पावा। कुंडल लहे मुकुराट आलु हनुमत गर नावा॥ पीताम्बर।

युवराज कहं दीन्हो जामा रिछपहि ॥ औरौ गहन मँगाइ ब-पु बच्यो न कोइ भाँति यहि ॥ सब विधि सवहि प्रसन्न करि बोले मुनिते राम। विपति माँझ ए सखा सब आये मेरे काम ॥ आये मेरे काम नाम जिन केर बतायो। तिनजो कीन पुरुषार्थ ता सुसह प्रीति सुनायो ॥ भरतहु ते मोहिं अधिक प्रिय देहुँ कहा अस कवनि निधि। लषण चरित का कहहुँ जिन सेवा कीन्ही सकल विधि ॥

सो० सुनत सभा हरषानि। जय कहि सुर बरषे सुमन ॥
प्रणत सुखद प्रभु बानि। पहिरे पट भूषण बहुरि ॥

छं० पुरवासी नर नारि जे कहैं कि आज विशेषि। नयन सफल करि लीजिये रघुपति छवि देखि। नील जलद मनि सरिस बपु दिनकर मनि सम तेज ॥ कोटि मनो भव ले रुचिर राजत मनि सेज ॥ रतन जटित मनि मुकुट सिर जग मगत अपार। श्रुति कुंडल निज केतु के दीन्हे जनु मार ॥ भृकुटी ललित लिलार में दिहे तिलक सुभास। जनु लाये अलि रवि किरिनि हित कमल प्रकास ॥ चंचल चारु बिशाल दृग मधि प्राण सो हाव। मानहु विवि षंजन लरै सुख करत बराव ॥ श्याम सुकेश प्रसून धर जनु मनि युत नाग। उतरे मुख शशि अमी हित लखि रिपु डर लाग ॥ बिंबा दाड़िम दसन मदि रसन सुरंग। कमल कोस में कुलिस जनु बसे दामिनि संग ॥ मंद हास बोलत मधुर खाये मुख पान। धर कृपा दृष्टि की वृष्टि सों करै अमी समान ॥ कुंबु कंठ कौस्तुभ लसै मुकतन की माल। पयद मध्य सोहीं मनो बग पाँति बिशाल ॥ भुज अरु जानु वर जनु बही युग यमुना धार। धनुशर तट भूषण भँवर

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

कर कंज उदार ॥ असित शयल उपवीत उर बोद्दे उप बीत। लसत पीत झरिला मनो चपला लखि मीत ॥ नाभि छिद्र सित्रिवली सुपथ रोमालि सेवाल। कटि केहरि हरि किंकिणी जनु मुखर मराल ॥ कदलि जंघ युग गुल्फवर नूपुर अनमोल। पुरट पदुम के कलिन में जनु अलिगन बोल ॥ अरुणा चरणा चिर चिन्ह युत युग पद जन स्वाभ। श्याम रक्त हरि रत्ननि जनु वैठे जल दाभ ॥ विधि हरि हर ध्यावत जिन्हें मुनि गन तजि साथ। तिन पायन में प्रीति दृढ चाहें जन रघुनाथ ॥

दो० यहि विधि नख सिख रूप लखि मुदित होइ सब कोइ ॥
एक एक ते आइ गृह बोली बूझेउ सोइ ॥

चौ० हे सखि आजु राम छवि देखी ॥ नयनन मम परि हरी निमेषी
तहं पुनि बसब अंग प्रभु केरे ॥ अद्भुत रचना हेरी नेरे ॥ ॥
युगल कंज दस दल तिन माहीं। बसत मराल उड़त ते नाहीं
पिक बक कीर लाल मिलि डोलें। बैठे घेरि चहूं दिशि बोलें ॥
तिन के मध्य मयन रथ केरे ॥ चक्र विराजत मनि मय हेरे ॥
कमल नाल रति गलकी हासा ॥ रंभा तरु तेहि ऊपर बासा ॥
तेहि पर गज करि पर मृग राई ॥ दिव्य बसन ते दीन उढ़ाई ॥
हरि पर सर मधि भवरु बिराजे ॥ बिविधि बरण के पंछी राजे
सर पर कनक केर गिरि दोई ॥ तिन पर रहा नील घन सोई ॥
तेहि पर सुमन पंचरंग फूले ॥ तामधि बैठि परेवा भूले ॥ ॥
तेहि पर कुसुम कुसुम परि अलि सुत ॥ तेहि पर युग बिंबा फल अद्भुत
तेहि पर सुक अपांति से लागत भल ॥ लीन्हे पल्लव चोंच सहित फल
सुक तर पिक ऊपर बिबि खंजन ॥ खंजनन पर धन पर शशि रंजन
इत उत दिनमनि उदित सोहाये ॥ मानहुं शशि सहाय हित आये

शशि ऊपर बहु नखत सोहावन॥ इन्दु मइन्दु लसत मन भावन
तेहि पर गिरि गिरि पर बन सोहे॥ तेहि बिच लाल पंथ मन मोहे
तेहि पर मनि धर नागिनि देखी॥ तेहि ऊपर दीरघ सरिता पेखी॥
तेहिं ते बही सरित युग जोई॥ जलचर बिपुल बिबिधि बिधि सोई
फूले कमल मिथुन यक संगा॥ कीड़त बिहंग जानि बहु रंगा॥
सुनत सखी सो देखन धाई॥ मुदित भूप के मन्दिर आई॥॥
दम्पति रूप देखि हरषानी॥ आई भवन तोरि तृण पानी॥

**दो०** यहि बिधि सायंकाल भो रहे दीप पुर पूरि॥
मनहुं शेष आये मिलन किधौं धरनि सुत भूरि॥

**चौ०** तब मुनि मुदित रजायसु दीन्हा॥ संध्याबंदन सबहिन कीन्हा
राज सभा पुनि बैठे आई॥ हरषि पहर भरि रयन बिताई।
सेवक आइ कही तब बाता॥ चलहु भवन प्रभु बोलत माता॥
उठे तुरत पुरजन सिरु नाई॥ गे निज भवन रजायसु पाई॥
आये रघुपति जहँ महँ नारी॥ अनुज सिया युत कीन बियारी
अचवन करि पुनि बीरी खादी॥ हनुमदादि जन लिहिनि प्रसादी
बोला सुख चलि सोवहु श्यामा॥ आये तब प्रभु कंचन धामा॥
देखि सखिन हँसि पाइ परवारे॥ मनि मिं उठ सिल्या बैठारे॥
स्रक सुगंध मेवा पकवाना॥ धरे कनक भाजन भरि नाना
सुर नर नाग सुता अनुरागी॥ नृत्य गान मिलि करने लागी।
देखत हीगे सोइ कृपाला॥ लखि प्रभात बोला तब सारता।
उठहु नाथ जग नाथ हमारे॥ बिधि हरि हर मुनि ठाढ़े द्वारे।
मिलि सबहिन कहँ दरशन दीजे॥ याचक सकल अजाचक कीजे
बिहंग बचन सुनि उठे खरारी॥ देखि सखिन आरती उतारी॥
प्रीति सहित दातूनि कराई॥ मिले सबनि पुनि द्वारे आई॥
बिप्रन दान देइ बहु रंगा॥ सेवक सखा अनुज ले संगा॥॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

जाइ कीन सरजू असनाना। देखि लोग सुख लहैं निदाना॥
पूजन करि पुनि मंदिर आये॥ मुदित मातु तब असन कराये
कछुक बार करि सयन कृपाला॥ पुनि सब मिलि आये नृपशाला
राम राज बैठे जब तेरे॥ त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे॥ ॥
काम धेनु भय भूमि सोहाई॥ मांगे मेघ देइं जल आई॥ ॥
चारिहु बरन धर्म निज चरहीं॥ कोउ काहूते बैर न करहीं॥
बाल वृद्ध यौवन नर नारी॥ सबके प्रभु पद प्रीति अपारी॥
रघुपति चरित सुनैं नित कहई॥ परमानन्द मगन सब रहई॥
अजहूं जे हरि पद मन लावैं॥ राम राज कर सुख ते पावैं॥
रघुपति चरित सुनैं जे कहहीं॥ निश्चै ते अव्यय पद लहहीं

दो० राम चरित्र बिचित्र अति कहि कोइ लहे किपार॥
सुख प्रद निज मति सरिस मैं तुम्हे सुनाये सार॥
सुनि हरखे श्रोता सकल धन्य भाग्य निज जानि॥
कहत दास रघुनाथ अब सहित जोरि युग पानि॥
हे प्रभु सीता नाथ तुम जस फुर मायो मोहिं॥
तस मैं भाख्यो ग्रंथ यह सो अरपत हौं तोहिं॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
राम चरित सुख प्रद कछुक बरने जन रघुनाथ॥

तोमर छं० श्री राम चरन प्रताप। कछु कीन किंचित आप॥ ते-
हि नाथ चरित सिखालि। अब कहत गुरु पर नालि॥ + ॥

कवित्त श्री रामानुज संप्रदाय द्वारा अग्रदास जूको तहां
के महन्त भे गोविन्द राम जानिये। तिन हीं के शिष्य सन्तदा-
स तस्य कृपा राम कृपा राम जूके राम चरन पिछानिये॥ राम
चरण जूके राम जन्न तस्य कान्हर भे कान्हर के शिष्य हरि
राम को बखानिये। हरी राम जूके देवा दासराम नामभाल

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देवा दास जू के रघुनाथ मोहिं जानिये ॥

दो० इष्ट हमारो राम सिय राम नाम प्रिय भाल ॥ ॥
राम रकार मकार है बिन्दु जानुकी लाल ॥
पावन को पावन करन शिव को धनु सुनि वरौ ॥
सुचि सतन के प्रानहैं राम नाम दोउ वर्ण ॥
विविध ग्रंथ बहुबिध सुमन मम मति मारवी जानि ॥
विश्रामो दधि ग्रंथ मधु कीन इकट्ठे आनि ॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य सुचि आवत सब के काम ॥
जतन किहे सह जे मिले नाहिन महँग दाम ॥
कथा रसिक जे संत जिमि गुन ग्राही रस चोर ॥
ते आदरि हैं ग्रंथ यह देखि परिश्रम मोर ॥
लहि हैं सुख सम्पत्ति विविध जेहैं मिटि तिहुँ ताप ॥
चारों युग में प्रबल है रघुपति भक्ति प्रताप ॥

छं० अति प्रबल भक्ति प्रताप सब पर ईश जेहि निज ब-स करे। कलि कालहू हरि भजन करि बहु जीव भव सागर तरे ॥ सर बज्र शंभु बिराग सुनि जप योग तप प्रेमी जने। सठ कोप जामुनि वर्जि शुचि नव नन्द गोपा दिक घने ॥ इमहि नाथ सुरु तरु तरनि नीवा दित्य तम भ्रमहा रेहू। मम मेघ मध्वा चार्य स्वामी बिष्णु वोहिन तारेहू ॥ गुरु निम्ब लाला चार्य्य रामा नन्द श्री रङ्ग रंगियो। पयपान कृत की लाग्र शंकर नाम सुर पारस वियो ॥ जय देव श्रीधर बिन्द मङ्गल ज्ञान देव त्रिलोचनं। भए जासु सेवक आइ श्री पति प्रेम बस दुख मोचनं ॥ पृथ रूप बल्लभ भूप जन जेहि राम सिय दधि मे लखे। विवि सूर कूबा गदा धर हर प्रेम निधि मङ्गल सखे ॥ गति गूढ़ हरि अनु-

करन राजहि आनि पुर आतम दियो ॥ प्रिय लागि कर्मा केरि खीचरि बोलि निजमंदिर लियो ॥ सिय टूक भजि निज सुतन बिसदै प्रभुइ पिय वाई भई । हरि हंस मामाभानजे सद वनिकी कसनी लई ॥ भइ भुवन की आसि सारकी सित केश देवा हित करे । दियो दाह कामध्वज कलेवर आइ जे मल दिशि लरे ॥ घर दीन महि घी गोपकी द्विज हेत चलि साखी भरी । थिर नयो गनिका काज शक्की दास लगि निज उर धरी ॥ सुख पाव सुन्दरि राम कहि रैदासहरिहि बोलायहू । बहु वार राम कबीर हित धनु दीन बरदी लायहू ॥ बिन बीज जामेहु धना को प्राशि सेन हित छुरहरि गही । रघुनाथ माधौ दास जनको सोच कर वायो सही ॥ हरिव्यास देविहि दीनि दिक्षा नर हरी सम धी लई ॥ त्रिपुरारि तत्वा जीव नित्या नन्द नाभा अपनभई ॥ भूगर्भ देव मुरारि गज गोविन्द गिरधर को सखा । गोपाल रूप सनात नानद दीन नग लीन्हे लखा ॥ बिठि लेण लाखा भक्त नरसी खलनि बह पर चै दये । परमार्थ के रसरूप पीपा पतित बहु पावन किये ॥ कोतह्ल केसौं भद मीरा लीन गिर धर में भई । रतना वती कर मैंतिभक्ति गरोशदे छेद करि गई ॥ चतुरंग तुलसीदास पावन रामजस जिन उर धरेहु । कवि कृष्ण लखरा प्रयाग जूड़े युगुल हरि जन आदरेहु ॥ भे और हू बहु सन्त अपवजे अहें आगे होइ हैं । रघुनाथ तिन के चरित सब कहि सके नहिं अस कोइ है ॥ जिमि क्षीर सिंधु अपार खग निज चोच सम भरि पावहीं । तेहि भाँति कवि निज मति सरिस हरि सन्त जन गुन गावहीं ॥ ॥

**कुंडलिया** अहो सन्त भगवन्त गुरु बिनै करहुं मम कान। जहां नमहि सुखदेव मुख बिधि सुख पुनि निर्वान॥ बिधि सुख पुनि निर्वान रिद्धि सिधि सकल धरीजै। जहं राखो प्रभु मोहिं तहां निज पद रत दीजै॥ दीजै पुनि सन्त संग जहं नव गुन सुन वाको लहौं। भक्ति बिमुख कर बदन जनि देख रायो सुख प्रद अहो॥

**चौ०** अयन तीसरे संख्या गाई॥ युग सहस्र नव सै हैं भाई॥ और सततर जानो जोई॥ इतनी है चौपाई सोई॥ ॥ दोहा पांचसै साठि सब जानो॥ नव्वै सोरठ सोउ पिछानो॥ है छप्पै बावन यहि माहीं॥ गितिका छन्द चवालिस आहीं॥ चौबोला युग यामे होई॥ मंजु छन्द एक सुन्दर सोई॥ छंदै हैं मुनि कहा सोहाई॥ कुंडलिया माहिं बीस लखाई॥ टोटक एक एक दण्डक जानो॥ कमल एक एक तोमर मानो॥ रोला वेद वेद अशोका॥ रुद्र त्रिभङ्गी छन्द बिलोका॥ एक मालिका यामे भाई॥ संख्या अयन कहा मैं गाई॥

**सो०** महिश्वर छन्द जो एक। युग नराच छंद अहैं॥
भुजग प्रिया ता एक। एक कवित यामें बिशद॥

**दो०** जो कछु देख्यो चूक मम छम्यो जानि अज्ञान॥
पराधीन जग जीव सब ज्ञानी इक भगवान॥

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री मज्जगज्जनन जनक जानकी रामस्यानुगानुगोहं श्री रघुनाथदास राम सनेही निर्मित बिश्राम सागर ग्रंथः समाप्तः॥

(१)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कमल<br>महादेव<br>हंस | कुन्द<br>धर्मराज<br>गरुड़ | निवारि<br>हनुमान<br>पपीहा | दुपहरिया<br>इन्द्र<br>गीध |
| बेला<br>राम<br>मैना | केवड़ा<br>गणेश<br>कोयल | गुल्दावदी<br>शनिश्चर<br>खूसट | पियावासा<br>भैरों<br>बया |
| कलगा<br>भरत<br>टीटीरी | सुदर्शन<br>पवन<br>सरदूल | गुल्मेहदी<br>जल<br>खड़रैचा | नरगिस<br>शारदा<br>चंडूल |
| कंदथल<br>अन्न<br>गरगवा | मरुवा<br>शुक्र<br>कटनास | गुलफिरङ्ग<br>अश्विनीकु०<br>तूती | सेवती<br>स्वामका०<br>सारस |

(२)

| | | | |
|---|---|---|---|
| गुलाब<br>हरि<br>सुवा | निवारी<br>हनोमान<br>पपीहा | कदम्ब<br>सूर्य<br>होरिल | दुपहरिया<br>इन्द्र<br>गिद्ध |
| बेला<br>राम<br>मैना | मोतिया<br>कृष्ण<br>बाज | गुलाचीन<br>प्रद्युम्न<br>सुरेला | गुल्दावदी<br>शनिश्चर<br>खूसट |
| चमेली<br>ब्रह्मा<br>काग | जूही<br>पावक<br>चकोर | अनार<br>नरसिंह<br>तीतर | गुलाबास<br>बृहस्पति<br>शारदूल |
| कलयर<br>अन्न<br>गरगवा | मरुवा<br>शुक्र<br>कटनास | नरगिस<br>शारदा<br>चंडूल | गुलफिरङ्ग<br>अश्विनीकु०<br>तूती |

(४)

| | | | |
|---|---|---|---|
| चाँदनी<br>सीता<br>लाल | कुन्द<br>धर्मराज<br>गरुड़ | गुल्लाला<br>गुरुजन<br>कठफोरा | मोतिया<br>कृष्ण<br>बाज |
| चमेली<br>ब्रह्मा<br>काग | निवारी<br>हनुमान<br>पपीहा | कलगा<br>भरत<br>टिटीरी | गुलमेहदी<br>जल<br>खड़रैचा |
| गुड़हल<br>देवी<br>महरि | जूही<br>पावक<br>चकोर | केतकी<br>मुनि<br>बटेर | सेवती<br>स्वामका०<br>सारस |
| कनेर<br>अन्न<br>गरगवा | मरुवा<br>शुक्र<br>कटनास | गुलाबास<br>बृहस्पति<br>सारदूल | गुलफिरङ्ग<br>अश्विनीकु०<br>तूती |

(८)

| | | | |
|---|---|---|---|
| गेंदा<br>लक्ष्मी<br>बकुला | केवड़ा<br>गणेश<br>कोयल | कदम्ब<br>सूर्य<br>होरिल | दुपहरिया<br>इन्द्र<br>गिद्ध |
| गुल्लाला<br>गुरुजन<br>कठफोरा | मोतिया<br>कृष्ण<br>बाज | पियावा०<br>भैरों<br>बया | नरगिस<br>शारदा<br>चंडूल |
| कलगा<br>भरत<br>टिटीरी | चम्पा<br>बुध<br>बुलबुल | केतकी<br>मुनि<br>बटेर | सेवती<br>स्वामका०<br>सारस |
| कनेर<br>अन्न<br>गरगवा | अनार<br>नरसिंह<br>तीतर | गुलाबास<br>बृहस्पति<br>शारदूल | गुलफिंरग<br>अश्विनीकु०<br>तूती |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| हरिसिंगार<br>चन्द्रमा<br>कबूतर | सुदर्शन<br>पवन<br>भरदूल | गुलाचीन<br>शत्रुहन<br>मुनैला | गुल्दावदी<br>शनीचर<br>खूसट | अंगुली रख कर इस प्रश्न को निकालते हैं ॥ |
| गुडहल<br>देवीजी<br>महरि | गुल्मेहदी<br>जल<br>खडैचा | पियावा॰<br>भैंरौं<br>बया | नरगिस<br>शारदा<br>चंडूल | १ २ १३ ८ २६ २४<br>३१ २३ २८ ११ ७ |
| जूही<br>पापक<br>चकोर | चम्पा<br>बुध<br>बुलबुल | केतकी<br>सुरवर<br>बटेर | सेवती<br>स्वामका॰<br>सारस | १७ १४ २० २७ (१९ or ९)<br>६ १८ ४ २२ ५ |
| मरुवा<br>शुक्र<br>कारनास | अनार<br>नरसिंह<br>तीतर | गुलाबास<br>बृहस्पति<br>शारदूल | गुलाफे॰<br>अश्वनीकु॰<br>तूती | ३ २९ १६ ९ ३०<br>१५ १० १२ २५ २१ |

श्रीगणेशायनमः

बंदि गणाधिप शारदा राम सिया गुरु बिष्णु ॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन बरणत मानस प्रश्नु ॥१॥
कह महेश प्रभु पद कमल भजकुरि भेष मराल॥
ह्वै है मंगल लाभ बहु मिटिहै सब दुख हाल॥२॥
जैसा रंग गुलाब का तैसा यह संसार ॥ ॥
कह हरि मति भूले सुवा यामें दुक्ख अपार॥३॥
पढ़ि मैना बैदि में परयो अबते सुमिरहु राम॥
जब वह बेला आइहै तबहीं सरि है काम ॥४॥
कह सिय पिय गुन लाल से सुयश चांदनी छाय॥
सिलत मोद गावत सुनत गनत बिपति सब जाय॥५॥
कुंद सरिस तन आउ बढ़ि लखि मराल कुल नीक॥

कहत धर्म करि गरुड़ पति भजे होइ सब ठीक ॥ ६ ॥
काक भक्ष को त्यागि के लीन चमेली बास ॥ ॥
कह बिधि ग्रस सत संग है करु पूजी सब ग्रास ॥ ७ ॥
सुमिरि नाम चातृक सरिस मनका मैल निवारि ॥
कर तल तेरे चारि फल कह हनुमान पुकारि ॥ ८ ॥
जिन करि तू सुख चहत है तिनते होई दुक्ख ॥
बक गेंदा सम कुटिल तजि श्री पति सन मुख सुक्ख ॥ ९ ॥
बुद्धि मान गणपति सरिस बो लत कोकिल बैन ॥
भजहु हरिहि है केवड़ा तुम सम को सुख ऐन ॥ १० ॥
मित्र मिली होरिल मिली सम्पति मिली कदंब ॥
भूलेहु जनि रघुनाथ को मतिहि दुखायो ग्राम्ब ॥ ११ ॥
कीन क्रिया जिमि गीधि की तज्यौ इन्द्र सुत जानि ॥
तासु चरन दुप हर सरिस भजु तू सुख की खानि ॥ १२ ॥
सेवहु गुरु जन प्रीति करि फूली मुद गुल्लाल ॥
कह फाखता सम रिपु मिटी मिली सुहृद सुत बाल ॥ १३ ॥
भरत रहनि धरु हृदय महं तजु टीड़ी सुत मूल ॥
कलगा भक्ति बढ़ाइये निशि दिन मंगल मूल ॥ १४ ॥
गई नाहि ग्रब भरवे मति रही ते भजु नंदलाल ॥
काल बाज सिर सूझ नहिं परयो मोतिया जाल ॥ १५ ॥
कर्म कृषी भलि कीजिये जेहि उपजे सुख ग्रन्न ॥
सुगहि गरगवा जीवतब होइ नकं दयल मन्न ॥ १६ ॥
साम परेवा काल रवे करु तू हरि शृंगार ॥
देखु नयन भरि सुखद छबि एहि ग्रब सर एहि बार १७ ॥
भरुही के अंडा बच्चे बच्यो पवन सुत जानि ॥
तिमि तू बचि सुख भोगि है सुमिरु सुदर्शन पानि ॥ १८ ॥
गुल्ला चीन कर हार करि रिपु हंतहि पहि गाड ॥
पैहे बिजै बिनोद यश मोर तोर मति गाड ॥ १९ ॥
बसे शनीचर पायतेहि फिरे दावरी जेस ॥
बिन हरि सुमिरे सुख नहीं खोउ नखूसट लैस ॥ २० ॥
गुड़ हल सम तन हरि भगति देही शीस चढ़ाइ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होइ सिद्धि कल्याण जेहि महरि सुवन यश गाउ ॥ २१ ॥
दुख सुख आवत समय पर ज्यों खंजन ऋतु पाइ ॥
आनंद जल बरषत उठी गुल्मेहदी हरि आइ ॥ २२
जूही अपने मित्र हित पावक खात चकोर ॥
जो हरि सुमिरै प्रीति ते क्यों न होइ भल तोर ॥ २३ ॥
नारि खेहरिया सरिस है छू मति मन कट नाश ॥
मरुवा एकरि भुलाइ है काबि कौड़ी की आश ॥ २४ ॥
ज्यों मधुकर चंपहि तजै त्यों तू तजि यह काज ॥
बुलबुल से लड़ि आइ हौ कह बुध फिरि बन राज ॥ २५ ॥
बिन बर्षा खन समुझि घर दीन्हे बयन बिसारि ॥
धिया बास तव तिमि तजा भैरों आस निवारि ॥ २६ ॥
तीतुर त्यागे प्राण निज गा अनार तरु सूखि ॥
नर सिंह को करु आदि अब तू मति काहुइ दूखि ॥ २७ ॥
सुमिरि शारदा के चरण चढ़े न क्यों चंडूल ॥
नरगस करि क्या करहिंगे जो ईश्वर अनुकूल ॥ २८ ॥
रहिये रहनि बटेर की चहिये सुयश गजारि ॥
लहे केत की बास किमि मुनिवर कहत बिचारि ॥ २९ ॥
शारस बद को आदि करु है सो मंगल खानि ॥
स्याम कार्तिक रटत जेहि शंभु सेवती मानि ॥ ३० ॥
गुला बास की आस तजि शार दूल को ध्याउ ॥
होई सुख परदेश में कहत रहस्यति जाउ ॥ ३१ ॥
गुल फिरंग फूली बिपनि भई रूपरा के दवि ॥
कह रवि सुत हरि बिन वृथा तूती बोले गर्वि ॥ ३२ ॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥
बरणौं मानस प्रश्न यह पूरण जन रघुनाथ ॥ ३३ ॥
देव सुमन अरु खगन के नाम जानि यक तीस ॥
पंच धाम कोठा असी अंक पाँच तिन शीस ३४ ॥
सकल सुनावे नाम जो धाम मध्य ठहराइ ॥
अंक जोरि दोहा समुझि सगुन हिं देउ बताइ ॥ ३५ ॥

। इति ।

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| नामकिताब | नामकिताब | नामकिताब |
|---|---|---|
| छन्दोर्णविपिंगल | दोहावलीरत्नावली | ज्ञानचालीसी |
| कविकुलकल्पतरु | गोकर्णमहात्म | मनमौजचरित्र |
| रसराज | हनुमानबाहुक | सौदागरलीला |
| सतसई सटीक | जनकपच्चीसी | बिनय प्रकाश |
| सभाविलास | बनयात्रा | वैद्यकवेदान्तआदि |
| तुलसीशब्दार्थप्रकाश | कल्पसूत्र | योगवाशिष्ठ |
| प्रेमरत्न | समरविहारविंद्रावन | प्रवोधचन्द्रोदयनाटक |
| युगलविलास | विहार विंद्राबन | सांख्य तत्त्व कौमुदी |
| चित्रचन्द्रिका | अनेकार्त्थकोष | रामाभिषेक नाटक |
| बारहमासा बलदेव प्र- | स्त्री दर्प्पण | कैवल्य कल्पद्रुम |
| साद कृत | शृङ्गार प्रकाश | आनन्दाऽमृतवर्षिणी |
| जगद्विनोद | शंकरदिग्विजयभाषा | निघण्ट भाषा |
| रागप्रकाश | ब्रह्मसार | अमरविनोद |
| लावनीवशेरबनारसी | परमार्त्थसार | वैद्यजीवन |
| शृङ्गारबत्तीसी | बारहमासाफ़क़ीरअ- | औषधसंग्रहकल्प- |
| शिवसिंहसरोज | लाबरव्स | वल्ली |
| नानार्थनौसंग्रहावली | सुन्दरीचरित्र | अमृतसागर |
| शनिश्चरकीकथा | रामकलेवा | अमृतसागरवड़ी |
| ज्ञानमाला | गंगालहरी | वैद्यमनोत्सव |
| गोपीचंदभरतरी | कथाचित्रगुप्त | ज्योतिष |
| कथाश्रीगंगाजी | भजनावली | जातकचन्द्रिका |
| अवधयात्रा | कृष्णबाललीला | जातकालंकार |
| भरतरीगीत | कायस्थदर्प्पण | सैवका भरण |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

| नाम किताब | नाम किताब | नाम किताब |
|---|---|---|
| ज्ञान स्वरोदय | याज्ञवल्क्य स्मृति | जातकालङ्कार |
| रमल सार | व्रतार्क | षट् पञ्चाशिका |
| इन्द्रजाल | निर्णयसिन्धु | मुहूर्त्त गणपति |
| सामुद्रिक | लघु कौमुदी | मुहूर्त्त चिन्तामणि सटीक |
| मुहूर्त्तचक्र दीपिका | सिद्धान्त चन्द्रिका | मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक |
| संस्कृत पुराण स्मृति | अमरकोष प्रथम कांड | मुहूर्त्त दीपक |
| व्याकरण इत्यादि | अमरकोष भा-टी-स- | होरा मकरन्द |
| श्री मद्भागवत पुराण | सन्ध्योपासन | शीघ्र बोध सटीक |
| मार्कण्डेय पुराण | संग्रह शिरोमणि | **मुतफ़रक़ात** |
| भविष्योत्तर पुराण प- | शिवार्च्चन | विश्वविनय |
| म द्वितीया | कायस्थ कुल भास्कर | अक्षरावली |
| श्री सत्यनारायण कथा | कायस्थ धर्म निरूपण | स्वयम्बोध |
| भगवद्गीता | मथुरा सभा | ज्ञान चालीसी |
| श्री भगवती गीता | तुलसी तत्त्व भास्कर | बाला बोध |
| भगवद्गीता विष्णु सह- | श्री गोपाल सहस्रनाम | विद्यार्थी की प्रथम पु- |
| स्रनाम सहित | शार्ङ्गधर सटीक | स्तक |
| दुर्गापाठ सटीक | गीत गोविन्द भा-ति-स- | गणित काम धेनु |
| दुर्गा पाठ स्तोत्र | **ज्योतिष** | लीलावती भाषा |
| महिम्न स्तोत्र | जातका भरण | पटवारियों की पुस्तक |
| अपराध भञ्जन स्तोत्र | पाराशरी सटीक | चार भाग |
| मनुस्मृति उर्दू टीका स- | वृहज्जातक सटीक | पद्मावत |
| हारीत स्मृति | लघु जातक | **इति** |

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Anek
91

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri